अनुवादक : भीष्म साहनी

Лев Толстой

ВОСКРЕСЕНИЕ

На языке хинди

सोवियत संघ में मुद्रित

$Т\frac{70301-175}{014(01)-77}679-75$

अनुक्रम

पहला भाग

मत्ती, अध्याय १८, पद २१।

तब पतरस ने पास आ कर, उससे कहा, हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूं, क्या सात वार तक? २२ यीशु ने उससे कहा, मैं तुझसे यह नहीं कहता, कि सात वार, वरन सात वार के सत्तर गुने तक।

मत्ती, अध्याय ७, पद ३।

तू क्यों
अपने भाई की आंख के तिनके को देखता है, और अपनी आंख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता?

यूहन्ना, अध्याय ८, पद ७।

...तुममें
जो निष्पाप हो, वही पहले उसको पत्थर मारे।

लूका, अध्याय ६, पद ४०।

चेला
अपने गुरु से बड़ा नहीं, परन्तु जो कोई सिद्ध होगा, वह अपने गुरु के समान होगा।

१

धरती के एक छोटे से टुकड़े पर रहने वाले लाखों इनसानों ने उसे कलुषित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। पत्थरों से उस पर फ़र्श वांधे, कहीं हरियाली की कोंपल भी फूटती हुई देखी तो उसे उखाड़ फेंका, पेड़ों की शाखें काट डालीं, पशु-पक्षियों को मार भगाया, और वातावरण को कोयले और तेल के विषैले धुएं से भर दिया। फिर भी शहर में भी वसन्त तो आखिर वसन्त ही था! धूप खिली थी, जगह जगह घास उगने लगी थी। हरी हरी घास सड़कों के किनारे वने लॉनों पर ही नहीं, पटरी की सिलों के वीच वीच भी दिख रही थी। वर्च, पॉप्लर तथा वर्ड-चेरी के वृक्षों पर चिपचिपी, महक भरी कोंपलें फूटने लगीं, लाइम-वृक्षों पर कलियां चिटकने लगीं। वसन्त की हिलोर में चहचहाते पक्षी—चिड़ियां, कवूतर, कौवे—तिनके वटोर वटोर कर अपने नीड़ वनाने लगे। और सूरज की सुहावनी धूप में अलसाई मक्खियां दीवारों पर भनभनाने लगीं। सभी ख़ुश थे: पेड़-पौधे, पक्षी, कीट-पतंग, वच्चे। परन्तु लोगों ने, वयस्क पुरुषों और स्त्रियों ने, अपने को तथा एक दूसरे को ठगना और यातनाएं पहुंचाना नहीं छोड़ा। उनकी नज़रों में वसन्त की इस प्रातः का कोई महत्व न था, उसकी पवित्रता को वे अनुभव नहीं कर रहे थे। भगवान की सृष्टि का सौन्दर्य वे नहीं देख रहे थे। यह सौन्दर्य सभी जीवों के लिए आनन्द का स्रोत है, इससे हृदय में शान्ति, प्रेम तथा सद्भावना का संचार होता है। परन्तु लोगों के लिए अगर किसी चीज़ का महत्व था, अगर कुछ पवित्र था, तो ये थीं वे तरक़ीवें, जो उन्होंने एक दूसरे पर हुक्म चलाने को निकाल रखी थीं।

इसी तरह, प्रादेशिक जेल के दफ़्तर में भी वसन्त के पुण्यागमन को कोई महत्व नहीं मिला। किसी ने यह नहीं सोचा कि यह मनुष्य तथा

पशु-पक्षियों के लिए वरदान है, ग्रानंद का स्रोत है। उनकी नज़रों में यदि किसी चीज़ का महत्व था तो उस काग़ज़ का जो इस जेल में एक दिन पहले भेजा गया था। काग़ज़ पर वाकायदा सरकारी मोहर लगी थी, ग्रौर उसे रजिस्टर में दर्ज कर लिया गया था। उसमें लिखा था कि ग्राज २८ ग्रप्रैल के दिन, प्रातः ६ बजे तीन क़ैदियों को ग्रदालत-सुपुर्द कर दिया जाय। इन तीन क़ैदियों में एक ग्रादमी ग्रौर दो स्त्रियां थीं। हुक्म था कि इन दो में से एक स्त्री को—जो सबसे बड़ी मुजरिम क़रार दी गई थी—ग्रौरों से ग्रलग पहुंचाया जाय। इसी लिए ग्राज २८ ग्रप्रैल के दिन, प्रातः ८ बजे, जेल का बड़ा जमादार जेल में ग्रौरतों की बैरक में दाख़िल हुग्रा। ग्रन्धेरे गलियारे में बदबू से नाक फटती थी। उसके पीछे पीछे एक ग्रौरत चली ग्रा रही थी, चेहरे पर यातना के चिन्ह ग्रौर सिर पर सफ़ेद, घुंघराले बाल। उसने वर्दी पहन रखी थी जिसकी ग्रास्तीनों पर सुनहरी डोरी ग्रौर पेटी पर नीले रंग की मगजी लगी थी। यह ग्रौरतों की बैरक की जमादारिन थी।

"मास्लोवा को ले जाना है?" उसने पूछा। बड़ा जमादार ग्रौर वह एक कोठरी के पास पहुंच गये थे, जिसका दरवाज़ा ग्रंधेरे गलियारे में खुलता था।

जमादार ने लोहे के ताले को खड़काते हुए कोठरी का दरवाज़ा खोला ग्रौर चिल्लाकर बोला—

"मास्लोवा, ग्रदालत के लिए तैयार हो!"

कोठरी के ग्रन्दर से गन्दी हवा का झोंका ग्राया जो गलियारे की बदबू से भी ज़्यादा तीखी थी। पुकार लगाने के बाद जमादार ने दरवाज़ा बन्द कर दिया।

जेल के ग्रांगन तक में हवा में ताज़गी थी। प्रातः समीर के स्वच्छ, जीवनदायी झोंके खेतों की ग्रोर से बहते चले ग्राये थे। परन्तु गलियारे में दम घुटता था। यहां की हवा तपेदिक़ की कीटाणुग्रों से, मल-मूत्र, कोलतार तथा सड़न की गन्ध से भरी थी। जो कोई नया ग्रादमी यहां ग्राता, खिन्न ग्रौर हताश हो जाता था। यह जमादारिन भी, जो रोज़ इस बदबू में काम करती थी, यहां ग्राकर थकी-थकी ग्रौर उनींदी महसूस करने लगी थी। कोठरी के ग्रन्दर हलचल हुई। ग्रौरतों के बतियाने ग्रौर फ़र्श पर नंगे पैर पड़ने की ग्रावाज़ें ग्राने लगीं।

"जल्दी करो!" वड़ा जमादार चिल्लाया।

मिनट, दो मिनट वाद एक मंझले क़द की युवा स्त्री जल्दी से दरवाज़े में से निकली और जमादार के पास जा खड़ी हुई। उसका वक्ष उभरा हुआ था। वह सफ़ेद रंग की जाकेट और घ़ाघरा पहने थी और ऊपर भूरे रंग का चोग़ा डाले थी। पैरों में सूती मोज़े और जेल के जूते थे। सिर पर उसने सफ़ेद रूमाल वांध रखा था जिसके नीचे से काले काले वालों की कुछेक कुंडलियां निकल आयी थीं। जान पड़ता था जैसे जान वूझ कर उन्हें माथे पर सजाया गया हो। युवा स्त्री का चेहरा पीला था। यह वह पीलापन था, जो लम्वे समय तक अंधेरी कोठरी में वंद पड़े रहने के कारण लोगों के चेहरे पर आ जाता है और जिसे देख कर अनजाने में ही उन आलुओं की याद हो आती है जिन पर तहख़ाने में ही पड़े पड़े कल्ले फूट आते हैं। हाथों और गरदन का रंग भी सफ़ेद पड़ गया था। हाथ छोटे छोटे मगर चौड़े थे। गरदन सुडौल थी, जो चोग़े के चौड़े कॉलर के नीचे से दिख रही थी। पीले चेहरे पर गहरी काली चमकदार, थोड़ी सूजी हुई, किंतु चंचल आंखें आकर्पित और विस्मित करती थीं। एक आंख कुछ तिरछे देखती थी। वह चलती तो तन कर, सीधी, जिससे उसकी छातियां और भी उभर आतीं। सिर को ज़रा सा पीछे किये हुए, वह गलियारे में जमादार के ऐन सामने आ खड़ी हुई और सीधे उसकी आंखों में देखने लगी, मानो हुक्म वजा लाने के लिए तैयार हो। जमादार कोठरी के दरवाज़े को ताला लगाने जा ही रहा था कि पीछे से एक वुढ़िया ने अपना सिर वाहर निकाल दिया। उसका कठोर पीला चेहरा झुर्रियों से भरा था और वाल सफ़ेद थे। वुढ़िया मास्लोवा से कुछ कहने लगी। लेकिन जमादार ने दरवाज़ा उसके सिर पर दवाया और वुढ़िया का सिर पीछे हट गया। कोठरी में से किसी औरत के जोर से हंसने की आवाज आई। मास्लोवा भी मुस्करा दी और दरवाज़े में वने सीखचों के झरोखे की तरफ़ मुड़ गयी। वुढ़िया इस झरोखे से सिर लगा कर खड़ी थी और फटी आवाज़ में कह रही थी:

"मेरी वात गांठ वांध लो। जव वे सवाल पूछें तो एक ही वात कहना और उसी को दोहराती रहना। इधर-उधर की वात कोई नहीं कहना।"

"इससे वदतर हालत और क्या होगी। इधर या उधर, कुछ तो फ़ैसला हो जाय," सिर झटकते हुए मास्लोवा ने कहा।

"फ़ैसला तो होगा ही, और एक ही होगा। फ़ैसले दो नहीं होते," बड़े जमादार ने अफ़सरों के लहजे में चुहल करते हुए कहा, "चले, मेरे पीछे पीछे!"

बुढ़िया झरोखे में से हट गई और मास्लोवा गलियारे के ऐन बीच आ कर बड़े जमादार के पीछे छोटे क़दम बढ़ाती हुई तेज़ तेज़ चलने लगी। वे पत्थर की बनी सीढ़ियों पर से नीचे उतर कर जाने लगे। यह जेल का वह हिस्सा था जहां पुरुष क़ैदी रखे जाते थे। यहां पर शोर मचा हुआ था और हवा औरतों की बैरक से भी ज़्यादा गंदी थी। क़ैदी झरोखों में से इन्हें झांक झांक कर देखने लगे। मर्दों की बैरक पार कर ये लोग दफ़्तर में पहुंचे जहां दो सिपाही मास्लोवा को साथ ले जाने के लिए पहले से खड़े थे। दफ़्तर के बाबू ने जो वहां बैठा काम कर रहा था एक सिपाही के हाथ में तम्बाकू की गंध से भरा काग़ज़ दिया और क़ैदी की ओर इशारा करते हुए बोला:

"ले जा।"

सिपाही ने काग़ज़ को अपने कोट की आस्तीन में खोंस लिया, और क़ैदी की ओर कनखियों से देख कर अपने जोड़ीदार को आंख मारी। यह सिपाही नीज्नी नोवगोरोद का रहने वाला कोई किसान था। उसका चेहरा लाल और चेचक के दाग़ों से भरा था। दूसरा सिपाही कोई चुवाश था और उसके गालों की हड्डियां उभरी हुई थीं। दोनों सिपाही क़ैदी को साथ लिये बाहर के दरवाज़े की ओर बढ़ गये, और जेल का आंगन पार कर के सड़क पर आ गये, जिस पर सड़क के बीचोंबीच चलते हुए वे शहर में से जाने लगे।

राह जाते लोग—गाड़ीवान, दूकानदार, रसोइये, मज़दूर, सरकारी दफ़्तरों के बाबू—सभी रुक रुक कर कुतूहल के साथ क़ैदी की ओर देखते। कुछ तो सिर हिला कर मन ही मन कहते: "बुरे कामों का यही फल होता है। अगर इसका आचरण अच्छा होता—जैसा कि मेरा है—तो इसे यह दिन न देखना पड़ता।" बच्चे उसे डाकू समझ कर सहमी हुई नज़रों से घूर घूर कर देखते। पर क़ैदी के साथ सिपाहियों को देख कर उनका डर दूर हो जाता, वे आश्वस्त हो जाते कि क़ैदी उनको कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकता। एक किसान शहर में कोयला बेचने आया था; कोयला बेच कर, और चाय पी कर अपने गांव लौट रहा था। क़ैदी को देख कर

उसके पास जा पहुंचा, छाती पर सलीब का निशान बनाया और एक कोपेक निकाल कर क़ैदी के हाथ में दिया। मास्लोवा शर्म से लाल हो गई, सिर झुका लिया और कुछ बुदबुदा दी।

सब लोग क़ैदी की ओर देख रहे थे। उसे इस बात से प्रसन्नता हुई कि लोग उससे आकर्षित हो रहे हैं। सिर उठाये बिना वह भी कनखियों से हर देखने वाले को देख लेती। जेल के बाद यहां हवा साफ़ थी। इससे भी उसका दिल ख़ुश हुआ। परन्तु उसके पैर चलने के आदी नहीं थे। जेल के रद्दी जूतों में नुकीले पत्थरों पर पांव रखते हुए उसे दर्द होता था। जहां तक बन पड़ता वह रुक रुक कर, हल्के हल्के पांव रखती। अनाज की एक दूकान के सामने कुछ कबूतर गुटरगूं गुटरगूं करते घूम-फुदक रहे थे। कोई उनसे छेड़ नहीं कर रहा था। उनके पास से गुज़रते हुए क़ैदी का पांव एक भूरे-नीले रंग के कबूतर को छू गया। कबूतर फर्र से उड़ा और पर फड़फड़ाता हुआ उसके कान के पास से निकल गया। वह मुस्करायी, पर फिर अपनी स्थिति का ख़्याल कर के उसने गहरी सांस ली।

२

क़ैदी मास्लोवा की जीवन-कहानी बड़ी साधारण सी है। उसकी मां एक जागीर में नौकरानी थी और उसी जागीर की गोशाला में ग्वालिन का काम करने वाली स्त्री की बेटी थी। शादी-ब्याह नहीं हुआ था। यह ज़मींदारी दो बुढ़िया बहिनों की मिलकियत थी। इन बुढ़िया बहिनों ने भी उम्र भर शादी नहीं की थी। मास्लोवा की मां के हर साल एक बच्चा हो जाता था। और जैसा कि गांव-गंवई के लोगों में अक्सर होता है, जब इस तरह का अवांछित बच्चा पैदा होता तो मां उसका बपतिस्मा तो करवा देती, पर बाद में उसकी कोई सुध-बुध न लेती। जिस औरत की गोद में बच्चा हो वह काम क्या करेगी? नतीजा यह होता कि बच्चा घूरे पर पड़ा रहता। एक एक कर के पांच बच्चे इसी तरह परलोक सिधार चुके थे।

पांचों का बपतिस्मा हुआ, पांचों में से किसी को भी खाना नहीं मिला, और पांचों ही घूरे पर मरने के लिए छोड़ दिये गये। छटे बच्चे

का वाप कोई आवारा जिप्सी था। वह बच्चा भी परलोक की राह लेता, लेकिन भाग्य बली है, एक दिन कहीं बुढ़िया ज़मींदारिन गोशाला में आ निकली। ग्वालिनों को डांटने लगी कि क्रीम में से गोबर की बदबू आ रही है। मास्लोवा की मां उस वक़्त गोशाला के एक कोने में पड़ी थी, और पास में एक ख़ूबसूरत, स्वस्थ, नव-जात बच्चा लेटा था। बुढ़िया ने ज़च्चा को यों गोशाला में लेटे देखा तो उसका पारा और चढ़ गया। ग्वालिनों को डांटने लगी कि इसे क्यों यहां लेटने की इजाज़त दी गई है। इसके बाद वह वहां से जाने को हुई, जब बच्चे पर नज़र पड़ते ही उसे रहम आ गया, और उसी वक़्त बच्चे को अपनी सरपरस्ती में लेने के लिए तैयार हो गई। बस, छोटी बच्ची के प्रति दयाभाव से प्रेरित होकर उसने उसका बपतिस्मा करवाया, मां के लिए कुछ नक़दी और थोड़े से दूध का इन्तज़ाम करवा दिया ताकि बच्ची की परवरिश होती रहे। बच्ची बच निकली। दोनों बुढ़िया बहिनें उसे "रक्षिता" कहा करती थीं।

जब बच्ची तीन बरस की हुई तो एक दिन उसकी मां बीमार पड़ गई और आनन-फ़ानन में मर गई। बच्ची को उसकी नानी ने पालना शुरू किया। लेकिन वृद्ध महिलाओं ने बच्ची को बुढ़िया नानी से ले लिया। नानी उसे क्या पालती, वह तो उस पर बोझ बनी हुई थी। लड़की बला की ख़ूबसूरत निकली। आंखें काली काली और स्वभाव चंचल और हंस-मुख। दोनों बुढ़िया बहिनों को मनबहलाव का एक साधन मिल गया।

दोनों बहिनों में से छोटी बहिन अधिक दयालु स्वभाव की थी, उसका नाम सोफ़िया इवानोव्ना था और उसी ने बच्ची का बपतिस्मा करवाया और उसकी धर्म-माता बनी थी। बड़ी बहिन जिसका नाम मारीया इवानोव्ना था, दिल की ज़रा कठोर थी। सोफ़िया इवानोव्ना बच्ची को अच्छे अच्छे कपड़े पहनाती, उसे पढ़ना-लिखना सिखाती। वह चाहती थी कि कुलीन लड़कियों की तरह यह भी पढ़-लिख जाय। परन्तु बड़ी बहिन मारीया इवानोव्ना को यह पसन्द न था। वह चाहती थी कि लड़की घर का काम-काज सीखे, बड़ी हो कर अच्छी नौकरानी बने। वह सख़्ती से काम लेती, सज़ाएं देती, और कभी कभी जब पारा तेज़ होता तो बच्ची को पीट भी देती। इस तरह यह छोटी लड़की दो भिन्न भिन्न प्रभावों के नीचे पलने लगी। नतीजा यह हुआ कि वह आधी नौकरानी और आधी कुलीन-बाला बन कर रह गई। दोनों बहिनें उसे कात्यूशा कह कर बुलातीं।

यह नाम इतना परिष्कृत नहीं था जितना कि कातेन्का, पर साथ ही इतना भद्दा भी नहीं था जितना कि कात्का। वह कमरों की झाड़-पोंछ करती, सीने-पिरोने का काम करती, देव-चित्रों के चौखटों को खड़िया मिट्टी से पालिश करती, और इसी तरह के छोटे-मोटे ऊपर के काम करती। कभी कभी कोई किताब लेकर बैठ जाती और बुढ़िया बहिनों को पढ़ कर सुनाती।

यद्यपि कई लोगों ने उसके सामने शादी के प्रस्ताव रखे, परन्तु वह नहीं मानी। कात्यूशा जानती थी कि इनमें से किसी के साथ व्याह करने का मतलब होगा उम्र भर चक्की पीसना। कुलीनों के घर में रह कर वह आराम तलब हो गई थी।

दिन बीतते गये और कात्यूशा सोलह बरस की हुई। एक दिन दोनों बहिनों का जवान भतीजा कुछ दिन उनके पास ठहरने के लिए आया। वह बेहद अमीर था, और विश्वविद्यालय में पढ़ता था। कात्यूशा, मन में ना ना करती हुई भी, उससे प्रेम करने लगी। दो साल बाद यही भतीजा अपनी रेजिमेंट में दाखिल होने जा रहा था। रास्ते में चार दिन के लिए अपनी फूफियों को मिलने के लिए रुक गया। रवाना होने से एक रात पहले उसने कात्यूशा की अस्मत लूटी, उसे सौ रूबल का नोट दिया और चलता बना। पांच महीने बाद कात्यूशा को यक़ीन हो गया कि उसे गर्भ हो गया है।

इसके बाद हर चीज़ उसे बुरी लगने लगी। एक ही बात रह रह कर उसके मन में उठती कि किसी तरह आने वाली लांछना से बच सके, अब इन महिलाओं की सेवा में उसका मन नहीं लगता था और वह काम में लापरवाही करने लगी थी। एक बार तो ऐसा हुआ कि वह दोनों मालकिनों के सामने किसी बात पर गुस्ताख़ी कर बैठी। उसकी समझ में नहीं आया कि बात कैसे हो गई। बाद में उसे बड़ा पछतावा भी हुआ। उसने मालकिनों को बुरा-भला सुनाया और कहा कि वे उसे रुख़सत कर दें। दोनों बहिनें उससे काफ़ी नाराज़ थीं, इसलिए रुख़सत पाने में देर नहीं लगी। इसके बाद उसे किसी पुलिस-अफ़सर के घर में नौकरानी की जगह मिल गई। यहां वह केवल तीन महीने तक टिक पायी। पुलिस-अफ़सर पचास साल का बूढ़ा कात्यूशा से छेड़-छाड़ करने लगा। एक दिन तो उसके पीछे ही पड़ गया। कात्यूशा आपे से बाहर हो गई। उसने उसे "गधा" और "शैतान" कह कर इस ज़ोर से धक्का दिया कि पुलिस-

अफ़सर के पांव लड़खड़ा गये और वह फ़र्श पर जा गिरा। इस "गुस्ताख़ी" के लिए कात्यूशा को नौकरी से हाथ धोना पड़ा। अब कहीं नौकरी ढूंढ़ना फ़िज़ूल था क्योंकि प्रसव का समय नज़दीक आ रहा था और वह गांव की एक दायी के घर जा पहुंची। यह दायी लुक-छिप कर कच्ची शराब भी बेचा करती थी। प्रसव में कोई कठिनाई न हुई। कात्यूशा के बेटा हुआ। लेकिन कात्यूशा को दायी से कोई छूत की बीमारी लग गई—दायी गांव में किसी दूसरे घर में जाया करती थी जहां से वह रोग ले आयी थी। मजबूर हो कर कात्यूशा को अपना बच्चा अनाथालय में भेजना पड़ा। एक बुढ़िया उसे वहां पहुंचाने गयी, लेकिन बच्चे ने वहां पहुंचते ही दम तोड़ दिया। यह ख़बर बुढ़िया ने लौट कर बतायी।

जब कात्यूशा दायी के घर आयी थी तो उसके पास कुल मिलाकर एक सौ सत्ताईस रूबल थे। इनमें से सत्ताईस रूबल तो उसकी अपनी कमाई के थे और सौ रूबल उस शख़्स ने दिये थे जिसने उसकी अस्मत लूटी थी। जिस दिन कात्यूशा ने दायी का घर छोड़ा उस दिन उसके पास केवल छः रूबल बाक़ी बच रहे थे। सोच समझ कर पैसे ख़र्च करना कात्यूशा के स्वभाव के प्रतिकूल था। वह अपने आप पर भी ख़र्च करती और जो कोई मांगता उसे देने में भी हाथ न रोकती। चालीस रूबल तो दायी ने इस बात के लिए ले लिये कि दो महीने तक उसने कात्यूशा को घर में रखा था और उसकी देख-रेख की थी। पच्चीस रूबल बच्चे को अनाथालय में भेजने में लग गये। चालीस रूबल दायी ने उधार मांग लिये—वह अपने लिये एक गाय ख़रीदना चाहती थी। इसके अलावा बीस रूबल कपड़े-लत्ते, खाने-पीने और अन्य छोटी-मोटी चीज़ों पर ख़र्च हो गये। जब जेब में पैसे न रहे तो कात्यूशा को फिर नौकरी की तालाश करनी पड़ी, और अब की बार उसे जंगलात के एक अफ़सर के घर जगह मिल गयी। यह अफ़सर शादी-शुदा आदमी था, परन्तु वह पहले दिन से ही कात्यूशा के पीछे पड़ गया। कात्यूशा को वह बुरा लगता था, और उससे बचने की उसने भरसक कोशिश की। लेकिन वह मालिक था और कात्यूशा नौकरानी थी। जिस काम पर जहां भी वह उसे भेजता उसे जाना पड़ता। इसके अलावा वह बड़ा धूर्त था, कई घाट का पानी पी चुका था। आख़िर वह कात्यूशा को भ्रष्ट करने में सफल हो गया। पर उसकी पत्नी को पता चल गया। एक दिन उसने कात्यूशा और अपने पति

को एक कमरे में अकेले पाया तो वह कात्यूशा को पकड़ कर पीटने लगी। कात्यूशा ने भी अपना बचाव करने के लिए हाथ उठाया, जिससे दोनों आपस में भिड़ गईं। कात्यूशा को निकाल बाहर किया गया, और उसे तनख़्वाह का एक पैसा भी नहीं दिया गया। कात्यूशा की एक मौसी शहर में रहती थी। कात्यूशा उसके पास चली गई। उसका पति जिल्दसाज़ी का काम करता था और किसी ज़माने में अच्छा खाता-पीता आदमी था। लेकिन एक एक कर के उसके सब ग्राहक टूट गये थे, और उसे शराब पीने की लत पड़ गई थी। अब जो पैसे हाथ लगते वह जेब में डाल कर शराबख़ाने में जा पहुंचता था।

मौसी ने एक छोटी सी लॉन्ड्री खोल रखी थी। जो थोड़ी बहुत आमदनी होती उससे वह घर चलाती, बच्चों का पालन करती तथा अपनी और अपने उजाड़ पति की ज़रूरतें पूरी करती। कात्यूशा को उसने लॉन्ड्री में धोबिन का काम करने की सलाह दी। पर कात्यूशा सोच में पड़ गई। मौसी की लॉन्ड्री में और भी धोबिनें काम करती थीं, उनकी कड़ी और यातनापूर्ण ज़िन्दगी को देख कर कात्यूशा का मन नहीं माना, और उसने रोज़गार दफ़्तर में नौकरी के लिए दरख़्वास्त कर दी। एक महिला के घर उसे नौकरी मिल गई जो अपने दो बेटों के साथ रहती थी। दोनों बेटे स्कूल में पढ़ते थे। बड़े लड़के ने शीघ्र ही अपनी पुस्तकों को ताक पर रखा और कात्यूशा के इर्दगिर्द मंडराने लगा। वह कात्यूशा का घड़ी भर भी पीछा नहीं छोड़ता था। मां ने देखा तो दोष कात्यूशा के सिर मढ़ा और उसे नौकरी से बरख़ास्त कर दिया।

कात्यूशा फिर नौकरी की तलाश में इधर-उधर भटकने लगी। आख़िर लाचार होकर वह फिर रोज़गार दफ़्तर में अर्ज़ी देने गई। वहां उसे एक महिला मिली, जिसके हाथों में अंगूठियां और नंगी गदरायी बांहों में कंगन चमक रहे थे। जब उसने देखा कि कात्यूशा नौकरी के लिए मारी मारी फिर रही है तो उसने कात्यूशा को अपना पता लिख कर दिया और उसे अपने घर आने को कहा। कात्यूशा गई। स्त्री ने बड़े प्यार से उसका स्वागत किया, केक-मिठाई और मीठी हल्की शराब उसके सामने रखी, फिर एक पुर्ज़ा लिखा और अपने नौकरानी को दे कर उसे कहीं भेज दिया। शाम के वक़्त एक ऊंचा-लम्बा आदमी आ पहुंचा, सिर पर लम्बे लम्बे सफ़ेद बाल और मुंह पर सफ़ेद दाढ़ी थी। कमरे में आते ही वह

कात्यूशा से सट कर बैठ गया और मुस्कराते हुए, अपनी चमकती आंखों से उसकी ओर देखने लगा और हंसी-मज़ाक़ करने लगा। घर-मालकिन बूढ़े को साथ वाले कमरे में ले गई। कात्यूशा के कान में कुछ शब्द पड़ गये। "अभी अभी गांव से आयी है, बिल्कुल ताज़ा है," घर-मालकिन कह रही थी। इसके बाद वह लौट कर आयी और कात्यूशा को एक तरफ़ ले गई और उसे बताया कि यह आदमी लेखक है, और बड़ा अमीर है, और यदि कात्यूशा उसके मन को भा गई तो वह उसकी मुंह मांगी मुराद पूरी करेगा। कात्यूशा सचमुच ही उसे भा गई और उसने उसे पचीस रूबल दिये। साथ ही यह भी कहा कि वह उसे अक्सर मिलता रहेगा। पचीस रूबल ख़र्च होते पता भी न चले। कुछ तो मौसी को दिये गये—रिहाइश और खान-पान के लिए, बाक़ी से कात्यूशा ने एक नया फ़्रॉक और टोपी और रिब्बन ख़रीद लिये। कुछ दिन बाद लेखक का फिर सन्देसा आया। कात्यूशा गई। अब की भी उसने पचीस रूबल दिये और साथ ही यह भी कहा कि मैं तुम्हारे अलग रहने के लिए जगह का इन्तज़ाम किये देता हूं।

एक जगह किराये पर ले ली गई, और कात्यूशा उसमें रहने चली गई। वहां पड़ोस में ही एक हंसमुख, जवान लड़का रहता था जो किसी दूकान में कारिन्दे का काम करता था। शीघ्र ही कात्यूशा उसे अपना दिल दे बैठी। उसने लेखक से बात छिपायी नहीं, बल्कि साफ़ साफ़ बता दिया और मकान छोड़ कर एक छोटी सी कोठरी कहीं पर अपने लिए किराये पर ले ली। कारिन्दे ने शादी करने का वचन दिया, लेकिन एक दिन बिना कुछ कहे-सुने किसी काम पर नीज्नी नोवगोरोद के लिए रवाना हो गया। ज़ाहिर था कि उसने यह काम कात्यूशा से पल्ला छुड़ाने के लिए किया था। कात्यूशा अकेली रह गई। उसकी इच्छा तो थी कि वहीं पर रहती रहे लेकिन पुलिस वालों ने कहा कि अगर अलग रहना चाहोगी तो पीला कार्ड (वेश्याओं का कार्ड) बनवाना पड़ेगा, और बाक़ायदा डाक्टरी जांच के लिए जाना पड़ेगा। कात्यूशा अपनी मौसी के घर वापिस लौट गई। जब मौसी ने कात्यूशा के बढ़िया कपड़े देखे, सिर पर टोपी और कन्धों पर बढ़िया ओढ़नी देखी तो उसे साहस न हुआ कि उसे धोबिन का काम करने को कह सके। उसने समझा कि उसकी भांजी धोबिन के स्तर से बहुत ऊंची उठ गई है। कात्यूशा को तो धोबिन का काम करने का ख़्याल तक नहीं आया। मौसी की लॉन्ड्री में जो धोबिनें काम करती थीं,

उन्हें जी-तोड़ मेहनत करनी पड़ती थी। कइयों को तो तपेदिक़ का रोग लग चुका था। सामने वाले कमरे में दिन भर वे ग्रपनी पतली पतली वांहों से कपड़े धोतीं या लोहा करती थीं। कमरा वेहद गरम ग्रौर सावुन की भाप से भरा रहता था। खिड़कियां गरमी-सरदी वारहों महीने खुली रहती थीं। उन्हें देख कर कात्यूशा का दिल हमदर्दी से भर उठता था। वह सोचती कि ग्रगर मुझे भी यही काम करना पड़ता तो मेरी क्या दशा होती ग्रौर वह सिर से पांव तक कांप उठती।

ऐन इसी समय जव कात्यूशा की स्थिति संकटमय हो रही थी, ग्रौर कहीं भी कोई "ग्रभिभावक" नज़र नहीं ग्रा रहा था, एक कुटनी की नज़र उस पर पड़ गई।

कुछ मुद्दत पहले कात्यूशा ने सिगरेट पीना शुरू कर दिया था, ग्रौर जव दूकान का कारिन्दा उसे धोखा दे कर भाग गया तो उसने शराव भी पीनी शुरू कर दी। यह ग्रादत ग्रव दिन व दिन जड़ पकड़ने लगी थी। वह शराव इसलिए नहीं पीती थी कि उसे इसमें मज़ा ग्राता था, वल्कि इसलिए कि इससे वह ग्रपने दुख भूले रहती थी। शराव पी कर वह ग्रपने को ग्रधिक स्वच्छन्द महसूस करती, ग्रपनी नज़रों में कुछ ऊंची उठ जाती, उसका ग्रात्मविश्वास वढ़ जाता। जव वह न पिये होती तो लज्जित ग्रौर उदास महसूस करती।

कुटनी ने मौसी को स्वादिष्ट मिठाइयां दीं ग्रौर कात्यूशा के लिए शराव लायी। शराव पिलाते समय कुटनी ने उस पर डोरे डाले: मैं तुम्हारे लिए शहर के सवसे वड़े, सवसे शानदार चकले में इन्तज़ाम कर दूंगी। वहां सुख-चैन से रहोगी, वीसियों तरह के फ़ाइदे होंगे। कात्यूशा के सामने दो ही रास्ते थे। या तो किसी के घर चाकरी करे, रोज़ रोज़ का ग्रपमान सहे, घर के ग्रादमी उसे परेशान करें, ग्रौर कभी कभी लुक-छिप कर उसके साथ व्यभिचार करें। या फिर वह ग्राराम से किसी चकले में जा बैठे, जहां से निकाले जाने का डर न हो, क़ानून की मंज़ूरी हो, ग्रौर खुले-ग्राम इन्द्रियभोग करे, ग्रौर साथ में पैसे भी ग्रच्छे वनाये। कात्यूशा को दूसरा रास्ता ग्रच्छा लगा। उसने यह भी सोचा कि इस तरह मैं उन सव लोगों से जी खोल कर वदला ले सकूंगी जिन्होंने मुझे यातनाएं पहुंचाई हैं—उस ग्रमीरज़ादे से जिसने मेरी ग्रस्मत लूटी ग्रौर उस कारिन्दे से जिसने मेरे साथ छल किया। इसके ग्रलावा, इस फ़ैसले पर पहुंचने का

एक और कारण भी था। कुटनी ने कात्यूशा को तड़क-भड़क वाले कपड़ों का लालच दिया। वहां मनचाहे कपड़े पहन सकोगी, वह कहती, मख़मल के, रेशमी, साटिन के, मन आये तो नीचे गले के फ़्रॉक बनवाना जो औरतें नाच के वक़्त पहनती हैं। कात्यूशा ने अपनी कल्पना में अपने को ऐसी ही एक पोशाक में देखा: शोख़ पीले रंग का रेशमी फ़्रॉक, जिस पर काली मख़मल का किनारा लगा है, नीचा गला और आधी-आस्तीनें। कात्यूशा का मन ललक उठा और उसने झट से अपना पासपोर्ट कुटनी के हवाले कर दिया। उसी दिन शाम को कुटनी ने एक गाड़ी पर उसे मदाम कितायेवा के बदनाम वेश्याघर में पहुंचा दिया।

उस दिन से कात्यूशा मास्लोवा का जीवन सभी मानवीय तथा दैवी नियमों के विरुद्ध घोर पाप का जीवन बन गया। ऐसा ही जीवन संसार में लाखों करोड़ों स्त्रियां व्यतीत करती हैं और सरकार न केवल उसकी खुली छुट्टी देती है, बल्कि उसकी सरपरस्ती भी करती है। इस तरह का जीवन बिताने वाली हर दस में से नौ औरतें घोर बीमारियों, युवावस्था में ही शारीरिक क्षति तथा मौत का शिकार हो जाती हैं।

वेश्याघर में रात भर विषय-वासना की आग धधकती रहती। रात बीतते न बीतते वेश्याएं खाटों पर जा पड़तीं और दूसरे दिन दोपहर तक गहरी नींद में डूबी रहतीं। दोपहर को तीन और चार बजे के दरमियान वे अपने गन्दे बिस्तरों पर से निढाल सी उठतीं। तब सोडे की बोतलें खुलतीं, कॉफ़ी के दौर चलते। फिर वे शिथिल सी अपने अपने कमरों में, रात के कपड़ों में या चोग़े-लबादे पहने इधर-उधर टहलने लगतीं। खिड़कियों के पर्दों में से बाहर झांकतीं, एक दूसरी के साथ झगड़तीं, लेकिन ये झगड़े बेजान और निरुत्साह होते। फिर नहातीं, इत्र छिड़कतीं, शरीर और बालों पर तरह तरह के ख़ुशबूदार तेल लगातीं, चुन चुन कर कपड़े निकालतीं, उन्हें पहन पहन कर देखतीं और वेश्याघर की मालकिन से उनके लिए झगड़तीं। बार बार शीशे में अपना रूप निहारतीं, मुंह पर पाउडर सुर्ख़ी लगातीं, भौंहें बनातीं। इस के बाद भोजन होता, पौष्टिक, चर्बीदार भोजन। फिर शोख़ रंग के रेशमी कपड़े पहने, जिनमें शरीर का बहुत सा भाग नंगा रहता, वे नीचे बैठक में उतर आतीं। बैठक जगमग कर रही होती और ख़ूब सजी होती। कुछ देर बाद चकलों के शौक़ीन आने लगते, संगीत बज उठता, नाच होने लगता। तरह तरह के लोग इनसे व्यभिचार

करते—बूढ़े, जवान और अधेड़ उम्र के; इनमें तरुण युवक भी होते और अस्थि-पंजर बूढ़े भी; कंवारे भी होते और व्याहे हुए भी; व्यापारी, दफ़्तरों के बाबू, यहूदी, तातार, आर्मीनियाई; अमीर और ग़रीब, बीमार और स्वस्थ, सभी तरह के लोग होते। कोई शराब पिये होता, कोई विना शराब पिये, कोई दुत्कारता और बुरा बोलता, कोई प्यार से बात करता; कोई फ़ौजी होता तो कोई नागरिक; कोई विद्यार्थी होता तो कोई स्कूल का बालक—हर वर्ग, हर उम्र और हर श्रेणी के लोग उनके साथ इन्द्रियभोग करते। वहां शोर मचा रहता, लोग लड़ते, झगड़ते, चिल्लाते, मज़ाक़ करते। शाम से लेकर पौ फटने तक गाना-वजाना होता रहता, लोग सिगरेट फूंकते और शराब पीते। सुबह तक क्षण भर के लिए भी वेश्याओं को चैन न मिलता। जब सुबह हो जाती तो वे पड़ रहतीं और गहरी नींद में डूब जातीं। हर रोज़ यही कुछ होता, हफ़्ते में छः दिन यही दिनचर्या रहती। सातवें दिन सरकारी क़ानून के मुताबिक वे पुलिस चौकी में डाक्टरी जांच के लिए जातीं। यहां पर सरकारी डाक्टर, कभी ध्यान से और कभी ठिठोलियां करते हुए उनका मुआइना करते। आत्म-रक्षा के लिए जो शर्म और हया न केवल इनसानों को बल्कि हैवानों को भी प्राप्त है, उसे यहां तार-तार किया जाता। डाक्टर उन्हें बाक़ाइदा लिख कर इजाज़त दे देते कि जो पाप वेश्याएं और उनके सहापराधी हफ़्ता भर करते रहे हैं, वे भविष्य में भी कर सकते हैं। दूसरा सप्ताह शुरू हो जाता, वही दिनचर्या, वही क्रम हर रात, गरमी हो या सरदी, काम का दिन हो या छुट्टी का, वही कुछ चलता रहता।

इसी तरह कात्यूशा मास्लोवा के जीवन के सात साल बीत गये। इस बीच उसने दो बार अपना स्थान बदला, एक बार अस्पताल में भी गई। चकले में रिहाइश के सातवें साल, जब उसकी उम्र छब्बीस बरस की थी वह घटना घटी जिसके लिए उसे गिरफ़्तार कर लिया गया। और आज, छः महीने तक चोरों और हत्यारों के बीच रखे जाने के बाद उसे कचहरी में पेश होने के लिए ले जाया जा रहा था।

२

जब कात्यूशा मास्लोवा दोनों सिपाहियों की निगरानी में कचहरी के सामने पहुंची तो वह चल चल कर थक चुकी थी। ऐन उसी वक़्त प्रिंस द्मीत्री इवानोविच नेख़्लूदोव अपने ऊंचे पलंग पर लेटा हुआ था। यह वही

शख़्स था जिसने मास्लोवा की अस्मत लूटी थी। ऊंचा पलंग, कमानीदार तोशक और तोशक के ऊपर पंखों वाला गद्दा। प्रिंस नेख़्लूदोव, बढ़िया साफ़ कपड़े पहने, लेटे लेटे सिगरेट के कश लगा रहा था और सोच रहा था कि आज उसे क्या क्या काम करना है और कल का दिन कैसे बीता था।

उसे याद आया, उसने पिछली शाम कोर्चागिन परिवार के साथ बितायी थी। कोर्चागिन परिवार बड़ा धनी और कुलीन परिवार था, और इस बात की बड़ी चर्चा थी कि इसी घर की लड़की से प्रिंस नेख़्लूदोव शादी करेगा। उसने गहरी सांस ली और सिगरेट का टोटा फेंक दिया। फिर अपना चांदी का सिगरेट-केस खोला, उसमें से वह दूसरा सिगरेट निकालने जा ही रहा था जब उसका इरादा बदल गया और बिस्तर में से अपनी नरम नरम सफ़ेद टांगें निकाल कर वह उठ खड़ा हुआ। प्रिंस नेख़्लूदोव ने स्लीपर पहने, अपने मांसल कंधों पर रेशमी ड्रेसिंग-गाउन ओढ़ा और बोझल किन्तु तेज़ चाल से चलता हुआ ड्रेसिंग-रूम में दाख़िल हुआ। ड्रेसिंग-रूम में से ओ-डी-कलोन और इत्रों की महक आ रही थी। वहां उसने एक ख़ास मंजन से दान्त साफ़ किये (बहुत से दान्तों के खोल भरे हुए थे) और गुलाब के पानी से कुल्ले किये, फिर शरीर के अलग अलग भागों को धोने और अलग अलग तौलियों से रगड़ने लगा। बढ़िया ख़ुशबूदार साबुन से हाथ धो कर उसने बड़े ध्यान से अपने लम्बे लम्बे नाख़ूनों को साफ़ किया। संगमरमर की चिलमची में अपने मुंह और स्थूल गरदन को धोया। इसके बाद तीसरे कमरे में गया जहां नहाने के लिए ऊपर फ़व्वारा लगा हुआ था। वहां उसने अपने बलिष्ठ, गोरे-चिट्टे और मांसल शरीर को ताज़ादम किया, खुरदरे तौलिये के साथ मल मल कर पोंछा। फिर साफ़ बढ़िया अंडरवियर पहने, चमकते पालिश किये बूट चढ़ाये और शीशे के सामने बैठ कर अपने घुंघराले बालों और छोटी सी काली दाढ़ी को दो अलग अलग ब्रुशों से कंघी किया। उसके माथे पर के बाल कुछ कुछ हल्के पड़ने लगे थे।

पहनावे की हर चीज़—बनयान, क़मीज़, सूट-बूट और नकटाई से लेकर पिन, कफ़-बटन तक—सबसे बढ़िया स्तर की, टिकाऊ, देखने में सादा और क़ीमती थी।

तरह तरह की दस नकटाइयां लटक रही थीं, और इतने ही नकटाई

पर लगाने वाले पिन भी पड़े थे। प्रिंस ने हाथ वढ़ाया और जो पहले हाथ लगा, उठा लिया। ज़माना था जव इन नई नई चीज़ों में उसकी रुचि थी। लेकिन अव उसके लिए इनमें कोई आकर्षण नहीं रहा था।

कुर्सी पर कपड़े तैयार रखे थे जिन्हें पहले से व्रुश कर दिया गया था। नेख़्लूदोव ने कपड़े पहने, और टहलता हुआ खाने वाले कमरे में दाख़िल हुआ। वह तरोताज़ा तो नहीं महसूस कर रहा था लेकिन साफ़-सुथरा ज़रूर हो गया था और कपड़ों से इत्र की महक आ रही थी। यह कमरा चौड़ा कम और लम्वा ज़्यादा था, और उसके वीचोंवीच एक शानदार मेज़ रखी थी, जिसके चारों पाये शेर के पंजों की शक्ल के वने थे। पास में इसी से मिलती जुलती वरतनों की वड़ी अलमारी भी रखी थी। अभी एक ही रोज़ पहले तीन नौकरों ने इस कमरे के फ़र्श को रगड़ रगड़ कर पालिश किया था। मेज़ पर एक वढ़िया कलफ़ लगा मेज़पोश विछा था जिस पर परिवार के नाम के अक्षर वड़े वड़े और ख़ूवसूरत ढंग से कढ़े हुए थे। कॉफ़ी का पात्र चांदी का था, जिसमें से भाप के साथ कॉफ़ी की महक की लपटें उठ रही थीं, साथ में चीनीदान, गरम-गरम क्रीम का जग, ताज़ा वनी पाव-रोटी के टुकड़े, रस्क और विस्कुटें रखी थीं। इनके साथ कुछेक चिट्ठियां, समाचारपत्र और "Revue des deux Mondes" नामक नयी किताव रखी थी।

नेख़्लूदोव चिट्ठियां खोल कर पढ़ना ही चाहता था कि गठीले वदन की एक अधेड़ उम्र की स्त्री ने गलियारे के दरवाज़े से हौले से कमरे में प्रवेश किया। उसने मातमी लिवास और सिर पर जालीदार टोपी पहन रखी थी जिससे पीछे की ओर अधिक चौड़ी होती हुई उसकी मांग ढकी हुई थी। यह स्त्री नेख़्लूदोव की स्वर्गीय मां की निजी नौकरानी आग्राफ़ेना पेत्रोव्ना थी। मां के परलोक सिधारने के वाद वह वेटे के पास घर की देख-रेख करने के लिए रह गई थी।

देखने में और चाल-ढाल में आग्राफ़ेना पेत्रोव्ना कुलीन महिला लगती थी। मालकिन की ज़िन्दगी में उसके साथ उसने कुल मिलाकर लगभग दस वरस विदेश में विताये थे। छोटी उम्र से ही वह नेख़्लूदोव परिवार में काम करती आ रही थी, इसलिए द्मीत्री इवानोविच को उस समय से जानती थी, जव घर के लोग उसे प्यार से मीतेन्का कह कर पुकारा करते थे।

"नमस्ते, द्मीत्री इवानोविच।"

"नमस्ते, कहो क्या है?" नेख़्लूदोव ने मज़ाक़िया लहजे में पूछा।

"प्रिंसेस के घर से चिट्ठी आई है—यह मुझे नहीं मालूम कि मां की तरफ़ से है या बेटी की तरफ़ से। बहुत पहले नौकरानी ले कर आई है। और अब मेरे कमरे में बैठी जवाब का इन्तज़ार कर रही है।" चिट्ठी पकड़ाते हुए आग्राफ़ेना पेत्रोव्ना के होंठों पर एक महत्वपूर्ण मुस्कान खेल गई।

"अच्छी बात है, ज़रा रुको," नेख़्लूदोव ने चिट्ठी लेते हुए कहा। आग्राफ़ेना पेत्रोव्ना को मुस्कराते देख कर उसकी भवें सिकुड़ गईं।

यह मुस्करा रही है, इसका मतलब है कि चिट्ठी छोटी प्रिंसेस कोर्चागिना की ओर से आई है। यह समझे बैठी है कि मैं उस लड़की से शादी करूंगा। लेकिन आख़िर इस तरह के अनुमान लगाने का क्या मतलब है?

"मैं उसे कहती हूं कि इन्तज़ार करे," आग्राफ़ेना पेत्रोव्ना ने कहा, और मेज़ साफ़ करने वाले ब्रुश को जो कहीं ग़लती से वहां पड़ा हुआ था, हटाते हुए तैरती हुई बाहर निकल गई।

चिट्ठी में से इत्र की महक आ रही थी। नेख़्लूदोव खोल कर पढ़ने लगा।

जिस काग़ज़ पर चिट्ठी लिखी गई थी वह मोटा और भूरे रंग का था, और कोनों पर खुरदरा था। लिखावट तीखी और शब्द एक दूसरे से दूर दूर लिखे हुए थे। लिखा था:

"आपने अपनी मौज में आकर कल कह तो दिया कि आज कोलोसोव और हमारे साथ कला-मण्डप देखने चलेंगे। लेकिन आप चल कैसे सकते हैं। इजाज़त हो तो आपको याद करा दूं कि आज २८ अप्रैल है और आपको कचहरी में जा कर जूरी में बैठना है; à moins que vous ne soyez disposé à payer à la cour d' assises les 300 roubles d'amende, que vous vous refusez pour votre cheval,* कल आपके चले जाने के बाद मुझे याद आया। सो, भूलना नहीं।

---

*अगर कचहरी में वक़्त से न पहुंच कर जुर्माने के ३०० रूबल भरना मंज़ूर हो, न कि उन ३०० से घोड़ा ख़रीदना, जैसा कि आपका इरादा है, तो बात और है। (फ़्रेंच)

प्रिं० म० कोर्चागिना"

चिट्ठी की दूसरी तरफ़ लिखा था:

"Maman vous fait dire que votre couvert vous attendra jusqu'à la nuit. Venez absolument à quelle heure que cela soit.*

M. K."

नेख़्लूदोव ने पढ़ कर मुंह वनाया। पिछले दो महीने से प्रिंसेस कोर्चागिना वड़ी पटुता से उसके साथ चालें चल रही थी, डोरे डाल रही थी। वह अप्रत्यक्ष वंधनों से उसे अपने साथ गांठती जा रही थी। यह रुक़्क़ा भी इसी खेल में एक चाल थी। परन्तु एक तो जो लोग अपनी जवानी खो चुके होते हैं यों भी शादी के मामले में बड़े हिचकिचाते हैं, हां अगर उन्हें किसी से गहरा प्रेम हो जाय तो और वात है, दूसरे यदि नेख़्लूदोव शादी करने का निश्चय कर भी लेता तो इस समय वह लड़की से विवाह का प्रस्ताव नहीं कर सकता था। इसका एक कारण था। यह नहीं कि दस वरस पहले उसने मास्लोवा की अस्मत लूटी थी और उसका परित्याग किया था। इस वात को तो वह भूल भी चुका था और इस कारण वह शादी न करे, इसका तो उसे ख़्याल भी नहीं आ सकता था। नहीं, वास्तव में कारण यह था कि उसका एक विवाहिता स्त्री के साथ सम्वन्ध हो गया था। अपनी ओर से तो वह इस सम्वन्ध को तोड़ चुका था लेकिन वह स्त्री मानने में न आती थी, इसे तोड़ने के लिए तैयार न थी।

स्त्रियों के मामले में नेख़्लूदोव कुछ कुछ शर्माता था। इसी शर्मीलेपन ने ही उस विवाहिता स्त्री को उकसाया और उसके मन में यह शर्मीलापन तोड़ने की उत्कट इच्छा पैदा हुई। जिस ज़िले में नेख़्लूदोव को वोट देने का हक़ दिया गया था, यह स्त्री उसी जिले के अभिजातों के प्रधान की पत्नी थी। इस औरत ने धीरे धीरे उसके साथ घनिष्ठता वढ़ा ली थी, और अव इसमें से निकलना उसके लिए कठिन हो रहा था। दिन प्रतिदिन इस सम्वन्ध से उसे अधिकाधिक विरुचि हो रही थी। एक वार वह प्रलोभन में फंस तो गया, पर फिर वह अपने को अपराधी महसूस करने

---

*मां ने आपको लिखने को कहा है कि आपका खाना रात तक लगा रहेगा। तो जव चाहें, अवश्य आयें। (फ़्रेंच)

लगा। पर उस औरत की स्वीकृति के बिना इस सम्बन्ध को तोड़ने का भी उसमें साहस नहीं था। यही कारण था जिससे वह प्रिंसेस कोर्चागिना के आगे विवाह का प्रस्ताव यदि चाहता तो भी नहीं रख सकता था।

मेज़ पर पड़ी चिट्ठियों में एक चिट्ठी इसी स्त्री के पति की थी। पता और डाकख़ाने की मोहर देख कर नेख़्लूदोव ने पहचान लिया, और पहचानते ही उसका चेहरा लाल हो गया और बदन में तनाव आने लगा। नेख़्लूदोव का स्वभाव ही ऐसा था कि जब कभी उसे ख़तरे का भास होता तो उसका जोश उभरने लगता। पर यह जोश शीघ्र ही ठण्डा पड़ गया। नेख़्लूदोव की ज़मींदारी का सबसे बड़ा टुकड़ा इसी ज़िले में था। अभिजातों के प्रधान ने केवल यह सूचना दी थी कि मई के अन्त में एक ज़रूरी बैठक होने वाली है जिसमें स्कूलों और सड़कों के प्रश्न पर वाद-विवाद होगा। वाद-विवाद में उसका भाग लेना बेहद ज़रूरी है, क्योंकि उमीद की जाती है कि प्रतिक्रियावादी इसका कड़ा विरोध करेंगे।

मार्शल उदारवादी विचारों का था। उन दिनों, ज़ार अलेक्सांद्र तृतीय के राज्यकाल में, प्रतिक्रियावाद की जो तेज़ लहर उठी थी, मार्शल अपने कुछ सहविचारकों के साथ उसके विरुद्ध संघर्ष कर रहा था, और यहां तक इस संघर्ष में खोया हुआ था कि उसे अपने पारिवारिक संकट की भी ख़बर न हुई।

इस आदमी के कारण नेख़्लूदोव को कैसी कैसी विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़ा था। एक एक कर के सभी नेख़्लूदोव को याद आने लगीं। एक बार उसे ऐसा भास हुआ था जैसे पति को पता चल गया है कि उसकी पीठ पीछे क्या हो रहा है, और वह उसे द्वन्द्वयुद्ध के लिए ललकारने वाला है। नेख़्लूदोव ने निश्चय किया था कि यदि द्वन्द्वयुद्ध हुआ तो वह अपनी पिस्तौल हवा में छोड़ेगा। उसे वह काण्ड भी याद हो आया जब वह स्त्री एक दिन मायूस हो कर बाहर बाग़ में दौड़ आई थी, यह कहती हुई कि वह तालाब में डूब मरेगी और वह उसे रोकने के लिए उसके पीछे पीछे भागा आया था।

"अब मैं वहां नहीं जा सकता और न ही उसका उत्तर पाये बिना कोई क़दम उठा सकता हूं," नेख़्लूदोव ने सोचा। हफ़्ता भर पहले उसने उसे एक एक निर्णायक पत्र लिख दिया था। उस ख़त में उसने अपना दोष

स्वीकार किया और कहा कि मैं इसका प्रायश्चित करने के लिए तैयार हूं, पर साथ ही यह भी लिख दिया कि आज से हमारा एक दूसरे के साथ कोई सम्बन्ध नहीं होगा। इसमें मुझे तुम्हारे ही हित का ख़्याल है, उसने लिखा। इस पत्र का अभी तक कोई उत्तर नहीं आया था। और यह एक अच्छा लक्षण भी हो सकता था। क्योंकि यदि वह सम्बन्ध तोड़ने से सहमत न होती तो ज़रूर लिखती, या ख़ुद चली आती, जैसे कि पहले कई वार आ चुकी थी। नेख़्लूदोव के कान में यह वात पड़ी थी कि कोई अफ़सर उस औरत पर डोरे डाल रहा है। यह सुन कर वह मन ही मन वेचैन तो हुआ था क्योंकि इससे उसकी ईर्ष्या जाग उठी थी, पर साथ ही उसे इस मिथ्याचार से छुटकारा पाने की उमीद भी वनने लगी थी।

दूसरा ख़त उसके अपने कारिन्दे की ओर से था। कारिन्दे ने लिखा था कि हुज़ूर का ज़मींदारी में एक वार आना वहुत ज़रूरी है ताकि ज़मीन-जायदाद आपके नाम हो सके। यह भी पूछा था कि क्या ज़मीन की देख-रेख उसी तरह चलती रहेगी जिस तरह मां जी के जीवन-काल में चलती थी या उसमें कोई परिवर्तन होगा। मैंने तो आपकी माता स्वर्गीय प्रिंसेस से निवेदन किया था, और अव आपसे निवेदन करता हूं कि कृषि औज़ारों की मात्रा बढ़ानी चाहिए और जो ज़मीन हमने किसानों को भाड़े पर दे रखी है उसकी अव ख़ुद काश्त करनी चाहिए। इस तरह ज़मीन-जायदाद से ज्यादा लाभ होगा। कारिन्दे ने इस वात के लिए क्षमा मांगी थी कि वह तीन हज़ार रूवल की रक़म अभी तक नहीं भेज पाया जो पहली तारीख़ तक भेज दी जानी चाहिए थी। अगली डाक से ज़रूर भेज दूंगा। कारण यह था कि किसानों से वसूली नहीं हो पायी थी। उनका अव कोई विश्वास नहीं रहा, मुझे मजवूर हो कर अधिकारियों के आगे दरख़ास्त करनी पड़ी। चिट्ठी पढ़ कर नेख़्लूदोव को ख़ुशी भी हुई और कुछ कुछ वुरा भी लगा। ख़ुशी इस वात की हुई कि कितनी वड़ी रियासत पर उसका अधिकार है। परन्तु इसी कारण उसे निराशा भी हुई, क्योंकि किसी ज़माने में वह हर्वर्ट स्पेंसर का वड़ा उत्साही समर्थक रहा था। स्पेंसर ने अपनी पुस्तक "Social statics" में लिखा था कि निजी सम्पत्ति का अधिकार न्यायोचित नहीं। स्वयं एक वड़ी ज़मींदारी का उत्तराधिकारी होने के वावजूद नेख़्लूदोव ने इस मत का समर्थन किया था। उस समय वह

युवक था और उसमें विचारों की दृढ़ता थी, जिस कारण उसने न केवल लोगों से वाद-विवाद ही किया कि ज़मीन को निजी सम्पत्ति क़रार देना अन्याय है और विश्वविद्यालय में इस विषय पर लेख ही नहीं लिखे वल्कि अपने विश्वास के अनुरूप आचरण भी किया, और जो पांच सौ एकड़ भूमि पिता की ओर से विरासत में मिली थी, उसे किसानों को दे दिया। परन्तु अब जब मां की वड़ी ज़मींदारी विरासत में मिलने पर वह भूमिपति वन रहा था तो उसके सामने दो में से एक ही रास्ता खुला था। या तो वह यह ज़मीन-जायदाद भी किसानों को सौंप दे जैसा कि आज से दस साल पहले उसने अपने पिता की ज़मीन के संबंध में किया था, या फिर चुपचाप यह क़बूल कर ले कि उसके पहले विचार ग़लत और झूठे थे।

ज़मीन-जायदाद वह किसानों को नहीं दे सकता था, क्योंकि यही उसकी जीविका का एकमात्र साधन था। वह सरकारी नौकरी करना नहीं चाहता था। साथ ही उसे अब ख़रचीली आदतें पड़ गई थीं जिन्हें छोड़ना उसके वस की वात नहीं थी। यह व्यर्थ भी था क्योंकि अब उन विचारों में उसके लिए पहले का सा आकर्षण भी नहीं रहा था। विचारों की दृढ़ता, जवानी का जोश और विलक्षण कार्य करने की महत्वाकांक्षा अब नहीं रही थी। पर वह यह भी नहीं कर सकता था कि ज़मीन-मिलकियत के अन्याय पर आंखें मूंद सके, जिसके स्पष्ट और अकाट्य तर्क उसने स्पेंसर के "Social statics" में पढ़े थे। इन्हीं तर्कों का योग्य समर्थन वाद में हैनरी जार्ज की पुस्तकों में उसे मिला था। फिर भी वह यह नहीं कर सकता था।

यही कारण था कि कारिन्दे का ख़त पढ़ कर उसका मन खिन्न हो उठा।

४

कॉफ़ी पी चुकने के वाद नेख़्लूदोव उठा और अपने पढ़ने वाले कमरे में चला गया ताकि सम्मन से देख सके कि उसे किस वक़्त कचहरी पहुंचना है। साथ ही वह प्रिंसेस के ख़त का जवाव भी देना चाहता था। जाते हुए वह अपने स्टूडियो में से गुज़रा। ईज़ल पर अब भी एक अधूरी तस्वीर

लगी थी। उस तस्वीर पर उसने दो साल तक निष्फल मेहनत करता रहा था। दीवारों पर कुछेक चित्र टंगे थे जो किसी ज़माने में उसने बनाये थे। यह सोच कर कि वह चित्रकला में भी आगे नहीं बढ़ पाया, उसमें कोई योग्यता नहीं, उसका मन क्षुब्ध हो उठा। कुछ दिनों से उसके मन को यह विचार परेशान किये हुए था, पर वह अपने आपको यह कहकर ढाढ़स दे लेता कि उसकी सौन्दर्य-भावना बेहद सूक्ष्म और विकसित है। जो भी हो, उसके मन में क्षोभ उठा।

सात साल पहले उसने नौकरी को लात मार दी थी, यह सोच कर कि उसमें कलाकार बनने की सच्ची योग्यता है। कला के शिखर पर खड़े हुए उसे बाक़ी सब काम तुच्छ नज़र आये थे। पर अब ज़ाहिर हो गया था कि ऐसा सोचने का उसे कोई अधिकार नहीं था। अब जब भी कोई चीज़ उसे इन बातों की याद दिलाती तो उसका मन क्षुब्ध हो उठता। स्टूडियो की अमीराना ढंग की साज-सज्जा को देख कर भी उसका मन उदास हुआ। इसलिए जब वह अपने अध्ययन-कक्ष में पहुंचा तो वह कुछ खीझा हुआ था। अध्ययन-कक्ष भी बड़े ठाठ का था, खुला, बड़ा कमरा और ऊंची छत। उसे इस तरह सजाया गया था कि आरामदेह भी हो और बेहद सुन्दर भी लगे।

लिखने के बड़े मेज़ पर, काग़ज़ रखने के ख़ाने में कचहरी का सम्मन पड़ा था। ऊपर "अविलम्ब" का लेबल लगा था। ग्यारह बजे उसे कचहरी पहुंचना था।

प्रिंसेस के ख़त का जवाब देने के लिए नेख़्लूदोव मेज़ के पास बैठ गया। वह लिखना चाहता था कि आपके निमन्त्रण के लिए धन्यवाद, मैं ज़रूर भोजन के समय आने की कोशिश करूंगा। उसने एक रुक़्क़ा लिखा, लेकिन फिर फाड़ दिया। उसमें कुछ अधिक घनिष्ठता आ गई थी। उसने दूसरा रुक़्क़ा लिखा। लेकिन वह भी ठीक नहीं बन पाया, उसमें उपेक्षा का भास होता था। उसने उसे भी फाड़ दिया, यह सोच कर कि कहीं प्रिंसेस पढ़ कर नाराज़ न हो। उसने बिजली की घण्टी का बटन दबाया। नौकर हाजिर हुआ। वह अधेड़ उम्र का चिड़चिड़ा सा आदमी लगता था, मुंह पर गलमुच्छे, ठुड्डी पर के बाल और मूंछें मुंडी हुईं, एक सूती एप्रन लटकाये हुए था।

"गाड़ी बुलाओ।"

"वहुत अच्छा हुज़ूर।"

"और जो नौकरानी चिट्ठी लेने के लिए वैंठी है उसे कहो कि मैं ज़रूर आने की कोशिश करूंगा। निमन्त्रण के लिए धन्यवाद कहना।"

"वहुत अच्छा हुज़ूर।"

नेख़्लूदोव मन में सोचने लगा–"जवाव तो लिख कर ही देना चाहिए, यों ज़वानी कहलवा देने में रुखाई सी लगती है, लेकिन क्या करूं, लिखा नहीं जाता। कोई वात नहीं, आज उसे मिलूंगा ही।" और वह उठ कर अपना ओवरकोट लेने चला गया।

जव वह घर में से निकला तो एक गाड़ी दरवाज़े पर खड़ी थी, जिसके पहियों पर रवड़ के टायर लगे थे। वह गाड़ीवान को जानता था। नेख़्लूदोव गाड़ी में वैठा ही था कि गाड़ीवान ने तनिक घूम कर कहा–

"कल आप प्रिंस कोर्चागिन के घर से अभी निकले ही होंगे कि मैं गाड़ी ले कर पहुंच गया। दरवाज़े पर दरवान ने वताया कि अभी अभी निकल गये हैं।"

"गाड़ीवानों तक को पता चल गया है कि कोर्चागिनों के साथ मेरे कैसे सम्वन्ध हैं," नेख़्लूदोव ने सोचा। और यह सवाल फिर उसके मन में उठा कि प्रिंसेस कोर्चागिना के साथ शादी करे या न करे। परन्तु वह कोई फ़ैसला नहीं कर पाया। आजकल वह किसी सवाल का भी फ़ैसला नहीं कर पा रहा था।

शादी के हक़ में कई वातें थीं। गृहस्थी का आराम तो होगा ही, साथ में, भलमनसाहत से ज़िन्दगी गुज़रने लगेगी, और मुख्यतः परिवार से, वाल-वच्चों से जीवन में कोई लक्ष्य आ जायेगा। आजकल तो जीवन विल्कुल शून्य हो उठा है। शादी के विरुद्ध भी कई वातें थीं, परन्तु उनमें मुख्य यही थी कि वह डरता था। सभी लोग जो अपने यौवन का पहला भाग गुज़ार चुके होते हैं शादी करने से घवराते हैं, डरते हैं कि उनकी आज़ादी छिन जायेगी। साथ ही, अनजाने में ही उनकी नज़रों में स्त्री वड़ी रहस्यमयी जीव हो उठती है, जिससे वे कुछ कुछ भय खाने लगते हैं।

इस विशेष स्थिति को सोचते हुए, मिस्सी के साथ शादी करने के हक़ में कई वातें थीं। (उसका असल नाम मारीया था, पर जैसा कि एक ख़ास श्रेणी के लोगों में पाया जाता है, उसे एक प्यार का नाम भी दिया गया था।) एक तो यह कि घर-परिवार अच्छा था। दूसरे लड़की हर

बात में आम लड़कियों से भिन्न थी—उसके बोलने का ढंग, चलने का, हंसने का ढंग, हर बात में भिन्नता थी। किसी विलक्षणता के कारण नहीं, वरन् अपनी "भद्रता" के कारण ही यह गुण उसने ग्रहण किया था। "भद्रता" से इस गुण की ठीक ठीक व्याख्या तो नहीं होती थी, हालांकि भद्रता का उसकी नज़रों में बड़ा मूल्य था। साथ ही वह किसी भी दूसरे आदमी को इतना अच्छा नहीं समझती जितना कि उसे—जिसका मतलब है कि वह उसके गुणों को पहचानती है, उसे समझती है। और जो लड़की उसके गुणों का मूल्य आंक सकती है, उसे समझ सकती है, जाहिर है कि वह सूझ-बूझ वाली लड़की है, उसकी पहचान अच्छी है। मिस्सी से शादी करने के विरुद्ध सबसे बड़ी बात यह थी कि संभव है उससे भी अच्छी लड़की मिल जाय। मिस्सी सत्ताईस बरस की हो चली है, जिसका मतलब है कि ज़रूर उसने पहले भी किसी से प्रेम किया होगा, कि उसे ही उसने सबसे पहले अपना दिल नहीं दिया। यह सोच कर उसके मन में चुभन सी हुई। उसके आत्मसम्मान को चोट लगी कि कोई दूसरा भी आदमी हो सकता है जिसे वह प्रेम कर सकती थी, भले ही वह अतीत में कभी रहा हो। बेशक उसे उस वक़्त यह मालूम तो नहीं हो सकता था कि भविष्य में कभी उसकी नेख़्लूदोव से मुलाक़ात होगी, परन्तु वह किसी दूसरे को प्यार कर सकती थी, यह सोच कर ही नेख़्लूदोव को बुरा लगा।

सो शादी करने के हक़ में भी उतने ही तर्क थे जितने कि उसके विरुद्ध। कम से कम नेख़्लूदोव को लगता था कि दोनों पलड़े एक जैसे भारी हैं। मैं भी कैसा गधा हूं, नेख़्लूदोव ने सोचा और हंसने लगा। उसे उस गधे की कहानी याद हो आई जो यह निश्चय नहीं कर पाता था कि भूसे के किस ढेर की ओर जाय।

"कुछ भी हो, जब तक मुझे मारीया वासील्येव्ना (अभिजातों के प्रधान की पत्नी) का जवाब नहीं आ जाता, और वह क़िस्सा ख़त्म नहीं हो जाता, मैं कुछ भी नहीं कर सकता," उसने मन ही मन कहा।

इस विश्वास से कि वह इस निश्चय को स्थगित कर सकता है, बल्कि उसे ज़रूर इसे स्थगित कर देना चाहिए, उसके मन को बड़ा ढाढ़स मिला।

"बस ठीक है, इस बारे में फिर सोचा जायेगा," उसने मन ही मन कहा। गाड़ी पक्की सड़क पर चलती हुई धीरे से कचहरी के फाटक के सामने जा कर रुक गई।

"अब तो मेरा काम यह है कि पूरी ईमानदारी से अपना सार्वजनिक कर्तव्य निभाऊं, जैसे कि मैं सदा करता रहा हूं, और जैसा करना उचित भी है। और यह काम अक्सर दिलचस्प भी होता है।" पहरी के पास से हो कर नेख़्लूदोव ने कचहरी में प्रवेश किया।

५

कचहरी के गलियारों में अभी से बड़ी चहल-पहल थी। चपरासी काग़ज़ों के फ़ाइल उठाये, और तरह तरह के सन्देशों के पुर्ज़े पकड़े, इधर से उधर, पांव घसीटते भागे फिरते थे। उनके सांस फूल रहे थे। दरबान, वकील और अदालती अफ़सर इधर-उधर आ जा रहे थे। मुद्दई और मुद्दालेह, जो हिरासत में नहीं थे, दीवारों के साथ साथ, मुंह लटकाये घूम रहे थे या बैठे इन्तज़ार कर रहे थे।

"ज़िला अदालत कहां पर है?" नेख़्लूदोव ने एक चपरासी से पूछा।

"कौन सी अदालत, दीवानी या फ़ौजदारी?"

"मैं जूरी का सदस्य हूं।"

"वह फ़ौजदारी अदालत है। इधर दायें हाथ जाइये, फिर बायें घूम कर दूसरा दरवाज़ा।"

नेख़्लूदोव उसी रास्ते जाने लगा।

दरवाज़े पर दो आदमी खड़े इन्तज़ार कर रहे थे। उनमें से एक कोई व्यापारी था, ऊंचा-लम्बा और मोटा-ताज़ा आदमी, जो ख़ूब चहक रहा था। प्रत्यक्षतः अभी अभी खा पी कर आया था और कुछ चढ़ा रखी थी। दूसरा कोई यहूदी था और किसी दूकान का कारिन्दा था। वे ऊन के भाव के बारे में बात कर रहे थे जब नेख़्लूदोव ने पास आ कर पूछा कि क्या जूरी का यही कमरा है?

"जी, श्रीमान्, यही कमरा है। क्या आप भी हमीं में से हैं—जूरी में बैठने आये हैं?" व्यापारी ने हंस कर आंख मारते हुए पूछा।

नेख़्लूदोव ने हां में जवाब दिया।

"तो फिर एक साथ ही काम करेंगे, क्यों?" व्यापारी कहता गया। "मेरा नाम बाक्लाशोव है, द्वितीय व्यापारी गिल्ड का सदस्य हूं।" और उसने अपना चौड़ा, पिलपिला हाथ, जो इतना मोटा था कि मुड़ता भी नहीं था, आगे बढ़ाया। "जो बन पड़ा करेंगे। और श्रीमान् का शुभनाम?"

नेख़्लूदोव ने अपना नाम बताया और सीधा जूरी के कमरे में चला गया।

कमरे में उस वक़्त दसेक आदमी होंगे, सभी भिन्न भिन्न प्रकार के। कुछ बैठे थे, कुछ इधर-उधर टहल रहे थे, कुछेक खड़े एक दूसरे की ओर देख रहे थे और आपस में परिचय प्राप्त कर रहे थे। सभी लोग अभी अभी आये थे। उनमें से एक अवकाशप्राप्त फ़ौजी अफ़सर था जिसने वर्दी पहन रखी थी। कुछेक ने फ़ॉक-कोट पहने थे, वाक़ियों ने साधारण कोट। एक आदमी देहाती लिवास में था।

सभी सन्तुष्ट नज़र आते थे क्योंकि एक सामाजिक कर्तव्य पूरा करने जा रहे थे। हालांकि कुछ लोगों को अपना काम-धन्धा छोड़ कर आना पड़ा था, और वे इस पर बड़बड़ा भी रहे थे।

मौसम की चर्चा हो रही थी कि इस बार वसंत जल्दी आ गया है, और इस बात की कि कैसे केस उन्हें सुनने होंगे। कुछेक का एक दूसरे के साथ परिचय हो चुका था, कुछ लोग खड़े खड़े एक दूसरे के बारे में अनुमान लगा रहे थे कि कौन आदमी कौन है। जिन लोगों का नेख़्लूदोव से परिचय नहीं हुआ था वे उसके साथ हाथ मिलाने के लिए उत्सुक हो उठे, उससे परिचय प्राप्त करना वे अपना गौरव समझते थे। और नेख़्लूदोव इसे अपना हक़ समझता था। अपरिचित लोगों के बीच सदा उसे ऐसा ही महसूस होता था। यदि कोई आदमी उससे पूछता कि वह क्यों अपने को अधिकांश लोगों से बड़ा समझता है, तो शायद इस सवाल का वह स्वयं कोई जवाब न दे पाता। जिस प्रकार का जीवन उसने अब तक बिताया था उसमें कोई विशेषता नहीं थी। हां, वह अंग्रेज़ी, फ़्रांसीसी और जर्मन भाषाएं बड़ी नफ़ासत से बोल सकता था, और उसके कपड़े, नेकटाइयां, कफ़-बटन वग़ैरा बहुत बढ़िया होते थे। उन्हें वह सबसे फ़ैशनेबुल दूकानों पर ख़रीदा करता था। परन्तु इन बातों के कारण तो कोई अपने को औरों से बड़ा नहीं समझ सकता। फिर भी वह अपने को बड़ा समझना चाहता था, लोगों से जो सम्मान प्राप्त होता उसे वह अपना हक़ समझता, और यदि कोई उसके प्रति उपेक्षा से पेश आता तो उसके दिल को चोट लगती। इस जूरी के कमरे में उसे वह मान नहीं मिला, इसलिए उसकी भावनाओं को ठेस लगी। जूरी के सदस्यों में से एक आदमी को वह पहले से जानता था। प्योत्र गेरासिमोविच उसका नाम था, किसी

ज़माने में वह नेख़्लूदोव की वहिन के वच्चों को पढ़ाने आया करता था। नेख़्लूदोव उसके कुल नाम से अनभिज्ञ था। कई बार इस बात के लिए नेख़्लूदोव ने डींग भी मारी थी। अब यह आदमी एक पब्लिक स्कूल का अध्यापक था। उसकी वेतक़ल्लुफ़ी नेख़्लूदोव सहन नहीं कर सका। वह हंसता तो वड़े आत्मतुष्ट लोगों की तरह। नेख़्लूदोव को वह आदमी वड़ा अशिष्ट लगा।

"ओ-हो! तो तुम्हें भी फंसा लिया इन्होंने!" कहते हुए प्योत्र गेरासिमोविच ने नेख़्लूदोव का अभिवादन किया, और ठहाका मार कर हंसने लगा। "तुम वच कर निकल नहीं पाये, हैं?"

"मैंने वच कर निकलने की कोई कोशिश भी नहीं की," नेख़्लूदोव ने गंभीर आवाज़ में उत्तर दिया। उसके लहजे में कठोरता थी।

"वाह, मान लिया! जन-सेवा का क्या वढ़िया शौक़ है! पर ज़रा ठहर जाओ। जव भूख लगेगी और नींद से ऊंघने लगोगे, तव पूछूंगा। तव कोई दूसरा ही राग आलापोगे।"

नेख़्लूदोव ने सोचा कि "यह पादरी का वच्चा अभी मेरा कन्धा भी थपथपाने लगेगा," और सीधा वहां से हट कर दूसरी तरफ़ जाने लगा। उसका मुंह लटक गया, मानो किसी ने अभी अभी आ कर ख़वर दी हो कि उसके सव संवंधी स्वर्ग सिधार गये हैं। एक जगह पर कुछ आदमी एक ऊंचे-लम्वे, रोवीले आदमी के इर्द-गिर्द खड़े थे, जो वड़े जोश से कोई वात सुना रहा था। उसकी दाढ़ी-मूंछ मुंडी हुई थी। बात एक मुक़द्दमे के वारे में थी जो दीवानी अदालत में चल रहा था। जिस मज़े से वह प्रख्यात वकीलों और जजों के नाम ले ले कर वात सुना रहा था उससे जान पड़ता था कि उसे मुक़द्दमे की पूरी पूरी जानकारी है। मुक़द्दमा एक वुढ़िया औरत का था। वह कह रहा था कि वकील ने इतनी कुशलता से पैरवी की कि मुक़द्दमे का सारा रुख़ ही वदल गया। वुढ़िया औरत के हक़ में न्याय था, पर अव उसे उलटे लेने के देने पड़ रहे हैं। अव उसे अच्छी ख़ासी रक़म अपने मुख़ालिफ़ को देनी पड़ेगी।

"वकील नहीं जादूगर है," वह कह रहा था।

सव लोग वड़े ध्यान से सुन रहे थे। सवके चेहरे पर आदर का भाव था। कुछेक ने अपनी राय देने की कोशिश की, लेकिन उसने किसी को वोलने नहीं दिया, मानो वही मुक़द्दमे के वारे में सव कुछ जानता हो।

नेख़्लूदोव को वड़ी देर तक इन्तज़ार करना पड़ा, हालांकि वह ख़ुद भी देर से आया था। एक जज अभी तक नहीं पहुंचा था, और सव लोग उसका इन्तज़ार कर रहे थे।

६

अदालत का प्रधान जज वक़्त से पहले पहुंच गया था। ऊंचा-लम्बा, हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति, वड़े वड़े सफ़ेद गलमुच्छे। विवाहित होते हुए भी वह वेलगाम होकर भोग-विलास करता था। उसकी पत्नी भी यही कुछ करती थी। इसलिए दोनों स्वतन्त्र थे। आज प्रातः उसे स्विट्ज़रलैंड की एक लड़की से ख़त आया था। यह लड़की पहले इसके वच्चों की गवर्नेस रह चुकी थी और अव दक्षिणी रूस के किसी स्थान से पीटर्सवर्ग जा रही थी। उसने लिखा था कि वह शाम को होटल "इतालिया" में ३ और ६ वजे के वीच उसका इन्तज़ार करेगी। लड़की का नाम क्लारा वासील्येव्ना था। क़द-वुत की गुड़िया सी, और सिर पर लाल-लाल वाल थे। पिछले साल गर्मी के दिनों में देहात में इनका रोमांस शुरू हुआ था। अव प्रधान जज की इच्छा थी कि जितनी जल्दी हो सके अदालत की कार्यवाही शुरू की जाय, ताकि वह ६ वजे से पहले उसके पास पहुंच सके।

वह निजी कमरे में गया और दरवाज़े को अन्दर से चिटख़नी चढ़ा दी। फिर एक अलमारी में से डंवल का जोड़ा निकाल कर सामने रखा। दोनों वाज़ुओं को सामने, ऊपर, नीचे, दायें और वायें वीस वार हिला हिला कर व्यायाम किया। फिर दोनों डंवल उठा कर, हाथों को ऊपर कर के, धीरे धीरे, तीन वार उठक-वैठक लगायी।

"सेहत क़ायम रखने का अगर कोई साधन है तो ठण्डे जल से स्नान और व्यायाम," वह वोला, और अपने वायें हाथ से दायें वाज़ू की मांसपेशी को दवा दवा कर देखने लगा। तर्जनी में उसने सोने की अंगूठी पहन रखी थी। इसके वाद वह व्यायाम का दूसरा आसन करने की तैयारी करने लगा। (जव भी अदालत की कार्रवाही लम्वी हो तो वह ये दोनों आसन ज़रूर कर लिया करता था)। लेकिन उसी वक़्त किसी ने दरवाज़े को धक्का दिया। प्रधान जज़ ने फ़ौरन डंवल अपनी जगह पर रख दिये और दरवाज़ा खोला।

"माफ़ कीजिये, आप को इन्तज़ार करना पड़ा।"

अदालत के एक सदस्य ने कमरे में प्रवेश किया। छोटा क़द, आंखों पर सुनहरी चश्मा और ऊंचे-ऊंचे कन्धे। उसके चेहरे पर असन्तोष की छाप थी।

"आज फिर मात्वेई निकीतिच अभी तक नहीं पहुंचा," उसने खीज कर कहा।

"अभी तक नहीं पहुंचा। वह हमेशा देर से आता है," प्रधान जज ने वर्दी पहनते हुए कहा।

"मैं हैरान हूं कि उसे शर्म तक नहीं आती," सदस्य ने ग़ुस्से से कहा, और बैठ कर सिगरेट सुलगाने लगा।

यह आदमी हर काम में बड़ी मीन-मेख़ निकालता था। उस दिन प्रातः इसका अपनी पत्नी के साथ झगड़ा हो गया था। महीना ख़त्म होने से पहले ही पत्नी के पास घर-ख़र्च के पैसे चुक गये थे और उसने इससे कुछ पैसे पेशगी मांगे। इसने देने से इन्कार कर दिया था। इस पर झगड़ा हो गया। पत्नी ने साफ़ कह दिया कि अगर तुम्हारा ऐसा व्यवहार रहेगा तो आज घर में खाना नहीं बनेगा। इस बात पर वह घर से निकल आया था, लेकिन दिल ही दिल में डर रहा था कि कहीं उसकी धमकी सच्ची ही न निकले, क्योंकि उसकी पत्नी अपनी सनक में जो करे सो थोड़ा। प्रधान जज के दमकते, स्वस्थ, हंसमुख और दयालु स्वभाव चेहरे को देख कर उसने मन ही मन कहा, "भोगो सदाचार का फल।" प्रधान कुर्सी पर बैठा, दोनों कोहनियां मेज़ पर दूर दूर रखे, अपने नाज़ुक गोरे-गोरे हाथों से अपने गलमुच्छे सहला रहा था। घने, सफ़ेद गलमुच्छों के नीचे वर्दी कोट के कालर पर बढ़िया कसीदाकारी थी। "यह आदमी सदा प्रसन्नचित्त और सन्तुष्ट रहता है, और मेरी क़िस्मत में क्लेश भोगना ही लिखा है।"

सेक्रेटरी ने प्रवेश किया। वह किसी केस के काग़ज़ात लाया था।

"धन्यवाद," प्रधान जज ने सिगरेट सुलगाते हुए कहा, "पहले कौन सा मुक़द्दमा शुरू करें?"

"मैं सोचता हूं ज़हर वाला मुक़द्दमा ठीक रहेगा," सेक्रेटरी ने उपेक्षा से कहा।

"ठीक है, यही सही," प्रधान जज ने कहा। उसने सोचा कि चार वजे तक मैं इसे ख़त्म कर सकूंगा और फिर यहां से जा सकूंगा। "क्या मात्वेई निकीतिच आ गया है?"

"अभी तक नहीं आया।"

"और ब्रेवे?"

"ब्रेवे आ गया है।"

"तो अगर मिले तो उसे कह देना कि हम पहले ज़हर वाला मुक़द्दमा लेंगे।"

ब्रेवे सरकारी वकील था जिसे इस मुक़द्दमे की पैरवी करनी थी।

गलियारे में ब्रेवे और सेक्रेटरी की मुटभेड़ हो गई। ब्रेवे कन्धे ऊपर को उठाये, वग़ल में वैग दवाये, एड़ियां खटखटाता हुआ तेज़ तेज़ जा रहा था। वह दूसरे वाज़ू को अपने सामने दायें-वायें झुला रहा था।

"तैयार हो न? मिख़ाईल पेत्रोविच पूछ रहे थे," सेक्रेटरी ने कहा।

"मैं हर वक़्त तैयार रहता हूं," सरकारी वकील ने जवाब दिया, "कौन सा मुक़द्दमा पहले होगा?"

"ज़हर वाला मुक़द्दमा।"

"ठीक है," सरकारी वकील ने कहा। परन्तु दिल में उसे यह ठीक नहीं लगा। रात को वह अपने एक दोस्त की विदायी पार्टी में गया था और रात के २ वजे तक शराव और जुआ चलता रहा था और वाद में सव यार-दोस्त चकले में गये थे। उसी चकले में जहां छः महीने पहले मास्लोवा रह रही थी। इस कारण उसे ज़हर वाला केस पढ़ने का वक़्त नहीं मिला था, और वह सोच रहा था कि अव वैठ कर उसे देखूंगा। सेक्रेटरी को यह मालूम था, इसी लिए उसने ज़हर वाले मुक़द्दमे से ही कार्यवाही शुरू करने की सलाह प्रधान जज को दी थी। सेक्रेटरी उदारवादी विचारों का था, वल्कि किसी हद्द तक रेडिकल था। इसके विपरीत ब्रेवे कट्टरपन्थी था, और रूस में आ कर आवाद हुए सभी जर्मनों की तरह, उसके मन में भी आर्थोडाक्स मत के लिए विशेष अनुराग था। सेक्रेटरी को वह वुरा लगता था और उसे इस पद पर देख देख कर जलता था।

"और स्कोप्त्सी* वाले मुक़द्दमे का क्या करोगे?" सेक्रेटरी ने पूछा।

---

*स्कोप्त्सी—एक धार्मिक समुदाय।

"मैंने पहले ही कह दिया है कि गवाहों के बिना मैं कुछ नहीं कर सकता। यही बात मैं अदालत में भी कह दूंगा।"

"वाह, इससे क्या फ़रक़ पड़ता है?"

"मैं नहीं कर सकता," ब्रेवे ने झुंझला कर हाथ हिलाते हुए कहा, और तेज़ तेज़ चलता हुआ अपने निजी दफ़्तर में चला गया।

वह जान बूझ कर इस मुक़द्दमे को स्थगित करना चाहता था और जिन गवाहों का बहाना वह बना रहा था वे बिल्कुल ग़ैरज़रूरी थे। असल वजह यह थी कि अगर मुक़द्दमा पढ़े-लिखे जूरी के सामने पेश हुआ तो संभव है अपराधी छूट जायं। इसलिए प्रधान जज से मिल कर उसने यह फ़ैसला कर लिया था कि इस मुक़द्दमे की पेशी अगले इजलास में रखी जायेगी, और वह भी इलाक़े के किसी छोटे क़स्बे में जहां जूरी में किसानों की संख्या अधिक होगी और इससे सज़ा दिलवाना आसान होगा।

गलियारे में हलचल बढ़ने लगी। दीवानी अदालत के दरवाज़े पर लोगों की भीड़ जमा हो गई। यहां पर उसी मुक़द्दमे की सुनाई हो रही थी जिसकी चर्चा वह रोबीला आदमी कर रहा था जिसे सभी मुक़द्दमों की ख़बर रहती थी।

कचहरी में थोड़ी देर के लिए इजलास बरख़ास्त हुआ, और वह बूढ़ी महिला निकल कर बाहर आयी, जिसकी ज़मीन-जायदाद छिन गई थी। प्रतिभावान वकील ने ऐसी बढ़िया जिरह की थी कि सारी सम्पत्ति उसके मुवक्किल व्यापारी के हाथ आ गई थी, जिस पर वास्तव में उसका कोई अधिकार न था। जजों को सब मामला मालूम था। वकील और मुवक्किल भी मामले को ख़ूब जानते थे। पर वकील ने जो चाल चली वह ऐसी थी कि यह फ़ैसला अनिवार्य हो गया कि बुढ़िया की ज़मीन-जायदाद व्यापारी को दे दी जाय।

बुढ़िया गठीले बदन की स्त्री थी। उसने बढ़िया कपड़े पहन रखे थे और टोपी पर बड़े-बड़े फूल लगा रखे थे। दरवाज़े में से निकल कर वह रुक गई और अपनी छोटी लेकिन मोटी मोटी बांहें फैला कर बार बार अपने वकील से कहने लगी—"इसका मतलब क्या है? यह हो कैसे सकता है? इसका ख़्याल ही किसी को कैसे आ सकता है?"

वकील का ध्यान किसी दूसरी तरफ़ था, और उसकी आंखें बुढ़िया की टोपी में लगे फूलों को देखे जा रही थीं।

बूढ़ी महिला के पीछे पीछे वह प्रतिभावान वकील दीवानी अदालत के कमरे में से निकल कर बाहर आया जिसने यह मुक़द्दमा जीता था और अपने मुवक्किल से दस हज़ार रूबल ले कर उसे एक लाख रूबल की ज़मीन-जायदाद दिलवा दी थी। यह उसकी ही एक चाल का करिश्मा था कि बुढ़िया अपना सब कुछ गंवा बैठी। कमरे में से निकलते वक़्त उसकी सफ़ेद कलफ़ चढ़ी कमीज़ उसकी छोटी सी वास्कट के नीचे से ख़ूब चमक रही थी। वह तेज़ तेज़ क़दम रखता हुआ चला आ रहा था, चेहरा ख़ुशी और आत्मसन्तोष से दमक रहा था, और चाल-ढाल ऐसी मानो सबकी आंखें उसी पर लगी हों और वह कह रहा हो—"नहीं, नहीं, ताली बजाने की कोई ज़रूरत नहीं।"

७

आख़िर मात्वेई निकीतिच भी आ पहुंचा। उसके पहुंचने पर अदालत के पेशकार ने जूरी के कमरे में प्रवेश किया। पतला सा आदमी, जब वह चलता तो एक ओर को झूलता था। उसका निचला होंठ भी एक ओर को लटका हुआ था।

पेशकार पढ़ा-लिखा आदमी था, विश्वविद्यालय में तालीम पा चुका था, और बेहद ईमानदार था, पर ज़्यादा देर तक कहीं भी नौकरी नहीं कर पाता था, क्योंकि उसे शराब पीने की इल्लत पड़ गई थी। तीन महीने हुए एक काउंटेस की सिफ़ारिश पर उसे कचहरी में नौकरी मिली थी। काउंटेस ने भी सिफ़ारिश इसलिए की कि वह उसकी पत्नी पर मेहरबान थी। और वह इस बात पर बड़ा ख़ुश था कि इस नौकरी पर वह अब तक डटा हुआ था।

नाक पर अपनी कमानीदार ऐनक चढ़ाते हुए और उसके पीछे से सबको देखते हुए पेशकार बोला—

"तो साहिबान, सब पहुंच गये?"

"सब मौजूद हैं," हंसमुख व्यापारी ने कहा।

"अच्छी बात है, अभी देख लेते हैं।" और जेब में से एक सूची निकाल उसने एक एक कर के नाम पढ़ने शुरू कर दिये। नाम पढ़ता

जाता और कभी ऐनक में से और कभी ऐनक के ऊपर से झांक झांक कर वहां बैठे आदमियों को देखता जाता।

"राज्य-परिषद् के सदस्य श्री इ० म० निकीफ़ोरोव!"

"हां, मैं हाज़िर हूं।" एक रोब-दाब वाले आदमी ने कहा। यह वही सज्जन थे जो कचहरियों के मामलात की पूरी पूरी जानकारी रखते थे।

"पैंशन याफ़्ता कर्नल इवान सेम्योनोविच इवानोव!"

"हाज़िर!" एक पतला सा आदमी बोला जिसने अवकाश प्राप्त अफ़सरों की वर्दी पहन रखी थी।

"द्वितीय व्यापारी गिल्ड के सदस्य, प्योत्र बाक्लाशोव!"

"तैयार-बर-तैयार," हंसमुख व्यापारी ने खीसियां निपोरते हुए कहा।

"गार्ड्स के लेफ़्टिनेंट प्रिंस द्मीत्री नेख़्लूदोव!"

"हाज़िर!" नेख़्लूदोव ने जवाब दिया।

ऐनक के ऊपर से झांकते हुए पेशकार ने झुक कर बड़ी नम्रता तथा प्रसन्नता से अभिवादन किया, मानो उन्हें औरों से अलग समझ कर सत्कार करना चाहता हो।

"कैप्टेन यूरी द्मीत्रियेविच दानचेंको, ग्रिगोरी येफ़ीमोविच कुलेशोव, व्यापारी," इत्यादि। दो को छोड़ कर सभी उपस्थित थे।

"तो साहिबान अदालत में तशरीफ़ ले चलिये," बड़े आतिथ्यपूर्ण ढंग से दरवाज़े की ओर इशारा करते हुए पेशकार ने कहा।

सभी दरवाज़े की ओर बढ़े। एक दूसरे के लिए रास्ता छोड़ देने के लिए वे तनिक रुक जाते फिर आगे बढ़ जाते। गलियारे में से होते हुए वे कचहरी में दाख़िल हुए।

अदालत का कमरा ख़ूब खुला और लम्बा था। कमरे के एक ओर मंच था जिस पर चढ़ने के लिए तीन सीढ़ियां थीं। मंच पर एक बड़ा मेज़ रखा था जिस पर हरे रंग का मेज़पोश बिछा था। मेज़पोश के किनारों पर गहरे हरे रंग का बार्डर लगा था। मेज़ के पीछे तीन बड़ी बड़ी बलूत की कुर्सियां रखी थीं। कुर्सियों की पीठ ऊंची थी, और उन पर नक़्क़ाशी का काम हुआ था। कुर्सियों के पीछे, दीवार पर ज़ार का एक वृहत् रंगीन चित्र लटक रहा था। चित्र में ज़ार ने वर्दी और कंधे पर पट्टा पहन रखे थे, हाथ तलवार की मूठ पर था, और एक पांव तनिक आगे को रखा

था। दायीं ओर कोने में एक चौखटा लटक रहा था जिसमें ईसा की प्रतिमा थी, सिर पर कांटों का ताज, और चौखटे के नीचे बाईवल-पाठ के लिए मेज़ रखी थी। उसी तरफ़ सरकारी वकील की मेज़ लगी थी। बायीं ओर, सरकारी वकील की मेज़ के ऐन सामने सेक्रेटरी की मेज़ थी, और लोगों के बैठने की जगह के नज़दीक बलूत की लकड़ी का डंडहरा लगा था। डंडहरे के पीछे कटघरा था जिसमें क़ैदी के बैठने की बेंच थी। इस वक़्त कटघरा ख़ाली था। मंच के दायें हाथ जूरी के लिए ऊंची पीठ की कुर्सियां रखी थीं। नीचे, फ़र्श पर वकीलों की मेज़ें थीं। यह सब कमरे के सामने वाले हिस्से में था। कमरे के बीचोंबीच एक डंडहरा लगा था जो पिछले हिस्से और सामने के हिस्से को एक दूसरे से अलग करता था। कमरे के पिछले हिस्से में बेंचों की क़तारें लगी थीं। सामने के बेंच पर चार औरतें और दो आदमी बैठे थे। औरतें या नौकरानियां थीं या किसी फ़ैक्टरी की मज़दूरिनें। दोनों आदमी श्रमिक थे। कमरे के वैभवपूर्ण वातावरण का उन पर इतना रोब था कि वे एक दूसरे से बात भी करते तो फुसफुसा कर।

जब जूरी के सदस्य अपनी अपनी जगह पर बैठ गये, तो पेशकार फिर तिरछा चलता हुआ सामने आ खड़ा हुआ और ऊंची आवाज़ में बोला, मानो वहां बैठे लोगों को डराना हो—

"जज साहिबान तशरीफ़ ला रहे हैं!"

सभी उठ खड़े हुए। जज साहिबान मंच की ओर बढ़े। सबसे आगे प्रधान जज था, बढ़िया गलमुच्छों और मांसपेशियों वाला। उसके पीछे सुनहरी ऐनक वाला दूसरा जज था जिसका मुंह हर वक़्त लटका रहता था और आज वह पहले से भी अधिक लटका हुआ था। दरअसल अभी अभी उसे उसका साला मिला था। साला बहिन को मिल कर चला आ रहा था, और बहिन ने कहा था कि आज खाना नहीं पकेगा।

"मतलब है आज किसी ढाबे की तलाश करनी होगी," हंसते हुए साले ने कहा।

"यह हंसी की बात नहीं है," जज ने कहा, और उसका मुंह और भी लटक आया।

अन्त में अदालत के तीसरे जज ने प्रवेश किया। यह मात्वेई निकीतिच था, वही आदमी जो हमेशा देर से पहुंचता था। लम्बी सी दाढ़ी और

बड़ी बड़ी, गोल-गोल, सद्भावनापूर्ण आंखें। उसे पेट में सूजन की शिकायत रहती थी आज सुबह, अपने डाक्टर के कहने पर एक नया इलाज शुरू किया था, जिस कारण उसे घर पर ज्यादा देर तक रुकना पड़ा। मंच पर चढ़ते समय वह बड़ा विचारमग्न नज़र आ रहा था। कारण, उसकी एक आदत थी—उसके मन में तरह तरह के सवाल उठते, और उन सवालों का हल ढूंढ़ने के लिए वह तरह तरह की अजीब तरकीबें सोचता रहता। अभी अभी उसके मन में सवाल उठा था कि यह नया इलाज फ़ायदेमन्द होगा या नहीं। और जवाब में उसने सोचा था कि मैं दरवाज़े से ले कर अपनी कुर्सी तक अपने क़दम गिनूंगा। अगर तो ये क़दम तीन पर तक़सीम हो सके तब तो मेरी सूजन ठीक हो जायेगी वरना नहीं। क़दम संख्या में छब्बीस निकले, लेकिन उसने कुर्सी के पास पहुंच एक हल्का सा क़दम और ले कर पूरे सत्ताईस बना लिये।

तीनों जज, प्रधान और उसके साथी अपनी अपनी वर्दियों में जिनके कॉलरों पर सुनहरी गोटा लगा था, बड़े रोबीले नज़र आ रहे थे। ऐसा लगता जैसे वे स्वयं भी इस बात को महसूस कर रहे हों। वे बड़ी जल्दी से मेज़ के पीछे लगी अपनी ऊंची कुर्सियों पर आ बैठे, मानो अपने ही गौरव से अभिभूत हो उठे हों। मेज़ पर हरा कपड़ा बिछा था, एक तिकोनी वस्तु जिसके सिर पर उक़ाब बना था, मेज़ पर रखी थी। इसके अलावा दो कांच के गुलदान थे, जो शक्ल-सूरत से उन पात्रों के से लगते थे जिनमें जल-पानगृहों में मिठाई रखी जाती है। साथ ही क़लमदान, क़लमें, साफ़ काग़ज़ और तरह तरह की ख़ूब तराशी हुई पेंसिलें रखी थीं।

जजों के पीछे पीछे सरकारी वकील भी आया। एक बाज़ू के नीचे बैग, दूसरा झूलता हुआ, वह आते ही सीधा खिड़की के पास अपनी जगह पर जा बैठा, और फ़ौरन काग़ज़ात पर नज़रसानी करने लगा। वह एक क्षण भी ज़ाया नहीं करना चाहता था। उसका ख़्याल था कि कार्रवाई शुरू होने से पहले वह अपना केस तैयार कर लेगा। उसे सरकारी वकील बने बहुत अरसा नहीं हुआ था। अभी तक उसने केवल चार मुक़द्दमे लिये थे। ऊपर उठने की उसके मन में बड़ी लालसा थी, और उसने दृढ़ निश्चय कर रखा था कि ज़रूर किसी न किसी ऊंचे ओहदे पर पहुंचूंगा। इसलिए उसकी यही कोशिश होती कि जो भी मुक़द्दमा वह हाथ में ले उसमें मुद्दालेह को

सज़ा दिलवाये। ज़हर वाले केस को वह मोटे तौर पर जानता था, उसने अपनी तक़रीर की रूपरेखा भी तैयार कर ली थी, लेकिन उसे कुछ तथ्यों की ज़रूरत थी, जिन्हें वह अब जल्दी जल्दी नोट कर रहा था।

मंच से हट कर ऐन दूसरी तरफ़ सेक्रेटरी बैठा था। जिस जिस काग़ज़ की उसे ज़रूरत हो सकती थी उसने पहले से तैयार कर लिया था, और अब बैठा एक लेख पढ़ रहा था। यह वह लेख था जिस पर सेंसर ने प्रतिबन्ध लगा दिया था। एक दिन पहले उसने यह लेख मंगवा कर पढ़ लिया था, मगर इस वक़्त उसे दोबारा इसलिए पढ़ रहा था कि वह इसकी चर्चा दाढ़ी वाले जज के साथ करना चाहता था, जिसके साथ उसके विचार मिलते थे।

८

प्रधान जज ने कुछेक काग़ज़ों को उलट-पलट कर देखा, पेशकार और सेक्रेटरी से कुछेक सवाल पूछे जिनका उत्तर उन्होंने हां में दिया। इसके बाद उसने क़ैदियों को पेश करने का हुक्म दिया।

फ़ौरन कटघरे का दरवाज़ा खुला और दो सशस्त्र पुलिस के सिपाही टोपियां लगाये और हाथों में नंगी तलवारें पकड़े दाख़िल हुए। उनके पीछे पीछे तीन क़ैदी—एक आदमी और दो औरतें—अन्दर आयीं। आदमी का चेहरा दाग़ों से भरा था और सिर पर लाल रंग के बाल थे। उसने क़ैदियों का लबादा पहन रखा था जो उसके लिए बहुत बड़ा था, लम्बाई में भी और चौड़ाई में भी। आस्तीनों में से हाथों के अंगूठे निकालते हुए उसने अपने दोनों बाज़ू बग़लों के साथ सटा कर रखे थे ताकि आस्तीनें खिसक कर हाथों को भी न ढक लें, क्योंकि लबादे की आस्तीनें भी बड़ी लम्बी थीं। जजों और दर्शकों की ओर उसने नहीं देखा। वह सीधा बेंच की ओर एकटक देखता रहा और उसके दूसरे सिरे पर जा कर बड़े ध्यान से एक कोने में बेंच के सिरे पर बैठ गया, और बाक़ी सारी जगह दूसरों के लिए ख़ाली छोड़ दी। फिर उसकी आंखें प्रधान जज पर जम गईं, और उसकी गालों की मांसपेशियां थिरकने लगीं, मानो वह कुछ फुसफुसा रहा हो। उसके पीछे पीछे एक स्त्री आई। इसने भी क़ैदियों का लबादा पहन रखा था और सिर पर भी क़ैदियों का रूमाल बांधे हुए थी। वह बड़ी उम्र की थी, और चेहरा ज़र्द था। आंखों पर न बरौनियां थीं, न भौंहें।

और आंखें लाल थीं। वह बिल्कुल शान्त जान पड़ती थी। चलते हुए उसका लबादा किसी चीज़ के साथ अटक गया। बड़े ध्यान से उसने उसे छुड़ाया और आराम से आ कर बैठ गई।

तीसरी क़ैदी मास्लोवा थी।

ज्यों ही वह अन्दर आई, कचहरी में बैठे सभी आदमियों की नज़रें उसकी ओर घूम गई और वे उसके गोरे मुंह, चमकती काली आंखों और लबादे के नीचे छातियों के उभार को देखने लगे। और तो और जब तक वह बैठ नहीं गई पुलिस का हथियारबन्द सिपाही भी जिसके पास से वह हो कर आयी थी, एकटक उसकी ओर देखता रहा, और फिर घूम कर खिड़की की ओर देखने लगा। उसके बदन में एक सिहरन सी हुई मानो उसे किसी जुर्म का एहसास होने लगा हो।

प्रधान जज चुप बैठा रहा। जब क़ैदी अपनी अपनी जगह पर बैठ गये और मास्लोवा भी बैठ गई तो वह सेक्रेटरी की तरफ़ मुख़ातिब हुआ।

फिर रोज़मर्रा की कार्रवाई शुरू हुई। जूरी में बैठे सदस्यों की गणना हुई, कौन आया है, कौन नहीं आया। जो नहीं पहुंचे उनकी प्रधान जज ने टीका-टिप्पणी की, और उन पर जुर्माने लगाये; जिन सदस्यों ने छुट्टी की दरख़्वास्त दे रखी थी, उनके बारे में फ़ैसला किया, साथ ही अतिरिक्त सदस्यों को नियुक्त किया।

प्रधान जज ने छोटे छोटे काग़ज़ के टुकड़े लिये, और उन्हें तह कर के एक गुलदान में रखा। फिर अपनी बांहों पर से आस्तीनें थोड़ी सी पीछे को हटाईं। आस्तीनों पर सुनहरी गोटा लगा था। आस्तीनें हटाने पर उसकी कलाई पर के बाल नज़र आने लगे। फिर उसने एक मदारी के से अन्दाज़ में हाथ हिलाये और एक एक कर के काग़ज़ निकाल निकाल कर खोलने और पढ़ने लगा। उसके बाद, आस्तीनें नीची कर के, प्रधान जज पादरी की तरफ़ मुख़ातिब हुआ और उसे जूरी के सदस्यों से शपथ लेने का आदेश दिया।

बूढ़ा पादरी चलता हुआ देवप्रतिमा के नीचे रखे मेज़ के पास आ कर खड़ा हो गया। उसका चेहरा फूला हुआ और ज़र्द था। बदन पर उसने कत्थई रंग का चोग़ा पहन रखा था, गले से सोने का क्रॉस झूल रहा था और सीने पर एक छोटा सा तमग़ा लटका हुआ था। वह चलता तो अपनी कड़ी, बोझल टांगों को घसीटते हुए।

जूरी के सदस्य उठे और जमघट सा बना कर मेज़ की ओर जाने लगे।

"आइये, चले आइये," अपने गुदगुदे हाथ से क्रॉस को खींचते हुए पादरी ने कहा, और मेज़ के पास जूरी के सदस्यों के पहुंचने का इन्तज़ार करने लगा।

यह काम करते हुए पादरी को पूरे छियालीस बरस हो चुके थे। और तीन साल बाद वह अपनी स्वर्ण जयन्ती मनाने की तैयारी कर रहा था, और उसी ठाठ-बाठ से मनाना चाहता था जिससे कुछ ही मुद्दत पहले लाट पादरी ने अपनी स्वर्ण जयन्ती मनाई थी। जिस दिन ज़िला अदालत खुली थी, यह पादरी उसी दिन से इसमें काम कर रहा था। उसे बड़ा गर्व था कि उसने हज़ारों आदमियों को शपथ दिलवाई है, और अपनी वृद्धावस्था के बावजूद अपने धर्म, देश और परिवार के हित में बराबर मेहनत किये जा रहा है। उसे आशा थी कि वह अपने परिवार के लिए एक मकान और कम से कम तीस हज़ार रूबल तक के सूद वाले शेयर छोड़ जायेगा। उसे इस बात का कभी ख़्याल नहीं आया कि जिस पवित्र इंजील पर हाथ रखवा कर वह लोगों से शपथ दिलवाता है, उसी इंजील का यह उपदेश है कि शपथ लेना पाप है। उसने अपनी स्थिति का ख़्याल करते हुए यह कभी नहीं सोचा कि वह कितनी लज्जाजनक बात कर रहा है। बजाय इसके कि यह काम उसके अन्तःकरण को कचोटता, उसे अपना यह काम अच्छा लगता था क्योंकि इसमें उसे तरह तरह के बड़े लोगों से मिलने का मौक़ा मिलता था। अभी अभी उसे विख्यात वकील से मिल कर बहुत ख़ुशी हुई थी जिसने एक ही मुक़द्दमे में दस हज़ार रूबल कमा लिये थे। यह वही बड़े बड़े फूल लगी टोपी वाली बूढ़ी महिला का मुक़द्दमा था। पादरी का दिल वकील के प्रति आदर से भर उठा था।

जब सबके सब सीढ़ियों पर से मंच पर चढ़ गये तो पादरी ने अपना मैला-कुचैला लबादा उठाया और सिर टेढ़ा कर के उसे पहन लिया। उसके बाद अपने बिरले बालों को ठीक कर के वह जूरी के सदस्यों की ओर घूम कर कांपती आवाज़ में बोला—

"अपना दायां हाथ उठाइये, इस तरह, और उंगलियों को एक साथ जोड़ कर रखिये।" अपना मोटा, गुदगुदा हाथ उठाया और अंगूठे और दो उंगलियों को एक साथ इस तरह जोड़ कर दिखाया मानो चुटकी लेने

जा रहा हो। "अब मेरे पीछे पीछे बोलिये: सर्वशक्तिमान परमात्मा, परम पावन इंजील, तथा भगवान के संजीवनी क्रॉस का नाम ले कर मैं वचन देता हूं कि इस कार्य में..." एक एक वाक्यांश के बाद रुक रुका कर वह बोल रहा था। "हाथ मत झुकाओ, इस तरह सीधा रखो," उसने एक युवक को कहा जिसकी बाजू ढीली पड़ गई थी, "...कि इस कार्य में जिसे..."

कुछ लोगों ने—जैसे गलमुच्छों वाले रोबीले आदमी, कर्नल और व्यापारी आदि ने—अपने बाजू ख़ूब ऊंचे और उंगलियों को बिल्कुल उसी तरह बना कर रखा जैसे पादरी ने कहा था, मानो उन्हें ऐसे करना अच्छा लगता हो। बाक़ी लोगों ने भी हाथ उठाये मगर लापरवाही से और अनमनेपन से। कुछ लोग ख़ूब ऊंची आवाज़ में ललकारते हुए इन शब्दों को बोलने लगे मानो कह रहे हों, "कुछ भी हो जाय, मैं मन की बात कह के छोड़ूंगा।" कुछ लोग बड़ी धीमी, फुसफुसाती आवाज़ में बोल रहे थे, और बड़े धीरे धीरे। जब पीछे रह जाते, तो, मानो डर कर, तेज़ तेज़ बोलने लगते, ताकि पादरी के साथ साथ चलने लगें। कुछेक ने अपनी उंगलियां ख़ूब ज़ोर से मिला रखी थीं, मानो डर रहे हों कि चुटकी में से कुछ गिर न जाय। बाक़ी लोगों की उंगलियां कभी खुलतीं और कभी बन्द होतीं। सभी को झेंप हो रही थी—सिवाय पादरी के। पादरी समझ रहा था कि वह बड़ा उपयोगी और महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न कर रहा है।

शपथ के बाद प्रधान जज ने जूरी को अपना मुखिया निर्धारित करने के लिए कहा। सभी सदस्य उठे और भीड़ सी बनाते हुए परामर्श-कक्ष में चले गये। वहां पहुंचते ही, लगभग सभी ने सिगरेट सुलगा लिये। किसी ने रोबीले आदमी को मुखिया बनाने की तजवीज़ की। सर्वसम्मति से उसे चुन लिया गया। इस पर जूरी के सदस्यों ने सिगरेट बुझाये, टुकड़े फेंके और अदालत में वापस आ गये। रोबीले आदमी ने प्रधान जज को सूचित किया कि उसे मुखिया चुना गया है, इसके बाद सभी अपनी ऊंची-ऊंची पीठ वाली कुर्सियों पर जा बैठे।

सब काम जल्दी जल्दी, विधिवत् और बड़े सुचारू रूप से हो रहा था। प्रत्यक्षतः इसमें भाग लेने वाले ख़ुश थे, उन्हें इस तरह का काम अच्छा लगता था जो विधिवत्, व्यवस्थित और गंभीर ढंग से किया जाय। इससे उन्हें इस बात का दृढ़ विश्वास होने लगता था कि वे जनता के

प्रति कोई बड़ा गंभीर और महत्वपूर्ण कर्तव्य निभा रहे हैं। नेख़्लूदोव भी ऐसा ही महसूस कर रहा था।

जब जूरी बैठ गये तो प्रधान जज ने उन्हें एक भाषण दिया जिसमें उन्हें बताया कि उनके क्या कर्तव्य, अधिकार तथा ज़िम्मेदारियां हैं। बोलते समय वह बार बार करवट बदलता, कभी दायें हाथ की टेक लेता कभी बायें की, कभी कुर्सी की पीठ का सहारा ले कर बैठता, कभी कुर्सी के बाज़ुओं का। कभी सामने पड़े काग़ज़ों को सीधा रखता, कभी पेंसिल उठा लेता, कभी काग़ज़ काटने का चाक़ू उठा लेता।

जो सवाल भी आपको क़ैदियों से पूछने हों, आप मेरी मार्फ़त पूछेंगे, प्रधान जज ने कहा। आप काग़ज़-पेंसिल का प्रयोग कर सकते हैं, और जो चीज़ें यहां सबूत के लिए रखी गई हैं, उनकी जांच कर सकते हैं। आप का फ़ैसला न्याय पर आधारित होना चाहिए, झूठ पर नहीं। आपको अपनी ज़िम्मेदारी का अहसास करते हुए कोई भेद की बात बाहर नहीं करनी होगी, और बाहर के किसी आदमी से सम्पर्क स्थापित नहीं करना होगा। यदि आपकी ओर से भूल हुई तो आपको इसकी सज़ा भुगतनी पड़ेगी।

सभी बड़े ध्यान से सुन रहे थे, सभी के चेहरों पर आदर का भाव था। व्यापारी, जिससे ब्रांडी की बू आ रही थी, और जो अपनी हिचकी दबाने की भरसक कोशिश कर रहा था, एक एक वाक्य पर सिर हिला हिला कर अपनी सम्मति प्रकट कर रहा था।

९

अपना भाषण समाप्त करने पर प्रधान जज क़ैदियों की ओर मुख़ातिब हुआ।

"सीमन कार्तीनकिन!"

सीमन उछल कर उठ खड़ा हुआ। उसके गालों की मांसपेशियां पहले से भी ज़्यादा तेज़ी से थिरकने लगीं।

"तुम्हारा नाम?"

"सीमन पेत्रोविच कार्तीनकिन," उसने फटी हुई आवाज़ में तेज़ तेज़ जवाब दिया। ज़ाहिर था कि वह यह जवाब देने के लिए पहले से ख़ूब तैयारी कर के आया था।

"कौन वर्ण?"

"किसान, हुज़ूर।"

"अपना गांव, ज़िला व इलाक़ा बताओ।"

"गांव बोर्की, कुप्यान्स्की पेरिश, ज़िला क्रापीवेन्स्की, तूला प्रदेश।"

"उम्र?"

"तैंतीस साल, जन्म सन् अठारह सौ..."

"धर्म?"

"धर्म रूसी, ऑर्थोडोक्स ईसाई।"

"शादी हुई है?"

"जी नहीं, हुज़ूर।"

"क्या धन्धा करते हो?"

"होटल 'माव्रीतानिया' में नौकर था।"

"पहले कभी तुम पर मुक़द्दमा चला है?"

"नहीं हुज़ूर, कभी नहीं, क्योंकि जिस तरह पहले हम रहते थे..."

"पहले तुम पर कभी मुक़द्दमा नहीं चलाया गया?"

"नहीं हुज़ूर, ख़ुदा रहम करे।"

"क्या नालिश की नक़ल तुम्हें मिल गई है?"

"जी, मिल गई है।"

"बैठ जाओ।"

"येवफ़ीमिया इवानोव्ना बोच्कोवा," प्रधान जज ने दूसरी क़ैदी को पुकारा।

परन्तु सीमन बोच्कोवा के सामने अब भी खड़ा था।

"बैठ जाओ, कार्तीनकिन।"

कार्तीनकिन फिर भी खड़ा रहा।

"कार्तीनकिन बैठ जाओ!"

परन्तु कार्तीनकिन फिर भी खड़ा रहा। इस पर पेशकार भागा हुआ उसके पास गया, और सिर एक तरफ़ को टेढ़ा किये आंखें फाड़ फाड़ कर उसकी तरफ़ देखते हुए बड़े दर्द भरे लहजे में फुसफुसाया—"बैठ जाओ, बैठ जाओ!" तब वह झट से बैठ गया, उसी तरह जिस तरह वह उठा था, अपना गाउन अपने इर्द-गिर्द लपेटा, और उसके गाल फिर चलने लगे।

"तुम्हारा नाम?" प्रधान जज ने थक कर गहरी सांस लेते हुए पूछा, बिना क़ैदी की ओर देखे। उसकी नज़र सामने पड़े काग़ज़ पर थी। प्रधान जज को अपने काम में इतना अभ्यास हो गया था कि जल्दी जल्दी काम भुगताने के लिए वह एक वक़्त में दो काम करता था।

बोच्कोवा ४३ बरस की थी, और कोलोम्ना नगर की रहनेवाली थी। वह भी "माव्रीतानिया" होटल में नौकरानी का काम करती थी।

"मुझ पर पहले कभी मुक़द्दमा नहीं चलाया गया, और मुझे नालिश की नक़ल मिल गई है।" उसने तुनक कर जवाब दिये। उसके लहजे से ऐसा जान पड़ता था मानो हर जवाब के साथ यह भी कहना चाहती हो, "हां, मैं येवफ़ीमिया बोच्कोवा हूं, मुझे नालिश की नक़ल मिल गई है, जो जानता है जाने, मुझे किसी की कोई परवाह नहीं, और देखना, मेरे साथ मुंह मत लगाना।"

आख़िरी सवाल का जवाब देते ही वह अपने आप बैठ गई। उसने इस बात का इन्तज़ार नहीं किया कि कोई कहेगा तब बैठूंगी।

प्रधान जज तीसरी क़ैदी की ओर मुख़ातिब हुआ:

"तुम्हारा नाम?" प्रधान जज की आवाज़ में विशेष नम्रता आ गई, क्योंकि उसके दिल में औरतों के लिए बेहद प्रेम था। "तुम्हें खड़ा होना पड़ेगा," उसने धीमी, मृदु आवाज़ में कहा, जब उसने देखा कि मास्लोवा अब भी बैठी हुई है।

मास्लोवा झट उठ खड़ी हुई, और छाती फुलाये प्रधान जज की ओर देखने लगी। उसकी काली काली हंसती आंखों में अजीब तत्परता का भाव था।

"तुम्हारा नाम?"

"ल्युबोव," उसने जल्दी से कहा।

जिस समय क़ैदियों से सवाल पूछे जाने लगे थे, तो नेख़्लूदोव ने अपनी कमानीदार ऐनक नाक पर चढ़ा ली थी। "नहीं, यह नहीं हो सकता, नामुमकिन है!" उसकी आंखें क़ैदी के चेहरे पर से हटाये न हटती थीं। उसने क़ैदी का जवाब सुना और मन ही मन कहा—"ल्युबोव! यह कैसे हो सकता है?"

प्रधान जज अगला सवाल पूछने जा ही रहा था, परन्तु साथ में बैठे ऐनक वाले जज ने टोक दिया, और ग़ुस्से से फुसफुसा कर प्रधान जज को

कुछ कहा। इस पर प्रधान जज ने सिर हिलाया और फिर क़ैदी की ओर मुख़ातिव हुआ:

"क्या वात है, यहां पर ल्युवोव नहीं, तुम्हारा नाम कुछ और ही लिखा है।"

क़ैदी चुप रही।

"तुम्हारा असली नाम क्या है?"

"वपतिस्मे के वक़्त तुम्हें कौन सा नाम दिया गया?" उस जज ने पूछा जो गुस्से से लाल-पीला हो रहा था।

"पहले मुझे येकातेरीना के नाम से वुलाते थे।"

नेख़्लूदोव ने फिर मन ही मन कहा–"नहीं, यह नहीं हो सकता," पर अव उसे यक़ीन हो गया था कि यह वही लड़की है–जो उस घर में आधी नौकरानी और आधी कुलीन-वाला की तरह रहती थी–वही है जिसे वह सचमुच कभी प्रेम करता था, और एक दिन मदान्ध हो कर जिसकी उसने अस्मत लूटी थी। और अस्मत लूटने के वाद ऐसा त्यागा था कि फिर कभी याद तक न किया था। याद इसलिए नहीं किया था कि याद कर के वह वहुत दुःखी होता, स्वयं अपनी नज़रों में गिरता और मुजरिम वनता। नेख़्लूदोव को अपने आचार की दृढ़ता का अभिमान था। इस घटना को याद कर के उसे क़वूल करना पड़ता कि उसने इस औरत के साथ वड़ा घृणित और निन्दनीय व्यवहार किया है।

हां, यह वही औरत थी। अव उसे उसके चेहरे पर उसके व्यक्तित्व की झलक नजर आने लगी। हर चेहरे की अपनी विशेपता होती है, और इसी में वह और सभी चेहरों से पृथक् होता है। उसका चेहरा भरा हुआ था, लेकिन उस पर एक प्रकार की रुग्ण पीलिमा छायी थी। इसके वावजूद वह विशेप मृदु व्यक्तित्व इसमें से झलक रहा था, उन होंठों से, उसकी आंखों के हल्के से ऐंचेपन से, और विशेप कर उसकी भोली मुस्कान से, उसके सारे शरीर और चेहरे पर छाये तत्परता के भाव से।

"तुम्हें यही वताना चाहिए था," प्रधान जज ने फिर विनम्र लहजे में कहा, "तुम्हारा पितृ नाम?"

"मैं अवैध लड़की हूं।"

"वपतिस्मे के वक़्त पिता की जगह कौन था?"

"उसके नाम से मिख़ाइलोव्ना।"

नेख़्लूदोव के लिए सांस लेना मुश्किल हो रहा था। वह मन ही मन सोच रहा था—"इसने कौन सा अपराध किया होगा?"

"तुम्हारा कुलनाम?" प्रधान जज पूछ रहा था।—

"मां के कुलनाम से मेरा भी मास्लोवा रखा।"

"वर्ण?"

"मेश्चान्का।"*

"धर्म—ओर्थोडोक्स?"

"हां।"

"धन्धा? तुम क्या काम करती थीं?'

मास्लोवा चुप रही।

"तुम कहां नौकरी करती थीं?"

"मैं एक अड्डे में थी।"

"कैसा अड्डा?" ऐनकों वाले जज ने रूखी आवाज़ में पूछा।

"आप तो जानते हैं," उसने कहा और मुस्करा दी। इसके बाद उसने जल्दी से कमरे में चारों ओर नज़र दौड़ायी और फिर प्रधान जज की ओर देखने लगी।

उसके चहरे के भाव में कुछ ऐसी विलक्षणता थी, उसके इन शब्दों में एक ऐसा भयानक तथा दयनीय अर्थ छिपा था, उसकी मुस्कान में, उसके यों तेज़ी से कमरे में नज़र घुमाने में, कि प्रधान जज शर्मा गया, और क्षण भर के लिए अदालत में चुप्पी छा गई। यह चुप्पी तब टूटी जब सामने बैठे लोगों में एक आदमी हंसने लगा। फिर किसी ने कहा—"श्शश...!!" इस पर प्रधान जज ने नज़र ऊपर उठायी और अपने प्रश्न जारी रखते हुए बोला—

"पहले कभी किसी जुर्म में पकड़ी गई हो?"

"कभी नहीं," मास्लोवा ने धीमे से कहा और एक ठण्डी सांस ली।

"क्या तुम्हें नालिश की नक़ल मिल गई है?"

"जी, मिल गई है।"

"बैठ जाओ।"

---

*मध्य वर्ग के शहरी लोग।

जिस भांति कोई कुलीन महिला बैठने से पहले, तनिक सा पीछे की ओर झुक कर, हाथों से गाउन का लटकता पल्लू उठा कर बैठती है, इसी तरह मास्लोवा ने भी किया। अपने घाघरे को संभाल कर बैठ गई, और अपने गाउन की आस्तीनों के तहों में अपने छोटे छोटे सफ़ेद हाथ छिपा लिये। वह अब भी प्रधान जज की ओर देखे जा रही थी।

गवाहों के नाम बताये गये, फिर उन्हें कमरे में से भेज दिया गया। इसके बाद डाक्टर के बारे में निर्णय किया गया, जो मुक़द्दमे में विशेषज्ञ के नाते अपनी राय देगा, और उसे अदालत में बुला भेजा गया।

इसके बाद सेक्रेटरी उठा और नालिश पढ़ कर सुनाने लगा। उसकी आवाज़ ऊंची और साफ़ थी हालांकि उसका 'ल' और 'र' बोलने का ढंग एक ही था। पर वह इतना तेज़ तेज़ पढ़ रहा था कि शब्द एक दूसरे में मिलते जा रहे थे और ऐसा जान पड़ता था जैसे कोई शहद की मक्खी सारा वक़्त एक ही आवाज़ में भिनभिनाये जा रही है।

जज कभी कुर्सी के एक बाज़ू पर कोहनियां टेकते, कभी दूसरे बाज़ू पर, कभी मेज़ पर झुकते, कभी फिर कुर्सी की पीठ का सहारा लेते, कभी आंखें बन्द करते, कभी खोलते, कभी एक दूसरे से फुसफुसा कर कुछ कहते। सशस्त्र पुलिस का एक सिपाही बार बार जम्हाइयां दबाने की चेष्टा कर रहा था।

क़ैदी कार्तीनकिन के गाल अब भी उसी तरह चल रहे थे। बोच्कोवा सीधी तन कर बैठी थी, केवल कभी कभी सिर खुजलाने के लिए अपना हाथ उठाती और सिर पर बंधे रूमाल के नीचे ले जाती।

मास्लोवा मूर्तिवत् बैठी थी और नालिश पढ़ने वाले की ओर देखे जा रही थी। केवल कभी कभी वह चौंक सी उठती, मानो कुछ जवाब देना चाहती हो, फिर शर्मा जाती और ठण्डी सांस ले कर अपने हाथ एक जगह से उठा कर दूसरी जगह रख लेती और अपने आस पास नज़र घुमा कर फिर नालिश पढ़ने वाले की ओर एकटक देखने लगती।

नेख़्लूदोव अगली क़तार में एक सिरे से दूसरी कुर्सी पर बैठा था, और अपनी कमानीदार ऐनक हाथ में पकड़े एकटक मास्लोवा की ओर देखे जा रहा था। उस समय उसके अन्दर एक संघर्ष चल रहा था जो जटिल भी था और दुःखपूर्ण भी।

नालिश में लिखा था–

"१७ जनवरी, १८८... के दिन, होटल "माव्रीतानिया" में फ़ेरापोंत स्मेल्कोव नामी द्वितीय गिल्ड के व्यापारी की सहसा मृत्यु हो गई। यह आदमी साइबेरिया में कुरगान नामक नगर का रहने वाला था।

"शहर के चौथे वार्ड के स्थानीय पुलिस-डाक्टर ने तसदीक़ की कि मौत दिल की नाड़ी फट जाने के कारण हुई है–मृत व्यक्ति ने अत्यधिक शराब पी रखी थी। उसके शरीर को दफ़ना दिया गया।

"कुछ दिन बाद मृत व्यक्ति स्मेल्कोव का एक मित्र तीमोख़िन पीटर्सबर्ग से लौट कर आया। यह आदमी भी साइबेरिया का व्यापारी है और स्मेल्कोव के ही शहर का रहने वाला है। जब उसे पता चला कि किन स्थितियों में स्मेल्कोव की मृत्यु हुई तो उसे सन्देह हुआ और उसने सूचित किया कि स्मेल्कोव का रुपया चुराने की ग़रज़ से उसे ज़हर दिया गया है।

"पहली तफ़तीश में यह शक ठीक साबित हुआ। मालूम हुआ कि–

"१) मौत से पहले स्मेल्कोव ने अपने बैंक में से ३,८०० रूबल निकलवाये थे। लेकिन जब बाद में उसकी चीज़ों की सूची तैयार की गई तो उसके पास से केवल ३१२ रूबल और १६ कोपेक निकले।

"२) मौत से पहले सारा दिन और सारी रात स्मेल्कोव ने वेश्या ल्यूब्का (येकातेरीना मास्लोवा) के साथ चकले में और होटल "माव्रीतानिया" के अपने कमरे में गुज़ारी। एक बार उसके कहने पर येकातेरीना मास्लोवा चकले से उसके कमरे में पैसे लाने के लिए गई। वह उसके साथ नहीं था। स्मेल्कोव ने ख़ुद उसे अपने बैग की चाबी दी थी जिसमें उसके पैसे रखे थे। होटल के दो नौकरों येवफ़ीमिया बोच्कोवा और सीमन कार्तीनकिन की मौजूदगी में मास्लोवा ने चाबी लगा कर बैग खोला और फिर बन्द कर दिया। बोच्कोवा और कार्तीनकिन ने इस बात की शहादत दी है कि जब बैग खुला था तो उसमें उन्होंने सौ-सौ रूबल के नोटों की गड्डियां देखी थीं।

"३) जब स्मेल्कोव चकले से लौट कर अपने कमरे में आया तो वेश्या ल्यूब्का उसके साथ आई। कार्तीनकिन के कहने पर उसने एक गिलास

शराब में सफ़ेद सा पाउडर डाला और स्मेल्कोव को पीने के लिए दिया। यह पाउडर भी स्वयं कार्तीनकिन ने ही उसे दिया था।

"४) इसके दूसरे दिन ल्यूब्का (येकातेरीना मास्लोवा) ने एक हीरे की अंगूठी अपनी मालकिन (गवाह कितायेवा, चकले की मालकिन) को बेची। मास्लोवा का कहना है कि यह अंगूठी स्मेल्कोव ने स्वयं उसे भेंट की थी।

"५) स्मेल्कोव की मौत के दूसरे दिन नौकरानी येवफ़ीमिया बोच्कोवा ने बैंक में अपने चालू खाते में १,८०० रूबल जमा करवाये।

"स्मेल्कोव की शव-परीक्षा की गई, तथा उसके मेदे के द्रव्यों का रासायनिक विश्लेषण किया गया, जिससे पता चला कि मौत जहर दिये जाने के कारण हुई है।

"तीनों मुजरिम: मास्लोवा, बोच्कोवा तथा कार्तीनकिन कहते हैं कि उन्होंने कोई जुर्म नहीं किया। मास्लोवा ने अपने बयान में कहा है कि जिस वक़्त स्मेल्कोव चकले में था, जहां वह 'काम करती है'—उसने इसी शब्द का प्रयोग किया है—तो उसे ख़ुद स्मेल्कोव ने ही 'माव्रीतानिया' होटल से कुछ पैसे लाने के लिए भेजा था। जो चाभी व्यापारी ने उसे दी थी, उससे उसने बैग खोला और उसमें से स्मेल्कोव के आदेशानुसार ४० रूबल निकाले, इससे ज़्यादा कुछ नहीं लिया। उसका कहना है कि बोच्कोवा और कार्तीनकिन इस बात की शहादत दे सकते हैं, क्योंकि उनकी मौजूदगी में उसने बैग खोला और बन्द किया था।

"आगे चल कर बयान में कहा है कि जब वह दूसरी बार होटल में आई तो उसने सीमन कार्तीनकिन के कहने पर स्मेल्कोव को शराब में कोई पाउडर ज़रूर दिया था। उसका ख़्याल था कि यह नींद दिलाने वाला पाउडर है और उसके पीने से वह सो जायेगा और उसे और तंग नहीं करेगा। जहां तक अंगूठी का सवाल है, उसका कहना है कि स्मेल्कोव ने उसे पीटा, पर जब वह रोने लगी और कहा कि वहां से चली जायेगी तो उसने ख़ुद वह अंगूठी उसे दी।

"मुजरिम येवफ़ीमिया बोच्कोवा ने जिरह के वक़्त कहा कि उसे गुमशुदा रुपये के बारे में कुछ भी मालूम नहीं कि वह स्मेल्कोव के कमरे में गयी तक नहीं थी, कि सब काम वहां ल्यूब्का ने ही किया है। अगर

चोरी हुई है तो रुपया ल्यूब्का ने ही उस वक़्त चुराया होगा जब वह व्यापारी से चाभी ले कर पैसे लेने आयी थी।"

इस जगह मास्लोवा चौंकी, उसने मुंह खोला और वोच्कोवा की ओर देखने लगी।

सेक्रेटरी पढ़ता गया—"जब वोच्कोवा को १,८०० रूबल की बैंक रसीद दिखायी गयी और पूछा गया कि यह रक़म उसे कहां से मिली है तो उसने जवाब दिया कि यह उसकी और सीमन की पिछले बारह साल की कमाई की रक़म है, और वह शीघ्र ही सीमन से शादी करने वाली है।

"पहली जिरह में मुजरिम कार्तीनकिन ने क़बूल किया कि मास्लोवा के उकसाने पर जो चकले से चाभी ले कर आयी थी, उसने और वोच्कोवा ने रक़म चुरायी थी, और उसे दोनों ने मास्लोवा के साथ मिल कर, बराबर बराबर आपस में बांट लिया था।"

यहां पर भी मास्लोवा चौंकी, बल्कि उठ खड़ी हुई, और शर्म से लाल हुए बोलने लगी। लेकिन पेशकार ने उसे चुप करा दिया।

सेक्रेटरी पढ़ता गया—"अन्त में कार्तीनकिन ने क़बूल किया कि स्मेल्कोव को सुलाने के लिए उसी ने पाउडर दिया था। जब दूसरी बार जिरह की गई तो उसने इन दोनों बातों से इन्कार कर दिया, और कहा कि न ही पैसे चुराने के मामले में और न ही पाउडर के मामले में उसका कोई हाथ था, कि जो कुछ भी किया है, अकेली मास्लोवा ने किया है। जब उससे पूछा गया कि बैंक में जो रक़म वोच्कोवा ने जमा कराई उसके बारे में उसे क्या कहना है, तो उसने भी वही जवाब दिया जो वोच्कोवा ने दिया था कि यह वह रक़म है जो होटल में रहने वाले लोगों ने गाहे-गाहे पिछले बारह साल की नौकरी के दौरान उन्हें इनाम के रूप में दी थी।"

इसके बाद जांच का विवरण, गवाहियां और विशेषज्ञों की राय पढ़ कर सुनायी गई। नालिश को समाप्त करते हुए सेक्रेटरी ने अन्त में पढ़ा—

"उपरोक्त तथ्यों के अनुसार, सीमन कार्तीनकिन, उम्र तेंतीस साल, गांव बोर्की, किसान; मेश्चान्का येवफ़ीमिया वोच्कोवा, उम्र ४३ साल; और मेश्चान्का येकातेरीना मास्लोवा, उम्र २७ साल—पर यह फ़र्दे-जुर्म लगाया जाता है कि १७ जनवरी, १८८... के दिन तीनों ने मिल कर उपरोक्त व्यापारी स्मेल्कोव की चोरी की जिसमें नक़दी और हीरे की

अंगूठी शामिल थे। कुल मिला कर यह चोरी २,५०० रूबल की हुई। अपने जुर्म को छिपाने के लिए उपरोक्त व्यापारी स्मेल्कोव को ज़हर दिया गया ताकि वह मर जाय। और इसी जहर से उसकी मौत हुई।

"इस जुर्म पर दण्ड-विधान की धारा १४५३ (पैरा ४ और ५) लागू होती है। अतः ज़ाब्ता फ़ौजदारी की धारा २०१ के अनुसार, किसान सीमन कार्तीनकिन, मेश्चान्का येवफ़ीमिया वोच्कोवा तथा मेश्चान्का येकातेरीना मास्लोवा को ज़िला कचहरी में जूरी युक्त अदालत के सामने पेश किया जाता है।"

सेक्रेटरी ने नालिश का चिट्ठा समाप्त किया, काग़ज़ों को समेटा और लम्बे बालों पर हाथ फेरते हुए अपनी जगह पर जा बैठा। कमरे में बैठे सभी लोगों ने चैन की सांस ली। सभी ने सोचा कि अब मुक़द्दमा शुरू होगा, सब बात साफ़ होगी और इन्साफ़ किया जायेगा। केवल नेख़्लूदोव ही एक ऐसा आदमी था जिसके हृदय में पृथक् भावनाएं उठ रही थीं। उसे यह देख कर गहरा धक्का लगा था कि यह लड़की मास्लोवा, जो दस ही साल पहले कितनी भोली-भाली और प्यारी हुआ करती थी आज न जाने कैसे घोर अपराध करने लगी।

११

नालिश पढ़े जाने के बाद प्रधान जज ने बाक़ी जजों से मशविरा किया और कार्तीनकिन की ओर मुख़ातिब हुआ। उसके चेहरे का भाव देख कर ऐसा जान पड़ता था मानो कह रहा हो—"अभी हम सच-झूठ का पता लगा लेंगे कि क्या हुआ और क्या नहीं हुआ। छोटी छोटी बात तक का पता चल जायेगा।" फिर बाईं ओर झुक कर बोला—

"किसान सीमन कार्तीनकिन।"

सीमन कार्तीनकिन उठ खड़ा हुआ, दोनों बाज़ू नीचे की ओर सीधे किये, और अपने समूचे शरीर से आगे की ओर झुक गया। उसके गाल अब भी चल रहे थे हालांकि मुंह में से एक शब्द भी नहीं निकल रहा था।

"तुम पर यह जुर्म लगाया गया है कि तुमने १७ जनवरी, सन् १८८... के दिन येवफ़ीमिया बोच्कोवा और येकातेरीना मास्लोवा के साथ मिल कर स्मेल्कोव नामी व्यापारी के बैग में से रुपये चुराये। इसके बाद

तुमने संखिये की पुड़िया येकातेरीना मास्लोवा को दी और कहा कि वह उसे शराब में मिला कर स्मेल्कोव को पिला दे। वह रज़ामन्द हो गई और इस तरह स्मेल्कोव की मौत हुई। बोलो, तुम अपना जुर्म क़बूल करते हो या नहीं?" प्रधान जज ने दायीं ओर झुकते हुए कहा।

"यह कैसे, नहीं जी, हमारा काम तो मेहमानों की सेवा करना है, हम तो..."

"यह सब बाद में कहना। जुर्म क़बूल करते हो?"

"जी नहीं हुज़ूर, हम तो केवल..."

"यह बाद में कहना, हम सुन लेंगे। जुर्म क़बूल करते हो?" प्रधान जज ने धीमी, दृढ़ आवाज़ में कहा।

"हम कभी ऐसा काम कर सकते हैं, हम तो..."

पेशकार फिर भागा हुआ सीमन कार्तीनकिन के पास गया, और पहले जैसे ही दुःखपूर्ण लहजे में फुसफुसा कर उसे चुप रहने को कहा।

प्रधान जज ने अपना हाथ हिलाया जिसमें काग़ज़ पकड़ा हुआ था, फिर अपनी कोहनी दूसरे रुख़ रखी, मानो कह रहा हो—"बस, एक काम भुगत गया," और इसके बाद येवफ़ीमिया बोच्कोवा की ओर मुख़ातिब हुआ।

"येवफ़ीमिया बोच्कोवा तुम पर यह जुर्म लगाया गया है कि १७ जनवरी, १८८... के दिन होटल 'माव्रीतानिया' में तुमने सीमन कार्तीनकिन और येकातेरीना मास्लोवा से मिल कर व्यापारी स्मेल्कोव के बैग में से कुछ रुपया और एक अंगूठी चुराई, यह रक़म तुमने आपस में बांटी और व्यापारी स्मेल्कोव को ज़हर दी जिससे वह मर गया। अपना जुर्म क़बूल करती हो?"

"मैंने कोई जुर्म नहीं किया," क़ैदी ने बड़े दुस्साहस और दृढ़ता से जवाब दिया। "मैं उस कमरे के नज़दीक तक नहीं गई। यही डायन उस कमरे में गई और इसी ने सब कुछ किया।"

"यह सब बाद में कहना," प्रधान जज ने फिर धीमी आवाज़ में दृढ़ता से कहा, "तो तुम कहती हो कि तुमने कोई जुर्म नहीं किया?"

"मैंने कोई पैसे नहीं लिये, न ही उसे कुछ पिलाया और न ही मैं उस कमरे में गई। अगर मैं अन्दर गई होती तो इसे धक्के मार कर बाहर निकाल देती।"

"तो तुम अपने को दोषी नहीं मानती?"

"बिल्कुल नहीं।"

"अच्छी बात है।"

"येकातेरीना मास्लोवा," प्रधान जज तीसरी क़ैदी की ओर मुख़ातिब हुआ। "तुम पर यह जुर्म लगाया गया है कि जब तुम व्यापारी स्मेल्कोव के बैग की चाभी ले कर चकले से होटल में आई तो तुमने उसके बैग में से कुछ रुपया और एक अंगूठी चुराई।" प्रधान जज ने ये शब्द इस तरह कहे मानो पाठ पहले से याद कर रखा हो। वह बायें हाथ बैठे जज की ओर झुक गया जो उसके कानों में फुसफुसा रहा था कि शहादती चीज़ों की सूची में जिस मर्तबान का ज़िक्र है, वह नहीं मिल रहा है। "उसके बैग में से कुछ रुपया और एक अंगूठी चुराई," प्रधान जज ने दोहरा कर कहा, "और उस रक़म को आपस में बांटा। फिर तुम स्मेल्कोव के साथ होटल 'माव्रीतानिया' में वापिस आयीं जहां तुमने उसे शराब में ज़हर मिला कर पिलाया जिससे उसकी मौत हो गई। अपना जुर्म क़बूल करती हो?"

"मैंने कोई जुर्म नहीं किया," मास्लोवा तेज़ तेज़ बोलने लगी, "मैंने पहले भी कहा था और अब भी कहती हूं—मैंने नहीं लिया, नहीं लिया, मैंने कुछ भी नहीं लिया। अंगूठी उसने ख़ुद मुझे दी थी।"

"क्या तुम अपना जुर्म क़बूल नहीं करती हो कि तुमने २ हज़ार ५ सौ रूबल चुराये?" प्रधान जज ने पूछा।

"मैंने कह दिया है कि ४० रूबल को छोड़ कर मैंने कुछ भी नहीं लिया।"

"और यह जुर्म मानती हो कि तुमने व्यापारी स्मेल्कोव को शराब में एक पाउडर मिला कर पिलाया?"

"हां, यह मैंने किया था। पर मैंने इन लोगों की बात पर विश्वास किया। इन्होंने कहा कि यह नींद लाने की दवाई है, इससे कोई नुक़सान नहीं हो सकता। मुझे इसका ख़्याल तक नहीं आया, न ही मैं चाहती थी... भगवान् साक्षी है, मेरा उसे ज़हर देने का कोई मतलब न था।"

"तो तुम अपना यह जुर्म नहीं क़बूलती हो कि तुमने व्यापारी स्मेल्कोव के रुपये और अंगूठी चुराई, मगर यह मानती हो कि तुमने उसे पाउडर दिया।"

"हां, मैं यह मानती हूं। पर मैंने समझा वह सोने की दवा थी। मैंने उसे इसलिए दिया कि वह सो जाय। मेरा कोई बुरा इरादा नहीं था, मुझे ख़्याल भी नहीं आया कि इसका कोई बुरा नतीजा निकल सकता है।"

"अच्छी बात है," प्रधान जज बोला। प्रत्यक्षतः इस जांच के परिणाम से वह सन्तुष्ट था। "अब सारी बात बताओ क्या क्या हुआ?" और वह कुर्सी की पीठ के साथ सट कर बैठ गया, और दोनों हाथ मेज़ पर रख लिये। "सारी बात खोल कर बताओ। जो सच सच बताओगी तो इसमें तुम्हारा ही फ़ायदा है।"

मास्लोवा चुपचाप सीधी प्रधान जज की ओर देखे जा रही थी।

"बताओ यह बात कैसे हुई।"

"कैसे हुई?" मास्लोवा ने सहसा तेज़ तेज़ बोलना शुरू कर दिया। "मैं होटल में गई, और मुझे उसके कमरे में भेजा गया। जब मैं अन्दर गई तो वह बहुत शराब पिये हुए था।" "वह" शब्द कहते हुए उसकी बड़ी बड़ी आंखें त्रस्त हो उठीं। "मैं लौट जाना चाहती थी, मगर उसने मुझे जाने नहीं दिया।"

वह चुप हो गई मानो उसे घटनाक्रम भूल गया हो, या उसे कोई बात याद हो आई हो।

"अच्छा तो फिर क्या हुआ?"

"तो फिर क्या? मैं थोड़ी देर तक वहां रही, और फिर वापस घर लौट गई।"

यहां सरकारी वकील अपनी कोहनी का सहारा ले कर थोड़ा सा ऊपर को उठा। उसकी मुद्रा बड़ी अटपटी सी लग रही थी।

"क्या आप कोई सवाल पूछना चाहते हैं?" प्रधान जज ने पूछा। वकील के हां में जवाब देने पर प्रधान जज ने उसे बोलने का इशारा किया।

"मैं यह पूछना चाहता हूं कि क्या मुजरिम सीमन कार्तीनकिन को पहले से जानती थी?" उसने बिना मास्लोवा की ओर देखे हुए पूछा।

सवाल पूछने के बाद उसने अपने होंठ भींचे और भौंहें सिकोड़ लीं।

प्रधान जज ने सवाल दोहराया। मास्लोवा डरी हुई नज़र से सरकारी वकील की ओर एकटक देखने लगी।

"सीमन को? हां," उसने कहा।

"मैं जानना चाहता हूं कि यह वाक़फ़ियत कैसी थी? क्या वे दोनों एक दूसरे को अक्सर मिलते रहते थे?"

"कैसी थी? वह मुझे होटल के मेहमानों के लिए बुलाया करता था। उससे मेरी कोई ख़ास वाक़फ़ियत नहीं है," मास्लोवा ने जवाब दिया। उसने घबराई हुई नज़र से पहले प्रधान जज की ओर देखा, फिर सरकारी वकील की ओर, और उसके बाद फिर प्रधान जज की ओर देखने लगी।

"मैं पूछना चाहता हूं कि कार्तीनकिन होटल के मेहमानों के लिए केवल मास्लोवा को ही क्यों बुलाता था, और लड़कियों में से किसी को क्यों नहीं बुलाता था?" आंखों को सिकोड़े, धूर्तताभरी मुस्कान के साथ सरकारी वकील ने पूछा।

"मैं नहीं जानती। मुझे क्या मालूम?" मास्लोवा ने कहा और घबराई हुई आंखों से इधर-उधर देखा। क्षण भर के लिए उसकी नज़र नेख़्लूदोव पर टिक गयी। "जिसे वह चाहता था बुला लेता था।"

"क्या यह मुमकिन है कि इसने मुझे पहचान लिया हो?" नेख़्लूदोव ने सोचा, और उसका मुंह लाल हो गया। परन्तु मास्लोवा की नज़र उस पर से हट गई। उसने यह नहीं जाना कि यह औरों से भिन्न है और फिर घबरा कर सरकारी वकील की ओर देखने लगी।

"तो मुजरिम इस बात से इन्कार करती है कि उसका कार्तीनकिन के साथ कोई गहरा सम्बन्ध रहा है? अच्छी बात है, मुझे और कोई सवाल नहीं पूछना है।"

सरकारी वकील ने मेज़ पर से अपनी कोहनी हटायी और कुछ लिखने लगा। वास्तव में वह कुछ भी नहीं लिख रहा था, केवल अपनी क़लम टिप्पणियों के उन्हीं शब्दों पर फेर रहा था जो उसने पहले से लिख रखे थे। उसने बड़े सरकारी वकील और दूसरे वकीलों को ऐसा करते देखा था। वे कोई चतुर सा सवाल पूछते और अपनी टिप्पणियों में कुछ दर्ज कर लेते ताकि बाद में अपने विरोधी को परेशान कर सकें।

प्रधान जज ने उसी वक़्त मुजरिम से सवाल नहीं किया। वह ऐनक वाले जज से यह पूछ रहा था कि वह इस बात से सहमत है या नहीं कि ये सवाल पूछे जायं (ये सवाल पहले से तैयार किये गये थे और बाक़ाइदा लिखे हुए थे)।

"फिर? फिर क्या हुआ?" उसने पूछा।

"मैं घर आ गई," मास्लोवा ने कहा। उसकी आंखों में कुछ साहस आ गया, और वह केवल प्रधान जज की ओर देखती रही। "मैंने पैसे मालकिन को दिये और सोने चली गई। मुझे नींद आने ही लगी थी जब वहीं की एक लड़की, वेर्ता ने मुझे जगा दिया। कहने लगी—'जाओ, वह व्यापारी फिर आया है और तुम्हें पूछ रहा है।' मैं नहीं जाना चाहती थी पर मालकिन ने मुझे जाने का हुक्म दिया। वह आदमी," उसने फिर बड़ी त्रस्त आवाज़ में "वह आदमी" कहा, "वह आदमी हमारे घर की लड़कियों को खिलाता पिलाता रहा। फिर वह और शराब मंगवाना चाहता था, पर उसके सब पैसे चुक गये थे, और मालकिन उसका विश्वास नहीं करती थी। इसलिए उस आदमी ने मुझे अपने होटल में भेजा जहां उसके पैसे पड़े हुए थे। उसने मुझे बता दिया कि कितने पैसे निकाल कर लाने हैं। इसलिए मैं गई।"

प्रधान जज अपने बायें हाथ बैठे जज के साथ धीमे धीमे बातें कर रहा था, पर यह दिखाने के लिए कि वह सब कुछ सुन रहा है, उसने मास्लोवा के अन्तिम शब्द दोहराते हुए कहा—

"तो तुम गईं। फिर? फिर क्या हुआ?"

"मैं गई और जैसे उसने कहा था किया। मैं उसके कमरे में गई। मगर मैं अकेली नहीं गयी, मैंने सीमन और इसे बुलाया," बोच्कोवा की ओर इशारा करते हुए उसने कहा।

"यह सरासर झूठ है। मैं बिलकुल उस कमरे में नहीं गयी," बोच्कोवा बोली, मगर उसे रोक दिया गया।

"इन दोनों की मौजूदगी में मैंने बैग में से दस दस रूबल के चार नोट निकाले," बिना बोच्कोवा की ओर देखे मास्लोवा ने भौंहें सिकोड़ कर फिर कहना शुरू किया।

"ठीक है, मगर क्या मुजरिम ने बैग में से चालीस रूबल निकालते समय यह भी देखा कि उसमें कितनी रक़म पड़ी थी?" सरकारी वकील ने फिर सवाल किया।

सरकारी वकील का सवाल सुनते ही मास्लोवा कांप उठी। अनजाने में ही उसे ऐसा लगने लगा था जैसे यह आदमी उसका बुरा चाहता है।

"मैंने गिने नहीं, मगर मैंने देखा कि उसमें कुछ सौ सौ रूबल के नोट पड़े थे।"

"ग्राह! तो मुजरिम ने उसमें सौ सौ रूवल के नोट पड़े देखे। वस, मैं इतना ही जानना चाहता था।"

"तो तुम पैसे ले कर वापस आ गयीं," प्रधान जज ने घड़ी की ओर देखते हुए कहा।

"हां।"

"फिर? फिर क्या हुआ?"

"फिर वह मुझे वापस होटल में ले गया," मास्लोवा ने कहा।

"तो तुमने उसे पाउडर किस तरह दिया?"

"किस तरह दिया? मैंने पाउडर शराव के गिलास में डाला और उसे दे दिया।"

"तुमने क्यों ऐसा किया?"

इस सवाल का उसने सहसा जवाव नहीं दिया, वल्कि एक गहरी आह भरी।

"वह मुझे छोड़ता नहीं था," क्षण भर चुप रहने के वाद वह कहने लगी, "पर मैं थक कर चूर हो गई थी। मैं बरामदे में गई और सीमन से बोली कि यह मुझे जाने ही नहीं देता, मैं वहुत थक गई हूं। सीमन कहने लगा, हम भी तंग आ गये हैं, हम सोच रहे हैं कि उसे सोने की दवाई पिला दें। वह पी कर यह सो जायेगा, और फिर तुम चली जाना। मैंने कहा, अच्छा। मैंने समझा इसे देने में कोई डर नहीं। सीमन ने मुझे एक पुड़िया दी और मैं उसे ले कर अन्दर चली गई। वह पार्टीशन के पीछे लेटा हुआ था। मेरे अन्दर पहुंचते ही उसने ब्रांडी मांगी। मैंने ब्राण्डी की वोतल मेज़ पर से उठायी, दो गिलास भरे, एक उसके लिए, एक अपने लिए, फिर उसके गिलास में पाउडर डाला और गिलास उसके हाथ में दे दिया। मुझे मालूम होता कि यह क्या चीज़ है तो मैं देती ही क्यों?"

"अच्छा यह वताओ, यह अंगूठी तुम्हारे हाथ कैसे लगी?" प्रधान जज ने पूछा।

"यह उसने ख़ुद मुझे दी थी।"

"कव?"

"जव मैं होटल में लौट कर उसके साथ आयी। मैं घर जाना चाहती थी, पर उसने मुझे सिर पर घूंसा मारा जिससे मेरी कंघी टूट गई। मुझे गुस्सा आ गया और मैंने कहा कि मैं वहां नहीं ठहरूंगी, वहां से ज़रूर

चली जाऊंगी। तव उसने अपनी उंगली में से अंगूठी निकाल कर मुझे दे दी ताकि मैं नहीं जाऊं," मास्लोवा ने कहा।

सरकारी वकील फिर तनिक सा उठा, और वड़ा मासूम दिखने की कोशिश करते हुए कुछ सवाल और पूछने की इजाज़त मांगी। प्रधान जज ने इजाज़त दे दी। इस पर अपना सिर आगे को झुकाते हुए, जिससे उसका क़सीदा किया हुआ कॉलर कुछ कुछ ढक गया, वह वोलने लगा—

"मैं जानना चाहता हूं कि मुजरिम कितनी देर तक व्यापारी स्मेल्कोव के कमरे में रही।"

मास्लोवा जैसे फिर डर गई। घवराई हुई आंखों से पहले सरकारी वकील की ओर और फिर प्रधान जज की ओर देखते हुए तेज़ तेज़ वोलते हुए कहने लगी—

"मुझे याद नहीं कितनी देर।"

"ठीक है। पर क्या मुजरिम को इतना याद है कि स्मेल्कोव के कमरे में से निकलने के वाद वह कहीं और गयी थी या नहीं?"

मास्लोवा क्षण भर सोचती रही।

"हां, उसके साथ वाले कमरे में गई थी। वह ख़ाली था।"

"तुम वहां क्यों गईं?" सरकारी वकील क़ायदा भूल कर सीधा उससे पूछने लगा।

"मैं थोड़ी देर आराम करने के लिए वहां चली गई थी, साथ ही मुझे गाड़ी का भी इन्तज़ार करना था।"

"क्या मुजरिम के साथ कमरे में कार्तीनकिन भी था या नहीं?"

"वह अन्दर आया था।"

"वह क्यों आया था?"

"व्यापारी की थोड़ी सी शराव वच रही थी। वह हमने मिल कर पी डाली।"

"ओह, मिल कर पी डाली। ख़ूव! क्या उस वक़्त सीमन के साथ कोई वातचीत हुई? यदि हुई तो किस वारे में?"

मास्लोवा की भवें चढ़ गईं, शर्म से उसका चेहरा लाल हो गया, और जल्दी जल्दी वोलते हुए वह कहने लगी—

"किसके वारे में? मैंने कोई वात नहीं की। वस, मुझे यही कुछ मालूम है। जो मन में आये, करो। मैंने कोई जुर्म नहीं किया। वस, इससे ज़्यादा मैं कुछ नहीं जानती।"

"मुझे और कुछ नहीं पूछना है," सरकारी वकील ने कहा, और बड़े अस्वाभाविक ढंग से अपने कन्धे सीधे कर के अपने भाषण की टिप्पणियों में यह दर्ज कर लिया कि मुजरिम ने ख़ुद तस्लीम किया है कि वह कार्तीनकिन के साथ ख़ाली कमरे में गई थी।

अदालत में थोड़ी देर के लिए ख़ामोशी छा गई।

"क्या तुम्हें कुछ और कहना है?"

"मैंने सब कुछ बता दिया है," मास्लोवा ने ठण्डी सांस भरते हुए कहा और बैठ गई।

इसके बाद प्रधान जज ने कुछ नोट किया। उसके बायें हाथ बैठे हुए जज ने प्रधान जज को कुछ फुसफुसा कर कहा, जिस पर प्रधान जज ने १० मिनट के लिए अदालत स्थगित कर दी, और झट से उठ कर कमरे में से निकल गया। जिस जज की बात सुन कर प्रधान जज ने अदालत स्थगित की थी, वह वही ऊंचा लम्बा दाढ़ी वाला जज था जिसकी आंखों से दयालुता टपकती थी। जज के पेट में कुछ गड़बड़ हो गई थी, और उसे ठीक करने के लिए वह पेट की थोड़ी मालिश करना चाहता था और कुछ बूंदें दवाई की पीना चाहता था।

जजों के उठने पर वकील, जूरी के सदस्य और गवाह भी उठ खड़े हुए। उस समय वे सब यह सोच कर ख़ुश और संतुष्ट थे कि एक महत्वपूर्ण काम का कम से कम कुछ हिस्सा तो उन्होंने ख़त्म कर दिया है। और यह सोचते हुए वे अलग अलग दिशा में जाने लगे।

नेख़्लूदोव जूरी के कमरे में चला गया और खिड़की के पास जा कर बैठ गया।

१२

हां, यह कात्यूशा ही है!

नेख़्लूदोव और कात्यूशा के आपसी सम्बन्धों की कहानी इस प्रकार है।

पहली बार वे तब मिले जब नेख़्लूदोव विश्वविद्यालय के तीसरे वर्ष में था। गर्मी की छुट्टियां थीं और वह अपनी फूफियों के पास रहने के लिए गया था। इन्हीं छुट्टियों में वह भूमि-स्वामित्व के सवाल पर एक निबन्ध लिखने की तैयारी कर रहा था। इससे पहले वह गर्मी का मौसम

हमेशा अपनी मां और वहिन के साथ मास्को के नज़दीक गुज़ारा करता था जहां उसकी मां की बहुत बड़ी ज़मींदारी थी। पर इस साल उसकी वहिन की शादी हो गयी थी, और मां विदेश चली गई थीं जहां वह गर्मी का मौसम किसी स्वास्थ्यप्रद स्थान में खनिज-जल के झरनों के पास व्यतीत करना चाहती थीं। चूंकि नेख़्लूदोव को अपना निवन्ध लिखना था, इसलिए उसने ये दिन अपनी फूफियों के घर विताने का निश्चय किया। यहां वातावरण में शान्ति थी, क्योंकि ज़मींदारी अलग-थलग जगह पर थी और कोई ऐसी चीज़ भी न थी जो उसका ध्यान दूसरी तरफ़ खींच सके। दोनों फूफियां उसे वेहद प्यार करती थीं। नेख़्लूदोव उनका भतीजा ही न था, उनकी ज़मीन-जायदाद का वारिस भी था। नेख़्लूदोव को भी अपनी फूफियां बड़ी अच्छी लगती थीं। उसे उनका सीधा-सादा, पुराने ढंग का जीवन बड़ा पसन्द था।

उन गर्मी के दिनों में इस जागीर पर रहते हुए नेख़्लूदोव को जीवन में पहली वार उस अपूर्व आनन्द का अनुभव हुआ जो एक युवक को उस समय होता है जव वह अपने आप, विना किसी दूसरे की मदद के जीवन के अद्‌भुत सौन्दर्य और महत्व को देखने लगता है। जव उसे नज़र आने लगता है कि जीवन में उस काम का अपार महत्व है जो मनुष्य को करने के लिए सौंपा गया है। उसे इस काम द्वारा पूर्णता तक पहुंचने के लिए प्रगति की असीम संभावनाएं नज़र आने लगती हैं—न केवल अपने लिए बल्कि सकल मानव-जाति के लिए—और वह अपने काम में जुट जाता है। उसके हृदय में न केवल आशा की तरंगें उठती हैं, वल्कि यह दृढ़ विश्वास भी होता है कि वह अवश्य उस पूर्णता को प्राप्त करेगा जिसके वह स्वप्न देखता है। उसी साल नेख़्लूदोव ने यूनीवर्सिटी में स्पेंसर की पुस्तक "सोशल स्टेटिक्स" पढ़ी थी। उसे पढ़ कर वह स्पेंसर के विचारों से वेहद प्रभावित हुआ था, विशेषकर उन विचारों से जिनका सम्वन्ध भूमि-स्वामित्व से था। विशेषकर इसलिए कि वह ख़ुद एक बड़ी ज़मींदारनी का वेटा था। नेख़्लूदोव के पिता अमीर नहीं थे, लेकिन उसकी मां को दहेज़ में पचीस हज़ार एकड़ ज़मीन मिली थी। उस समय उसने पहली बार यह समझ लिया था कि भूमि के निजी स्वामित्व की प्रथा कितनी क्रूर और अन्यायपूर्ण है। कुछ लोगों को अपने अन्तःकरण की ख़ातिर कुर्बानी देते हुए आध्यात्मिक आनन्द का अनुभव होता है। नेख़्लूदोव भी इन्हीं में से था। उसने निश्चय

कर लिया कि वह भूमि-स्वामित्व के अपने अधिकार त्याग देगा, और जो ज़मीनें उसे पिता की ओर से मिली थीं, उन्हें उसने किसानों को सौंप दिया। इसी भूमि-स्वामित्व के सवाल पर वह इस समय अपना निबन्ध लिख रहा था।

इस जागीर पर रहते हुए उसने अपनी दिनचर्या इस प्रकार बना रखी थी: सुबह सवेरे बड़ी जल्दी उठता, कभी कभी तो तीन बजे ही उठ जाता। सूरज निकलने से पहले, जिस समय चारों ओर धुन्ध छायी होती, वह पहाड़ी के नीचे नदी-स्नान करने जाता। जब लौटता तो उस समय भी घास और फूलों पर अभी ओस के कण चमक रहे होते। घर आ कर वह कॉफ़ी पीता और उसके बाद अपनी निर्देश-पुस्तकें और काग़ज़ लेकर निबन्ध पर काम करने बैठ जाता। पर ऐसा वह कभी कभी करता। अक्सर वह कॉफ़ी पी चुकने के बाद फिर घर से निकल जाता और खेतों और जंगलों में घूमता रहता। दोपहर के भोजन से पहले वह बाग़ के किसी कोने में आ कर सो जाता। भोजन के समय वह अपनी फूफियों को ख़ुश करने के लिए हंसी-मज़ाक़ करता, फिर घोड़े पर सवार हो घुड़सवारी के लिए निकल जाता या नदी पर जा कर नाव चलाता रहता। शाम के वक़्त कोई किताब पढ़ता या फिर फूफियों के साथ ताश खेलता।

कई कई रातें वह सो नहीं पाता था, विशेषकर जब आकाश में चांद खिला होता—उसका हृदय जीवन के आनन्द से प्रफुल्लित हो उठता था। सोने के बजाय वह अपने स्वप्नों और विचारों में खोया हुआ रात भर बाग़ में टहलता रहता।

इस तरह पूर्ण सुख और शान्ति का अनुभव करते हुए, उसे फूफियों के साथ रहते एक महीना हो चला। इस दौरान उसने कात्यूशा में कोई विशेष रुचि नहीं दिखायी। कात्यूशा की आंखें काली और पांव फुर्तीले थे और इस घर में उसकी स्थिति आधी नौकरानी और आधी कुलीन युवती की सी थी।

नेख़्लूदोव (जिसकी उम्र उस समय उन्नीस वर्ष की थी) अभी तक अपनी मां की देखरेख में रहा था, इस कारण उसका चाल-चलन अच्छा रहा था। यदि स्वप्न में भी उसे कभी कोई युवती नज़र आती तो केवल पत्नी के रूप में। वह अन्य स्त्रियों को जिनके साथ उसका विवाह-सम्बन्ध नहीं हो सकता था, साधारण इन्सान समझता था।

पवित्र बृहस्पतिवार अर्थात् ईसा के ऊर्ध्वगमन दिवस के पर्व पर फूफियों की एक पड़ोसिन महिला अपनी दो बेटियों और एक स्कूल जाते बालक को साथ लेकर उनके घर आयी। उनके साथ उनका मेहमान – एक युवा कलाकार भी था। इस कलाकार का जन्म एक मामूली किसान के घर में हुआ था।

घर के सामने एक खुला मैदान था जिसमें पहले से घास काट दी गई थी। चाय के बाद सभी लोग वहां खेलने के लिए गये। "गोरेल्की" नाम का खेल शुरू हुआ। कात्यूशा को भी खेलने के लिए बुलाया गया। इस खेल में बार बार भागना और अपना साथी बदलना पड़ता था। एक बार नेख़्लूदोव ने कात्यूशा को छू लिया जिससे वह उसकी साथिन बन गई। अब तक नेख़्लूदोव को यह लड़की यों तो बहुत भली लगती थी लेकिन उसके मन में यह विचार कभी नहीं आया था कि उन दोनों के बीच किन्हीं सम्बन्धों की भी संभावना हो सकती है।

"लो, अब इन दोनों को पकड़ना आसान नहीं। अगर ख़ुद गिर पड़े तभी पकड़ाई देंगे," युवा कलाकार ने कहा जो तबीयत का बड़ा हंसोड़ था। अब पकड़ने की उसी की बारी थी। उसकी टांगें छोटी छोटी और टेढ़ी थीं, लेकिन आख़िर वह किसान था, उसकी टांगें तो मज़बूत होनी ही थीं। भागता भी वह ख़ूब तेज़ था।

"वाह!.. क्या तुम भी हमें नहीं पकड़ सकते?" कात्यूशा बोली।

"एक, दो, तीन," और कलाकार ने ताली बजायी।

कात्यूशा खिलखिला कर हंस पड़ी, उसने नेख़्लूदोव के साथ अपनी जगह बदली और उसके चौड़े हाथ को अपने छोटे से खुरदरे हाथ से दबा कर बायीं ओर को भाग गयी। मांडी लगे उसके घाघरे से सर्रसर्र की आवाज़ आ रही थी।

नेख़्लूदोव दायीं ओर को तेज़ तेज़ भागने लगा। वह नहीं चाहता था कि कलाकार उसे पकड़ पाये। लेकिन जब उसने सिर घुमा कर देखा तो पाया कि कलाकार कात्यूशा के पीछे भागा जा रहा है। कात्यूशा काफ़ी आगे थी और उसकी मज़बूत छोटी छोटी टांगें ख़ूब तेज़ भागे जा रही थीं। उनके सामने लिलक की एक झाड़ी थी। कात्यूशा ने अपना सिर झटक कर नेख़्लूदोव को इशारा किया कि उसके पीछे चलो। खेल के मुताबिक अगर वे दोनों फिर एक दूसरे का हाथ पकड़ लें तो उन्हें आ कर कोई नहीं पकड़ सकता। नेख़्लूदोव इशारा समझ गया और झाड़ी के

पीछे की ओर भागा। उसे मालूम नहीं था कि आगे एक छोटा सा गढ़ा पड़ता है जिसमें कांटेदार झाड़ियां उग रही हैं। ठोकर खा कर वह उसमें जा गिरा और उसके हाथ छिल गये। झाड़ियां शाम के वक़्त पड़ी ओस से भीगी थीं। पर वह फ़ौरन ही उठ खड़ा हुआ, और हंसता हुआ खुली जगह पर निकल आया।

कात्यूशा मानो उड़ती चली आ रही थी, काली काली जंगली बेरों जैसी आंखें और ख़ुशी से चमकता चेहरा। उन्होंने एक दूसरे का हाथ पकड़ लिया।

"अरे, तुम्हारा तो हाथ छिल गया है।" उसने हांफते हुए कहा, और दूसरे हाथ से अपने बाल ठीक करते हुए, मुंह उठा कर नेख़्लूदोव की ओर देखा। उसके होंठों पर एक मीठी सी मुस्कान खेल रही थी।

"मुझे क्या मालूम कि वहां पर गढ़ा है," उसने भी मुस्कराते हुए कहा और कात्यूशा का हाथ पकड़े रहा।

वह उसके ज़्यादा नज़दीक आ गई। फिर किसी अज्ञात प्रेरणावश, नेख़्लूदोव का मुंह कात्यूशा के मुंह की ओर झुक गया। कात्यूशा पीछे नहीं हटी। नेख़्लूदोव ने उसका हाथ ज़ोर से दबाया और उसके होंठ चूम लिये। नेख़्लूदोव को ख़ुद भी मालूम नहीं था कि उसने ऐसा क्यों किया।

"अरे, यह क्या!" उसने कहा और जल्दी से हाथ छुड़ा कर वहां से भाग गई।

लिलक की झाड़ियों के पास पहुंच कर, जिनके फूल कुछ कुछ झर चुके थे, उसने सफ़ेद लिलक की दो टहनियां तोड़ीं और उनसे अपने तमतमाते चेहरे पर थपकी देते हुए गरदन घुमा कर नेख़्लूदोव की ओर देखा और फिर अपनी बांहों को आगे की ओर ज़ोर ज़ोर से झुलाते हुए वह बाक़ी खिलाड़ियों की ओर भाग गयी।

इसके बाद इन दोनों के बीच एक अजीब सा रिश्ता पनपने लगा, एक ऐसा रिश्ता जो अक्सर शुद्ध चाल-चलन के लड़कों और लड़कियों के बीच पैदा हो जाता है जो एक दूसरे को चाहने लगते हैं।

जब कात्यूशा कमरे में आती, या नेख़्लूदोव को दूर से ही उसके सफ़ेद एप्रन की झलक मिलती तो उसकी आंखों में हर चीज़ रोशन हो उठती, उसी तरह जैसे सूरज के निकलने पर प्रत्येक वस्तु अधिक रोचक, उल्लासित और महत्वपूर्ण हो उठती है। जीवन अधिक आनन्दपूर्ण बन

ज़ाता। कात्यूशा की भी यही मन:स्थिति थी। और ऐसा केवल कात्यूशा की मौजूदगी में ही नहीं होता था। नेख़्लूदोव के लिए इतना सोच भर लेना ही काफ़ी था कि कात्यूशा जीती है (और कात्यूशा के लिए कि नेख़्लूदोव जीता है) वही असर होता। यदि कभी घर से कोई बुरा ख़त आ जाता, या निबन्ध लिखने में कोई मुश्किल दरपेश होती, या अकारण ही कभी उदास हो उठता, जैसा कि जवानी में अक्सर होता है, तो कात्यूशा का नाम लेते ही, और इस विचार से ही कि वह उससे मिलेगा, उसकी सारी उदासी फ़ौरन दूर हो जाती।

कात्यूशा को घर में बहुत काम रहता लेकिन किसी न किसी तरह वह पढ़ने के लिए थोड़ा वक़्त निकाल लेती थी। नेख़्लूदोव ने उसे दोस्तोयेव्स्की और तुर्गेनेव की किताबें पढ़ने को दीं, जिन्हें उसने ख़ुद हाल ही में पढ़ा था। तुर्गेनेव की रचना "शान्त नीड़" उसे सबसे अधिक पसन्द आयी। जब कभी दोनों एक दूसरे को अचानक कहीं मिल जाते—गलियारे में या बरामदे में या बाहर अहाते में—तो डरते, झिझकते एक-दो बातें कर लेते। उसी घर में फूफियों की एक बूढ़ी दासी मत्र्योना पाव्लोव्ना रहती थी। कात्यूशा उसी के कमरे में सोती थी, और नेख़्लूदोव उनके साथ बैठ कर कभी कभी चाय पिया करता था। यहां पर बितायी घड़ियां सबसे ज़्यादा ख़ुशगवार होतीं। जब अकेले मिलते तो उन्हें बड़ी झिझक होती। तब आंखें कुछ कहतीं और मुंह में से कुछ निकलता। आंखों का भाव बेहद महत्वपूर्ण होता और बातें मामूली होतीं। उनके होंठ फड़फड़ाते, मन में एक तरह का भय छा जाता और वे फ़ौरन एक दूसरे से अलग हो जाते।

जितनी देर नेख़्लूदोव वहां पर रहा, दोनों के बीच इस तरह के सम्बन्ध बने रहे। फूफियों ने भी देखा और उनका माथा ठनका, और उन्होंने नेख़्लूदोव की मां, प्रिंसेस येलेना इवानोव्ना को विदेश में एक ख़त लिख दिया। बड़ी फूफी को डर था कि इन दोनों के बीच अवैध सम्बन्ध पैदा हो जायेगा। लेकिन यह डर निराधार था। नेख़्लूदोव को कात्यूशा से प्रेम था, हालांकि उसे ख़ुद भी इस की ख़बर न थी। पर उसका प्रेम वैसा ही था जैसा कि एक निश्छल युवक का हो सकता है। इस कारण उनके कुमार्ग पर पड़ जाने की कोई आशंका नहीं हो सकती थी। शारीरिक भोग की इच्छा तो दूर, उसका ख़्याल तक आते ही उसका मन घृणा

से कांप उठता। छोटी फूफी के स्वभाव में कवित्व अधिक था। उसकी आशंकाएं इतनी निर्मूल भी न थीं। वह जानती थी कि द्मीत्री दृढ़-स्वभाव युवक है, जो बात मन में ठान ले उसे पूरी कर के छोड़ता है। इसलिए उसे डर था कि यदि वह कात्यूशा से प्रेम करने लगा तो ऐन मुमकिन है उससे शादी करने का फ़ैसला कर ले। उस वक़्त वह यह नहीं सोचेगा कि लड़की का ख़ानदान कैसा है और उसकी स्थिति क्या है।

यदि उस समय नेख़्लूदोव को मालूम होता कि उसे कात्यूशा से प्रेम है, और विशेषकर यदि उसे कहा जाता कि लड़की छोटी जात की है, उसके साथ तुम्हें किसी हालत में भी शादी नहीं करनी चाहिए, तो वह ज़रूर उससे शादी करने का निश्चय कर लेता। उस निश्छल युवक की दृष्टि में शादी की यथेष्टता प्रेम से थी, प्रेम के अतिरिक्त सब विचार असंगत थे। पर उसकी फूफियों ने अपने डर उस पर ज़ाहिर नहीं होने दिये। और जब वह वहां से चला गया तब भी उसे मालूम न था कि वह कात्यूशा से प्रेम करता है।

उन दिनों उसका रोम रोम जीवन के असीम आनंद का अनुभव कर रहा था। उसे विश्वास था कि कात्यूशा के प्रति जो भावनाएं उसके मन में उठती हैं, वे इसी आनन्द का एक रूप हैं, और यह प्यारी, हंसमुख बालिका भी उसके साथ इस आनन्द का उपभोग कर रही है। पर जब वह जाने लगा और कात्यूशा उसकी फूफियों के साथ सायबान के नीचे खड़ी, अपने काले काले, आंसू भरे नेत्रों से उसे देखे जा रही थी, तो उसे ऐसा जान पड़ा जैसे उसके जीवन में से कोई सुन्दर, अमूल्य चीज निकली जा रही है जो फिर उसे कभी प्राप्त नहीं होगी। और इससे उसका मन उदास हो उठा।

"अलविदा कात्यूशा," बग्घी में बैठते हुए उसने कात्यूशा की ओर देख कर कहा जिसका चेहरा छोटी फूफी की टोपी के पीछे से नज़र आ रहा था, "तुम्हारा बहुत बहुत शुक्रिया, हर बात के लिए!"

"अलविदा, द्मीत्री इवानोविच," कात्यूशा ने कोमल, मधुर आवाज़ में जवाब दिया। उसकी आंखें आंसुओं से भर आयी थीं और वह उन्हें रोकने की भरसक कोशिश कर रही थी। फिर वह ड्योढ़ी के अन्दर भाग गई ताकि वहां खुल कर रो सके।

इसके बाद तीन साल तक नेख़्लूदोव कात्यूशा से नहीं मिला। जब वह दोबारा उसे मिला तब वह फ़ौज का अफ़सर बन चुका था और अपनी रेजिमेंट में भरती होने जा रहा था। रास्ते में वह कुछ दिन के लिए अपनी फूफियों के पास ठहर गया। पर अब नेख़्लूदोव तीन साल पहले वाला नेख़्लूदोव नहीं रहा था, जो यहां गर्मी की छुट्टियां बिताने आया था। अब वह बहुत कुछ बदल गया था।

तब वह एक सच्चा, निःस्वार्थ युवक था जो किसी भी अच्छे काम के लिए अपनी जान तक कुर्बान करने के लिए तत्पर रहता। परन्तु अब वह एक भ्रष्टाचारी युवक था, बाहर से शिष्ट किन्तु अन्दर से घोर अहंवादी, जिसकी एकमात्र रुचि विलासिता में थी। पहले उसे यह संसार एक पहेली नज़र आता था जिसे वह अपने हृदय के समूचे उत्साह और उमंग के साथ सुलझाने की चेष्टा करता था। किन्तु अब हर बात स्पष्ट और सरल नज़र आती थी, जिस प्रकार का उसका जीवन था उसके अनुसार वह हर चीज़ की व्याख्या कर लेता था। पहले उसे प्रकृति के संसर्ग में रहना आवश्यक और महत्वपूर्ण जान पड़ता था। न केवल प्रकृति के ही, बल्कि उन दार्शनिकों और कवियों के भी संसर्ग में रहना, जो उससे पहले अपना जीवन व्यतीत कर गये थे और अपनी भावनाएं और विचार मानवजाति को सौंप गये थे। अब उसे केवल क्लब, नाचघर और साथियों से मेल-मिलाप ही आवश्यक और महत्वपूर्ण लगता था। तब स्त्रियां बड़ी रहस्यपूर्ण और सुन्दर नज़र आती थीं—उनकी रहस्यमयता ही उन्हें सौन्दर्य प्रदान करती थी। अब सभी स्त्रियों का एक ही मतलब था, सिवाय अपने परिवार की स्त्रियों के या उन स्त्रियों के जो उसके मित्रों की पत्नियां थीं। स्त्रियां संभोग की वस्तु थीं, और इस संभोग का रस वह कई बार ले चुका था। पहले उसे धन की कोई ज़रूरत नहीं थी। जेब-ख़र्च के लिए जितने पैसे उसे मां से मिलते थे, उसके एक-तिहाई से भी उसका काम चल जाता था। और जो ज़मीन-जायदाद उसे पिता की ओर से विरासत में मिली थी, उसे वह लेने से इन्कार कर सकता था और किसानों में बांट सकता था। अब मां से हर महीने मिलने वाले पन्द्रह सौ रूबलों से भी पूरी न पड़ती थी। और इस पर वह अपनी मां से झगड़ा भी कर चुका

था। तब उसकी दृष्टि में "अहं" का अर्थ था आत्मा, अब उसकी दृष्टि में "अहं" का अर्थ था एक स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट शरीर।

इस घोर परिवर्तन का एक मात्र कारण यह था कि उसने अपने आप पर विश्वास करना छोड़ दिया था और औरों पर विश्वास करने लगा था। यदि अपने आप पर विश्वास रखो तो जीना दूभर हो जाता है। तब हर प्रश्न का उत्तर स्वयं ढूंढ़ना पड़ता है, और यह उत्तर लगभग सदैव ही शारीरिक "अहं" के विरुद्ध और आत्मिक "अहं" के हक़ में होता है। शारीरिक "अहं" में तो केवल भोग की लालसा रहती है। परन्तु यदि औरों पर विश्वास करो तो किसी भी सवाल का जवाब स्वयं ढूंढ़ने की ज़रूरत नहीं रहती। सभी निश्चय गढ़े-गढ़ाये मिल जाते हैं, और ये निश्चय सदैव शारीरिक "अहं" के हक़ में और आत्मिक "अहं" के विरुद्ध होते हैं। इतना ही नहीं। यदि मनुष्य का अपने आप में विश्वास हो तो लोग उसकी खिल्ली उड़ाते हैं, और यदि औरों पर विश्वास हो तो लोग शाबाश कहते हैं।

जब नेख़्लूदोव जीवन के गंभीर विषयों पर विचार करता या उनकी चर्चा करता—जैसे भगवान्, सत्य, धन-दौलत, दारिद्र्य इत्यादि—तो उसके मित्र-सम्बन्धी इस चर्चा को असंगत समझते, बल्कि किसी हद तक हास्यास्पद भी। उसकी मां और फूफियां बड़े प्यार से उस पर व्यंग करतीं और उसे notre cher philosophe* कहतीं। परन्तु जब वह नावल पढ़ता, अश्लील कहानियां कहता, मज़ाक़िया फ़्रांसीसी नाटक देखने जाता और उनके चुटकुले हंस हंस कर सुनाता तो सभी उसकी सराहना करते और उसका साहस बढ़ाते। जब वह अपनी ज़रूरतों को कम करना चाहता और सादा जीवन बिताना चाहता—जैसे पुराना ही ओवरकोट लटकाये रहता, या शराब नहीं पीता—तो सब हैरान होते और समझते कि वह दिखावा कर रहा है। लेकिन जब वह शिकार पर पैसे लुटाता या अपने पढ़ने वाले कमरे की सजावट पर पैसे बरबाद करता तो लोग उसकी पसन्द की वाह वाह करते, और उसके शौक़ को प्रोत्साहित करने के लिए उसे बढ़िया, क़ीमती उपहार देते। जब वह ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करता और कहता कि विवाह के समय तक वह अपने शरीर को पवित्र रखेगा, तो

---

*हमारा प्यारा दार्शनिक। (फ़्रेंच)

रिश्तेदारों को उसके स्वास्थ्य की चिन्ता होने लगती। यहां तक कि जब उसकी मां को पता चला कि उसके बेटे ने अपना "पुरुषत्व" प्रमाणित कर दिया है, और एक फ़्रांसीसी लड़की को, जो उसी के एक मित्र की प्रेयसी थी, अपने वश में कर लिया है, तो दुःखी होने के बजाय वह ख़ुश हुई। लेकिन कात्यूशा वाली बात याद कर के और यह कि उसका बेटा उस लड़की से शादी करने की सोच सकता था, प्रिंसेस-मां का तो दिल ही बैठ जाता था।

इसी तरह जब नेख़्लूदोव बालिग़ हुआ और उसने विरसे में मिली पिता की छोटी सी ज़मीन किसानों को दे डाली—क्योंकि वह भूमि की निजी मिलकियत को अन्यायपूर्ण समझता था—तो उसकी मां और सभी घर वालों को बड़ी निराशा हुई। रिश्तेदारों को तो मज़ाक़ करने का बहाना मिल गया। लोग कहते कि इस तरह किसान अमीर थोड़े ही हो गये हैं, उल्टे और भी ग़रीब हुए हैं, क्योंकि एक तो उन्होंने तीन शराबख़ाने खोल लिये हैं, दूसरे ख़ुद काम करना छोड़ दिया है। पर जब नेख़्लूदोव गार्ड्स सेना में भरती हुआ और अपने अमीर साथियों के साथ जुए और ऐशोइशरत में रुपया लुटाने लगा, यहां तक कि मां को अपनी पूंजी में से रुपया निकलवाने की नौबत आ गई तो भी मां को कोई दुःख नहीं हुआ। इसे वह स्वाभाविक ही समझती थी, बल्कि किसी हद तक अच्छा भी, कि आदमी को जो गुल खिलाने हों छोटी उम्र में ही खिला ले और अच्छे ख़ानदानी लोगों की सोहबत में।

शुरू शुरू में तो नेख़्लूदोव के मन में संघर्ष उठा। उसने देखा कि अपने आप पर विश्वास रखते हुए जो कोई बात उसे अच्छी लगती थी, वही उसके संगी-साथियों को बुरी लगती, और जिसे वह बुरा समझता उसे वे लोग अच्छा समझते थे। किंतु यह संघर्ष नेख़्लूदोव के लिए बहुत कठिन था और अंत यही हुआ कि उसने हार मान ली, अर्थात् अपने आप पर विश्वास करना छोड़ दिया और दूसरों पर विश्वास करने लगा। पहले तो उसे इस तरह आत्मविश्वास को देना खला, पर यह स्थिति ज़्यादा देर तक नहीं रही। उसी समय उसने सिगरेट और शराब पीने की आदत डाल ली, इस तरह शीघ्र ही यह अप्रिय भावना बिल्कुल ही दब गई, और यहां तक कि उसे लगा मानो उस पर से कोई बोझ हट गया है।

नेख़्लूदोव धुन का पक्का युवक था। नये ढंग का जीवन अपनाने की

देर थी कि बेलगाम हो कर उसमें कूद पड़ा। अब जो कुछ भी वह करता उसमें उसे मित्रों-सम्बन्धियों की अनुमति प्राप्त थी। हां, अन्तरात्मा की आवाज़ कुछ और ही कहती थी, पर उसका उसने गला घोंट दिया था। इस स्थिति का आरंभ उस समय हुआ जब वह पीटर्सबर्ग में जा कर रहने लगा, परन्तु पराकाष्ठा तक वह उस समय पहुंची जब वह फ़ौज में भरती हुआ।

सामान्यतया फ़ौज में जा कर लोगों का नैतिक पतन होने लगता है। वहां का जीवन ऐसा है कि उन्हें कोई काम नहीं करना पड़ता, कम से कम कोई ऐसा काम नहीं जिसे सूझ-बूझ वाला और उपयोगी कहा जा सके। साधारण मानवीय कर्तव्यों तक से उन्हें छुट्टी मिल जाती है, और उनके स्थान पर उन्हें केवल औपचारिक कर्तव्य निभाने पड़ते हैं, जैसे अपनी रेजिमेंट, और वर्दी और झण्डे का गौरव बनाये रखना। एक तरफ़ अपने से छोटे अफ़सरों पर उन्हें निरंकुश अधिकार प्राप्त होता है, दूसरी तरफ़ अपने से बड़े अफ़सरों का उन्हें दासों की तरह हुक्म मानना पड़ता है।

सेना की नौकरी में जहां बड़ी वर्दी और झण्डे के गौरव का ढोल पीटा जाता है और हिंसा और हत्या को वैध माना जाता है, वहां पर एक तो मनुष्य का यों ही पतन होने लगता है। पर इसके साथ साथ एक दूसरी तरह का भी पतन होने लगता है जिसका स्रोत पैसा और ज़ार-परिवार से निकट का संपर्क है। गार्ड्स के लिए केवल अमीर और कुलीन घरानों से ही अफ़सर चुने जाते हैं। जब इस तरह दोनों तरफ़ से पतन होने लगे तो मनुष्य को घोर स्वार्थ के अलावा कुछ नज़र नहीं आता। और नेख़्लूदोव उसी वक़्त से स्वार्थान्धता के कीच में फंस गया जब वह फ़ौज में दाख़िल हुआ और अपने साथियों का सा जीवन व्यतीत करने लगा।

उसका कोई और काम नहीं था, सिवाय इसके कि बढ़िया वर्दी कसता, जिसका बनाने वाला कोई और होता और ब्रुश से साफ़ करने वाला कोई दूसरा। फिर हथियारों से लैस हो जाता। ये हथियार भी दूसरों के हाथ के बने होते, और दूसरे ही इन्हें साफ़ कर के नेख़्लूदोव को पकड़ाते। परेड या क़वायद पर जाने के लिए वह बढ़िया घोड़े पर सवार होता, और इस घोड़े को पाल कर बड़ा करने वाले, सवारी के लिए तैयार करने वाले, और अब उसकी देख-रेख करने वाले भी और लोग थे। वह बड़े ठाठ से तलवार घुमाता, और तोप चलाता जिस तरह उसके अन्य साथी करते,

और अन्य लोगों को इसकी शिक्षा देता। इसके अलावा उसका कोई और काम नहीं था। और इस काम के लिए बड़े बड़े अफ़सर, बूढ़े और जवान, स्वयं ज़ार और उसके निकट के लोग न केवल अपनी अनुमति देते बल्कि इसकी सराहना करते और इसका धन्यवाद करते। इसके अतिरिक्त वहां किस चीज़ को अच्छा और महत्वपूर्ण समझा जाता था? खाने-पीने को, विशेष कर पीने को, अफ़सरों के क्लबों और बढ़िया होटलों में पैसे लुटाने को, जो पैसे किसी अदृश्य स्रोत से चले आते थे। फिर नाटक, नाच, स्त्रियां। इसके उपरान्त फिर घुड़-सवारी, तलवार घुमाना और घुड़-दौड़ें। जब यह समाप्त होता तो पैसे लुटाने का दौर शुरू हो जाता—शराब, जुआ, औरतें।

जो आदमी सेना में नहीं है, यदि वह इस प्रकार का जीवन व्यतीत करे तो उसे अन्दर ही अन्दर शर्म महसूस होने लगेगी। परन्तु इसके विपरीत फ़ौजी को इस प्रकार के जीवन पर दम्भ होता है, विशेषकर जब जंग का ज़माना हो, और नेख़्लूदोव ने तो फ़ौज में उस समय प्रवेश किया था जब अभी अभी तुर्की के ख़िलाफ़ जंग का ऐलान हुआ था। "लड़ाई में हम अपनी जान कुरबान करने के लिए तैयार रहते हैं। इसलिए हमारे लिए हंसी-खेल और ऐश न केवल क्षम्य है बल्कि आवश्यक भी। और इसी लिए हम ऐसा जीवन व्यतीत करते हैं।"

इस तरह के अस्पष्ट विचार उन दिनों नेख़्लूदोव के मन में घूमते थे। वह मन ही मन ख़ुश था कि उस नैतिक नियन्त्रण से छुटकारा मिला जो उसने अपने ऊपर लाद रखा था। और उसके जीवन की स्थिति बिल्कुल ऐसे आदमी की थी जिसे स्वार्थ ने अन्धा कर रखा हो।

और इसी स्थिति में वह, तीन साल के बाद, अपनी फूफियों से मिलने के लिए आया था।

१४

जिस रास्ते नेख़्लूदोव अपनी रेजिमेंट में शामिल होने के लिए जा रहा था, उसी के नज़दीक ही उसकी फूफियों की ज़मींदारी पड़ती थी। एक तो इस कारण वह उनसे मिलने के लिए चला गया। दूसरे इसलिए कि उन्होंने बड़े प्यार से उसे आने को कहा था। पर वहां जाने का सबसे

वड़ा कारण यह था कि वह कात्यूशा को देखना चाहता था। शायद पहले से ही उसके अन्तर्मन में कात्यूशा के ख़िलाफ़ नीच इरादे बन चुके हों, जिनकी प्रेरणा अब उसे अपनी असंयत पाशविक वृत्तियों से मिल रही थी। पर इसकी उसके चेतन मन को ख़बर न थी। वह दोबारा वहां केवल इसलिए जाना चाहता था कि उसने पहले वहां बड़े अच्छे दिन विताये थे, और अपनी बूढ़ी फूफियों से मिलना चाहता था, जो थीं तो अनोखी सी जीव पर दिल की बड़ी अच्छी थीं, और प्यार से भरी। उसे पता भी न चलता था कैसे, लेकिन वे सदा उसके इर्द-गिर्द प्रेम और आनंदोल्लास का वातावरण वना देती थीं। वह कात्यूशा से भी मिलना चाहता था, जिसकी वड़ी मधुर स्मृति वह मन में संजोये हुए था।

वह वहां मार्च महीने के अन्त में, ईस्टर-शुक्रवार के दिन पहुंचा। वर्फ़ पिघलनी शुरू हो गई थी। उस रोज़ मूसलाधार वारिश हो रही थी, और वह वुरी तरह से भीग गया था, और ठिठुर रहा था, लेकिन फिर भी ख़ूब चुस्त और ख़ुश था जैसा कि उन दिनों वह हर वक़्त रहा करता था। "क्या कात्यूशा अव भी उनके साथ रहती होगी?" वह मन ही मन सोच रहा था, जब वह बग्घी में बैठा, जाने-पहचाने, पुराने ढंग के सहन में दाख़िल हुआ। सहन के चारों तरफ़ ईंटों की दीवार थी और उसमें छतों पर से गिर गिर कर वर्फ़ इकट्ठी हो रही थी।

उसका ख़्याल था कि वग्घी की घंटियों की आवाज़ सुनते ही वह भाग कर वाहर आ जायेगी। परन्तु वह नहीं आयी। दो स्त्रियां, नंगे पांव, घाघरे ऊपर कर के वांधे हुए, और हाथों में वाल्टियां उठाये, वग़ल के दरवाज़े में से वाहर निकलीं। जाहिर था कि फ़र्श साफ़ कर रही थीं। कात्यूशा सामने के दरवाज़े पर भी नहीं मिली। केवल नौकर तीख़ोन वाहर निकल कर सायवान में आया। उसने एप्रन पहन रखा था, और ज़ाहिर था कि वह भी सफ़ाई में लगा हुआ है। छोटी वैठक में उसे केवल उसकी छोटी फूफी सोफ़िया इवानोव्ना मिली। उसने रेशमी पोशाक पहन रखी थी, और सिर पर टोपी पहन रखी थी।

"कितना अच्छा किया तुमने जो तुम आ गये!" अपने भतीजे को चूमते हुए सोफ़िया इवानोव्ना ने कहा। "मारीया की तवीयत ठीक नहीं, कुछ थक गई है। हम कम्यूनियन में गई थीं।"

"ईस्टर की मुवारक हो फूफी," सोफ़िया इवानोव्ना का हाथ चूमते

हुए नेख़्लूदोव ने कहा। "उह! मैंने तो आपके कपड़े गीले कर दिये! माफ़ कीजिये।"

"तुम चलो अपने कमरे में—अरे तुम तो सिर से पांव तक भीग रहे हो। और तुम्हारी तो अब मूंछें भी आ गई हैं! कात्यूशा! कात्यूशा! इन्हें गरम गरम कॉफ़ी पिलाओ, जल्दी करो।"

"अभी लाती हूं," एक मधुर सुपरिचित आवाज़ ने गलियारे में से जवाब दिया।

नेख़्लूदोव का दिल वल्लियों उछलने लगा, "यहीं पर है!" उसे ऐसे जान पड़ा जैसे सूरज वादलों के पीछे से निकल आया हो। नेख़्लूदोव ख़ुश ख़ुश अपने पहले कमरे की ओर बढ़ गया ताकि कपड़े वदल डाले। उसके पीछे पीछे तीख़ोन हो लिया।

नेख़्लूदोव का मन चाहता था कि तीख़ोन से कात्यूशा के वारे में पूछे, उसका क्या हाल है, क्या करती है, शादी करेगी या नहीं। पर तीख़ोन की भाव-भंगिमा में इतना आदर-भाव और साथ ही इतनी दृढ़ता थी—यहां तक कि हाथ धुलाने का भी तीख़ोन हठ करने लगा कि वही हाथों पर पानी डालेगा—कि नेख़्लूदोव फ़ैसला ही नहीं कर पाया कि पूछूं या न पूछूं। केवल तीख़ोन के ही नाती-पोतों के वारे में पूछता रहा, और भाई के बूढ़े घोड़े के वारे में और पोलकान कुत्ते के वारे में। पोलकान को छोड़ कर सभी जीते-जागते थे। पोल्कान पिछली गरमियों में वावला हो गया था।

नेख़्लूदोव ने गीले कपड़े उतारे और दूसरे कपड़े पहन ही रहा था कि तेज़ तेज़ क़दमों की आवाज़ आई और किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। नेख़्लूदोव इन क़दमों को पहचानता था और इस विशेष खटखटाहट को भी। केवल वही इस तरह चलती और दरवाज़ा खटखटाती थी।

नेख़्लूदोव ने अपना गीला वरान कोट कन्धों पर डाल लिया और दरवाज़ा खोला।

"आ जाओ।"

कात्यूशा ही थी। विल्कुल पहले सी, केवल पहले से अधिक प्यारी। पहले की ही तरह उसने अपनी मुस्कराती, भोली, थोड़ी ऐंची काली आंखें ऊपर उठा कर उसे देखा। अब भी उसने सफ़ेद एप्रन पहन रखा था। उसने हाथों में ख़ुशबूदार सावुन की नयी टिकिया, जिस पर से

अभी अभी काग़ज़ उतारा गया था और दो तौलिये उठाये हुए थी, जो फूफियों ने भेजे थे। एक तौलिया मुंह-हाथ पोंछने के लिए था, दूसरा लम्बा रूसी तौलिया था, जिस पर कसीदाकारी की हुई थी। ताज़ा साबुन पर नाम का ठप्पा, तौलिये, हर चीज़, कात्यूशा समेत, स्वच्छ, ताज़ा, निष्कलंक और प्रिय थी। नेख़्लूदोव को देख कर कात्यूशा बरबस ख़ुशी से मुस्करा उठी, और उसके प्यारे प्यारे सुगठित होंठ उसी तरह सिकुड़ उठे जिस तरह पहले सिकुड़ा करते थे।

"तुम कैसे हो, द्मीत्री इवानोविच," कात्यूशा बड़ी मुश्किल से कह पाई। उसका चेहरा लाल हो गया।

"कहो, अच्छी हो!" नेख़्लूदोव ने कहा। वह भी शर्मा रहा था। "मज़े में हो?"

"भगवान् की दया है। यह रहा गुलाबी साबुन जो तुम्हें इतना अच्छा लगता था, और यह रहे तौलिये। तुम्हारी फूफी ने भेजे हैं।" उसने कहा और साबुन की टिकिया मेज़ पर रख दी और तौलिये एक कुरसी के हत्थे पर लटका दिये।

"यहां पर सब कुछ मौजूद है," मेहमान की आत्मनिर्भरता का पक्ष लेते हुए तीख़ोन बोला, और नेख़्लूदोव के सामान की ओर इशारा किया जहां साबुन-तेल रखने वाला बक्स खुला पड़ा था और उसमें तरह तरह की शृंगार की चीज़ें, ब्रुश, इत्र तथा बहुत सी बोतलें रखी थीं जिनके ढकने चांदी के बने थे।

"मेरी ओर से फूफी को धन्यवाद कहना। यहां आ कर मुझे बेहद ख़ुशी हुई है," नेख़्लूदोव ने कहा। पहले की तरह अब भी उसका हृदय प्यार और मृदुता से भर उठा।

इन शब्दों को सुन कर कात्यूशा केवल मुस्करा दी और बाहर चली गई।

नेख़्लूदोव से फूफियों को बेहद प्रेम था। अब की वे और भी प्यार से मिलीं। द्मीत्री लड़ाई में जा रहा था, क्या मालूम वहां वह ज़ख़्मी हो जाय, या मारा जाय। यह सोच कर वृद्ध महिलाओं का हृदय द्रवित हो उठा था।

नेख़्लूदोव आया तो इस इरादे से था कि वहां पर केवल एक दिन और एक रात रहेगा, लेकिन जब उसने कात्यूशा को देखा तो ईस्टर का पर्व वहीं मनाने के लिए राज़ी हो गया। उसने अपने दोस्त शेनबोक के

साथ यह फ़ैसला कर रखा था कि उसे ओदेस्सा में मिलेगा। अब उसे तार दे दिया कि सीधे यहीं आ जाओ।

कात्यूशा को देखते ही नेख़्लूदोव के मन में पहली भावनाएं जाग उठीं। अब भी उसके सफ़ेद एप्रन की झलक पड़ते ही उसका दिल उद्वेलित हो उठता। उसकी आवाज़ सुन कर, उसके पांवों की आहट पा कर, उसे हंसते सुन कर, उसका दिल खिल उठता। जब कात्यूशा मुस्कराती और नेख़्लूदोव उसकी काली काली, भीगे जंगली बेरों की सी आंखों की ओर देखता तो उसका दिल कोमलतम भावनाओं से भर उठता। उससे सामना होते ही कात्यूशा का चेहरा लाल पड़ जाता, और उसे लजाते देख नेख़्लूदोव के दिल में स्नेह उमड़ पड़ता था। नेख़्लूदोव को महसूस होने लगा जैसे वह कात्यूशा को प्रेम करने लगा है। परन्तु यह प्रेम की भावना पहले की सी न थी। तब वह प्रेम एक पहेली सा था। तब वह स्वयं भी स्वीकार न कर पाता कि उसे प्रेम है, तब उसे विश्वास था कि मनुष्य जीवन में एक ही बार प्रेम कर सकता है। परन्तु अब वह जानता था कि उसे प्रेम है; वह ख़ुश था, उसे धूमिल सा ज्ञान था कि यह प्रेम किस प्रकार का है और इसका क्या अन्त हो सकता है, हालांकि वह अपने आपसे भी उसे छिपाने की कोशिश कर रहा था।

सभी मनुष्यों की तरह नेख़्लूदोव में भी दो जीव बसते थे, एक आध्यात्मिक जीव, जो ऐसे सुख की कामना करता था जिसमें सभी का सुख हो, दूसरा कामुक जीव, जो केवल अपनी ही तृप्ति चाहता था और उसे प्राप्त करने के लिए बाक़ी सारी दुनिया का सुख होम करने के लिए तैयार था। जीवन के इस काल में नेख़्लूदोव का अहंकार पीटर्सबर्ग में और सेना में रहने के कारण स्वार्थान्धता की सीमा तक जा पहुंचा था, और कामुक जीव ने आध्यात्मिक जीव को बिल्कुल कुचल कर वहां अपना आधिपत्य जमा लिया था। परन्तु अब, तीन साल के बाद, कात्यूशा से मिलने पर, उसके हृदय में फिर वही भावनाएं जाग उठीं जो पहले उठी थीं। आध्यात्मिक जीव ने फिर एक बार सिर उठाया। पूरे दो दिन, ईस्टर के दिन तक उसके मन में निरन्तर संघर्ष चलता रहा, हालांकि वह स्वयं इसका स्पष्ट अनुभव नहीं कर रहा था।

उसके अन्तर्तम से यह आवाज़ उठती थी कि यहां से चले जाना चाहिए, फूफियों के घर में टिके रहने का कोई मतलब नहीं, कि नतीजा

अच्छा नहीं होगा, परन्तु रहने में इतना मज़ा था, इतना लुत्फ़ था कि उसने सच्चे दिल से इस बारे में नहीं सोचा, और वहीं पर टिका रहा।

शनिवार शाम को एक पादरी डीकन के साथ स्लेज में बैठ कर उपासना करवाने आये। गिरजे से घर तक तीन मील का फ़ासला था। उन्हें यहां तक पहुंचने में बड़ी कठिनाई हुई, कम से कम उनका यही कहना था, क्योंकि सड़क पर जगह जगह पानी खड़ा था और कहीं कहीं पर स्लेज को नंगी ज़मीन पर खींचना पड़ा था।

नेख़्लूदोव भी अपनी फूफियों और घर के नौकर-चाकरों के साथ सम्मिलित उपासना में शामिल हुआ, और सारा वक़्त कात्यूशा की ओर देखता रहा जो दरवाज़े के पास खड़ी थी और पादरी के लिए धूपदानियां ला जा रही थी। उपासना ख़त्म होने पर नेख़्लूदोव ने पादरी और फूफियों को ईसा मसीह के पुनर्जन्म पर बधाई देते हुए चूमा और फिर वह सोने जा ही रहा था कि बाहर गलियारे में मारीया इवानोव्ना की बुढ़िया नौकरानी मात्र्योना पाव्लोव्ना को कात्यूशा के साथ ईस्टर के केकों और रंग किये अंडों को पवित्र करवाने के लिए चर्च जाने की तैयारियां करते सुना। "मैं भी जाऊंगा," नेख़्लूदोव ने मन ही मन कहा।

घर से ले कर गिरजे तक की सड़क बहुत ही ख़राब थी। उस पर न स्लेज में और न ही बग्घी में जाया जा सकता था। नेख़्लूदोव ने फ़ौरन घोड़ा तैयार करने का हुक्म दे दिया और कहा कि बूढ़े "भाई के घोड़े" पर ज़ीन कस दी जाय। नेख़्लूदोव इस घर को अपना ही घर समझता था, और उसी तरह व्यवहार करता था। बिस्तर पर सोने की बजाय उसने अपना बढ़िया वर्दी-कोट पहना, चुस्त पतलून कसी और कन्धों पर बरान कोट डाले, घोड़े पर सवार हो गया। घोड़ा बूढ़ा था, लेकिन ख़ूब पला हुआ और बोझल गति से चलता था। सारा रास्ता वह हिनहिनाता गया। बाहर गहन अन्धेरा था, जिसमें गढ़ों और बर्फ़ को लांघता हुआ नेख़्लूदोव गिरजे की ओर जाने लगा।

१५

नेख़्लूदोव के मन पर ईस्टर उपासना का वह दृश्य अत्यन्त सुन्दर और सजीव छाप छोड़ गया जो उसे आजीवन याद रही।

घने अन्धेरे में से होता हुआ, जिसे केवल किसी किसी जगह सफ़ेद

वर्फ़ के पैवन्द भंग करते थे, वह जगह जगह खड़े पानी पर छप छप करते हुए गिरजे के आंगन में दाख़िल हुआ। गिरजे के चारों ओर लैम्पों की क़तार थी। रोशनी को देख कर घोड़े के कान खड़े हो गये।

जब नेख़्लूदोव गिरजे पहुंचा तो उपासना शुरू हो चुकी थी। आंगन में खड़े किसानों ने मारीया इवानोव्ना के भतीजे को पहचान लिया, और उसके घोड़े की लगाम पकड़ कर सूखी जगह पर ले गये, जहां नेख़्लूदोव घोड़े पर से उतर सके। फिर घोड़े को ठीक जगह पर ले जा कर बांध दिया, और नेख़्लूदोव को गिरजे में ले गये। गिरजा खचाखच लोगों से भरा हुआ था।

गिरजे में दायीं तरफ़ किसान खड़े थे, बूढ़े आदमी, घर के कते-वुने कोट पहने और पांवों में छाल के बूट कसे और साफ़-सुथरी सफ़ेद पट्टियां बांधे। जवानों ने नये नये ऊनी कोट पहन रखे थे और कमर में शोख़ रंग की पेटियां और चमड़े के लम्बे बूट चढ़ाये थे। वायीं ओर छोटी उम्र की स्त्रियां थीं, सिरों पर लाल रंग के रेशमी रूमाल बांधे, काले रंग की नक़ली मख़मल की जॉकटें जिनके नीचे शोख़ लाल रंग की क़मीज़ें और भड़कीले हरे, नीले और लाल रंग के घाघरे पहने हुए थीं। पांवों में उन्होंने चमड़े के जूते पहन रखे थे जिनके नीचे लोहे की पतरियां लगी थीं। उनके पीछे बूढ़ी स्त्रियां खड़ी थीं जिनकी पोशाक अधिक सादा थी। सिर पर सफ़ेद रूमाल, भूरे रंग के कोट, पुरानी चलन के घाघरे, और पांवों में चमड़े या छाल के जूते। उनके बीच सजे-धजे, सिर पर तेल लगाये बच्चे खड़े थे। पुरुष क्रॉस का चिन्ह वनाते वक़्त अपना सिर झुका लेते और बाद में सीधा कर लेते और झटक कर अपने बाल पीछे को कर देते। स्त्रियां, विशेषकर बूढ़ी स्त्रियां अपनी धुंधली आंखों से टिकटिकी बांधे एक देव-प्रतिमा की ओर देखे जा रही थीं और क्रॉस का चिन्ह वना रही थीं। देव-प्रतिमा के आस-पास मोमवत्तियां जल रही थीं। वे अपनी जुड़ी उंगलियों से अपने सिर के रूमाल को कस कर छूतीं, फिर पेट को और फिर एक एक कर के दोनों कन्धों को। और मुंह में से कुछ फुसफुसाती हुई झुक जातीं या घुटनों के वल बैठ जातीं। बच्चे वड़ों की नक़ल कर रहे थे, जब उन्हें ध्यान होता कि लोग उनकी ओर देख रहे हैं तो बड़े गंभीर बन कर प्रार्थना करते। देव-प्रतिमाओं के सुनहरी फ़्रेम चमक रहे थे। उनके चारों तरफ़ वड़ी वड़ी मोमवत्तियां जल

रही थीं जिन पर वेलबूटेदार, सुनहरी खोल बने थे। उनके गिर्द सभी शमादानों में छोटी वत्तियां जल रही थीं। सहगान के मंच पर से तरह तरह के रोचक स्वर सुनाई दे रहे थे। गान-मण्डली के सदस्य शौकिया गाने वाले थे। इनमें गहरी आवाज़ें भी थीं और नन्हे बालकों की तीखी आवाज़ें भी।

नेख़्लूदोव सीधा आगे वढ़ गया। गिरजे के बीचोंबीच भद्र-जन थे: एक ज़मींदार जो अपनी पत्नी और बेटे के साथ आया था (बेटे ने जहाजियों का सूट पहन रखा था), पुलिस-अफ़सर, तार-बाबू, एक व्यापारी जिसने लम्बे बूट चढ़ा रखे थे, और गांव का मुखिया जिसकी छाती पर तमग़ा चमक रहा था। वेदी के दायीं ओर ज़मींदार की पत्नी के ऐन पीछे मात्योना पाव्लोव्ना हल्के बैंगनी रंग की पोशाक पहने और कन्धों पर सफ़ेद झालरदार शाल ओढ़े खड़ी थी। उसके साथ ही कात्यूशा थी। छाती पर झालरों वाली सफ़ेद पोशाक, नीले रंग का कमरबन्द और काले काले बालों पर लाल रंग का रिब्बन था।

गिरजे में उत्सव का वातावरण था, हर चीज़ उज्ज्वल, पवित्र और सुन्दर लग रही थी। पादरी ज़री का जामा पहने था जिस पर सुनहरी क्रॉस बने थे। डीकन, क्लर्क और गायकों ने सफ़ेद और सुनहरी रंग के वस्त्र पहन रखे थे। शौकिया गान-मण्डली के सदस्य, पूरी सज-धज के साथ, सिर पर ख़ूब तेल चुपड़ कर आये थे। स्तुतिगान की धुनें बड़ी हल्की-फुल्की और रोचक थीं, ऐसा जान पड़ता जैसे नाच की धुनें बज रही हों। पादरी हाथ में एक मोमबत्ती पकड़े जिस पर फूल बने थे बराबर लोगों को आशीश दिये जा रहा था। गिरजे में बार बार "प्रभु ईसा जाग उठे! प्रभु ईसा जाग उठे!" की आवाज़ गूंज उठती। हर चीज़ अति सुन्दर थी, पर सबसे अधिक सुन्दर थी कात्यूशा, जो सफ़ेद सफ़ेद पोशाक पहने, नीला कमरबन्द और अपने काले बालों में लाल रिब्बन बांधे खड़ी थी, और जिसकी आंखें हृदयोल्लास से चमक रही थीं।

वह नेख़्लूदोव की ओर देख तो नहीं रही थी पर नेख़्लूदोव जानता था कि उसे उसकी उपस्थिति का पूरा पूरा भास है। वेदी की ओर जाते हुए उसने यह भांप लिया था। वह उसके पास से गुज़रा। उसे कात्यूशा को कुछ नहीं कहना था, मगर उसने झट से एक बात गढ़ ली और उसके पास जा कर कान में बोला:

"फूफी ने कहा है कि वह दूसरी उपासना के वाद अपना व्रत तोड़ेंगी।"

सदा की तरह उसे देखते ही कात्यूशा का प्यारा चेहरा लाल हो गया। उसकी उल्लसित काली काली आंखें, जिनमें हंसी फूट रही थी, वड़े भोलेपन से नेख़्लूदोव के चेहरे की ओर देखने लगीं।

"मुझे मालूम है," उसने मुस्करा कर कहा।

ऐन इसी वक़्त गिरजे का क्लर्क पास से गुज़रा। वह तांवे का पात्र लिये भीड़ में रास्ता वना रहा था। उसने कात्यूशा को नहीं देखा जिससे उसका वस्त्र कहीं कात्यूशा से अटक गया। प्रत्यक्षतः यह इसलिए हुआ कि वह नेख़्लूदोव से थोड़ा हट कर निकल जाना चाहता था। पर नेख़्लूदोव को वड़ी हैरानी हुई। क्या यह क्लर्क नहीं जानता कि यहां की हर चीज़ कात्यूशा के लिए है। यहां की ही क्यों, संसार भर की हर चीज़ कात्यूशा के लिए है! और चीज़ों की ओर ध्यान न जाय तो समझा जा सकता है, परन्तु कात्यूशा की उपेक्षा कैसे की जा सकती है? वह तो सकल विश्व का केन्द्र है। जो देव-प्रतिमाओं के सुनहरी चौखटे चमक रहे हैं तो उसी के लिए, जो शमादानों में मोमवत्तियां जल रही हैं तो उसी की ख़ातिर; उसी की ख़ुशी के लिए गिरजे में स्तुतिगान के वोल गूंज रहे हैं—"देखो सव जन! ईसा का प्रस्थान!" संसार में जो कुछ भी श्रेष्ठ है, सव उसी के लिए है। ऐसा जान पड़ता था जैसे कात्यूशा को भी मालूम हो कि सव उसी के लिए है। जव नेख़्लूदोव ने उसके सुडौल शरीर की ओर देखा, उसकी सफ़ेद पोशाक और प्रफुल्लित चेहरे को देखा तो उसने समझ लिया कि जिस संगीत से उसकी अपनी आत्मा झंकृत है, वही संगीत कात्यूशा की आत्मा में भी गूंज रहा है।

पहली और दूसरी उपासना के वीच अन्तराल था। इस वीच नेख़्लूदोव गिरजे में से वाहर निकल गया। गिरजे में खड़े लोग पीछे हट हट कर उसके लिए रास्ता वनाने लगे और झुक झुक कर उसका अभिवादन करने लगे। कुछ लोग तो उसे जानते थे। जो नहीं जानते थे वे एक दूसरे से पूछने लगे कि यह आदमी कौन है। सीढ़ियों पर पहुंच कर वह खड़ा हो गया। वाहर खड़े हुए भिखमंगे भागते हुए उसके पास आ गये। नेख़्लूदोव ने अपना वटुआ निकाला और जितनी भी रेज़गारी उसमें थी उन्हें दे दी, और फिर सीढ़ियां उतर गया।

पौ फट रही थी, परन्तु सूर्य अभी नहीं निकला था। लोग गिरजे के क़ब्रिस्तान में, क़ब्रों के पास बैठे हुए थे। कात्यूशा अब भी अन्दर थी, और नेख़्लूदोव उसका इन्तज़ार करने लगा।

लोग अब भी गिरजे में से बाहर निकल रहे थे और निकल कर क़ब्रिस्तान में बिखरते जा रहे थे। पत्थर की सीढ़ियों पर उनके बूटों के नीचे लगे कील खट खट कर रहे थे।

एक बहुत बूढ़े आदमी ने जिसका सिर हिल रहा था, नेख़्लूदोव को रोक लिया ताकि प्रथानुसार ईस्टर-चुम्बन कर सके। वह नेख़्लूदोव की फूफियों का रसोइया था। उसकी बूढ़ी पत्नी ने जिसके मुंह पर झुर्रियों का जाल बिछा था, अपने रूमाल में से एक अण्डा निकाला जिस पर पीला रंग पुता हुआ था और नेख़्लूदोव को भेंट किया। एक युवा किसान मुस्कराता हुआ, नया कोट और हरे रंग की पेटी कसे, नेख़्लूदोव के सामने आ खड़ा हुआ।

"ईसा फिर जाग उठे!" उसने कहा और आगे बढ़ कर अपने मज़बूत, ताज़ादम होंठों से नेख़्लूदोव को सीधा मुंह पर चूम लिया। उसकी आंखें हंस रही थीं और सारे शरीर में से एक ख़ास तरह की मधुर गन्ध आ रही थी, जो केवल किसान के ही शरीर से आ सकती है। चूमते वक़्त उसकी घुंघराली दाढ़ी नेख़्लूदोव के गालों को गुदगुदाती रही।

किसान अभी नेख़्लूदोव को चूम ही रहा था और उसे गहरे भूरे रंग का एक अण्डा भेंट कर रहा था जब नेख़्लूदोव को मात्र्योना पाव्लोव्ना की बैंगनी पोशाक और कात्यूशा का प्यारा सा सिर जिस पर लाल रिब्बन बंधा था, नज़र आये।

कात्यूशा के सामने बहुत से लोग चले थे। उनके सिरों के ऊपर से देखते हुए उसे भी नेख़्लूदोव नज़र आ गया और नेख़्लूदोव ने देखा कि उस पर नज़र पड़ते ही कात्यूशा का चेहरा खिल उठा है।

वह मात्र्योना पाव्लोव्ना के साथ गिरजे की सीढ़ियों पर चली आयी थी और भिखमंगों को भीख बांट रही थी। एक भिखारी उसके पास आया। उसके मुंह पर, नाक की जगह, लाल पपड़ी जमी थी। कात्यूशा ने उसे भीख दी, फिर आगे बढ़ कर, बिना किसी प्रकार की घिन महसूस किये, तीन बार उसे चूम लिया। कात्यूशा की आंखें अब भी ख़ुशी से चमक रही थीं। इस बीच उसने नेख़्लूदोव की ओर देखा। दोनों की आंखें

मिलीं। कात्यूशा की आंखें मानो पूछ रही हों—"मैं ठीक, अच्छा कर रही हूं न?"

"ठीक प्रिये, ठीक। तुम जो कुछ कर रही हो ठीक है, शुभ है, हर चीज़ सुन्दर है! मेरा रोम रोम तुमसे प्रेम करता है!"

वे सीढ़ियां उतर आयीं और नेख़्लूदोव उनके पास चला गया। वह कात्यूशा के पास ईस्टर-चुम्बन के लिए नहीं गया, वह केवल उसके नज़दीक रहना चाहता था।

माल्योना पाव्लोव्ना ने सिर झुका कर मुस्कराते हुए कहा—

"ईसा जाग उठे!" उसने ये शब्द इस लहजे में कहे जिसका मतलब था, "आज हम सब बराबर हैं।" उसने अपना रूमाल निकाला जिसे उसने गोल कर के गेंद की सी शक्ल का बना रखा था और अपने होंठ पोंछे, और फिर चुम्बन के लिए मुंह आगे कर दिया।

"बेशक, ईसा जाग उठे," नेख़्लूदोव ने जवाब में कहा और उसे चूम लिया।

फिर उसने कात्यूशा की ओर देखा। कात्यूशा शर्मा गई, और उसके नज़दीक बढ़ आयी।

"ईसा जाग उठे, द्मीत्री इवानोविच!"

"बेशक, ईसा जाग उठे!" नेख़्लूदोव ने जवाब में कहा, और उन्होंने दो बार एक दूसरे को चूमा। फिर क्षण भर के लिए रुक गये मानो सोच रहे हों कि तीसरी बार चूमने की ज़रूरत है या नहीं, फिर यह निश्चय कर के कि ज़रूरत है, उन्होंने तीसरी बार चुम्बन किया और मुस्कराने लगे।

"क्या तुम दोनों पादरी के पास नहीं जाओगी?" नेख़्लूदोव ने पूछा।

"नहीं, द्मीत्री इवानोविच, हम थोड़ी देर यहीं पर बाहर बैठेंगी," कात्यूशा ने कहा। उसके लिए बोलना कठिन हो रहा था, मानो वह कोई अतीव हर्षपूर्ण कार्य सम्पन्न कर पायी हो। उसने एक गहरी सांस ली, उसका समूचा वक्ष फूल उठा। नज़र उठा कर उसने सीधा नेख़्लूदोव की ओर देखा। उसकी आंखों में जिनमें हल्का सा ऐंच रहा करता था, इस समय विनम्रता, कौमार्य की पवित्रता तथा सच्चा प्रेम छलक रहे थे।

पुरुष और स्त्री के प्रेम में सदैव एक ऐसा समय आता है जब यह प्रेम पराकाष्ठा तक जा पहुंचता है। उस समय यह अचेतन तथा विवेकशून्य

होता है तथा इसमें कामुकता का लेशमात्र भी नहीं होता। उस ईस्टर की रात को नेख्लूदोव का प्रेम भी उसी स्तर तक जा पहुंचा था। अब जब वह कात्यूशा को याद करता तो उसकी आंखों के सामने उसी समय का दृश्य साकार होता। बाक़ी सब गौण था। कात्यूशा के चिकने, काले बाल, सफ़ेद लिबास जो उसके कोमल, सुडौल शरीर पर बिल्कुल ठीक बैठता था, उसकी छोटी छोटी छातियां, लज्जाशील चेहरा, चमकती, मृदु, काली आंखें। उसके समूचे व्यक्तित्व पर पवित्रता और सच्चे प्रेम की छाप थी—उस प्रेम की जो उसके दिल में केवल नेख्लूदोव के प्रति ही न था, बल्कि हर प्राणी और हर वस्तु के लिए था, न केवल जो कुछ भी अच्छा है उसके लिए ही, बल्कि संसार में हर चीज़, हर किसी के लिए था, यहां तक कि उस भिखारी तक के लिए था, जिसका कात्यूशा ने अभी अभी मुंह चूमा था।

नेख्लूदोव जानता था कि कात्यूशा का हृदय इस प्रकार के प्रेम से उद्वेलित है, क्योंकि उस रात और दूसरे दिन सुबह वह अपने में भी ऐसे ही प्रेम का अनुभव कर रहा था, और जानता था कि इस प्रेम के नाते दोनों एक हो गये हैं।

काश कि वह वहीं पर रुक जाता, उसी स्तर तक रहता जिस स्तर पर उस रात पहुंचा था। "ईस्टर की रात के बाद ही वह भयंकर व्यापार हुआ था!" जूरी के कमरे की खिड़की के पास बैठा नेख्लूदोव सोच रहा था।

१६

गिरजे से लौट कर नेख्लूदोव ने अपनी फूफियों के साथ बैठ कर व्रत तोड़ा, और थोड़ी शराब पी। रेजिमेंट में उसे पीने की आदत पड़ गई थी। उसके बाद वह अपने कमरे में आया और बिना कपड़े उतारे सो गया। उसकी नींद उस वक़्त टूटी जब किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। खटखटाहट सुनते ही वह पहचान गया कि कौन आया है। उसने अंगड़ाई ली, आंखें मलते हुए उठ बैठा।

"क्या तुम हो, कात्यूशा? आ जाओ," उसने कहा।

कात्यूशा ने दरवाज़ा खोला।

"खाना तैयार है," उसने कहा।

कात्यूशा ने अब भी वही सफ़ेद पोशाक पहन रखी थी, परन्तु उसके वालों में रिव्बन न था। उसने मुस्कराते हुए नेख़्लूदोव की ओर देखा, मानो कोई ख़ुशख़बरी दे रही हो।

"मैं आ रहा हूं," उसने उठते हुए कहा और कंघी ले कर बाल ठीक करने लगा।

कात्यूशा मिनट भर वहीं खड़ी रही। नेख़्लूदोव ने उसे खड़े देखा तो कंघी फेंक कर उसकी ओर बढ़ा। पर ऐन उसी वक़्त वह सहसा मुड़ पड़ी और गलियारे के बीचोंबीच बिछी दरी पर हल्के हल्के पांव रखती हुई तेज़ तेज़ वापस जाने लगी।

"मैं भी कैसा मूर्ख हूं," नेख़्लूदोव ने सोचा, "मैंने उसे रोका क्यों नहीं?" और भाग कर उसके पास जा पहुंचा।

वह क्या चाहता था, यह वह स्वयं नहीं जानता था। परन्तु उसे महसूस हो रहा था कि जब कात्यूशा कमरे में आई तो मुझे कुछ करना चाहिए था, कोई ऐसी बात जो ऐसे मौक़ों पर की जाती है, पर मैं चूक गया हूं।

"ज़रा ठहरो, कात्यूशा!" उसने कहा।

"जी, क्या बात है?" कात्यूशा ने रुकते हुए पूछा।

"कुछ नहीं, केवल..." नेख़्लूदोव ठिठक गया, लेकिन फिर याद कर के कि ऐसी स्थिति में लोग अक्सर क्या करते हैं, उसने अपना हाथ कात्यूशा की कमर पर रख दिया।

वह मूर्तिवत् खड़ी हो गई और उसकी आंखों में देखने लगी।

"नहीं, द्मीत्री इवानोविच, ऐसा मत करो," उसने कहा। लज्जावश उसकी आंखों में आंसू आ गये, और उसने अपने दृढ़, मज़बूत हाथ से नेख़्लूदोव का बाज़ू परे हटा दिया।

नेख़्लूदोव ने उसे जाने दिया। क्षण भर के लिए वह हतबुद्धि और लज्जित सा खड़ा रहा। उसके दिल में अपने प्रति नफ़रत सी पैदा हुई। इस समय उसे चाहिए था कि वह अपने अन्तःकरण की आवाज़ सुनता। तब उसे पता चल जाता कि इस घबराहट और लज्जा का कारण आत्मा की वे उच्चतम भावनाएं हैं जो मुक्त होना चाहती हैं। पर उसने समझा कि यह केवल उसकी मूढ़ता है, और उसे वही कुछ करना चाहिए जो

सब लोग करते हैं। वह लपक कर फिर उसके पास जा पहुंचा और उसे गरदन पर चूम लिया।

यह चुम्बन उस भोले चुम्बन से बड़ा भिन्न था जो तीन साल पहले, लिलक की झाड़ी के पीछे उसने लिया था, और उस चुम्बन से भी जो आज ही प्रातः गिरजे के आंगन में लिया था। यह तो एक भयानक चुम्बन था और कात्यूशा ने भी ऐसा ही महसूस किया।

"यह तुम क्या कर रहे हो?" वह इस तरह चिल्लाई मानो नेख़्लूदोव ने उसके दिल के किन्हीं कोमल, अमूल्य तारों को सदा के लिए तोड़ दिया हो और दौड़ती हुई वहां से भाग गई।

नेख़्लूदोव खाने वाले कमरे में आया। कमरे में पहले से ही उसकी सजी-धजी फूफियां, परिवार का डाक्टर तथा एक पड़ोसिन बैठे थे। सब कुछ साधारण ही था परन्तु नेख़्लूदोव के मन में एक तूफ़ान मचा हुआ था। उनकी बातें उसकी समझ में नहीं आ रही थीं और वह बिना सोचे समझे जवाब दिये जा रहा था। उसके मन में कात्यूशा समाई हुई थी। गलियारे में लिये गये इस आख़िरी चुम्बन से उसके शरीर में जो सनसनी सी पैदा हुई थी, उसी को वह बार बार याद कर रहा था। वह और कुछ भी नहीं सोच पा रहा था। जब कात्यूशा कमरे में आयी तो बिना सिर ऊपर उठाये ही नेख़्लूदोव को उसके आने का पता चल गया। उसका रोम रोम उसकी उपस्थिति को महसूस कर रहा था। वह उसकी ओर देखना चाहता था, परन्तु बड़ी मुश्किल से इस इच्छा को संवरण कर रहा था।

भोजन के बाद वह सीधा अपने कमरे में चला गया। वह बेहद उत्तेजित था और बड़ी देर तक इधर-उधर टहलता रहा। उसके कान घर की हर आहट की ओर लगे हुए थे। उसे यह आशा थी कि कात्यूशा की पदचाप सुनाई देगी। अब उसके अन्दर कामुक जीव ने सिर उठा लिया था। इतना ही नहीं, उसने उस आध्यात्मिक जीव को पूर्णतया कुचल भी डाला था जो आज से तीन साल पहले जीवित था, जब वह पहली बार यहां आया था, बल्कि जो आज प्रातः भी जीवित था। अब उसके अन्दर कामुक जीव का ही निरंकुश शासन था।

दिन भर वह कात्यूशा की टोह में रहा, मगर उसे अकेले में नहीं मिल सका। शायद वह उससे जान बूझ कर दूर रहना चाहती थी। परन्तु शाम के वक़्त कात्यूशा को मजबूर हो कर उसके साथ वाले कमरे में आना

पड़ा। डाक्टर से आग्रह किया गया था कि वह रात को यहीं पर रह जाय, इसलिए कात्यूशा उसका विस्तर विछाने आई थी। जब नेख़्लूदोव को उसके अन्दर जाने की आहट मिली तो वह भी पीछे पीछे कमरे में चला गया। वह दबे पांव, सांस रोक कर इस तरह जा रहा था मानो कोई जुर्म करने जा रहा हो।

कात्यूशा तक़िये पर नया ग़िलाफ़ चढ़ा रही थी। अपने बाज़ू ग़िलाफ़ के अन्दर डाले वह दोनों कोनों से तक़िये को पकड़े हुए थी। उसने मुड़ कर नेख़्लूदोव की ओर देखा और मुस्करायी। पर इस मुस्कराहट में पहले सी ख़ुशी और उल्लास न था, वल्कि भय और दयनीयता थी। इस मुस्कान को भी देख कर उसे लगा जैसे वह कोई ग़लत काम करने जा रहा हो। वह क्षण भर के लिए रुक गया। उसके मन में संघर्ष की अब भी संभावना थी। उसके हृदय में से एक क्षीण सी आवाज़ अब भी उठ रही थी। यह कात्यूशा के प्रति उसके सच्चे प्रेम की आवाज़ थी, जो कह रही थी—"कात्यूशा को मत भूल जाओ, उसकी भावनाओं की तो सोचो, उसके जीवन की तो सोचो।" पर एक दूसरी आवाज़ भी थी, जो कह रही थी—"यही मौक़ा है! मत चूको! अपनी ख़ुशी और संभोग के इस अवसर को हाथ से मत जाने दो!" और इस दूसरी आवाज़ ने पहली आवाज़ को दवा दिया। वह दृढ़ निश्चय से कात्यूशा की ओर बढ़ गया। भयानक, अदम्य कामवासना ने उसे वेचैन कर दिया।

कात्यूशा की कमर में वांह डाल कर उसने उसे विस्तर पर विठा लिया। फिर यह सोच कर कि उसे कुछ और भी करना चाहिए, वह उसके साथ सट कर वैठ गया।

"द्मीत्री इवानोविच! मुझे जाने दो!" उसने बड़ी दयनीय आवाज़ में कहा। "मात्योना पाव्लोव्ना आ रही है!" वह चिल्लाई, और अपने को छुड़ा कर खड़ी हो गई। सचमुच कोई दरवाजे की तरफ़ आ रहा था।

"अच्छी वात है, मैं रात को तुम्हारे पास आऊंगा," वह फुसफुसाया। "तुम वहां अकेली हो ना?"

"तुम क्या सोच रहे हो? हरगिज़ नहीं! नहीं, नहीं!" परन्तु ये शब्द केवल उसके होंठों में से ही निकल पाये। उसका शरीर, जिसके रोम रोम में उद्भ्रान्ति के कारण कंपन उठ रहा था, कुछ और ही कह रहा था।

माल्योना पाव्लोव्ना ही थी जो दरवाज़े के पास आई। बाज़ू के ऊपर एक कम्बल रखे उसने अन्दर झांका और बड़ी भर्त्सना भरी नज़र से नेख्लूदोव की ओर देखा, और फिर ग़ुस्से से कात्यूशा को झिड़कने लगी कि वह ग़लत कम्बल क्यों उठा लाई है।

नेख्लूदोव चुपचाप बाहर चला गया लेकिन उसे ज़रा भी शर्म नहीं आयी। माल्योना पाव्लोव्ना के चेहरे से साफ़ नज़र आ रहा था कि वह नेख्लूदोव पर नाराज़ है, उसे क़ुसूरवार समझती है। स्वयं नेख्लूदोव भी जानता था कि माल्योना पाव्लोव्ना का ग़ुस्सा वाजिब है, कि वह ग़लती कर रहा है। पर जो घृणित काम-पिपासा इस समय उसके मन पर छायी हुई थी, उसमें न तो कात्यूशा के प्रति पहले सच्चे प्रेम की भावना का लेशमात्र ही रह गया था, और न ही उसके रहते कोई दूसरी भावना उसके मन में उठ सकती थी। वह अब जानता था कि इस पिपासा को शान्त करने के लिए उसे क्या करना है, और सोच रहा था कि कैसे इसके लिए मौक़ा निकाला जाय।

सारी शाम वह पागलों की तरह कभी एक कमरे में जाता रहा कभी दूसरे में। कभी फूफियों के कमरे में जाता, कभी अपने कमरे में लौट आता, कभी बाहर सायवान के नीचे जा खड़ा होता। उसके मन में एक ही धुन समायी हुई थी कि किसी तरह कात्यूशा को अकेले में मिल पाये। पर वह नेख्लूदोव से कन्नी काट रही थी, और माल्योना पाव्लोव्ना की कड़ी नज़र उस पर थी।

१७

इस तरह शाम आख़िर ख़त्म हुई और रात आयी। डाक्टर आ कर सो गया। नेख्लूदोव की फूफियां भी सोने के लिए चली गई थीं। नेख्लूदोव ने सोचा कि इस वक़्त माल्योना पाव्लोव्ना ज़रूर उन्हीं के पास होगी, जिसका मतलब है कि दासियों के कमरे में कात्यूशा अकेली बैठी होगी। वह फिर बाहर सायवान के नीचे आया। बाहर अन्धेरा था और कुछ कुछ गरमी थी। हवा में नमी थी और वसन्त की सफ़ेद धुन्ध छायी हुई थी जो बर्फ़ की आख़िरी पर्तों को साफ़ कर जाती है, या शायद आख़िरी पर्तों के पिघलने के ही कारण पैदा होती है। फाटक से लगभग सौ क़दम

की दूरी पर, पहाड़ी के नीचे, नदी बहती थी। इस समय उस ओर से अजीब सी आवाज़ आ रही थी। नदी पर जमी बरफ़ टूट रही थी।

नेख़्लूदोव सीढ़ियां उतर कर दासियों के कमरे की ओर जाने लगा। जगह जगह चिकनी बरफ़ पर पानी खड़ा था। नेख़्लूदोव बच बच कर चलता हुआ खिड़की के पास जा खड़ा हुआ। उसका दिल धक् धक् कर रहा था और सांस फूल रही थी। सांस खींचता तो जैसे लम्बी आहें भरता। दासियों के कमरे में एक छोटा सा लैम्प जल रहा था। मेज़ के पास कात्यूशा अकेली बैठी थी, और विचारशील मुद्रा में सामने की ओर देख रही थी। नेख़्लूदोव वहीं चुपचाप, बिना हिले-डुले, बड़ी देर तक खड़ा रहा। वह देखना चाहता था कि कात्यूशा अब क्या करेगी, जिसे यह नहीं मालूम था कि उसे कोई देख रहा है। मिनट, दो मिनट तक तो कात्यूशा ने कोई हरकत नहीं की। फिर उसने आंखें ऊपर उठाईं, मुस्कराई, और सिर झटका, मानो अपने को डांट रही हो, फिर रुख़ बदल कर बैठ गई, दोनों बाज़ू मेज़ पर रख लिये और सामने, नीचे की ओर देखने लगी।

वह वहीं खड़ा उसे देखता रहा। न चाहते हुए भी उसे अपने दिल की धड़कन और नदी की ओर से आती हुई विचित्र सी आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। वहां, नदी पर, धुन्ध के नीचे, प्रकृति का अनवरत श्रम चल रहा था। तरह तरह की आवाज़ें मिल कर आ रही थीं: मानो कोई चीज़ सिसक रही हो, टूट रही हो, गिर रही हो, टुकड़े टुकड़े हो रही हो। इन्हीं आवाज़ों के साथ एक और टुनटुनाती सी आवाज़ भी मिल रही थी: कांच की तरह, बरफ़ की पतली पर्तों के टूटने की आवाज़।

कात्यूशा का चेहरा गंभीर और दुखी था। उससे उसके विकट आन्तरिक संघर्ष का बोध होता था। उसकी ओर देखते हुए नेख़्लूदोव का हृदय अनुकम्पा से भर उठा। परन्तु, अजीब बात है, इस अनुकम्पा से उसकी कामवासना और भी भड़क उठी।

वह कामान्ध हो रहा था।

उसने खिड़की पर दस्तक दी। कात्यूशा चौंक गई, मानो उसे बिजली छू गई हो। उसका अंग अंग कांप उठा और चेहरे पर भय छा गया। फिर वह उछल कर खड़ी हो गई और खिड़की के पास आ कर अपना चेहरा खिड़की के शीशे के नज़दीक ले आयी। आंखों के ऊपर अपने दोनों हाथों से छज्जा बना कर उसने झांक कर बाहर देखा। वह नेख़्लूदोव को

पहचान गई लेकिन उसके चेहरे पर त्रास का भाव उसी तरह बना रहा। कात्यूशा का चेहरा बेहद गंभीर हो रहा था। नेख़्लूदोव ने उसे इस तरह पहले कभी नहीं देखा था। नेख़्लूदोव को मुस्कराते देख कर वह भी मुस्कराई, मगर जैसे हुक्म मान रही हो। उसका हृदय नहीं मुस्करा रहा था, वहां तो केवल भय छाया हुआ था। नेख़्लूदोव ने हाथ से उसे इशारा किया कि बाहर आंगन में आ कर मुझे मिलो। पर कात्यूशा ने सिर हिला दिया और खिड़की के पीछे ही खड़ी रही। नेख़्लूदोव खिड़की के शीशे के पास मुंह ले जा कर उसे कहना चाहता था कि वह बाहर आ जाय, जब वह सहसा दरवाज़े की ओर घूम गई। प्रत्यक्षतः किसी ने अन्दर से उसे बुला लिया था। नेख़्लूदोव खिड़की पर से हट गया। धुन्ध इतनी गहरी थी कि घर से पांच क़दम की दूरी पर से भी खिड़कियां नज़र नहीं आती थीं, केवल लैम्प की लाल लाल रोशनी का विशाल वृत्त अन्धकार के निराकृत पुंज में से निकलता हुआ नज़र आ रहा था। नदी पर से वही विचित्र आवाज़ें आ रही थीं, सिसकने की, सरसराने की, टूटने की, खनकने की। धुन्ध में ही, नज़दीक कहीं किसी मुर्ग़ ने बांग दी। जवाब में एक दूसरे मुर्ग़ ने बांग दी। फिर दूर, गांव में बहुत से मुर्ग़ एक साथ बांग देने लगे। होते होते सभी मुर्ग़ों की आवाज़ें मिल कर एक हो गईं। यों चारों ओर निस्तब्धता छायी हुई थी। केवल नदी पर से वही शब्द सुनाई दे रहे थे। उस रात यह दूसरी बार थी कि मुर्ग़ बांग देने लगे थे।

घर के नुक्कड़ के पीछे नेख़्लूदोव टहलने लगा। किसी किसी वक़्त उसका पांव किसी गढ़े में जा पड़ता। वह फिर खिड़की के पास आया। लैम्प अब भी जल रहा था और कात्यूशा फिर अकेली मेज़ के पास बैठी थी। वह द्विविधा में जान पड़ती थी, मानो उसकी समझ में न आ रहा हो कि क्या करे और क्या न करे। वह खिड़की के पास पहुंचा ही था कि उसने आंख उठा कर देखा। नेख़्लूदोव ने दस्तक दी। बिना देखे कि कौन खिड़की खटखटा रहा है, वह फ़ौरन् कमरे में से भाग गई। नेख़्लूदोव को बाहर का दरवाज़ा खुलने की आवाज़ आई। बग़ल वाले सायबान के नीचे वह उसका इन्तज़ार करने लगा। वह आई और नेख़्लूदोव ने बिना कुछ कहे उसे बाहों में भर लिया। वह नेख़्लूदोव से निःसहाय सी लिपट गई, और अपना मुंह ऊपर को उठाया। दोनों के होंठ मिले। वे सायबान के कोने के पीछे खड़े थे। यहां पर से बरफ़ गल चुकी थी। अतृप्त वासना

के कारण वह वेचैन हो रहा था। इस के बाद फिर दरवाज़ा खुलने की वैसी ही आवाज़ आई, और माल्योना पाव्लोव्ना ने गुस्से से चिल्ला कर पुकारा –

"कात्यूशा!"

कात्यूशा अपने को छुड़ा कर दासियों के कमरे में वापस लौट गई। नेख़्लूदोव ने सिटकनी लगने की आवाज़ सुनी, फिर सब चुप हो गया। लाल रोशनी बुझ गई, केवल धुन्ध अब भी छायी हुई थी, और नदी पर से वही आवाज़ें आ रही थीं।

नेख़्लूदोव खिड़की के पास गया। वहां कोई भी नज़र नहीं आ रहा था। उसने खिड़की पर दस्तक दी। कोई जवाब नहीं आया। सामने के दरवाज़े में से वह घर के अन्दर लौट गया, मगर उसे नींद नहीं आयी। वह उठ खड़ा हुआ और नंगे पांव गलियारे को लांघता हुआ कात्यूशा के कमरे के पास जा पहुंचा जो माल्योना पाव्लोव्ना के कमरे की बग़ल में था। माल्योना पाव्लोव्ना नींद में हल्के हल्के ख़र्राटे ले रही थी। नेख़्लूदोव आगे क़दम रखने ही वाला था कि माल्योना पाव्लोव्ना खांसी और करवट बदली जिससे उसकी खाट चरमरा उठी। नेख़्लूदोव का दिल बैठ गया। वह जड़वत् लगभग पांच मिनट तक, बिना हिले-डुले, खड़ा रहा। जब फिर सन्नाटा छा गया और माल्योना पाव्लोव्ना फिर आराम से खर्राटे भरने लगी तो उसने आगे क़दम रखा। फ़र्श के एक एक तख़्ते पर वह बड़े ध्यान से पांव रखता ताकि कोई आवाज़ न हो। वह कात्यूशा के दरवाज़े तक जा पहुंचा। कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। शायद वह जाग रही थी, वरना उसे उसके सांस लेने की आवाज़ आती। पर ज्यों ही उसने फुसफुसा कर कहा – "कात्यूशा!" वह उछल कर खड़ी हो गई और उसे वापस लौट जाने का आग्रह करने लगी, मानो उसे बहुत ग़ुस्सा हो।

"तुम्हारा मतलब क्या है? तुम कर क्या रहे हो? तुम्हारी फूफियां सुन लेंगी," उसके मुंह से तो ये शब्द निकल रहे थे, परन्तु उसका रोम रोम कह रहा था – "मेरा सर्वस्व तुम्हारा है।" और नेख़्लूदोव केवल इसी को समझ पा रहा था।

"दरवाज़ा खोलो! एक मिनट के लिए! मेहरबानी कर के दरवाज़ा खोलो।" नेख़्लूदोव ख़ुद भी नहीं जानता था कि क्या कह रहा है।

कात्यूशा चुप थी। फिर नेख़्लूदोव ने सुना, उसका हाथ सिटकनी को ढूंढ़ रहा था। सिटकनी खुलने की ग्रावाज़ ग्राई। वह ग्रन्दर चला गया।

नेख़्लूदोव ने झट से उसे उठा लिया ग्रौर बाहर ले ग्राया। उसने यह नहीं देखा कि वह केवल एक मोटी सी खुरदरी क़मीज़ पहने थी ग्रौर उसके बाज़ू नंगे थे।

"यह तुम क्या कर रहे हो?" वह फ़ुसफ़ुसायी, पर नेख़्लूदोव ने उसके शब्दों की ग्रोर कोई ध्यान नहीं दिया ग्रौर उसे उठाये हुए ग्रपने कमरे में ले ग्राया।

"नहीं नहीं, ऐसा मत करो, मुझे जाने दो!" कात्यूशा कह रही थी, परन्तु उसके साथ ग्रौर भी सट कर लिपट रही थी।

कात्यूशा नेख़्लूदोव के कमरे में से निकली। चुपचाप, कांपती हुई। उसने कुछ कहा मगर कात्यूशा ने कोई जवाब नहीं दिया। वह फिर निकल कर सायबान के नीचे जा खड़ा हुग्रा, ग्रौर जो कुछ हुग्रा था उसे समझने, उसकी तह तक पहुंचने की कोशिश करने लगा।

. . . .

दिन चढ़ रहा था। नीचे, नदी की ग्रोर से टूटती बरफ़ के खनकने ग्रौर सिसकने की ग्रावाज़ें ग्रौर भी ऊंची हो उठी थीं। साथ ही पानी का कल कल शब्द भी ग्रा रहा था। धुन्ध नीची होने लगी थी ग्रौर उसके ऊपर से घटता चांद नज़र ग्रा रहा था। उसके क्षीण प्रकाश में कोई काली, भयानक सी चीज़ दिख रही थी।

"इस सबका क्या मतलब है? क्या मैंने किसी महान सुख का ग्रनुभव किया है, या मुझ पर बहुत बड़ा दुर्भाग्य टूटा है?" उसने मन ही मन पूछा।

"ऐसा सभी के साथ होता है—सभी लोग यही कुछ करते हैं," उसने ग्रपने ग्रापसे कहा ग्रौर सोने चला गया।

१८

दूसरे दिन उसका दोस्त शेनबोक ग्रा पहुंचा। बड़ा हंसमुख, ख़ूबसूरत ग्रौर चतुर जवान था वह। बात करता तो बड़े सलीके से, मिलनसार, दरियादिल ग्रौर खिलाड़ी तबीयत का लड़का था। एक तो इन गुणों के

कारण और दूसरे द्मीत्री के प्रति प्रेम के कारण आते ही उसने दोनों फूफियों का दिल जीत लिया। उसकी दरियादिली देख कर फूफियां प्रभावित तो हुई, पर साथ ही साथ उलझन में भी पड़ीं क्योंकि यह दरियादिली स्वाभाविक नहीं जान पड़ती थी। फाटक पर कुछ अन्धे भिखारी आये, उसने उन्हें एक रूबल निकाल कर दे दिया। नौकरों को बख़शीश में पन्द्रह रूबल दे दिये। सोफ़िया इवानोव्ना के कुत्ते को पंजे पर चोट लग गई और ख़ून बहने लगा तो इसने अपना केम्ब्रिक का रूमाल निकाला और देखते ही देखते उसे फाड़ कर उसमें से पट्टियां वना दीं (सोफ़िया इवानोव्ना जानती थी कि ऐसे रूमाल पन्द्रह रूबल फ़ी दर्जन से कम पर नहीं मिलते) और कुत्ते के पंजे की मरहम-पट्टी करने लगा। बूढ़ी स्त्रियों ने इस सरीखे लोग पहले कभी नहीं देखे थे। उन्हें यह मालूम नहीं था कि शेनवोक पर दो लाख रूबल का क़र्ज़ है जिसमें से यह एक कौड़ी भी अदा नहीं करेगा। अगर और बीस-पचीस रूबलों पर पानी फिर गया तो उसे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा।

केवल एक दिन के लिए ही शेनवोक वहां ठहरा। उसी रात वह और नेख़्लूदोव, दोनों रवाना हो गये। रेजिमेंट में हाज़िरी देना लाज़मी था क्योंकि दोनों की छुट्टी ख़त्म हो रही थी।

नेख़्लूदोव का इस घर में आख़िरी दिन था। पिछली रात का व्यापार अब भी उसकी आंखों के सामने घूम रहा था, जिससे उसके हृदय में दो पृथक् भावनाओं का संघर्ष चल रहा था। एक तो उस कामुक संभोग की याद थी, हालांकि जिस इन्द्रियसुख की उसे आशा थी वह उसे प्राप्त नहीं हुआ था, और इस बात की तुष्टि भी थी कि मैदान मार लिया, जो करना चाहता था, कर दिखाया। दूसरी ओर रह रह कर यह ख़्याल उठता था कि मैंने जो कुछ किया है बहुत बुरा किया है। उसका प्रायश्चित करना होगा, उस लड़की की ख़ातिर नहीं, बल्कि अपनी ख़ातिर।

नेख़्लूदोव की स्वार्थान्धता जिस सीमा तक जा पहुंची थी वहां उसे केवल अपना ही ख़्याल आ सकता था, और किसी का नहीं। वह सोच रहा था कि अगर इस बात का पता लोगों को लग गया तो उसकी बहुत निन्दा तो नहीं होगी? लोग उसे दोषी ठहरायेंगे भी या नहीं? उसे कात्यूशा का ख़्याल नहीं आया कि उस पर इस समय क्या बीत रही होगी, या भविष्य में उसे क्या भुगतना पड़ेगा।

शेनवोक ने भांप लिया कि कात्यूशा के साथ नेख़्लूदोव का कैसा संबंध है। नेख़्लूदोव ने भी देख लिया कि वह भांप गया है। पर इससे वह और भी फूल उठा।

"जी, अब मैं समझा कि फूफियां क्यों तुम्हें इतनी प्यारी लगने लगी हैं, किस लिए तुम हफ़्ते भर से यहां आसन जमाये हो," कात्यूशा पर नज़र पड़ते ही शेनवोक ने कहा, "ख़ूब रहा... पर लड़की प्यारी है। मैं भी तुम्हारी जगह होता तो यही करता।"

नेख़्लूदोव को इस बात का खेद तो था कि उसे जल्दी जाना पड़ रहा है। यहां रहता तो जी भर कर कात्यूशा के प्रेम का रस लेता। उसे मजबूरी में जाना पड़ रहा था। लेकिन साथ ही इस तरह चले जाने में एक लाभ भी था। ऐसे संबंध जिन्हें निभाना कठिन हो, शुरू में ही तोड़ दिये जायं तो अच्छा रहता है। फिर उसे ख़्याल आया कि कात्यूशा को कुछ देते जाना चाहिए। इसलिए नहीं कि उसे पैसों की ज़रूरत होगी, मगर इसलिए कि सभी ऐसा करते हैं। कात्यूशा को इस्तेमाल भी किया और पैसे भी न दिये तो बड़ी शर्म की बात होगी। इसलिए उसने उसे कुछ रक़म दे दी, जो अपनी और कात्यूशा की स्थिति को देखते हुए उसे वाजिब लगी।

विदाई के दिन, भोजन के बाद, नेख़्लूदोव घर के बाहर आ गया, और बग़ल वाले दरवाज़े के पास कात्यूशा का इन्तज़ार करने लगा। कात्यूशा आई। नेख़्लूदोव को देखते ही उसका चेहरा शर्म से लाल हो गया। वह कन्नी काट कर निकल जाना चाहती थी। उसने आंख का इशारा भी किया कि दासियों के कमरे का दरवाज़ा खुला है, लेकिन नेख़्लूदोव ने उसे रोक लिया।

"मैं तुमसे विदा लेने आया हूं," अपने हाथ में एक लिफ़ाफ़े को मरोड़ते हुए उसने कहा। लिफ़ाफ़े में सौ रूबल का एक नोट था। "यह मैं..."

वह उसका अभिप्राय समझ गई, और भौंहें सिकोड़कर, सिर हिलाते हुए, उसने नेख़्लूदोव का हाथ झटक दिया।

"ले लो, तुम्हें लेना होगा," उसने हकला कर कहा और लिफ़ाफ़ा उसके एप्रन में ठूंस दिया। फिर उन्हीं क़दमों वापस अपने कमरे में भाग गया। भौंहें सिकोड़े, वह कराहता सा अपने कमरे में पहुंचा, मानो अपने

ही हाथों उसे कोई चोट लगी हो। बड़ी देर तक वह कमरे में लम्बे लम्बे डग भरता हुआ घूमता रहा, जैसे दर्द से छटपटा रहा हो। यहां तक कि इस आख़िरी दृश्य को याद कर के वह फ़र्श पर पांव पटकता और ऊंची ऊंची आवाज़ में कराहने लगता।

"पर मैं और कर भी क्या सकता था? क्या सबके साथ ऐसा नहीं होता? शेनबोक ने अपनी अध्यापिका के साथ क्या किया? यही कुछ। वह ख़ुद बता रहा था। और चाचा ग्रीशा ने। और मेरे पिता ने तो एक किसान औरत से जारज लड़का तक पैदा कर दिया था, जब वह गांव में थे। मीतेन्का उसका नाम था, आज भी वह ज़िन्दा है। अगर सभी लोग ऐसा करते हैं तो इसका मतलब है कि ऐसा ही होना चाहिए," इस तरह अपने मन को शान्त करने की कोशिश करने लगा। पर बेसूद। इस घटना को याद कर के उसका दिल छलनी हो रहा था।

उसका अन्तर्तम कह रहा था कि उसने एक अत्यन्त नीच, क्रूर और कायरों का सा काम किया है। जो ख़ुद यह करतूत की तो औरों पर उंगली उठानी तो क्या, किसी से आंख तक नहीं मिला सकेगा। आज तक वह अपने को बड़ा शानदार, श्रेष्ठ और ऊंचे विचारों वाला आदमी समझता रहा था। भविष्य में भी वह अपनी नज़रों में यही कुछ बने रहना चाहता था, क्योंकि साहस के साथ जीवन का आनन्द लूटने के लिए यह बड़ा ज़रूरी था। परन्तु अब यह असम्भव हो गया था। इस समस्या का एक ही हल था, कि इसके बारे में सोचना छोड़ दे। और उसने ऐसा ही किया।

जिस ढंग के जीवन में वह अब प्रवेश करने जा रहा था, वहां बहुत कुछ नया था—नया पास-पड़ोस, नये दोस्त, और युद्ध। इन सब बातों ने भी इस घटना को भूल जाने में उसकी सहायता की। ज्यों ज्यों वक़्त गुज़रता गया, यह बात उसके मन पर से उतरती गई, और आख़िर वह इसे बिल्कुल भूल गया।

लड़ाई के बाद नेख़्लूदोव अपनी फूफियों को मिलने गया, इस आशा से कि वहां कात्यूशा से भेंट होगी। पर कात्यूशा वहां पर नहीं थी। नेख़्लूदोव के विदा होने के कुछ ही मुद्दत बाद वह वहां से चली गई थी। फूफियों ने कहीं से सुना था कि उसे गर्भ हो गया था और वह बच्चा जनने के लिए कहीं रहने गई थी। उन्होंने कहा कि कात्यूशा का पतन

हो चुका था। नेख़्लूदोव के दिल में कसक उठी थी। यदि कात्यूशा के प्रसव काल से अनुमान लगाया जाय तो बच्चा नेख़्लूदोव का हो भी सकता था और नहीं भी हो सकता था। उसकी फूफियां कात्यूशा को ही दोष देती थीं, कहती थीं, जैसी मां वैसी बेटी। उनकी यह राय सुन कर नेख़्लूदोव दिल ही दिल में ख़ुश हुआ। इससे जैसे वह अपने गुनाह से बरी हो जाता था। पहले तो उसकी इच्छा हुई कि कात्यूशा का पता लगाये, उसके बच्चे का पता लगाये। पर जब कात्यूशा का ख़्याल आता तो वह अन्दर ही अन्दर इतना लज्जित और दुःखी महसूस करता कि उसने कात्यूशा को ढूंढ़ने की कोई कोशिश नहीं की, बल्कि इस दुष्कर्म के बारे में सोचना ही छोड़ दिया और इस तरह उसे भुलाने की कोशिश करने लगा।

और आज यह विचित्र, आकस्मिक घटना घटी जिसने सोई स्मृतियां जगा दीं और नेख़्लूदोव से मांग करने लगी कि अपने उस निर्दयी, क्रूर और कायरतापूर्ण आचरण को स्वीकार करो जिसके कारण तुम दस साल से पाप का बोझा उठाये जी रहे हो। परन्तु स्वीकार करना तो दूर रहा, नेख़्लूदोव को तो केवल इस बात की फ़िक्र थी कि कहीं उसका भण्डाफोड़ न हो जाय, कहीं कात्यूशा या उसका वकील सारी कहानी सुनानी न शुरू कर दे और उसे सबके सामने लज्जित होना पड़े।

१९

इस तरह के विचार नेख़्लूदोव के मन में उठ रहे थे जब वह अदालत में से उठ कर जूरी के कमरे में आया। वह खिड़की के पास बैठा सिगरेट पर सिगरेट फूंके जा रहा था और आस-पास के लोगों की बातें सुन रहा था।

हंसोड़ व्यापारी स्मेल्कोव की तारीफ़ कर रहा था। कह रहा था कि उस आदमी को मजा लूटने का ढंग आता था—

"ऐश कर गया पट्ठा! इसे कहते हैं ऐश! असल साइबेरियाई ढंग की ऐश! वह ढंग जानता था साहिब, क्या छोकरी चुनी थी!"

मुखिया को विश्वास था कि इस मामले में जो निष्कर्ष विशेषज्ञ ने निकाले हैं, वही किसी न किसी रूप में महत्वपूर्ण साबित होंगे। प्योत्र गेरासिमोविच ने यहूदी क्लर्क से कोई हंसी की बात कही, जिस पर वे

दोनों ठहाका मार कर हंस पड़े। नेख़्लूदोव से यदि कोई कुछ पूछता तो उसका जवाब वह संक्षिप्त सा हां या न में दे कर चुप हो जाता। वह नहीं चाहता था कि उसे कोई छेड़े।

पेशकार उसी तरह टेढ़ा चलता हुआ आया और जूरी के सदस्यों को वापस अदालत में चलने को कहा। नेख़्लूदोव को भय ने जकड़ लिया, मानो वह जूरी न हो कर स्वयं मुजरिम हो। अपने अन्तरंग में वह महसूस करता था कि वह एक पतित आदमी है, जिसे लोगों के साथ आंखें मिलाते हुए भी शर्म आनी चाहिए। परन्तु वह अभ्यासवश उठा, उसी तरह स्थिर, आश्वस्त चाल से चलता हुआ मंच पर जा पहुंचा, और मुखिया की बग़ल में बैठ कर, टांग पर टांग रखे, अपनी कमानीदार ऐनक को हाथ में हिलाने-डुलाने लगा।

क़ैदियों को भी वाहर ले जाया गया था। अब वे भी अन्दर लाये गये।

अदालत में कुछ नये चेहरे भी दिखायी दिये। ये गवाह थे। नेख़्लूदोव ने देखा कि एक गवाह पर से कात्यूशा की आंखें हटाये नहीं हटतीं। यह कोई बड़ी मोटी सी औरत थी जो जंगले के सामने वाली क़तार में बैठी थी। शोख़, भड़कीले रंग के रेशमी व मख़मल के कपड़े पहने थी, और सिर पर एक रिब्बन वाला हैट लगाये थी। उसकी दोनों बांहें कोहनियों तक नंगी थीं, और एक बाज़ू पर बड़ा नाज़ुक और ख़ूबसूरत सा बटुआ लटक रहा था। बाद में नेख़्लूदोव को पता चला कि यह औरत उस चकले की मालकिन थी जिसमें मास्लोवा रहा करती थी।

गवाहों की जांच-पड़ताल शुरू हुई। उनके नाम, धर्म इत्यादि पूछे गये। फिर यह सवाल उठा कि गवाहों के बयान शपथ पर लिये जायेंगे या नहीं। बूढ़ा पादरी फिर पांव घसीटता अन्दर आया। छाती पर लटकते सुनहरी क्रॉस को उंगली से हिलाते-डुलाते पहले की तरह धीमी आवाज़ में उसने गवाहों और विशेषज्ञ से शपथ ली। अब भी उसके चेहरे पर वही आश्वासन का भाव था कि जो काम वह कर रहा है वह कोई उपयोगी और महत्वपूर्ण काम है।

शपथ के बाद गवाह फिर बाहर ले जाये गये। केवल चकले की मालकिन कितायेवा अपनी जगह पर बैठी रही। उससे इस वारदात के बारे में पूछा गया कि बताइये, आप क्या जानती हैं। एक एक वाक्य पर वह

अपना सिर हिलाती, मय अपने ऊंचे टोप के और बड़े बनावटी ढंग से मुस्कराती। उसने वातफ़सील और चतुराई के साथ अपना बयान दिया। उसके बोलने के ढंग में जर्मन लहजे की पुट थी।

वह बताने लगी कि सबसे पहले होटल का नौकर सीमन हमारे पास एक लड़की की फ़र्माइश ले कर आया। बोला साइबेरिया के एक मालदार व्यापारी के लिए दरकार है। हम सीमन को पहले से जानता है। हमने ल्युबोव को भेजा। कुछ देर बाद जब ल्युबोव लौटा तो व्यापारी भी उसके साथ था। वह उस वक़्त भी सरूर में था—यह शब्द कहते हुए वह मुस्कराई—और हमारे यहां पहुंच कर भी वह पीता रहा और लड़कियों को खिलाता पिलाता रहा। उसके पास पैसा कम हो गया तो उसने इसी ल्युबोव को होटल में भेजा। इसके साथ उसका कुछ मुहब्बत हो गया था। यह वाक्य कहते हुए उसने क़ैदी की ओर देखा।

नेख़्लूदोव को ऐसे लगा जैसे मास्लोवा भी इस वाक्य पर मुस्कराई है। कैसी ज़लालत है, उसने सोचा। नेख़्लूदोव के मन में एक अजीब और धूमिल सी भावना मास्लोवा के प्रति उठी, जिसमें घृणा और अनुकम्पा दोनों मिली हुई थीं।

"मास्लोवा के बारे में तुम्हारी क्या राय है?" मास्लोवा के वकील ने झेंपते शर्माते हुए सवाल किया। इस आदमी ने अदालत में नौकरी के लिए दरख़्वास्त दे रखी थी। इस समय उसे मास्लोवा का वकील मुक़र्रर किया गया था।

"बहुत ही अच्छा लड़की है," कितायेवा ने जवाब दिया। "पढ़ा-लिखा और सलीक़े वाला लड़की है। अच्छे घर में पल कर बड़ा हुआ है, फ़ांसीसी ज़बान पढ़ सकता है। कभी कभी शराब ज़रा ज़्यादा पी जाता है, फिर भी संभल कर रहता है। बहुत अच्छा लड़की है।"

कात्यूशा ने उस औरत की तरफ़ देखा, फिर सहसा जूरी के सदस्यों की ओर आंखें फेर लीं और नेख़्लूदोव के चेहरे को एकटक देखने लगी। उसका चेहरा गंभीर और कठोर हो उठा। उसकी एक आंख में हल्का सा ऐंच था। दोनों आंखें बड़े विचित्र ढंग से, कुछ देर तक नेख़्लूदोव के चेहरे पर जमी रहीं। नेख़्लूदोव को अब भी भय ने जकड़ रखा था, फिर भी वह अपनी नजर इन तिरछी आंखों पर से नहीं हटा पाया। उन आंखों की सफ़ेदी में बड़ी स्वच्छता और चमक थी। उसे वह भयानक रात याद

ही आई। चारों ओर छायी हुई धुन्ध, नीचे, नदी पर टूटती बरफ़, और वह घटता चांद, जो पौ फटने से पहले उभर आया था, और जिसके कोने ऊपर को उठे हुए थे। कोई भयानक काली सी चीज़ उस चांद की रोशनी में चमकने लगी थी। इन काली काली आंखों को देखते हुए जो उसकी ओर टिकटिकी बांधे थीं, उसे वह भयानक काली चीज़ याद हो आयी।

"इसने मुझे पहचान लिया है!" नेख़्लूदोव ने सोचा, और सिकुड़ कर पीछे हो गया, मानो डर रहा हो कि मुंह पर तमाचा पड़ेगा। पर उसने उसे नहीं पहचाना था। कात्यूशा ने ठण्डी सांस ली और फिर प्रधान जज की ओर देखने लगी। नेख़्लूदोव ने भी ठण्डी सांस ली। "यह कब ख़त्म होगा! जल्दी जल्दी क्यों नहीं करते?" उसने मन ही मन कहा। जब कभी शिकार खेलते समय कोई परिन्दा ज़ख़्मी हो जाय और उसे हाथ से मारना पड़े तो जो भावना मनुष्य के मन में उठती है—घृणा और अनुकम्पा और परेशानी की भावना—वही इस समय नेख़्लूदोव के मन में उठ रही थी। शिकार के थैले में ज़ख़्मी परिन्दा छटपटा रहा होता है। आदमी को उस वक़्त बड़ी घिन होती है, पर साथ ही दया भी आती है और आदमी चाहता है कि जल्दी से जल्दी उसे मार कर ख़त्म करे और किसी तरह मन में से निकाल दे।

इस प्रकार की मिश्रित भावनाएं नेख़्लूदोव के मन में उठ रही थीं जब वह अदालत में बैठा गवाहों की जिरह सुन रहा था।

२०

पर मुक़द्दमे की कार्रवाई तूल पकड़ती गई मानो नेख़्लूदोव से उसे कोई वैर हो। एक एक गवाह से अलग अलग जिरह की गई। आख़िर में विशेषज्ञ से जिरह हुई। सरकारी वकील और दोनों वकीलों ने बड़ा गंभीर मुंह बना कर तरह तरह के फ़िज़ूल और अनगिनत सवाल पूछे। इसके बाद प्रधान जज ने जूरी से कहा कि शहादती चीज़ों की जांच कर लें। इन चीज़ों में एक बड़ी सी अंगूठी थी जिसके अन्दर छोटी छोटी पंखुड़ियों की शक्ल में हीरे जड़े हुए थे। ज़ाहिर है उसे पहली उंगली में

ही पहना जाता रहा होगा। एक टेस्ट-ट्यूब रखी थी जिसमें ज़हर का विश्लेषण किया गया था। इन चीज़ों के साथ वाक़ाइदा लेबल लगे थे और उन पर सरकारी मोहर थी।

जूरी उठ कर इन चीज़ों का मुआइना करने जा ही रहे थे जब सरकारी वकील उठ खड़ा हुआ और मांग की कि इन चीज़ों की जांच करने से पहले डाक्टर की शव-परीक्षा की रिपोर्ट पढ़ कर सुनाई जाय।

प्रधान जज जल्दी जल्दी काम ख़त्म करना चाहता था ताकि अपनी स्विस लड़की के पास पहुंच सके। वह जानता था कि इस रिपोर्ट से केवल सुनने वालों की ऊब ही बढ़ेगी और भोजन का समय और पीछे पड़ जायेगा। वह यह भी जानता था कि सरकारी वकील इसकी मांग इसलिए कर रहा है कि क़ानून ने उसे इसका अधिकार दे रखा है। लाचार, उसे इजाज़त देनी पड़ी।

सेक्रेटरी ने डाक्टर की रिपोर्ट निकाली और अपनी नीरस, तुतलाती आवाज़ में पढ़ने लगा। जब वह पढ़ता तो "ल" और "र" के उच्चारण में कोई भेद पता न चलता।

"शरीर की बाहरी जांच से पता चला कि–

"१) फ़ेरापोंत स्मेल्कोव का क़द छः फ़ुट पांच इंच था।"

"वाह, क्या डीलडौल था, एं!" नेख़्लूदोव के कान में व्यापारी ने बड़ा रस लेते हुए फुसफुसा कर कहा।

"२) शक्ल-सूरत से वह लगभग चालीस साल का नज़र आता था।

"३) लाश सूजी हुई थी।

"४) मांस का रंग हरा था, कुछेक जगह पर गहरे रंग के धब्बे थे।

"५) चमड़ी पर भिन्न भिन्न आकार के फफोले निकल आये थे। कहीं कहीं से चमड़ी के बड़े बड़े टुकड़े फट कर उतर आये थे।

"६) बाल मोटे और भूरे रंग के थे। हाथ लगाने पर उखड़ आते थे।

"७) आंखें बाहर को निकली हुई थीं, पुतलियां धूमिल पड़ गई थीं।

"८) नाक, कान और मुंह में से कोई तरल सी चीज़ रिस रिस कर बह रही थी।

"९) चेहरा और छाती इस क़दर सूजे हुए थे कि गरदन नज़र नहीं आती थी।"

इत्यादि इत्यादि।

पूरे चार पन्नों की रिपोर्ट थी, जिसमें इस तरह के २७ पैरे थे। एक एक तफ़सील के साथ उस व्यापारी की लाश की जांच की गई थी, जो शहर में मौज मनाता रहा था। लाश बहुत बडी, सूजी हुई और मोटी थी। पहले से ही नेख़्लूदोव के मन में एक अस्पष्ट सी घिन उठ रही थी, लाश का वर्णन सुन कर वह और भी तीव्र हो उठी। कात्यूशा का जीवन, लाश की नाक में से रिसता मवाद, बाहर को निकली हुई आंखें, कात्यूशा के प्रति उसका अपना व्यवहार, सभी बातें एक ही क्रम से संबंधित जान पड़ती थीं। उसे ऐसा जान पड़ा जैसे उसके चारों ओर इसी प्रकार की घिनौनी चीज़ें उसे घेरे हुए हों और वह उनमें डूब रहा हो।

आख़िर बाहरी जांच की रिपोर्ट ख़त्म हुई। प्रधान जज ने इतमीनान की सांस ली और सिर ऊपर उठाया, यह सोच कर कि रिपोर्ट अन्त तक पढ़ डाली गई होगी, पर सेक्रेटरी फ़ौरन् अन्दरूनी जांच की रिपोर्ट पढ़ने लगा।

प्रधान जज ने फिर सिर झुका लिया और हाथ माथे पर रख कर आंखें बन्द कर लीं। नेख़्लूदोव के साथ बैठा व्यापारी कब से ऊंघने लगा था, और किसी किसी वक़्त उसका शरीर दायें-बायें झूलने लगता। क़ैदी और सशस्त्र पुलिस के सिपाही चुपचाप बैठे थे।

"अन्दरूनी जांच से पता चला कि–

"१) खोपड़ी की हड्डियों पर से चमड़ी बहुत आसानी से उतर आई। उसमें कहीं भी जमा हुआ ख़ून नहीं मिला।

"२) खोपड़ी की हड्डियां साधारण मोटाई की थीं, और अच्छी हालत में थीं।

"३) दिमाग़ की झिल्ली पर लगभग चार-चार इंच लम्बे दो धब्बे थे। झिल्ली का रंग गदला सफ़ेद था।" इत्यादि। रिपोर्ट में इसी तरह के १३ और पैरे दर्ज थे।

उसके बाद सहायकों के नाम और दस्तख़त थे। और डाक्टर इस नतीजे पर पहुंचा था कि शव-परीक्षा के दौरान पेट में तथा किसी हद तक अन्तड़ियों और गुर्दे में जो तब्दीलियां देखने में आयीं, और जिनकी तफ़सील सरकारी रिपोर्ट में दी गई है, उनके आधार पर इस बात की पूरी पूरी संभावना जान पड़ती है कि स्मेल्कोव की मौत ज़हर के कारण

हुई। यह ज़हर जब उसके पेट में पहुंचा तो शराब से मिली हुई हालत में था। पेट की स्थिति से यह निश्चय करना बड़ा कठिन है कि कौन सा ज़हर दिया गया। पर यह अनुमान ठीक जान पड़ता है कि ज़हर शराब में मिला कर दिया गया क्योंकि स्मेल्कोव के पेट में बहुत सी शराब पायी गयी थी।

"पीने में भी लाजवाब था, ऐं," व्यापारी फिर फुसफुसाया, जिसने अभी अभी आंख खोली थी।

इस रिपोर्ट को पढ़ने में पूरा एक घण्टा लग गया था, परन्तु सरकारी वकील अभी भी सन्तुष्ट नहीं था। इसकी समाप्ति पर प्रधान जज ने उसकी ओर देखते हुए कहा–

"मैं सोचता हूं अब अन्दर के एक एक अंग की रिपोर्ट पढ़ने की कोई ज़रूरत न होगी?"

जवाब में सरकारी वकील ने, बिना प्रधान जज की ओर देखे, रूखी आवाज़ में कहा–

"मैं चाहता हूं कि वह भी पढ़ कर सुनाई जाय।" सरकारी वकील बैठे बैठे, तनिक सा ऊपर को उठा। उसके चेहरे के भाव से लगता था मानो कह रहा हो कि रिपोर्ट पढ़वाने का मुझे अधिकार है, और मैं अपना अधिकार मनवा कर छोड़ूंगा। अगर इसकी इजाज़त न दी गई तो मैं अपील दायर कर दूंगा।

लंबी दाढ़ी वाले सज्जन, जिनकी दयार्द्र आंखों के नीचे गहरे छल्ले पड़े हुए थे और जिनके पेट में शूल था, इस समय बहुत कमज़ोरी महसूस कर रहे थे। उन्होंने प्रधान जज से कहा–

"यह सब पढ़वाने का आख़िर लाभ क्या है? मुक़द्दमे को घसीटते जाना है और क्या! ये नये रंगरूट काम-वाम कुछ नहीं करते, केवल लम्बी हांकना जानते हैं।"

सुनहरी चश्मे वाले जज ने कुछ नहीं कहा। वह केवल मुंह लटकाये सामने देखते रहे। उन्हें किसी ओर से भी भलाई की आशा नहीं थी, न अपनी बीवी की ओर से, न ही सामान्यतः जीवन की ओर से।

रिपोर्ट पढ़ी जाने लगी–

"चिकित्सा विभाग के आदेशानुसार, १५ फ़रवरी, सन् १८८... के दिन मैंने सहायक चिकित्सा इन्स्पेक्टर की उपस्थिति में परीक्षण न०

६३८ सम्पन्न किया।" सेक्रेटरी की आवाज़ में पहले सी स्थिरता थी। परन्तु अब की वह और भी ऊंची आवाज़ में पढ़ने लगा था, मानो ऊंघते लोगों को जगा देना चाहता हो। "इस परीक्षण में निम्नलिखित भीतरी अंग शामिल थे–

"१) दिल और दायां फेफड़ा (छः पौंड वाले शीशे के मरतवान में)।

"२) आमाशय के अन्दर पाई गई चीज़ें (छः पौंड वाले शीशे के मरतवान में)।

"३) आमाशय (छः पौंड वाले शीशे के मरतवान में)।

"४) कलेजा, तिल्ली, गुर्दे (तीन पौंड वाले शीशे के मरतवान में)।

"५) अन्तड़ियां (छः पौंड वाले मिट्टी के मरतवान में)।"

रिपोर्ट की पढ़वाई अभी शुरू हुई थी कि प्रधान जज ने एक जज की ओर झुक कर उसके कान में कुछ कहा, फिर दूसरी ओर झुक कर दूसरे जज के कान में कुछ कहा, फिर दोनों की स्वीकृति प्राप्त करने के बाद ऊंची आवाज़ में बोला–

"अदालत का मत है कि इस रिपोर्ट के पढ़ने की कोई ज़रूरत नहीं।"

सेक्रेटरी ने पढ़ना बन्द कर दिया और काग़ज़ समेटने लगा। सरकारी वकील गुस्से में कुछ लिखने लगा।

"जूरी से अनुरोध है कि वे शहादती चीज़ों को आ कर जांच कर लें," प्रधान जज ने कहा।

मुखिया और कुछेक अन्य सदस्य उठ कर मेज़ के पास आये। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि अपने हाथों को कहां रखें। बारी बारी उन्होंने अंगूठी को, शीशे के मरतवान तथा टेस्ट-ट्यूब को देखा। व्यापारी ने तो अंगूठी को पहन कर भी देखा।

"वाह, ख़ूब मोटी उंगली थी उसकी! खीरे जैसी!" अपनी जगह पर लौटते हुए वह बोला। ज़ाहिर है कि उसने अपने मन में उस भीमकाय व्यापारी का बड़ा मनोरंजक चित्र बना रखा था।

२१

शहादती चीज़ों की जांच ख़त्म हुई। प्रधान जज ने घोषणा की कि जांच का काम समाप्त हुआ। इसके बाद उसने जल्दी जल्दी काम निबटाने के लिए, बिना अन्तराल किये ही, सरकारी वकील से बोलने को कहा।

[illegible] बैठा था कि आख़िर सरकारी वकील भी इन्सान है, इसे भी सिगरेट पीने या कुछ खाने की ख़्वाहिश होती होगी, या कम से कम औरतों पर तो रहम करेगा। परन्तु सरकारी वकील ने किसी पर रहम नहीं किया—उसने आप पर भी नहीं। वह स्वभावतः बड़ा मन्दबुद्धि आदमी था, इस पर यह दुर्भाग्य कि स्कूल की अंतिम परीक्षा में सोने का तमग़ा पाया था। और जब विश्वविद्यालय में पढ़ता था तो रोमन लॉ का अध्ययन करते समय उसने "दासता" के विषय पर एक निबन्ध लिखा और इस निबन्ध पर भी उसे इनाम मिला था। अतः इस आदमी में आत्मविश्वास और आत्मसन्तोष कूट कूट कर भरे थे (इसलिए भी कि स्त्रियां उसे बहुत चाहती थीं)। उसकी मूर्खता का कोई वार-पार न था।

जब उसे बोलने के लिए कहा गया तो वह बड़ा धीरे धीरे उठा, ताकि सभी लोग कामदार बढ़िया वर्दी में सजे उसके सुडौल शरीर को आंख भर कर देख सकें। उसने दोनों हाथ मेज़ पर रखे, सिर को हल्का सा टेढ़ा कर के कमरे के चारों ओर देखा। फिर, क़ैदियों की ओर बिना देखे वह अपना भाषण देने लगा जिसे वह उस समय तैयार करता रहा था जब रिपोर्टें पढ़ी जा रही थीं।

"जूरी के आदरणीय सदस्यो! आपके विचाराधीन केस को आपकी आज्ञा से मैं एक लाक्षणिक अपराध का नाम दूंगा।"

सरकारी वकील यह समझता था कि वह जो भाषण देगा, वह एक महान सार्वजनिक महत्व का भाषण होगा, उन वकीलों के प्रसिद्ध भाषणों की ही तरह, जिनका उन दिनों बहुत नाम था। यह ठीक है कि आज उसका भाषण सुनने वाली केवल तीन औरतें थीं—एक दर्ज़िन, एक बावर्चिन और एक सीमन की बहिन—और इनके अलावा एक मर्द था जो कोचवानी का काम करता था, पर इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है। शुरू शुरू में विख्यात वकीलों को भी ऐसी ही स्थिति का सामना करना पड़ा था। और उसका यह सिद्धान्त था कि सरकारी वकील हर बात में सदा मामले की जड़ देखे, अर्थात् अपराध के मनोवैज्ञानिक कारणों की गहराइयों तक पहुंचे और समाज के ज़ख़्मों को खोल कर सामने रख दे।

"जूरी के माननीय सदस्यो! आपके विचाराधीन अपराध को आपकी आज्ञा से मैं इस शताब्दी के अन्तिम वर्षों का—हमारे काल का—ऐसा प्रतीकात्मक अपराध कहूंगा, जिसमें वे सब विशिष्टताएं हैं, जो नैतिक

पतन की उस शोचनीय प्रक्रिया की लाक्षणिकताएं हैं, जिसके प्रभाव में हमारे काल में हमारे समाज के वे तत्व डूब रहे हैं, जो, आपकी आज्ञा से, मैं यह कहूंगा कि पतन की भयानक प्रक्रिया की चपेट में आये हुए हैं।"

सरकारी वकील ने ख़ूब लम्बा चौड़ा भाषण दिया। उसकी कोशिश थी कि कोई भी ऐसी प्रभावोत्पादक बात छूट न जाय, जिसे उसने पहले से दिमाग़ में बिठा रखा था। साथ ही, कहीं भी भाषण टूटे नहीं, उसका प्रवाह अबाध गति से बहता जाय। इस तरह वह पूरे ७५ मिनट तक बोलता रहा। केवल एक बार वह रुका, और थोड़ी देर तक खड़ा अपनी थूक निगलता रहा। पर शीघ्र ही वह संभल गया और पहले से भी ज़्यादा जोश के साथ बोलने लगा ताकि जो क्षति इस बाधा के कारण हुई थी वह पूरी हो जाय।

बोलते हुए कभी उसका लहजा कोमल हो उठता, कभी उसमें ख़ुशामद की पुट होती। कभी एक पांव पर खड़ा होता, कभी दूसरे पर और जूरी की ओर देखता। कभी वह धीमे धीमे व्यावहारिक लहजे में बोलने लगता और अपनी कापी में लिखी टिप्पणियों की ओर देखता। फिर कभी उसकी आवाज़ ऊंची हो उठती और वह अपराधियों को ललकारने लगता। श्रोताओं की ओर से आंखें हटा कर जूरी की ओर देखने लगता। परन्तु क़ैदियों की ओर वह कभी नहीं देखता था। उनसे नज़र चुरा जाता था, हालांकि तीनों अभियुक्त आंखें फाड़ फाड़ कर उसी की ओर देख रहे थे। अपनी विद्वत्ता दिखाने के लिए वह जगह जगह ऐसे विषयों का हवाला देता जिनका उन दिनों, उस जैसे लोगों के बीच फ़ैशन सा चल पड़ा था—कुछेक का आज भी फ़ैशन है—और जिन्हें वैज्ञानिक ज्ञान की चरम सीमा माना जाता था। इनमें से कुछ विषय थे: जुर्म करने की वंशगत तथा जन्मजात प्रवृत्ति, लोम्ब्रोसो और तार्द, क्रमिक विकास तथा अस्तित्व के लिए संघर्ष, सम्मोहन विद्या तथा सम्मोहन का प्रभाव, शारको तथा ह्रासवाद इत्यादि।

सरकारी वकील की व्याख्या के अनुसार व्यापारी स्मेल्कोव एक विशिष्ट रूसी था—बलिष्ठ और सदाचारी—जिसने नीच लोगों के हाथों पड़ कर अपने उदार और विश्वासी स्वभाव के कारण अपना सर्वनाश कर लिया था।

सीमन कार्तीनकिन के चरित्र में वे प्रवृत्तियां थीं जो भूदास प्रथा की देन हैं और जिसका वंशानुगत प्रभाव अब भी उसके ख़ून में मौजूद है। इस मूढ़ और निरक्षर आदमी का कोई सिद्धान्त नहीं, यहां तक कि उसका कोई धर्म भी नहीं है। येवफ़ीमिया इस आदमी की रखेल है और वंशानुगत प्रवृत्ति की शिकार है। इसके चरित्र में पतन के सभी लक्षण प्रकट हैं। परंतु अपराध की जड़ मास्लोवा है जो ह्रासवाद के निम्नतम स्तर का प्रतिनिधित्व करती है।

"यह औरत," मास्लोवा की ओर देखे बिना उसने कहा, "जैसा कि इसकी मालकिन ने आज अदालत के सामने कहा, पढ़ी-लिखी है, और केवल लिखना-पढ़ना ही नहीं जानती बल्कि फ़्रांसीसी भी जानती है। यह अनाथ, जिसमें संभवत: अपराध की जन्मजात प्रवृत्ति है, एक कुलीन, सुसंस्कृत परिवार में पाली-पोसी गयी और अगर चाहती तो ईमानदारी का परिश्रमी जीवन व्यतीत कर सकती थी, किंतु यह अपने हितकारी अन्नदाताओं को छोड़, अपनी काम-वासना की प्यास बुझाने, विषय-भोग का रस लेने चकले में जा बैठी और वहां भी इसने अपनी शिक्षा के फलस्वरूप अपने जैसी दूसरी पतिताओं से अलग एक विशिष्ट स्थान पा लिया और जैसा कि माननीय जूरी ने अभी अभी इसकी मालकिन से सुना है यह चकले में आने वाले लोगों को एक रहस्यमय आकर्षण शक्ति से अपने वश में करती थी, वह शक्ति, जिसकी हमारे काल में विज्ञान में भी खोज हुई है, विशेषकर शारको प्रणाली के वैज्ञानिकों द्वारा और जिसे विज्ञान की भाषा में सम्मोहन प्रभाव का नाम दिया गया है। ठीक इस सम्मोहन प्रभाव द्वारा इसने उस अमीर रूसी मेहमान को फांस लिया, जो दिल का इतना दयालु था कि हम उसे दूसरा साद्को कह सकते हैं और उसके भोले विश्वास का अनुचित लाभ उठा कर इसने पहले उसे लूटा और उसके बाद क्रूरता के साथ उसकी जान ले डाली।"

"इसने तो ज़बान की पूरी लगाम ही छोड़ दी है," प्रधान जज ने गंभीर जज की ओर झुक कर मुस्कराते हुए कहा।

"बिल्कुल खर-दिमाग़ आदमी है," गंभीर जज बोला।

परन्तु सरकारी वकील ने बड़े नाटकीय अन्दाज़ से झूमते हुए अपना भाषण उसी तरह जारी रखा—

"जूरी के आदरणीय सदस्यो, आपको न केवल इन लोगों के ही भाग्य

का निर्णय करना है, बल्कि किसी हद तक समाज का भाग्य निर्धारण भी करना है। समाज आपके निर्णय से प्रभावित होगा। मैं चाहता हूं कि आप इस अपराध की गंभीरता को पूर्णतया समझें, उस ख़तरे को समझें जो मास्लोवा जैसे अपराधियों से समाज को पहुंचता है। आपकी आज्ञा से मैं ऐसे लोगों को समाज के विकार-ग्रस्त तत्वों का नाम दूंगा। समाज को इस संक्रामक रोग से बचाइये, समाज के भोले-भाले और स्वस्थ प्राणियों को इस संक्रामक रोग से बचाइये, सर्वनाश से बचाइये!"

सरकारी वकील अपनी कुर्सी पर बैठ गया। प्रत्यक्षतः उसे अपने भाषण से बेहद ख़ुशी हुई थी। लगता था जैसे वह स्वयं इस बात से अभिभूत हो उठा हो कि जजों के प्रत्याशित निर्णय का कितना महत्व होगा।

अगर अलंकारों और शब्दाडम्बर की ओर ध्यान न दें तो सीधे-सादे शब्दों में, सरकारी वकील के भाषण का यह अर्थ निकलता था कि मास्लोवा ने व्यापारी का विश्वास प्राप्त कर के उसके मन पर जादू कर दिया। फिर उसी की चाबी ले कर, वह उसके होटल में गई, इस इरादे से कि उसका सभी रुपया लूट लेगी। लेकिन जब सीमन और येवफ़ीमिया ने उसे चोरी करते हुए पकड़ लिया तो इसे मजबूर हो कर उनके साथ चोरी का रुपया बांटना पड़ा। इसके बाद अपने अपराध के चिन्ह मिटाने के लिए वह व्यापारी को वापस होटल में ले आयी और वहां उसे ज़हर दे कर मार डाला।

सरकारी वकील के बाद एक अधेड़ उम्र का आदमी वकीलों के बैंच पर से बोलने के लिए उठा। उसने फ़्रॉक-कोट पहन रखा था जो पीछे से अबाबील की पूंछ की तरह लटक रहा था। कोट के नीचे से कलफ़ लगी सफ़ेद क़मीज़ को अर्द्धवृत्त सा दिख रहा था। उसने कार्तीनकिन और बोच्कोवा के पक्ष में भाषण दिया। इस वकील को उन्होंने तीन सौ रूबल दे कर अपने लिए नियुक्त कर रखा था। अपने भाषण में उसने यह साबित करने की कोशिश की कि ये दोनों निर्दोष हैं, और सारा दोष मास्लोवा का है।

उसने मास्लोवा के इस बयान को मानने से इन्कार किया कि रुपया निकालते वक़्त बोच्कोवा और कार्तीनकिन दोनों उसके साथ थे। वह बार बार इस बात पर बल देता कि चूंकि उस पर ज़हर देने का जुर्म लगाया गया है, इसलिए उसके बयान को स्वीकार नहीं किया जा सकता। २,५००

रूबल की रक़म के बारे में उसने कहा कि इतनी रक़म आसानी से दो मेहनती और ईमानदार आदमी कमा सकते हैं, जब कि उन्हें तीन से पांच रूबल तक रोज़ाना मेहमानों से बख़्शीश मिल जाती हो। व्यापारी के पैसे मास्लोवा ने चुराये। चुराने के बाद यह रक़म उसने किसी को दे दी होगी, या इससे खो गई होगी, क्योंकि उस समय इसका दिमाग़ ठीक तरह काम नहीं कर रहा था। व्यापारी को ज़हर केवल मास्लोवा ने ही दिया।

इसलिए उसने जूरी से अनुरोध किया कि वे चोरी के इलज़ाम से कार्तीनकिन और बोच्कोवा को बरी कर दें, और यदि वे बरी नहीं कर सकते तो कम से कम यह मान लें कि ज़हर देने में उनका कोई हाथ नहीं था।

अन्त में सरकारी वकील पर व्यंग कसते हुए उसने कहा कि मेरे विद्वान मित्र ने वंशानुगत प्रवृत्तियों के बारे में बड़ा आलिमाना लेक्चर दिया है, लेकिन इससे वैज्ञानिक तथ्यों पर भले ही प्रकाश पड़ता हो, पर बोच्कोवा से उसका कोई सम्बन्ध नहीं क्योंकि उसके कुल और वंश के बारे में किसी को कुछ भी मालूम नहीं।

सरकारी वकील ने क्रुद्ध दिखने की कोशिश की और घृणा और आश्चर्य प्रकट करते हुए अपने कन्धे बिचकाये और अपनी कॉपी में कुछ लिख लिया।

इसके बाद मास्लोवा का वकील उठा, और डरते डरते, बड़े संकोच के साथ अपना भाषण देने लगा। उसने इस बात से इन्कार नहीं किया कि रुपया चुराने में मास्लोवा का हाथ था, पर साथ ही यह बात बड़े ज़ोर से कही कि स्मेल्कोव को ज़हर देने का उसका कोई इरादा नहीं था। उसने वह पाउडर केवल नींद लाने के लिए दिया था। इस वकील ने भी अपने भाषण को थोड़ा जोशीला बनाने की कोशिश की। कहने लगा कि जिस आदमी ने वास्तव में मास्लोवा को व्यभिचार के गर्त में झोंका, उसे क़ानून की ओर से कोई सज़ा नहीं मिली। उस कुकर्म की सारी यंत्रणा मास्लोवा को सहनी पड़ी है। परन्तु मनोविज्ञान के क्षेत्र में वकील की यह चेष्टा बिल्कुल असफल रही, यहां तक कि अदालत में बैठे लोग भी झेंप सी महसूस करने लगे। जिस समय उसने दबी ज़बान में पुरुषों की निर्दयता और स्त्रियों की असहायता के बारे में कुछ कहा तो प्रधान जज ने उसे पटरी पर लाने के लिए, उसकी सहायतार्थ उसे धीरे से सुझाया कि इधर-उधर की बातें करने के बजाय वह सीधा तथ्यों पर ही बोले।

उसके भाषण के बाद सरकारी वकील जवाब देने के लिए उठा। पहले वकील के तर्कों का उत्तर देते हुए कहा कि भले ही बोच्कोवा के कुल-वंश का कुछ भी मालूम न हो, पर इससे वंशानुगत प्रवृत्तियों का सिद्धान्त ग़लत साबित नहीं हो जाता। वंशानुगत प्रवृत्तियों के नियमों को विज्ञान ने यहां तक प्रमाणित कर दिया है कि हम न केवल वंश से जुर्म का बल्कि जुर्म से वंश का भी अनुमान लगा सकते हैं। जहां तक मास्लोवा के पक्ष में दिये गये तर्कों का सवाल है – मास्लोवा के वकील ने किसी काल्पनिक व्यक्ति पर दोष लगाया है कि उसने मास्लोवा की अस्मत लूटी और उसे व्यभिचार के गर्त में झोंका (सरकारी वकील ने "काल्पनिक" शब्द पर विशेष कटुता से बल दिया)–तो साक्ष्य हमारे सामने है, वह तो यही बतलाता है कि इस औरत ने अनगिनत लोगों को अपने जाल में फांस कर उन्हें भ्रष्ट किया होगा। इतना कह चुकने के बाद सरकारी वकील बड़े गर्वोल्लास के साथ अपनी कुर्सी पर जा बैठा।

इसके बाद क़ैदियों को इजाज़त दी गई कि वे अपने पक्ष में जो कुछ कहना चाहें कह सकते हैं।

येवफ़ीमिया बोच्कोवा ने फिर वही बात दोहराई कि न उसे इस मामले का कुछ मालूम है और न ही उसने उसमें भाग लिया है। उसने सारा दोष मास्लोवा पर लगाया। सीमन कार्तीनकिन बार बार यही कहता रहा– "यह आपका काम है, पर मैं निर्दोष हूं। यह बड़ा अन्याय है।"

मास्लोवा अपने पक्ष में कुछ भी नहीं बोली। जब प्रधान जज ने कहा कि यदि वह कुछ कहना चाहे तो कह सकती है तो उसने केवल आंख उठा कर प्रधान जज की ओर देखा, फिर कमरे में चारों ओर इस नज़र से देखा मानो किसी निरीह हिरन पर शिकारी टूट पड़े हों, और सिर झुका कर फफक फफक कर रोने लगी।

"क्या बात है?" व्यापारी ने नेख़्लूदोव से पूछा। नेख़्लूदोव के मुंह से एक अजीब सी आवाज़ निकली थी। वह सिसकी दबाने की चेष्टा कर रहा था।

नेख़्लूदोव अभी तक अपनी वर्तमान स्थिति के महत्व को नहीं समझ पाया था। उसका ख़्याल था कि उसके स्नायु कमज़ोर होने के कारण ये सिसकियां उठ रही हैं, और आंसू आंखों में भर रहे हैं। उसने आंसू छिपाने

के लिए अपनी कमानीदार ऐनक आंखों पर लगा ली, फिर रूमाल निकाल कर नाक साफ़ करने लगा।

वह डर रहा था कि यदि अदालत में सब लोगों को उसके दुर्व्यवहार का पता चल गया तो बड़ी बदनामी होगी। इस डर ने आत्मा की आवाज़ को दबा दिया। यह डर ही इस समय सबसे अधिक बलवान था।

२२

क़ैदियों ने जो कहना था कह लिया। इसके बाद इस बात का निश्चय होने लगा कि किस रूप में जूरी के सदस्यों के सामने सवाल रखे जायं। इसमें कुछ वक़्त लग गया। आख़िर सवाल तैयार हो गये और प्रधान जज ने अपना अन्तिम भाषण देना शुरू किया।

जूरी को अपना फ़ैसला देने के लिए कहने से पहले प्रधान जज थोड़ी देर तक बड़े मीठे मीठे और दोस्ताना ढंग से भाषण देता रहा और समझाता रहा कि किस भांति चोरी चोरी होती है और डाका डाका होता है। अगर किसी जगह पर ताला पड़ा हुआ है और चोरी हो जाती है तो वह भी चोरी है और अगर किसी जगह पर ताला नहीं पड़ा हुआ है और चोरी हो जाती है तो वह भी चोरी है। केवल पहली चोरी एक ऐसे स्थान पर हुई जहां पर ताला था और दूसरी एक ऐसे स्थान पर जहां पर ताला नहीं था। बोलते हुए प्रधान जज किसी किसी वक़्त नेख़्लूदोव की ओर देखता, इस आशा से कि यदि ये महत्वपूर्ण तथ्य उसकी समझ में आ गये तो वह बाक़ी सदस्यों को भी समझा देगा। जब उसने देखा कि इन तथ्यों पर वह काफ़ी प्रकाश डाल चुका है तो वह एक दूसरे विषय की व्याख्या करने लगा। हत्या एक ऐसी क्रिया है जिसके परिणामस्वरूप इन्सान की मौत हो जाती है। इसलिए ज़हर देने को भी हत्या का नाम दिया जा सकता है। जब प्रधान जज ने देखा कि यह तथ्य भी जूरी के सदस्यों के दिमाग़ में बैठ गया है तो उसने समझाना शुरू किया कि यदि चोरी और हत्या एक ही वक़्त में एक साथ किये जायं तो इस सम्मिलित जुर्म को हम हत्या के साथ की गई चोरी कहेंगे।

वह स्वयं अपना भाषण जल्दी समाप्त करना चाहता था, क्योंकि जानता था कि उसकी स्विस प्रेमिका उसकी राह देख रही होगी, लेकिन

अपने व्यवसाय की उसे कुछ ऐसी आदत पड़ गई थी कि जब एक बार बोलना शुरू कर देता तो उसके लिए बोलना बन्द करना कठिन हो जाता था। अतः अब वह जूरी को बड़ी तफ़सील के साथ यह समझाने लगा कि यदि वे समझें कि क़ैदियों ने जुर्म किया है तो वे अपने फ़ैसले में उन्हें मुजरिम ठहरायें, और यदि समझें कि उन्होंने जुर्म नहीं किया है तो अपने फ़ैसले में कह दें कि वे मुजरिम नहीं हैं, और यदि वे देखें कि उन्होंने एक जुर्म तो किया है लेकिन दूसरा जुर्म नहीं किया, तो वे उन्हें एक जुर्म में मुजरिम करार दें और दूसरे जुर्म में कह दें कि वे मुजरिम नहीं हैं। आगे चल कर प्रधान जज ने बताया कि उन्हें इस अधिकार का समझदारी के साथ प्रयोग करना चाहिए। वह यह भी समझाना चाहता था कि यदि किसी सवाल के जवाब में वे अपना उत्तर हां में देना चाहते हों, तो यह सकारात्मक उत्तर उस सवाल के सभी अंशों पर लागू होगा। परन्तु यदि वे समूचे प्रश्न का उत्तर हां में नहीं देना चाहते हों, तो उन्हें चाहिए कि स्पष्टतया बता दें कि उनका जवाब प्रश्न के किस अंश पर लागू नहीं होता। पर प्रधान जज ने घड़ी की ओर देखा। तीन बजने में पांच मिनट रह गये थे। यह सोच कर कि और देर करना ठीक नहीं प्रधान जज ने अपने क़ानूनी तथ्यों का लेखा समेटने का निश्चय किया।

"इस मुकद्दमे की मुख्य बातें क्या हैं?" प्रधान ज़ज ने कहा, और फिर वे सब बातें दोहराने लगा, जो कई बार सरकारी वकील, अन्य वकीलों तथा गवाहों द्वारा कही जा चुकी थीं।

प्रधान जज अपना भाषण देता गया। उसके साथ बैठे जज बड़े ध्यान से उसका भाषण सुनते रहे। पर किसी किसी वक़्त आंख उठा कर घड़ी की ओर देख लेते। उनके विचार में प्रधान जज का भाषण कुछ ज़्यादा लम्बा था, लेकिन था बहुत अच्छा। ऐसा ही होना चाहिए था। सरकारी वकील, अन्य वकील तथा अदालत में बैठे सभी लोगों का यही विचार था। प्रधान जज ने अपनी अन्तिम टिप्पणियां समाप्त कीं।

जान पड़ा जैसे सब कुछ कहा जा चुका है। लेकिन नहीं। प्रधान जज को बोलने का अधिकार था, और वह इस अधिकार को जल्दी छोड़ देने वाला नहीं था। अपनी आवाज़ सुनते हुए उसे बड़ा आनंद आ रहा था। अपना लहजा बड़ा प्रभावशाली लग रहा था। इसलिए उसने उचित समझा कि जूरी के सदस्यों को उनके अधिकारों के बारे में भी दो शब्द कह दे,

कि उन्हें अपने अधिकारों का किस भांति उचित प्रयोग करना चाहिए और अनुचित प्रयोग नहीं करना चाहिए। उन्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि उन्होंने शपथ ले रखी है, कि वे समाज के अन्तःकरण हैं। जो बातें वे अपने कमरे में करें उन्हें पवित्र मानें और उनका भेद बाहर किसी को न दें, इत्यादि, इत्यादि।

जब से प्रधान जज ने बोलना शुरू किया था, मास्लोवा की आंखें उसके चेहरे पर गड़ी हुई थीं, मानो उसे डर हो कि कहीं कोई शब्द छूट न जाय। इधर नेख़्लूदोव मास्लोवा के चेहरे की ओर देखे जा रहा था, क्योंकि उसे अब यह डर नहीं था कि वह उसकी ओर देखने लगेगी। जब हम मुद्दत के बाद किसी परिचित चेहरे को देखते हैं तो सबसे पहले हमारा ध्यान उन बाहरी तबदीलियों की ओर जाता है जो उस अर्से में उस पर घटी हैं। फिर धीरे धीरे वह चेहरा अधिकाधिक अपने पहले रूप जैसा लगने लगता है, और जो परिवर्तन उसमें समय के कारण हुए हैं वे आंखों से ओझल होने लगते हैं और हमारे आन्तरिक नेत्रों के सामने उसके विलक्षण, एकमात्र आध्यात्मिक व्यक्तित्व का मुख्य भाव उभर कर सामने आ जाता है।

और यही नेख़्लूदोव अनुभव कर रहा था।

मास्लोवा ने क़ैदियों का लिबास पहन रखा था। उसका शरीर गदरा गया था। छातियां उभर आयी थीं। चेहरे का निचला हिस्सा भर गया था। माथे और कनपटियों पर कुछेक झुर्रियां नज़र आने लगी थीं। आंखें सूजी हुई थीं। पर इन सब तबदीलियों के बावजूद यह वही कात्यूशा थी जो उस ईस्टर के दिन अपने निष्कपट, प्रेमपूर्ण नेत्रों से नेख़्लूदोव की ओर देखती रही थी, जिसे वह हृदय से प्रेम करती थी। तब उसकी प्रेम भरी, हंसती आंखों में ख़ुशी और जीवन की उमंगें छलछला रही थीं।

"कितने बरसों से मैंने उसे नहीं देखा। अजीब बात है कि आज ही यह मुक़द्दमा पेश होना था जब मैं जूरी का सदस्य हूं और यह एक क़ैदी की हालत में, मुजरिमों के कटघरे में मेरे सामने खड़ी है। इस मामले का अन्त क्या होगा? काश कि यह मुक़द्दमा जल्दी से जल्दी ख़त्म हो पाये!"

उसके दिल में पश्चात्ताप की भावना उठने लगी थी, परन्तु नेख़्लूदोव ने उसे दबा दिया। वह चाहता था कि इसे केवल एक आकस्मिक घटना मात्र ही समझे, जो शीघ्र ही टल जायेगी और उसका कोई असर उसकी

जीवन-चर्या पर नहीं पड़ेगा। उसे अपनी स्थिति उस पिल्ले की सी लग रही थी जो किसी स्थान को अपने मल-मूल से गन्दा कर देता है और उसका मालिक उसे गरदन से पकड़ कर उसी जगह ले आता है, और उसकी नाक ज़बरदस्ती उस गन्दगी में घुसेड़ता है ताकि उसे सबक़ आ जाय। पिल्ला किकियाता है, पीछे को हटता है, और अपने दुष्कृत्य के परिणाम से जहां तक हो सके दूर भागना चाहता है, परन्तु उसका निर्मम मालिक उसे छोड़ता नहीं। उसी तरह नेख़्लूदोव को महसूस होने लगा था कि उसने कैसा घृणित काम किया। साथ ही वह मालिक के बलिष्ठ हाथ का भी अनुभव कर रहा था। परन्तु अभी तक वह अपने दुष्कृत्य की गंभीरता को पूर्णतया समझ नहीं पाया था, और यह मानने से इन्कार कर रहा था कि उसे किसी मालिक ने पकड़ा हुआ है। वह यह मानना नहीं चाहता था कि जो कुछ वह देख रहा है वह उसी के दुष्कृत्य का परिणाम है। परन्तु मालिक का निर्मम हाथ उसे पकड़े हुए था, और नेख़्लूदोव को पूर्वाभास सा हो रहा था कि वह भाग नहीं पायेगा। उसका धैर्य अब तक क़ायम था, और वह जूरी की पहली पंक्ति में रोज़ की तरह, बड़ी स्थिरता और आत्मविश्वास के साथ, बड़े आराम से एक टांग दूसरी टांग पर रखे कुर्सी पर बैठा था, और हाथ में अपनी ऐनक हिला-डुला रहा था। परन्तु आत्मा की गहराइयों में उसे सारा वक़्त अपने दुष्कृत्य की क्रूरता, कायरपन और नीचता नज़र आ रही थी। केवल इसी दुष्कृत्य की नहीं, बल्कि उसे अपने समूचे जीवन की भी स्वार्थान्धता, अधःपतन, क्रूरता, और निष्क्रियता का बोध हो रहा था। एक भयानक पर्दा था जो, न मालूम कैसे, इस पाप को तथा पिछले बारह साल के जीवन को उसकी आंखों से छिपाये हुए था। आज वह पर्दा हिलने लगा था, और उसे इसके पीछे छिपी चीज़ों की झलक मिलने लगी थी।

२३

आख़िर प्रधान जज ने अपना भाषण समाप्त किया, और बड़े ख़ूबसूरत अन्दाज़ से प्रश्नों की सूची उठा कर जूरी के मुखिया के हाथ में दी, जो उसे लेने के लिए आगे बढ़ आया। जूरी के सदस्यों ने चैन की सांस ली

कि अब अपने कमरे में जा पायेंगे और उठ उठ कर अदालत से बाहर जाने लगे। बाहर जाते हुए वे ऐसे लग रहे थे मानो किसी बात पर लज्जित महसूस कर रहे हों। अब भी उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि अपने हाथ कहां पर रखें। ज्यों ही वे अपने कमरे के अन्दर पहुंचे तो दरवाज़ा बन्द कर दिया गया और एक हथियारबन्द सिपाही दरवाज़े के बाहर आ कर खड़ा हो गया। उसने मियान में से तलवार निकाली और उसे कन्धे पर रख कर पहरा देने लगा। जज भी अदालत के कमरे में से उठ गये। क़ैदियों को भी बाहर ले जाया गया।

जूरी के सदस्यों ने कमरे में पहुंचते ही पहले की तरह अपने सिगरेट सुलगाये। जितनी देर तक वे अदालत में बैठे रहे थे, उन सब को अपनी स्थिति किसी हद तक अस्वाभाविक और झूठी लगती रही थी। पर अपने कमरे में पहुंच कर, सिगरेट सुलगाते ही, यह भावना जाती रही थी। उन्होंने इतमीनान की सांस ली और बैठते ही बड़े जोश से एक दूसरे के साथ बातें करने लगे।

"लड़की निर्दोष है, वह इस मामले में फंस गई है," दयालुस्वभाव व्यापारी बोला। "हमें सिफ़ारिश करनी चाहिए कि इसे क्षमा कर दिया जाय।"

"इसी बात पर तो हमें विचार करना है," मुखिया कहने लगा, "हमें अपनी निजी भावनाओं को बहुत महत्व नहीं देना चाहिए।"

"प्रधान जज का भाषण अच्छा था," कर्नल बोला।

"खाक अच्छा था, मुझे तो नींद आने लगी थी!"

"मुख्य बात तो यह है कि अगर मास्लोवा नौकरों के साथ नहीं मिली थी तो नौकरों को रुपये का पता ही नहीं चल सकता था," यहूदी क्लर्क बोला।

"तो आप क्या समझते हैं, रुपये मास्लोवा ने चुराये हैं?" जूरी के एक सदस्य ने पूछा।

"मैं कभी भी यह नहीं मान सकता," दयालुस्वभाव व्यापारी बोला, "यह सब उस लाल लाल आंखों वाली चुड़ैल की करतूत है।"

"सभी छटे हुए बदमाश हैं," कर्नल ने कहा।

"पर वह तो कहती है कि उसने कमरे के अन्दर पांव तक नहीं रखा था।"

"तो तुम उसकी बात मानोगे? कुछ भी हो जाय, मैं उस डायन की बात तो कभी भी नहीं मान सकता।"

"तुम्हारे मानने या न मानने से तो इस सवाल का फ़ैसला नहीं हो जायेगा," क्लर्क बोला।

"चाभी तो लड़की के पास थी।"

"तो क्या हुआ?" व्यापारी झट से बोल उठा।

"और अंगूठी भी।"

"पर क्या लड़की ने सब बात साफ़ साफ़ नहीं बता दी?" व्यापारी ने फिर चिल्ला कर कहा। "वह आदमी अपने मिज़ाज का था, और कुछ ज़्यादा पी भी गया था। उसने लड़की को एक घूंसा जमा दिया। सीधी सी बात है। उसके बाद उसे अफ़सोस हुआ–स्वाभाविक बात है, और उसने कहा, बस, बस, रोओ नहीं, यह लो, यह ले लो। कहते हैं उसका क़द छः फ़ुट पांच इंच था। वज़न भी कम से कम तीन मन रहा होगा।"

"सवाल यह नहीं है," प्योत्र गेरासिमोविच कहने लगा, "सवाल यह है कि इस मामले की जड़ में कौन है? यह लड़की या नौकर? इनमें से किसको इसका ख़्याल आया और किसने बाक़ियों को उकसाया?"

"नौकर अकेले यह काम नहीं कर सकते थे। चाभी लड़की के पास थी।"

इस तरह की फुटकर बातें काफ़ी देर तक चलती रहीं। अन्त में मुखिया ने कहा–

"क्षमा कीजिये, क्या यह बेहतर नहीं होगा कि हम मेज़ पर बैठ कर इस मामले पर विचार करें? आइये, चलिये।" और वह जा कर अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठ गया।

"लेकिन ये रण्डियां जो न करें वह थोड़ा," क्लर्क बोला। उसकी राय में मास्लोवा मुजरिम थी। और इस राय की पुष्टि में वह सुनाने लगा कि किस तरह एक दिन एक सड़क पर उसके किसी दोस्त को एक रण्डी मिली जिसने उसकी घड़ी चुरा ली।

यह सुन कर कर्नल को भी एक घटना याद हो आई, जो इससे भी ज़्यादा रोचक थी और जिसमें चांदी की समोवार चुराई गई थी।

"सज्जनो, मेरी प्रार्थना है कि आप इन प्रश्नों को सुनें," मुखिया ने पेंसिल से मेज़ को ठकोरते हुए कहा।

सब चुप हो गये।

प्रश्नों को इस तरह पेश किया गया था–

१) क्या सीमन कार्तीनकिन–किसान, उम्र तैंतीस वर्ष, गांव बोर्की, जिला क्रपीवेन्स्की–इस बात का मुजरिम है कि उसने १७ जनवरी, १८८... के दिन और लोगों से मिल कर ...नामक शहर में स्मेल्कोव नामक व्यापारी को ब्राण्डी में ज़हर मिला कर पिलाया, इस इरादे से कि उसे मार कर उसका रुपया लूट लिया जाय, जिसके परिणामवश स्मेल्कोव की मृत्यु हो गई? क्या वह इस बात का भी मुजरिम है कि इसने उस आदमी से लगभग दो हज़ार पांच सौ रूबल नक़द और एक अंगूठी चुरा ली?

२) क्या येवफ़ीमिया इवानोव्ना बोच्कोवा, उम्र ४३ वर्ष, इस बात की मुजरिम है कि उसने उपरोक्त अपराध किये हैं?

३) क्या येकातेरीना मिख़ाइलोव्ना मास्लोवा, उम्र २७ वर्ष, इस बात की मुजरिम है कि उसने उपरोक्त पहले सवाल में दिये गये अपराध किये हैं?

४) यदि क़ैदी येवफ़ीमिया बोच्कोवा ने वह अपराध नहीं किया जिसका उल्लेख पहले प्रश्न में किया गया है तो क्या वह इस बात की मुजरिम है कि उसने १७ जनवरी, १८८... को ...शहर में, जहां वह होटल "माव्रीतानिया" में मुलाज़िम थी, होटल के एक मेहमान, व्यापारी स्मेल्कोव के बैग में से, जिस पर ताला चढ़ा हुआ था, और जो उपरोक्त व्यापारी के कमरे में रखा था, २,५०० रूबल की रक़म चुरा ली? और इस काम के लिए उसने बैग पर लगे ताले को उसी द्वारा लायी चाभी लगा कर खोला?

मुखिया ने पहला सवाल पढ़ कर सुनाया।

"तो सज्जनो, आपकी क्या राय है?"

इस प्रश्न का उत्तर मिलने में देर नहीं लगी। सभी ने एकमत हो कर कहा–"मुजरिम है!" उन्हें विश्वास था कि ज़हर देने और चोरी करने, दोनों कामों में कार्तीनकिन का हाथ था। केवल एक बूढ़े मज़दूर की राय इससे भिन्न थी। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर में उसने एक ही जवाब दिया था कि बरी कर दिया जाय।

मुखिया ने समझा कि सवाल उसकी समझ में नहीं आया, इसलिए वह उसे बताने लगा कि किस तरह हर बात से कार्तीनकिन और बोच्कोवा का अपराध सिद्ध होता है। जवाब में बूढ़े ने कहा कि मैं सवाल को भली भांति समझता हूं पर अब भी समझता हूं कि यह बेहतर होगा कि उस पर दया की जाय। "हम ख़ुद भी कोई सन्त नहीं हैं," उसने कहा और अपनी राय पर अड़ा रहा।

दूसरे सवाल पर जिसका सम्बन्ध बोच्कोवा से था बहुत बहस हुई, बहुत शोर-गुल हुआ, परन्तु अन्त में यही कहा गया कि "मुजरिम नहीं है"। उसके विरुद्ध कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं था कि ज़हर देने में उसका कोई हाथ था। इस तथ्य पर उसके वकील ने भी बहुत बल दिया था।

व्यापारी मास्लोवा को बरी करवाना चाहता था। इसलिए उसने इस बात पर ज़ोर दिया कि अपराध की जड़ बोच्कोवा ही थी। जूरी के बहुत से सदस्यों का भी यही ख़्याल था। लेकिन मुखिया बड़ा क़ानूनी आदमी था, उसने कहा कि हमारे पास कोई प्रमाण नहीं जिसके आधार पर हम कह सकें कि ज़हर देने में बोच्कोवा ने भाग लिया। बड़ी बहस हुई, पर अन्त में मुखिया की राय ही सबको माननी पड़ी।

लेकिन चौथे सवाल के जवाब में, जिसका सम्बन्ध भी बोच्कोवा से था, कहा गया कि "मुजरिम है"। परन्तु बूढ़े मज़दूर के आग्रह पर सिफ़ारिश की गई कि उसे क्षमा कर दिया जाय।

तीसरे सवाल पर बड़ी गरमागरम बहस हुई। यह मास्लोवा के बारे में था। मुखिया का कहना था कि ज़हर देने और चोरी करने, दोनों में वह अपराधी थी। लेकिन व्यापारी इसका विरोध करता था। कर्नल, क्लर्क और बूढ़े मज़दूर ने व्यापारी का पक्ष लिया, बाक़ी लोग असमंजस में थे। नतीजा यह हुआ कि मुखिया की राय ज़ोर पकड़ने लगी। इसका मुख्य कारण यह था कि सभी थक गये थे, और ऐसा मत अपनाना चाहते थे जिससे जल्दी जल्दी किसी फ़ैसले पर पहुंच सकें ताकि छुट्टी हो।

नेख़्लूदोव को यक़ीन था कि मास्लोवा निर्दोष है। उसने न चोरी की है और न ही ज़हर दिया है। उसने आज जो कुछ देखा, और जो कुछ वह मास्लोवा के बारे में पहले से जानता था, उसके आधार पर वह इस नतीजे पर पहुंचा, और उसे यक़ीन था कि बाक़ी सब लोग भी इसी नतीजे पर पहुंचेंगे। व्यापारी के तर्क बड़े बेडौल से थे (प्रत्यक्षतः इनका आधार

मास्लोवा का शारीरिक आकर्षण था जिस पर व्यापारी लट्टू हो रहा था, और जिसे छिपाने की व्यापारी ने कोई कोशिश भी नहीं की थी)। उधर मुखिया अपनी बात पर अड़ा हुआ था। और सबसे बड़ी बात यह थी कि लोग थक गये थे। इन सब बातों के कारण इस बात की संभावना बढ़ने लगी थी कि मास्लोवा को मुजरिम करार दिया जायेगा। जब नेख़्लूदोव ने यह देखा तो वह चिन्तित हो उठा और उसका मन चाहा कि उठ कर अपनी राय दे। लेकिन वह डर रहा था कि कहीं लोगों को मास्लोवा के साथ उसके सम्बन्ध का पता न चल जाय। पर फिर भी उसने सोचा कि यदि इसी तरह चलता रहा तो मामला हाथ से निकल जायेगा। शर्माते-सकुचाते हुए उसने बोलने का निश्चय किया, उसका चेहरा भी पीला पड़ गया। पर ऐन उसी वक़्त प्योत्र गेरासिमोविच ने एतराज़ उठाने शुरू कर दिये और वही बात कहने लगा जो नेख़्लूदोव कहना चाहता था। मुखिया को अफ़सरों की तरह बातें करते देख कर वह झल्ला उठा था।

"मुझे भी एक मिनट के लिए बोलने की इजाज़त दीजिये," वह बोला, "आप यह समझते जान पड़ते हैं कि चूंकि चाभी मास्लोवा के पास थी इसलिए चोरी भी उसी ने की है। क्या यह नौकरों के लिए कहीं ज़्यादा आसान नहीं था कि मास्लोवा के होटल में से चले जाने के बाद वे कोई दूसरी चाभी लगा कर बैग खोल लेते?"

"क्यों नहीं, क्यों नहीं," व्यापारी ने कहा।

"यह संभव ही नहीं कि उसने रुपया लिया हो। रुपया ले लेती तो उसकी समझ में ही न आता कि उसके साथ करे क्या।"

"यही तो मैं कहता हूं," व्यापारी बोला।

"हां, यह मुमकिन है कि मास्लोवा के होटल में आने पर ही उन्हें चोरी करने का ख़्याल आया। इसके बाद उन्होंने मौक़े का फ़ायदा उठाया और सारा दोष मास्लोवा के सिर मढ़ दिया।"

प्योत्र गेरासिमोविच इतना चिढ़ कर बोला कि उसे सुन कर मुखिया भी चिढ़ उठा। उसने ज़िद्द पकड़ ली और उसकी बात का विरोध करने लगा। पर प्योत्र गेरासिमोविच की बातें जूरी के सदस्यों को इतनी तर्कसंगत जान पड़ीं कि उनमें से अधिकांश उसके हक़ में हो गये, और यह निश्चय किया कि मास्लोवा ने रुपये नहीं चुराये और अंगूठी भी उसे दी गई थी, उसने ख़ुद नहीं ली। पर जब यह सवाल उठा कि ज़हर देने में उसका

कोई हाथ था या नहीं तो व्यापारी बड़े जोश के साथ बोला कि इस अपराध से भी उसे बरी कर दिया जाना चाहिए, क्योंकि उसके ज़हर देने का कोई प्रयोजन ही नहीं हो सकता था। जवाब में मुखिया ने कहा कि उसे किसी सूरत में भी बरी नहीं किया जा सकता क्योंकि उसने स्वयं अपना जुर्म क़बूल किया है और कहा है कि उसने पाउडर दिया।

"हां, मगर यह समझ कर कि वह अफ़ीम थी।"

"अफ़ीम से भी तो आदमी मर सकता है," कर्नल ने कहा। कर्नल का ध्यान किसी बात पर भी ज़्यादा देर तक टिक नहीं सकता था। उसने बताना शुरू किया कि एक बार उसके साले की पत्नी ने कुछ ज़्यादा मात्रा में अफ़ीम खा ली। अगर पड़ोस में ही डाक्टर नहीं रहता होता, और वक़्त पर इलाज न हो जाता तो वह ज़रूर मर जाती। कर्नल ने यह कहानी इतने रोचक ढंग से सुनाई, इतनी स्थिरता और बड़प्पन के साथ कि बीच में बोलने का किसी को भी साहस नहीं हुआ। पर उसकी कहानी सुन कर, छूत की बीमारी की तरह, क्लर्क को भी एक कहानी याद हो आई।

"कई लोगों को अफ़ीम खाने की आदत पड़ जाती है, यहां तक कि चालीस चालीस बूंदों तक वे चढ़ा जाते हैं। मेरा एक रिश्तेदार था..."

परन्तु कर्नल को उसका इस तरह विघ्न डालना पसन्द नहीं था। उसने अपनी कहानी जारी रखी और सुनाने लगा कि अफ़ीम का उसके साले की पत्नी पर क्या असर हुआ।

"सज्जनो, यह मत भूलिये कि पांच बजा चाहते हैं," जूरी का एक सदस्य बोला।

"अच्छी बात है, तो सज्जनो, बताइये, क्या निश्चय हुआ?" मुखिया ने पूछा। "क्या हम यह कहें कि उसने अपराध तो किया है लेकिन चोरी करने का उसका इरादा नहीं था? न ही कोई चीज़ उठाने का? क्या यह काफ़ी होगा?"

प्योत्र गेरासिमोविच सहमत हो गया। उसे इस बात की ख़ुशी थी कि उसकी जीत हुई है।

"पर हमें यह सिफ़ारिश करनी चाहिए कि उसे क्षमादान दिया जाय," व्यापारी बोला।

सभी सहमत हो गये। केवल बूढ़ा मज़दूर बार बार यही कहता रहा कि उन्हें यह घोषणा करनी चाहिए कि वह मुजरिम नहीं है।

"एक ही बात है," मुखिया ने समझाया, "चोरी करने का इरादा नहीं था, और कोई चीज़ नहीं उठायी। इसलिए स्पष्ट है कि वह बेक़सूर है।"

"अच्छी बात है। यही ठीक रहेगा। और हम सिफ़ारिश करते हैं कि उसे क्षमादान दिया जाय," व्यापारी ने ख़ुशी ख़ुशी कहा।

वे सब इस क़दर थके हुए थे, और बहस के कारण यहां तक अपनी सुध-बुध खो बैठे थे कि किसी को भी यह नहीं सूझा कि साथ में यह भी जोड़ दें कि मास्लोवा ने पाउडर देने का अपराध तो किया है परन्तु उसका कोई इरादा जान लेने का नहीं था।

नेख़्लूदोव इतना उत्तेजित था कि इस छूट की ओर उसका ध्यान ही नहीं गया। बस, जैसा फ़ैसला हुआ था उसके अनुसार जवाब लिख डाले गये और जूरी उन्हें अदालत में ले चले।

रब्ले ने एक जगह एक जज का ज़िक्र किया है जो किसी मुक़द्दमे की पैरवी करते समय तरह तरह के क़ानूनों के हवाले देता, कितने ही पन्ने न्याय-ग्रंथों में से लातीनी ज़बान के पढ़ कर सुनाता और इसके बाद मुद्दई-मुद्दालेह से कहता कि पासा फेंक कर फ़ैसला कर लीजिये, अगर पासा जिस्त में बैठे तो मुद्दई ठीक कहता है, और जो ताक में बैठे तो मुद्दालेह।

इस मुक़द्दमे की भी वैसी ही स्थिति थी। यह फ़ैसला इसलिए नहीं किया गया कि सभी इससे सहमत थे, बल्कि इसलिए कि प्रधान जज अपने लम्बे भाषण में वह बात बताना भूल गया था जो वह हमेशा ऐसे मौक़ों पर बता दिया करता था कि इन प्रश्नों के उत्तर में यह भी लिखा जा सकता है—"क़ुसूरवार है, लेकिन इसका इरादा जान लेने का नहीं था।" इसलिए भी कि कर्नल बड़ी देर तक अपने साले की बीवी की कहानी सुनाता रहा था। और नेख़्लूदोव इतने उत्तेजित हो उठा था कि इस शर्त की ओर—"इरादा जान लेने का नहीं था"—उसका ध्यान ही नहीं गया। उसका ख़्याल था कि ये शब्द लिख देने से ही कि "लूटने का इरादा नहीं था", फ़र्देजुर्म रद्द हो जाता है। इसलिए भी कि जब प्रश्न और उनके उत्तर पढ़े जा रहे थे तो प्योत्र गेरासिमोविच कमरे में से बाहर गया हुआ था। पर मुख्य कारण यह था कि सभी थक चुके थे और जल्दी से जल्दी छुट्टी करना चाहते थे, इसलिए इस मामले को ख़त्म करने के लिए जो भी फ़ैसला किया जा सके उससे सहमत होने के लिए तैयार थे।

जूरी ने घंटी बजायी। हथियारबंद सिपाही ने, जो बाहर पहरे पर खड़ा था, अपनी तलवार मियान में रखी और दरवाज़े के सामने से हट गया। जज अपनी अपनी जगह पर बैठ गये, और एक एक कर के जूरी के सदस्य बाहर आने लगे।

मुखिया जवाबों का काग़ज़ उठाये बड़ी गंभीरता से अदालत में दाख़िल हुआ और उसे प्रधान जज के हाथ में दे दिया। प्रधान जज ने उसे पढ़ा, और हैरान हो कर हाथ हिलाया, फिर अपने साथियों से मश्विरा करने लगा। प्रधान जज को इस बात का अचम्भा हुआ था कि जहां पंचों ने यह शर्त तो लिख दी कि "लूटने का इरादा नहीं था", वहां दूसरी शर्त नहीं लिखी, कि "जान लेने का इरादा नहीं था"। जूरी के फ़ैसले का तो यह मतलब निकलता था कि मास्लोवा ने न चोरी की है, न लूटा है, लेकिन फिर भी बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के एक आदमी को ज़हर दे डाला है।

"कैसा बेहूदा फ़ैसला है," प्रधान जज ने बायें हाथ बैठे जज से फ़ुसफ़ुसा कर कहा। "इसका मतलब है साइबेरिया में क़ैद व मशक़्क़त की सज़ा। और लड़की निर्दोष है।"

"क्या आप समझते हैं कि लड़की निर्दोष है?"

"हां, बिल्कुल निर्दोष है। मेरे ख़्याल में इस केस पर धारा ८१८ लागू की जानी चाहिए (धारा ८१८ के अनुसार यदि अदालत जूरी के फ़ैसले को अन्यायपूर्ण समझे तो उसे रद्द कर सकती है)।

"आपका क्या ख़्याल है?" प्रधान जज ने दूसरे जज से पूछा।

दयालुस्वभाव जज ने फ़ौरन जवाब नहीं दिया। उसके सामने एक काग़ज़ पर किसी संख्या के अंक लिखे थे। उसने इन अंकों को जोड़ा और तीन पर तक़सीम किया। लेकिन वह तीन पर तक़सीम नहीं हो सका। उसने मन में फ़ैसला किया था कि अगर जोड़ तीन पर तक़सीम हो गया तो वह प्रधान जज से सहमत हो जायेगा। पर अब तक़सीम न होने पर भी, चूंकि वह दयालुस्वभाव पुरुष था, इसलिए सहमत हो गया।

"मैं भी सोचता हूं कि उस धारा को लागू करना चाहिए," वह बोला।

"और आप?" प्रधान जज ने गंभीर जज को संबोधित करते हुए पूछा।

"हरगिज़ नहीं," उसने दृढ़ता से जवाब दिया, "पहले ही अख़बारों में ख़बरें छपती रहती हैं कि जूरी क़ैदियों को बरी करते रहते हैं। अब अगर जजों ने बरी करना शुरू कर दिया तो लोग क्या कहेंगे। मैं किसी सूरत में भी इससे सहमत नहीं हो सकता।"

प्रधान जज ने घड़ी निकाल कर देखी।

"बड़े अफ़सोस की बात है, मगर किया क्या जाय?" और उसने काग़ज़ मुखिया को पढ़ कर सुनाने के लिए दिया।

सभी उठ खड़े हुए। मुखिया ने एक पांव पर से अपना बोझ हटा कर दूसरे पांव पर रखा, खांसा, और फिर प्रश्न और उत्तर पढ़ने शुरू कर दिये। अदालत में सभी लोग—सेक्रेटरी, वकील, यहां तक कि सरकारी वकील भी—हैरान रह गये।

क़ैदी अचेत से बैठे थे। जाहिर था कि इन जवाबों का मतलब उनकी समझ में नहीं आया। सब लोग बैठ गये। प्रधान जज ने सरकारी वकील से अभियुक्तों को सज़ा तजवीज़ करने के लिए कहा।

सरकारी वकील को इस सफलता की आशा नहीं थी। वह ख़ुश था कि मास्लोवा को सज़ा दिलाने में कामयाब हुआ है, और समझता था कि इसका श्रेय उसकी वाक्पटुता को है। उसने यथावश्यक निर्देशपुस्तकें देखीं, और उठ कर बोलने लगा—

"मैं चाहता हूं कि सीमन कार्तीनकिन को धारा १४५२ तथा धारा १४५३ के चौथे पैरे के अनुसार सज़ा दी जाय; येवफ़ीमिया बोच्कोवा को धारा १६५९ के अनुसार और येकातेरीना मास्लोवा को धारा १४५४ के अनुसार।"

तीनों सज़ाएं बेहद कड़ी थीं। इनसे ज़्यादा कड़ी सज़ाएं नहीं दी जा सकती थीं।

"सज़ाओं पर विचार करने के लिए अदालत की कार्यवाही कुछ समय के लिए स्थगित की जाती है," प्रधान जज ने उठते हुए कहा।

उसके उठने के बाद सभी लोग उठ खड़े हुए। कोई बाहर चला गया और कोई वहीं टहलने लगा। सब ख़ुश थे कि एक काम अच्छी तरह सम्पन्न हो गया।

मुखिया नेख़्लूदोव के पास खड़ा उसे कुछ बता रहा था। इतने में प्योत्र गेरासिमोविच पास आ कर नेख़्लूदोव से बोला—

"क्या आपको मालूम है कि हमने तो सारा मामला ही ख़राब कर दिया है? लड़की तो अब साइबेरिया की हवा खायेगी।"

"क्या कह रहे हो?" नेख़्लूदोव ने चिल्ला कर कहा। अब की उसे इस अध्यापक की बेतकल्लुफ़ी बुरी नहीं लगी।

"हम लोगों ने जवाब में यह नहीं लिखा कि क़ुसूरवार तो है लेकिन इसका इरादा जान लेने का नहीं था। सेक्रेटरी ने अभी अभी मुझे बताया है कि सरकारी वकील उसे पन्द्रह साल कड़ी क़ैद की सज़ा दिलवा रहा है।"

"तो क्या हुआ? यही तो निश्चय हुआ था," मुखिया बोला।

प्योत्र गेरासिमोविच ने इसका विरोध किया, कहने लगा कि चूंकि उसने रुपया नहीं चुराया इसलिए ज़ाहिर है कि उस आदमी को मारने का इसका कोई इरादा नहीं हो सकता था।

"लेकिन बाहर निकलने से पहले मैंने सब जवाब पढ़ कर सुना दिये थे," मुखिया ने अपनी सफ़ाई देते हुए कहा। "उस वक़्त किसी ने कोई एतराज़ नहीं उठाया।"

"मैं उसी वक़्त कमरे से बाहर गया था," प्योत्र गेरासिमोविच बोला, फिर नेख़्लूदोव की ओर मुड़ कर बोला, "आपका दिमाग़ भी उस वक़्त घास चरने गया होगा कि आपने इसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया।"

"मुझे ख़्याल ही नहीं था," नेख़्लूदोव कहने लगा।

"ख़्याल नहीं था?"

"पर हम अब भी तो इसे ठीक कर सकते हैं," नेख़्लूदोव बोला।

"जी नहीं, अब कुछ नहीं हो सकता। मामला ख़त्म हो गया है।"

नेख़्लूदोव ने क़ैदियों की ओर देखा। वे लोग, जिनकी क़िस्मत का फ़ैसला होने जा रहा था, अब भी डंडहरे के पीछे, सिपाहियों के सामने गतिहीन बैठे थे। मास्लोवा मुस्करा रही थी। नेख़्लूदोव के मन में कुविचार उठा। अब तक उसे आशा थी कि मास्लोवा बरी हो जायेगी। लेकिन यह सोच कर कि वह इसी शहर में रहने लगेगी उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उसके प्रति वह कैसा रवैया अपनाये। उसके साथ अब किसी प्रकार का भी संबंध रखना बड़ा कठिन था। यदि उसे कड़ी मशक़्क़त की सज़ा दे कर साइबेरिया भेज दिया गया तो उसके प्रति कोई रवैया

अपनाने का सवाल ही नहीं उठेगा। ज़ख़्मी परिन्दा शिकारी के वैग में ही छटपटा छटपटा कर दम तोड़ देगा और शिकारी को उसकी याद तक नहीं आयेगी।

२४

प्योत्र गेरासिमोविच का अनुमान ठीक निकला।

प्रधान जज विचार-कक्ष में से निकल कर वापस आया। उसके हाथ में एक काग़ज़ था जिसे उसने पढ़ना शुरू कर दिया:

"तिथि १८ अप्रैल, १८८...। महाराजाधिराज के आदेशानुसार, जूरी के निश्चय तथा ज़ाब्ता फ़ौजदारी की धारा ७७१ के भाग ३, धारा ७७६ के भाग ३ और धारा ७७७ के आधार पर अदालत फ़ौजदारी किसान सीमन कार्तीनकिन, उम्र ३३ साल और मेश्चान्का येकातेरीना मास्लोवा, उम्र २७ साल को सब प्रकार के सम्पत्ति-अधिकारों से वंचित कर के दोनों को कड़ी मशक़्क़त की सज़ा दे कर साइबेरिया में भेजती है—कार्तीनकिन को ८ साल के लिए और मास्लोवा को ४ साल के लिए—उन्हीं अनुवर्ती परिणामों के साथ जिनका उल्लेख ज़ाब्ता फ़ौजदारी की धारा २८ में किया गया है। मेश्चान्का वोच्कोवा, उम्र ४३ साल, को सभी विशिष्ट निजी व अनुप्राप्त अधिकारों से वंचित कर के ३ साल क़ैद की सज़ा दी जाती है, उन्हीं अनुवर्ती परिणामों के साथ जिनका उल्लेख ज़ाब्ता फ़ौजदारी की धारा ४६ में किया गया है। मुक़द्दमे का सारा ख़र्च क़ैदी वरदाश्त करेंगे, जो वरावर वरावर हिस्सों में उनसे वसूल किया जायेगा। यदि अदायगी के पर्याप्त साधन उनके पास नहीं होंगे तो यह ख़र्च सरकारी ख़ज़ाने में से अदा किया जायेगा। सव शहादती चीज़ें वेच दी जायेंगी, अंगूठी वापस कर दी जायेगी और शीशे के पात्र तोड़ दिये जायेंगे।"

कार्तीनकिन अव भी सीधा तन कर खड़ा हुआ था और उसके गाल फरफरा रहे थे। वोच्कोवा पूर्णतया शान्त नज़र आ रही थी। मास्लोवा ने जव फ़ैसला सुना तो उसका चेहरा लाल हो गया।

"मैंने कोई क़सूर नहीं किया, मेरा कोई दोप नहीं," सहसा वह चिल्ला उठी और उसकी आवाज़ सारे कमरे में गूंज उठी। "यह पाप है।

मैं निर्दोष हूं। मेरी कोई इच्छा उसे... मुझे इसका ख़्याल तक नहीं आया। मैं सच कहती हूं, विल्कुल सच कहती हूं।" वह वेंच पर ढह गई और विलख विलख कर रोने लगी।

कार्तीनकिन और बोच्कोवा अदालत में से वाहर चले गये। मास्लोवा फिर भी वैठी रोती रही, यहां तक कि सिपाही को उसके लवादे की आस्तीन छू कर उसे उठाना पड़ा।

जो बुरे विचार नेख़्लूदोव के मन में उठे थे, वे सव ग़ायव हो गये। "इस मामले को यहीं पर नहीं छोड़ा जा सकता, नामुमकिन है," उसने मन ही मन कहा और वरामदे में तेज़ तेज़ चलता हुआ मास्लोवा के पीछे जाने लगा। न जाने क्यों, वह उसे फिर एक वार देख लेना चाहता था। दरवाज़े पर लोगों की ख़ासी भीड़ जमा हो गई थी। वकील और जूरी के सदस्य वाहर निकल रहे थे। वे खुश थे कि काम समाप्त हुआ। नेख़्लूदोव को कुछ देर इन्तज़ार करना पड़ा, इसलिए जव वह वरामदे में निकल कर आया तो मास्लोवा वहुत दूर जा चुकी थी। वह फिर तेज़ तेज़ चलता हुआ, विना इस वात की परवाह कि लोग उसे देख रहे होंगे, उसके पीछे पीछे जाने लगा। वह उसके पास जा पहुंचा, फिर आगे निकल गया और एक जगह रुक कर उसकी ओर देखने लगा। वह अव रो नहीं रही थी, केवल सिसकियां भर रही थी, और सिर पर वंधे रूमाल के एक कोने से मुंह पोंछ रही थी। उसका चेहरा लाल हो रहा था और उस पर जगह जगह धब्बे पड़े हुए थे। उसने नेख़्लूदोव की ओर नहीं देखा और आगे निकल गई। इसके वाद नेख़्लूदोव भागा हुआ प्रधान जज को मिलने गया। प्रधान जज अदालत के कमरे में से जा चुका था। नेख़्लूदोव उसके पीछे पीछे ड्योढ़ी में जा पहुंचा जहां प्रधान जज अपना हल्का भूरे रंग का ओवरकोट पहना रहा था और अर्दली से अपनी चांदी की मूठ वाली छड़ी ले रहा था। नेख़्लूदोव सीधा उसके पास चला गया।

"जनाव, इजाज़त हो तो मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूं। यह इस मुक़द्दमे के वारे में है जिसका अभी अभी फ़ैसला हुआ है। मैं जूरी का एक सदस्य हूं।"

"ज़रूर, ज़रूर, प्रिंस नेख़्लूदोव, मुझे ख़ुशी होगी। मैं सोचता हूं हम पहले एक दूसरे को मिल चुके हैं," प्रधान जज ने नेख़्लूदोव का हाथ दवाते हुए कहा। उसे वह शाम याद हो आई जव वह पहली वार

नेख़्लूदोव से मिला था। और याद आते ही उसका मन ख़ुशी से भर उठा। उस शाम वह दिल खोल कर नाचा था और इतना बढ़िया कि वहां नाचने वाले युवक भी देखते रह गये थे। "मैं आपकी क्या ख़िदमत कर सकता हूं?"

"मास्लोवा के बारे में जो जवाब दिया गया, उसमें एक भूल हो गई। उस पर ज़हर देने का जुर्म नहीं है फिर भी उसे बामशक़्क़त कड़ी सज़ा दी गई है," नेख़्लूदोव ने कहा। वह अनमना और उदास लग रहा था।

"आपके जवाबों की ही बिना पर अदालत ने सज़ा दी है," दरवाज़े की ओर जाते हुए प्रधान जज ने कहा। "हालांकि आपके जवाब जजों को भी असंगत से लगते थे।"

उसे याद आया कि वह जूरी को यह बताने जा ही रहा था कि अभियुक्त को "मुजरिम" क़रार देते वक़्त अगर ये शब्द साथ में न जोड़े जायं कि "जुर्म जान लेने के इरादे से नहीं किया गया", तो इसका यही अर्थ लिया जाता है कि जुर्म जान बूझ कर मार डालने के इरादे से किया गया। मगर उस वक़्त उसे काम ख़त्म करने की इतनी जल्दी थी कि वह समझाना भूल गया था।

"लेकिन क्या अब इस ग़लती को ठीक नहीं किया जा सकता?"

"अपील करनी हो तो हमेशा कोई न कोई वजह तो मिल ही सकती है। आपको किसी वकील से सलाह लेनी होगी," प्रधान जज ने चलते चलते कहा, और सिर पर तिरछे से अन्दाज़ से टोप पहना।

"लेकिन यह बड़ा जुल्म है।"

"आप जानते हैं, मास्लोवा के संबंध में दो ही संभावनाएं थीं," प्रधान जज ने कहा। ज़ाहिर था कि वह नेख़्लूदोव से यथासंभव विनम्रता और शिष्टता से बात करना चाहता था। कोट के कॉलर के ऊपर अपने गलमुच्छे ठीक करते हुए उसने हल्के से नेख़्लूदोव की कोहनी के नीचे हाथ रखा, और अब भी दरवाज़े की ओर बढ़ते हुए बोला—"आप भी चल रहे हैं?"

"जी हां," नेख़्लूदोव ने कहा, और जल्दी जल्दी अपना कोट पहन कर उसके साथ हो लिया।

बाहर धूप खिल रही थी, और सड़क पर गाड़ियों के पहियों की गड़गड़ाहट सुनाई दे रही थी, इस कारण उन्हें अपनी आवाज़ ऊंची कर के बोलना पड़ा।

"स्थिति बड़ी अजीब सी है," प्रधान जज ने कहा, "मास्लोवा के संबंध में दो में से एक ही वात हो सकती थी। या तो उसे थोड़ी सी क़ैद की सज़ा देकर लगभग वरी कर दिया जाता। और इस वात का ख़्याल रखते हुए कि वह जेल में काफ़ी वक़्त पहले ही काट चुकी है, उसे बिल्कुल वरी कर दिया जा सकता था। या फिर उसे साइवेरिया भेजा जाता। इनके बीच और कोई रास्ता नहीं था। यदि आप लोग केवल ये शब्द जोड़ देते कि 'उसका जान लेने का इरादा नहीं था' तो वह वरी हो जाती।"

"हां, मुझसे वहुत बड़ी भूल हुई, मैं अपने को कभी माफ़ नहीं कर सकता," नेख़्लूदोव ने कहा।

"इसी पर सब वात का दारोमदार है," प्रधान जज ने मुस्कराते हुए कहा, और अपनी घड़ी को देखा।

केवल ४५ मिनट बाक़ी रह गये थे। इसके बाद वह अपनी क्लारा को नहीं मिल सकेगा।

"अव यदि आप चाहें तो वकीलों से वात कर देखिये। आपको अपील दायर करने के लिए कोई आधार चाहिए और वह आसानी से मिल जायेगा।" फिर एक गाड़ीबान की ओर मुंह कर के वोला, "द्वोर्यान्स्काया चलोगे? तीस कोपेक दूंगा। इससे ज़्यादा मैं कभी नहीं देता।"

"चलूंगा, हुज़ूर, मैं आपको ले चलूंगा।"

"तो इजाज़त है? यदि मैं आपकी कोई ख़िदमत कर सकूं तो शौक़ से मेरे पास तशरीफ़ लाइये। मेरा पता है: द्वोर्यान्स्काया रोड, द्वोर्निकोव भवन। इसे याद रखना आसान है।"

और बड़े दोस्ताना ढंग से झुक कर विदा लेते हुए वह गाड़ी में बैठ कर रवाना हो गया।

२५

प्रधान जज के साथ बात कर लेने से नेख़्लूदोव का मन कुछ हल्का हुआ। कुछ इस कारण भी कि बाहर ताज़ा हवा बह रही थी। उसने सोचा कि इतनी तीव्रता से ये भावनाएं उसके दिल में न उठतीं यदि वह सुबह से इस वक़्त तक इस अजीब से वातावरण में न बैठा रहता।

"सचमुच कैसी विचित्र घटना घटी है, आकस्मिक और विलक्षण! और यह बेहद ज़रूरी है कि यथाशक्ति मैं उसकी सज़ा को कम करवाने की कोशिश करूं। और वह भी फ़ौरन! मुझे यहीं कचहरी में से ही दर्याफ़्त कर लेना चाहिए कि फ़ानारिन या मिकीशिन कहां रहते हैं," दो प्रसिद्ध वकीलों के नाम याद करते हुए उसने मन ही मन कहा।

वह कचहरी में लौट आया, और ओवरकोट उतार कर ऊपर चला गया। पहले बरामदे में जाते हुए उसकी स्वयं फ़ानारिन से ही भेंट हो गई। उसने फ़ानारिन को रोक लिया और कहा कि मैं आपको एक काम के सिलसिले में मिलने ही जा रहा था। फ़ानारिन ने नेख़्लूदोव का नाम सुन रखा था, और शक्लसूरत से भी उसे पहचानता था। बोला कि जो भी ख़िदमत हो, मैं ख़ुशी से करने के लिए हाज़िर हूं।

"मैं इस वक़्त कुछ थका हुआ हूं लेकिन बात लम्बी न हो तो आप बेशक इसी वक़्त मुझे उसके बारे में बता दीजिये। चलिये, इधर अन्दर चले चलिये।"

और वह नेख़्लूदोव को एक कमरे में ले गया जो शायद किसी जज का कमरा था। दोनों मेज़ के सामने बैठ गये।

"कहिये, क्या काम है?"

"सबसे पहले तो मैं गुज़ारिश करूंगा कि इसे अपने तक ही रखिये। मैं नहीं चाहता कि किसी को भी मालूम हो कि मेरी इस मामले में कोई दिलचस्पी है।"

"बेशक, बेशक, यह बताने की आपको कोई ज़रूरत नहीं।"

"आज मैं जूरी पर था और हमने एक बेगुनाह औरत को कड़ी मशक़्क़त की सज़ा दिलवा दी है। इससे मेरा मन बहुत बेचैन हुआ है।"

नेख़्लूदोव का चेहरा लाल हो गया और वह घबरा सा गया। वह ख़ुद हैरान हो रहा था कि उसे क्या हो गया है। फ़ानारिन ने उसके चेहरे पर एक नज़र फेंकी और फिर नीचे देखने लगा, और उसकी बात सुनने लगा।

"कहिये।"

"हमने एक बेगुनाह औरत को सज़ा दिलवा दी है और मैं इस बारे में ऊंची अदालत में अपील करना चाहता हूं।"

"आपका मतलब है सेनेट में," नेख़्लूदोव की अशुद्धि ठीक करते हुए फ़ानारिन ने कहा।

"और मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि आप इस मुक़द्दमे को हाथ में ले लें।"

जो बात नेख़्लूदोव के लिए कहना कठिन हो रहा था, वह उसे जल्दी जल्दी कह डालना चाहता था। बोला—

"इस मुक़द्दमे का जितना भी ख़र्च होगा, मैं दूंगा।" और उसका चेहरा लाल हो गया।

"कोई बात नहीं, यह हम बाद में देख लेंगे," इन मामलों में नेख़्लूदोव की अनुभवहीनता पर कृपाभाव से मुस्कराते हुए वकील ने कहा।

"मामला क्या है?"

जो कुछ हुआ था नेख़्लूदोव ने कह सुनाया।

"अच्छी बात है। मैं इस पर काम करना शुरू कर दूंगा और कल इसकी मिसल देखूंगा। आप मुझे परसों मिलिये, नहीं, बेहतर है बृहस्पतिवार को मिलिये। छः बजे के बाद आप मेरे पास आ जाइये और मैं इसके बारे में आपको जवाब दूंगा। तो अब चलें। मुझे यहां कुछेक बातों के बारे में पूछना है।"

नेख़्लूदोव ने विदा ली और बाहर निकल आया।

वकील के साथ बात कर लेने से, और यह सोच कर कि मास्लोवा को बचाने के लिए उसने क़दम उठाया है, नेख़्लूदोव का मन और भी हल्का हो गया। वह बाहर सड़क पर आ गया। मौसम बेहद सुहावना था। वसन्त की ताज़ा हवा में उसने लम्बी सांस ली। बहुत से गाड़ीवान उसके आस-पास इकट्ठे हो गये और गाड़ी लेने के लिए बार बार कहने लगे। मगर नेख़्लूदोव गाड़ी में नहीं बैठा और पैदल जाने लगा। सहसा उसके मन में तरह तरह की स्मृतियां और चित्र घूमने लगे—कात्यूशा के बारे में, और उसके प्रति अपने व्यवहार के बारे में। वह उदास हो गया और हर चीज़ उसे उदास नज़र आने लगी। "नहीं, इन सब बातों के बारे में बाद में सोचा जायेगा। आज जो कुछ देखा है, कितना घिनौना था। उसे मन में से निकाल देना चाहिए," वह मन ही मन सोचने लगा।

उसे याद आया कि कोर्चागिन परिवार के घर उसे डिनर खाने जाना

है। उसने घड़ी देखी। अभी भी वक़्त था, वह पहुंच सकता था। उसे एक ट्राम की घण्टी की आवाज़ सुनाई दी। भाग कर वह उसके पास जा पहुंचा और कूद कर उसके ऊपर चढ़ गया। बाज़ार के पास पहुंच कर वह उस पर से कूद पड़ा, और एक अच्छी घोड़ा गाड़ी में जा बैठा। दस मिनट के बाद वह कोर्चागिन परिवार के विशाल भवन के सामने खड़ा था।

२६

"आइये हुज़ूर, पधारिये," दरवाज़ा खोलते हुए इस बड़े घर के मोटे दरबान ने बड़े अदब से कहा और बढ़िया अंग्रेजी क़ब्ज़े लगा बलूत का भारी दरवाज़ा ज़रा भी शोर किये बिना खोल दिया। "सब लोग आपका इन्तज़ार कर रहे हैं। भोजन शुरू हो गया है लेकिन मुझे हुक्म है कि आपको अन्दर ले चलूं।"

दरबान ने सीढ़ियों के पास जा कर घण्टी बजायी।

"बाहर के लोग भी हैं क्या?" नेख़्लूदोव ने अपना ओवरकोट उतारते हुए पूछा।

"जी, घर के लोगों को छोड़ कर केवल श्रीमान्| कोलोसोव और मिख़ाईल सेर्गेयेविच हैं।"

फ़्रॉक-कोट और सफ़ेद दस्ताने पहने हुए एक बेहद ख़ूबसूरत चोबदार सीढ़ियों के ऊपर आ खड़ा हुआ।

"चलिये, हुज़ूर, सब आपका इन्तज़ार कर रहे हैं," उसने कहा।

नेख़्लूदोव सीढ़ियां चढ़ कर ऊपर पहुंचा। सामने एक बड़ा हॉल था, बड़े ठाट से सजा हुआ। नेख़्लूदोव इससे भली भांति परिचित था। इसे लांघ कर वह भोजन-कक्ष में पहुंचा। परिवार के सभी सदस्य मेज़ पर मौजूद थे, सिवाय प्रिंसेस सोफ़िया वासील्येव्ना के, जो सदा अपने कमरे में ही रहती थीं। मेज़ के सिरे पर वृद्ध कोर्चागिन विराजमान थे। उनके बायें हाथ डाक्टर, और दायें हाथ एक अतिथि इवान इवानोविच कोलोसोव बैठे थे। यह सज्जन कभी अपने ज़िले के अभिजात वर्ग के निर्वाचित प्रधान रह चुके थे और आजकल एक बैंक के डायरेक्टर थे। विचारों के उदारवादी और कोर्चागिन के मित्र थे। बायें हाथ मिस्सी की छोटी चार साला बहिन

तथा उसकी अध्यापिका मिस रेडर बैठी थीं। उनके सामने, दूसरी तरफ़ मिस्सी का भाई पेत्या बैठा था। कोर्चागिन परिवार का यही एक लड़का था। वह छठी कक्षा में पढ़ रहा था। आजकल उसके इम्तहान हो रहे थे। यही कारण था कि अब तक सारा परिवार शहर में टिका हुआ था। उसके साथ विश्वविद्यालय का एक छात्र, जो उसे पढ़ाता था, और मिस्सी का चचेरा भाई मिख़ाईल सेर्गेयेविच तेलेगिन, जिसे अक्सर लोग मीशा कह कर पुकारते थे, बैठे थे। मीशा के ऐन सामने येकातेरीना अलेक्सेयेव्ना बैठी थी। इस महिला की उम्र ४० वर्ष की थी और वह कुंवारी थी, और उसके दिमाग़ पर स्लाव जाति की श्रेष्ठता का भूत सवार था। मेज़ के दूसरे सिरे पर स्वयं मिस्सी बैठी थी, और उसके साथ वाली कुर्सी ख़ाली पड़ी थी।

"अच्छा हुआ तुम आ गये। हमने अभी मछली खाना ही शुरू किया है," अपनी लाल आंखें ऊपर को उठा कर वृद्ध कोर्चागिन ने कहा। उसकी आंखों को देख कर ऐसा लगता था जैसे उन पर पलकें नहीं हैं। कोर्चागिन को बात करने में तकलीफ़ हो रही थी, क्योंकि उसका मुंह भरा हुआ था और दांत नकली थे जिनसे वह बड़े ध्यान से, धीरे धीरे मछली चबा रहा था। उसी तरह भरे हुए मुंह से उसने दस्तरख़ान के नौकर को आवाज़ दी—

"स्तेपान!" और आंखों से ख़ाली कुर्सी की ओर इशारा किया।

नेख़्लूदोव कोर्चागिन को भली भांति जानता था, पहले भी उसे कई बार भोजन करते देख चुका था, लेकिन आज कोर्चागिन का लाल लाल चेहरा, वॉस्कट में लगे नैप्किन के ऊपर मोटी, स्थूल गर्दन, तथा कामुक होंठ देख कर जिनसे वह बार बार चटख़ारे ले रहा था, उसे बड़ी घिन हुई। उसका अंग अंग बता रहा था कि वह एक पेटू, फ़ौजी अफ़सर है। अपने आप ही नेख़्लूदोव को वे बातें याद हो आयीं जिनसे इस आदमी की क्रूरता का पता चलता था। जिन दिनों फ़ौज की कमान इसके हाथ में थी, कोर्चागिन, बिना किसी वजह के, लोगों को हण्टर लगवाता, यहां तक कि फ़ांसी तक चढ़वा देता था। और यह महज़ इसलिए कि अमीर होने के कारण उसे किसी की ख़ुशामद करने की ज़रूरत नहीं थी।

"अभी, हुज़ूर," स्तेपान ने कहा और चांदी के गुलदानों से सजी हुई बर्तनों की अलमारी में से शोरबा डालने की कलछी उठाई। फिर सिर

झटक कर उसने ख़ूबसूरत गलमुच्छों वाले चोबदार को इशारा किया। चोबदार फ़ौरन ख़ाली कुर्सी के सामने कांटे-छुरियां और नैप्किन अपनी अपनी जगह रखने लगा। नैप्किन की बड़ी ख़ूबसूरत ढंग से तहें बनी हुई थीं और उस पर कुल-चिह्न कसीदा किया हुआ था।

नेख़्लूदोव एक एक कर के सबसे हाथ मिलाने लगा। वृद्ध कोर्चागिन और महिलाओं को छोड़ कर, सभी उठ उठ कर उससे हाथ मिलाते। नेख़्लूदोव को इस तरह मेज़ के इर्दगिर्द घूमना और लोगों से हाथ मिलाना, जिनमें से बहुतों के साथ उसकी दुआ-सलाम तक न थी, बड़ा अजीब और अप्रिय लगा। देरी से पहुंचने के लिए उसने माफ़ी मांगी। फिर मिस्सी और येकातेरीना अलेक्सेयेव्ना के बीच वाली कुर्सी पर बैठने ही जा रहा था कि कोर्चागिन ने रोक लिया। कहने लगा कि खाना खाने से पहले अगर एक जाम वोद्का नहीं पीना चाहते तो कम से कम छोटी मेज़ पर से कुछ तो मुंह में डाल लो ताकि भूख चमक उठे। साथ वाली छोटी मेज़ पर प्लेटों में झींगा मछली, केवियर, पनीर और हेरिंग मछली रखी थी। नेख़्लूदोव को ख़्याल भी नहीं था वह इतना भूखा है और डबलरोटी-पनीर का सैंडविच लेकर उसने जो खाना शुरू किया तो फिर रुक ही नहीं पाया और दबादब खाता गया।

"कहो, आज कैसा रहा? ख़ूब तोड़ीं समाज की नींवें?" कोलोसोव ने व्यंग से एक अख़बार का फ़िकरा दोहराते हुए पूछा। एक प्रतिक्रिया-वादी अख़बार में उन्हीं दिनों उस अदालती प्रथा की कटु आलोचना की गई थी जिसमें मुक़द्दमे का फ़ैसला जूरी के सदस्यों पर छोड़ा जाता है। "ज़रूर अपराधियों को बरी कर आये होंगे और बेगुनाहों को सज़ा दी होगी, क्यों?"

"तोड़ीं समाज की नींवें... तोड़ीं समाज की नींवें... हां! हां!" प्रिंस कोर्चागिन ने हंसते हुए कोलोसोव के शब्द दोहराये। उसे अपने इस उदारवादी मित्र और साथी की बुद्धिमत्ता पर बड़ा विश्वास था।

नेख़्लूदोव ने कोई जवाब नहीं दिया, यह जानते हुए भी कि उसका चुप रहना शायद कोलोसोव को बुरा लगे, और गरमागरम शोरबा खाता रहा।

"कुछ खाने तो दीजिये उसे," मिस्सी ने मुस्कराते हुए कहा। "उसे" का प्रयोग कर के उसने मानो याद दिलायी कि देखो नेख़्लूदोव के साथ मेरी कितनी घनिष्ठता है।

कोलोसोव ख़ूब ऊंची ऊंची आवाज़ में बड़े जोश के साथ उस लेख का ब्योरा देने लगा जिसमें जूरी-मुक़द्दमों की प्रथा का विरोध किया गया था। उसे वह लेख बिल्कुल पसन्द नहीं था। मिस्सी का चचेरा भाई मिख़ाईल सेर्गेयेविच उसकी हां में हां मिलाने लगा और ख़ुद भी किसी दूसरे लेख की चर्चा करने लगा जो उसी अख़बार में छपा था।

मिस्सी बड़ी अच्छी लग रही थी। उसने सादे किन्तु बड़े सुरुचिपूर्ण ढंग के कपड़े पहन रखे थे।

"तुम तो बहुत थक गये होगे, और बड़ी भूख लगी होगी," जब नेख़्लूदोव ने मुंह का कौर निगल लिया तो मिस्सी उसे बोली।

"नहीं, बहुत तो नहीं, और तुम? क्या तुम तस्वीरें देखने गयी थीं?" उसने पूछा।

"नहीं, हमने सोचा फिर किसी दिन जायेंगे। हम सालामातोव परिवार को मिलने चले गये और वहां टेनिस खेलते रहे। मिस्टर क्रूक्स सचमुच बहुत अच्छा खेलते हैं।"

नेख़्लूदोव जो यहां आया था तो अपना ध्यान दूसरी ओर करने के लिए। उसे इस घर में आना अच्छा लगता था। यहां के ऐशो-आराम में एक तरह की नफ़ासत थी जो उसके मन को भाती थी। साथ ही यहां पर सब उसे चाहते थे और उसकी हल्की चापलूसी करते रहते थे। पर अजीब बात है, आज उसे इस घर की हर चीज़ घिनौनी लग रही थी, उसी वक़्त से जिस वक़्त उसने इस घर में क़दम रखा था। इस घर का दरबान, चौड़ा ज़ीना, फूल, चोबदार, मेज़ की सजावट, हर चीज़ उसे बुरी लग रही थी। स्वयं मिस्सी में भी आज कोई आकर्षण नहीं था। वह उसे बनावटी लग रही थी। जिस ओछे, उदारवादी ढंग से, आत्मविश्वास के साथ कोलोसोव बातें कर रहा था, वह भी उसे भद्दा लग रहा था। इसी तरह बूढ़े कोर्चागिन का कामुक, आत्मतुष्ट, सांड का सा आकार-प्रकार और येकातेरीना अलेक्सेयेव्ना के फ़्रांसीसी वाक्यांश उसे खल रहे थे। अध्यापिका और विश्वविद्यालय के छात्र के दब्बू चेहरे भी बड़े अप्रिय थे। पर जो चीज़ उसे सब से बुरी लगी वह थी, मिस्सी का उसके लिए "उसे" शब्द का प्रयोग। मुद्दत से नेख़्लूदोव असमंजस में था कि वह मिस्सी को किस दृष्टि से देखे। कभी कभी वह उसे इस तरह देखता मानो चांद की चांदनी में उसे देख रहा हो। उस समय मिस्सी के सौन्दर्य के अतिरिक्त

उसे कुछ भी नज़र नहीं आता था। उस समय वह उसे सुन्दर, ताज़ादम, चतुर प्रतीत होती थी, ऐसी लड़की जिसमें बनावट का नाम-निशान न हो। फिर सहसा उसे ऐसा लगने लगता जैसे वह उसे दिन की रोशनी में, सूर्य के प्रकाश में देखने लगा हो। तब उसे मिस्सी के दोष नज़र आते, और उन्हें न देखने की इच्छा रखते हुए भी वे उघड़ उघड़ कर उसके सामने आते थे। आज वैसा ही दिन था। आज उसे उसके चेहरे की सभी झुर्रियां, उसके वालों में वने कुण्डल, उसकी नुकीली कोहनियां और विशेषकर उसके अंगूठे का नाख़ुन नज़र आ रहे थे। इसका नाख़ुन कितना वड़ा है,—नेख़्लूदोव सोच रहा था,—और इसके पिता के नाख़ुन से कितना मिलता है!

"टेनिस मज़ेदार खेल नहीं है," कोलोसोव कह रहा था। "हम तो जव छोटे थे तो 'लाप्ता' खेला करते थे। उसमें वहुत मज़ा आता था।"

"नहीं, नहीं, आपने टेनिस खेल कर देखा नहीं है। वेहद रोचक खेल है," मिस्सी ने कहा। जिस ढंग से वल देकर उसने "वेहद" शव्द कहा, वह नेख़्लूदोव को वहुत वनावटी लगा।

इसके वाद एक वहस छिड़ गई जिसमें मिख़ाईल सेर्गेयेविच और येकातेरीना अलेक्सेयेव्ना ने भाग लिया। यदि भाग नहीं लिया तो अध्यापिका, विद्यार्थी और वच्चों ने नहीं लिया, जो चुपचाप वैठे थे और वेहद ऊव उठे थे।

"ओह, ये वहसें तो कभी ख़त्म ही नहीं होतीं!" वूढ़े कोर्चागिन ने वॉस्कट में से नैप्किन खींच कर हंसते हुए कहा और वड़ा शोर मचाते हुए कुर्सी को पीछे धकेल कर उठा (चोवदार ने फ़ौरन वढ़ कर कुर्सी संभाल ली) और वहां से चला गया। जव वह उठा तो सभी लोग उठ खड़े हुए और एक दूसरी मेज़ की ओर गये जिस पर गर्म, ख़ुशवूदार पानी के गिलास रखे थे। उन्होंने कुल्ले किये और इसके वाद फिर वहस शुरू कर दी जिसमें किसी को कोई रुचि न थी।

किसी ने कहा कि खेल से मनुष्य के चरित्र का पता चलता है। "ठीक है न?" मिस्सी ने नेख़्लूदोव से उसका समर्थन प्राप्त करने की इच्छा से पूछा। उसने देख लिया था कि नेख़्लूदोव का ध्यान किसी दूसरी तरफ़ है, और साथ ही वह उसे असन्तुष्ट सा लग रहा था। उसे असन्तुष्ट देख कर मिस्सी को डर सा लगने लगता था, और वह इसका कारण जानना चाहती थी।

"मैं कुछ भी नहीं कह सकता। मैंने इस बारे में कभी भी सोचा नहीं है," नेख़्लूदोव ने जवाब दिया।

"तुम maman से तो मिलने चलोगे न?" मिस्सी ने पूछा।

"हां, हां, ज़रूर," उसने कहा और सिगरेट निकालने लगा। उसके लहजे से साफ़ पता चल रहा था कि उसकी maman से मिलने की कोई इच्छा नहीं है।

मिस्सी चुपचाप, प्रश्नसूचक नेत्रों से उसकी ओर देखने लगी, जिससे नेख़्लूदोव को शर्म सी आ गई। "किसी के घर आओ और मुंह लटका कर बैठ जाओ," उसने अपने बारे में मन ही मन सोचा, फिर बातें करने की चेष्टा करते हुए बोला कि यदि प्रिंसेस की इजाज़त हुई तो मैं शौक़ से मिलने चलूंगा।

"Maman तो तुम्हें मिल कर बहुत ख़ुश होंगी। वहां तुम सिगरेट भी पी सकते हो। इवान इवानोविच भी वहीं पर है।"

घर की मालकिन प्रिंसेस सोफ़िया वासील्येव्ना सदा लेटी रहती थीं। वह मेहमानों को भी सदा अपने कमरे में ही मिलती। पिछले आठ साल से यही चल रहा था। गहनों-कपड़ों से लदी मालकिन मेहमानों से मिलती और वह भी ऐसे मेहमानों से जिन्हें वह समीपी मित्र कहती थीं, अर्थात् वे लोग जिनका स्तर मामूली लोगों से बहुत ऊपर था। कमरे की सज-धज भी देखते बनती थी, मख़मली पर्दों, फूलों और तरह तरह के मुलम्मा चढ़े, हाथी दांत, कांसे, और लाख के बने पदार्थों से वह भरा पड़ा था।

इन मित्रों में नेख़्लूदोव भी शामिल था क्योंकि उसे सयाना-समझदार आदमी समझा जाता था, उसकी मां की इस परिवार से घनिष्ठ मैत्री रह चुकी थी और साथ ही इसलिए भी कि उसे मिस्सी के लिए उचित वर समझा जाता था।

सोफ़िया वासील्येव्ना का कमरा दीवानख़ाने और छोटी बैठक से परे था। मिस्सी आगे आगे चल रही थी। दीवानख़ाने में पहुंच कर वह दृढ़ता से खड़ी हो गई और एक मुलम्मा चढ़ी छोटी सी कुर्सी की पीठ पकड़ कर उसकी ओर देखने लगी।

मिस्सी शादी करने के लिए बेचैन थी। चूंकि नेख़्लूदोव उपयुक्त वर था, और वह उसे चाहती भी थी। इसलिए उसने अपने मन में यह बात बिठा ली थी कि वह उसी का हो कर रहेगा (यह नहीं कि वह स्वयं

नेख़्लूदोव की होगी)। स्वयं न जानते हुए भी वह इस लक्ष्य की ओर बड़े हठ से बढ़ रही थी। यह हठ और चालाकी अक्सर ऐसे व्यक्तियों में देखने को मिलती है जिनके मन विकारग्रस्त हों। मिस्सी जानना चाहती थी कि नेख़्लूदोव के क्या इरादे हैं।

"जान पड़ता है कोई बात हुई है," वह बोली, "क्या हुआ है?"

नेख़्लूदोव को अदालत की बैठक याद हो आयी, उसकी भौंहें चढ़ गईं और चेहरा लाल हो गया।

"हां, एक बात हुई है," सच बोलने की इच्छा से उसने जवाब दिया, "एक गंभीर और असाधारण बात हुई है।"

"क्या हुआ है? क्या मुझे नहीं बता सकते?"

"इस समय नहीं, मुझे कहने के लिए कहो ही नहीं। मुझे स्वयं उस पर विचार करने का समय नहीं मिला।" उसका चेहरा और भी लाल हो गया।

"तो तुम मुझे बताओगे नहीं?" मिस्सी के चेहरे पर ऐंठन सी आई और उसने कुर्सी को धकेल कर पीछे हटा दिया।

"नहीं, मैं नहीं बता सकता," उसने जवाब दिया। यह कहते हुए नेख़्लूदोव को महसूस हुआ जैसे वह अपने आपको भी कह रहा है कि आज की घटना का सचमुच उसके लिए बड़ा महत्व था।

"चलो, अन्दर चलें।"

मिस्सी ने सिर झटक दिया, मानो निरर्थक विचारों को मन में से हटाना चाहती हो, और पहले से भी तेज़ क़दम रखती हुई उसके आगे आगे जाने लगी।

नेख़्लूदोव को लगा जैसे मिस्सी ने अपने होंट अस्वाभाविक रूप से भींच लिये हैं, ताकि उसे रुलाई न आ जाय। उसे शर्म महसूस हुई कि मैंने नाहक उसका दिल दुखा दिया है। लेकिन फिर भी वह अड़ा रहा, यह जानते हुए कि ज़रा सी भी कमज़ोरी दिखाने पर वह कहीं का न रहेगा, अर्थात् उसे ज़रूर मिस्सी से शादी करनी पड़ेगी। आज विशेषकर वह इस बात से डर रहा था। चुपचाप, मिस्सी के पीछे पीछे चलता हुआ, वह प्रिंसेस के कमरे में दाख़िल हुआ।

मिस्सी की मां भोजन कर के हटी थी। भोजन में अनगिनत बढ़िया व्यंजन बने थे। वह सदा अलग से भोजन करती ताकि इस नीरस, कवित्वहीन क्रिया को कोई देख न पाये। उसके कोच के पास एक छोटी सी तिपाई पर कॉफ़ी का सामान रखा था, और वह सिगरेट के कश लगा रही थी। प्रिंसेस एक लम्बी, पतली औरत थी, काले बाल, बड़ी बड़ी काली आंखें और लम्बे लम्बे दांत, वह अभी भी अपने को जवान समझती थी।

डाक्टर के साथ उसके गहरे सम्बन्ध की काफ़ी चर्चा थी। कुछ मुद्दत से नेख़्लूदोव भी इसके बारे में सुन रहा था। प्रिंसेस के कोच के पास डाक्टर बैठा था। उसकी चिकनी, चमकती दाढ़ी बीच में से काढ़ी हुई थी। आज डाक्टर को देख कर नेख़्लूदोव को न केवल वे अफ़वाहें याद हो आईं जो उनके बारे में सुनने में आती थीं, बल्कि उसका मन भी घृणा से भर उठा।

सोफ़िया वासील्येव्ना के बिलकुल निकट, तिपाई के साथ एक नीची, नरम नरम आराम-कुर्सी पर कोलोसोव बैठा कॉफ़ी हिला रहा था। तिपाई पर हल्की शराब का एक गिलास रखा था।

नेख़्लूदोव को ले कर मिस्सी अन्दर आई मगर वहां रुकी नहीं।

"जब maman तुमसे ऊब उठें और यहां से तुम्हें चलता करें तो मेरे पास आना," उसने कोलोसोव और नेख़्लूदोव को सम्बोधित करते हुए कहा। वह इस तरह बातें कर रही थी मानो कुछ भी न हुआ हो। इसके बाद वह हंसती-मुस्कराती, गुदगुदे क़ालीन पर बड़ी नज़ाकत से पांव रखती हुई बाहर चली गई।

"आओ मित्र, कहो कैसे हो? आओ बैठो और मेरे साथ बातें करो," प्रिंसेस ने कहा। उसके होंठों पर एकदम स्वाभाविक सी, किन्तु वास्तव में बनावटी, झूठी मुस्कान खेल रही थी। मुस्कराते हुए उसके ख़ूबसूरत, लम्बे लम्बे दांतों की झलक मिलती थी। ये दांत नकली थे, मगर उसके पहले दांतों से बेहद मिलते थे। "कोई कह रहा था कि तुम आज कचहरी से बड़े परेशान लौटे हो। मैं सोचती हूं जो लोग महसूस बहुत करते हों,

उनके लिए कचहरी में बैठना बड़ा कठिन होता होगा," उसने फ़्रांसीसी में यह बात जोड़ी।

"आप ठीक कहती हैं," नेख़्लूदोव ने कहा, "आदमी को अपनी... आदमी महसूस करने लगता है कि उसे किसी की क़िस्मत का फ़ैसला करने का कोई अधिकार नहीं।"

"Comme c'est vrai,"* वह बोली, मानो नेख़्लूदोव के वाक्य में छिपा सत्य उसे बड़ा विलक्षण लगा हो। प्रिंसेस की आदत थी कि वह जिस किसी से भी बातें कर रही होती, तो हल्के हल्के, बड़े सधे ढंग से उसकी ख़ुशामद करती रहती।

"और तुम्हारी तसवीर का क्या बना? उसे देखने के लिए मेरा बेहद जी चाहता है। अगर मैं यों खाट से न जुड़ी होती तो कब का उसे देख आई होती," उसने कहा।

"मैंने तसवीर बनाना बिल्कुल छोड़ दिया है," नेख़्लूदोव ने रूखी आवाज़ में कहा। इस औरत की ख़ुशामद कितनी झूठी है, आज नेख़्लूदोव को साफ़ नज़र आ रहा था, उसी तरह जिस तरह आज उसे उसके चेहरे पर की झुर्रियां साफ़ नज़र आने लगी थीं, हालांकि प्रिंसेस उन्हें छिपाने की बेहद कोशिश कर रही थी। इसलिए मीठे लहजे में उसके साथ बात करना नेख़्लूदोव के लिए असंभव हो रहा था।

"ओह! कितने अफ़सोस की बात है! हय शख़्स तो तसवीर बनाने का हुनर जानता है। स्वयं रेपिन** ने मुझसे कहा था," कोलोसोव की ओर घूम कर देखते हुए प्रिंसेस ने कहा।

"इस औरत को झूठ बोलते हुए शर्म भी नहीं आती!" नेख़्लूदोव ने मन ही मन कहा और उसके माथे पर बल पड़ गये।

जब प्रिंसेस को यक़ीन हो गया कि नेख़्लूदोव का मिज़ाज बिगड़ा हुआ है और उसे हल्की-फुल्की चुस्त गुफ़्तगू में खींचना कठिन हो रहा है तो वह कोलोसोव की ओर घुम गई और किसी नये नाटक के बारे में उसकी राय पूछने लगी, ऐसे लहजे में, मानो उसकी राय जान कर उसके सब संशय दूर हो जायेंगे, और उसका एक एक शब्द अमर होने योग्य होगा।

---

*क्या ठीक बात है। (फ़्रेंच)

**रूसी चित्रकार, (१८४४–१९३०)।

कोलोसोव नाटक की निंदा और साथ ही कला पर अपने विचार प्रकट करने लगा। प्रिंसेस सोफ़िया वासील्येव्ना उसके तर्कों की सच्चाई पर विस्मय प्रकट करतीं, पर साथ ही नाटक के लेखक के पक्ष में कुछ कहने का प्रयत्न करतीं, और फिर तुरंत ही कोलोसोव की बात मान जातीं या कोई बिचली राय पकड़तीं। नेख़्लूदोव बैठा यह सब देख रहा था, किंतु दिख उसे कुछ और ही रहा था, उनकी बातें उसके कानों में पड़ रही थीं किंतु सुनाई उसे कुछ और ही दे रहा था।

कभी सोफ़िया वासील्येव्ना और कभी कोलोसोव की बातें सुनते हुए नेख़्लूदोव साफ़ साफ़ देख रहा था कि उन्हें न तो उस नाटक से कोई दिलचस्पी है न एक दूसरे से। अगर वे बातें कर रहे हैं तो महज़ इसलिए कि खाना खाने के बाद उन्हें गले की मांसपेशियां और ज़बान हिलाने की ज़रूरत है। कोलोसोव कुछ सरूर में भी था क्योंकि उसने वोद्का, हल्की शराब और लिकर शराब—तीनों तरह की शराब पी रखी थी। किसानों की तरह सरूर में नहीं जो केवल कभी कभी पीते हैं, बल्कि उन लोगों की तरह जिन्हें पीने की आदत होती है। वह लड़खड़ा नहीं रहा था, न ही अंट-संट बक रहा था, लेकिन उसकी स्थिति सीधे-सादे आदमी की भी नहीं थी। वह उत्तेजित और आत्मतुष्ट हो रहा था। नेख़्लूदोव ने यह भी देखा कि बातें करते समय प्रिंसेस सोफ़िया वासील्येव्ना की नज़र बार बार खिड़की की ओर जाती थी और वह बेचैन सी दिख रही थी। खिड़की में से सूरज की एक तिरछी किरण धीरे धीरे सरकती हुई उसकी ओर बढ़ रही थी। उसे डर था कि मुंह पर पड़ने से उसकी झुर्रियां नज़र आने लगेंगी।

"कैसी ठीक बात तुमने कही," कोलोसोव की किसी टिप्पणी पर राय देते हुए उसने कहा, और कोच के साथ लगे घण्टी के बटन को दबा दिया।

डाक्टर उठ खड़ा हुआ, और बिना कुछ कहे, घर के आदमी की तरह, बाहर चला गया। सोफ़िया वासील्येव्ना की आंखें उसकी पीठ पर लगी रहीं, और साथ साथ वह बातें भी करती रही।

ख़ूबसूरत चोबदार घण्टी सुन कर कमरे में हाज़िर हुआ।

"मेहरबानी कर के ये पर्दे गिरा दो, फ़िलिप," उसने खिड़की की ओर इशारा करते हुए कहा।

"मैं नहीं मानती, तुम कुछ भी कहो, उसमें एक तरह का रहस्यवाद है। रहस्यवाद के बिना कविता नहीं हो सकती," वह कह रही थी, पर साथ ही उसकी एक काली आंख नौकर की ओर लगी हुई थी जो पर्दा गिरा रहा था।

"कविता के बिना रहस्यवाद—अन्धविश्वास बन कर रह जाता है। और रहस्यवाद के बिना कविता—गद्य बन कर रह जाती है," एक उदास सी मुस्कान के साथ वह कहे जा रही थी और साथ ही चोबदार और पर्दों को भी उसी तरह देखे जा रही थी।

"नहीं, नहीं, वह पर्दा नहीं, फ़िलिप, वह पर्दा जो बड़ी खिड़की पर है," उसने दुःखी लहजे में कहा। प्रत्यक्षतः सोफ़िया वासील्येवना को अपने पर तरस आ रहा था कि उसे ये शब्द कहने की चेष्टा करनी पड़ रही है। इसलिए अपने को ढाढ़स बन्धाने के लिए उसने सिगरेट को होठों से लगाया और एक महक भरा कश लिया। जिन उंगलियों में उसने सिगरेट उठा रखा था, उन पर अनगिनत अंगूठियां झिलमिला रही थीं।

फ़िलिप ने हल्के से सिर झुकाया, मानो क्षमाप्रार्थना कर रहा हो, फिर क़ालीन पर हल्के हल्के क़दम रखते हुए, आज्ञाकारी नौकरों की तरह चुपचाप दूसरी खिड़की के पास गया, और बड़े ध्यान से प्रिंसेस की ओर देखते हुए पर्दा ठीक करने लगा, ताकि एक भी किरण प्रिंसेस के चेहरे पर न पड़ पाये। फ़िलिप बड़ा ख़ूबसूरत जवान था, चौड़ी छाती, मज़बूत पट्ठे, मज़बूत टांगें, और चौड़ी चौड़ी पिंडलियां। पर अब भी प्रिंसेस सन्तुष्ट नहीं थी। फ़िलिप उस पर ज़ुल्म ढा रहा था। उसे फिर रहस्यवाद की चर्चा छोड़ कर, शहीदों की सी आवाज़ में उस मूर्ख नौकर को समझाना पड़ा। क्षण भर के लिए फ़िलिप की आंखें चमक उठीं।

"शैतान की नानी, तुम चाहती क्या हो?—नौकर यही मन में कह रहा होगा," नेख़्लूदोव ने सोचा, जो बैठा यह दृश्य देख रहा था। पर उस सुन्दर और हृष्ट-पुष्ट फ़िलिप ने फ़ौरन अपने चेहरे का भाव बदल लिया ताकि प्रिंसेस को उसकी खीज का पता न चल पाये, और चुपचाप उस थकी-मांदी, दुर्बल, और झूठी औरत के आदेश का पालन करता रहा।

"बेशक, डारविन की बातों में सच्चाई है," अपनी नीची आराम-कुर्सी में सुस्ताते हुए और उनींदी आंखों से सोफ़िया वासील्येव्ना की ओर देखते हुए कोलोसोव ने कहा, "लेकिन किसी हद तक। उसने कई एक बातों को बढ़ा-चढ़ा कर भी कहा है।"

"तुम कहो, क्या तुम्हारा वंशानुगति में विश्वास है?" उसने नेख़्लूदो से पूछा। नेख़्लूदोव की चुप्पी देख कर वह मन ही मन नाराज़ हो रही थी

"वंशानुगति में?" नेख़्लूदोव ने पूछा, "नहीं, मैं नहीं मानता।' इस समय उसके मन में अजीव से चित्र घूम रहे थे, और वह उन्हीं में खोया हुआ था। एक तरफ़ फ़िलिप का चित्र था—सुन्दर और सवल फ़िलिप का, जो एक चित्रकार के मॉडल के रूप में खड़ा था। उसके सामने उसे कोलोसोव का नग्नरूप नज़र आ रहा था—तरबूज़ की तरह बढ़ी हुई तोंद, गंजा सिर और मूसलों की तरह लटकते बाज़ू जिनमें पट्ठों का नाम निशान नहीं। इसी धुन्धलके में सोफ़िया वासील्येव्ना के कंधे भी उसे नज़र आये, जो इस समय मख़मल और रेशम से ढके थे। उनके वास्तविक रूप की कल्पना करते ही वह सिहर उठा और उसे मन में से निकालने की कोशिश करने लगा।

सोफ़िया वासील्येव्ना नेख़्लूदोव का आंखों ही आंखों से जायज़ा ले रही थी।

"तुम्हें मालूम है मिस्सी तुम्हारा इन्तज़ार कर रही है," उसने कहा, "जाओ वह तुम्हें शूमां की एक नयी धुन बजा कर सुनाना चाहती है। वेहद दिलचस्प धुन है।"

"उसका कोई इरादा संगीत सुनाने का नहीं। यह औरत महज़ झूठ वोले जा रही है, न जाने क्यों," नेख़्लूदोव ने मन ही मन कहा, और उठ कर प्रिंसेस के पतले, पारदर्शी, अंगूठियों से सजे हाथ को दवा कर वाहर चला गया।

दीवानख़ाने में उसे येकातेरीना अलेक्सेयेव्ना मिली, और मिलते ही वह रोज़ की तरह फ़्रांसीसी भाषा में बातें करने लगी—

"जान पड़ता है, कि जूरी के काम से तुम्हारा मन उदास हो उठता है।"

"जी हां। क्षमा कीजिये, मैं आज वहुत ख़ुश नहीं हूं, और सोचता हूं कि यहां रह कर और लोगों का भी मन ख़राव करने का मेरा कोई अधिकार नहीं है।"

"तुम ख़ुश क्यों नहीं हो?"

"क्षमा कीजिये, मैं इस बारे में बात करना नहीं चाहता," अपनी टोपी ढूंढ़ते हुए उसने कहा।

"क्या तुम भूल गये हो—तुम ख़ुद ही तो कहा करते थे कि हमें

सदा सच बोलना चाहिए। और किस निर्दयता से तुम हम सब को सच्ची बातें बताया करते थे! अब क्यों नहीं बताना चाहते?" फिर मिस्सी की ओर घूम कर देखते हुए, जो अभी अभी अन्दर आई थी, वह बोली, "क्यों मिस्सी, याद है?"

"वह खेल खेल में था," नेख़्लूदोव ने गंभीरता से कहा," खेल में सच बोला जा सकता है, लेकिन वास्तविक जीवन में, हम लोग—मेरा मतलब है मैं—इतना बुरा हूं कि कम से कम मैं तो सच नहीं बोल सकता।"

"जो कहना चाहते हो वही कहो, अपने लफ़्ज़ बदलते क्यों हो। हमें बताओ हम क्यों इतने बुरे हैं," येकातेरीना अलेक्सेयेव्ना ने शब्दाडम्बर दिखाते हुए इस तरह कहा मानो उसे मालूम ही न हो कि नेख़्लूदोव गंभीर हो उठा है।

"किसी को भी यह कभी स्वीकार नहीं करना चाहिए कि मैं बहुत उदास हूं। इससे बुरी बात कोई नहीं," मिस्सी बोली, "मैं कभी स्वीकार नहीं करती, इसी लिए मैं हर वक़्त ख़ुश रहती हूं। चलो, हमारे साथ चलो, हम तुम्हारा mauvaise humeur* दूर करने की कोशिश करेंगी।"

नेख़्लूदोव को लगा जैसे वह कोई घोड़ा हो जिसे पुचकारा जा रहा हो ताकि वह चुपचाप मुंह में लगाम और पीठ पर साज़ डलवा ले। परन्तु आज उसका मन बिल्कुल ही नहीं चाह रहा था कि कोई उससे मनमानी करवाये। उसने माफ़ी मांगी, कहा कि उसे घर जाना है, और विदा लेने लगा। हाथ मिलाते वक़्त मिस्सी पहले से ज़्यादा देर तक उसका हाथ अपने हाथ में रखे रही।

"यह नहीं भूलना कि जिस बात को तुम ज़रूरी समझते हो वह तुम्हारे मित्रों के लिए भी ज़रूरी है," वह बोली, "कल आओगे न?"

"शायद नहीं," नेख़्लूदोव ने कहा और लज्जित सा अनुभव करने लगा—न मालूम मिस्सी के कारण या अपनी वजह से, और शर्म से लाल होते हुए वहां से चला गया।

"बात क्या है? Comme cela m'intrigue,"** येकातेरीना

---

*बुरा मिज़ाज। (फ़्रेंच)

**कितनी उत्सुक हूं मैं (यह जानने को)। (फ़्रेंच)

अलेक्सेयेव्ना बोली, "मैं ज़रूर इस की तह तक पहुंचूंगी। मैं सोचती हूं कि यह कोई affaire d'amour-propre: il est très susceptible, notre cher* द्मीत्री।"

"Plutôt une affaire d'amour sale"** मिस्सी कहने जा रही थी पर रुक गई। उसके चेहरे पर से सारी रौनक जाती रही। जब नेख़्लूदोव से बातें कर रही थी तो उसका चेहरा खिला हुआ था, मगर अब वह बात न रही थी। यहां तक कि येकातेरीना अलेक्सेयेव्ना के सामने भी वह ऐसे भद्दे शब्द नहीं कह सकती थी। उसने केवल इतना भर कहा—

"हम सबके साथ यही कुछ होता है, कभी ख़ुश तो कभी उदास।"

"क्या यह मुमकिन है कि यह भी मुझे धोखा दे जायेगा?" वह सोच रही थी। "इतना कुछ हो चुकने के बाद बहुत ही बुरी बात होगी।"

यदि मिस्सी से पूछा जाता कि "इतना कुछ हो चुकने" का क्या मतलब है तो शायद वह कुछ भी निश्चित तौर पर न कह पाती। फिर भी वह जानती थी कि नेख़्लूदोव ने न केवल उसकी आशाओं को जगा दिया था बल्कि एक तरह का वचन तक दे दिया था। हां, उन दोनों के बीच स्पष्टतया कुछ भी नहीं कहा गया था—केवल आंखों आंखों में, मुस्कराहटों और इशारों में बातें हुई थीं। फिर भी मिस्सी उसे अपना समझती थी, उसे खो देना उसके लिए असह्य था।

२८

"कितनी शर्म की बात है, कितनी घिनौनी बात है!" चिरपरिचित सड़कों पर घर की ओर जाते हुए नेख़्लूदोव सोच रहा था। मिस्सी से बातें करते हुए उसका मन खिन्न हो उठा था, और अब भी उसका असर बराबर उसके मन पर बना हुआ था। औपचारिक रूप से वह कह सकता था कि उसने कभी भी मिस्सी को कोई वचन नहीं दिया, उसके सामने

---

*ज़रूर कोई आत्मसम्मान की बात है। हमारा प्यारा द्मीत्री है भी बहुत भावुक। (फ़्रेंच)

**बात शायद इश्कबाज़ी की है। (फ़्रेंच)

कोई प्रस्ताव नहीं रखा, इसलिए वह निर्दोष है। परन्तु दिल ही दिल में वह जानता था कि वह अपने को मिस्सी के साथ बांध चुका है, उसकी आशाओं को जगा चुका है। फिर भी आज उसका रोम रोम कह रहा था कि वह किसी सूरत में भी उसके साथ शादी नहीं कर सकता। "कितनी शर्म की बात है! कितनी घिनौनी बात है!" उसने फिर सोचा। वह मिस्सी के साथ अपने संबंध के बारे में ही नहीं बल्कि हर चीज़ के बारे में सोच रहा था। "हर चीज़ शर्मनाक और घिनौनी है!" उसने अपने घर के सायबान में पांव रखते हुए सोचा।

"मैं कुछ नहीं खाऊंगा," नेख़्लूदोव ने अपने नौकर कोर्नेई से कहा, जो उसके पीछे पीछे खाने वाले कमरे में चला आया था जहां भोजन और चाय के लिए मेज़ लगी थी। "तुम जा सकते हो।"

"अच्छा हुज़ूर," उसने कहा, पर वहीं खड़ा रहा और मेज़ पर से चीज़ें उठाने लगा। नेख़्लूदोव के मन में कोर्नेई के प्रति भी बुरी भावना उठी। वह एकान्त चाहता था, लेकिन उसे लग रहा था जैसे हर आदमी जान बूझ कर उसे परेशान करने पर तुला हुआ है। जब कोर्नेई बर्तन उठा कर चला गया, तो नेख़्लूदोव चाय बनाने के लिए समोवार की ओर बढ़ा। पर ऐन उसी वक़्त उसे आग्राफ़ेना पेत्रोव्ना के क़दमों की आवाज़ आई और वह भागा हुआ बैठक में चला गया ताकि उससे सामना न हो, और अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लिया। आज से तीन महीने पहले इसी कमरे में उसकी मां का देहान्त हुआ था। कमरे में दो लैम्प जल रहे थे, दोनों के साथ रिफ़्लैक्टर लगे थे। एक की रोशनी उसके पिता के चित्र पर पड़ रही थी, और दूसरे की रोशनी उसकी मां के चित्र पर। कमरे में दाख़िल होते ही उसे याद हो आया मां की मृत्यु से पहले उसके साथ उसके कैसे संबंध रहे थे। अस्वाभाविक और घिनौने। यह भी कितनी शर्मनाक और घिनौनी बात थी। उसकी बीमारी के अन्तिम दिनों में वह चाहता था कि उसकी मां मर जाय। अपने आपसे तो वह यह कहता था कि मैं मां की ख़ातिर ऐसा सोच रहा हूं, ताकि उसे इस यन्त्रणा से छुटकारा मिले, लेकिन वास्तव में वह अपना छुटकारा चाहता था, ताकि उसे मां का दुःख न देखना पड़े।

वह चाहता था कि उसके मन में मां के अच्छे दिनों की कोई याद जागे। वह तसवीर के पास गया। यह तसवीर एक विख्यात कलाकार ने

पांच हज़ार रूबल ले कर बनाई थी। तसवीर में मां ने काले रंग की मख़मली पोशाक पहन रखी थी, जिसका गला बहुत नीचा था। कलाकार ने ख़ास तौर पर बड़े ध्यान से स्तनों की गोलाई, उनके बीच का हिस्सा, मां की बेहद ख़ूबसूरत ग्रीवा और कन्धों को चित्रित किया था। यह भी शर्म की बात थी। इसे भी देख कर मन में घिन उठती थी। मां को अर्ध-नग्न सुन्दरी के रूप में चित्रित किया गया था। मां को इस रूप में दिखाना बेहद घिनौना काम है। यह और भी घिनौना इसलिए है कि तीन ही महीने पहले यही स्त्री इस कमरे में लेटी थी, जब वह सूख कर मम्मी बन गई थी, और उससे ऐसी दुर्गन्ध उठ रही थी जो न केवल इस कमरे में ही बल्कि सारे घर में फैली हुई थी। उससे नाक में दम हो उठा था और उसे दूर करना असम्भव हो रहा था। नेख़्लूदोव को ऐसा जान पड़ा जैसे अब भी वह दुर्गन्ध आ रही हो। उसे याद आया, मौत से एक ही दिन पहले मां ने अपने कृश हाथ में, जिसकी उंगलियों का रंग पीला पड़ चुका था, उसका सबल, सफ़ेद हाथ ले कर उसकी आंखों में आंखें डाल कर कहा था—"मेरा बुरा नहीं चेतना, द्मीत्री, अगर मुझसे कोई भूल हुई हो।" और उसकी आंखों में आंसू भर आये थे। यन्त्रणा के कारण उसकी आंखें नीली पड़ चुकी थीं।

उसने फिर आंख उठ कर तसवीर की ओर देखा। इस अर्ध-नग्न स्त्री के होंठों पर विजय की मुस्कान खेल रही थी और कन्धे और बाज़ू इतने सुन्दर थे मानो संगमरमर तराश कर बनाये गये हों। नेख़्लूदोव ने मन ही मन कहा—"उफ़! कितनी घिनौनी बात है!" तसवीर में मां की आधी नंगी छातियां देख कर उसे एक दूसरी स्त्री याद आ गई, जिसे कुछ ही दिन पहले इसी तरह अर्ध-नग्न स्थिति में उसने देखा था। वह मिस्सी थी। वह किसी नाच पर जाने के लिए तैयार थी और किसी बहाने उसने नेख़्लूदोव को अपने घर बुला लिया था ताकि वह उसे नाच की पोशाक में देख सके। उसकी सुन्दर बांहों और कन्धों को याद कर के उसका मन घृणा से भर उठा। "और उसका भौंडा बाप, जो इनसान नहीं पशु है, अतीत में न मालूम क्या क्या करता रहा है और कितना ज़ालिम है। और उसकी मां की bel esprit* होने की यह कुख्याती।" यह सब सोच कर

---

*हाज़िरजवाब। (फ़्रेंच)

उसे घृणा हो आयी, साथ ही लज्जा का भी भास हुआ। "कितनी शर्म की बात है, कितनी घिनौनी बात है!"

वह सोचने लगा—"नहीं, नहीं। मुझे आज़ादी चाहिए! इन झूठे सम्बन्धों से आज़ादी, जो इन कोर्चागिनों और मारीया वासील्येव्ना के साथ चल रहे हैं, इस विरासत से आज़ादी। हर चीज़ से आज़ादी! मैं खुली हवा में सांस लेना चाहता हूं! मैं विदेश जाऊंगा, रोम में जाऊंगा, अपनी तसवीर मुकम्मल करूंगा।" उसके मन में संशय उठा, क्या चित्रकार बनने की मुझ में योग्यता भी है? "तसवीर, न सही, मैं केवल आज़ाद हवा में सांस लूंगा। पहले कुस्तुनतुनिया जाऊंगा, उसके बाद रोम जाऊंगा। बस, यह जूरी वाले काम से निबट लूं, और वकील के साथ जो इन्तज़ाम करना है कर लूं। बस यह काम ख़त्म हो जाय, फिर..."

फिर सहसा उसकी आंखों के सामने उस क़ैदी की तसवीर उठी, बेहद सजीव, उसकी काली काली आंखें, जिनमें हल्का सा ऐंच था, किस तरह वह रो पड़ी थी जब क़ैदियों से कहा गया था कि तुम्हें जो कहना है कह लो। नेख़्लूदोव ने तेज़ी से अपना सिगरेट बुझा दिया। उसने सिगरेट के टुकड़े को राख़दानी में दबा कर बुझाया, फिर एक दूसरा सिगरेट सुलगा लिया, और कमरे में इधर-उधर चलने लगा। एक के बाद दूसरी वे घड़ियां उसकी आंखों के सामने साकार हो आयीं जो उसने उस लड़की के साथ बितायी थीं। उसे वह आख़िरी मुलाक़ात याद हो आई, जब उसने एक कामान्ध पशु की तरह व्यवहार किया था, और वासना की भूख शान्त करने के बाद उसे कितनी निराशा हुई थी। गिरजे में प्रार्थना के समय लड़की ने सफ़ेद पोशाक और नीले रंग का कमरबन्द पहन रखा था। "हां, मुझे उससे प्रेम था। उस रात मेरे हृदय में सचमुच उसके प्रति प्रेम था, और मेरा प्रेम पवित्र था, निर्मल था। इससे पहले भी मैं उससे प्रेम करता था। हां, जब मैं पहली बार अपनी फूफियों के घर ठहरा था, और अपना निबन्ध लिख रहा था तब भी मैं उससे प्रेम करता था।" उसे याद हो आया कि उन दिनों वह कैसा व्यक्ति हुआ करता था। उसे ऐसा जान पड़ा जैसे उस ताज़गी, यौवन, और जीवन की पूर्णता का एक हल्का सा झोंका उसे फिर छू गया हो, और उसके दिल में गहरी टीस उठी।

कितना फ़र्क़ पड़ गया था उसमें, तब क्या था वह और आज क्या है। यह उतना ही फ़र्क़ था जितना कि उस कात्यूशा में जो उस रात गिरजे

में गयी थी, और इस वेश्या में जो उस व्यापारी के साथ शराब पीती रही थी और जिसे आज सुबह सजा दी गई थी। तब वह आज़ाद था, निश्शंक था, उसके सामने असंख्य संभावनाएं थीं। आज वह ऐसा महसूस कर रहा था जैसे किसी जाल में फंस गया हो, एक विवेकहीन, खोखले, निरर्थक और तुच्छ जीवन के जाल में। अगर वह चाहता भी तो उसमें से निकलने का कोई रास्ता उसके सामने नहीं था। और निकलने की ख़्वाहिश भी विरले ही उसके मन में कभी उठती थी। उसे याद आया—एक ज़माना था जब उसे अपनी सत्यवादिता पर गर्व हुआ करता था, उसने नियम बना रखा था कि सदैव सच बोला करेगा, और इस नियम का पालन भी किया करता था। और आज वह झूठ के पंक में कितना गहरा धंस गया था। ये झूठ कितने भयानक थे, और इन झूठों को उसके आस-पास के लोग सच समझते थे। इन झूठों में से निकलने का कोई साधन उसे नहीं सूझ रहा था। वह कीच में धंस गया था, और अब इसी में लोटने की उसे आदत हो गई थी।

मारीया वासील्येव्ना और उसके पति के साथ वह किस तरह अपना सम्बन्ध तोड़े जिससे वह फिर आंख उठा कर उसके पति और उनके बच्चों की ओर देख सके? बिना किसी झूठ के किस प्रकार वह मिस्सी से अपना पीछा छुड़ाये? एक तरफ़ वह मानता था कि भूमि का स्वामी बनना अन्यायपूर्ण है, दूसरी ओर वह उस ज़मीन का मालिक बना हुआ है जो उसे अपनी मां से विरासत में मिली है। इस विरोधाभास से कैसे छुटकारा पाये? कात्यूशा के प्रति किये गये पाप का किस भांति प्रायश्चित करे? इस अन्तिम प्रश्न को तो यहीं नहीं छोड़ा जा सकता था। जिस स्त्री से वह प्यार करता था, उसके प्रति इतना भर कर देने से वह सन्तुष्ट नहीं हो सकता था कि एक वकील को पैसे दे दे कि वह उसे साइबेरिया के कड़े श्रम से बचा ले। उसे कड़े श्रम की सज़ा देना ही अन्यायपूर्ण था। क्या पैसे दे कर अपने पाप का प्रायश्चित करे? उस दिन भी उसने उसे पैसे दिये थे और पैसे देते समय क्या यही नहीं समझा था कि वह अपने पाप का प्रायश्चित कर रहा है?

उसे वह क्षण स्पष्टतया याद हो आया जब उसने बरामदे में लड़की को रोक लिया था और उसके एप्रन में पैसे ठूंस कर भाग गया था। "उफ़, पैसा!" उसने कहा, और उसके मन में वैसी ही घृणा और भय उठे

जो उस रोज़ उठे थे। "हे भगवान्! कितना घृणित काम है!" उसके मुंह से उसी भांति ये शब्द आज भी निकले जिस भांति उस दिन निकले थे। "कोई नीच पापी ही ऐसा काम कर सकता था—और मैं ही वह पापी हूं, मैं ही वह नीच हूं!" वह ऊंची ऊंची आवाज़ में बोलने लगा। "परन्तु क्या यह संभव है?" वह चलते चलते रुक गया और निश्चल खड़ा हो गया। "क्या मैं सचमुच नीच हूं?—यदि मैं नहीं हूं तो और कौन है?" उसने स्वयं अपने सवाल का जवाब दिया। "और क्या यही एक पाप मैंने किया है?" वह अपने पर इलज़ाम लगाता गया। "क्या मारीया वासील्येव्ना और उसके पति के प्रति मेरा व्यवहार घृणित और नीच नहीं है? और सम्पत्ति के प्रति? यह जानते हुए कि सम्पत्ति का उपभोग अन्यायपूर्ण है, मैं उसका उपभोग किये जा रहा हूं, यह कह कर कि यह मुझे मेरी मां से प्राप्त हुई है। और मेरा समूचा निष्क्रिय घृणित जीवन? और क्या कात्यूशा के प्रति मेरा व्यवहार सबसे अधिक घृणापूर्ण नहीं था? नीच और पापी! वे लोग भले ही जो चाहें मेरे बारे में सोचें, मुझे बुरा समझें या अच्छा, मैं उनको तो धोखा दे सकता हूं, परन्तु अपने आपको तो धोखा नहीं दे सकता।"

सहसा उसकी समझ में यह बात आ गई कि आज जो घृणाभाव सब लोगों के प्रति—प्रिंस कोर्चागिन, सोफ़िया वासील्येव्ना, मिस्सी और कोर्नेई के प्रति—उसके मन में उठा था, वह वास्तव में स्वयं उसके अपने प्रति था। और अजीब बात है, जहां अपनी नीचता को इस भांति स्वीकार करते हुए उसके मन को क्लेश हुआ, वहां एक तरह की ख़ुशी और सन्तोष का भी उसने अनुभव किया।

एक बार नहीं, कई बार नेख़्लूदोव के जीवन में ऐसे क्षण आये थे जिन्हें वह "आत्मपरिशोध" के क्षण कहा करता था। आत्मपरिशोध से उसका मतलब था वह आन्तरिक स्थिति जब वह अपने मन में से वह सब कूड़ा-करकट साफ़ कर देता था जो बड़ी देर तक मन की निष्क्रियता के कारण वहां इकट्ठा होता रहता था और जिससे मन में अवरोध पैदा हो जाता था।

इस जागरण के बाद नेख़्लूदोव सदैव अपने लिए कुछ नियम निर्धारित करता, निश्चय करता कि उनका पालन करेगा, डायरी लिखने लगता, और नये सिरे से अपना जीवन शुरू करता, यह सोचते हुए कि फिर

उसमें कभी कोई परिवर्तन नहीं आने देगा। अंग्रेज़ी का मुहावरा दुहराते हुए वह इसे turning a new leaf कहता। परन्तु हर बार सांसारिक प्रलोभन उसे अपने जाल में खींच लेते, और बिना जाने ही उसका फिर पतन हो जाता, और वह पहले से भी कहीं गहरे गर्त में जा गिरता।

इस तरह जीवन में कई बार उसने उठने और अपनी आत्मा का कलुष धोने की कोशिश की थी। पहली बार यह तब हुआ था जब वह गर्मियों के मौसम में अपनी फूफियों के घर रहा था। वह जागरण सबसे सशक्त तथा उल्लासपूर्ण रहा था, और उसका असर भी काफ़ी देर तक रहा था। दूसरी बार उसे जागरण का अनुभव तब हुआ था जब वह सरकारी नौकरी छोड़ कर फ़ौज में दाख़िल हुआ था, और अपने जीवन तक की बलि देने के लिए तैयार था। यह लड़ाई के दिनों की बात है। पर यहां अन्त:करण की आवाज़ शीघ्र ही फिर दब गई थी। फिर एक बार वह जागा। यह उस समय हुआ था जब वह फ़ौज की नौकरी छोड़ कर विदेश गया था और कला की सेवा करने लगा था।

उसके बाद आज तक बहुत सा समय बिना आत्मपरिशोध के निकल गया था। इसलिए वह खाई बहुत चौड़ी हो गई थी जो उसके अन्त:करण की मांगों और उसके जीवन की मांगों के बीच पैदा हो गई थी। इतना अधिक भी भेद हो सकता है, यह देख कर उसका दिल कांप उठा।

खाई बहुत चौड़ी थी, उसकी आत्मा पूर्णतया कलुषित हो चुकी थी। उसे कोई उमीद न थी कि यह मल अब कभी धोया जा सकेगा। "पहले भी तो तुमने कई बार अपने को सुधारने की, पूर्ण बनाने की चेष्टा की थी। क्या उन चेष्टाओं का कुछ नतीजा निकला? कुछ भी तो नहीं," उसके अन्दर बैठे शैतान ने फुसफुसा कर कहा। "अब फिर कोशिश करने का क्या लाभ? इस तरह का स्वभाव केवल तुम्हारा ही तो नहीं है। सभी एक जैसे हैं—यही जीवन है," आवाज़ ने फिर फुसफुसा कर कहा। पर उसके अन्दर का उन्मुक्त आध्यात्मिक जीव जाग उठा था। वही एकमात्र जीव सत्य है, सक्षम है, अनन्त है। इसलिए वह उस पर विश्वास किये बिना नहीं रह सकता था। बेशक, उसकी वर्तमान स्थिति और वांछित स्थिति में बहुत गहरा अन्तर था, परन्तु इस नव-जागृत आध्यात्मिक जीव को कुछ भी असंभव नहीं जान पड़ता था।

"किसी भी क़ीमत पर मैं इस झूठ को तो तार-तार कर के छोड़ूंगा जो इस समय मुझे बांधे हुए है। मैं सबको सच सच बता दूंगा, और सत्य पर ही आचरण करूंगा," नेख्लूदोव ने दृढ़ता के साथ, ऊंची आवाज़ में कहा। "मैं मिस्सी को सच सच बता दूंगा, कह दूंगा कि मैं दुराचारी हूं, इसलिए तुम्हारे साथ विवाह नहीं कर सकता, मुझे खेद है कि मैंने बेसूद ही तुम्हें परेशान किया। मैं मारीया वासील्येव्ना को कह दूंगा... मगर उसको कहने के लिए क्या है। मैं उसके पति को बता दूंगा कि मैं नीच आदमी हूं, तुम्हें धोखा देता रहा हूं। अपनी विरासत को भी मैं दे डालूंगा, इस ढंग से कि मैं सत्य को स्वीकार कर सकूं। मैं कात्यूशा को बता दूंगा कि मैं एक नीच, पतित हूं जिसने उसके प्रति घोर पाप किया है। उसकी यन्त्रणा कम करने का भरसक प्रयत्न करूंगा। ठीक है, मैं उसे मिलूंगा और उससे क्षमा-याचना करूंगा। हां, मैं उसी तरह उससे माफ़ी मांगूंगा जिस तरह बच्चे मांगते हैं।" वह रुक गया। "और ज़रूरत हुई तो उसके साथ शादी कर लूंगा।"

वह फिर रुक गया, अपनी छाती पर दोनों हाथ ले जा कर जोड़ लिये जिस तरह वह बचपन में किया करता था, फिर आंखें ऊपर उठा कर किसी को सम्बोधन करते हुए कहने लगा—

"भगवान्, मेरी सहायता करो, मुझे शिक्षा दो, मेरे अन्दर प्रवेश करो और मेरे अन्दर का सारा कलुष दूर कर दो।"

वह प्रार्थना कर रहा था, भगवान् से सहायता की याचना कर रहा था, कि भगवान् उसके अन्दर प्रवेश करें और उसका कलुष धो डालें। पर जिस बात के लिए वह प्रार्थना कर रहा था वह पहले ही हो चुकी थी। उसके अन्दर का भगवान् उसकी चेतना में जाग उठा था। उसे महसूस हो रहा था जैसे वह भगवान् के साथ एकाकार हो रहा है। इसलिए उसे न केवल स्वतन्त्रता, जीवन की पूर्णता तथा आनन्द का अनुभव होने लगा था, बल्कि नेकी की समूची शक्ति का भी। वह महसूस कर रहा था जैसे वह अच्छे से अच्छा काम सम्पन्न कर सकता है, जिसे करने की मनुष्य में योग्यता हो सकती है।

इस तरह अपने आपसे बातें करते हुए उसकी आंखों में आंसू भर आये। ये आंसू अच्छे भी थे और बुरे भी। अच्छे इसलिए कि ये ख़ुशी के आंसू थे। बरसों तक निद्राग्रस्त रहने के बाद आज उसके अन्दर का आध्यात्मिक

जीव जाग उठा था। बुरे इसलिए कि ये आत्मानुकम्पा के आंसू थे, वह अपनी अच्छाई पर गद्गद् हो कर रो रहा था।

नेख़्लूदोव को कमरे में घुटन सी महसूस हुई। उसने आगे बढ़ कर खिड़की खोल दी। खिड़की बाग़ में खुलती थी। बाहर चांदनी रात थी, मौन, स्वच्छ। किसी गाड़ी के पहियों की गड़गड़ाहट सुनाई दी, फिर सब चुप हो गया। खिड़की के बाहर पोपलर का ऊंचा पेड़ खड़ा था जिसकी पल्लवहीन टहनियों की छाया बाग़ की कंकड़ी पर अपना जाल बिछाये हुए थी। बायें हाथ बग्घी-ख़ाना था जिसकी छत चांदनी में चमक रही थी और सफ़ेद लग रही थी। सामने पेड़ों की उलझी हुई शाख़ों में से बाग़ की दीवार का अन्धियारा साया नज़र आ रहा था। नेख़्लूदोव छत की ओर, चांदनी में नहाये बाग़ की ओर, पोपलर की छाया की ओर देखता रहा और ताज़ा, शक्ति-दायिनी हवा में गहरी सांस लेता रहा।

"कितना सुन्दर है, कितना सुन्दर! हे भगवान्, कितना सुन्दर है!" वह कह रहा था। उसका अभिप्राय उस परिवर्तन से था जो उसके अन्दर घट रहा था।

२९

मास्लोवा जेलख़ाने की अपनी कोठरी में शाम के छः बजे जा कर कहीं पहुंची। थक कर चूर हो रही थी, और पांवों में छाले पड़ गये थे। चलने की उसे आदत न थी, और यहां पथरीली सड़क पर दिन में दस मील चलना पड़ा था। इस सज़ा को सुन कर उसका दिल टूट गया था, उसे आशा न थी कि इतनी कड़ी सज़ा मिलेगी। और भूख के कारण वह बेचैन हो रही थी।

मुक़द्दमे के वक़्त जब बीच में पहली छुट्टी हुई थी तो उसके नज़दीक ही कुछ सिपाही बैठ कर डबलरोटी और उबले हुए अण्डे खाने लगे थे। मास्लोवा के मुंह में पानी भर आया था, और उसे मालूम हुआ था कि उसे भूख लग रही है। लेकिन सिपाहियों से मांगना उसने आत्मसम्मान के विरुद्ध समझा था। तीन घण्टे बाद उसकी भूख मर चुकी थी, केवल बदन में वह कमज़ोरी महसूस करने लगी थी। इसी समय उसे वह अप्रत्याशित सज़ा सुनाई गई। पहले तो उसे यक़ीन नहीं हुआ, उसने सोचा कि वह ठीक

तरह से समझ नहीं पायी। वह इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि वह साइबेरिया में एक अपराधी की तरह भेजी जा सकती है। उसने जजों और जूरी के सदस्यों के चेहरों की ओर देखा। सभी चुप थे, चेहरों पर व्यावहारिक तटस्थता छायी थी, मानो जो उन्होंने सुना था वह स्वाभाविक और प्रत्याशित ही था। यह देख कर मास्लोवा क्रुद्ध हो उठी थी, और चिल्ला कर सारी अदालत को कहा था कि मैं बेगुनाह हूं। पर उसने देखा कि उसकी पुकार को भी लोगों ने स्वाभाविक और प्रत्याशित ही समझा है, और उससे कुछ भी नहीं बन पायेगा। यह देख कर निराशा से वह रो पड़ी थी, और महसूस करने लगी थी कि इस निर्दयी, विचित्र अन्याय के सामने उसे सिर झुकाना ही पड़ेगा, इसके सिवा कोई चारा नहीं। उसे सबसे ज़्यादा अचम्भा इस बात का था कि वही जवान आदमी, या कम से कम वे लोग जो अभी बूढ़े नहीं हुए थे जो सदा नज़र भर कर उसकी ओर देखते थे—उन्होंने ही उसे सज़ा दिलवाई थी। उनमें से एक आदमी को, सरकारी वकील को, तो वह बिल्कुल दूसरे रंग से देख चुकी थी। मुक़द्दमा शुरू होने से पहले और बीच बीच में जब छुट्टी होती थी, तो यही लोग दरवाज़ा खुला देख कर अन्दर झांकते थे, यह दिखाते हुए कि वे किसी काम से उधर से हो कर जा रहे हैं, या सीधे अन्दर आ जाते और आंखें भर कर उसकी ओर देखते। फिर इन्हीं लोगों ने ही न जाने क्यों उसे कड़े श्रम की सज़ा दे दी थी, हालांकि वह निर्दोष थी, और उस पर जो अपराध लगाया गया था, वह ग़लत था। पहले तो वह रोती रही, फिर चुप हो गई, और क़ैदियों के कमरे में निरुद्ध सी इस इन्तजार में बैठी रही कि कब उसे वापस ले जाया जायेगा। उस वक़्त उसकी एक ही इच्छा हो रही थी—सिगरेट पीने की। वह इस हालत में बैठी थी जब बोच्कोवा और कार्तीनकिन को भी उसी कमरे में लाया गया। उन्हें भी फ़ैसला सुना दिया गया था। अन्दर आते ही बोच्कोवा ने मास्लोवा को बुरा-भला कहना शुरू कर दिया और उसे "मुजरिम" कह कर पुकारने लगी।

"तुम्हें आख़िर मिला क्या? बड़ा कहती थी, मैंने कोई जुर्म नहीं किया, कोई जुर्म नहीं किया, ले लिया मज़ा, छिछोरी राण्ड! किये का फल मिल गया न? अब जाओ साइबेरिया, वहां ये गहने-कपड़े नहीं चलेंगे।"

लबादे की आस्तीनों में दोनों हाथ खोंसे मास्लोवा चुपचाप गर्दन

झुकाये बैठी थी, और नीचे गंदे फ़र्श की ओर एक टक देखे जा रही थी। उसने केवल इतना भर कहा—

"मैं तुम्हें कुछ नहीं कहती, तुम भी मुझे कुछ मत कहो... मैंने क्या तुम्हें कुछ कहा है?" उसने वार वार दोहरा कर कहा, फिर चुप हो गई। जब बोच्कोवा और कार्तीनकिन को वहां से ले गये और एक कर्मचारी ने उसे तीन रूबल ला कर दिये तो उसके चेहरे पर कुछ रौनक आई।

"तुम्हारा ही नाम मास्लोवा है?" उसने पूछा, "यह लो। एक औरत ने तुम्हारे लिए दिये हैं।" और उसने रूबल आगे बढ़ा दिये।

"औरत ने—किस औरत ने?"

"तुम ले लो—मैं तुम्हारे साथ कलाम नहीं करूंगा।"

ये रूबल चकले की मालकिन कितायेवा ने भेजे थे। कचहरी से जाते वक़्त उसने पेशकार से पूछा था कि क्या वह कुछ रक़म मास्लोवा को दे सकती है। पेशकार ने जवाब दिया कि हां, दे सकती हो। इजाज़त मिलने पर उसने एक एक बटन कर के तीनों बटन खोलकर अपने गोरे-चिट्टे स्थूल हाथ पर से स्वेड का दस्ताना उतारा, फिर कमर में से अपने रेशमी घाघरे की सिलवटों में से एक बढ़िया सा बटुआ निकाला। उसमें कूपनों का एक पूरा पुलिन्दा रखा था जो उसने कुछ लाभांश-पत्रकों में से फाड़ रखे थे। यह नफ़ा उसे अपने चकले के व्यापार में से हुआ था। उसने ढाई रूबल का एक कूपन निकाला, उसके साथ दो बीस-बीस के और एक दस कोपेक का सिक्का जोड़े, और यह सब रक़म पेशकार के सुपुर्द कर दी। पेशकार ने कितायेवा की मौजूदगी में ही एक कर्मचारी को बुलाया और पैसे उसके हाथ में दे दिये।

"किरपा कर के ठीक ठीक दे देना," कितायेवा ने कहा।

इस अविश्वास से कर्मचारी के मन को खेद हुआ। यही कारण था कि उसने मास्लोवा के साथ रुखाई से बात की।

पैसे मिले तो मास्लोवा बड़ी ख़ुश हुई। इससे वह अपनी एकमात्र ललक तो शान्त कर पायेगी।

"अगर कहीं से सिगरेट मिल पायें और मैं एक कश लगा सकूं!" उसने मन ही मन कहा। बरामदे में दूसरे कमरों के भी दरवाज़े खुलते थे, जिनमें से सिगरेटों का धुआं छन छन कर आ रहा था। मास्लोवा सिगरेट पीने के लिए इतनी बेचैन थी कि वह इसी धुएं में लम्बी लम्बी

सांस खींचने लगी। सिगरेटों के लिए उसे वड़ी देर तक इन्तज़ार करना पड़ा। सेक्रेटरी का आर्डर मिलने पर ही क़ैदियों को वहां से ले जाया जा सकता था। और सेक्रेटरी वातें करने में ऐसा मस्त था कि उसे क़ैदी भूल ही गये। वह फिर एक वकील के साथ उस लेख के वारे में वहस करने लगा था, जिसे छापने की सेंसर ने मनाही कर रखी थी।

मुक़द्दमे के वाद, छोटे-वड़े, कितने ही आदमी मास्लोवा को घूरने के लिए कमरे में आये, और एक दूसरे के साथ फुसफुसा कर वातें करते रहे। पर मास्लोवा ने उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

आख़िर पांच वजे जा कर कहीं उसे वहां से निकलने की इजाज़त मिली। पिछले दरवाज़े में से वह निकली। दो संरक्षक, वही नीज्नी नोवगोरोद का आदमी और चुवाश उसके साथ थे। अभी वह कचहरी के अहाते में ही थी कि उसने उन्हें वीस कोपेक दिये और कहा कि उसके लिए दो छोटी डवलरोटियां और एक डिविया सिगरेट ला दें। चुवाश हंस दिया, वोला—"अच्छी वात है, ला देता हूं," और पैसे ले लिये। और सचमुच वह सिगरेट और डवलरोटियां ले भी आया और ईमानदारी से वाक़ी पैसे भी लौटा दिये।

रास्ते में उसे सिगरेट पीने की इजाज़त नहीं दी गई। वह उसी तरह वेचैन जेलख़ाने की ओर चलती गई। जव वह जेल के फाटक पर पहुंची तो उसी वक़्त वाहर कहीं से एक सौ क़ैदी रेलगाड़ी द्वारा वहां लाये गये थे और उन्हें अन्दर ले जाया जा रहा था। गलियारे में उसका उनसे सामना हुआ।

वाहर की ड्योढ़ी क़ैदियों से भर गई थी। सभी तरह के क़ैदी थे, वूढ़े, जवान, दाढ़ी वाले, वेदाढ़ी, रूसी, ग़ैर-रूसी, किसी किसी का सिर भी घुटा हुआ था, सभी के पांवों में वेड़ियां खनखना रही थीं। ड्योढ़ी धूल, शोर और क़ैदियों के पसीने की तीखी गन्ध से भर गई। मास्लोवा के पास से गुज़रते हुए सभी क़ैदी उसकी ओर घूर घूर कर देखते थे। कुछेक तो जान वूझ कर उसे ठोकर लगा रहे थे।

"कैसी लौंडिया है—रसभरी," एक वोला।

"सलाम है मेम साहिव," एक दूसरे ने आंख मारते हुए कहा। एक सांवला सा आदमी वेड़ियां खनखनाता आया। उसकी वड़ी वड़ी मूंछें थीं, लेकिन वाक़ी चेहरा, गर्दन तक, सफ़ाचट था। पास आते ही वह रुक गया, और उछल कर मास्लोवा को वाहों में भर लिया।

"तुम अपने यार को भूल ही गई हो! वाह वाह, बड़ा ग़रूर करती हो।" अपने दांत दिखाते हुए वह चिल्लाया। मास्लोवा ने उसे धकेल कर हटा दिया तो उसकी आंखें चमकने लगीं।

"ए सूअर! क्या कर रहे हो?" छोटे इन्स्पेक्टर ने पीछे से कहा।

क़ैदी डर कर पीछे हट गया। छोटे अफ़सर ने मास्लोवा की ओर घूम कर पूछा—

"तुम यहां क्यों?"

मास्लोवा कहना चाहती थी कि उसे कचहरी से यहां वापस लाया गया है, लेकिन वह इतनी थकी हुई थी कि उसने जवाब देना नहीं चाहा।

"इसे कचहरी से लाया गया है, साहब!" एक सिपाही ने सैल्यूट करते हुए आगे बढ़ कर कहा।

"तो इसे बड़े वार्डर के हवाले करो। मैं यहां यह बकवास नहीं चलने दूंगा।"

"जी, जनाब!"

"सोकोलोव, इसे ले जाओ यहां से," छोटे इन्स्पेक्टर ने चिल्ला कर कहा।

बड़ा जमादार आया। उसने गुस्से से मास्लोवा का कन्धा पकड़ कर धक्का दिया और सिर झटक कर इशारा किया कि मेरे पीछे पीछे चलती आओ, और उसे एक दूसरे वार्ड के बरामदे में ले गया जहां क़ैदी औरतों को रखा जाता था। यहां पर उसकी तलाशी ली गयी। जब कुछ भी बरामद न हुआ (उसने सिगरेटों की डिबिया डबलरोटी के अन्दर छिपा ली थी) तो उसे उसी कोठरी में ले जाया गया जहां से निकल कर वह सुबह कचहरी में गयी थी।

३०

एक लम्बोतरी सी कोठरी में मास्लोवा को रखा गया था, जिसकी लम्बाई २१ फ़ुट और चौड़ाई १६ फ़ुट थी। उसमें दो खिड़कियां और एक टूटा-फूटा अलावघर था। इसके दो-तिहाई हिस्से में क़ैदियों के लिए एक के ऊपर दूसरा तख़्ते लगे हुए थे। उनकी लकड़ी जगह जगह से ऐंठी और सिकुड़ी

हुई थी। दरवाज़े के ऐन सामने देवप्रतिमा टंगी थी जिसके पास एक मोमबत्ती खोंसी हुई थी, और सदा बहार फूलों का एक गुच्छा लटक रहा था। बायीं ओर दरवाज़े के पीछे जहां फ़र्श काला पड़ गया था, एक टब रखा था जिसमें से बदबू आ रही थी। क़ैदी औरतों की जांच हो चुकी थी और उन्हें रात के लिए कोठरी में बन्द कर दिया गया था।

इस कोठरी में पन्द्रह लोगों को रखा गया था जिनमें से तीन बच्चे थे।

अभी रोशनी काफ़ी थी। केवल दो औरतें लेटी हुई थीं। उनमें से एक तपेदिक की मारी थी, जिसे चोरी के इलज़ाम में क़ैद किया गया था। दूसरी मूढ़ थी जिसे पासपोर्ट न होने के कारण पकड़ लिया गया था, और जो अधिकांश समय सोती रहती थी। तपेदिक वाली औरत सो नहीं रही थी, केवल लेटी थी और आंखें फाड़ फाड़ कर देख रही थी। उसने सिर के नीचे अपना क़ैदियों का लबादा लपेट कर रखा हुआ था, और गले में उठती बलग़म को दबाने की चेष्टा कर रही थी ताकि खांसी न होने लगे।

अधिकांश स्त्रियों ने केवल भूरे रंग की गाढ़े की शमीज़ें पहन रखी थीं। उनमें से कुछेक खिड़की के पास खड़ी बाहर मैदान में झांक रही थीं जहां क़ैदी जा रहे थे। तीन स्त्रियां बैठी सिलाई कर रही थीं। इन तीन स्त्रियों में कोराब्ल्योवा भी थी। यह वही औरत थी जिसने सुबह मास्लोवा को विदा किया था। क़द की ऊंची-लम्बी, और मज़बूत औरत थी। चेहरा कठोर, भवें चढ़ी हुई, गालों का मांस पिलपिला हो रहा था जिससे ठोड़ी दोहरी हो गयी थी। पीठ पर सुनहरी रंग के बालों की हल्की सी चोटी लटक रही थी, कनपटियों पर के बाल सफ़ेद हो चले थे, और गाल पर एक मस्सा था जिसमें बाल उग रहे थे। इसे साइबेरिया में कड़ी मशक़्क़त करने की सज़ा दी गयी थी। इसने एक कुल्हाड़ी के साथ अपने पति की हत्या कर डाली थी जो इसकी बेटी के साथ अनुचित सम्बन्ध रखना चाहता था। कोठरी में सब औरतों की यह मुखिया थी, और लुक-छिप कर किसी तरह इन्हें शराब बेचा करती थी। वह चश्मा पहने कुछ सी रही थी। अपने बड़े बड़े काम के आदी हाथों में उसने सुई पकड़ रखी थी – तीन उंगलियों से और नोक अपनी तरफ़ किये, जैसे कि किसान औरतें पकड़ती हैं। उसकी बग़ल में एक दूसरी स्त्री बैठी थी जो मोटी किरमिच का एक थैला सी रही थी। यह औरत रेलवे में चौकीदारी का काम करती थी। इसे तीन महीने क़ैद की सज़ा दी गई थी, क्योंकि उसने वक़्त पर गाड़ी को

झण्डी नहीं दिखायी थी जिससे हादसा हो गया था। दयालु-स्वभाव और बातें करने की शौकीन थी, क़द छोटा सा, नाक चपटी और आंखें काली काली थीं। सिलाई करने वाली औरतों में तीसरी औरत का नाम फ़ेदोस्या था। यह बेहद सुन्दर युवती थी, गोरा रंग, गुलाबी गाल, बच्चों सी चमकती आंखें, सुनहरी बालों की लम्बी लम्बी चोटियां जो इसने सिर पर लपेट सी रखी थीं। इसे इसलिए क़ैद कर रखा था कि इसने अपनी शादी के फ़ौरन् ही बाद अपने घर वाले को ज़हर देने की कोशिश की थी (इसकी शादी, इससे बिना पूछे १६ साल की उम्र में ही कर दी गयी थी)। आठ महीने तक यह ज़मानत पर रिहा रही। इस दौरान इसकी अपने पति के साथ सुलह हो गई। सुलह ही नहीं हो गई, यह उसे प्यार करने लगी। और जब मुक़द्दमे का वक़्त आया तो दोनों जी-जान से एक दूसरे को चाहते थे। इसके पति, ससुर और सास ने—ख़ास तौर पर सास ने जो इसे बेहद प्यार करने लगी थी—इसे छुड़ाने की भरसक कोशिश की, लेकिन फिर भी इसे साइबेरिया में कड़े परिश्रम की सज़ा दे दी गयी। फ़ेदोस्या बड़ी दयालु-स्वभाव, और हंसमुख लड़की थी, सारा वक़्त हंसती-खेलती रहती। उसका तख़्ता मास्लोवा के बिल्कुल साथ था। उसे मास्लोवा से बेहद प्यार हो गया था, यहां तक कि उसकी देखभाल और ख़िदमत करना वह अपना फ़र्ज़ समझती थी। तख़्तों पर दो और स्त्रियां बैठी थीं जो कोई काम नहीं कर रही थीं। उनमें से एक की उम्र लगभग ४० वर्ष की होगी, दुबला-पतला, पीला सा चेहरा, जो शायद किसी ज़माने में बड़ा ख़ूबसूरत रही होगी। उसकी गोद में बच्चा था जो उसके गोरे चिचुड़े स्तन को मुंह लगाये दूध पी रहा था। इसके गांव में पुलिस अफ़सर एक रंगरूट को ले जा रहा था (यह लड़का इस औरत का भतीजा था)। गांव वालों ने आपत्ति उठाई, क्योंकि उनकी राय में वह उसे ग़ैरक़ानूनी तौर पर ले जाया जा रहा था और पुलिस अफ़सर का रास्ता रोक कर लड़के को छुड़ा लिया। इस औरत ने सबसे पहले आगे बढ़ कर उस घोड़े की लगाम पकड़ी थी जिस पर बिठा कर उसे ले जाया जा रहा था। यही इसका जुर्म था। दूसरी स्त्री जो बेकार बैठी थी, कोई बुढ़िया थी जिसके बाल पके हुए थे और पीठ झुक गई थी। उसकी आंखों से भी दयालुता टपकती थी। उसका तख़्ता अलावघर के पीछे था। इस वक़्त वह चार साल के फूले हुए पेट वाले लड़के को पकड़ने की कोशिश कर रही थी जो हंसता हुआ

उसने अपना चश्मा उतारा और अपना काम उठा कर पास ही तख़्ते पर रख दिया।

"और यहां मैं और बुढ़िया चाची बैठी कह रही थीं, 'यह भी हो सकता है कि मास्लोवा को फ़ौरन् ही छोड़ दें', सुनती हैं ऐसे भी होता है। किसी किसी को तो ढेरों रुपया भी मिलता है। लेकिन सब क़िस्मत की बात है," चौकीदारिन कहने लगी। वह जब बातें करती तो ऐसा जान पड़ता जैसे गा रही है। "और हुआ बिल्कुल ही उलट। हमारा अनुमान बिल्कुल ग़लत निकला। भगवान् को यह मंजूर नहीं था, प्यारी।" वह अपनी मधुर आवाज़ में कहती गई।

"क्या यह कभी मुमकिन हो सकता है? क्या तुम्हें सज़ा दी गई है?" फ़ेदोस्या ने सद्भावना भरी, व्यग्र आवाज़ में पूछा और अपनी हल्की नीली, बच्चों की सी आंखों से उसकी ओर देखने लगी। उसका चमकता चेहरा मुर्झा गया मानो उसे रुलाई आ रही हो।

मास्लोवा ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह सीधी अपने तख़्ते की ओर गई, जो दिवार के साथ दूसरे नम्बर पर कोराब्ल्योवा के पास था, और जा कर बैठ गई।

"कुछ खाया भी है या नहीं?" फ़ेदोस्या ने पूछा और उठ कर मास्लोवा के पास चली आई।

मास्लोवा ने जवाब नहीं दिया और डबलरोटी के दोनों रोल तख़्ते पर रख दिया। फिर अपना धूल भरा लबादा उतारा और अपने घुंघराले बालों पर से रूमाल हटाया।

बुढ़िया औरत जो बच्चे के साथ खेल रही थी, चली आई और मास्लोवा के सामने आ कर खड़ी हो गई।

"च...च...च!" उसने बड़ी दया से सिर हिलाते हुए कहा।

लड़का भी उसके साथ चला आया। डबलरोटी को देख कर उसके होंठ खुल गये और आंखें फाड़ फाड़ कर उसकी ओर देखने लगा। आज दिन भर जो उसके साथ बीती थी, उसके बाद इन संवेदनापूर्ण चेहरों को देख कर मास्लोवा के होंठ कांपने लगे और उसे रोना आ गया। लेकिन उसने अपने को संभाल लिया। पर यह उस वक़्त तक रहा जब तक कि बुढ़िया और लड़का वहां पर नहीं पहुंचे। जब उसने बुढ़िया की दयार्द्र, सहानुभूतिपूर्ण आवाज़ सुनी और बच्चे को डबलरोटी पर से हट कर अपनी

ओर देखते पाया तो वह अपने को न रोक सकी। उसका सारा चेहरा कांपने लगा और वह फफक फफक कर रोने लगी।

"मैंने कहा नहीं था कि कोई अच्छा सा वकील कर ले," कोराब्ल्योवा ने कहा। "अब क्या मिला? देश-निकाला?"

मास्लोवा कोई जवाब नहीं दे पायी। उसने डबलरोटी में से सिगरेटों की डिबिया निकाली और कोराब्ल्योवा के सामने बढ़ा दी। डिबिया पर एक गुलाबी गालों वाली औरत की तसवीर थी, जिसके बाल ऊपर को उठे हुए थे और बहुत नीचे गले वाली क़मीज़ पहने थी। कोराब्ल्योवा ने डिबिया को देख कर सिर हिला दिया। लेकिन मुख्यतया इसलिए कि उसे मास्लोवा का इन चीज़ों पर पैसे ज़ाया करना अच्छा नहीं लगा। फिर भी उसने एक सिगरेट निकाली, लैम्प के पास जा कर उसे सुलगाया, और एक कश ले कर मास्लोवा के हाथ में दे दिया। मास्लोवा अब भी रो रही थी। लेकिन वह बड़ी अधीरता से तम्बाकू के कश खींचने लगी।

"कड़ी मशक़्क़त की सज़ा मिली है," मास्लोवा ने धुआं छोड़ते हुए, सिसकी भर कर कहा।

"इन जानलेवाओं को भगवान् का भी डर नहीं," कोराब्ल्योवा बुदबुदायी। "बिना किसी दोष के लड़की को सज़ा दे दी।"

खिड़की की ओर से ऊंची ऊंची हंसने की कर्कश आवाज़ आई। औरतें हंस रही थीं। छोटी लड़की भी हंस रही थी और उसकी पतली बचपना आवाज़ औरतों की तीखी फटी आवाज़ में मिल रही थी। बाहर आंगन में किसी क़ैदी ने कोई ऐसी हरकत की थी जिस पर ये दर्शक औरतें हंसने लगी थीं।

"अरे, वह देखो उस सिर-मुंडे शिकारी कुत्ते को, क्या कर रहा है," लाल बालों वाली मोटी औरत ने कहा, और हंसी से उसका सारा शरीर हिलने लगा। फिर सीखचों के पास आगे की ओर झुक कर उसने अश्लील ज़बान में फ़िज़ूल चिल्लाना शुरू कर दिया।

"मोटी खूसट चिल्लाये जा रही है। क्या हुआ है जो इतना हंस रही है?" कोराब्ल्योवा ने कहा और फिर मास्लोवा की ओर घूम कर बोली, "कितने साल?"

"चार साल," मास्लोवा ने जवाब दिया। उसकी आंखों से झर झर आंसू बह रहे थे, यहां तक कि एक आंसू सिगरेट पर भी जा पड़ा। मास्लोवा

ने ग़ुस्से से सिगरेट मरोड़ कर फेंक दी और एक दूसरी सिगरेट निकाली।

चौकीदारिन सिगरेट पीती तो नहीं थी लेकिन उसने फिर भी सिगरेट उठा ली और उसे सीधा करने लगी। और उसी तरह सारा वक़्त बातें करती रही—

"हां, तो यह हुआ प्यारी, आख़िर तो यह सच है कि सच को तो इन्होंने भाड़ में झोंक दिया है। अब जो मन में आये करते हैं। यहां हम बैठी अनुमान लगा रही थीं कि तुम्हें छोड़ दिया जायेगा। कोराब्ल्योवा कहती थी—'उसे ज़रूर छोड़ देंगे'। मैं कहती थी—'नहीं, नहीं मेरी प्यारी, मेरा दिल कहता है कि उसे कभी नहीं छोड़ेंगे।' और वही कुछ हुआ भी," वह बोलती जा रही थी। प्रत्यक्षतः उसे अपनी आवाज़ सुन सुन कर मज़ा आ रहा था।

एक एक कर के वे औरतें भी मास्लोवा के पास चली आयीं जो खिड़की के पास खड़ी थीं। बाहर आंगन में से क़ैदी चले गये थे जिनसे उनका दिलबहलाव हो रहा था। सबसे पहले मोटी मोटी आंखों वाली औरत आई जो नाजायज़ शराब बेचने के कारण क़ैद काट रही थी। उसके साथ उसकी नन्हीं बेटी भी आई।

"इतनी सख़्त सज़ा क्यों मिली?" मास्लोवा के पास बैठते हुए और ख़ूब तेज़ तेज़ बुनते हुए उसने कहा।

"इतनी सख़्त क्यों? क्योंकि पैसे नहीं थे। इसलिए। अगर पैसे होते, और एक अच्छा वकील कर लिया जाता जो उनकी चालाकियां पकड़ सकता, तो यह छूट जाती। यक़ीनी बात है," कोराब्ल्योवा ने कहा। "वहां एक वकील है, क्या नाम है उसका—वह जिसके मुंह पर बाल ही बाल हैं और लम्बी सी नाक है—वह ऐसा मर्म जानता है कि फांसी के तख़्ते पर से उतरवा लेता है आदमी को। मैं बताऊं तुम्हें। अगर उसे कर लिया होता तो कोई बात ही नहीं थी।"

"जी, वह तुम्हारे हाथ ज़रूर आता," छबीली ने उनके पास बैठते और अपनी बत्तीसी निपोरते हुए कहा, "वह एक हज़ार से नीचे तो बात ही नहीं करता।"

"लगता है जैसे तुम पर ग्रह है," उस बुढ़िया ने कहा जिसे आग लगाने के जुर्म में क़ैद किया गया था। "ज़रा सोचो तो, एक तो लड़के की घर वाली को फंसा लिया, दूसरे उसे क़ैद कर दिया। और मुझे भी,

ारा वुढ़ापा नहीं देखा। कीड़े खा जायेंगे हमें यहां पर," अपनी कहान उसने फिर शुरू कर दी जो सैंकड़ों वार पहले सुना चुकी थी। "या जे भुगतो या मांग कर खाओ। भिखारी और क़ैदी बनते देर नहीं लगती।

"लगता है सभी एक जैसे हैं," नाजायज़ शराव वेचने वाली ने कहा और अपनी वेंट के सिर की ओर देख कर अपनी वुनाई तख़्ते पर रख दी और लड़की को घुटनों के वीच खड़ा कर के उसके वालों में से जूए निकालनी शुरू कर दीं। "पूछते हैं–'तुम शराव क्यों वेचती हो?' वाह!' वह वोलती गई, "क्यों, वच्चों का पेट कैसे पालें?"

मास्लोवा ने ये शब्द सुने तो उसका शराव पीने को जी कर आया।

"थोड़ी सी शराव मिल जाय?" अपनी आस्तीन से आंखें पोंछते हुए उसने कोराव्ल्योवा से पूछा। अव उसकी सिसकियां कुछ थमने लगी थीं।

"अच्छी वात है, हो जाय," कोराव्ल्योवा वोली।

३२

मास्लोवा ने पैसों का कूपन निकाला और कोराव्ल्योवा के हाथ में दे दिया। इसे भी उसने डवलरोटी में छिपा रखा था। कोराव्ल्योवा पढ़ना नहीं जानती थी, फिर भी उसने कूपन ले लिया। उसे छवीली पर यक़ीन था, और छवीली ने वताया था कि कूपन दो रूवल और पचास कोपेक का है। कोराव्ल्योवा तख़्तों पर पांव रखती हुई रोशनदान तक जा पहुंची जहां उसने शराव की एक छोटी सी शीशी छिपा रखी थी। उसे शराव निकालते देख कर वे औरतें वहां से सरक गईं जिनके तख़्ते वहां से दूर थे। इस वीच मास्लोवा ने अपने लवादे और रूमाल को झाड़ कर साफ़ किया और तख़्ते पर चढ़ कर वैठ गई और डवलरोटी खाने लगी।

"मैंने तुम्हारे लिए चाय रख दी थी," फ़ेदोस्या वोली, और एक तख़्ते पर से टीन की चायदानी और एक मग उठा लाई जिन्हें उसने एक चिथड़े में लपेट कर रखा हुआ था, "पर चाय ज़रूर ठण्डी हो गई होगी।"

चाय ठण्डी थी, और उसमें चाय की क़म और टीन की अधिक गन्ध आ रही थी। फिर भी मास्लोवा ने मग भर लिया और डवलरोटी के साथ साथ उसे पीने लगी।"

"फ़िनाश्का, यह लो," उसने डवलरोटी का एक टुकड़ा तोड़ते हुए छोटे लड़के को दिया जो खड़ा उसके चलते मुंह को देखे जा रहा था।

इस बीच कोराव्ल्योवा ने शराब की शीशी और एक मग मास्लोवा के आगे बढ़ा दिया। मास्लोवा ने थोड़ी थोड़ी शराब कोराव्ल्योवा और छबीली को भी पीने के लिए दी। इन क़ैदियों को इस कमरे में बहुत ऊंचा समझा जाता था, क्योंकि इनके पास कुछ पैसे थे। इसलिए भी कि इनके पास जो कुछ होता ये दूसरों के साथ बांट कर खाते थे।

कुछ ही मिनटों में मास्लोवा सरूर में आ गई और चहक चहक कर अदालत की बातें सुनाने लगी। सरकारी वकील की नकल उतारती। जिस बात ने उसे सबसे अधिक प्रभावित किया, उसके बारे में बोली। सभी आदमी उसके पीछे पीछे जाते रहे थे, वह सुनाती रही, सभी आदमी उसे घूर घूर कर देखते थे, और जितनी देर वह क़ैदियों के कमरे में रही, बार बार अन्दर आते रहे।

"एक सिपाही मुझे कहने लगा— 'ये सब तुम्हें देखने आते हैं।' एक आदमी अन्दर आता और पूछता—'यहां मेरा काग़ज़ पड़ा था।' या कुछ और। मगर मैं जानती थी, वह काग़ज़ ढूंढ़ने नहीं आया था, वह तो मुझे घूरने के लिए आया है," उसने सिर हिलाते हुए कहा, "पूरे कलाकार थे।"

"ठीक कहती हो," चौकीदारिन की सुरीली आवाज़ आई, "वे तो इस तरह मण्डराते हैं जैसे गुड़ पर मक्खियां, और कुछ मिले या न मिले, उन जैसे लोग रोटी छोड़ देंगे पर औरत को नहीं छोड़ेंगे।"

"यहां पर भी वही कुछ हुआ," मास्लोवा ने उसकी बात काटते हुए कहा, "मैं अभी कचहरी से वापस पहुंची ही थी कि रेल पर से क़ैदियों का एक गिरोह यहां पहुंचा। मुझे छोड़ते ही न थे, मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि उनसे कैसे पीछा छुड़ाऊं। शुक्र है, छोटे इन्स्पेक्टर ने उन्हें वहां से भगा दिया। एक तो मेरे पीछे ही पड़ गया था। मैं तो मुश्किल से उसके हाथों से बच पायी।'

"कैसा था वह?" छबीली ने पूछा।

"सांवले रंग का था, बड़ी बड़ी मूंछें थीं।"

"वही होगा।"

"वही कौन?"

"श्चेग्लोव, वही जो अभी अभी आंगन में से गया है।"

"श्चेग्लोव कौन है?"

"वाह, तुम श्चेग्लोव को भी नहीं जानती? दो वार वह साइवेरिया से भाग चुका है। अब उन्होंने फिर उसे पकड़ लिया है, मगर यह फिर भाग जायेगा। जेल के वार्डर ख़ुद उससे डरते हैं," छवीली वोली। उसे जेल की सव वातों की जानकारी रहती थी। किसी न किसी तरह यह क़ैदियों को पुर्ज़े भेजती रहती थी। "वह ज़रूर भाग जायेगा, मानी हुई बात है।"

"अगर वह भाग जायेगा तो हमें कौन सा अपने साथ ले जायेगा," कोराव्ल्योवा ने कहा और मास्लोवा की ओर घूम गई, "तुम वताओ कि अपील करने के वारे में वकील क्या कहता है? दरख़ास्त देने का यही वक़्त है।"

मास्लोवा ने कहा कि मुझे इस वारे में कुछ भी मालूम नहीं।

उसी वक़्त लाल वालों वाली औरत इन "वड़े लोगों" के पास चली आई। अपने दोनों चित्तीदार हाथ उसने वालों में खूंस रखे थे और नाख़ूनों से सिर खुजला रही थी।

"मैं तुम्हें सव वताये देती हूं, येकातेरीना," वह कहने लगी, "सवसे पहली बात तो यह कि तुम्हें लिख कर देना होगा कि यह सज़ा नाजायज़ है, फिर इसके वाद सरकारी वकील को नोटिस देना होगा।"

"तुम्हारा यहां क्या काम है?" कोराव्ल्योवा ने ग़ुस्से से कहा। "शराव की गन्ध तुम तक पहुंच गई है न! तुम्हारी बक वक की यहां कोई जरूरत नहीं। अपनी नसीहत अपने पास रखो।"

"तुम्हारे साथ कौन वात कर रहा है? तुम अपनी टांग मत अड़ाओ।"

"शराव लेने आई हो और क्या। इसी लिए नाक रगड़ती यहां आ गई हो।"

"इसे थोड़ी दे देंगे," मास्लोवा ने कहा, जो हमेशा अपनी चीज़ें दूसरों के साथ वांटने के लिए तैयार रहती थी।

"इसे मैं मज़ा चखाऊंगी..."

"आओ, चखाओ मज़ा," लाल वालों वाली ने कोराव्ल्योवा की ओर बढ़ते हुए कहा, "तुम समझती हो मैं तुमसे डरती हूं?"

"डायन!"

"डायन वह जो दूसरों को कहे।"

"रण्डी।"

"रण्डी मैं? मैं रण्डी हूं। तू कौन है? हत्यारी, क़ैदी!" लाल वालों वाली ने चीख़ कर कहा।

"चली जाओ यहां से, मैं तुम्हें कह रही हूं," कोराव्ल्योवा ने दृढ़ता से कहा, मगर लाल वालों वाली पास आती गई, और कोराव्ल्योवा ने उसे धक्का दिया। जान पड़ता है लाल वालों वाली इसी इन्तज़ार में थी। उसने झट हाथ बढ़ा कर कोराव्ल्योवा के वाल पकड़ लिये और दूसरे हाथ से उसे मुंह पर घूंसा जमाने की कोशिश की। कोराव्ल्योवा ने उसका यह हाथ पकड़ लिया। मास्लोवा और छवीली ने लाल वालों वाली की वांहें पकड़ लीं और उसे पीछे खींचने की कोशिश करने लगीं। क्षण भर के लिए उसने बुढ़िया के वाल छोड़ दिये, पर दूसरे ही क्षण उसने फिर उन्हें पकड़ कर अपनी कलाई पर लपेट लिया। कोराव्ल्योवा का सिर एक ओर को झुका हुआ था। एक हाथ से वह लाल वालों वाली को घूंसे लगा रही थी और कोशिश कर रही थी कि किसी तरह उसके हाथ को दांतों से काट सके। वाक़ी औरतें चीख़ती चिल्लातीं उन्हें छुड़ाने की कोशिश कर रही थीं। यहां तक कि तपेदिक की मरीज़ भी उठ आई थी और खड़ी खांस रही थी और तमाशा देखे जा रही थी। वच्चे रोने लगे थे और एक दूसरे के साथ सिमट कर खड़े हो गये थे। शोर सुन कर जमादारिन और जमादार वहां आ गये। जो औरतें लड़ रही थीं वे अलग हो गईं और शिकायतें करने लगीं। कोराव्ल्योवा अपनी सफ़ेद चुटिया को खोल कर उसमें से टूटे वाल निकाल रही थी। और लाल वालों वाली औरत की शमीज़ फट गई थी जिससे उसकी पीली पीली छाती नज़र आने लगी थी, और वह दोनों हाथों से शमीज़ को पकड़े हुए थी।

"मैं जानती हूं यह सब शराब की करतूत है। ज़रा ठहरो, मैं कल ही इन्स्पेक्टर को वताऊंगी और वह तुम्हें मज़ा चखायेगा। मुझे साफ़ उसकी गन्ध आ रही है। हटा लो सब कुछ वरना बहुत बुरा होगा," जमादारिन ने कहा, "हमारे पास तुम्हारे झगड़े निवटाने के लिए वक़्त नहीं है। अब चुपचाप अपनी अपनी जगह पर चली जाओ। ख़बरदार जो शोर मचाया तो।"

मगर शोर फिर भी बड़ी देर तक मचता रहा। बड़ी देर तक औरतें

एक दूसरी से झगड़ती रहीं और बोलती रहीं कि किसका कसूर है। आख़िर जमादारिन और जमादार दोनों कोठरी में से चले गये, औरतें थोड़ी देर के लिए चुप हो गयीं और अपने अपने तख़्ते पर जा लेटीं। बुढ़िया देव-प्रतिमा के सामने जा खड़ी हुई और प्रार्थना करने लगी।

"मिल गई दो सैवेरन रांडें," सहसा कमरे के दूसरे सिरे से लाल बालों वाली औरत की फटी हुई आवाज़ आई, एक एक शब्द के साथ चुनी चुनी गाली निकल रही थी।

"अभी जी नहीं भरा? फिर से सीधा कर दूंगी," कोराव्ल्योवा ने जवाब दिया। उसने भी गालियां निकालीं। फिर दोनों चुप हो गईं।

"किसी ने छुड़ाया न होता तो मैं तेरी आंखें नोच लेती," लाल बालों वाली ने फिर बोलना शुरू किया। दूसरी ओर से पट से वैसा ही जवाब आया।

फिर थोड़ी देर तक चुप्पी छायी रही, परन्तु कुछ देर तक ही। गालियों की बौछाड़ फिर पड़ने लगी। पर बौछाड़ों के बीच की चुप्पी ज्यादा लंबी होती गई और अन्त में कमरे में बिल्कुल सन्नाटा छा गया। बाक़ी सब स्त्रियां भी तख़्तों पर लेटी हुई थीं, कुछेक तो ख़र्राटे भी भरने लगी थीं। केवल बुढ़िया, जो हमेशा बड़ी देर तक प्रार्थना करती रहती थी, अब भी देव-प्रतिमा के आगे बार बार सिर नवा रही थी। और पादरी की बेटी वार्डर के चले जाने पर उठ खड़ी हुई थी, और फिर कमरे में इधर-उधर टहलने लगी थी।

मास्लोवा के दिमाग़ में बड़ी देर तक यह ख़्याल चक्कर लगाता रहा कि मैं मुजरिम हूं, सज़ायाफ़ता मुजरिम, जिसे कड़ी मशक़्क़त की सज़ा दी गई है। आज दो बार अलग अलग औरतों ने उसके लिए इस शब्द का प्रयोग किया था। एक बार बोच्कोवा ने और दूसरी बार इस लाल बालों वाली औरत ने। पर उसका मन मानने को तैयार नहीं था। उसके साथ वाले तख़्ते पर कोराव्ल्योवा ने करवट बदली।

"किसे ख़्याल था कि ऐसा होगा," धीमी आवाज़ में मास्लोवा ने कहा, "लोग कैसे कैसे जुर्म करते हैं और साफ़ छूट जाते हैं, और मैं बेक़सूर भुगत रही हूं।"

"चिन्ता नहीं करो बच्ची, लोग साइबेरिया में भी रह लेते हैं। तुम भी वहां पर खो नहीं जाओगी," कोराव्ल्योवा ने ढाढ़स बंधाते हुए कहा।

"खो तो नहीं जाऊंगी, पर फिर भी है तो सब बेइंसाफ़ी ही। मैं यह सब नहीं भुगतना चाहती–मुझे ज़्यादा आराम से रहने की आदत है।"

"भगवान् के आगे किसी का बस नहीं चलता," कोराब्ल्योवा ने उसास भरते हुए कहा, "कुछ बस नहीं चलता।"

"ठीक है, बड़ीबी, पर मेरे लिए बड़ा मुश्किल है।"

कुछ देर तक दोनों चुप रहीं।

"सुनती हो उस नामुराद की आवाज़?" कोराब्ल्योवा ने फुसफुसा कर कहा। कमरे के दूसरे सिरे से एक अजीब सी आवाज़ आने लगी थी।

लाल बालों वाली औरत दबी दबी सिसकियां ले रही थी। वह इसलिए रो रही थी कि उसे गालियां निकाली गई, पीटा गया और फिर भी शराब नहीं मिली, जिसके लिए वह तरस गई थी। साथ ही उसे याद आ रहा था कि हमेशा ही लोग उसे गालियां देते रहे हैं, उसका अपमान करते रहे हैं, उसकी खिल्ली उड़ाते रहे हैं, पीटते रहे हैं। अपने दिल को ढाढ़स देने के लिए वह फ़ैक्ट्री के मज़दूर फ़ेदका मोलोदेन्कोव से अपने पहले प्यार की बातें सोचने लगी। पर साथ ही उसे यह भी याद आने लगा कि उस प्यार का क्या अन्त हुआ था। और अन्त यह हुआ था कि इसी मोलोदेन्कोव ने नशे में धुंध हो कर हंसी हंसी में उसके सबसे कोमल अंग पर गन्धक का तेज़ाब लगा दिया था और फिर उसे दर्द से छटपटाता देख कर अपने दोस्तों के साथ ठहाके मारता रहा था। यह याद कर के उसे अपने पर तरस आने लगा। फिर यह सोच कर कि कोई भी सुन नहीं रहा है, वह बच्चों की तरह रोने लगी, नाक में से सूं सूं करती और अपने आंसू निगलती जाती।

"तरस आता है बेचारी पर," मास्लोवा बोली।

"हां, तरस तो आता ही है, पर टांग अड़ाने का क्या काम।"

३३

दूसरे दिन जब नेख़्लूदोव जागा तो उसे ऐसा भास हुआ जैसे उसके साथ कोई घटना घटी है। क्या हुआ है, यह याद आने से पहले ही उसे यह महसूस हो रहा था कि कोई अच्छी और महत्वपूर्ण बात हुई है।

"कात्यूशा, मुक़द्दमा।" ठीक है, अब और झूठ नहीं बोलना होगा, अब सच सच बता देना होगा।

अचानक उसी दिन ही उसे मारीया वासील्येव्ना से वह पत्र भी मिल गया जिसका उसे बहुत दिनों से इन्तज़ार था। इस चिट्ठी की उसे ख़ास तौर पर ज़रूरत भी थी। मारीया वासील्येव्ना ने उसे आज़ाद कर दिया था और शादी के लिए अपनी शुभेच्छाएं भेजी थीं।

"शादी!" उसने व्यंग भरे लहजे में कहा, "इस वक़्त तो शादी के ख़्याल तक से मैं कोसों दूर हूं!"

उसे वे इरादे याद आये जो पिछले रोज़ उसने किये थे: कि उसके पति से साफ़ साफ़ सब बात कह दूंगा, अपना सारा दोष स्वीकार करूंगा, और कहूंगा कि जो भी तुम इसकी सज़ा मुझे देना चाहो, मुझे सिर-आंखों पर मंज़ूर होगी। पर यह सब कल जितना आसान लग रहा था, आज उतना आसान नहीं था। फिर एक आदमी को जान बूझ कर दुःखी करने से क्या हासिल—जब वह जानता ही नहीं तो उसे बताने का क्या लाभ? हां, अगर वह ख़ुद मेरे पास आये और पूछे तो मैं सब कुछ बता दूंगा। लेकिन ख़ुद यह मतलब लेकर उसके पास जाऊं और सब कुछ बताऊं—इसकी बिल्कुल कोई ज़रूरत नहीं।

इसी तरह मिस्सी को भी सच सच बता देना आज कठिन लग रहा था। वह बोलना शुरू ही करेगा तो वह नाराज़ हो उठेगी। सांसारिक मामलों में हर बात साफ़ साफ़ नहीं कही जाती। हां, उसके मन में एक बात बिल्कुल साफ़ थी, कि वह उनके घर कभी नहीं जायेगा, और जो उन्होंने पूछा तो सच सच बता भी देगा।

परन्तु जहां तक कात्यूशा का सवाल है, उससे कोई भी बात नहीं छिपानी होगी, सब कह देना होगा।

"मैं जेलख़ाने में जा कर उससे मिलूंगा, और सब बात कह कर उससे माफ़ी मांगूंगा। और अगर ज़रूरत हुई... हां, अगर ज़रूरत हुई तो उससे शादी भी कर लूंगा," उसने सोचा।

यह विचार आते ही कि अपनी नैतिक संतुष्टि की ख़ातिर वह सब कुछ क़ुरबान करने के लिए तैयार है और उसके साथ शादी कर लेगा, वह द्रवित हो उठा।

बहुत दिनों के बाद आज उसे दिन का काम आरंभ करते समय इतनी स्फूर्ति का अनुभव हो रहा था। जब आग्राफ़ेना पेत्रोव्ना उसके कमरे में

आई तो उसने उसे साफ़ साफ़ कह दिया कि अब वह इस घर में नहीं रहेगा, और उसे उसकी ख़िदमत की ज़रूरत नहीं होगी। वह घर में इतने नौकर-चाकर और इतना साज-सामान इसलिए रखे हुए था कि उसका ख़्याल था कि शादी करेगा। यह बात सभी समझते थे। इसलिए अब घर छोड़ देने का एक विशेष महत्व था। आग्राफ़ेना पेत्रोव्ना ने हैरान हो कर उसकी ओर देखा।

"जिस ध्यान से आपने मेरी देख-संभार की है, मैं उसके लिए आपका शुक्रगुज़ार हूं। पर अब मुझे इतने बड़े घर की और इतने नौकरों की कोई ज़रूरत नहीं है। अगर आप मेरी मदद करना चाहती हैं, तो बस सब साज़-सामान ठिकाने लगवा दें, जैसा कि मां के जीते-जी हुआ करता था। जब नताशा आयेगी तो ख़ुद सारा प्रबन्ध कर लेगी।" (नताशा नेख़्लूदोव की बहिन थी।)

आग्राफ़ेना पेत्रोव्ना ने सिर हिलाया—

"ठिकाने लगवा दूं, क्यों? उनकी तो ज़रूरत होगी।"

"नहीं, इनकी ज़रूरत नहीं होगी, आग्राफ़ेना पेत्रोव्ना, इनकी बिल्कुल ज़रूरत नहीं होगी," उसके सिर हिलाने का अभिप्राय समझ कर नेख़्लूदोव ने जवाब दिया। "साथ ही मेहरबानी कर के कोर्नेई को भी कह देना कि अब मुझे उसकी भी ज़रूरत नहीं होगी। मैं उसे दो महीने की तनख़्वाह दे दूंगा।"

"बड़े खेद की बात है, द्मीत्री इवानोविच, कि आप ऐसा करने की सोच रहे हैं," वह बोली, "अगर आप विदेश घूमने भी गये, तो भी लौट कर शहर में घर की तो ज़रूरत होगी।"

"आप जो कुछ सोच रही हैं वह ठीक नहीं है, आग्राफ़ेना पेत्रोव्ना। मैं विदेश नहीं जा रहा हूं। यदि मैं कहीं गया भी तो किसी दूसरी ही दिशा में जाऊंगा।"

सहसा उसका चेहरा लाल हो गया।

"मुझे ज़रूर बता देना चाहिए," उसने सोचा, "अब कुछ छिपाना नहीं चाहिए। सभी को सब कुछ बताना चाहिए।"

"कल मेरे साथ एक बहुत ही अजीब और महत्वपूर्ण बात घटी। आपको वह लड़की कात्यूशा याद है जो फूफी मारीया इवानोव्ना के यहां रहती थी?"

"हां, हां, क्यों नहीं, मैंने ही तो उसे सीना-पिरोना सिखाया था।"

"कल अदालत में इसी लड़की का मुक़द्दमा था और मैं जूरी में था।"

"हे भगवान्, बड़े खेद की बात है। किस जुर्म के लिए उस पर मुक़द्दमा चलाया जा रहा था?"

"क़त्ल के लिए, और यह सब मेरा दोष है।"

"वाह, कैसी अजीब बात कहते हैं। इसमें आपका कैसे दोष हो सकता है?" आग्राफ़ेना पेत्रोव्ना ने कहा। उसकी बूढ़ी आंखों में एक चमक सी दौड़ गयी।

उसे कात्यूशा वाला क़िस्सा मालूम था।

"हां, वह सब मेरे ही कारण हुआ। यही वजह है कि आज मेरे सब इरादे बदल गये हैं।"

"आपको इससे क्या फ़रक़ पड़ता है?" अपनी हंसी दबाते हुए आग्राफ़ेना पेत्रोव्ना ने कहा।

"फ़रक़ यह पड़ता है कि मैंने ही उसे इस रास्ते पर डाला है, अब मेरा फ़र्ज़ हो जाता है कि मैं उसकी हर तरह से मदद करूं।"

"जैसे आपकी ख़ुशी हो करो, लेकिन इसमें आपकी कोई ख़ास क़सूर तो नहीं। हर किसी के साथ ऐसी बातें होती रहती हैं, और आदमी ज़रा समझ बूझ से काम ले तो बात रफ़ा-दफ़ा हो जाती है और लोग उसे भूल जाते हैं," उसने बड़ी गंभीरता और सख़्ती से कहा। "आप इसका दोष अपने पर क्यों लेते हो? इसकी क्या ज़रूरत है? मैंने भी सुना था कि वह बुरे रास्ते पर पड़ गई थी। इसमें दोष किसका है?"

"मेरा। इसी लिए मैं अपनी ग़लती ठीक करना चाहता हूं।"

"इन मामलों को ठीक करना आसान नहीं होता।"

"यह मेरा काम है। लेकिन अगर आपको अपना ख़्याल आ रहा है तो उसकी चिन्ता नहीं करो। मां की जैसी इच्छा थी, मैं उसी के अनुसार..."

"मैं अपने बारे में नहीं सोच रही हूं। आपकी स्वर्गीय मां का बर्ताव मेरे साथ इतना अच्छा रहा है कि मुझे किसी चीज़ की कमी नहीं। लीज़ा मुझे बार बार बुलाती रही है (लीज़ा उसकी भतीजी का नाम था)। जब मेरी ज़रूरत यहां पर नहीं रहेगी तो मैं उसके पास चली जाऊंगी। मुझे अफ़सोस केवल इस बात का है कि आपने इस बात को दिल से लगा लिया है। ऐसी बातें तो आये दिन हर किसी के साथ होती रहती हैं।"

"मैं ऐसा नहीं समझता। मेरी आपसे यही प्रार्थना है कि आप सब सामान ठिकाने लगाने में और घर में कोई किरायेदार बिठाने में मेरी मदद करो। और मुझ पर ख़फ़ा नहीं होना। आपने मेरे लिए बहुत कुछ किया है, और मैं आपका बेहद शुक्रगुज़ार हूं।"

और अजीब बात है, जिस क्षण नेख़्लूदोव को यह महसूस होने लगा कि वह ख़ुद बुरा है और घृणास्पद है, उसी क्षण से उसे अन्य लोग अच्छे लगने लगे। आग्राफ़ेना पेत्रोव्ना और कोर्नेई के प्रति उसके दिल में आदर का भाव उठने लगा। उसका मन चाहता था कि वह कोर्नेई के पास भी जा कर अपना दोष क़बूल करे, परन्तु कोर्नेई सदा ही इतने आदर और शिष्टता के साथ उससे पेश आता था कि उसकी हिम्मत नहीं हुई।

कचहरी की ओर जाते हुए वह उन्हीं सड़कों पर से जा रहा था जिन पर कल गया था, गाड़ी भी वही थी। लेकिन वह महसूस कर रहा था जैसे कोई दूसरा ही व्यक्ति चला जा रहा हो। इस परिवर्तन पर वह स्वयं बहुत हैरान था।

कल उसे लग रहा था कि वह मिस्सी से शादी करेगा, आज उसे यह शादी असम्भव लग रही थी। कल वह अपनी स्थिति यों समझता था कि मिस्सी उससे विवाह कर के ख़ुश होगी, इस बात में ज़रा भी संदेह उसे नहीं था। आज उसे महसूस होने लगा था कि वह शादी करने के सर्वथा अयोग्य है, न केवल शादी करने के ही, बल्कि मिस्सी के साथ किसी प्रकार की घनिष्ठता के भी। "अगर उसे पता चल पाय कि मैं कैसा आदमी हूं तो मेरा तो वह मुंह तक नहीं देखना चाहेगी। और कल ही मैं उसके दोष निकाल रहा था कि वह उस आदमी से आंखें लड़ा रही थी। पर नहीं, यदि वह मेरे साथ विवाह करना मंज़ूर भी कर ले तो मेरे मन को चैन नहीं होगा। ख़ुशी तो दूर रही। मुझे सारा वक़्त यह बात सतायेगी कि दूसरी जेल में पड़ी है और कल या परसों उसे साइबेरिया में कड़ी मशक़्क़त के लिए भेज देंगे। जिस लड़की को मैंने बरबाद किया है वह तो साइबेरिया ले जायी जा रही होगी, और मैं अपनी दुल्हन के साथ मित्रों और सम्बन्धियों को मिलने जाऊंगा, और वे मुझे बधाइयां देंगे। या स्थानीय स्कूलों की जांच होगी, और सदस्यों की बैठकों में उन सुधारों पर बहस होगी जो जांच कमेटी ने प्रस्तुत करेगी। लोग पर्चियां डालेंगे और मैं अभिजात वर्ग के उसी प्रधान के साथ बैठ कर, जिसे मैं इतनी

चता से धोखा देता आया हूं, इन्हें गिनूंगा। वहां तो पर्चियां गिनूंगा ौर उसके बाद छिप कर उसकी पत्नी से मिलने जाऊंगा (उफ़! कैसा घिनौना विचार है!)। या मैं अपनी तसवीर पर काम करने लगूंगा जो कभी भी ख़त्म नहीं हो पायेगी, क्योंकि मुझे ऐसी फ़िजूल चीज़ों पर न तो वक़्त ज़ाया करना ही चाहिए और न ही अब मैं यह सब कर सकता हूं।" वह सोचता जा रहा था। अपने में इस परिवर्तन का भास पा कर उसका मन बल्लियों उछल रहा था।

"पहला काम तो यह है कि वकील से मिलूं और पता लगाऊं कि उसने क्या निश्चय किया है... फिर उसे मिलने जाऊं जिसे कल मुजरिम क़रार दिया गया था, और उसके सामने दिल खोल कर रख दूं।"

और जब मन ही मन उसने इस बात की कल्पना की कि वह कैसे उससे मिलेगा, किस भांति उसे सब कुछ बतायेगा, अपना पाप स्वीकार करेगा, उससे कहेगा कि मैं इस पाप को धोने के लिए जो बन पड़ेग करूंगा और उससे शादी कर लेगा, तो उसका हृदय एक विचित्र आनन्द से भर उठा और उसकी आंखों में आंसू छलक आये।

३४

जब नेख़्लूदोव कचहरी पहुंचा तो बरामदे में ही उसे कल वाला पेशकार मिला। उसने पेशकार से पूछा कि सज़ायाफ़्ता क़ैदियों को कहां रखा जाता है, और उनसे मिलने के लिए किसकी इजाज़त लेने की ज़रूरत होती है। पेशकार ने बताया कि सज़ायाफ़्ता क़ैदी अलग अलग स्थानों पर रखे जाते हैं, और जब तक उन्हें आख़िरी फ़ैसला नहीं सुना दिया जाता उनसे मिलने की किसी को इजाज़त नहीं होती। लेकिन अगर बड़ा सरकारी वकील मिलने की इजाज़त दे दे तो दूसरी बात है।

"आज अदालत की कार्यवाही के बाद मैं ख़ुद आपको सरकारी वकील के पास ले चलूंगा। इस वक़्त तो वह यहां पर है भी नहीं। अदालत की कार्यवाही के बाद मिल सकेगा। अब आप अन्दर तशरीफ़ ले चलिये। काम शुरू होने ही वाला है।"

नेख़्लूदोव ने पेशकार का धन्यवाद किया (जो आज उसे बड़ा दयनीय ... के कमरे की ओर चल दिया।

कमरे के नज़दीक पहुंचा तो उसने देखा कि बाक़ी सदस्य कमरे में से निकल कर अदालत की ओर जा रहे हैं। आज भी व्यापारी ने थोड़ी चढ़ा रखी थी और कल की ही तरह चहक रहा था। नेख़्लूदोव को वह इस तरह मिला जैसे उसका पुराना दोस्त हो। प्योत्र गेरासिमोविच भी कल की ही तरह बेतक़ल्लुफ़ी दिखाने की कोशिश कर रहा था और ऊंचे ऊंचे हंस रहा था। लेकिन आज नेख़्लूदोव के दिल में इन बातों को देख कर नफ़रत पैदा नहीं हुई।

नेख़्लूदोव चाहता था कि जूरी के सभी सदस्यों को बता दे कि कल वाले क़ैदी के साथ उसके कैसे सम्बन्ध रहे थे। "अच्छा तो यह होता कि मुक़द्दमे के समय मैं उठ कर अपना जुर्म सबके सामने क़बूल कर लेता," वह सोच रहा था। पर अदालत में प्रवेश करने पर उसने देखा कि कल की ही तरह आज भी सारी कार्यवाही बड़ी गंभीरता और रीति अनुसार चल रही है। "जज साहिबान तशरीफ़ ला रहे हैं," आज भी यह घोषणा हुई और तीन आदमी फूलदार कॉलर लगाये, मंच पर पहुंचे, उसी तरह जूरी के सदस्य अपनी ऊंची पीठ वाली कुर्सियों पर बैठे, वही सिपाही, वही चित्र, वही पादरी। और नेख़्लूदोव अपना कर्तव्य पहचानते हुए भी यह सोच रहा था कि अदालत के इस संजीदा महौल में विघ्न डालना उसके बस की बात नहीं। वह कल भी यह नहीं कर सकता था और आज भी नहीं कर सकता।

आज भी अदालत की कार्यवाही की तैयारियां उसी तरह चल रही थीं, हां, जूरी से कल की तरह शपथ नहीं ली गई, प्रधान जज ने उनके सामने भाषण भी नहीं दिया।

आज अदालत के सामने चोरी का मुक़द्दमा था। क़ैदी बीसेक साल का दुबला पतला युवक था, जिसकी छाती अन्दर को धंसी हुई थी, और चेहरे पर रंगत का नाम न था। उसने भूरे रंग का लबादा पहन रखा था और उसे दो सिपाही, नंगी तलवार के पहरे में अन्दर लाये थे। क़ैदियों के कटघरे में वह अकेला बैठा था और अदालत के अन्दर आने वाले लोगों को झुकी झुकी नज़रों से देखे जा रहा था। उसका जुर्म यह था कि उसने एक और आदमी के साथ मिल कर एक गोदाम का ताला तोड़ा और उसमें से कुछेक पुरानी चटाइयां चुराईं, जिनकी कुल क़ीमत ३ रूबल और ६७ कोपेक बनती थी। नालिशी पर्चे के अनुसार चटाइयां इसके साथी ने अपनी

पीठ पर उठा रखी थीं, और जब ये दोनों सड़क पर जा रहे थे तो पुलिस के सिपाही ने इन्हें रोका। दोनों ने उसी वक़्त अपना जुर्म क़बूल कर लिया, और दोनों को हिरासत में ले लिया गया। उसका साथी कोई लुहार था। वह जेल में ही मर गया था। इसलिए इस लड़के पर अकेले मुक़द्दमा चलाया जा रहा था। चटाइयां एक मेज़ पर शहादती चीज़ों के तौर पर रखी थीं।

अदालत की कार्यवाही का क्रम भी कल जैसा ही था। शहादतें, सबूत, गवाहियां, शपथ, सवाल-जवाब, विशेषज्ञ, जिरह आदि सब कल की ही तरह था। जब भी प्रधान जज या सरकारी वकील या वकील सिपाही से कोई सवाल पूछते (जो एक गवाह था) तो जवाब में वह यही कहता— "ठीक है, सा'ब" या "जी नहीं जानता, सा'ब।" बेशक, कठोर अनुशासन ने उसे एक मशीन बना डाला था, और उसके मन में जड़ता आ गई थी, फिर भी ज़ाहिर था कि वह सकुचा रहा था और मुजरिम के क़ैद किये जाने के बारे में कुछ नहीं कहना चाहता था।

एक दूसरा गवाह भी सकुचा रहा था। यह उस घर का वृढ़ा मालिक था जिसमें चोरी हुई थी। चटाइयां इसी की थीं। इस चिड़चिड़े आदमी से जब पूछा गया कि चटाइयां तुम्हारी हैं या नहीं, तो बड़ी देर तक हिचकिचाने के बाद उसने स्वीकार किया कि हां, मेरी ही हैं। ज़ब सरकारी वकील ने पूछा कि इन चटाइयों का वह क्या करेगा, वे उसके किस काम आयेंगी तो वह खीज कर बोला—

"भाड़ में जायें चटाइयां। मुझे उनकी कोई जरूरत नहीं। अगर मुझे मालूम होता कि इन पर इतना तूफ़ान खड़ा किया जायेगा तो मैं इनके बारे में पूछता तक नहीं, बल्कि दस रूबल का नोट अपनी तरफ़ से इनके साथ रख देता ताकि मुझे कचहरियों की ख़ाक नहीं छाननी पड़ती। मैं इन सवालों से परेशान हो उठा हूं। पांच रूबल तो मैं गाड़ियों के भाड़े में दे चुका हूं। और फिर मेरी सेहत भी ठीक नहीं। मुझे जोड़ों का दर्द रहता है और गठिया है।"

ये थे गवाहों के बयान। मुजरिम ने ख़ुद सब कुछ क़बूल कर लिया था। और जाल में फंसे जंगली जनवर की भांति अपने चारों ओर मूढ़ दृष्टि से देखते हुए उसने रुक रुक कर सारी घटना का ब्योरा दे दिया था।

सब बात साफ़ थी, लेकिन फिर भी सरकारी वकील, कल की तरह,

कन्धे झाड़ता हुआ उठ खड़ा हुआ और तरह तरह के वारीक सवाल पूछने लगा मानो किसी चालाक मुजरिम को फांसने की कोशिश कर रहा हो।

अपनी तक़रीर में उसने साबित किया कि चोरी एक रिहाइशी मकान में हुई है और ताला तोड़ कर की गई है, इसलिए लड़के को सख़्त सज़ा दी जानी चाहिए।

मुजरिम के वकील ने, जिसे अदालत ने नियुक्त किया था, कहा कि चोरी रिहाइशी मकान में नहीं हुई है। वेशक, मुजरिम ने अपना अपराध स्वीकार किया है, फिर भी वह समाज के लिए इतना ख़तरनाक नहीं है जितना कि सरकारी वकील ने दिखाने की कोशिश की है।

प्रधान जज कल की तरह आज भी पूर्णतया तटस्थ था और इन्साफ़ करना चाहता था। उसने जूरी के सामने उन सभी तथ्यों की व्याख्या की और उन्हें खोल कर समझाया जिन्हें वे पहले से भली भांति जानते थे और जिन्हें वे जाने विना रह भी न सकते थे। कल की तरह आज भी कार्यवाही वार वार स्थगित की गई, आज भी वे सिगरेट पीते रहे, आज भी पेशकार वार वार चिल्लाकर कहता रहा—"जज साहिवान तशरीफ़ ला रहे हैं" और आज भी क़ैदी के ऊपर नंगी तलवार का पहरा था, और दोनों सिपाही भरसक कोशिश कर रहे थे कि वे ऊंघने से बचे रहें।

अदालत की कार्यवाही से पता चला कि यह लड़का एक तम्वाकू की फ़ैक्ट्री में काम करता था जहां इसके वाप ने इसे शागिर्द लगा रखा था। पांच साल तक वहां पर यह काम करता रहा। इस साल फ़ैक्ट्री में हड़ताल हो गई और इसे वरख़ास्त कर दिया गया। काम न होने के कारण यह शहर में आवारा घूमता रहा और जो थोड़ा-वहुत इसके पास था शराव में लुटाता रहा। एक शरावख़ाने में इसे अपने जैसा ही वेकार लुहार मिला, जिस-की नौकरी इससे पहले की छूट चुकी थी। एक रात दोनों ने शराव पी कर एक गोदाम का ताला तोड़ा और जो चीज़ सवसे पहले हाथ लगी उसे उठा लिया। वे पकड़े गये। उन्होंने सब वात क़वूल कर ली और उन्हें क़ैद कर लिया गया। जेल में, मुक़द्दमे से पहले ही, लुहार की मृत्यु हो गई। लड़के को अव एक ख़तरनाक व्यक्ति मान कर उस पर मुक़द्दमा चलाया जा रहा था जिससे समाज की रक्षा करना ज़रूरी है।

"यह भी उतना ही, ख़तरनाक है जितना कि कल वाला अपराधी था," अदालत की कार्यवाही को सुनते हुए नेख़्लूदोव सोच रहा था। "ये लोग

ख़तरनाक हैं, और हम? – जो उन पर बैठ कर न्याय करते हैं – क्या हम ख़तरनाक नहीं हैं? मैं कौन हूं? एक कपटी, भोग-विलासी और व्यभिचारी। फिर भी लोग, मुझे अच्छी तरह जानते हुए भी, मुझसे नफ़रत करने की बजाय मेरा आदर करते हैं। पर मान लें कि इन सब आदमियों में से जो इस वक़्त इस कमरे में मौजूद हैं, यह लड़का ही समाज के लिए सबसे अधिक ख़तरनाक है, तो हमारी अक़्ल क्या कहती है, इसे पकड़ने के बाद हमें इसके साथ कैसा सलूक करना चाहिए था?

"यह तो स्पष्ट है कि यही सबसे बड़ा अपराधी नहीं है। साधारण सा लड़का है। आज यदि यह अपराधी बन गया है तो उन परिस्थितियों के कारण जो ऐसे चरित्रों का निर्माण करती हैं। अतः इस जैसे लड़कों को कुमार्ग से बचाने के लिए ज़रूरत इस बात की है कि उन परिस्थितियों को बदला जाय जिनमें ऐसे अभागे युवक परवरिश पाते हैं।

"पर हम करते क्या हैं? जो लड़का हमारे हाथ में आ जाय उसे तो हम झपट कर पकड़ लेते हैं और जेल में ठूंस देते हैं यह अच्छी तरह जानते हुए कि इस जैसे हज़ारों और लड़के हैं जिन्हें हम नहीं पकड़ पाते। जेल में यह लड़का या तो बिल्कुल बेकार पड़ा रहता है, या फिर इसे हम इस जैसे ही दुर्बल और पतित लोगों की संगति में ऐसा काम करने पर मजबूर करते हैं जो निरर्थक और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है और इसके बाद हम इसे सरकारी ख़र्च पर अन्य भ्रष्ट लोगों के साथ मास्को से इर्कूत्स्क गुबेर्निया में भेज देते हैं।

"हम उन परिस्थितियों को बदलने की कोई कोशिश नहीं करते, जिनमें इस तरह के लोग पैदा होते हैं। उलटे हम ऐसी संस्थाओं को बढ़ावा देते हैं जिनके कारण ऐसी परिस्थितियां पनपती हैं। इन संस्थाओं को हम भली भांति जानते हैं: कारख़ाने, फ़ैक्ट्रियां, शराबख़ाने, जुएख़ाने और चकले। हम इन संस्थाओं को न केवल बरकरार रखे हुए हैं, बल्कि हम इनको प्रोत्साहन देते हैं, इनकी व्यवस्था करते हैं और इन्हें अत्यावश्यक समझते हैं।

"इस तरह हम, एक नहीं, लाखों ऐसे लड़कों को जन्म देते हैं। जब हम उनमें से किसी एक को पकड़ पाते हैं तो उसे अपनी बहुत बड़ी सिद्धि समझते हैं। हम समझते हैं कि हमने समाज की रक्षा की है। फिर हम उसे मास्को से इर्कूत्स्क गुबेर्निया भेज कर निश्चिंत हो जाते हैं कि अब

हमें और कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं।" नेख़्लूदोव के मन में ये विचार बड़ी स्पष्टता से उठ रहे थे। जूरी में वह कर्नल की बग़ल में बैठा प्रधान जज, छोटे सरकारी वकील और वकील के लयबद्ध भाषणों को सुन रहा था और उनकी आत्मतुष्ट भाव-भंगिमा को देखे जा रहा था। "यह आडम्बर खड़ा करने के लिए कितनी मेहनत की गई है!" वह अपने चारों ओर कमरे में नज़र दौड़ाते हुए सोच रहा था—"ये तसवीरें, झाड़-फ़ानूस, आराम-कुर्सियां, वर्दियां, मोटी मोटी दीवारें और आलीशान खिड़कियां, इतनी बड़ी इमारत और इससे भी बड़ी संस्था, जिसमें अनगिनत अफ़सर, क्लर्क, चौकीदार, और चपरासी काम कर रहे हैं, और इस नाटक में खेलने के लिए जिसका किसी को कोई लाभ नहीं, इन्हें बड़ी बड़ी तनख़्वाहें दी जाती हैं। केवल यहीं पर नहीं, रूस भर में यही कुछ हो रहा है। जितना परिश्रम इस आडम्बर को खड़ा रखने पर बर्बाद किया जाता है, यदि उसका सौवां हिस्सा भी उन परित्यक्त लोगों की मदद करने में लगाया जाता तो कितना बड़ा उपकार होता। आज हम उन लोगों को इनसान तक नहीं समझते और उन्हें केवल अपने सुख और आराम के लिए इस्तेमाल करते हैं।

"यह लड़का ग़रीब था। ग़रीबी के कारण मजबूर हो कर इसके सगे-सम्बन्धियों ने इसे शहर भेज दिया। यदि उस समय कोई आदमी इस पर तरस खा कर इसकी मदद कर देता, तो यह बच जाता," लड़के के रुग्ण और त्रस्त चेहरे की ओर देखते हुए नेख़्लूदोव सोच रहा था। "या बाद में उस वक़्त भी, जब यह फ़ैक्ट्री में बारह बारह घण्टे तक काम करने के बाद अपने से बड़े साथियों के साथ शराबख़ानों के चक्कर लगाने लगा था, तो कोई आदमी आ कर इसे कहता—'नहीं, वान्या, मत जा, यहां जाना ठीक नहीं,' तो यह संभल जाता, बुरे रास्ते पर नहीं पड़ता और आज यह जुर्म नहीं करता।

"लेकिन नहीं, इसके जीवन में कोई ऐसा आदमी नहीं आया जो इस पर तरस खाता। बरसों तक यह फ़ैक्ट्री में शागिर्दी करता रहा, और एक असहाय जानवर की तरह शहर में घूमता रहा। इसका सिर मूंड दिया गया ताकि उसमें जुएं नहीं पड़ें, और यह मिस्त्री लोगों के छोटे-मोटे काम करने के लिए भागता रहा। इसके विपरीत, जब से वह शहर में रहने लगा था अपने से बड़े कारीगरों के मुंह से यही कुछ सुन रहा था कि जो

भी दग़ा करता है, शराब पीता है, गालियां बकता है, दूसरे को पीट सकता है, व्यभिचार कर सकता है, वही सबसे बड़ा सूरमा है।

"इस तरह यह बीमार लड़का, जिसका स्वास्थ्य कड़े परिश्रम, शराब और व्यभिचार के कारण टूट चुका है, बावला सा शहर में निष्प्रयोजन चक्कर काटता फिरता है, मानो वह नींद में ही चल रहा हो। और ऐसे ही अपने बावलेपन में एक दिन वह किसी गोदाम में जा पहुंचता है और वहां से कुछ पुरानी चटाइयां उठा लेता है जिनकी किसी को कोई ज़रूरत नहीं। यहां बैठे हुए हम शिक्षित, अमीर लोग यह नहीं सोचते कि उन कारणों को किस भांति दूर किया जाय जिनसे यह लड़का इस स्थिति तक पहुंचा, उलटे हम उसे सज़ा देना चाहते हैं और समझे बैठे हैं कि सुधार का यही तरीक़ा है!

"कैसी भयानक स्थिति है! क्रूरता और मूढ़ता का बोलबाला है। और यह कहना कठिन है कि दोनों में से कौन अधिक प्रबल है–क्रूरता या मूढ़ता। जान पड़ता है, दोनों चरम सीमा तक जा पहुंची हैं।"

नेख़्लूदोव के मन में इस तरह के विचार उठ रहे थे। उसका ध्यान अदालत की कार्यवाही से हट गया था। आज जिन बातों को वह देख रहा था, उनसे उसका मन भयाकुल हो उठा था। और वह सोच रहा था, मैं इन्हें पहले क्यों नहीं देख पाया, और लोगों को ये क्यों नज़र नहीं आतीं?

३५

एक बार जब अदालत की कार्यवाही कुछ देर के लिए स्थगित हुई तो वह उठ कर बरामदे में आ गया। अदालत में अब वह लौट कर नहीं जाना चाहता था। अब इस घृणित नाटक में मैं भाग नहीं लूंगा, उनके जी में जो आये कर लें।

उसने बड़े सरकारी वकील के दफ़्तर का पता लगाया और सीधा वहां जा पहुंचा। बाहर खड़े अर्दली ने उसे रोकने की कोशिश की, कहा कि साहिब मसरूफ़ हैं, लेकिन नेख़्लूदोव ने कोई परवाह नहीं की और सीधा दरवाज़े के पास चला गया। दरवाज़े पर एक कर्मचारी खड़ा था। नेख़्लूदोव ने उससे कहा कि जा कर सरकारी वकील को मेरा नाम बताओ और कहो कि मैं जूरी का सदस्य हूं और एक ज़रूरी बात कहने के लिए आया हूं।

नेख़्लूदोव की उपाधि और कपड़े बड़े सहायक सिद्ध हुए। नेख़्लूदोव को अन्दर बुला लिया गया। सरकारी वकील उसे खड़े खड़े ही मिला, प्रत्यक्षत: वह नेख़्लूदोव की धृष्टता पर नाराज़ था।

"आप क्या चाहते हैं?" सरकारी वकील ने बड़े कठोर लहजे में पूछा।

"मैं जूरी का सदस्य हूं। मेरा नाम नेख़्लूदोव है। मैं क़ैदी मास्लोवा से मिलना चाहता हूं। उसे मिलना मेरे लिए बेहद ज़रूरी है," नेख़्लूदोव दृढ़ता से, जल्दी जल्दी कह गया। वह शर्माने लगा था और महसूस करने लगा था कि जो क़दम वह आज उठाने जा रहा है उसका उसके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ेगा।

सरकारी वकील एक छोटे से क़द का, सांवला सा आदमी था, छोटे छोटे भूरे रंग के बाल, चमकती, सजीव आंखें। निचला जबड़ा कुछ आगे को बढ़ा हुआ था और उस पर घनी, कटी-तराशी दाढ़ी थी।

"मास्लोवा? हां, ठीक है, याद आया। उस पर ज़हर देने का जुर्म था," सरकारी वकील ने धीरे से कहा। "आप उसे क्यों मिलना चाहते हैं?" फिर मानो अपने सवाल की कठोरता को कम करने के लिए स्वयं ही कहने लगा, "मैं उस वक़्त तक इजाज़त नहीं दे सकता जब तक कि मुझे मालूम न हो कि आप क्यों उससे मिलना चाहते हैं।"

नेख़्लूदोव का चेहरा लाल हो गया।

"एक विशेष कारण है जिसके लिए मैं यह इजाज़त मांग रहा हूं। वह बेहद ज़रूरी है।"

"अच्छा?" सरकारी वकील ने आंख उठा कर बड़े ध्यान से नेख़्लूदोव की ओर देखते हुए पूछा। "उसके मुक़द्दमे की सुनाई हो चुकी है या नहीं?"

"उसका मुक़द्दमा कल पेश हुआ था, और उसे चार साल की कड़ी मशक़्क़त की सज़ा दी गई थी। यह सज़ा ठीक नहीं थी। लड़की बेगुनाह है।"

"अच्छा? अगर कल ही उसे सज़ा दी गई है तब तो वह अभी हवालात में होगी," सरकारी वकील ने कहा। उसने नेख़्लूदोव के उन शब्दों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जो उसने मास्लोवा के निर्दोष होने के बारे में कहे थे। "जब तक आख़िरी तौर पर सज़ा नहीं सुना दी जाती, मुजरिमों को वहीं रखा जाता है। वहां क़ैदियों को मिलने के लिए ख़ास ख़ास दिन मुक़र्रर हैं। आप वहीं से दर्याफ़्त कीजिये।"

"पर मैं उससे जल्दी से जल्दी मिलना चाहता हूं," नेख़्लूदोव ने कहा। निर्णायक घड़ी को नज़दीक आता देख कर उसकी ठोड़ी कांपने लगी।

"क्यों चाहते हैं?" सरकारी वकील ने आंख उठा कर तनिक झल्लाहट के साथ पूछा।

"क्योंकि वह निर्दोष है, फिर भी उसे इतनी कड़ी सज़ा दी गई है। यह सब मेरे कारण हुआ है," नेख़्लूदोव ने कांपती आवाज़ में कहा। वह महसूस कर रहा था कि वह जो कुछ कह रहा है, उसके कहने की कोई ज़रूरत नहीं।

"वह किस तरह?" सरकारी वकील ने पूछा।

"क्योंकि मैंने उसकी असमत लूटी थी, इसी कारण उसकी आज यह हालत है। मैंने ही उसे इस स्थिति में झोंका है, अगर मैंने ऐसा नहीं किया होता तो आज उसे यह सज़ा नहीं मिलती।"

"फिर भी मैं नहीं समझ सकता कि इस सबका उसे मिलने से क्या संबंध है।"

"संबंध यह है कि मैं उसके साथ जाना चाहता हूं... उससे विवाह करना चाहता हूं," नेख़्लूदोव ने हकला कर कहा। अपने ही व्यवहार से अभिभूत, उसकी आंखों में आंसू आ चले थे।

"क्या सच? ख़ूब!" सरकारी वकील बोला, "यह तो सचमुच ही निराली स्थिति है। यदि मैं भूल नहीं करता तो आप क्रास्नोपेर्स्क स्थानीय बोर्ड के सदस्य हैं न?" उसने पूछा, मानो उसे याद हो आया हो कि इस नेख़्लूदोव के बारे में कहीं कुछ सुना था। यह वही आदमी है जो आज ऐसी विचित्र घोषणा कर रहा है।

"क्षमा कीजिये, इसका मेरी प्रार्थना के साथ कोई संबंध नहीं है," ग़ुस्से से तमतमाते हुए नेख़्लूदोव ने कहा।

"नहीं, नहीं, कोई संबंध नहीं," सरकारी वकील ने निर्लज्जता से मुस्कराते हुए कहा। "मैं तो केवल यह सोच रहा था कि आपकी इच्छा कुछ इतनी विलक्षण और असाधारण सी है।"

"तो कहिये, आप मुझे इजाज़त देंगे।"

"इजाज़त? हां, हां, अभी लीजिये। मैं आपको प्रवेश-पत्र अभी लिखे देता हूं। आप तशरीफ़ रखिये।"

और वह मेज़ के पास जा कर लिखने बैठ गया।

"आप बैठ जाइये।"

नेख़्लूदोव अब भी खड़ा रहा।

उसने प्रवेश-पत्र लिखा और नेख़्लूदोव के हाथ में देते हुए बड़ी कुतूहल भरी आंखों से उसकी ओर देखने लगा।

"मैं यह भी बता देना चाहता हूं कि मैं अब से अदालत की कार्यवाही में भाग नहीं लूंगा।"

"इसके लिए आपको बाक़ायदा अदालत को लिख कर देना होगा कि आप क्यों भाग नहीं लेना चाहते। यह तो आपको मालूम ही होगा।"

"इसलिए कि मैं दूसरों का न्याय करना न केवल निरर्थक समझता हूं बल्कि पाप भी।"

"ठीक है," फिर वही हल्की सी मुस्कान सरकारी वकील के होंठों पर आई, मानो वह दिखाना चाहता हो कि इस प्रकार की घोषणाओं से वह भली भांति परिचित है, और इन्हें वह हास्यास्पद समझता है। "ठीक है, मगर आप यह तो मानेंगे कि सरकारी वकील होने के नाते इस बात पर मैं आपसे सहमत नहीं हो सकता। इसलिए मैं आपसे कहूंगा कि इस बारे में आप अदालत से दरख़ास्त कीजिये। वही आपके इस बयान पर ग़ौर करेगी और फ़ैसला करेगी कि वह बाज़ाब्ता है या नहीं। अगर बाज़ाब्ता न हुई तो आपको जुर्माना भरना होगा। इसलिए आप अदालत से दरख़ास्त कीजिये।

"मैंने जो कहना था कह दिया है, अब मैं कहीं दरख़ास्त देने नहीं जाऊंगा," नेख़्लूदोव ने ग़ुस्से से कहा।

"अच्छी बात है, तो ख़ुदा-हाफ़िज़," सरकारी वकील ने तनिक सा सिर झुका कर कहा। ज़ाहिर था कि वह इस अनोखे मुलाक़ाती से पीछा छुड़ाना चाहता था।

"यह कौन आदमी तुमसे बातें कर रहा था?" नेख़्लूदोव के चले जाने पर अदालत के एक सदस्य ने अन्दर प्रवेश करते हुए पूछा।

"नेख़्लूदोव था। तुम उसे जानते होगे, वही जो क्रास्नोपेर्स्क के स्थानीय बोर्ड में तरह तरह के अजीब बयान दिया करता था। ज़रा सोचो! यह शख़्स जूरी का सदस्य है। यहां क़ैदियों में एक औरत है या कोई लड़की है जिसे कड़ी मशक़्क़त की सज़ा दी गई है। यह कहता है कि मैंने उसकी असमत लूटी है, और अब उससे शादी करना चाहता हूं।"

"सच?"

"यही कुछ उसने मुझसे कहा है। और बहुत उत्तेजित हो रहा था।"

"आजकल के नौजवानों के दिमाग़ ख़राब हो गये हैं।"

"पर यह तो लड़का नहीं है, काफ़ी उम्र का है।"

"अरे, बाबा, तुम्हारे इस सहायक इवाशेंकोव ने तो सबकी नाक में दम कर रखा है। बोले जायेगा, बोले जायेगा, जब तक अदालत में सब उसकी बक बक से निढाल न हो जायं।"

"उफ़, ऐसे लोगों का मुंह बन्द कर देना चाहिए, वरना ये कोई काम नहीं होने देंगे। हर काम में रुकावट डालेंगे।"

३६

बड़े सरकारी वकील को मिलने के बाद नेख़्लूदोव सीधा हवालात में गया। मालूम हुआ कि मास्लोवा नाम की कोई औरत वहां पर नहीं है। इन्स्पेक्टर ने बताया कि मुमकिन है वह पुरानी जेल में ही हो। नेख़्लूदोव उधर चल पड़ा।

येकातेरीना मास्लोवा सचमुच वहीं थी। बड़े सरकारी वकील को यह याद नहीं रहा था कि तब से क़ोई छः महीने पहले पुलिस ने बेहद बढ़ा-चढ़ा कर एक राजनीतिक मामला खड़ा किया था और इस कारण हवालात की सभी जगहें छात्र-छात्राओं, डाक्टरों, मज़दूरों, नर्सों से भरी पड़ी थीं।

पुरानी जेल हवालात से बहुत दूरी पर थी। इसलिए वहां तक पहुंचते पहुंचते नेख़्लूदोव को शाम हो गई। जेल की इमारत बहुत बड़ी और भयावह सी थी। वह दरवाज़े की ओर जा ही रहा था कि एक सन्तरी ने उसे रोक दिया और घण्टी बजायी। घण्टी सुन कर एक जेलर बाहर आया। नेख़्लूदोव ने उसे प्रवेश-पत्र दिखा दिया, मगर जेलर ने कहा कि जब तक इन्स्पेक्टर इजाज़त न दें वह उसे अन्दर नहीं जाने दे सकता। नेख़्लूदोव इन्स्पेक्टर से मिलने गया। वह सीढ़ियां चढ़ रहा था जब उसके कानों में संगीत की आवाज़ पड़ी। दूर कोई पियानो पर कठिन सी धुन बजा रहा था। एक गुस्सैल नौकरानी ने, जिसकी एक आंख पर पट्टी बंधी थी, दरवाज़ा खोला। दरवाज़ा खुलने पर अन्दर से संगीत की आवाज़ उफनती हुई उसके कानों

में पड़ी। लिस्त की एक रचना बजाई जा रही थी, एक रैप्सोडी। बजाने वाला बड़ी कुशलता से बजा रहा था, लेकिन एक ख़ास स्थल तक पहुंच कर वह रुक जाता और शुरू से बजाने लगता। नेख़्लूदोव ने नौकरानी से इन्स्पेक्टर के बारे में पूछा। मालूम हुआ कि वह घर पर नहीं है।

"क्या जल्दी लौटेंगे?"

धुन बजनी बन्द हो गई। बजाने वाला उसी स्थल तक आ पहुंचा था। थोड़ी देर ख़ामोशी रही, इसके बाद धुन फिर शुरू से बजाई जाने लगी। अब की बार और भी ज़ोर ज़ोर से, और पहले से भी अधिक कुशलता के साथ। लेकिन उसी विलक्षण स्थल तक पहुंच कर फिर चुप हो गई।

"मैं जा कर पूछती हूं," दासी ने कहा।

रैप्सोडी फिर बड़ी तरंग से बजने लगी थी, लेकिन उस विलक्षण स्थल तक पहुंचने से पहले ही फिर बन्द हो गई, और उसके स्थान पर एक आवाज़ सुनाई दी—

"कह दे कि घर पर नहीं हैं, और आज लौटेंगे भी नहीं। किसी के यहां गये हुए हैं। घड़ी भर के लिए चैन भी लेने देंगे?" आवाज़ एक औरत की थी, और दरवाज़े के पीछे से आ रही थी। धुन फिर बजने लगी, और फिर बन्द हो गई। फिर एक कुर्सी के फ़र्श पर घिसटने की आवाज़ आई। ज़ाहिर था कि पियानो बजाने वाली खीज उठी है और आगन्तुक को खरी खरी सुनाना चाहती है जो ऐसे ग़लत वक़्त पर आ टपका है, और यों परेशान कर रहा है।

"पिताजी घर पर नहीं हैं," एक लड़की ने ड्योढ़ी में आते हुए खीज कर कहा। पीली-दुबली लड़की, थकी हुई आंखों के नीचे स्याह छल्ले और कुरमुरे बाल। लेकिन बाहर एक युवक को खड़े देख कर, जिसने बढ़िया कोट पहन रखा था, वह धीमी पड़ गयी।

"आइये... तशरीफ़ ले आइये, आपको क्या चाहिए?"

"मैं जेल में एक क़ैदी से मिलना चाहता हूं।"

"कोई सियासी क़ैदी होगा शायद?"

"नहीं, सियासी क़ैदी नहीं है। मेरे पास बड़े सरकारी वकील का दिया हुआ प्रवेश-पत्र है।"

"मैं तो जानती नहीं हूं, और पिता जी घर पर नहीं हैं, पर आप अन्दर आइये," उसने फिर कहा, "या फिर आप छोटे इन्स्पेक्टर से बात

कर देखिये। वह इस वक़्त दफ़्तर में ही हैं। आप उनसे पूछ लीजिये। आपका शुभ नाम?"

"धन्यवाद," लड़की के सवाल का उत्तर दिये विना नेख़्लूदोव वहां से चला गया।

दरवाज़ा बन्द होने की देर थी कि वही धुन फिर सुनाई देने लगी। पहले की ही तरह सजीव। यह संगीत इस स्थान के साथ विल्कुल मेल नहीं खाता था और इस रुग्ण लड़की की शक्ल-सूरत के साथ भी नहीं जो इतनी ढिठाई से इस धुन को वजाये जा रही थी। वाहर आंगन में उसे एक अफ़सर मिला जिसके मुंह पर तीखी खुरदरी मूंछें थीं। उससे नेख़्लूदोव ने छोटे इन्स्पेक्टर के वारे में पूछा। वही आदमी छोटा इन्स्पेक्टर निकला। उसने प्रवेश-पत्र पर नज़र दौड़ाई और वोला कि यह प्रवेश-पत्र हवालात के लिए है। वह इजाज़त नहीं दे सकता। साथ ही अव वहुत देर हो चुकी है।

"आप कल आ जाइये। कल सुवह, दस वजे। उस वक़्त हर किसी को मिलने की इजाज़त होती है। इन्स्पेक्टर साहिव भी उस वक़्त घर पर होंगे। तव आप क़ैदी से वड़े कमरे में मिल सकते हैं जिसमें सभी मुलाक़ाती मिलते हैं, या फिर, अगर इन्स्पेक्टर साहिव ने इजाज़त दे दी तो दफ़्तर में भी मिल सकते हैं।"

इस तरह नेख़्लूदोव मुलाक़ात नहीं कर सका और घर लौट गया। वह मास्लोवा से मिलेगा, इसका ध्यान आते ही, वह उत्तेजित हो उठा था। इस उत्तेजना में, सड़कों पर चलते हुए, उसे कचहरी की कार्यवाही विल्कुल भूल गई। उसे केवल सरकारी वकील और छोटे इन्स्पेक्टर के साथ हुई वातचीत ही याद आ रही थी। यह सोच कर ही कि वह मास्लोवा से मिलने की कोशिश करता रहा है, और सरकारी वकील से सारी वात कह दी है, और दो जेलों में उसे मिलने के लिए जा भी चुका है, वह वेहद उत्तेजित हो उठा था और वड़ी देर तक उसका मन ठिकाने पर नहीं आया। घर पहुंचते ही उसने अपनी डायरी निकाली, जिसमें मुद्दत से उसने कुछ नहीं लिखा था, उसमें से कुछ वाक्य पढ़े और फिर लिखने लगा—

"दो वरस से मैंने इस डायरी में कुछ नहीं लिखा। सोचता था डायरी लिखना वड़ी वचकाना वात है और आगे से कभी नहीं लिखूंगा। लेकिन यह वचकाना वात नहीं है। इसके द्वारा मैं अपनी अन्तरात्मा से वातें करता

हूं—उस दैवी ज्योति से जो हर मनुष्य में वास करती है। जितनी देर यह सुप्तावस्था में रही, मेरे लिए इसके साथ वार्तालाप करना असंभव था। लेकिन २८ अप्रैल के दिन कचहरी में एक विलक्षण घटना घटी जिसने इसे जगा दिया। उस दिन मैं जूरी के सदस्य के नाते अदालत में बैठा था। वहां मैंने उसे क़ैदियों के कटघरे में देखा, उसी कात्यूशा को जिसे मैंने भ्रष्ट किया था। उसने क़ैदियों के कपड़े पहन रखे थे। एक अजीब सी ग़लती के कारण और मेरी भूल से उसे कड़ी मशक़्क़त की सज़ा दी गई है। मैं आज सरकारी वकील से मिला था और अभी जेल से आ रहा हूं। आज अन्दर जाने की इजाज़त नहीं मिली। परन्तु मैंने निश्चय कर लिया है कि उससे मिलने की यथासंभव कोशिश करूंगा, उसके सामने अपने गुनाह तसलीम करूंगा, और अपने पाप का प्रायश्चित करूंगा—ज़रूरी हुआ तो उसके साथ शादी तक करूंगा। भगवान मेरी सहायता करें। आज मेरी आत्मा शान्त है, और मेरा हृदय ख़ुशी से भर उठा है।"

३७

उस रात मास्लोवा बड़ी देर तक आंखें खोले लेटी रही। उसकी आंखें दरवाज़े पर लगी हुई थीं, जिसके सामने पादरी की लड़की टहल रही थी। वह लाल बालों वाली का सुड़कना सुन रही थी और उसके मन में तरह तरह के विचार घूम रहे थे।

वह सोच रही थी कि कुछ भी हो जाय, मैं सख़ालिन में किसी क़ैदी से तो शादी नहीं करूंगी। अगर जेल के किसी अफ़सर से बात बन जाय, किसी क्लर्क या वार्डर या छोटे वार्डर तक से भी, तो ठीक रहेगा। "सभी मर्द एक जैसे होते हैं। बस कहीं दुबली न हो जाऊं। नहीं तो सब मामला गड़बड़ हो जायेगा।" मास्लोवा को याद आया कि वकील किस तरह मेरी तरफ़ देख रहा था, और वह बड़ा जज भी, और सभी लोग जो मुझे मिलते थे। कचहरी में कितने ही आदमी तो बार बार पास से गुज़रते थे। उसे याद आया कैसे बेरता उससे जेल में मिलने आयी थी और उसे बता रही थी कि जिस विद्यार्थी को मास्लोवा चाहती थी, जब वह कितायेवा के यहां रहती थी, वही उसके बारे में पूछ रहा था और उसकी सज़ा की बात सुन कर बहुत दुखी हो रहा था। मास्लोवा को लाल बालों वाली के

साथ हुआ झगड़ा भी याद आया और उस पर दया आई। उसे वह डबलरोटी वाला याद आया जिसने एक डबलरोटी मुफ़्त में अलग उसे दे दी थी। उसे बहुत लोग याद आये। यदि कोई याद नहीं आया तो नेख़्लूदोव याद नहीं आया। मास्लोवा अपने बचपन और यौवन के दिनों को, और विशेष रूप से नेख़्लूदोव के प्रति अपने प्रेम को कभी याद नहीं करती थी, उन्हें याद करना बेहद दुःखपूर्ण होता। ये स्मृतियां उसकी आत्मा की गहराइयों में अछूती पड़ी थीं। वह उसे कभी याद नहीं आया, स्वप्न में भी नहीं। आज अदालत में भी मास्लोवा ने उसे नहीं पहचाना। जब आख़िरी बार उसने उसे देखा था तो वह वर्दी पहने हुए था, तब उसके मुंह पर दाढ़ी नहीं थी, केवल छोटी सी मूंछें थीं, और सिर पर घने, छोटे छोटे, घुंघराले बाल थे। अब नेख़्लूदोव बड़ा हो गया था, उसके दाढ़ी थी। लेकिन उसे न पहचानने का यह कारण नहीं था। कारण यह था कि उसने नेख़्लूदोव के बारे में कभी सोचा ही नहीं था। उसकी याद को उसने उस रात, उस भयानक अंधेरी रात को दफ़ना दिया था, जब वह फ़ौज में से लौट रहा था और बिना अपनी फूफियों को मिले सीधा आगे निकल गया था।

जब तक कात्यूशा को यह आशा बनी रही कि वह उसके पास लौट आयेगा, उसे अपना गर्भ बोझल नहीं लगा। कभी कभी गर्भ के अन्दर बच्चा हरकत करता, नन्हीं नन्हीं, आकस्मिक करवटें लेता, तो मास्लोवा का दिल गदगद हो उठता। पर उस रात सब बदल गया, और बच्चा निरा बोझ बन गया।

फूफियां नेख़्लूदोव का इन्तज़ार कर रही थीं। उन्होंने उसे कहा था कि लौटते समय ज़रूर मिल कर जाना। लेकिन उसने तार दे दी कि मुझे ख़ास वक़्त पर पीटर्सबर्ग पहुंचना है, इसलिए रुक नहीं सकता। जब कात्यूशा ने यह सुना तो दिल में ठान ली कि मैं ज़रूर उसे स्टेशन पर मिलने जाऊंगी। रात को दो बजे गाड़ी वहां से गुज़रती थी। सोने के वक़्त तक कात्यूशा फूफियों के साथ रही। जब वे सोने चली गईं, तो उसने बावर्चिन की छोटी बेटी माश्का को अपने साथ चलने के लिए तैयार कर लिया, फिर पुराने बूट निकाल कर पहने, शाल ओढ़ी, और अपने कपड़े संभालती हुई स्टेशन की ओर भाग निकली।

पतझड़ की अन्धेरी रात थी, पानी बरस रहा था और हवा चल रही थी। किसी किसी वक़्त पानी की मोटी मोटी, गर्म बून्दें गिरतीं, फिर

वंद हो जातीं। खेतों में से जाते हुए उसे रास्ता नहीं सूझ रहा था और जंगल में तो घुप्प अन्धेरा था। रास्ता जानते हुए भी कात्यूशा भटक गई। उसे उमीद थी कि वह छोटे से स्टेशन पर, जहां गाड़ी सिर्फ़ तीन मिनट खड़ी होती थी, गाड़ी आने से पहले ही पहुंच जायेगी, लेकिन जव वह पहुंची तो गाड़ी की रवानगी की दूसरी घंटी भी वज चुकी थी। भागी हुई कात्यूशा प्लेटफ़ार्म पर पहुंची। उसे फ़ौरन् नेख़्लूदोव नज़र आ गया। फ़र्स्ट क्लास के डिव्वे में, खिड़की के पास वह वैठा था। डिव्वे में ख़ूव रोशनी थी। मख़मली सीटों पर दो अफ़सर एक दूसरे के सामने वैठे ताश खेल रहे थे। सीटों के वीच एक मेज़ रखी थी जिस पर दो मोटी मोटी मोमवत्तियां जल रही थीं, और उनका मोम पिघल पिघल कर गिर रहा था। नेख़्लूदोव ने सफ़ेद क़मीज़ और चुस्त विर्जिस पहन रखी थी, और सीट के वाज़ू पर वैठा, पीठ के साथ टेक लगाये, किसी वात पर हंस रहा था। सर्दी के कारण कात्यूशा के हाथ सुन्न हो रहे थे। उसे पहचानते ही कात्यूशा ने आगे वढ़ कर खिड़की के शीशे को खटखटाया। ऐन उसी वक़्त तीसरी घण्टी वजी, गाड़ी ने पीछे की ओर एक हल्का सा झटका लिया और चल पड़ी। डिव्वे धीरे धीरे आगे वढ़ने लगे। ताश खेलने वालों में से एक उठ खड़ा हुआ, और वाहर की ओर झांक कर देखा। उसने हाथ में ताश के पत्ते पकड़ रखे थे। कात्यूशा ने फिर खिड़की को खटखटाया, और अपना मुंह शीशे के पास ले गई। लेकिन डिव्वा आगे वढ़ता जा रहा था और वह उसके साथ साथ चलने लगी थी। सारा वक़्त वह अन्दर देखे जा रही थी। अफ़सर ने शीशा गिराने की कोशिश की, लेकिन नहीं गिरा पाया। इस पर नेख़्लूदोव उठा और उसे हटा कर ख़ुद शीशा गिराने लगा। गाड़ी की रफ़्तार तेज़ होने लगी, और कात्यूशा भी तेज़ तेज़ चलने लगी। जव शीशा उतरा तो गाड़ी की रफ़्तार और भी तेज़ हो चुकी थी। ऐन उसी वक़्त गार्ड ने उसे धक्का दे कर परे हटा दिया और ख़ुद उछल कर गाड़ी पर चढ़ गया। प्लेटफ़ॉर्म के भीगे तख़्तों पर कात्यूशा भागती चली जा रही थी। प्लेटफ़ॉर्म का दूसरा सिरा आ पहुंचा। कात्यूशा सीढ़ियां उतरते हुए गिरते गिरते वची। अव वह गाड़ी के साथ साथ भाग रही थी, हालांकि फ़र्स्ट क्लॉस के डिव्वे कव के आगे निकल गये थे, और अव सैकंड क्लॉस के डिव्वे भी वड़ी तेज़ी से आगे वढ़ते जा रहे थे। थर्ड क्लॉस के डिव्वों के पहुंचते पहुंचते गाड़ी की रफ़्तार और भी तेज़ हो चुकी

थी। पर कात्यूशा अब भी दौड़े जा रही थी। आख़िर गाड़ी का सबसे पिछला डिब्बा भी आगे निकल गया, जिसके पीछे वत्तियां लगी होती हैं। तब तक कात्यूशा उस टैंक तक जा पहुंची थी, जिसमें से इंजनों में पानी डाला जाता है। यहां तेज़ हवा चल रही थी जिसमें उसकी शाल उड़ रही थी और उसका घाघरा टांगों के साथ चिपका जा रहा था। उसके सिर पर से शाल उड़ गई, पर वह अब भी दौड़े जा रही थी।

"मौसी मिख़ाइलोव्ना, शाल उड़ गई!" बच्ची ने चिल्ला कर कहा जो उसके पीछे पीछे बड़ी मुश्किल से भागी आ रही थी।

"वह तो जगमग करती गाड़ी में बैठा हंसी-मजाक़ कर रहा है, मख़मली कुर्सियों पर बैठा शराबें पी रहा है, और मैं यहां घुप्प अन्धेरे में कीचड़ में बारिश, हवा के थपेड़े खाती खड़ी रो रही हूं," कात्यूशा ने सोचा और रुक गई। सिर पीछे को झटक कर, उसे दोनों हाथों में ले कर वह फफक फफक कर रोने लगी।

"चला गया!" उसने चीख़ कर कहा।

बच्ची डर गई और उसे अपनी बांहों में भींच लिया।

"मौसी, चलो घर चलें।"

"अगली गाड़ी आते ही उसके पहियों के नीचे... बस," कात्यूशा सोच रही थी। बच्ची की ओर उसने कोई ध्यान नहीं दिया।

कात्यूशा ने निश्चय कर लिया था कि वह ऐसा कर के रहेगी। पर जैसे कि सदा होता है, गहरी उत्तेजना के बाद छाने वाली शान्ति के पहले क्षण में बच्चा—उसका बच्चा—जो उसके गर्भ में था, सहसा कांप उठा और धक्का सा देकर, धीरे धीरे सीधा हुआ और फिर किसी पतली, कोमल और तेज़ सी चीज़ से हल्के हल्के आघात करने लगा और सहसा सब कुछ बदल गया। क्षण भर पहले उसे जीना असंभव लग रहा था, और वह बेहद दुःखी थी। पर सहसा उसके प्रति सारी कटुता दूर हो गई। अपनी जान दे कर उससे बदला लेने की जो भावना उसके मन में उठी थी, वह जाती रही। वह शांत हो गई, शाल सिर पर ओढ़ी और घर चल दी।

बारिश में भीगी, कीचड़ से लथपथ, और थक कर चूर वह घर पहुंची। और उसी दिन से उसके अन्दर वह परिवर्तन होने लगा जो आज

उसे इस स्थिति पर ले आया था। यह परिवर्तन उसी भयानक रात को शुरू हो गया था, जब नेकी में उसका विश्वास जाता रहा। उसे नेकी में गहरा विश्वास था, और वह समझती थी कि बाक़ी सब लोगों को भी उसमें विश्वास है। परन्तु उस रात के बाद कात्यूशा को यक़ीन हो गया कि नेकी में किसी को भी विश्वास नहीं, कि भगवान् और उसके नियमों के बारे में जो कुछ भी कहा जाता है, सब धोखा है, झूट है। जिससे वह प्रेम करती थी और जो उसे प्रेम करता था—हां, कात्यूशा जानती थी कि वह उससे प्रेम करता था—उसी ने उसके शरीर का भोग कर के उसे घूरे पर फेंक दिया था, उसके प्रेम को ठुकरा दिया था। और वह सबसे अच्छा आदमी था। जितने भी लोगों को वह जानती थी, उनमें वह सबसे अच्छा था। बाक़ी लोग तो और भी बुरे थे। इस घटना के बाद उसके जीवन में जो कुछ भी हुआ, उससे क़दम क़दम पर उसका यह विश्वास और भी दृढ़ होता गया। नेख़्लूदोव की फूफियां कैसी भद्र महिलाएं थीं। जब कात्यूशा पहले की तरह उनकी सेवा नहीं कर सकी तो झट उसे निकाल फेंका। जितने लोग भी उसे मिले सभी एक जैसे थे। स्त्रियां पैसे कमाने के लिए उसे इस्तेमाल करतीं और पुरुष वासना-तृप्ति के लिए। बूढ़े पुलिस अफ़सर से ले कर जेल के वार्डरों तक सभी यही चाहते थे। अपनी ख़ुशी के सिवा दुनिया में किसी को किसी चीज़ की परवाह नहीं। कात्यूशा का यह विश्वास उस समय और भी दृढ़ हो गया था जब वह अपनी आज़ादी के दूसरे साल बूढ़े लेखक के साथ रह रही थी। वह कात्यूशा को सीधे से यही कहा करता था कि जीवन का सुख इसी में है, इसे वह कविता और सौंदर्य कहा करता था।

सभी अपने लिए जीते थे, अपनी ख़ुशी के लिए और भगवान् और सदाचार की दुहाई देना धोखा था। कभी कभी कात्यूशा के मन में संशय उठते, और वह हैरान हो कर मन ही मन पूछती कि संसार की व्यवस्था क्यों इतनी बुरी है कि सब लोग एक दूसरे को कष्ट देते हैं और दुःखी करते हैं। पर जब ऐसे संशय उठते तो वह सोचना छोड़ देती। यही सबसे अच्छा था। जब बहुत उदास हुई तो सिगरेट का कश लगा लिया या शराब का घूंट गले तले उतार लिया या फिर किसी मर्द से इश्क कर लिया और उदासी ख़त्म।

इतवार के दिन सुबह पांच वजे जेल के उस हिस्से में जहां औरतों को रखा जाता था, वरामदे में एक सीटी वजी। कोराव्ल्योवा पहले से जाग रही थी। उसने मास्लोवा को जगाया।

"मैं मुजरिम हूं!" जागते ही यह विचार उसके मन में आया। सुबह के वक़्त जेल की हवा में और भी अधिक सड़ांध आ गयी थी। उस वदवू भरी हवा में सांसें लेती हुई मास्लोवा आंखें मल रही थी। उसका जी चाहा कि फिर सो जाय, विस्मृति के लोक में फिर चली जाय, लेकिन उसके दिल में ऐसा डर वैठ गया था कि नींद उड़ते देर न लगती थी। वह उठ वैठी और टांगें अपने नीचे समेटते हुए कमरे में इधर उधर देखने लगी। सभी स्त्रियां जाग चुकी थीं, केवल वच्चे अव भी सो रहे थे। जिस औरत को नाजायज़ शराव वेचने के जुर्म में सज़ा मिली थी, वह धीरे धीरे, वड़े ध्यान से, वच्चों के नीचे से लवादा खींच रही थी, ताकि वे जाग न जायं। जिस औरत ने रंगरूट को छुड़ाया था, वह अलगनी पर सूखने के लिए चिथड़े टांग रही थी। इन्हीं चिथड़ों में वच्चे को लपेट कर रखा जाता था। वच्चा ज़ोर ज़ोर से रो रहा था। नीली आंखों वाली फ़ेदोस्या उसे उठाये हुए थी और अपनी कोमल आवाज़ में उसे चुप कराने की कोशिश कर रही थी। तपेदिक की रोगी अपनी छाती को हाथों से दवाये ज़ोर ज़ोर से खांस रही थी। उसका चेहरा लाल हो रहा था। जव जव खांसी रुकती तो वह ऊंचे ऊंचे उसासें भरती। ऐसा लगता जैसे चीख़ रही हो। लाल वालों वाली मोटी औरत घुटने ऊपर को उठाये पीठ के वल लेटी थी और मज़े से ऊंची ऊंची आवाज़ में अपना सपना सुना रही थी। जिस वुढ़िया को आग लगाने के जुर्म में क़ैद किया गया था, वह देव-प्रतिमा के सामने खड़ी वार वार सिर निवा रही थी और छाती पर क्रॉस का चिन्ह वना रही थी, और एक ही वाक्य को वार वार गुनगुना रही थी। पादरी की वेटी अपने तख़्ते पर बैठी थकी हुई, उनींदी आंखों से सामने देखे जा रही थी। छवीली अपने चिकने, काले, खुरदरे वालों को अपनी उंगलियों के इर्द-गिर्द लपेटे जा रही थी।

गलियारे में किसी के घिसटते जूतों की आवाज़ आयी। दरवाज़ा खुला और दो क़ैदी कोठरी में दाख़िल हुए। दोनों ने जाकेटें और भूरे रंग

की पतलूनें पहन रखी थीं जो उनके टखनों तक भी नहीं पहुंच पा रही थीं। चेहरों से वे गंभीर और खीजे हुए से लग रहे थे। वे अन्दर आये और बदबू से भरा टब उठा कर बाहर ले गये। औरतें मुंह हाथ धोने के लिए बरामदे में चली गईं जहां पानी के नल लगे थे। वहां पर भी लाल बालों वाली औरत ने एक दूसरी औरत के साथ झगड़ना शुरू कर दिया जो किसी दूसरी कोठरी में से आयी थी। एक बार फिर गाली-गलौज, चीख़ना-चिल्लाना, शिकवा-शिकायत शुरू हो गया।

"क्या चाहती हो, अकेली कोठरी में डाल दूं?" एक जेलर ने चिल्ला कर कहा और ज़ोर से लाल बालों वाली की नंगी, मोटी पीठ पर चपत जमाई। आवाज़ बरामदे भर में गूंज गई। "ख़बरदार जो फिर मैंने तुम्हें लड़ते देखा तो!"

"अरे, बूढ़ा तो चुहलें करता है!" लाल बालों वाली औरत बोली। चांटे को वह लाड़-प्यार समझ रही थी।

"जल्दी करो, गिरजे के लिए तैयार हो जाओ।"

मास्लोवा मुश्किल से कपड़े पहन कर बालों में कंघी कर पायी थी कि अपने सहायकों को साथ ले कर इन्स्पेक्टर वहां आ पहुंचा।

"जांच के लिए हाज़िर होओ!" एक जेलर ने चिल्ला कर कहा।

अन्य कोठरियों में से भी क़ैदी निकल निकल कर आने लगे। बरामदे में सभी औरतें दो लाइनें बना कर खड़ी हो गईं। प्रत्येक स्त्री ने अपने दोनों हाथ सामने वाली स्त्री के कन्धों पर रखे। इस के बाद क़ैदियों की गिनती हुई।

जांच के बाद एक वार्डर-स्त्री क़ैदियों को गिरजे की ओर ले जाने लगी। अलग अलग कोठरियों में से आयी लगभग एक सौ क़ैदी स्त्रियों की लाइन आगे बढ़ने लगी। इस लाइन के मध्य में मास्लोवा और फ़ेदोस्या एक साथ चली जा रही थीं। लगभग सभी स्त्रियों ने सफ़ेद घाघरे और सफ़ेद जाकेटें पहन रखी थीं और सिर पर सफ़ेद रूमाल बांध रखे थे। कुछेक ने अपने रंगदार कपड़े पहन रखे थे। ये वे औरतें थीं जिनके पति साइबेरिया भेजे जा रहे थे और ये भी उनके साथ, अपने बाल-बच्चों को ले कर साइबेरिया जा रही थीं। सीढ़ियों पर, ऊपर से नीचे तक, क़ैदियों की लाइन लगी हुई थी। जूतों की हल्की हल्की टप-टप के साथ बातें करने की आवाज़

ग्रौर किसी किसी वक़्त हंसने की ग्रावाज़ सुनाई देती। मोड़ पर पहुंच कर मास्लोवा को ग्रपनी दुश्मन बोच्कोवा की सड़ियल सूरत नज़र ग्राई। वह ग्रागे ग्रागे जा रही थी। मास्लोवा ने ग्रपनी साथिन फ़ेदोस्या को इशारा कर के उसे दिखाया। सीढ़ियों पर से उतरते हुए ग्रौरतें चुप हो गई ग्रौर सिर निवाते ग्रौर क्रॉस का चिन्ह बनाते हुए गिरजे के ग्रन्दर दाख़िल होने लगीं। गिरजे में ग्रभी तक कोई न था। सुनहरी मुलम्मे से गिरजा चमचमा रहा था। ग्रौरतों की जगह दायें हाथ को थी ग्रौर वे धक्का-मुक्की करती हुई वहां खड़ी होने लगीं।

स्त्रियों के बाद पुरुष क़ैदी ग्रन्दर ग्राने लगे। उन्होंने भूरे रंग के लबादे पहने रखे थे। इनमें कई तरह के क़ैदी थे: कुछ यहां जेल में ग्रपनी सज़ा काट रहे थे, ग्रौर कुछ वे जिन्हें ग्राम-पंचायतों द्वारा साइबेरिया भेजा जा रहा था। ज़ोर ज़ोर से खांसते हुए वे गिरजे के मध्य में ग्रौर बाईं ग्रोर भीड़ बना कर खड़े हो गये।

ऊपर की गैलरी में एक तरफ़ को वे क़ैदी खड़े थे जिन्हें साइबेरिया में कड़ी मशक़्क़त की सज़ा दी गई थी। इन्हें सबसे पहले गिरजे में लाया गया था। सबके ग्राधे ग्राधे सिर मुंडे हुए थे, ग्रौर उनके पांवों में से बेड़ियों के खनकने की ग्रावाज़ ग्रा रही थी। गैलरी की दूसरी ग्रोर वे क़ैदी थे जिन्हें हवालात में रखा गया था। इनके पांवों में बेड़ियां नहीं थीं, ग्रौर न ही इनके सिर मुंडे हुए थे।

जेलख़ाने के इस गिरजे का निर्माण ग्रौर साज-सजावट एक व्यापारी के पैसों से की गई थी, जिसने हज़ारों रूबल इस पर ख़र्च कर दिये थे। तरह तरह के शोख़ रंगों ग्रौर सुनहरी मुलम्मे से गिरजा चमचमा रहा था।

कुछ देर तक गिरजे में चुप्पी छायी रही। केवल खांसने-कखारने, नाक साफ़ करने, बच्चों के रोने ग्रौर किसी किसी वक़्त बेड़ियों के खनकने की ग्रावाज़ें ग्रा रही थीं। ग्राख़िर गिरजे के मध्य में खड़े क़ैदी हिलने लगे ग्रौर एक दूसरे को धकेलने लगे, गिरजे के ऐन बीचोंबीच एक रास्ता सा बन गया। इस रास्ते पर इन्स्पेक्टर चलता हुग्रा ग्राया ग्रौर गिरजे के मध्य में क़ैदियों के ग्रागे ग्रा कर खड़ा हो गया।

उपासना आरंभ हुई।

उपासना इस तरह थी: पादरी ने अजीब सा ज़री का जामा पहना। इस जामे को पहन कर खड़े होना आसान न था। फिर उसने एक तश्तरी में डबलरोटी के छोटे छोटे टुकड़े किये, और उन्हें शराब से भरे एक प्याले में डाल दिया। सारा वक़्त वह प्रार्थना के शब्द गुनगुनाता रहा और अलग अलग नाम लेता रहा। इसी बीच डीकन ने स्लावोनिक भाषा में प्रार्थना की। एक तो उसे समझना यों भी कठिन था, दूसरे डीकन इतनी तेज़ी से पढ़ रहा था कि कुछ भी पल्ले नहीं पड़ता था। प्रार्थना की इन्हीं सूक्तियों को उसने बाद में क़ैदियों के साथ गा गा कर दोहराया। प्रार्थना में ज़ार और उसके परिवार के स्वास्थ्य की कामना की गई थी। प्रार्थना की इन उक्तियों को बार बार दोहराया गया, अकेले में भी और अन्य उक्तियों के साथ मिला कर भी। सारा वक़्त लोग घुटने टेके रहे। इसके अतिरिक्त डीकन ने धर्मदूतों के कर्म-ग्रन्थ में से कुछेक पद पढ़ कर सुनाये। उसकी आवाज़ में इतना तनाव था कि उन्हें समझना असंभव था। इसके बाद स्वयं पादरी ने इंजील में से संत मार्क के उपदेश का एक अंश बड़ी साफ़ आवाज़ में पढ़ा। इस में ईसा के पुनर्जागरण का उल्लेख था। पुनर्जागरण के पश्चात् ईसा उड़कर स्वर्ग जाने और वहां पर अपने पिता अर्थात परमात्मा के दायें हाथ पर बैठने से पूर्व मरियम मैग्डेलीन से मिले, जिसके शरीर में से उन्होंने सात दुष्टात्माओं को निकाल भगाया। तत्पश्चात वह अपने ग्यारह अनुयाइयों से मिले और उन्हें आदेश दिया कि वे संसार भर में उनकी वाणी का प्रचार करें, और कहा कि जो इंजील में विश्वास नहीं करेगा उसका सर्वनाश होगा, और जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसकी भगवान् रक्षा करेंगे और वह अपने स्पर्श द्वारा लोगों को रोगमुक्त और उनके शरीर में से पिशाचों को भगायेगा, नयी भाषाओं में बात करेगा, सांपों को पकड़ेगा और यदि वह विषपान भी करेगा तो मरेगा नहीं, अपितु जीता-जागता और स्वस्थ रहेगा।

उपासना का सार यह था कि डबलरोटी के जो छोटे छोटे टुकड़े पादरी ने तोड़ तोड़ कर शराब में डाले हैं, उन पर जब विशेष रीति से प्रार्थना की जायेगी, तथा विधिवत् कृत्य सम्पन्न किया जायेगा, तो डबलरोटी

के टुकड़े भगवान् के मांस के टुकड़े बन जायेंगे और शराब ख़ून में बदल जायेगी। कृत्य इस तरह था: पादरी सुनहरी ज़री का जामा पहने, बार बार हाथ ऊपर को उठाता—जामे के कारण हाथ उठाना कठिन हो रहा था—फिर घुटने टेक देता और मेज़ को चूमता, और मेज़ पर रखी प्रत्येक चीज़ को चूमता। परन्तु कृत्य की मुख्य क्रिया यह थी कि पादरी एक कपड़े को दो सिरों से पकड़ कर सोने के प्याले और चांदी की तश्तरी के ऊपर हल्के हल्के और एक लय में झुलाता। अनुमान किया जाता था कि ऐन इसी वक़्त डबलरोटी मांस में और शराब ख़ून में परिवर्तित हुई है। इसी लिए कृत्य का यह भाग बड़ी गंभीरता से सम्पन्न किया गया।

फिर पार्टीशन के पीछे से पादरी की आवाज़ आई— "अब भगवान् की परम भाग्यशालिनी, परमपावन, परमपवित्र मां के हेतु!" इस पर संगीत मण्डली बड़ी गंभीरता से गाने लगी। गीत में यह कहा गया था कि माता मरियम का यशोगान सर्वथोचित है, क्योंकि ईसा को अपने शरीर में धारण करने के पश्चात् भी उसका कौमार्य भंग नहीं हुआ। अतः वह फ़रिश्तों से कहीं अधिक माननीय है और देवदूतों से कहीं अधिक कीर्ति के योग्य है। माना जाता था कि इस गान के बाद परिवर्तन सम्पन्न हुआ। पादरी ने तश्तरी पर से कपड़ा उठाया। उस पर रखे डबलरोटी के टुकड़ों में से बीच वाले टुकड़े को काट कर चार हिस्से किये, फिर एक हिस्से को उठाया, उसे पहले शराब में भिगोया और फिर अपने मुंह में डाल लिया। इसका अर्थ था कि उसने भगवान् का मांस खाया है और ख़ून पिया है। इसके बाद पादरी ने एक पर्दा गिराया, और पार्टीशन के बीच का दरवाज़ा खोल कर हाथ में सोने का प्याला उठाये वह बीच वाले दरवाज़े में से बाहर आ गया, और लोगों को निमन्त्रण देने लगा कि जिसकी इच्छा हो, वह आये और भगवान् का मांस खाये और खून पिये।

कुछेक बच्चों की ऐसा करने की इच्छा हुई।

पादरी ने बच्चों के नाम पूछे। फिर चमचे से शराब में भीगा एक डबलरोटी का टुकड़ा प्याले में से निकाला और एक बच्चे के गले में दूर ले जाकर डाल दिया। फिर बारी बारी सभी बच्चों के गले में डाला। डीकन ने बच्चों के मुंह पोंछे, और पोंछते हुए ऊंची ऊंची आवाज़ में बड़े आनन्द से गाने लगा कि बच्चे भगवान् का मांस खा रहे हैं और ख़ून पी रहे हैं। इसके बाद प्याला उठाये पादरी पार्टीशन के पीछे चला गया

और वहां जा कर भगवान् के मांस के सभी बचे हुए टुकड़े ख़ुद खा लिये, ख़ून पी लिया और प्याला और मूंछें अच्छी तरह साफ़ कर के, बड़ी प्रसन्नता से, तेज़ तेज़ क़दम रखता हुआ बाहर आ गया। पांवों में उसने बछड़े की खाल के जूते पहन रखे, जो चलते वक्त ख़ूब चरमराते थे।

उपासना का सबसे ज़रूरी भाग सम्पन्न हो चुका था। परन्तु इन अभागे क़ैदियों को सान्त्वना देने के लिए पादरी ने साधारण उपासना के साथ एक छोटी सी उपासना और जोड़ दी। वह चलता हुआ देव-प्रतिमा के पास गया जिस पर सोने का मुलम्मा चढ़ा हुआ था और जिसके हाथ और मुंह काले रंग के थे। उसके आगे दर्जन के लगभग मोमबत्तियां जल रही थीं। यह उसी भगवान् की प्रतिमा थी जिसका मांस पादरी अभी अभी खा कर हटा था। देव-प्रतिमा के सामने खड़े हो कर वह अनोखी, फटी हुई आवाज़ में गुनगुनाने और गाने लगा—

"हे यीसु! सबसे प्यारे यीसु! धर्मदूतों ने जिसका यशोगान किया, हुतात्माओं ने जिसका गुणगान किया। हे सर्वशक्तिमान, राजाधिराज, मेरी रक्षा करो! मेरे मुक्तिदाता यीसु, सबसे सुन्दर यीसु इस याचक की रक्षा करो! हे मुक्तिदाता, हे आराधना के पुत्र यीसु, अपने सभी सन्तों की, सभी पैग़म्बरों की रक्षा करो, उन्हें स्वर्ग के आनन्द का अधिकारी बनाओ, हे यीसु! तुम्हारे हृदय में सभी मनुष्यों के प्रति प्रेम है!"

फिर वह चुप हो गया, एक गहरी सांस खींची, छाती पर क्रॉस का चिन्ह बनाया और ज़मीन तक सिर निवा लिया। गिरजे में खड़े सभी लोगों ने—इन्स्पेक्टर, वार्डर, क़ैदी—सभी ने ऐसा ही किया। ऊपर बड़ी देर तक बेड़ियां खनखनाती रहीं।

पादरी की प्रार्थना अब भी चल रही थी—"हे देवदूतों के जन्मदाता, तुम सभी शक्तियों के स्वामी हो, तुम सबसे अद्भुत, सर्वशक्तिमान, देवदूतों को अपने प्रताप से चकित करने वाले, तथा हमारे पुरखाओं को उबारने वाले हो! हे यीसु, तुम सबसे प्यारे हो, हमारे बड़ों ने तुम्हारा यशोगान किया है! हे यीसु, तुम्हारी महिमा अपरम्पार है, तुम राजाओं को शक्ति प्रदान करते हो। हे सर्वश्रेष्ठ यीसु, तुमने पैग़म्बरों को सिद्धि प्रदान की है! हे यीसु, तुम सबसे अद्भुत हो, तुमने हुतात्माओं को शक्ति प्रदान की है। हे यीसु, तुम सबसे विनम्र हो, धर्मभिक्षुओं के आनन्द का स्रोत

हो। हे यीसु, तुम दयालुता की मूर्ति हो, पादरियों की आंख का तारा हो। हे कृपानिधान, तुम व्रतधारियों को संयम प्रदान करते हो। हे सर्वप्रिय यीसु, सभी न्यायप्रिय व्यक्तियों के लिए तुम आनन्द का स्रोत हो! हे परमपावन यीसु, तुम ब्रह्मचारियों का ब्रह्मचर्य हो। हे यीसु, आदि काल से तुम पापियों का उद्धार कर रहे हो! हे यीसु, भगवान् के पुत्र, मुझ पर कृपादृष्टि रखो!"

हर बार "यीसु" शब्द के साथ "स" की आवाज़ और अधिक ज़ोर से सीटी की तरह निकलती। अन्त में वह चुप हो गया। फिर अपना वस्त्र उठा कर, जिसके नीचे रेशम का अस्तर लगा था, वह एक घुटने के बल झुक गया और ज़मीन तक सिर निवाया। संगीत मण्डली ने फिर गीत आरंभ किया—"भगवान् के बेटे यीसु, हम पर कृपादृष्टि रखो!" क़ैदियों ने भी घुटनों के बल झुक कर माथा निवाया। फिर उठे, सिर के आधे हिस्से पर जो बाल बच रहे थे, उन्हें झटक कर पीछे किया। बेड़ियां फिर खनकीं जिनसे क़ैदियों के टखने ज़ख्मी हो रहे थे।

यही कुछ बड़ी देर तक चलता रहा। पहले महिमागान हुआ, जिसके अन्तिम शब्द थे—"हम पर कृपादृष्टि रखो!" इसके बाद और महिमागान हुआ, जिसके अन्त में "अल्लेलूइया" कहा गया। क़ैदियों ने क्रॉस का चिन्ह बनाया, सिर निवाया और ज़मीन पर गिरे। पहले वे हर वाक्य के बाद और बाद में हर दूसरे और हर तीसरे वाक्य के बाद सिर निवाते रहे। सभी ख़ुश थे कि महिमागान समाप्त हुआ। पादरी ने भी पोथी बन्द की, और चैन की सांस लेते हुए पार्टीशन के पीछे चला गया। हां, एक क्रिया अभी और बाक़ी थी। पादरी ने एक मेज़ पर से बड़ा सा क्रॉस उठाया और उसे ले कर गिरजे के ऐन बीचोंबीच आ कर खड़ा हो गया। क्रॉस पर सोने का मुलम्मा चढ़ा हुआ था और दोनों सिरों पर इनेमल के पदक लगे थे। सबसे पहले इन्स्पेक्टर ने आगे बढ़ कर उसका चुम्बन किया, उसके बाद छोटे इन्स्पेक्टर और वार्डरों ने। और इसके बाद क़ैदी, एक दूसरे को धकेलते, कोहनियां मारते, और एक दूसरे को दबी आवाज़ में गालियां देते हुए आगे बढ़ बढ़ कर उसे चूमने लगे। पादरी इन्स्पेक्टर से बातें करने लगा। जिस हाथ में उसने क्रॉस को पकड़ रखा था उसे क़ैदियों की ओर बढ़ा दिया। कभी उसे क़ैदियों के मुंह के सामने ले जाता, कभी उनके नाक के सामने। क़ैदी क्रॉस को भी चूमने की कोशिश कर रहे थे और पादरी

के हाथ को भी। इस भांति ईसाई धर्म की यह उपासना सम्पन्न हुई, जिसका अभिप्राय अपने उन भाइयों को उवारना और सान्त्वना प्रदान करना था जो सन्मार्ग से भटक गये थे।

४०

पादरी और इन्स्पेक्टर से ले कर मास्लोवा तक, वहां खड़े सभी लोगों में से किसी को भी यह ख़्याल नहीं आया कि जिस यीसु का नाम पादरी वार वार ले रहा था, और इन विचित्र शब्दों में जिसका गुणगान कर रहा था, उस यीसु ने उन सभी वातों की मनाही कर दी थी जो यहां पर की जा रही थीं। यह कोलाहल सर्वथा निरर्थक था। रोटी और शराव के ऊपर किया गया मन्त्रपाठ पाखण्डपूर्ण था। यीसु ने न केवल इसकी मनाही कर रखी थी, वल्कि वड़े स्पष्ट शव्दों में आदेश दिया था कि कोई किसी को अपना गुरू न पुकारे, मन्दिरों में जा कर उपासना नहीं करे। उसकी यह शिक्षा थी कि सभी एकान्त में उपासना करें। उसने मन्दिरों के वनाने तक की मनाही कर दी थी और कहा था कि मैं उनका नाश करने के लिए संसार में आया हूं। उसकी शिक्षा थी कि सच्ची उपासना मन्दिरों में नहीं, वरन् हृदय में तथा सत्याचरण में होती है। उसका आदेश था कि कोई किसी का न्याय नहीं करे, किसी को क़ैद नहीं करे, यन्त्रणा नहीं पहुंचाये, फांसी नहीं लगाये, और ये सव कार्य यहां पर किये जा रहे थे। उसका आदेश था कि किसी प्रकार की हिंसा नहीं की जाय। मैं वन्दियों को मुक्त कराने आया हूं—यह उसका कथन था।

किसी ने नहीं सोचा कि जो कुछ यहां हो रहा है, वड़े से वड़ा पाखण्ड है, उस ईसा का अपमान है जिसके नाम पर ये क्रियाएं की जा रही हैं। किसी को यह ख़्याल नहीं आया कि जिस सोने चढ़े और पदकों से सजे क्रॉस को पादरी चूमने के लिए लोगों के सामने वढ़ा रहा था, यह उसी फांसी के तख़्ते का प्रतीक है जिस पर ईसा को लटकाया गया था, इसलिए कि ईसा ने इन सव कार्यों का विरोध किया था जो आज यहां पर किये जा रहे थे। ये पादरी यह सोचते हैं कि वे भगवान् का मांस खाते और ख़ून पीते हैं। वास्तव में वे सचमुच उसका मांस खाने और ख़ून पीने के अपराधी हैं। इसलिए नहीं कि वे रोटी के टुकड़े खाते और शराव पीते रहे

हैं बल्कि इसलिए कि वे उन निरीह लोगों को अपने जाल में फंसा रहे हैं जिन्हें ईसा ने अपने भाई माना था, उन्हें सभी सुखों से वंचित कर रहे हैं, उन्हें क्रूरतम यन्त्रणा पहुंचा रहे हैं और जिस महान सुख का सन्देश वह संसार में लाया था उसे लोगों से छिपा रहे हैं। यह ख़्याल वहां खड़े किसी आदमी को भी नहीं आया।

पादरी का अन्तःकरण साफ़ था। वह अपना काम सन्तोष के साथ किये जा रहा था। उसे बचपन से यही सिखाया गया था कि यही एकमात्र सच्चा धर्म है। प्राचीन काल में सर्वोत्कृष्ट लोगों का यही मत था और आज भी राज्य तथा धर्म के सभी अधिकारी इसी मत के अनुयायी हैं। वह यह नहीं मानता था कि रोटी सचमुच मांस में परिणत हो जाती है, या कुछेक शब्दों को बार बार दोहराने से आत्मा का उद्धार होता है, या डबलरोटी और शराब के सेवन से उसने सचमुच भगवान् के एक अंश को अपने अन्दर ग्रहण किया है। किसी को भी यह यक़ीन नहीं हो सकता था। लेकिन पादरी को यह विश्वास था कि इसमें यक़ीन करना चाहिए। और यह विश्वास और भी दृढ़ इसलिए हो पाता था कि धर्म की इन मांगों को पूरा करते हुए पिछले १८ साल से वह अच्छे पैसे कमा रहा था, जिससे वह एक बड़े परिवार का लालन-पालन कर पाया था, अपनें बेटे को जिम्नेज़ियम में और अपनी बेटी को एक कन्यापाठशाला में भेज पाया था जिसमें पादरियों की बेटियां पढ़ती थीं। डीकन का भी विश्वास इसी तरह का था, बल्कि उसकी आस्था पादरी की आस्था से भी अधिक दृढ़ थी। धर्म के सिद्धान्तों का सार वह कब का भूल चुका था। वह केवल इतना जानता था कि उसकी सभी प्रार्थनाओं का, पितरों के लिए की गई प्रार्थनाओं, सामूहिक प्रार्थनाओं, एकेथिस्टस के साथ या उसके बिना की गई प्रार्थनाओं—सबका निश्चित मूल्य है। और यह मूल्य सच्चे ईसाई बड़ी ख़ुशी से चुका देते हैं। इसलिए वह बड़े उत्साह से "कृपादृष्टि रखो! कृपादृष्टि रखो, भगवान्!" का उच्चारण किया करता था। निर्धारित सूत्रों तथा उक्तियों को आवश्यक मानता था और उनका पाठ पूरी निष्ठा से करता था, उसी तरह जिस तरह दूकानदार लोग ईंधन, आटा और आलू बेचते हैं। जेल का इन्स्पेक्टर तथा वार्डर लोग इन सिद्धान्तों को या गिरजे में होने वाली क्रियाओं को नहीं समझते थे, न ही उन्होंने कभी इनपर विचार किया था। फिर भी वे समझते थे कि उन्हें ज़रूर इनमें विश्वास

करना चाहिए क्योंकि ऊंचे पदाधिकारी, स्वयं ज़ार बादशाह तक इनमें विश्वास रखते हैं। साथ ही एक धूमिल सा विचार भी उनके मन में था (जिसका कारण वे नहीं जानते थे)—इस धर्म में विश्वास रखते हुए वे अपना अमानुषिक धन्धा बेधड़क हो कर किये जा सकते हैं, कि यह धर्म उनकी पीठ ठोंकता है। यदि यह विश्वास न होता तो वे लोगों पर अपनी पूरी शक्ति से ज़ुल्म नहीं ढा सकते थे, जैसा कि वे अब शुद्ध अन्त:करण के साथ कर सकते थे। इस विश्वास के बिना ऐसा करना कठिन होता, शायद असंभव होता। इन्स्पेक्टर तो ऐसा दयालु-स्वभाव पुरुष था कि यदि उसमें विश्वास की दृढ़ता न होती तो उसके लिए इस प्रकार जीना कठिन हो जाता। इसी लिए वह वड़े उत्साह के साथ सीधा खड़ा होता, सिर निवाता और छाती पर क्रॉस का चिन्ह बनाता। जिस समय देवदूतों का गीत गाया जा रहा था, उस समय उसने पूरी कोशिश की कि उसकी आंखों में आंसू आ जायं। और जब बच्चों ने पादरी से भगवान् के मांस और ख़ून को ग्रहण किया तो उसने एक वच्चे को स्वयं बांहों में उठा कर पादरी के सामने किया था।

अधिकांश क़ैदी समझते थे कि इन सुनहरी प्रतिमाओं, पादरी के वस्त्रों, मोमबत्तियों, प्यालों, क्रॉसों तथा "मधुरतम यीसु" तथा "कृपादृष्टि रखो" ऐसे गोपनीय शब्दों में कोई रहस्यपूर्ण शक्ति विद्यमान है, जिससे उन्हें लोक में तथा परलोक में सुख की प्राप्ति हो सकती है। केवल कुछेक ही लोग स्पष्टतया उस धोखाधड़ी को देख पाते थे जो इस मत के अनुयाइयों के साथ की जाती थी। मन ही मन में वे हंसते थे। परन्तु अधिकांश लोगों ने प्रार्थनाओं, प्रीतिभोजों और मोमबत्तियों इत्यादि से, वांछित सुख प्राप्त करने की कुछेक वार कोशिश की। उन्हें सुख नहीं मिला, भगवान् ने उनकी प्रार्थनाएं नहीं सुनीं। फिर भी वे यही समझते रहे कि उनकी असफलता किसी आकस्मिक कारणवश रही होगी। उन्हें विश्वास था कि यह संस्था, जिसे शिक्षित समुदाय का तथा बड़े बड़े पादरियों का समर्थन प्राप्त है, बड़ी महत्वपूर्ण तथा आवश्यक है, यदि लोक के लिए नहीं तो परलोक के लिए तो ज़रूर ही है।

मास्लोवा का भी यही विश्वास था। और लोगों की तरह उसमें भी एक मिश्रित सी भावना उठती थी, भक्ति की तथा ऊब की। पहले तो वह डंडहरे के पीछे भीड़ में खड़ी रही, पर इस तरह वह केवल अपने

साथियों को ही देख पाती थी, और किसी को नहीं। लेकिन जब कम्युनियन ग्रहण करने वाली स्त्रियां आगे बढ़ गई तो वह और फ़ेदोस्या दोनों आगे चली आई। यहां से उन्होंने इन्स्पेक्टर को देखा, और उसके पीछे जहां वार्डर खड़े थे, एक छोटे से किसान को भी खड़े देखा जिसके छोटी सी दाढ़ी और सिर पर सुनहरी बाल थे। यह आदमी फ़ेदोस्या का पति था और एकटक अपनी पत्नी की ओर देखे जा रहा था। अकाथिस्टस के समय मास्लोवा बड़े ग़ौर से उसकी ओर देखती रही और फ़ेदोस्या के साथ दबी आवाज़ में बातें करती रही। जिस वक़्त सब लोग सिर निवाते और क्रॉस का चिन्ह बनाते तो वह भी बना लेती थी।

४१

नेख़्लूदोव घर से जल्दी ही निकल पड़ा। गली में एक किसान, जो गांव से दूध बेचने आया था, एक छकड़े पर बैठा, अजीब से लहजे में बराबर चिल्लाये जा रहा था—"दूध! दूध, ले लो दूध! दूध!"

पिछले ही दिन वसन्त की पहली स्निग्ध वर्षा हुई थी। जहां कहीं भी पटरी नहीं बिछी थी, हरी हरी घास लहरा रही थी। बाग़ों में बर्च के वृक्ष हरियाली की ओढ़नी ओढ़े थे, बर्ड-चेरी और पोपलर के पेड़ों के लम्बे लम्बे महकभरे पत्ते निकल रहे थे। लोग अपनी दूकानों और घरों में खिड़कियों के दोहरे चौखटों में से अन्दर वाले चौखटे उतार रहे थे जो उन्होंने सर्दी के मौसम के लिए लगा रखे थे और खिड़कियां साफ़ कर रहे थे। फेरी बाज़ार में, जहां से नेख़्लूदोव को हो कर जाना था, दूकानों की क़तार के सामने अभी से लोगों की भीड़ उमड़ रही थी।

फटे-पुराने कपड़े पहने कुछ लोग ऊंचे बूट बग़ल में दबाये और लोहा की हुई पैंटें और जाकेटें कंधे पर डालकर बेचते फिर रहे थे।

अपनी फ़ैक्ट्रियों से छुटकारा पा कर मज़दूर स्त्री-पुरुष ढाबों के पास भीड़ लगाये खड़े थे। स्त्रियां सिर पर चटकीले रंगों वाले रेशमी रूमाल बांधे व कांच के मोती लगे कोट पहने थीं, पुरुष साफ़ सुथरे लंबे कोट और चमकीले ऊंचे बूट डाटे थे। अपनी पिस्तौलों की पीली डोरियां चमकाते सिपाही इस ताक में खड़े थे कि कोई गड़बड़ हो और वे अपनी ऊब भगा

पायें। चौड़ी सड़कों की पटरियों पर तथा हरी हरी घास पर छोटे छोटे बच्चे और कुत्ते इधर-उधर भाग-दौड़ रहे थे और दाइयां बेंचों पर बैठी, मज़े से गप्पें हांक रही थीं।

बायीं ओर, जहां साया था, सड़कें अभी भी नम और ठण्डी थीं, लेकिन बीच में से वे सूख गयी थीं। गड़गड़ाते बोझल छकड़े, खड़खड़ करती बग्घियां और टनटन करती ट्रॉम-गाड़ियां लगातार आ जा रही थीं। इस तरह तरह के शोर और गिरजों के घंटों की गूंज से वातावरण कंपित हो रहा था। गिरजों के घंटे लोगों को ईश्वर के वैसे ही महिमा-जय में भाग लेने के लिए बुला रहे थे, जैसा इस समय जेल में हो रहा था और लोग अपने अपने गिरजों की ओर सजे-धजे चले जा रहे थे।

बग्घी वाले ने नेख़्लूदोव को जेल तक न ले जा कर, जेल से पहले मोड़ पर ही उतार दिया।

इसी मोड़ पर, जेल से लगभग सौ क़दम की दूरी पर कुछेक स्त्रियां और पुरुष खड़े थे। अधिकांश बण्डल उठाये थे। दायें हाथ लकड़ी के नीचे से मकान थे। बायें हाथ एक दो मंज़िला इमारत थी जिसके बाहर एक बोर्ड लगा था। सामने ही जेलख़ाने की, ईंटों की बनी, भीमकाय इमारत थी, लेकिन आगन्तुकों को उसके पास जाने की इजाज़त नहीं थी। उसके सामने ही एक सन्तरी ड्यूटी दे रहा था। जो भी आदमी उसके पास से निकल कर जेलख़ाने की तरफ़ जाने की कोशिश करता, उसे वह रोक देता।

लकड़ी के घरों के बाहर, सन्तरी के ऐन सामने एक वार्डर वर्दी पहने बेंच पर बैठा था। उसकी वर्दी पर सुनहरी पाइपिंग लगी थी, और उसके हाथ में एक कॉपी थी। मुलाक़ाती उसके पास जा कर क़ैदियों के नाम बताते जिनसे वे मिलने आये हैं, और वह अपनी कॉपी में उनके नाम दर्ज कर लेता। नेख़्लूदोव भी उसके पास गया और येकातेरीना मास्लोवा का नाम बताया। वार्डर ने नाम लिख लिया।

"अन्दर क्यों नहीं जाने देते?" नेख़्लूदोव ने पूछा।

"गिरजे में उपासना हो रही है। जब ख़त्म हो जायेगी तो अन्दर जाने देंगे।"

नेख़्लूदोव घूम कर मुलाक़ातियों की भीड़ में आ मिला। फटे पुराने कपड़े पहने एक आदमी, नंगे पांव, सिर पर मुचड़ा हुआ टोप रखे, भीड़

से अलग हो कर जेलख़ाने की ओर जाने लगा। उसका चेहरा लाल लाल रेखाओं से भरा पड़ा था।

"अबे ओ! किधर चला?" बन्दूक़ वाले सन्तरी ने पुकारा।

"अरे तो चिल्ला क्यों किया है," फटे हाल आदमी ने ज़रा भी झेंपे बिना जवाब दिया, और लौट आया। "नहीं जाने देता तो ना सही, इंतज़ार कर लूंगा। देखियो तो बड़ा आया है, जनरल चिल्लाने वाला!"

लोग हंसने लगे। उन्हें उसकी बात पसन्द आई थी। अधिकांश लोगों के तन पर ढंग के कपड़े न थे, कुछेक तो बिल्कुल फटे-पुराने कपड़े पहने थे। लेकिन उसी भीड़ में कुछेक स्त्रियां-पुरुष भले घरों के जान पड़ते थे। नेख़्लूदोव के साथ ही एक हट्टा-कट्टा आदमी खड़ा था। चेहरा सफ़ाचट और लाल-लाल, हाथ में एक बण्डल उठाये हुए था जिसमें प्रत्यक्षत: नीचे पहनने वाले कपड़े रखे थे। नेख़्लूदोव ने उससे पूछा कि क्या वह पहली बार यहां आया है। वह बोला कि नहीं, वह हर इतवार यहां आता है। बातें चल पड़ीं। वह किसी बैंक में चौकीदार था। यहां वह अपने भाई से मिलने आया था जिसे जालसाज़ी के जुर्म में पकड़ा गया था। यह आदमी इतने सरल स्वभाव का था कि उसने नेख़्लूदोव को अपनी सारी जीवन-कहानी कह सुनाई। सुना चुकने पर उसने नेख़्लूदोव से उसकी राम-कहानी सुनाने को कहा। लेकिन उसी वक़्त एक छोटी बग्घी वहां आ पहुंची जिसमें एक विद्यार्थी और एक युवती बैठे थे। युवती के हैट से जाली गिर कर उसके मुंह पर पड़ रही थी। बग्घी के पहियों पर रबड़ के टायर थे और आगे एक बड़ा नस्ली घोड़ा जुता हुआ था। लड़के के हाथ में एक बड़ा सा बण्डल था। उस बण्डल में डबलरोटियां थीं। नेख़्लूदोव से आ कर बोला कि वह इन डबलरोटियों को क़ैदियों में बांटना चाहता है। क्या बांटने की इजाज़त होगी? यदि इजाज़त होगी तो किस भांति बांटना होगा? उसके साथ जो युवती आयी थी, वह उसकी मंगेतर थी। उसी की इच्छा से वह यहां आया था। उसके माता-पिता ने परामर्श दिया था कि क़ैदियों को कुछ दान कर आयें।

"मैं ख़ुद आज पहली बार यहां आया हूं" नेख़्लूदोव ने कहा, "मुझे मालूम नहीं है। पर तुम उस आदमी से दरयाफ़्त करो।" और उसने दायीं तरफ़ बैठे वार्डर की ओर इशारा किया जिसकी वर्दी पर सुनहरी पाइपिंग लगी थी, और हाथ में कॉपी पकड़े हुए था।

वे बातें कर ही रहे थे कि जेल का लोहे का फाटक खुला, जिसमें एक खिड़की थी, और एक बावर्दी अफ़सर बाहर निकल कर आया। उसके पीछे पीछे एक और वार्डर भी बाहर आया। जिस जेलर के हाथ में कॉपी थी, उसने पुकार कर कहा कि अब मुलाक़ाती अन्दर जा सकते हैं। सन्तरी हट कर एक तरफ़ को खड़ा हो गया, और लोग लपक कर फाटक की ओर दौड़े, मानो उन्हें डर हो कि कहीं देर न हो जाय। मुलाक़ाती अन्दर जाने लगे। एक वार्डर दरवाज़े के पास खड़ा उन्हें ऊंची ऊंची आवाज़ में गिनने लगा—सोलह, सत्तरह, इत्यादि। अन्दर की तरफ़ एक और वार्डर खड़ा अगले दरवाज़े से अन्दर जाते मुलाक़ातियों को छू छू कर गिन रहा था, ताकि जब ये लोग वापस लौट कर आयं, तो इनमें से कोई भी पीछे जेल में न रह जाय, और कोई क़ैदी बाहर न निकल जाय। इस वार्डर ने यह देखे बिना कि कौन गुज़र रहा है, नेख़्लूदोव की पीठ पर हाथ मारा और वार्डर का यह स्पर्श शुरू में उसे अपना अपमान लगा, लेकिन यह याद कर के कि किस काम के लिए यहां आया है, उसे अपनी इस नाराज़गी और अपमान की भावना पर लज्जा होने लगी।

दरवाज़ों में से निकल कर सामने एक बड़ा, मेहराबदार कमरा था। इसकी खिड़कियां छोटी छोटी थीं और उन पर लोहे के सीखचे लगे थे। यह मुलाक़ात का कमरा था। नेख़्लूदोव यह देख कर हैरान रह गया कि कमरे में क्रॉस से लटके ईसा का एक विशालकाय चित्र था।

"इस तसवीर का यहां क्या काम?" उसके मन में सवाल उठा। "ईसा का सम्बन्ध तो आज़ादी से है, न कि क़ैद से।"

धीरे धीरे वह आगे बढ़ने लगा, उन मुलाक़ातियों को रास्ता देता हुआ, जो जल्दी में थे। इस इमारत में वे लोग भी बन्द थे जिन्होंने बुरे काम किये थे। उनके बारे में सोच कर उसका मन भय से कांप उठता। लेकिन जब वह निर्दोष लोगों के बारे में सोचता, जैसे कि कात्यूशा, या वह लड़का जिसे कल ही सज़ा दी गई थी, तो उसके मन में अनुकम्पा उठती। ऐसे लोग भी यहां पर क़ैद थे। कात्यूशा के साथ होने वाली भेंट के बारे में सोच कर उसका हृदय द्रवित हो उठा और हल्की हल्की घबराहट का भास होने लगा। मुलाक़ाती-कमरे के दूसरे सिरे पर एक जेलर खड़ा था। पास से गुज़रते हुए मुलाक़ातियों को वह कुछ कह रहा था। परन्तु नेख़्लूदोव अपने विचारों में खोया हुआ था, उसने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं

दिया। मुलाक़ातियों की भीड़ के पीछे पीछे चलता हुआ औरतों वाले हिस्से में जाने की बजाय मर्द-क़ैदियों वाले हिस्से में जा पहुंचा।

वह सबसे पीछे मुलाक़ाती-कमरे में दाख़िल हुआ। जो लोग जल्दी पहुंचने के लिए उद्विग्न थे, वे आगे बढ़ते गये थे। कमरे का दरवाज़ा खोलते ही नेख़्लूदोव भौचक्का रह गया। अन्दर कोलाहल मचा हुआ था, सौ आदमियों की चीख़ें मिल कर एक कानफाड़ शोर बन गई थीं। पहले तो नेख़्लूदोव की समझ में नहीं आया कि इस शोर का क्या कारण हो सकता है, लेकिन जब वह लोगों के और नज़दीक पहुंचा तो उसने देखा कि सब लोग लोहे की जाली पर टूटे पड़ते हैं जैसे मक्खियां चीनी पर टूटती हैं। तब उसकी समझ में सब बात आ गई। एक नहीं, दो जालियां, फ़र्श से लेकर छत तक, कमरे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लगी थीं, जिनसे कमरे में दो अलग अलग विभाग बन गये थे। दोनों जालियों के बीच सात फ़ुट का गलियारा था, जिसमें वार्डर आगे-पीछे चल रहे थे। जिस दरवाज़े को लांघ कर वह अन्दर आया था, उसके ऐन सामने वाली दीवार में खिड़कियां थीं। नज़दीक वाली जाली के पीछे मुलाक़ाती खड़े थे, और दूर, उनके सामने वाली जाली के पीछे, क़ैदी। दोनों के बीच में जालियां थीं, और ७ फ़ुट का गलियारा था, ताकि वे एक दूसरे के हाथ में कुछ दे नहीं सकें। यदि किसी आदमी की नज़र कमज़ोर हो, तो वह गलियारे के पार जाली के पीछे खड़े आदमी को ठीक तरह से पहचान भी नहीं सकता था। बातें करना भी बड़ा कठिन था। जब तक चिल्लाओ नहीं, दूसरा आदमी कुछ समझ नहीं सकता था।

दोनों तरफ़ लोग जालियों के साथ जुड़ कर खड़े थे। इनमें पत्नियां थीं, पति थे, पिता और माताएं थीं, बच्चे थे। सभी एक दूसरे को पहचानने की कोशिश कर रहे थे, और इस बात का भरसक प्रयत्न कर रहे थे कि उन्हें जो कहना है वह कह पायें।

हर कोई चाहता था कि उसका सम्बन्धी उसकी बात सुन सके, और उसके पड़ोसी भी यही चाहते थे और उनकी आवाज़ें एक-दूसरे के लिए बाधा थीं। इसलिए हर कोई अपने साथ वाले आदमी से ज़्यादा ऊंचा चिल्ला चिल्ला कर बोलने की कोशिश कर रहा था। यही कारण था कि यहां ऐसा कोलाहल मचा हुआ था जिससे नेख़्लूदोव अन्दर आते ही भौचक्का सा खड़ा रह गया था। एक दूसरे की आवाज़ सुनना असंभव हो रहा था।

एक दूसरे के चेहरे की ओर ही देख कर ही अनुमान लगाया जा सकता था कि दूसरा आदमी क्या कह रहा है। इसी से उन आपसी सम्बन्धों का भी अनुमान लगाया जा सकता था। नेख़्लूदोव के साथ ही एक बूढ़ी औरत जाली के साथ सट कर खड़ी थी। उसने सिर पर रूमाल बांध रखा था और उसकी ठुड्डी कांप रही थी। चिल्ला चिल्ला कर वह सामने, जाली के दूसरी तरफ़ खड़े, एक पीले से युवक को कुछ कह रही थी। युवक का आधा सिर मुंडा हुआ था, और वह भौंहें उठाये, बड़े ध्यान से बुढ़िया की बात सुन रहा था। बुढ़िया की बग़ल में एक युवक खड़ा था जिसने किसानों का कोट पहन रखा था। वह बार बार सिर हिला रहा था और कानों पर हाथ रख कर सामने, दूसरी जाली के पीछे खड़े एक वयस्क आदमी की आवाज़ को बड़े ध्यान से सुन रहा था। आदमी का चेहरा थका-मांदा था और दाढ़ी के बाल सफ़ेद हो चले थे। जान पड़ता था कि वह इस लड़के का बाप है। युवक से आगे फटे-पुराने कपड़ों वाला आदमी खड़ा था। वह बाज़ू हिला हिला कर चिल्ला रहा था और हंसे जा रहा था। उसके साथ ही एक स्त्री फ़र्श पर एक बच्चे को गोद में लिये बैठी थी, और ज़ार ज़ार रोये जा रही थी। वह कन्धों पर एक अच्छी सी शाल ओढ़े हुए थी। दूसरी तरफ़ एक बूढ़ा आदमी खड़ा था जिसका सिर मुंडा हुआ था। प्रत्यक्षतः पहली बार वह स्त्री इस आदमी को क़ैदियों की वर्दी और बेड़ियों में और मुंडे हुए सिर से देख रही थी। इस स्त्री से आगे वह चौकीदार खड़ा था जिसके साथ, जेल से बाहर, नेख़्लूदोव ने बातें की थीं। वह पूरे ज़ोर से चिल्ला चिल्ला कर एक गंजे क़ैदी से कुछ कह रहा था। क़ैदी की आंखें चमक रही थीं।

नेख़्लूदोव ने समझ लिया कि इन्हीं हालात में उसे भी बातें करनी होंगी। उसका दिल इस व्यवस्था के प्रबन्धकों के विरुद्ध घृणा से भर उठा। यह मानवीय भावनाओं का अपमान था। नेख़्लूदोव हैरान था कि इस स्थिति में अपने को पा कर किसी आदमी के मन में भी विद्रोह की भावना नहीं उठ रही थी। सिपाहियों, इन्स्पेक्टर, मुलाक़ातियों तथा क़ैदियों का व्यवहार ऐसा था मानो वे इसे आवश्यक समझते हों।

लगभग पांच मिनट तक नेख़्लूदोव इस कमरे में खड़ा रहा। यह देख कर कि वह कितना लाचार है, और उसके विचार और लोगों के विचारों

से कितने भिन्न हैं, उसके मन पर एक अजीब सी उदासी छा गई। जिस तरह जहाज में बैठे आदमी को उबकाई सी आने लगती है, नेख्लूदोव को अपनी मानसिक विवशता की पीड़ा से मतली सी आने लगी।

४२

"पर मैं जिस काम से यहां आया हूं करूं," अपना हौसला बढ़ाने की कोशिश करते हुए नेख्लूदोव ने मन ही मन कहा। "अब मुझे क्या करना चाहिए?"

उसने इधर-उधर देखा, ताकि कोई जेल का अधिकारी मिले तो उससे पूछ सके। एक पतला, ठिंगना सा आदमी, अफ़सरों की वर्दी पहने, लोगों के पीछे टहल रहा था। नेख्लूदोव उसके पास जा पहुंचा।

"हुजूर क्या मुझे बता सकते हैं," अतीव नम्रता दिखाते हुए नेख्लूदोव ने पूछा, "कि स्त्री-क़ैदियों को कहां रखा जाता है, और उन्हें मिलने के लिए कहां जाना होगा।"

"औरतों के विभाग में जाना चाहते हैं?"

"जी, मैं वहां एक क़ैदी औरत से मिलना चाहता हूं," उसी खिंचे-खिंचे विनम्र लहजे में नेख्लूदोव ने कहा।

"आपको चाहिए था कि यह बात हॉल-कमरे में बताते। किसे मिलना चाहते हैं?"

"मैं क़ैदी येकातेरीना मास्लोवा से मिलना चाहता हूं।"

"क्या वह सियासी क़ैदी है?"

"नहीं, वह तो केवल..."

"हूं, उसे सजा मिल चुकी है?"

"जी, परसों सज़ा दी गई थी," नेख्लूदोव ने उसी तरह यतीमों के से लहजे में कहा। जान पड़ता था कि इन्स्पेक्टर उसकी मदद कर देगा, इसलिए वह पूरी कोशिश कर रहा था कि उसका मिजाज नहीं बिगड़े।

नेख्लूदोव के रूप-रंग से अधिकारी ने समझ लिया कि इस व्यक्ति की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

"यदि आपको स्त्री-क़ैदियों के विभाग में जाना है, तो कृपया, इस तरफ़ आइये," अफ़सर ने कहा, और फिर एक मूंछों वाले कार्पोरल की

ओर घूम कर, जिसकी छाती पर तमग़े लटक रहे थे, बोला, "सीदोरोव, साहब को स्त्री-विभाग में ले जाओ।"

"जनाब।"

ऐन इसी वक़्त किसी के ज़ार ज़ार रोने की आवाज़ नेख़्लूदोव के कान में पड़ी। जाली के नज़दीक कोई व्यक्ति बिलख बिलख कर रो रहा था।

यहां की हर चीज़ नेख़्लूदोव को अजीब सी लगी। परन्तु जो बात उसे सबसे विचित्र लगी वह यह थी कि उसे जेल के इन्स्पेक्टर तथा दूसरे वार्डरों का शुक्रिया अदा करना पड़ रहा था और अपने आपको उनका कृतज्ञ मानना पड़ रहा था—उन लोगों के प्रति जो इस इमारत के अन्दर तरह तरह के ज़ुल्म ढा रहे थे।

कमरे से बाहर निकल कर, कार्पोरल नेख़्लूदोव को एक लम्बे बरामदे में ले गया। उसके दूसरे सिरे पर एक दरवाज़ा था जो औरतों के मुलाक़ाती-कमरे में खुलता था।

यह कमरा मर्दों के कमरे से छोटा था। इसमें भी जालियों की पार्टीशनें लगी थीं। यहां पर क़ैदी भी कम थे और मिलने वालों की संख्या भी कम थी। पर शोर-गुल उतना ही था जितना कि मर्दों के कमरे में। यहां पर भी जालियों के बीच की जगह में अधिकारी टहल रहा था, फ़र्क़ केवल इतना था कि यहां पर अधिकारी एक महिला थी। इस वार्डर-स्त्री ने वर्दी की जॉकेट पहन रखी थी जिसके किनारों पर नीले रंग की मग़ज़ी और आस्तीनों पर सुनहरी डोरी लगी थी और कमर में नीले रंग की पेटी लगा रखी थी। मर्दों के कमरे की तरह यहां पर भी दोनों तरफ़ लोग जालियों से सट कर खड़े थे। जहां नेख़्लूदोव खड़ा था उसके नज़दीक शहर से आये लोग थे और तरह तरह के कपड़े पहने हुए थे। दूसरी तरफ़ क़ैदी औरतें थीं जिनमें से कुछेक ने क़ैदियों की सफ़ेद पोशाक पहन रखी थी, और बाक़ियों ने अपने रंगदार कपड़े पहन रखे थे। कमरे के एक सिरे से ले कर दूसरे सिरे तक लोग जाली के साथ जुड़ कर खड़े थे। कुछ लोग, पंजों के बल उठ उठ कर, लोगों के सिरों के ऊपर से बोल रहे थे ताकि उनकी आवाज़ सुनाई दे सके। कुछ लोग फ़र्श पर बैठे बातें कर रहे थे।

एक पतली सी जिप्सी औरत, बाल और कपड़े अस्त-व्यस्त, चीख़ चीख़ कर बातें कर रही थी। जिस ढंग से वह चिल्ला चिल्ला कर बातें कर रही थी, उसे देख कर, और उसके रूप-रंग को देख कर, वह औरत

सभी क़ैदियों में विलक्षण लग रही थी। जिस हिस्से में क़ैदी औरतें खड़ी थीं, उसके ऐन बीचोंबीच वह एक खम्भे के पास खड़ी, हाथ हिला हिला कर चिल्लाये जा रही थी। उसके सिर पर से रूमाल फिसल गया था और घुंघराले बाल नज़र आने लगे थे। वह इस ओर खड़े एक जिप्सी आदमी से बातें कर रही थी जिसने नीले रंग का कोट पहन रखा था और उसके ऊपर कमर के नीचे कस कर पेटी बांध रखी थी। इस जिप्सी आदमी की बग़ल में एक फ़ौजी फ़र्श पर बैठा किसी क़ैदी औरत से बातें कर रहा था। फ़ौजी के आगे, जाली के साथ सट कर एक किसान युवक खड़ा था। उसके मुंह पर हल्के सुनहरी रंग की दाढ़ी थी और चेहरा लाल हो रहा था। वह अपने आंसू रोकने की भरसक चेष्टा कर रहा था। उसके साथ एक ख़ूबसूरत सी क़ैदी-लड़की बातें कर रही थी। लड़की की नीली नीली आंखों में चमक थी, और सिर पर सुनहरी रंग के बाल थे। ये फ़ेदोस्या और उसका पति थे। उनके आगे एक आवारा आदमी एक चौड़े मुंह वाली औरत से बातें कर रहा था। उसके आगे दो औरतें थीं, फिर एक आदमी, फिर एक औरत, हरेक के सामने एक क़ैदी औरत खड़ी थी। मास्लोवा इनमें नहीं थी। परन्तु क़ैदियों के पीछे कोई और खड़ा था, और नेख़्लूदोव का दिल कह रहा था कि वही मास्लोवा है। उसका दिल धक धक करने लगा और सांस फूलने लगी। निर्णायक क्षण आ रहा था। वह जाली के पास गया और मास्लोवा को पहचान लिया। वह नीली आंखों वाली फ़ेदोस्या के पीछे खड़ी, उसकी बातें सुन सुन कर मुस्करा रही थी। इस समय वह क़ैदियों के लबादे में नहीं थी, बल्कि एक सफ़ेद पोशाक पहने थी, जिसे उसने कमर पर पेटी से कस रखा था और जो छातियों पर ऊंची उभरी हुई थी। रूमाल के नीचे से काले काले कुण्डल उसी तरह नज़र आ रहे थे जिस तरह कचहरी में नज़र आ रहे थे।

"बस, क्षण भर में निर्णय हो जायेगा," नेख़्लूदोव ने सोचा, "इसे कैसे बुलाऊं? क्या वह ख़ुद इधर आ जायेगी?"

लेकिन वह उधर नहीं आयी। उसे क्लारा का इन्तज़ार था और यह ख़्याल भी नहीं था कि यह आदमी उसे मिलने आया है।

"आप किससे मिलना चाहते हैं?" स्त्री-वार्डर ने, जो जालियों के बीच घूम रही थी, नेख़्लूदोव के पास आकर पूछा।

"येकातेरीना मास्लोवा से," नेख़्लूदोव के मुंह से ये शब्द कठिनाई से निकले।

"मास्लोवा! तुम्हें कोई मिलने आया है!" वार्डर ने चिल्ला कर कहा।

४३

मास्लोवा ने घूम कर देखा, फिर सिर झटक कर, और छाती फूला कर, जाली के पास आ गई। उसके चेहरे पर वही तत्परता का भाव था, जिससे नेख़्लूदोव भली भांति परिचित था। दो क़ैदियों के बीच जगह बनाते हुए वह खड़ी हो गई और विस्मित, प्रश्नसूचक नेत्रों से नेख़्लूदोव की ओर एकटक देखने लगी।

नेख़्लूदोव के कपड़े देख कर उसने समझ लिया कि यह कोई अमीर आदमी है, और मुस्कराने लगी।

"आप मुझसे मिलना चाहते हैं?" उसने मुस्कराते हुए पूछा और अपना चेहरा जाली के और नज़दीक ले आई। उसकी आंखों में वही हल्का सा ऐंचापन था।

"मैं... मैं... मिलना चाहता था..." नेख़्लूदोव निश्चय नहीं कर पा रहा था कि "आप" कहे या "तुम" और अंत में उसने "आप" ही कहा। वह साधारणतया जैसे बोलता था, अब भी उससे ऊंचा नहीं बोल रहा था। "मैं आपसे मिलना चाहता था... मैं..."

"झूठ नहीं बोल," खड़ा आवारा आदमी चिल्ला रहा था। "तूने उठाया था या नहीं?"

"बहुत कमज़ोर हो गई है, मर रही है!" दूसरी तरफ़ से कोई और चिल्ला रहा था।

मास्लोवा को नेख़्लूदोव की आवाज़ सुनाई नहीं दी। परन्तु जब वह बोल रहा था, तो उसके चेहरे के भाव को देख कर उसे उसकी याद हो आयी। किंतु वह अपनी आंखों पर विश्वास नहीं कर पा रही थी। फिर भी उसके चेहरे पर से मुस्कराहट ग़ायब हो गई और माथे पर गहरी यन्त्रणा की रेखाएं खिंच गईं।

"क्या कह रहे हैं, कुछ सुनाई नहीं देता," आंखें सिकोड़ते हुए तथा माथे पर और भी अधिक बल डालते हुए उसने कहा।

"मैं इसलिए आया हूं कि..."

"ठीक है, मैं अपना कर्तव्य निभा रहा हूं—अपना अपराध स्वीकार कर रहा हूं," नेख़्लूदोव ने सोचा, और यह सोचते ही उसकी आंखों में आंसू आ गये, और गला भर आया। दोनों हाथों से उसने जाली को पकड़ लिया और भरसक चेष्टा करते हुए कि कहीं फूट फूट कर रोने न लग जाये, चुप हो गया।

"जहां तेरा कोई काम नहीं क्यों वहां अपनी टांग अड़ाई?" एक ओर से कोई चिल्ला रहा था।

"भगवान् जानता है, मुझे कुछ भी मालूम नहीं है," एक क़ैदी चीख़ कर दूसरी ओर से कह रही थी।

मास्लोवा ने नेख़्लूदोव की उद्विग्नता देखी और उसे पहचान लिया।

"शकल तो वैसी ही है, पर नहीं, वह नहीं"

नेख़्लूदोव की ओर देखे विना वह चिल्लाई। उसका लाल चेहरा और भी अधिक उदास हो उठा।

"मैं तुमसे माफ़ी मांगने आया हूं," नेख़्लूदोव ने ऊंची लेकिन नीरस आवाज़ में कहा, मानो रटा हुआ पाठ दोहरा रहा हो।

ये शब्द कहते ही उसे झेंप होने लगी। उसने अपने आस-पास देखा। फिर सहसा उसके मन में यह विचार उठा कि यदि मैं लज्जित महसूस कर रहा हूं तो यह और भी अच्छा है, मुझे यह लज्जा सहन करनी होगी। और वह फिर ऊंची आवाज में बोला—

"मुझे क्षमा कर दो। मैंने तुम्हारे साथ बड़ा जुल्म किया है..." उसने इतना ही कहा।

मास्लोवा निश्चेष्ट खड़ी थी, और अपनी ऐंच वाली आंखों से एकटक उसकी ओर देखे जा रही थी।

उसके लिए बोलना कठिन हो रहा था। वह जाली के पास से हट आया और अपनी सिसकियां दबाने की भरसक चेष्टा करने लगा जो उसके गले को रुंधे जा रही थीं।

जिस इन्स्पेक्टर ने नेख़्लूदोव को स्त्रियों के विभाग की ओर भेजा था, वह टहलता हुआ वहां आ पहुंचा। नेख़्लूदोव के बारे में उसे कुतूहल हो रहा

था। जब उसने देखा कि नेख़्लूदोव जाली के पास नहीं खड़ा है तो उसके पास आ गया और पूछने लगा कि क्यों वह उस औरत के साथ बातें नहीं कर रहा है जिसे वह मिलने आया था। नेख़्लूदोव ने नाक साफ़ किया, और अपने को संभालने की कोशिश करते हुए कहा—

"इन जालियों में से बात करना बेहद मुश्किल है। कुछ भी तो सुनाई नहीं देता।"

इन्स्पेक्टर ने क्षण भर के लिए सोचा, और फिर बोला—

"तो कुछ देर के लिए उसे बाहर भी लाया जा सकता है... मारीया कार्लोव्ना..." वार्डर की ओर मुख़ातिब होते हुए उसने कहा, "मास्लोवा को बाहर ले आओ।"

मिनट भर बाद मास्लोवा बग़ल वाले दरवाज़े में से बाहर आ गई। हल्के हल्के क़दम रखती हुई वह सीधी नेख़्लूदोव के बिलकुल पास आ कर खड़ी हो गई और आंख उठा कर भौंहों के नीचे से उसकी ओर देखा। आज भी उसके माथे पर उसी तरह काले बालों के कुण्डल बने हुए थे जैसे कि दो दिन पहले उसने देखे थे। उसका चेहरा अस्वस्थ और फूला हुआ था, लेकिन फिर भी शान्त और आकर्षक था। केवल उसकी काली आंखें सूजी हुई पलकों के नीचे से अजीब ढंग से चमक रही थीं।

"आप यहां बातें कर सकते हैं," इन्स्पेक्टर ने कहा और एक तरफ़ हट गया।

दीवार के साथ एक बेंच रखा था। नेख़्लूदोव उसकी ओर जाने लगा।

मास्लोवा ने प्रश्नसूचक नेत्रों से इन्स्पेक्टर की ओर देखा, फिर विस्मय से कन्धे बिचका कर, नेख़्लूदोव के पीछे पीछे जाने लगी और अपनी स्कर्ट ठीक कर के बेंच पर बैठ गई।

"मैं जानता हूं कि तुम्हारे लिए क्षमा करना आसान नहीं है," उसने फिर कहना शुरू किया, लेकिन आगे नहीं कह सका। उसका गला रुंध रहा था। "मैं अपने पिछले किये को मिटा तो नहीं सकता, लेकिन अब मैं यथाशक्ति जो भी कर सकता हूं करूंगा। मुझे बताओ..."

"आपको मेरा पता कैसे मालूम हुआ?" मास्लोवा ने उसके सवाल का जवाब दिये बिना पूछा। उसकी ऐंची आंखें न तो नेख़्लूदोव के चेहरे की ओर सीधा देख रही थीं न ही उस पर से हट रही थीं।

"हे भगवान्, मेरी सहायता करो, मुझे सुझाओ मैं क्या करूं," मास्लोवा

के चेहरे की ओर देखते हुए नेख़्लूदोव मन ही मन कह रहा था। मास्लोवा का चेहरा अब बहुत कुछ बदल गया था। उसमें पहले सी कोमलता नहीं थी।

"परसों मैं अदालत में था। जूरी में बैठा था," वह बोला, "क्या तुमने मुझे वहां नहीं पहचाना?"

"नहीं, मैं नहीं पहचान पाई। पहचानने का वक़्त ही कहां था। मैंने तो उस तरफ़ देखा भी नहीं," उसने कहा।

"तुम्हारे बच्चा हो गया था न?" उसने पूछा और उसका चेहरा शर्म से लाल होने लगा।

"शुक्र है भगवान् का, पैदा होते ही मर गया," उसके चेहरे पर से नज़र हटाते हुए उसने कटुता से दो टूक उत्तर दिया।

"कैसे? क्या हुआ था?"

"मैं ख़ुद मरते मरते बची। बहुत बीमार हो गयी थी," बिना नज़र उठाये उसने कहा।

"पर फूफियों ने तुम्हें जाने कैसे दिया?"

"बच्चे के साथ नौकरानी को कौन रखता है? ज्यों ही उन्हें पता चला फ़ौरन् जवाब दे दिया। लेकिन इन बातों का ज़िक्र करने का क्या लाभ? मुझे कुछ भी याद नहीं, सब भूल गयी हूं। वे सब बातें ख़त्म हो चुकी हैं।"

"नहीं, ख़त्म नहीं हुई हैं। मैं अपने पाप का देर से सही प्रायश्चित करना चाहता हूं।"

"प्रायश्चित करने की कौन सी बात है। जो होना था हो गया, अब यह बीते दिनों की बात है," मास्लोवा ने कहा, और नेख़्लूदोव की ओर लुभावनी, दयनीय आंखों से देखा जिसकी नेख़्लूदोव को तनिक भी आशा नहीं थी। उसे उसका यों देखना अप्रिय लगा।

मास्लोवा को ख़्याल न थी कि वह फिर कभी नेख़्लूदोव से मिल पायेगी। कम से कम यहां पर और इस समय मिलने की तो उसे तनिक भी आशा न थी। इसलिए नेख़्लूदोव को पहचानने पर अनायास ही वे स्मृतियां जाग उठीं जिन्हें वह कभी भी याद करना नहीं चाहती थी। क्षण भर के लिए उसकी आंखों के सामने भावनाओं और विचारों के उस नवीन और अद्वितीय संसार का धूमिल दृश्य घूम गया, जिसके द्वार एक

सुन्दर युवक ने एक दिन उसके आगे खोल दिये थे। वह युवक उससे प्यार करता था, और वह स्वयं उससे प्यार करती थी। इसके वाद उसे उस युवक की वर्वरता याद हो आई, अगम्य वर्बरता! फिर एक के वाद एक उसे वे सव अपमान, तिरस्कार और यन्त्रणाएं याद आने लगीं जो उसे भोगनी पड़ी थीं। उस अपूर्व आनन्द की घड़ियों के वाद इनका तांता लग गया था, और इनका उद्‌गम भी उसी अपूर्व आनन्द से हुआ था। उसका हृदय व्यथित हो उठा। लेकिन वह अपनी वेदनाओं का कारण समझने में असमर्थ थी, अतः इस समय भी उसने वही कुछ किया जिसकी उसे आदत हो गई थी: इन कटु स्मृतियों को उसने मन में से निकाल दिया और उन्हें अपने भ्रष्ट जीवन के धुंधलेपन में डुबो देने का प्रयत्न करने लगी। शुरू शुरू में तो उसने इस आदमी का सम्बन्ध उस युवक से जोड़ा जिससे वह प्रेम करती थी। पर यह देख कर कि इससे उसके दिल में दर्द उठता है, उसने अपने मन में यह संबंध जोड़ना छोड़ दिया। अव यह आदमी, जो वन-संवर कर उसके सामने वैठा था, जिसकी दाढ़ी पर इत्र छिड़का हुआ था, वह नेख़्लूदोव नहीं था जिससे वह प्रेम करती थी। यह आदमी भी अव उन अनगिनत आदमियों में से एक था, जो ज़रूरत के वक़्त उस जैसी स्त्रियों का इस्तेमाल करते हैं और उस जैसी स्त्रियां भी अपने लाभ के लिए इन आदमियों का इस्तेमाल करती हैं। यही कारण था कि मास्लोवा ने उसकी ओर लुभावने ढंग से मुस्कराते हुए देखा था। वह चुपचाप वैठी सोच रही थी कि किस भांति इसका अधिक से अधिक लाभ उठाया जाय।

"वह सव वीत चुका है," वह वोली, "अव तो मुझे कड़ी मशक़्क़त की सज़ा भुगतनी होगी।"

और ये भयानक शब्द कहते हुए उसके होंठ कांपने लगे।

"मुझे मालूम था, मुझे पक्का विश्वास था कि तुमने कोई जुर्म नहीं किया," नेख़्लूदोव ने कहा।

"हां, सो तो है ही। मैं भला कोई चोर हूं या डाकू हूं। यहां औरतें कहती हैं वात सारी वकील की है," वह कहने लगी, "कहती हैं, दरख़्वास्त करनी चाहिए, पर सुना है पैसे वहुत लगते हैं..."

"ज़रूर करनी चाहिए," नेख़्लूदोव ने कहा, "मैंने पहले ही एक वकील से वात कर ली है।"

"पैसे का ख़्याल नहीं करना चाहिए। वकील अच्छा होना चाहिए," मास्लोवा बोली।

"जो भी मैं कर सका करूंगा।"

दोनों चुप हो गये।

मास्लोवा फिर लुभावने ढंग से मुस्कराई।

"और मैं कहना चाहती थी... अगर आप... कुछ पैसे मुझे दे सकें... बहुत नहीं... सिर्फ़ दस रूबल," उसने एकाएक कहा।

"हां, हां," नेख़्लूदोव ने कहा। और वह झेंप कर अपना बटुआ निकालने लगा।

मास्लोवा की नज़र झट इन्स्पेक्टर की ओर गई जो कमरे में आगे-पीछे टहल रहा था।

"इसके सामने नहीं देना, वह ले लेगा।"

ज्यों ही इन्स्पेक्टर की पीठ हुई, नेख़्लूदोव ने झट से बटुआ निकाल कर उसमें से दस रूबल का नोट निकाल लिया। लेकिन वह मास्लोवा को दे नहीं पाया, क्योंकि उसी वक़्त इन्स्पेक्टर घूम कर उनकी ओर आने लगा था। नेख़्लूदोव ने नोट को मरोड़ कर मुट्ठी में बन्द कर लिया।

"यह स्त्री तो मर चुकी है," नेख़्लूदोव ने सोचा। यही चेहरा जो किसी ज़माने में इतना प्यारा हुआ करता था, अब भ्रष्ट और सूजा हुआ था। काली काली ऐंची आंखों में धृष्टता की चमक थी, जो इस समय कभी नेख़्लूदोव की मुट्ठी की ओर देख रही थीं, जिस में नोट बन्द था, कभी इन्स्पेक्टर की ओर। क्षण भर के लिए नेख़्लूदोव द्विविधा में पड़ गया।

गत रात उसकी दुरात्मा उसे तरह तरह के मशविरे देती रही थी। अब फिर उसकी आवाज़ आने लगी। दुरात्मा उसका मन कर्तव्य पर से हटा कर उसके परिणामों की ओर ले जाने की चेष्टा करने लगी, उसे समझाने लगी कि व्यावहारिक दृष्टि से क्या करना चाहिए।

"अब इस स्त्री का तुम कुछ नहीं बना सकते," दुरात्मा की आवाज़ आयी, "तुम केवल पांवों में बेड़ियां डाल लोगे, जो तुम्हें ले डूबेंगी, और तुम दूसरे लोगों के लिए कुछ भी नहीं कर पाओगे। क्या यह बेहतर नहीं कि तुम्हारे बटुए में इस वक़्त जितने भी पैसे हैं, इसके हवाले करो, इसे ख़ैर-बाद कहो और इससे सदा के लिए पल्ला छुड़ाओ?" दुरात्मा ने फुसफुसा कर कहा। लेकिन उसे महसूस हुआ जैसे ऐन उसी वक़्त उसकी आत्मा

में एक महत्वपूर्ण घटना घटने लगी है। उसका आन्तरिक जीवन डगमगाने लगा है। तनिक सी भी कुचेष्टा उसे डुबो देगी, और सुचेष्टा उसे उबार लेगी। उसने भगवान् से सहायता की प्रार्थना की, उस भगवान् से जिसकी उपस्थिति उसने दो दिन पहले अपनी आत्मा में महसूस की थी। भगवान् ने उसकी प्रार्थना सुनी। और नेख़्लूदोव ने फ़ौरन्, उसी वक़्त, मास्लोवा को सब कुछ कह डालने का निश्चय किया।

"कात्यूशा, मैं तो तुमसे क्षमा मांगने आया हूं, और तुमने मुझे कोई उत्तर नहीं दिया। क्या तुमने मुझे क्षमा कर दिया है? क्या तुम कभी भी मुझे क्षमा कर पाओगी?" उसने पूछा।

मास्लोवा ने उसकी बात नहीं सुनी। उसकी आंखें उसकी मुट्ठी पर और इन्स्पेक्टर पर लगी हुई थीं। ज्यों ही इन्स्पेक्टर ने पीठ मोड़ी, उसने हाथ फैला दिया, झपट कर नोट हाथ में लिया और उसे अपनी पेटी में छिपा लिया।

"कैसी अजीब बातें कर रहे हैं आप," मास्लोवा ने मुस्करा कर कहा। नेख़्लूदोव को लगा जैसे उसकी मुस्कान में तिरस्कार की भावना छिपी हुई है।

नेख़्लूदोव को ऐसा महसूस हुआ जैसे मास्लोवा की आत्मा में कोई ऐसी चीज़ है जो उसका विरोध कर रही है, जो मास्लोवा की वर्तमान स्थिति का समर्थन करती है, और उसे उसके दिल तक पहुंचने से रोक रही है।

परन्तु यह अजीब बात है कि इससे उसके दिल में घृणा नहीं उठी। बल्कि कोई नई विचित्र शक्ति उसे मास्लोवा के और भी निकट ले जाने लगी। वह जानता था कि उसे मास्लोवा की आत्मा को जगाना है। यह काम मुश्किल होगा। लेकिन इस काम की कठिनाई ही उसे बढ़ावा दे रही थी। मास्लोवा के प्रति उसके हृदय में ऐसी भावनाएं उठ रही थीं जैसी कि पहले उसके प्रति, या किसी भी अन्य व्यक्ति के प्रति नहीं उठी थीं। इन भावनाओं में स्वार्थ का लेशमात्र भी नहीं था। वह उससे अपने लिए कुछ भी नहीं चाहता था। उसकी केवल यही इच्छा थी कि मास्लोवा वह न रहे जो इस समय थी, बल्कि फिर से जाग उठे और वैसी ही बन जाय जैसी वह पहले हुआ करती थी।

"ऐसा क्यों कहती हो कात्यूशा? मैं तुम्हें जानता हूं। मुझे पानोवो के वे दिन याद हैं, तुम याद हो।"

"बीती बातों को याद करने का क्या लाभ?" उसने रूखी आवाज़ में कहा।

"मैं उन्हें इसलिए याद कर रहा हूं कि मैं अपने पाप का प्रायश्चित करना चाहता हूं, कात्यूशा," नेख़्लूदोव ने कहा और उससे कहने जा ही रहा था कि मैं तुम्हारे साथ विवाह करूंगा। जब मास्लोवा की आंखों के साथ उसकी आंखें मिलीं तो उनमें उसे ऐसी भयानक, अशिष्ट, और घृणित भावना नज़र आयी कि उसका मुंह बन्द हो गया।

ऐन इसी वक़्त मुलाक़ाती जाने लगे। इन्स्पेक्टर ने नेख़्लूदोव के पास आ कर कहा कि मुलाक़ात का वक़्त ख़त्म हो चुका है। मास्लोवा सहमी हुई सी उठ खड़ी हुई, और इन्तज़ार करने लगी कि कब उसे वहां से चले जाने को कहा जायेगा।

"ख़ुदा-हाफ़िज़, मुझे तुमसे बहुत कुछ कहना है, मगर, तुम देख रही हो, इस वक़्त कहना मुमकिन नहीं," नेख़्लूदोव ने कहा और अपना हाथ आगे बढ़ाया। "मैं फिर आऊंगा।"

"मैं तो सोचती हूं तुमने जो कहना था कह लिया है।"

मास्लोवा ने हाथ मिलाया लेकिन नेख़्लूदोव के हाथ को दबाया नहीं।

"नहीं, मैं फिर तुम्हें मिलने की कोशिश करूंगा, और किसी ऐसी जगह जहां हम बातें कर सकें। तब मैं तुम्हें अपने दिल की बात बताऊंगा—वह बहुत ज़रूरी है।"

"अच्छी बात है, तो आओ," उसने जवाब में कहा, और उसी तरह मुस्कराई जिस तरह वह उन आदमियों के सामने मुस्कराया करती थी जिन्हें वह ख़ुश करना चाहती थी।

"तुम मुझे मेरी बहिन से भी ज़्यादा अज़ीज़ हो," नेख़्लूदोव ने कहा।

"अजीब बात है," उसने फिर कहा, और सिर झटक कर जाली के पीछे चली गई।

४४

इस भेंट से पहले नेख़्लूदोव का ख़्याल था कि जब कात्यूशा को पता चलेगा कि उसके मन में कितना अनुताप है, जब वह जान जायेगी कि वह उसकी सेवा करना चाहता है तो वह बेहद ख़ुश होगी, उसका हृदय द्रवित

हो उठेगा, और वह फिर पहले सी कात्यूशा हो जायेगी। पर जब उसने देखा कि कात्यूशा का तो वहां लेशमात्र भी नहीं रहा है, कि उसके स्थान पर अब मास्लोवा है, तो वह बेहद हैरान और भयभीत हो उठा।

उसे सबसे ज़्यादा हैरानी यह देख कर हुई कि कात्यूशा तनिक भी लज्जा का अनुभव नहीं करती–इस बात पर नहीं कि वह एक क़ैदी है (इस पर तो वह ज़रूर लज्जित महसूस करती थी), लेकिन इस बात पर कि वह वेश्या है। इसके विपरीत, ऐसा जान पड़ता था जैसे वह अपनी स्थिति से सन्तुष्ट हो, उसे उस पर गर्व हो। परन्तु देखा जाय तो इसके अतिरिक्त कुछ हो भी नहीं सकता था। हर आदमी को अपना धन्धा उत्कृष्ट और महत्वपूर्ण समझना पड़ता है। यदि वह ऐसा न समझे तो उसके लिए काम करना मुश्किल हो जाता है। इसलिए, किसी स्थिति में भी इन्सान हो, वह मानव-जीवन के प्रति एक ऐसा दृष्टिकोण बना लेता है जिसमें उसका अपना व्यवसाय उसे उत्कृष्ट और महत्वपूर्ण नज़र आने लगता है।

अक्सर यह समझा जाता है कि चोर-चकार, हत्यारे, जासूस, वेश्याएं आदि यह मान कर कि उनका धन्धा बड़ा अधम है, लज्जित महसूस करते होंगे। लेकिन सचाई इसके बिलकुल उलट है। ऐसे लोग जिन्हें भाग्य ने या उनके कुकर्मों ने एक विशेष स्थिति में ला पटका है, जीवन का एक ऐसा दृष्टिकोण बना लेते हैं जिसमें उन्हें अपनी स्थिति अच्छी और स्वीकार्य जान पड़ती है। भले ही वह स्थिति कितनी ही बुरी क्यों न हो। और इस दृष्टिकोण को बनाये रखने के लिए वे उन्हीं लोगों के साथ उठते-बैठते हैं जिनका उन जैसा ही दृष्टिकोण और उन जैसी ही स्थिति हो। जब चोर अपनी चालाकी की डींग मारते हैं, वेश्याएं अपने पतन की शेख़ी बघारती हैं, और हत्यारे अपनी क्रूरता पर ऐंठते हैं, तो हम हैरान रह जाते हैं। कारण ये लोग सीमित दायरे तथा वातावरण में रहते हैं। परन्तु हमारे आश्चर्य का मुख्य कारण यह होता है कि हम स्वयं इनके दायरे से बाहर होते हैं। लेकिन जब धनी लोग अपने धन की डींग मारते हैं–जो और कुछ नहीं लूट-खसोट ही है, और फ़ौजी जनरल अपने कारनामों की–जो निरी हत्या ही है, और उच्च पदाधिकारी अपनी शक्ति की–जो मात्र हिंसा ही है, तो यह सब क्या वही कुछ नहीं है? यदि उनका दृष्टिकोण हमें विकृत नहीं लगता तो इसलिए कि उनका दायरा बड़ा होता है, और हम ख़ुद उसी में रहते हैं।

इसी तरह मास्लोवा ने भी जीवन तथा अपनी स्थिति के प्रति अपना दृष्टिकोण स्थिर कर रखा था। वह थी तो एक वेश्या जिसे कड़ी मशक़्क़त की सज़ा दी गई थी, परन्तु अपनी जीवन-धारणा के कारण अपने आपसे सन्तुष्ट थी, यहां तक कि अपनी स्थिति पर उसे गर्व भी था।

इस धारणा के अनुसार वह समझती थी कि पुरुषों—भले ही वे बूढ़े हों या जवान, स्कूलों के छात्र हों या जनरल, शिक्षित हों या अशिक्षित—सभी पुरुषों की सिद्धि इसी में है कि वे सुन्दर स्त्रियों के साथ इन्द्रिय-भोग करें। सभी पुरुषों के अन्तर्तम में यही इच्छा होती है, भले ही बाहर से वे अन्य कामों में व्यस्त होने का बहाना करते हों। वह जानती थी कि वह एक सुन्दर स्त्री है, कि यह उसकी सामर्थ्य में है कि किसी की इच्छा को सन्तुष्ट करे या न करे। इसलिए वह अपने को आवश्यक और महत्वपूर्ण व्यक्ति समझती थी। उसका समूचा पिछला तथा वर्तमान जीवन इस धारणा को सिद्ध करता था।

पिछले दस सालों से वह देखती आयी थी कि जिस किसी स्थिति में भी वह रही, सभी आदमियों को उसकी ज़रूरत रहती थी—नेख़्लूदोव तथा बूढ़े पुलिस अफ़सर से ले कर जेलख़ाने के जेलरों तक। कारण, जिन लोगों को उसकी ज़रूरत नहीं थी, उन्हें न ही कभी उसने देखा था और न ही उनकी परवाह की थी। इसलिए उसे संसार में सभी लोग इन्द्रिय-भोग के लिए बेचैन नज़र आते थे जो हर तरीक़े से—कपट, हिंसा, धन तथा धूर्तता से—उसे अपने वश में करने की कोशिश कर रहे हों।

यह थी मास्लोवा की जीवन के बारे में धारणा। और इस दृष्टिकोण के अनुसार वह अपनी नज़रों में एक अधमतम व्यक्ति नहीं थी बल्कि एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थी। और यह दृष्टिकोण मास्लोवा के लिए बहुमूल्य था। यदि वह इस दृष्टिकोण को खो देती तो वह अपना महत्व खो बैठती। इसलिए इसे मूल्यवान् समझना उसके लिए अनिवार्य था। जीवन में अपना महत्व बनाये रखने के लिए वह स्वभावतः ऐसे लोगों के साथ रहती थी जिनका जीवन के प्रति उस जैसा ही दृष्टिकोण था। जब उसने देखा कि नेख़्लूदोव उसे इस दायरे में से बाहर, किसी दूसरी दुनिया में ले जाना चाहता है, तो उसने इसका विरोध किया। वह जानती थी कि ऐसा करने से वह जीवन में अपना स्थान खो बैठेगी, जिससे उसको स्थिरता और आत्मसम्मान मिलता था। इसी कारण उसने अपने मन में से अपनी

किशोरावस्था तथा नेख़्लूदोव से अपने प्रथम सम्बन्धों की स्मृतियों को निकाल दिया था। संसार के प्रति उसकी वर्तमान धारणा के साथ ये स्मृतियां मेल नहीं खाती थीं। इसी लिए उनके लिए मन में जगह न थी। या यह कहना चाहिए कि ये स्मृतियां कहीं दबा दी गई थीं। उन्हें कभी छुआ नहीं गया था। ऐसा जान पड़ता जैसे उन्हें बन्द कर के ऊपर से पलस्तर कर दिया गया हो ताकि कभी भी बाहर निकल नहीं सकें—उसी तरह जिस तरह मधु-मक्खियां, अपने परिश्रम के फल को सुरक्षित रखने के लिए, कीड़ों के छत्ते को ऊपर से बन्द कर देती हैं। अतः यह नेख़्लूदोव वह आदमी नहीं है, जिस पर उसने कभी अपना पवित्रतम प्रेम न्योछावर किया था, बल्कि एक अमीर आदमी है जिसका वह लाभ उठा सकती है, और उसे अवश्य उठाना चाहिए, और जिसके साथ उसके सम्बन्ध वही कुछ हो सकते हैं जो सामान्यतया पुरुषों के साथ रहे हैं।

"नहीं, मैं ज़रूरी बात तो उससे कह ही नहीं पाया," मुलाक़ातियों के साथ बाहर जाते हुए नेख़्लूदोव सोच रहा था, "मैंने उससे यह नहीं कहा कि मैं तुम्हारे साथ शादी करूंगा। यह नहीं कहा, लेकिन मैं उसे जरूर कहूंगा।"

फाटक पर दो वार्डर खड़े थे जो पहले की ही तरह गिन गिन कर मुलाक़ातियों को बाहर निकाल रहे थे। एक एक मुलाक़ाती को वे हाथ से छूते ताकि कोई अन्दर का आदमी बाहर नहीं निकल जाय, न ही कोई मुलाक़ाती अन्दर रह जाय। अब भी गुज़रते हुए नेख़्लूदोव की पीठ पर हाथ पड़ा। लेकिन अब की वह नाराज़ नहीं हुआ, बल्कि उसने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया।

४५

नेख़्लूदोव अपने समूचे बाह्य जीवन की फिर से व्यवस्था करना चाहता था। वह चाहता था कि नौकरों को निकाल दे, बड़े मकान को किराये पर चढ़ा दे और ख़ुद होटल में कमरा ले कर रहने लगे। परन्तु आग्राफ़ेना पेत्रोव्ना ने सुझाव दिया कि सर्दी के मौसम से पहले कोई भी तबदीली करना बेसूद होगा। गरमी के मौसम में कौन आदमी शहर में घर ले कर रहेगा? फिर सामान को भी तो कहीं रखना है। अतः अपनी जीवन चर्या बदलने

की उसकी सभी कोशिशें नाकामयाव रहीं (वह छात्रों की तरह सादा जीवन व्यतीत करना चाहता था)। सब बात वैसी की वैसी ही रही। इतना ही नहीं, घर में एक दूसरी ही तरह की गहमागहमी शुरू हो गई। घर के सब ऊनी व फ़र के वस्त्र निकाल कर उन्हें धूप में रखा जाने लगा और साफ़ किया जाने लगा। इस काम में पहरी, छोकरा, वावरची और स्वयं कोर्नेई तक जुट गये। तरह तरह के फ़र के कपड़े जिन्हें कभी इस्तेमाल नहीं किया गया था, तथा तरह तरह की वर्दियां रस्सी पर लटका दी गयीं। इसके बाद फ़र्नीचर और क़ालीन वाहर डाल दिये गये। पहरी और छोकरे दोनों ने अपनी मांसल वांहों पर आस्तीनें चढ़ा लीं और डण्डे हाथ में ले कर इन्हें एक साथ, एक ताल में पीटने लगे। कमरों में फ़ीनाइल की गोलियों की गन्ध फैल गई।

आंगन लांघते हुए या खिड़की में खड़े खड़े जब नेख़्लूदोव यह कार्रवाई देखता तो हैरान रह जाता कि घर में कितना अधिक सामान धरा पड़ा है, और सवका सब फ़िजूल है। इन सब चीज़ों का एक ही उपयोग और लाभ था कि इससे आग्राफ़ेना पेत्रोव्ना, कोर्नेई, पहरी, छोकरे और वावरची – सवकी वरज़िश हो जाती थी।

"इस समय अपने रहन-सहन का ढंग बदलने का लाभ भी क्या है," वह सोचने लगा, "मास्लोवा के मामले का कोई फ़ैसला नहीं हुआ। इसके अलावा रहन-सहन बदलना बहुत मुश्किल है। जब उसे छोड़ दिया जायेगा या अगर साइबेरिया भेज दिया गया और मैं उसके पीछे पीछे वहां चला गया, तो मेरा रहन-सहन अपने आप बदल जायेगा।"

निश्चित दिन को नेख़्लूदोव बग्घी में बैठ कर वकील फ़ानारिन के घर जा पहुंचा। वड़ा आलीशान मकान था, ऊंचे ऊंचे ताड़-वृक्षों और तरह तरह के बेलबूटों से सजा हुआ। अद्भुत पर्दे टंगे थे। वास्तव में ऐशो-आराम की हर चीज़ से साफ़ झलकता कि यहां मुफ़्त का पैसा वहुत है (जिसे कमाने के लिए मेहनत नहीं की गई), और जिसकी नुमाइश वही लोग करते हैं जो सहसा अमीर हो जायं। बाहर ड्योढ़ी में वहुत से आदमी मेजों के पास वैठे थे, जैसे किसी डाक्टर के घर की ड्योढ़ी में बैठते हैं। सब इस इन्तज़ार में थे कि कब उनकी वारी आये और वे वकील साहब से मुलाक़ात कर सकें। सभी के चेहरे उदास थे। मेज़ों पर उनके मनबहलाव के लिए सचित्र पत्रिकाएं रखी थीं। कमरे में वकील का मुंशी एक ऊंची सी मेज़ के सामने

बैठा था। उसने नेख़्लूदोव को देखते ही पहचान लिया, और उठ कर उसके पास चला आया, और कहने लगा कि मैं अभी जा कर वकील साहिब से आपके आने की सूचना देता हूं। लेकिन अभी मुंशी दरवाज़े तक पहुंच भी न पाया था कि दरवाज़ा खुल गया और कमरे में से ऊंचा ऊंचा बोलने की आवाज़ें आने लगीं। एक व्यापारी और फ़ानारिन आपस में बातें कर रहे थे। व्यापारी अधेड़ उम्र का हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति था, लाल लाल चेहरा और बड़ी बड़ी मूंछें, नये बढ़िया कपड़े पहन कर आया था। दोनों के चेहरे का भाव बताता था कि अभी अभी उनमें कोई सौदा पटा है, जिससे लाभ तो बहुत होगा लेकिन जिसमें ईमानदारी नहीं है।

"माफ़ कीजिये, लेकिन क़सूर आप ही का है," फ़ानारिन मुस्कारा कर कह रहा था।

"अजी फरिस्ता कौन भयो हमन में। फरिस्ते होते तो सुर्ग में नहीं पौंच जाते।"

"हां, ठीक है, ठीक है, यह तो सभी जानते हैं।"

और दोनों बड़े बनावटी ढंग से हंसे।

"ओह, प्रिंस! आइये, आइये, तशरीफ़ लाइये," नेख़्लूदोव को देखते ही वकील बोला। एक बार फिर उसने व्यापारी को झुक कर विदा किया और नेख़्लूदोव को अपने कमरे में ले गया। इस कमरे की हर चीज़ बिलकुल सही ढंग से सजायी गयी थी। "सिगरेट पीजिये," नेख़्लूदोव के सामने बैठते हुए वकील ने कहा। उसके होंठों पर मुस्कराहट थी जिसे वह दबाने की चेष्टा कर रहा था। ज़ाहिर था कि उस सौदे की सफलता से उसके दिल में अभी भी गुदगुदी हो रही थी।

"शुक्रिया। मैं मास्लोवा के केस के बारे में आपसे मिलने आया हूं।"

"हां, हां, अभी लीजिये! ये मोटी तोंद वाले लोग बड़े लुच्चे होते हैं," उसने कहा, "आपने इस आदमी को देखा? करोड़पति है यह। और बात करता है तो 'फरिस्ता कौन भयो हमन में'। फिर भी एक एक कौड़ी को दांत से रगड़ता है।"

"वह कहता है 'फरिस्ते' और 'हमन में' और तुम कहते हो 'कौड़ी को रगड़ता है'," नेख़्लूदोव सोच रहा था। और नेख़्लूदोव का मन इस आदमी के प्रति गहरी घृणा से भर उठा। "मेरे साथ हंस हंस कर बातें कर के यह दिखाना चाहता है कि यह और मैं दोनों एक ही पक्ष के हैं और इसके बाक़ी सब मुवक्किल दूसरे पक्ष के।"

"इसने मुझे परेशान कर रखा है। बेहद नीच आदमी है। क्या करूं, मुझे अपने दिल का ग़ुबार तो हल्का करना है," वकील बोला, मानो इस बात के लिए माफ़ी मांग रहा हो कि वह ऐसी बातों की चर्चा करने लग गया है जिनका उनके काम से कोई सबम्बन्ध नहीं। "अच्छा, तो काम की बात करें। मैंने केस ध्यान से पढ़ा है, और जैसा कि तुर्गेनेव ने एक जगह लिखा है 'उसकी हिमायत नहीं करता'। मतलब यह कि वह नौसिखुआ वकील एकदम भोंदू है और उसने अपील के लिए कोई आधार ही नहीं छोड़ा।"

"तो फिर, अब क्या करना होगा?"

"ज़रा माफ़ कीजिये," वकील ने कहा और मुंशी की ओर मुख़ातिब हो कर, जो अभी अभी अन्दर आया था, बोला, "उसे कह दो कि मेरी बात पत्थर पर लकीर होती है। अगर वह कर सकता है, तो ठीक है, नहीं कर सकता, तो मैं मजबूर हूं।"

"लेकिन वह नहीं मानता।"

"तो मैं मजबूर हूं।" और वकील का चेहरा जो पहले खिला हुआ और शान्त था, सहसा चिड़चिड़ा और क्रुद्ध हो उठा।

"यह लीजिये! और लोग कहते हैं कि वकील मुफ़्त की कमाई खाते हैं," कुछ देर रुक कर, पहले की तरह हंस हंस कर बातें करने की चेष्टा करते हुए वह कहने लगा, "एक दिवालिये पर बिलकुल झूठा मुक़द्दमा चल रहा था, मैंने उसे बचा लिया। अब सब लोग मेरे यहां भीड़ लगाये रहते हैं। लोग यह नहीं समझते कि एक एक मुक़द्दमे के लिए ख़ून-पसीना एक करना पड़ता है। हम भी तो, जैसा किसी लेखक ने कहा है, अपनी दवातों में दिल का टुकड़ा छोड़ते हैं। अच्छा, तो आपके मुक़द्दमे के बारे में—यानी उस मुक़द्दमे के बारे में जिसमें आपकी दिलचस्पी है—मैं कहूंगा कि मुक़द्दमे की पैरवी निहायत नामाक़ूल तरीक़े से हुई है। अपील करने का कोई माक़ूल आधार ही नहीं रह गया। तो भी," वह कहता गया, "हम अपील करने की कोशिश तो कर सकते हैं। मैंने इस सम्बन्ध में यह दर्ज किया है।"

उसने कुछ पन्ने उठाये जिन पर उसने बहुत कुछ लिख रखा था और तेज़ तेज़ पढ़ने लगा। किसी किसी वाक्य को ख़ास बल दे कर पढ़ता और जहां कहीं नीरस क़ानूनी बातें लिखी होतीं उन्हें छोड़ता जाता।

"उच्चन्यायालय, महकमा फ़ौजदारी, वग़ैरा वग़ैरा। अदालत के निर्णयानुसार जो सज़ा दी गई है, वग़ैरा वग़ैरा। मास्लोवा को मुजरिम क़रार दिया गया है कि उसने व्यापारी स्मेल्कोव को ज़हर दिया जिससे उसकी मृत्यु हो गई, और इसलिए ज़ाब्ता फ़ौजदारी की दफ़ा १४५४ के अनुसार उसे कड़ी मशक़्क़त की सज़ा दी गई है। वग़ैरा वग़ैरा।"

वह रुक गया। ज़ाहिर था कि वह अपनी रचना को पढ़ कर ख़ुश हो रहा था, हालांकि इन्हें पढ़ने का उसे रोज़ मौक़ा मिलता था।

"मुक़द्दमे की सुनवाई में अदालती कार्यवाही का जो जगह जगह उल्लंघन किया गया है और जो ग़लतियां की गई हैं, वे स्पष्ट हैं। यह सज़ा उन्हीं भूलों का सीधा परिणाम है," उसने प्रभावपूर्ण आवाज़ में पढ़ा, "और इस सज़ा को रद्द किया जाना चाहिए। पहले तो, जब स्मेल्कोव की अंतड़ियों की परीक्षा की रिपोर्ट अदालत में पढ़ कर सुनाई जाने लगी तो प्रधान जज ने शुरू में ही उसे पढ़ने से रोक दिया। यह रहा पहला नुक़ता।"

"लेकिन इसे पढ़ने की मांग तो सरकारी वकील ने की थी," नेख़्लूदोव ने हैरान हो कर पूछा।

"कोई बात नहीं। मुद्दालेह की ओर से भी इसे पढ़ कर सुनाने की मांग की जा सकती थी। उसके भी उपयुक्त कारण हो सकते थे।"

"पर इसकी तो किसी को भी कोई ज़रूरत नहीं थी।"

"लेकिन अपील करने के लिए इसे आधार बनाया जा सकता है। आगे चलें, नम्बर दो," वह पढ़ता गया, "मुद्दालेह के वकील ने जब मास्लोवा की शख़्सियत पर रोशनी डालने की कोशिश की और यह बताने लगा कि किन कारणों से उसका पतन हुआ तो प्रधान जज ने उसे रोक दिया और कहा कि इन बातों का विचाराधीन विषय के साथ कोई सम्बन्ध नहीं। लेकिन मुजरिम के गुण-दोषों तथा उसके सामान्य नैतिक दृष्टिकोण का स्पष्टीकरण फ़ौजदारी मुकद्दमों में बेहद महत्वपूर्ण होता है। और नहीं तो इससे अपराधी का निर्णय करने में मदद मिलती है। इस बात पर सेनेट ने बार बार बल दिया है। यह रहा दूसरा नुक़ता," नेख़्लूदोव की ओर देख कर वकील ने कहा।

"पर मुद्दालेह का वकील इतने भद्दे ढंग से जिरह कर रहा था कि किसी के कुछ भी पल्ले नहीं पड़ रहा था," नेख़्लूदोव ने कहा। वह और भी हैरान हो उठा था।

"वह तो बेवक़ूफ़ है, काम की बात क्या कहेगा," फ़ानारिन ने हंस कर कहा, "फिर भी अपील के लिए इस नुक़्ते को आधार बनाया जा सकता है। नम्बर तीन: प्रधान जज ने अपने भाषण में, जब वह सारी बात का ब्योरा दे रहा था, जूरी को यह नहीं बताया कि क़ानून की दृष्टि से अपराध की परिभाषा क्या होती है। इस तरह ज़ाब्ता फ़ौजदारी के भाग १, दफ़ा ८०१ का उल्लंघन हुआ है। यह मान लिया गया है कि मास्लोवा ने स्मेल्कोव को ज़हर दिया। लेकिन इस बात का कोई सबूत नहीं कि वह जान बूझ कर स्मेल्कोव की हत्या करना चाहती थी। इसलिए जूरी को पूरा पूरा हक़ था कि वह मास्लोवा को हत्या का अपराधी नहीं ठहराये बल्कि उस पर केवल लापरवाही का दोष लगाये, जिस कारण स्मेल्कोव की मृत्यु हो गई, हालांकि मास्लोवा की कोई इच्छा उसे मारने की नहीं थी। प्रधान जज ने जूरी के इस अधिकार का उल्लेख नहीं किया। यह है सबसे बड़ा नुक़्ता।"

"हां, लेकिन इसकी ख़बर हमें ख़ुद होनी चाहिए थी। यह भूल तो हमारी है।"

"ख़ैर। नम्बर चार," वकील कहता गया, "जो जवाब जूरी ने दिया है उसमें प्रत्यक्षत: विरोधाभास पाया जाता है। मास्लोवा पर यह दोष लगाया गया है कि उसने लोभवश, अपनी इच्छा से स्मेल्कोव को ज़हर दिया। उसकी हत्या करने का यही एक हेतु बताया गया है। जूरी ने अपने फ़ैसले में कहा है कि मास्लोवा का कोई इरादा चोरी करने का न था, या और लोगों के साथ मिल कर क़ीमती चीज़ें चुराने का न था। इस जुर्म से उसे बरी किया गया है जिसका मतलब यह है कि जूरी उसे इस जुर्म से भी बरी करना चाहते थे कि मास्लोवा हत्या करने का इरादा रखती थी। यदि जूरी अपने जवाब में इस बात को स्पष्टतया कहना भूल गये तो ग़लतफ़हमी के कारण। और यह ग़लतफ़हमी इसलिए उठी कि प्रधान जज ने जो ब्योरा दिया वह अधूरा था। अत: जब जूरी की ओर से इस क़िस्म का जवाब दिया जाता है तो उस पर ज़ाब्ता फ़ौजदारी की दफ़ा ८१६ और ८०८ को लगाना ज़रूरी हो जाता है, जिसके अनुसार प्रधान जज का यह फ़र्ज़ हो जाता है कि वह जूरी को उनकी भूल समझाये, और मुजरिम के अपराध के बारे में दोबारा जिरह की जाय और मुक़द्दमे का फ़ैसला फिर से हो।"

"तो प्रधान जज ने ऐसा क्यों नहीं किया?"

"मैं भी यही जानना चाहता हूं कि उसने क्यों ऐसा नहीं किया," हंसते हुए फ़ानारिन ने कहा।

"तो यक़ीनन सेनेट इस भूल को ठीक कर देगी?"

"यह इस बात पर निर्भर करता है कि उस समय सेनेट की अध्यक्षता किसके हाथ में है। ख़ैर, आगे लिखा है," वह तेज़ तेज़ पढ़ने लगा, "जब जूरी की ओर से इस क़िस्म का फ़ैसला आया तो अदालत को कोई अधिकार नहीं था कि वह मास्लोवा को मुजरिम क़रार दे कर उसे सज़ा देती, और उसके मुक़द्दमे पर ज़ाब्ता फ़ौजदारी की दफ़ा ७७१, भाग ३ लागू करती। इस तरह अदालत ने हमारे क़ानून फ़ौजदारी के मूलभूत सिद्धान्तों का निश्चित तौर पर घोर उल्लंघन किया है। उपरोक्त आधार पर मैं प्रार्थना करूंगा कि ज़ाब्ता फ़ौजदारी की दफ़ा ६०६, ६१०, ६१२ के भाग २ और ६२८ के अनुसार इस सज़ा को रद्द किया जाय वग़ैरा वग़ैरा... इस मुक़द्दमे की उसी अदालत के किसी दूसरे विभाग में और जांच की जाय। यह रहा! जो मुमकिन है वह मैंने कर दिया है। पर सच कहूं तो मुझे कामयाबी की उम्मीद कम है, हालांकि यहां सब कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि उस समय सेनेट में कौन कौन से सदस्य मौजूद होंगे। वहां पर कोई असर-रसूख़ हो तो ज़रूर लड़ाइये।

"कुछ सदस्यों को तो मैं ज़रूर जानता हूं।"

"अच्छी बात है। लेकिन जो भी करना हो जल्दी कीजिये। वरना सब लोग अपनी बवासीर का इलाज कराने भाग जायेंगे और आपको उनकी वापसी तक, पूरे तीन महीने इन्तज़ार करना पड़ेगा। अगर इसमें हम असफल रहें तो एक संभावना और भी है। हम ज़ार से अपील कर सकते हैं। उसके लिए भी तिकड़म लड़ानी पड़ेगी। उस हालत में भी मैं सेवा करने के लिए हाज़िर हूं। मेरा मतलब है अपील लिखने के लिए, तिकड़म लड़ाने के लिए नहीं।"

"धन्यवाद। और फ़ीस..."

"मेरा मुंशी आपको दरख़्वास्त भी दे देगा और इसके बारे में भी बता देगा।"

"एक बात और। इस मुजरिम को जेल में मिलने के लिए मुझे सरकारी वकील ने पास दिया था। मगर वहां मुझे पता चला कि अगर मैं मुजरिम

को किसी दूसरे वक़्त और किसी दूसरे कमरे में मिलना चाहूं तो उसके लिए मुझे गवर्नर से इजाज़त लेनी होगी। क्या इसकी कोई ज़रूरत है?"

"हां, मैं सोचता हूं जरूरत है। पर आजकल गवर्नर यहां पर नहीं है। उसकी जगह पर सहायक-गर्वनर है। लेकिन वह ऐसा वेवकूफ़ है कि उसके साथ आपके लिए बात करना मुश्किल हो जायेगा।"

"क्या उसका नाम मास्लेन्निकोव है?"

"हां।"

"मैं उसे जानता हूं," नेख़्लूदोव ने कहा, और वहां से जाने के लिए उठ खड़ा हुआ।

ऐन उसी समय एक बेहद कुरूप स्त्री भागी हुई कमरे में आई – नाटा क़द, पतली सी, ऊपर को उठी हुई नाक, पीला-ज़र्द चेहरा, हड्डियां निकली हुई। यह वकील की पत्नी थी। अपनी कुरूपता के कारण उसका मन तनिक भी विचलित नहीं हुआ था। न केवल उसकी पोशाक बेमिसाल भड़कीली थी – रेशम भी और मख़मल भी, सुर्ख़ पीला और हरा भी सभी कुछ उस पर लदा हुआ था, उसके पतले-झीने बालों में कुण्डल भी बने हुए थे। बड़े गर्व के साथ वह कमरे में उड़ती चली आयी। उसके पीछे पीछे मटमैले रंग के चेहरे वाला, रेशमी कॉलरों वाला कोट और सफ़ेद नकटाई पहने एक लम्बा सा आदमी भी मुस्कराता हुआ चला आया। वह एक लेखक था। नेख़्लूदोव ने उसे देखा हुआ था।

"अनातोल," दरवाज़ा खोलते हुए उसने कहा, "चलो, मेरे कमरे में चलें। यह रहे सेम्योन इवानोविच। इन्होंने वादा किया है कि अपनी कविता ज़रूर पढ़ कर सुनायेंगे। और तुम्हें गार्शिन के बारे में पढ़ कर सुनाना होगा।"

नेख़्लूदोव वहां से जाने लगा तो उसने अपने पति के कान में कुछ फुसफुसा कर कहा फिर फ़ौरन् नेख़्लूदोव को सम्बोधन कर के बोली –

"क्षमा कीजिये, प्रिंस, मैं आपको जानती हूं, इसलिए परिचय की कोई जरूरत नहीं। मैं चाहती हूं कि आप भी हमारी साहित्यिक गोष्ठी में भाग लें। थोड़ी देर के लिए रुक जाइये। गोष्ठी बहुत दिलचस्प होगी। अनातोल ऐसा बढ़िया कविता-पाठ करते हैं कि क्या कहूं।"

"देखा आपने, मुझे क्या क्या करना पड़ता है," फ़ानारिन ने अपने हाथ फैला दिये और मुस्करा कर अपनी पत्नी की ओर इशारा करते हुए

कहा मानो दिखाना चाहता हो कि ऐसी सुन्दर स्त्री की आज्ञा का पालन कौन नहीं करेगा।

इस सम्मान के लिए नेख़्लूदोव ने बड़ी विनम्रता से वकील की पत्नी को धन्यवाद दिया, लेकिन अपनी मजबूरी भी बताई कि वह रुक नहीं सकेगा। उसका चेहरा गंभीर और उदास हो रहा था। उसने विदा ली और बाहर निकल आया।

"जाने अपने को क्या समझता है!" उसके चले जाने के बाद वकील की पत्नी ने टिप्पणी कसी।

ड्योढ़ी में मुंशी ने उसके हाथ में तैयार दरख़्वास्त दी और बताया कि वकील साहिब की फ़ीस एक हज़ार रूबल होगी। साथ ही यह भी कहा कि मिस्टर फ़ानारिन अक्सर इस तरह का काम नहीं करते, लेकिन इस बार केवल उसकी ख़ातिर उन्होंने यह काम सिर पर ले लिया है।

"इस दरख़्वास्त को क्या करना है? इस पर कौन दस्तख़त करेगा?" नेख़्लूदोव ने पूछा।

"अभियुक्ता स्वयं दस्तख़त कर सकती है, लेकिन अगर यह मुमकिन न हो तो मिस्टर फ़ानारिन दस्तख़त कर देंगे। उस हालत में अभियुक्ता से वकालत नामा लाना होगा।"

"नहीं नहीं, मैं ख़ुद जा कर दस्तख़त करवा लाऊंगा," नेख़्लूदोव ने कहा। वह ख़ुश था कि निश्चित दिन से पहले उससे मिल पायेगा।

४६

नियमानुसार, ऐन वक़्त पर जेलख़ाने के बरामदों में वार्डर की सीटी की आवाज़ गूंज गई। कोठरियों पर लगे लोहे के दरवाज़े खड़खड़ा कर खुलने लगे। नंगे पांवों के चलने की आवाज़ आई। एड़ियां खनखनाईं। जिन क़ैदियों को मेहतरों का काम करना था वे बरामदों को लांघ कर जाने लगे। उनसे तीखी बदबू आ रही थी, जिससे हवा बोझल हो उठी। क़ैदियों ने मुंह-हाथ धोया, कपड़े पहने, जांच के लिए बाहर आये, और फिर चाय के लिए उबलता पानी लेने चले गये।

नाश्ते के समय सभी कोठरियों में क़ैदी बड़ी सजीवता से बातें कर रहे थे। दो क़ैदियों को उस रोज़ कोड़ों से पीटा जाना था। उनमें से एक पढ़ा-

लिखा युवक था जिसका नाम वासील्येव था। यह कोई क्लर्क था जिसने ईर्ष्या से पागल हो कर अपनी रखैल को मार डाला था। सभी क़ैदी उसे पसन्द करते थे क्योंकि वह दिल का उदार और हंसमुख युवक था और जेलख़ाने के अधिकारियों के सामने डट कर खड़ा हो जाता था। वह क़ानून से वाक़िफ़ था, इसलिए हर नियम का पालन ज़ोर दे कर करवाता था। इसलिए अधिकारियों को वह बहुत बुरा लगता था। तीन हफ़्ते पहले भोजन करते समय एक मेहतर से वार्डर की नयी वर्दी पर शोरबा गिर गया था। वार्डर ने ज़ोर से उसके मुंह पर तमाचा दे मारा। वासील्येव ने मेहतर का पक्ष लिया और कहा कि क़ैदी को पीटना क़ानून के ख़िलाफ़ है। "मैं तुम्हें क़ानून सिखाऊंगा," वार्डर बोला और ग़ुस्से से वासील्येव को गालियां देने लगा। जवाब में वासील्येव ने भी गालियां दीं। वार्डर उस पर भी हाथ चलाने के लिए आगे बढ़ा लेकिन वासील्येव ने उसके दोनों हाथ पकड़ लिये, और थोड़ी देर तक पकड़े रहने के बाद उसे घुमा कर दरवाज़े में से बाहर निकाल दिया। वार्डर ने जा कर इन्स्पेक्टर से शिकायत कर दी। और इन्स्पेक्टर ने हुक्म दे दिया कि वासील्येव को क़ैद-तनहाई में रखा जाय।

क़ैद-तनहाई के लिए क़ैदियों को छोटी छोटी अन्धेरी कोठरियों में बन्द कर दिया जाता था। एक के साथ एक ऐसी कोठरियों की एक लम्बी क़तार थी। कोठरियों को बाहर से ताला चढ़ा दिया जाता। अन्दर न खाट थी, न मेज़, न कोई कुर्सी। क़ैदी गन्दे फ़र्श पर बैठते और सोते। और चूहे इतने निडर कि क़ैदियों की रोटी तक चुरा ले जाते। जितनी देर क़ैदी हिलता-डुलता रहता तो वे दूर रहते, लेकिन ज्यों ही वह हिलना-डुलना बन्द कर देता तो उसे काटने तक के लिए चले आते। वासील्येव ने क़ैद-तनहाई में जाने से इन्कार कर दिया, बोला कि उसने कोई क़सूर नहीं किया। लेकिन वे ज़बरदस्ती से उसे अन्दर धकेलने लगे। वासील्येव ने विरोध किया। दो और क़ैदी उसकी मदद करने के लिए आ गये और उसे वार्डरों के हाथ से छुड़ा लिया। सब वार्डर इकट्ठे हो गये। इनमें पेत्रोव नाम का एक वार्डर था जिसमें वहशियों की सी ताक़त थी। क़ैदियों को उन्होंने नीचे गिरा दिया और धकेल कर कोठरियों में बन्द कर दिया। साथ ही गवर्नर को फ़ौरन् ख़बर कर दी कि जेलख़ाने में क़ैदियों ने बग़ावत कर दी है। गवर्नर ने हुक्म दिया कि मुख्य अपराधियों वासील्येव और नेपोम्नियाश्ची की पीठ पर तीस तीस कोड़े लगाये जायं।

यह सज़ा उस कमरे में दी जानी थी जिसमें स्त्री-क़ैदी अपने मुलाक़ातियों से मिलती थीं।

यह ख़बर पिछली शाम को ही सब क़ैदियों को पता चल गई थी, इसी लिए कोठरियों में इसकी बड़ी चर्चा थी।

अपने कमरे के कोने में कोराब्ल्योवा, छबीली, फ़ेदोस्या और मास्लोवा एक साथ बैठी चाय पी रही थीं। सभी के चेहरे वोद्का के कारण लाल हो रहे थे। सभी खुल खुल कर बातें कर रही थीं। मास्लोवा को अब बराबर शराब मिलती रहती थी, और वह अपनी साथिनों को मुफ़्त पिलाती रहती थी।

"उसने कोई दंगा-फ़साद तो नहीं किया," हाथ में चीनी की डली पकड़े, अपने मज़बूत दांतों से उसे थोड़ा थोड़ा कर के कुतरते हुए कोराब्ल्योवा ने कहा। वह वासील्येव की बात कर रही थी। "अपने साथी की पीठ पर खड़ा हुआ, बस। आजकल क़ैदी को पीटने का कोई क़ानून नहीं है।"

"मैंने सुना है वह बहुत अच्छा आदमी है," फ़ेदोस्या बोली। वह एक लकड़ी के कुन्दे पर तख़्ते के सामने बैठी थी जिस पर चायदानी रखी थी। बालों की लम्बी लम्बी चोटियां उसने सिर के इर्दगिर्द लपेट रखी थीं।

"तुम्हें चाहिए कि तुम इस बारे में उससे बात करो," चौकीदारिन ने मास्लोवा से कहा। "उससे" का मतलब था नेख़्लूदोव से।

"मैं ज़रूर कहूंगी। वह मेरी कोई भी बात नहीं टालेगा," मास्लोवा ने सिर झटक कर मुस्कराते हुए कहा।

"हां, मगर वह आयेगा कब? ये लोग तो क़ैदियों को लाने भी चले गये हैं," फ़ेदोस्या बोली, फिर ठण्डी सांस भर कर कहने लगी, "कितनी भयानक बात है।"

"मैंने एक बार एक किसान को कोड़े लगते देखा था। मेरे ससुर ने मुझे गांव के मुखिया के घर भेजा। वहां मैं गई, और वहां..." चौकीदारिन एक लम्बी कहानी सुनाने लगी, लेकिन उसी वक़्त ऊपर वाले बरामदे से लोगों के चलने और बोलने की आवाज़ें आने लगीं। चौकीदारिन आगे नहीं कह पायी।

सभी स्त्रियां चुप हो गईं। उनके कान इन आवाज़ों की ओर लगे हुए थे।

"उसे खींचे लिये जाते हैं, शैतान के बच्चे!" छबीली बोली। "वे उसे मार डालेंगे, ज़रूर मार डालेंगे। सभी वार्डर उसके दुश्मन हैं, क्योंकि यह उनसे डरता नहीं है।"

ऊपर से आवाज़ें आनी बन्द हो गयीं। चुप्पी छा गई। चौकीदारिन ने फिर अपनी कहानी कहनी शुरू की और अन्त तक सुनाती गई। कहने लगी कि जब वह खलिहान में गई और किसान को पिटते देखा तो ऐसी डरी कि उसे मतली आने लगी। वग़ैरा वग़ैरा। छबीली सुनाने लगी कि उन्होंने एक बार श्चेग्लोव को कोड़े लगाये तो उसने सी तक नहीं की। फिर फ़ेदोस्या ने चाय के बरतन उठा दिये, और कोराब्ल्योवा और चौकीदारिन सिलाई ले कर बैठ गई। मास्लोवा अपने घुटनों के इर्दगिर्द बांहें डाले, खिन्न और उदास, तख़्ते पर बैठी रही। वह चाहती थी कि लेट जाय और सोने की कोशिश करे, लेकिन उसी वक़्त स्त्री-वार्डर ने उसे बुलाया और कहा कि दफ़्तर में चलो, वहां कोई आदमी तुमसे मिलने आया है।

"अब भूलना नहीं, हमारे बारे में ज़रूर कहना," बुढ़िया मेन्शोवा बोली। मास्लोवा उठ कर धुंधले से शीशे के सामने सिर का रूमाल ठीक करने लगी। "हमने घर को आग नहीं लगाई। उस शैतान ने ख़ुद लगाई। उसके कारिन्दे ने अपनी आंखों से उसे करते देखा। अब इन्कार करता है कि नहीं देखा। समझता है सच बोलेगा तो नरक में जायेगा। उसे कहना कि मित्री से मिले। मित्री उसे सारी बात साफ़ साफ़ बता देगा। ज़रा सोचो तो, हमने सपने में बुरा नहीं चेता और हम तो यहां जेल में सड़ रहे हैं, और वह ख़ुद किसी की बीवी को बग़ल में ले कर शराबख़ाने में बैठा गुलछर्रे उड़ा रहा होगा।"

"यह इन्साफ़ नहीं है," कोराब्ल्योवा ने हामी भरी।

"ज़रूर बताऊंगी–सब कुछ बता दूंगी," मास्लोवा ने जवाब दिया। "घूंट भर और शराब दे दो। इससे मेरा साहस बना रहेगा," आंख मारते हुए उसने कहा। कोराब्ल्योवा ने आधा प्याला वोद्का डाल कर दे दी, जो मास्लोवा पी गई। फिर मुंह पोंछा और बार बार "साहस बना रहेगा, साहस बना रहेगा" कहती हुई, हंसती, सिर झटकती, वार्डर के पीछे पीछे बरामदे में जाने लगी।

४७

नेख़्लूदोव हॉल में बैठा बड़ी देर तक इन्तज़ार करता रहा।

जेलख़ाने पहुंच कर उसने बाहर के दरवाज़े पर लगी घण्टी बजाई। जवाब वार्डर ने दिया जो ड्यूटी पर था। नेख़्लूदोव ने पास उस के हाथ में दिया जो बड़े सरकारी वकील ने उसे दिया था।

"आप किसे मिलना चाहते हैं?"

"क़ैदी मास्लोवा को।"

"इस वक़्त आप उसे नहीं मिल सकते। इन्स्पेक्टर साहब को फ़ुर्सत नहीं है।"

"क्या वह दफ़्तर में हैं?"

"नहीं, मुलाक़ातियों के कमरे में हैं," वार्डर ने जवाब दिया। वह कुछ घबराया हुआ सा लग रहा था।

"क्यों, क्या आज मुलाक़ात का दिन है?"

"नहीं, उन्हें ख़ास काम है।"

"तो उनसे कैसे मिला जाय?"

"अभी बाहर आयेंगे तो मिल लेना। थोड़ा इन्तज़ार कीजिये," वार्डर बोला।

उसी वक़्त एक सॉर्जेंट-मेजर बग़ल वाले दरवाज़े में से बाहर निकला, चिकना-चुपड़ा चेहरा, मूंछें तम्बाकू से पीली पड़ी हुईं। उसकी वर्दी पर लगी सुनहरी डोरी चमक रही थी। आते ही वार्डर पर बरस पड़ा—

"तुमने क्यों अन्दर आने दिया है? दफ़्तर में..."

"मुझे बताया गया कि इन्स्पेक्टर साहब यहां पर हैं," नेख़्लूदोव ने कहा। सॉर्जेंट-मेजर को इतना उत्तेजित देख कर वह हैरान हो रहा था।

उसी वक़्त अन्दर का दरवाज़ा खुला और पेत्रोव बाहर निकला, पसीने से तर और हांफता हुआ।

"याद रखेगा," उसने सॉर्जेंट-मेजर को सम्बोधन करते हुए कहा।

सॉर्जेंट-मेजर ने आंख के इशारे से समझाया कि नेख़्लूदोव खड़ा है। पेत्रोव तेवर चढ़ाये, पीछे के दरवाज़े से बाहर निकल गया।

"कौन याद रखेगा? ये सब इतने घबराये हुए क्यों हैं? सॉर्जेंट-मेजर ने इसे इशारा क्यों किया?" नेख़्लूदोव सोच रहा था।

सॉर्जेट-मेजर ने फिर नेख़्लूदोव को सम्बोधित किया—

"आप यहां पर किसी से नहीं मिल सकते। कृपा कर के इधर दफ़्तर में आ जाइये।"

नेख़्लूदोव चलने ही वाला था कि पीछे का दरवाज़ा खुला और इन्स्पेक्टर अन्दर आ गया। वह सबसे ज़्यादा घबराया हुआ था और बार बार ठण्डी सांसें ले रहा था। नेख़्लूदोव को देखते ही वह वार्डर से बोला—

"फ़ेदोतोव, स्त्रियों की पांच नम्बर कोठरी में से मास्लोवा को दफ़्तर में भेज दो।"

"मेरे साथ आइये," नेख़्लूदोव की ओर घूमते हुए इन्स्पेक्टर ने कहा। वे सीढ़ियों पर चढ़ कर एक छोटे से कमरे में पहुंचे जिसमें एक ही खिड़की, मेज़ और कुछ कुर्सियां थीं। इन्स्पेक्टर बैठ गया।

"बहुत, बहुत मुश्किल काम है। ऐसी कड़ी ज़िम्मेदारियां हैं," सिगरेट निकालते हुए उसने फिर नेख़्लूदोव से कहा।

"ज़ाहिर है, आप बहुत थक गये हैं," नेख़्लूदोव बोला।

"मैं इस नौकरी से ही थक गया हूं। मुझ पर बहुत कड़ी ज़िम्मेदारियां हैं। मेरी कोशिश तो रहती है कि इनका बोझ हल्का हो लेकिन उल्टे काम और भी ख़राब होता है। मैं तो सोचता हूं कि किसी तरह इस काम से छुट्टी मिले। बहुत कड़ी ज़िम्मेदारियां हैं।"

नेख़्लूदोव को मालूम नहीं था कि इन्स्पेक्टर को कौन सी ख़ास मुश्किलें पेश आ रही हैं, लेकिन आज वह ख़ास तौर पर उदास और निराश था और चाहता था कि लोग अपनी सहानुभूति प्रकट करें।

"हां, मुझे भी यही लगता है, आपकी ज़िम्मेदारियां सचमुच बहुत कड़ी हैं," नेख़्लूदोव ने कहा, "आप यह काम करते ही क्यों हैं?"

"क्या करूं? घर है, परिवार है, आमदनी का और कोई ज़रिया नहीं।"

"लेकिन अगर इतना ही कड़ा काम है तो..."

"फिर भी, आप जानते हैं, आदमी किसी हद तक उपयोगी हो सकता है। जहां तक मुझसे बन पड़ता है मैं नरमी बरतता हूं। मेरी जगह कोई और होता तो दूसरी ही तरह का व्यवहार करता। आप जानते हैं, हमारे पास यहां दो हज़ार से भी ज़्यादा क़ैदी हैं। और क़ैदी भी कैसे! उन्हें संभालने का ढंग आना चाहिए। आख़िर वे भी इन्सान हैं। उनके प्रति

अपने आप मन में दया उठती है। पर फिर भी उन्हें क़ाबू में तो रखना ही पड़ता है।"

और इन्स्पेक्टर नेख़्लूदोव को बताने लगा कि कुछ ही दिन पहले क़ैदी आपस में लड़ने लगे, जिससे एक क़ैदी मारा गया।

कहानी जारी रहती मगर उसी वक़्त एक वार्डर मास्लोवा को कमरे में ले आया।

मास्लोवा की नज़र अभी इन्स्पेक्टर पर नहीं पड़ी थी कि नेख़्लूदोव ने दरवाज़े में से उसे देख लिया। मास्लोवा का चेहरा लाल हो रहा था, और वार्डर के पीछे पीछे तेज़ तेज़ चलती हुई वह मुस्करा रही थी और बार बार अपना सिर झटक रही थी। परन्तु इन्स्पेक्टर को देखते ही वह डर गई और एकटक उसकी ओर देखने लगी। उसके चेहरे का भाव बिलकुल बदल गया। फिर फ़ौरन् ही संभल गई, और बड़ी निडरता से, हंसते हुए नेख़्लूदोव से बोली—

"कहिये, आप कैसे हैं?" एक एक शब्द को लम्बा करते हुए वह बोल रही थी। फिर मुस्कराते हुए, ख़ूब ज़ोर से नेख़्लूदोव के साथ हाथ मिलाया। पहली बार जब नेख़्लूदोव से मिली थी तो इस तरह हाथ नहीं मिलाया था।

"मैं यह एक दरख़्वास्त लाया हूं। इस पर दस्तख़त कर दो," नेख़्लूदोव ने कहा। जिस निडरता से आज मास्लोवा उसके साथ बातें कर रही थी, उसे देख कर वह हैरान हो रहा था। "यह दरख़्वास्त वकील ने लिखी है, तुम्हारा उस पर दस्तख़त करना ज़रूरी है, फिर हम उसे पीटर्सबर्ग भेज देंगे।"

"बेशक, जो आप कहें मुझे मंज़ूर है," आंख मार कर मुस्कराते हुए उसने कहा।

नेख़्लूदोव ने जेब में हाथ डाला और एक तह किया हुआ काग़ज़ बाहर निकाला और उसे लिये हुए मेज़ के पास गया।

"आपकी इजाज़त हो तो यहां बैठ कर यह इस पर दस्तख़त कर दे," नेख़्लूदोव ने इन्स्पेक्टर से पूछा।

"हां, हां, बैठो। लो, यह क़लम लो। लिखना जानती हो?" इन्स्पेक्टर ने कहा।

"किसी ज़माने में तो जानती थी," मास्लोवा बोली, और अपना घाघरा और जाकेट की आस्तीनें ठीक कर के मेज़ के सामने बैठ गई।

फिर मुस्कराई और अपने छोटे से चुस्त हाथ में बेढब से तरीक़े से क़लम पकड़ी, और नेख़्लूदोव की तरफ़ देख कर हंस पड़ी।

नेख़्लूदोव ने बताया कि क्या लिखना है और कहां पर दस्तख़त करना है।

उसने क़लम को स्याही में डुबोया, बड़े ध्यान से उससे कुछ क़तरे स्याही के गिराये, और अपना नाम लिख दिया।

"बस?" उसने पूछा। वह कभी नेख़्लूदोव की ओर और कभी इन्स्पेक्टर की ओर देखती और क़लम को कभी क़लमदान पर और कभी काग़ज़ों पर रखती।

"मुझे तुमसे कुछ कहना है," मास्लोवा के हाथ में से क़लम लेते हुए नेख़्लूदोव ने कहा।

"अच्छी बात है, बताओ क्या कहना है," उसने कहा। फिर सहसा उसका चेहरा गंभीर पड़ गया, मानो उसे कुछ याद हो आया हो या नींद आने लगी हो।

नेख़्लूदोव को मास्लोवा के पास छोड़ कर इन्स्पेक्टर उठ कर कमरे में से बाहर चला गया।

४८

जो वार्डर मास्लोवा को साथ ले कर आया था, वह कुछ दूर हट कर, खिड़की के दासे पर जा बैठा। नेख़्लूदोव के लिए निर्णायक क्षण आ पहुंचा था। वह सारा वक़्त मन ही मन अपने को धिक्कारता रहा था कि उसने पहली बार मास्लोवा से मिलने पर मुख्य बात नहीं कही। अब वह निश्चय कर के आया था कि उससे साफ़ कह देगा कि मैं तुमसे शादी करूंगा। मास्लोवा मेज़ के एक सिरे पर बैठी थी। नेख़्लूदोव उसके बिलकुल सामने बैठा था। कमरे में रोशनी थी, और नेख़्लूदोव को पहली बार उसका चेहरा नज़दीक से नज़र आ रहा था। उसने साफ़ साफ़ देखा कि उसकी आंखों और मुंह के आस-पास रेखाएं थीं, पलकें सूजी हुई थीं। नेख़्लूदोव के हृदय में उसके प्रति इतनी अनुकम्पा उठी जितनी पहले कभी नहीं थी।

वार्डर कोई यहूदी लगता था। उसके मुंह पर भूरे रंग के गलमुच्छे थे। नेख़्लूदोव ने मेज़ के ऊपर सामने की ओर झुक कर, फुसफुसा कर कहा ताकि वार्डर न सुन सके—

"अगर इस दरख़्वास्त से कुछ नहीं हुआ तो हम महाराज के नाम प्रार्थना-पत्न भेजेंगे। जो कुछ भी मुमकिन हुआ किया जायेगा।"

"अगर शुरू में ही कोई ढंग का वकील किया होता तो यह नौवत ही न आती," वह बीच ही में बोल उठी। "मेरा वकील तो निरा बुद्धू था। सारा वक़्त मेरी ही तारीफ़ें करता रहता था," वह कह कर हंसने लगी। "अगर उस वक़्त उन्हें मालूम होता कि मेरी तुमसे जान-पहचान है तो बात ही बदल जाती। सब यही सोचे बैठे हैं कि मैं चोर हूं।"

"आज यह कैसे अजीब ढंग से बातें कर रही है," नेख़्लूदोव सोच रहा था। वह अपने मन की बात कहने जा ही रहा था जब मास्लोवा ने फिर बोलना शुरू कर दिया—

"हां, मुझे तुमसे एक बात कहनी है। हमारे यहां एक बूढ़ी औरत है। इतनी अच्छी, इतनी अच्छी कि क्या कहूं, सब हैरान होते हैं। उसने कोई जुर्म नहीं किया, फिर भी उसे पकड़ा हुआ है। उसके बेटे को भी। सभी जानते हैं कि उनका कोई दोष नहीं, उन पर जुर्म लगाया गया है कि उन्होंने किसी के घर को आग लगाई। जानते हो, जब उसे मालूम हुआ कि हमारी-तुम्हारी जान-पहचान है तो मुझसे कहने लगी—'उनसे कहो मेरे बेटे को मिलें। वह उन्हें सारी बात बता देगा।'" बातें करते हुए मास्लोवा कभी दायीं ओर कभी बायीं ओर सिर झुका कर नेख़्लूदोव की ओर देखती। "उसका नाम मेन्शोव है। मिलोगे न उसे? इतनी अच्छी है वह बुढ़िया, तुम्हें क्या बताऊं। देखते ही पता चल जाता है कि उसका कोई दोष नहीं। यह काम करोगे न? तुम बड़े अच्छे हो!" यह कहते हुए मास्लोवा मुस्कराई, फिर उसकी ओर देख कर आंखें नीची कर लीं।

"अच्छी बात है, मैं पता करूंगा," नेख़्लूदोव ने कहा। नेख़्लूदोव मास्लोवा को यों खुल खुल कर बातें करते देख कर अधिकाधिक हैरान हो रहा था। "पर मैं तो तुम्हारे साथ अपने बारे में बात करने आया हूं। तुम्हें याद है जो कुछ मैंने पिछली बार तुमसे कहा था?"

"पिछली बार तुमने तो कितनी ही बातें कही थीं। क्या कहा था तुमने?" मास्लोवा बोली। वह अब भी मुस्कराये जा रही थी और सिर दायें से बायें घुमा रही थी।

"मैंने कहा था कि मैं तुमसे माफ़ी मांगने आया हूं," नेख़्लूदोव ने कहना शुरू किया।

"उसका क्या फ़ायदा? माफ़ी, माफ़ी, उससे क्या होगा? इससे तो यही अच्छा है कि..."

"मैं अपने पाप का प्रायश्चित करना चाहता हूं। बातों से नहीं, बल्कि कर्म से। मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं तुमसे शादी करूंगा।"

सहसा मास्लोवा के चेहरे पर भय छा गया। उसकी ऐंचीतानी आंखें नेख़्लूदोव के चेहरे पर गड़ गईं, मगर फिर भी ऐसा लग रहा था जैसे उसे देख नहीं रही हैं।

"यह किस लिए?" ग़ुस्से से भौंहें सिकोड़ कर उसने कहा।

"भगवान् के सामने मैं अपना कर्तव्य निभाना चाहता हूं।"

"अब कौन सा भगवान् तुम्हें मिल गया है? क्या ऊल-जलूल बोल रहे हो? भगवान्? कौन सा भगवान्? तुम्हें उस वक़्त भगवान् को याद करना था," मास्लोवा ने कहा और उसका मुंह खुला का खुला रह गया।

अब जा कर नेख़्लूदोव को पता चला कि मास्लोवा की सांस में से शराब की गन्ध आ रही है। वह मास्लोवा की उत्तेजना का कारण समझ गया।

"शान्त हो जाओ," वह बोला।

"मैं क्यों शान्त होऊं? तू समझता है मैं नशे में हूं? हां मैं नशे में हूं, पर मैं फिर भी जानती हूं मैं क्या कह रही हूं," वह तेज़ तेज़ बोलने लगी। उसका चेहरा तमतमा उठा। "मैं तो मुजरिम हूं, रण्डी हूं। और तुम भले आदमी हो, एक प्रिंस हो। मुझे हाथ लगा कर तू अपने को नापाक नहीं कर। तू जा अपनी प्रिंसेसों के पास। मेरी क़ीमत तो दस रूबल है।"

"तुम बड़ी सख़्त बातें कर रही हो, लेकिन इस वक़्त जो मेरे मन पर गुज़र रही है वह मैं ही जानता हूं," नेख़्लूदोव ने कहा। उसका शरीर कांप रहा था। "तुम सोच भी नहीं सकती हो कि मैं तुम्हारे प्रति अपने को कितना बड़ा मुजरिम समझता हूं।"

"मुजरिम समझता हूं!" मास्लोवा ने ग़ुस्से से नेख़्लूदोव की नक़ल उतारते हुए कहा। "उस वक़्त तो तू अपने को मुज़रिम नहीं समझता था। उस वक़्त तो सौ रूबल का नोट फेंक कर चलते बना था। यह ले—तेरी क़ीमत..."

"जानता हूं, जानता हूं, पर अब क्या किया जाय?" नेख़्लूदोव ने

कहा। "अब मैं तुम्हें छोड़ कर नहीं जाऊंगा, मैंने निश्चय कर लिया है और मैं अपनी बात पूरी कर के रहूंगा।"

"और मैं कहती हूं कि तू कभी पूरी नहीं करेगा," मास्लोवा बोली और ज़ोर ज़ोर से हंसने लगी।

"कात्यूशा!" उसके हाथ को छूते हुए नेख़्लूदोव कहने लगा।

"चला जा यहां से। तू ठहरा प्रिंस, मैं मुजरिम। तेरा यहां क्या काम?" उसने हाथ छुड़ाते हुए चीख़ कर कहा। गुस्से से उसका चेहरा विकृत हो रहा था। "तू मेरे ज़रिए अपने आपको बचाना चाहता है?" वह कहे जा रही थी। उसके दिल में तूफ़ान उठ रहा था। आज वह अपने दिल का सारा गुबार निकाल देना चाहती थी। "इस लोक में तूने मुझे भोगा और अब मुझसे ही अपना परलोक सुधारना चाहता है! मुझे तुझसे नफ़रत है—तेरी इन ऐनकों से, तेरी इस मोटी गन्दी सूरत से मुझे नफ़रत है! चला जा यहां से, चला जा!" उसने चिल्ला कर कहा और ज़ोर से उठ खड़ी हुई।

वार्डर भागा हुआ उनके पास आया।

"क्या शोर मचा रही हो? ऐसा करोगी तो..."

"कृपया, रहने दीजिये," नेख़्लूदोव ने कहा।

"शोर मचाने का क्या मतलब है!" वार्डर बोला।

"मेहरबानी कर के थोड़ा इन्तज़ार कीजिये," नेख़्लूदोव ने कहा। वार्डर खिड़की के पास लौट गया।

मास्लोवा, आंखें नीची किये, अपने छोटे छोटे हाथ कस कर एक दूसरे से पकड़े, फिर बैठ गई।

नेख़्लूदोव उसके पास खड़ा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहे।

"तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है?" वह बोला।

"किस बात का, कि तुम मेरे साथ व्याह करना चाहते हो! यह कभी नहीं होगा। मैं मर जाऊंगी लेकिन तुम्हारे साथ व्याह नहीं करूंगी। बस, सुन लिया?"

"कोई बात नहीं। मैं फिर भी तुम्हारी सेवा करता रहूंगा।"

"यह तुम जानो। पर यह समझ लो कि मुझे तुमसे किसी चीज़ की

भी ज़रूरत नहीं है। यह मैं सच कह रही हूं। मर क्यों नहीं गई मैं तभी!" उसने कहा और विलख-विलख कर रोने लगी।

नेख़्लूदोव के मुंह में ज़वान नहीं थी। उसे रोता देख कर उसकी आंखों में भी आंसू आ गये।

मास्लोवा ने सिर उठा कर उसकी ओर देखा तो हैरान रह गई, फिर रूमाल से अपने आंसू पोंछने लगी।

वार्डर ने फिर पास आ कर कहा कि मुलाक़ात का वक़्त ख़त्म हो चुका है। मास्लोवा उठ खड़ी हुई।

"तुम इस वक़्त वेचैन हो। हो सका तो मैं कल फिर तुमसे मिलने आऊंगा। जो कुछ मैंने कहा है, उस पर विचार करना," नेख़्लूदोव ने कहा।

मास्लोवा ने कोई जवाव नहीं दिया, और विना उसकी ओर देखे, वार्डर के पीछे पीछे कमरे में से वाहर चली गई।

"अब तो तुम्हारे मज़े ही मज़े हैं," कोठरी में मास्लोवा के लौटने पर कोराब्ल्योवा कहने लगी। "जान पड़ता है वह तुम पर फ़िदा है। जव तक वह तुम्हें चाहता है, उसका पूरा पूरा फ़ायदा उठा लो। उसने मदद की तो छूट आओगी। अमीर लोग सब कुछ कर सकते हैं।"

"ठीक है, बिलकुल ठीक कहती हो," चौकीदारिन अपनी सुरीली आवाज़ में कहने लगी। "जब कोई ग़रीव आदमी व्याह करना चाहे तो हज़ार झंझट उठते हैं। पर अमीर आदमी के लिए तो वस कहने की देर है, उसका झट से व्याह हो जाता है। मैं ऐसे एक अमीर ज़ादे को जानती हूं। जानती हो उसने क्या किया? .."

"क्या तुमने मेरे वारे में उससे वात की थी?" बुढ़िया ने पूछा।

परन्तु मास्लोवा ने अपनी साथिनों के किसी भी सवाल का जवाव नहीं दिया, और तख़्ते पर जा कर लेट रही और शाम तक वहीं पड़ी रही। सारा वक़्त वह अपनी ऐंची आंखों से छत के एक कोने की ओर देखती रही। उसकी आत्मा में एक कड़ा संघर्ष चल रहा था। नेख़्लूदोव की बातों से उसे वह दूसरी दुनिया याद हो आयी थी जिसमें उसने यन्त्रणा भोगी थी। उस दुनिया को विना समझे, उससे घृणा करती हुई वह उसमें से निकल आयी थी। सारा वक़्त वह एक तन्द्रा की हालत में जीती रही

थी। आज उसकी तन्द्रा टूट गई थी। परंतु उन दिनों की स्पष्ट स्मृतियां ले कर जीना असम्भव सा लगता था, वे स्मृतियां उसे असह्य वेदना पहुंचाती थीं। शाम को उसने फिर वोद्का मांगी और अपनी साथिनों के साथ जी भर कर पी।

४९

"हूं, तो यह बात है," जेलख़ाने में से निकलते हुए नेख़्लूदोव सोच रहा था। अब जा कर वह अपने अपराध की गंभीरता को पूरी तरह से समझ पा रहा था। यदि उसने प्रायश्चित करने की कोशिश नहीं की होती तो उसे मालूम ही नहीं हो पाता कि उसने कितना बड़ा अपराध किया है। इतना ही नहीं, स्वयं मास्लोवा भी नहीं समझ पाती कि उसके साथ कैसा जुल्म हुआ है। अब नेख़्लूदोव को अपने पाप की भयंकरता स्पष्टतया नज़र आने लगी थी। अब वह देख रहा था कि उसने इस स्त्री की आत्मा को किस तरह रौंद डाला है। और अब मास्लोवा को भी नज़र आने लगा था, वह भी समझने लगी थी कि उसके साथ कितना बुरा व्यवहार हुआ है। आज तक तो नेख़्लूदोव के मन में आत्मश्लाघा की भावना उठती रही थी, और वह इसी भावना से जैसे खेलता रहा था। जब उसके मन में पश्चाताप भी उठता तो उसका हृदय अपने प्रति श्रद्धा से भर उठता था। परन्तु अब वह भय से कांप उठा। वह जानता था कि अब वह मास्लोवा से किनारा नहीं कर सकता। पर साथ ही उसकी समझ में यह भी नहीं आ रहा था कि उनका एक दूसरे के साथ कैसा सम्बन्ध होगा, और ऐसे सम्बन्ध का क्या बनेगा।

वह बाहर निकल ही रहा था जब एक वार्डर चलता हुआ उसके पास आया और बड़े रहस्यपूर्ण अन्दाज़ से एक पुर्ज़ा उसके हाथ में दिया। वार्डर के चेहरे पर बड़ा घिनौना सा भाव था, मानो वह जान बूझ कर नेख़्लूदोव को उकसाने के लिए आया हो। उसकी छाती पर क्रॉस और तमग़े चमक रहे थे।

"किसी ने आपके नाम यह पुर्ज़ा दिया है, हुज़ूर," लिफ़ाफ़ा नेख़्लूदोव के हाथ में देते हुए उसने कहा।

"किसने?"

"आप पढ़ेंगे तो आपको मालूम हो जायेगा। वह सियासी क़ैदी है। मैं उसी वार्ड में काम करता हूं। इसलिए उस औरत ने मुझी को यह पुर्ज़ा देने को कहा। आप जानते हैं, यह है तो क़ानून के ख़िलाफ़, मगर फिर भी, इन्सान को इन्सान से हमदर्दी होती है..." वार्डर का बात करने का लहजा वड़ा अस्वाभाविक था।

नेख़्लूदोव हैरान हुआ। यह वार्डर उसी वार्ड में काम करता है, जिसमें सियासी क़ैदी रखे गये हैं, और ख़ुद पुर्ज़े पहुंचा रहा है, और वह भी जेल के अन्दर, खुल्लमखुल्ला, सबके सामने। नेख़्लूदोव यह नहीं जानता था कि यह आदमी वार्डर भी था और जासूस भी। उसने पुर्ज़ा ले लिया और जेलख़ाने से वाहर आ कर पढ़ा। पुर्ज़ा चुस्त लिखावट में लिखा था।

"यह जान कर कि आप यहां आते हैं और एक मुजरिम के मुक़द्दमे में आपकी दिलचस्पी है, मेरे दिल में भी आपसे मिलने की ख़्वाहिश उठी है। मुझसे मिलने के लिए इजाज़त मांगिये। आपको फ़ौरन् इजाज़त मिल जायेगी। मिलने पर मैं आपको आपकी आश्रिता के वारे में वहुत कुछ वता सकूंगी। साथ ही अपने दल के बारे में भी। आपकी, कृतज्ञा, वेरा वोगोदूख़ोव्स्काया।"

वेरा वोगोदूख़ोव्स्काया नोवगोरोद गुबेर्निया के एक दूर-पार के गांव में अध्यापिका का काम करती थी। एक बार जब नेख़्लूदोव अपने मित्रों के साथ रीछ का शिकार खेलने गया तो वे उसी गांव में ठहरे थे। वहां इस महिला ने नेख़्लूदोव से आर्थिक सहायता की प्रार्थना की थी ताकि वह आगे अपनी पढ़ाई जारी रख सके। नेख़्लूदोव ने उसे कुछ पैसे दिये थे। उसके बाद यह महिला उसके मन से उतर गई थी। अव जान पड़ता था कि इस महिला ने सियासी जुर्म किये हैं, और जेल में है (शायद जेल में ही उसे नेख़्लूदोव की कहानी मालूम हुई है) और उसकी मदद करना चाहती है। उन दिनों जीवन कितना सरल और सुगम था, और अब कितना जटिल और कठोर हो उठा है! नेख़्लूदोव को वे दिन याद हो आये, जिन दिनों उसका वोगोदूख़ोव्स्काया से परिचय हुआ था। उन्हें याद कर के उसके दिल में ख़ुशी की लहर दौड़ गई। बड़ी स्पष्टता से वह दृश्य उसकी आंखों के आगे घूम गया। शीतकाल की समाप्ति के पर्व से कुछ ही दिन पहले की बात थी। वे एक ऐसी जगह पर थे जहां से रेल का स्टेशन ४० मील दूर था। उस दिन शिकार अच्छा हुआ था—उन्होंने दो रीछ मार

डाले थे, और वापस लौटने से पहले सभी लोग बैठे भोजन कर रहे थे। जिस घर में वे बैठे थे उस घर की मालकिन उनके पास आ कर बोली थी कि पादरी की बेटी प्रिंस नेख़्लूदोव से बात करना चाहती है।

"क्या देखने में अच्छी है?" किसी ने पूछा था।

"ऐसी बात मत कहो," नेख़्लूदोव ने कहा था और बड़ी गंभीर मुद्रा धारण किये उठ खड़ा हुआ था। फिर मुंह पोंछ कर, यह सोचते हुए कि पादरी की बेटी को मेरे साथ क्या काम हो सकता है, वह मकान के उस हिस्से में चला गया था जिसमें घर के लोग रहते थे।

वहां उसने एक लड़की को खड़े देखा था, फ़ैल्ट का टोप लगाये, वह कन्धों पर गरम कोट ओढ़े थी। लड़की शरीर की मज़बूत थी लेकिन शक्ल की कुरूप थी। केवल कमान जैसी भौंहों के नीचे उसकी आंखें बेहद सुन्दर थीं।

"लो बेटी, यह है प्रिंस। जो कहना हो इनसे कह लो। मैं बाहर ठहरती हूं," बुढ़िया मालकिन ने कहा था।

"मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं? नेख़्लूदोव ने पूछा।

"आप... आप... आप तो धनी हैं, अपना रुपया शिकार जैसी फ़िज़ूल बातों पर बर्बाद करते हैं," लड़की कहने लगी थी। वह बेहद घबरायी हुई थी। "मैं जानती हूं... मुझे केवल एक चीज़ की ज़रूरत है... मैं लोगों की सेवा करना चाहती हूं। पर मैं कुछ भी नहीं कर सकती, क्योंकि मैं बहुत कम जानती हूं।"

लड़की की आंखों से नज़र आ रहा था कि वह बड़ी दयालु-स्वभाव की है, और जो कुछ कह रही है बिल्कुल सच होगा। जिस लहजे में वह बात कर रही थी उसमें संकोच और दृढ़ता का भाव था जो हृदय को छूता था। नेख़्लूदोव ने, जैसा कि उसका स्वभाव था, मन ही मन लड़की की स्थिति में अपने को रख कर देखा। सहसा उसने लड़की की स्थिति को समझ लिया और उसका हृदय सहानुभूति से भर उठा।

"मैं आपके लिए क्या कर सकता हूं?"

"मैं अध्यापिका का काम करती हूं। मैं यूनीवर्सिटी में पढ़ना चाहती हूं लेकिन इसकी मुझे इजाज़त नहीं मिलती। इजाज़त तो मिलती है लेकिन इसके लिए मेरे पास पैसे नहीं हैं। आप मुझे पैसे दीजिये। कोर्स ख़त्म होने के बाद मैं यह रक़म लौटा दूंगी। मैं सोचती हूं कि धनी लोग तो रीछों

का शिकार करते हैं और किसानों को शराबें पिलाते हैं। यह कोई अच्छी बात है? वे लोगों का भला क्यों नहीं करते? मुझे केवल ८० रूबल की ज़रूरत है... लेकिन अगर आप देना नहीं चाहते, तो न दें," उसने तनिक ग़ुस्से से कहा।

"नहीं, नहीं, बल्कि मैं तो आपका कृतज्ञ हूं कि आपने मुझे सेवा का यह अवसर दिया। मैं अभी पैसे लाता हूं," नेख़्लूदोव ने कहा।

वह गलियारे में निकल आया जहां उसे अपना एक साथी मिला जो वहां खड़ा उनकी बातें सुन रहा था। वह नेख़्लूदोव से मज़ाक़ करने लगा। उसके मज़ाक़ की कोई परवाह न करते हुए, नेख़्लूदोव ने अपने बटुए में से पैसे निकाले और लड़की को दे दिये।

"नहीं, नहीं, मेरा धन्यवाद करने की कोई ज़रूरत नहीं। उल्टे मुझे आपका धन्यवाद करना चाहिए।"

इस वक़्त ये सब बातें याद कर के मन को सुख पहुंचता था। एक अफ़सर ने इस बात पर एक भद्दा सा मज़ाक़ किया था, और नेख़्लूदोव उससे झगड़ पड़ा था। उस झगड़े को याद कर के भी आज मन को सुख पहुंचता था। एक दूसरे दोस्त ने नेख़्लूदोव का पक्ष लिया था, और इसके फलस्वरूप वे बाद में गहरे दोस्त हो गये थे। शिकार का वह अभियान कितना सफल रहा था। और उस रात जब वे रेलवे स्टेशन पर पहुंचे थे तो वह मन ही मन कितना ख़ुश था...

जंगल के बीच तंग सा रास्ता। उस रास्ते पर स्लेजों की एक क़तार चली जा रही है। हर स्लेज के आगे दो घोड़े जुते हुए हैं। तेज़ तेज़ जाते हुए, कभी स्लेज ऊंचे ऊंचे वृक्षों के बीच में से, कभी छोटे छोटे फ़र-वृक्षों के बीच में से गुज़रने लगते हैं। फ़र-वृक्षों की शाखें बर्फ़ के बोझ से, जिसके बड़े बड़े लोंदे उन पर पड़े हैं, झुक झुक जाती हैं। अंधेरे में सहसा लाल लाल रोशनी चमकती है। किसी ने ख़ुशबूदार सिगरेट सुलगाया है। रीछों का शिकारिया, ओसिप, कभी एक स्लेज में जाता है कभी दूसरे में। बर्फ़ उसके घुटनों घुटनों तक आती है। शिकार का साज़-सामान ठीक करते हुए वह कहानियां सुनाता जा रहा है। बारहसिंघों की कहानियां, जो इस वक़्त गहरी बरफ़ में घूम रहे होंगे, और ऐस्पन के पेड़ों पर से छाल खरोंच रहे होंगे और रीछों की कहानियां, जो इस वक़्त अपनी

गहरी गुप्त खोहों में सोये पड़े होंगे और उनकी नाक में से गरम गरम सांसें निकल रही होंगी।

सारा दृश्य नेख़्लूदोव की आंखों के सामने घूम जाता है। परन्तु जिस चीज़ की उसे सबसे अधिक याद आती है वह है स्वास्थ्य, शारीरिक बल, तथा निश्चिन्तता की अनुभूति। हवा में पाले की सर्दी है, और वह उसमें लम्बी लम्बी सांसें ले रहा है जिससे उसकी छाती फूल उठती है और फ़र का कोट तंग महसूस होने लगता है। पेड़ों की निचली शाख़ों पर से हल्की हल्की बर्फ़ उसके चेहरे पर गिर रही है। उसके शरीर में गर्मी है, चेहरे पर ताज़गी है, और उसकी आत्मा पर न चिन्ता का, न आत्मग्लानि, भय अथवा लालसाओं का बोझ है... जीवन कैसा सौन्दर्यमय था। और अब, हे भगवान्, कैसी यन्त्रणा है, कितना क्षोभ है!

ज़ाहिर था कि वेरा बोगोदूख़ोव्स्काया कोई क्रान्तिकारी थी और इसी कारण उसे जेल में भी रखा गया था। वह उससे ज़रूर मिलेगा, विशेषकर इसलिए भी कि उसने उसे मास्लोवा के बारे में परामर्श देने का वचन दिया है।

५०

दूसरे दिन सुबह नेख़्लूदोव जल्दी जाग गया। पिछले दिनों की बातों को याद करते ही उसे भय ने जकड़ लिया।

लेकिन इस भय के बावजूद, वह पहले से भी अधिक दृढ़ता से उस काम को जारी रखना चाहता था जो उसने शुरू किया था।

अपने कर्तव्य को समझते हुए वह घर से निकल पड़ा और सीधा मास्लेन्निकोव को मिलने चल पड़ा। उससे वह जेल में मास्लोवा से मिलने के लिए तथा, मेन्शोव, मां और बेटे से मिलने के लिए जिनका ज़िक्र मास्लोवा ने किया था, इजाज़त लेना चाहता था। साथ ही, वह बोगोदूख़ोव्स्काया से मिलने की भी इजाज़त लेना चाहता था। संभव है वह मास्लोवा की सहायता कर सके।

नेख़्लूदोव का परिचय मास्लेन्निकोव से काफ़ी पुराना था। दोनों एक ही रेजिमेंट में रह चुके थे। उन दिनों मास्लेन्निकोव रेजिमेंट में बख़्शी के पद पर नियुक्त था। वह बड़ा नेक-दिल और उत्साही अफ़सर था। रेजिमेंट

और राजपरिवार को छोड़ कर उसे किसी तीसरी चीज़ में रुचि न थी। अब जब नेख़्लूदोव उससे मिला तो वह रेजिमेंट छोड़ कर प्रवन्धविभाग का एक पदाधिकारी बना हुआ था। उसकी शादी अमीर घर की एक चुस्त लड़की से हुई थी, जिसने उसे अपना धन्धा बदलने पर मजबूर किया था।

उसकी स्त्री उसका मज़ाक़ उड़ाती, साथ ही उससे लाड़-प्यार भी करती, मानो उसने कोई जानवर पाल रखा हो। सर्दी के मौसम में नेख़्लूदोव एक बार उनसे मिलने गया। पति पत्नी दोनों इतने नीरस निकले कि दोबारा उनसे मिलने जाने की उसे इच्छा नहीं हुई।

नेख़्लूदोव को देखते ही मास्लेन्निकोव का चेहरा खिल उठा। अब भी उसका मुंह वैसा ही लाल और फूला हुआ था, शरीर उसी तरह गदराया हुआ था जैसा कि फ़ौज के दिनों में हुआ करता था। पोशाक भी पहले ही की तरह बढ़िया थी। फ़ौज के दिनों में वह नये से नये फ़ैशन की वर्दी पहना करता था, जो छाती और कन्धों पर ख़ूब चुस्त सिली होती। अब वह सिविल पोशाक डाटे हुए था। यह भी नये से नये चलन की थी, उसके मांसल शरीर पर ख़ूब फ़िट बैठती थी, और इसमें उसकी चौड़ी छाती भी ख़ूब उभर कर निकल आई थी। दोनों की उम्र में काफ़ी फ़र्क़ था (मास्लेन्निकोव ४० बरस का था)। इसके बावजूद दोनों में अच्छी दोस्ती थी।

"कहो दोस्त, आज तो बड़ी कृपा की! चलो, पहले चल कर मेरी पत्नी से मिलो। मुझे एक मीटिंग में पहुंचना है। लेकिन अभी दस मिनट हैं। आजकल चीफ़ यहां नहीं है, मैं उसकी जगह गुबेर्निया प्रवन्ध का चीफ़ हूं," उसने कहा। वह अपनी ख़ुशी को छिपा नहीं पा रहा था।

"मैं एक काम से तुम्हें मिलने आया हूं।"

"क्या काम है?" मास्लेन्निकोव ने सहसा सतर्क हो कर थोड़ी सहमी और साथ ही सख़्ती लिये आवाज़ में पूछा।

"जेल में एक क़ैदी है, उसमें मेरी गहरी दिलचस्पी है।" (जेल का नाम सुनते ही मास्लेन्निकोव का चेहरा कठोर पड़ गया)। "मैं उससे मिलना चाहता हूं, लेकिन मुलाक़ाती कमरे में नहीं, अलग, दफ़्तर में, और केवल उस वक़्त ही नहीं जब सब लोग मिलते हैं। मैंने सुना है कि इसकी इजाज़त तुमसे लेनी होगी।"

"ज़रूर, mon cher,* वाह, तुम्हारा काम नहीं करूंगा?" मास्लेन्निकोव ने कहा और अपने दोनों हाथ नेख़्लूदोव के घुटनों पर रख दिये, मानो अपना रोब-दाब कम करना चाहता हो। "पर यह मत भूलो कि मेरा राज बस एक घण्टे के लिए है।"

"तो क्या तुम मुझे आर्डर लिख दे सकते हो, ताकि मैं उस औरत को मिल सकूं?"

"क्या वह कोई औरत है?"

"हां।"

"किस जुर्म के कारण क़ैद है?"

"ज़हर देने के कारण। लेकिन उसके साथ अन्याय हुआ है।"

"हां, देख लो, यही है जूरी का न्याय, ils n'en font point d'autres,"** जाने क्यों उसने फ़्रांसीसी में कहा। "मैं जानता हूं तुम मेरे साथ सहमत नहीं हो, पर चारा ही क्या है? C'est mon opinion bien arrêtée,"*** उसने अपनी राय ज़ाहिर करते हुए कहा। यह राय वह पिछले बारह महीने से एक प्रतिक्रियावादी अख़बार में भिन्न भिन्न रूपों में पढ़ता आ रहा था। "मैं जानता हूं कि तुम उदारवादी हो।"

"मैं नहीं जानता उदारवादी हूं या कुछ और," नेख़्लूदोव ने मुस्कराते हुए कहा। जब भी लोग उसे उदारवादी कह कर किसी राजनीतिक पार्टी के साथ उसका संबंध जोड़ते तो उसे बड़ी हैरानी होती। उसका तो केवल यही कहना था कि सजा देने से पहले मुजरिम को अपनी सफ़ाई देने की पूरी आज़ादी हो, कि क़ानून की नज़र में उस वक़्त तक सब बराबर हैं जब तक कि किसी का जुर्म साबित नहीं हो जाता, कि किसी के साथ भी अनुचित व्यवहार, मार-पीट आदि नहीं होनी चाहिए, उन लोगों के साथ तो विशेषकर नहीं होनी चाहिए जिनका जुर्म अभी साबित नहीं हुआ हो। "मैं नहीं जानता कि मैं उदारवादी हूं या नहीं, लेकिन मैं इतना ज़रूर जानता हूं कि बुरी होते हुए भी मौजूदा अदालती प्रणाली पहली प्रणाली से बेहतर है।"

"तुमने वकील कौन सा किया है?"

---

*मेरे प्यारे [दोस्त]। (फ़्रेंच)

**और कुछ तो वे करते ही नहीं। (फ़्रेंच)

***यह मेरा दृढ़ मत है। (फ़्रेंच)

"मैंने फ़ानारिन से बात की है।"

"फ़ानारिन से? अरे!" मास्लेन्निकोव ने मुंह बनाते हुए कहा। उसे याद हो आया कि साल भर पहले इसी फ़ानारिन ने उसका मज़ाक़ उड़ाया था। एक मुक़द्दमे में वह गवाह बन कर पेश हुआ था। और फ़ानारिन घण्टा भर बड़ी विनम्रता से उससे सवाल पूछता रहा, और सारा वक़्त लोग हंसते रहे थे। "मैं तुम्हें परामर्श दूंगा कि इस फ़ानारिन से कोई वास्ता न रखो। फ़ानारिन तो est un homme taré."*

"मुझे एक और अर्ज़ भी करनी है," नेख़्लूदोव ने कहा, "एक और लड़की भी है। मुद्दत हुई उससे मेरी जान-पहिचान हुई थी। बड़ी निरीह सी लड़की है, अध्यापिका का काम करती थी। वह भी जेल में है। उसने मुझसे मिलने की ख़ाहिश ज़ाहिर की है। क्या उससे भी मिलने की मुझे इजाज़त मिल सकती है?"

मास्लेन्निकोव ने गर्दन थोड़ी टेढ़ी की और सोचने लगा।

"सियासी क़ैदी है?"

"हां, मुझे तो यही बताया गया है।"

"सियासी क़ैदियों से मिलने की केवल सम्बन्धियों को इजाज़त होती है। फिर भी कोई बात नहीं, मैं एक खुला प्रवेश-पत्र तुम्हें लिख देता हूं। Je sais que vous n'abuserez pas...** तुम्हारी इस रक्षिता का नाम क्या है? बोगोदूख़ोव्स्काया? Elle est jollie?"***

"Hideuse."****

मास्लेन्निकोव ने इस तरह सिर हिलाया मानो उसे यह बात पसंद नहीं थी और मेज़ के पास जा कर एक काग़ज़ लिया और प्रवेश-पत्र लिखने बैठ गया। काग़ज़ पर मास्लेन्निकोव का शिरोनामा छपा हुआ था।

"हामिल रुक़्क़ा प्रिंस द्मीत्री इवानोविच नेख़्लूदोव को इजाज़त है कि वह जेलख़ाने के दफ़्तर में क़ैदी मास्लोवा तथा चिकित्सा-सहायिका

---

*बदनाम इन्सान है। (फ़्रेंच)

**मैं जानता हूं, तुम इसका दुरुपयोग नहीं करोगे। (फ़्रेंच)

***वह अच्छी है? (फ़्रेंच)

****बेहूदा। (फ़्रेंच)

वोगोदूखोव्स्काया से भेंट कर सकता है।" और नीचे बड़ी शान के साथ अपना नाम लिख कर उसने पत्र को ख़त्म किया।

"अब तुम्हें देखने का मौक़ा मिलेगा कि हमारा इन्तज़ाम कितना अच्छा है। हालांकि बता दूं कि इन्तज़ाम करना आसान नहीं है। जेलख़ाना छोटा है, मगर क़ैदियों की संख्या बहुत ज़्यादा है, विशेषकर उन क़ैदियों की जिन्हें जलावतन किया जायेगा। लेकिन मैं ख़ूब कड़ी निगरानी रखता हूं। और अपना काम बड़ी लगन से करता हूं। तुम देखोगे कि क़ैदी वहां बड़े आराम से रहते हैं और ख़ुश हैं। पर उन्हें हाथ में रखने का ढंग आना चाहिए। कुछ ही दिन पहले मामूली सी गड़बड़ हुई। क़ैदियों ने हुक्म-उदूली की। मेरी जगह कोई और होता तो इसे बग़ावत समझता, और बहुत लोगों को दुःख देता। लेकिन हमारे यहां चुपचाप सब काम ठीक हो गया। ज़रूरत इस बात की है कि एक तरफ़ हितचिन्ता हो और दूसरी तरफ़ दृढ़ता और शक्ति," उसने अपने स्थूल सफ़ेद हाथ से मुट्ठी भींचते हुए कहा, जो मांडी-लगी कमीज़ की आस्तीन में से निकल रहा था। एक उंगली पर फ़िरोज़े की अंगूठी थी, और कफ़ पर सोने का स्टड चमक रहा था। "हितचिन्ता के साथ साथ दृढ़ शक्ति की ज़रूरत है।"

"इस बारे में तो मैं कुछ नहीं जानता," नेख़्लूदोव ने कहा, "मैं दो बार वहां जा चुका हूं, लेकिन दोनों ही बार मन बड़ा उदास हुआ।"

"जानते हो, तुम्हें काउंटेस पास्सेक से मिलना चाहिए," मास्लेन्निकोव बोला। वह अब बड़े जोश से बातें करने लगा था। "वह अपना सारा वक़्त इसी काम को देने लगी है। Elle fait beaucoup de bien.* यह उसी की कोशिशों का नतीजा है—और मैं अपनी तारीफ़ नहीं करता, किसी हद तक मेरी कोशिशों का भी—कि जेल की सारी व्यवस्था बदल गई है। जो भयानक बातें पहले हुआ करती थीं, वे कहीं तुम्हें देखने को नहीं मिलेंगी। क़ैदी सचमुच बड़े आराम से रहते हैं। यह सब तुम ख़ुद देख लोगे। जहां तक फ़ानारिन का सवाल है, वह सचमुच बहुत बुरा आदमी है। मैं उसे ख़ुद नहीं जानता। मेरी सामाजिक पोज़ीशन के कारण हमारे रास्ते अलग अलग हैं। और फिर वह अदालत में ऐसी फ़िज़ूल बातें कह देता है, जो उसके मुंह में आता है बक देता है।"

---

*वह बहुत से भलाई के काम करती है। (फ़्रेंच)

"अच्छा, तो धन्यवाद," काग़ज़ हाथ में ले कर और विना उसकी बातों की ओर ध्यान दिये नेख़्लूदोव ने अपने भूतपूर्व साथी-अफ़सर से छुट्टी ली।

"तो क्या तुम मेरी पत्नी से मिल कर नहीं जाओगे?"

"माफ़ करना, मेरे पास इस समय वक़्त नहीं है।"

"ओ हो, वह मुझ पर वेहद नाराज़ होगी," सीढ़ियां उतरते हुए मास्लेन्निकोव वोला। आधी सीढ़ियों तक आ कर वह रुक गया। जो लोग बहुत रुतवे वाले हों उन्हें नीचे तक छोड़ने जाया करता था, जो उनसे कम रुतवे के हों उन्हें आधी सीढ़ियों तक। नेख़्लूदोव को वह दूसरे दर्जे में रखता था। "और नहीं तो थोड़ी देर के लिए चले चलो।"

परन्तु नेख़्लूदोव दृढ़ बना रहा। चोवदार ने भाग कर उसे छड़ी और ओवरकोट दिया, दरबान ने उसके लिए वाहर का दरवाज़ा खोला। सारा वक़्त वह यही कहता रहा कि वह मजबूर है, रुक नहीं सकता। दरवाज़े के वाहर पुलिस का सिपाही ड्यूटी पर खड़ा था।

"अच्छी वात है, लेकिन वृहस्पतिवार को ज़रूर आना। मेरी पत्नी ने दावत दे रखी है। मैं उसे कह दूंगा कि तुम आ रहे हो," सीढ़ियों पर से मास्लेन्निकोव ने कहा।

५१

मास्लेन्निकोव के घर से नेख़्लूदोव सीधा वग्घी में वैठ कर जेलख़ाने की ओर चल पड़ा, और वहां पहुंच कर इन्स्पेक्टर के घर गया। वह अव जानता था कि इन्स्पेक्टर का घर कहां पर है। अव की वार फिर उसे उसी घटिया पियानो की आवाज़ सुनाई दी। लेकिन अव की रैप्सोडी नहीं वजाई जा रही थी, अव की क्लेमेंटी की कुछ लघुरचनाएं वजायी जा रही थीं। पर वादन उतना ही ओजपूर्ण, स्पष्ट और तेज़ था। नौकरानी ने आ कर कहा कि इन्स्पेक्टर साहिब घर पर हैं और नेख़्लूदोव को एक छोटी सी वैठक में ले गयी। वही नौकरानी थी, जिसकी एक आंख पर पट्टी वंधी थी। वैठक में एक सोफ़ा रखा था, और उसके सामने एक मेज़ थी जिस पर एक वड़ा सा लैम्प रखा था। लैम्प के ऊपर गुलावी रंग के काग़ज़ का शेड लगा था, जो एक तरफ़ से जल गया था। लैम्प

के नीचे करोशिये के काम का छोटा सा रूमाल बिछा था। इन्स्पेक्टर ने कमरे में प्रवेश किया। उसका चेहरा उदास और थका हुआ था।

"तशरीफ़ रखिये। मैं आपकी क्या ख़िदमत कर सकता हूं?" वर्दी-कोट का बीच वाला बटन बन्द करते हुए उसने कहा।

"मैं अभी अभी सहायक-गवर्नर को मिल कर आ रहा हूं। उन्होंने यह आर्डर दिया है। मैं क़ैदी मास्लोवा से मिलना चाहता हूं।"

"मार्कोवा?" इन्स्पेक्टर ने पूछा। संगीत की वजह से वह नाम स्पष्टतया नहीं सुन पाया था।

"मास्लोवा!"

"हां हां, ठीक है।"

इन्स्पेक्टर उठ कर दरवाज़े की ओर गया जहां से क्लेमेंटी के संगीत की धुनें बराबर आ रही थीं।

"मारीया, ज़रा दो मिनट के लिए तो इसे बन्द करो," उसने कहा। उसके लहजे से पता चलता था कि यह संगीत उसकी जान पर आफ़त बना हुआ है। "एक लफ़्ज़ तक सुनाई नहीं देता।"

पियानो बन्द हो गया। लेकिन उसकी जगह नाराज़ क़दमों की आवाज़ आने लगी। फिर किसी ने दरवाज़े में से झांक कर देखा।

संगीत बन्द होने से थोड़ी देर के लिए वातावरण शान्त हो गया। जान पड़ता था कि इससे इन्स्पेक्टर को कुछ चैन मिला है। उसने एक मोटा सा सिगरेट सुलगाया, जिसमें कोई हल्का सा तम्बाकू भरा था, और नेख़्लूदोव को भी पीने के लिए कहा। नेख़्लूदोव ने इन्कार कर दिया।

"मैं मास्लोवा से मिलने आया हूं।"

"आज मास्लोवा से मिलना ठीक नहीं होगा।"

"क्यों?"

"क्या कहूं, दरअसल क़सूर आपका है," इन्स्पेक्टर ने कहा। उसके होंठों पर हल्की सी मुस्कराहट थी। "देखिये, प्रिंस, आप उसके हाथों में पैसे मत दिया कीजिये। अगर देना भी चाहें तो मुझे दीजिये। मेरे पास वह रक़म जमा रहेगी। कल आपने ज़रूर उसे कुछ पैसे दिये होंगे। उनसे उसने शराब ख़रीदी—इस इल्लत को दूर करना हमारे लिए बड़ा मुश्किल है,—और आज वह नशे में है, और लोगों से हाथापाई तक कर रही है।"

"क्या सच?"

"मैं ठीक कहता हूं। मजबूर हो कर मुझे उसके साथ सख़्ती का वर्ताव करना पड़ा। मैंने उसे दूसरे कमरे में डाल दिया है। यों तो वह शान्त स्वभाव की औरत है। पर कृपा कर के आप उसे पैसे न दिया कीजिये। ये लोग इतने..."

कल की सारी घटना नेख़्लूदोव की आंखों के सामने उभर आयी, और उसे फिर भय ने जकड़ लिया।

"और सियासी क़ैदी बोगोदूख़ोव्स्काया क्या मैं उसे मिल सकता हूं?"

"हां हां, यदि आप मिलना चाहते हैं तो," इन्स्पेक्टर बोला। उसी वक़्त एक छोटी सी पांच-छः साल की लड़की कमरे में आयी और भागती हुई अपने बाप की ओर जाने लगी, लेकिन सारा वक़्त सिर टेढ़ा किये नेख़्लूदोव की ओर देखती आ रही थी। "क्यों क्या है? देखो, संभल के, गिर पड़ोगी," इन्स्पेक्टर ने मुस्कराते हुए कहा। लड़की ने ध्यान नहीं दिया और उसका पांव फ़र्श पर बिछे क़ालीन में अटक गया।

"अगर मिलना मुमकिन है तो मैं चलूंगा।"

"ज़रूर मुमकिन है।"

इन्स्पेक्टर ने लड़की को बांहों में भर लिया। लड़की अब भी नेख़्लूदोव की ओर देखे जा रही थी। इन्स्पेक्टर उठ खड़ा हुआ और बड़े प्यार से लड़की को एक तरफ़ को जाने का इशारा करते हुए ड्योढ़ी में चला गया।

ड्योढ़ी में खड़ी नौकरानी ने उसे ओवरकोट पहनाया, और दोनों बाहर जाने को हुए। दरवाज़े के पास पहुंचे ही थे कि क्लेमेंटी के संगीत की ध्वनियां फिर आने लगीं।

"संगीत-महाविद्यालय में शिक्षा पाती रही है। लेकिन वहां इतनी बदइन्तज़ामी है कि क्या कहूं। यों इसमें संगीत के लिए बड़ी योग्यता है," सीढ़ियां उतरते हुए इन्स्पेक्टर कहने लगा, "वह कन्सर्टों में भाग लेना चाहती है।"

इन्स्पेक्टर और नेख़्लूदोव जेलख़ाने में पहुंचे। उन्हें देखते ही फाटक खोल दिये गये। वार्डरों ने सैल्यूट मारे और एकटक इन्स्पेक्टर की ओर देखते रहे। चार आदमी जिनके सिर आधे मुंडे हुए थे, किसी चीज़ से भरे टब उठाये लिये जा रहे थे। इन्स्पेक्टर पर नज़र पड़ते ही वे दुबक कर एक तरफ़ खड़े हो गये। उनमें से एक विशेष रूप से झुक गया, उसके तेवर चढ़े हुए थे, और काली काली आंखें चमक रही थीं।

"जो अन्दर गुण हो तो ज़रूर सीखना चाहिए, गुण को मरने नहीं देना चाहिए। पर आप जानते हैं, छोटे घर में इससे जी तंग पड़ जाता है," इन्स्पेक्टर अब भी बातें किये जा रहा था। क़ैदियों की ओर उसने कोई ध्यान नहीं दिया। थका-मांदा, वह अपने पांव घसीटता, नेख़्लूदोव के आगे हॉल में दाख़िल हुआ। "आप किसे मिलना चाहते हैं?"

"बोगोदूख़ोव्स्काया से।"

"ओह, वह तो बुर्ज में है। आपको थोड़ा इन्तज़ार करना पड़ेगा," उसने कहा।

"तो इस बीच, यदि संभव हो, तो मैं उन दो क़ैदियों से मिल लूंगा — मां और बेटे से। उनका नाम मेन्शोव है। वही जिन पर आग लगाने का जुर्म था।"

"हां, २१ नम्बर कोठरी में हैं। उन्हें बुलाया जा सकता है।"

"क्या मैं मेन्शोव से उसकी कोठरी में ही नहीं मिल सकता?"

"लेकिन मैं सोचता हूं मुलाक़ाती कमरे में ज्यादा आराम रहेगा।"

"नहीं नहीं, मैं कोठरी में मिलना अधिक पसन्द करूंगा। वहां ज़्यादा दिलचस्प रहेगा।"

"यहां भी दिलचस्पी की कोई चीज़ आपको नज़र आ गई।"

बग़ल वाले दरवाज़े में से उसका सहायक अफ़सर दाख़िल हुआ। उसने ख़ूब चुस्त कपड़े पहन रखे थे।

"सुनो, प्रिंस को २१ नम्बर कोठरी में मेन्शोव के पास ले जाओ," इन्स्पेक्टर ने अपने सहायक से कहा। "इसके बाद इन्हें दफ़्तर में ले आना। मैं जा कर दूसरे क़ैदी को बुलाता हूं। क्या नाम है उसका?"

"वेरा बोगोदूख़ोव्स्काया।"

सहायक इन्स्पेक्टर एक गोरे रंग का युवक था, मूंछें चुपड़ कर ऐंठी हुई, कपड़ों से हल्की हल्की कोलोन के इत्र की ख़ुशबू आ रही थी।

"इस तरफ़ तशरीफ़ ले चलिये," एक मधुर मुस्कान के साथ उसने नेख़्लूदोव से कहा। "हमारे जेलख़ाने में आपकी दिलचस्पी है?"

"हां हां, ज़रूर दिलचस्पी है। साथ ही मैं अपना फ़र्ज़ समझता हूं कि किसी इन्सान की मदद करूं जो यहां बन्द है और जिसके बारे में कहते हैं कि बेगुनाह है।"

सहायक इन्स्पेक्टर ने कन्धे बिचका दिये।

"हां, ऐसे भी हो जाता है," उसने धीमे से कहा, और बड़े तपाक से एक तरफ़ हट कर खड़ा हो गया ताकि मेहमान बरामदे में दाखिल हो सके। बरामदे में से दुर्गन्ध की लपटें उठ रही थीं। "पर कई बार ऐसा भी होता है कि ये लोग झूठ बोलते हैं। इधर तशरीफ़ ले चलिये।"

कोठरियों के दरवाज़े खुले थे। कुछेक क़ैदी बरामदे में खड़े थे। वार्डरों की सैल्यूट के जवाब में सहायक इन्स्पेक्टर ने हल्के से सिर हिलाया, और कनखियों से क़ैदियों की ओर देखा। क़ैदी दीवार के साथ सट कर खड़े थे। इन्स्पेक्टर को देखते ही या तो वे अपनी कोठरियों में सरक गये, या हाथ लटकाये सिपाहियों की तरह खड़े हो गये और इन्स्पेक्टर की ओर एकटक देखने लगे। एक बरामदा लांघ कर सहायक इन्स्पेक्टर नेख़्लूदोव को बायें हाथ एक दूसरे बरामदे में ले गया। दोनों बरामदों के बीच एक लोहे का दरवाज़ा था।

यह बरामदा पहले बरामदे से ज़्यादा तंग और अंधियारा था। बदबू भी यहां पहले से कहीं ज़्यादा थी। बरामदे के दोनों तरफ़ ताले लगे दरवाज़े थे जिनमें छोटे छोटे, एक एक इंच व्यास के सूराख़ थे। यहां केवल एक ही बूढ़ा वार्डर ड्यूटी पर था। उसका चेहरा उदास और झुर्रियों भरा था।

"मेन्शोव कहां है?" सहायक इन्स्पेक्टर ने पूछा।

"बायें हाथ, आठवीं कोठरी में।"

५२

"क्या मैं अन्दर झांककर देख सकता हूं?"

"ज़रूर, ज़रूर," सहायक ने मुस्करा कर कहा और फिर वार्डर से कुछ पूछने के लिए घूम गया। नेख़्लूदोव ने एक छोटे से सूराख़ में से अन्दर देखा। कोठरी में एक लम्बे क़द का युवक, नीचे पहनने के कपड़ों में टहल रहा था। उसके मुंह पर छोटी सी काली दाढ़ी थी। दरवाज़े के बाहर किसी की आहट पाकर उसने सिर ऊपर उठाया और भौंहें चढ़ा कर देखा, लेकिन फिर भी टहलता रहा।

नेख़्लूदोव ने एक दूसरे सूराख़ में से देखा। अन्दर झांकते ही उसने एक और आंख को देखा, बड़ी सी आंख थी और डरी हुई, जो सूराख़ में से बाहर उसकी ओर देख रही थी। नेख़्लूदोव झट से पीछे हट गया।

तीसरी कोठरी में एक बहुत ही छोटा सा आदमी तख़्ते पर पड़ा सो रहा था। सिर से पांव तक उसने अपने ऊपर क़ैदियों का लबादा ओढ़ रखा था। चौथी कोठरी में एक आदमी, घुटनों पर कोहनियां रखे बैठा था। उसका चेहरा चौड़ा और पीला था और सिर बहुत नीचे को झुका था। बाहर क़दमों की आवाज़ सुन कर उसने सिर उठाया और ऊपर को देखा। उसके चेहरे पर, विशेषकर उसकी बड़ी बड़ी आंखों में, घोर निराशा का भाव था। स्पष्ट था कि उसे इस बात में कोई दिलचस्पी नहीं कि कौन उसकी कोठरी का निरीक्षण कर रहा है। कोई भी हो, क़ैदी को प्रत्यक्षत: उससे किसी अच्छाई की आशा न थी। नेख़्लूदोव घबरा उठा और बिना किसी और सूराख़ में से झांके सीधा मेन्शोव की २१ नम्बर कोठरी की ओर जाने लगा। वार्डर ने ताले में चाभी लगाई और दरवाज़ा खोल दिया। एक युवक, सोने वाले तख़्ते के पास खड़ा, जल्दी जल्दी अपना लबादा पहन रहा था। जब उसने आगन्तुकों की ओर देखा तो उसके चेहरे पर भय छाया हुआ था। युवक की गर्दन लम्बी और पट्ठे मज़बूत थे। मुंह पर छोटी सी दाढ़ी थी और आंखें गोल गोल और सद्‌भावना भरी थीं। नेख़्लूदोव का ध्यान ख़ास तौर पर उन सद्‌भावना भरी गोल आंखों की ओर गया। त्रस्त और प्रश्नसूचक नज़रों से वे कभी नेख़्लूदोव की ओर देखतीं, कभी वार्डर की ओर, कभी सहायक इन्स्पेक्टर की ओर, और फिर नेख़्लूदोव की ओर देखने लगतीं।

"ये सज्जन तुम्हारे मुक़द्दमे के बारे में तुमसे कुछ पूछना चाहते हैं।"

"बड़ी मेहरबानी जी।"

"हां, तुम्हारे बारे में मुझे बताया गया है," कोठरी को लांघ कर खिड़की की ओर जाते हुए नेख़्लूदोव ने कहा। खिड़की गंदी थी और उसमें सीखचे लगे थे। "मैं सारी बात तुम्हारे मुंह से सुनना चाहता हूं।"

मेन्शोव भी खिड़की के पास आ गया, और झट से अपनी कहानी कहने लगा। शुरू शुरू में तो वह झेंप से सहायक इन्स्पेक्टर की ओर देखता रहा, बाद में धीरे धीरे उसका साहस बढ़ता गया। जब सहायक इन्स्पेक्टर, कुछ आदेश देने के लिए, कोठरी में से निकल कर बरामदे में चला गया, तब तो वह बिल्कुल ही निर्भीक हो कर बोलने लगा। बड़े स्वाभाविक ढंग से उसने अपनी कहानी सुनाई। उसके ढंग और लहजे से ही पता लग रहा था कि यह युवक कोई साधारण, भोला-भाला किसान

है। नेख़्लूदोव हैरान हो रहा था कि यह कहानी उसे एक क़ैदी सुना रहा है जो हीन लिबास में, जेलख़ाने की कोठरी में खड़ा है। नेख़्लूदोव उसकी बातें सुन रहा था, पर साथ ही अपने आस-पास की चीज़ों को देख रहा था। सोने का तख़्ता नीचा था, और उस पर फूस का गद्दा बिछा था। खिड़की पर लोहे के मोटे सीखचे लगे थे। दीवार गंदी और गीली थी। और जेलख़ाने का लबादा और बूट पहने इस अभागे, कुरूप किसान का चेहरा अतिदयनीय था। नेख़्लूदोव का हृदय अधिकाधिक उदास हो रहा था। उसका मन चाहता था कि जो कुछ यह भोला युवक कहे जा रहा है, वह ग़लत हो। क्या यह संभव है कि एक ऐसे आदमी को पकड़ कर, जिसका केवल यही दोष है कि उसके साथ स्वयं बुरा व्यवहार किया गया है, उसे क़ैदियों के कपड़े पहना कर ऐसी भयानक जगह पर रखा जाय? सोच कर ही मन सिहर उठता है। इस युवक की कहानी सुनने में तो सच जान पड़ती थी। लड़के के चेहरे से सरलता टपकती थी। लेकिन क्या मालूम जो कुछ यह कह रहा है झूठ हो, यह कहानी इसने ख़ुद गढ़ रखी हो। यह सोच कर तो मन और भी सिहर उठता है। जो कहानी उसने सुनाई वह यों थी। इस लड़के ने शादी की। इनके गांव में एक सराय थी। शादी के फ़ौरन् ही बाद सराय के मालिक ने इसकी बीवी को लालच दे कर फंसा लिया। यह लड़का मारा मारा भटकता रहा कि कोई इसके साथ इन्साफ़ करे और इसकी बीवी इसे वापस दिला दे। पर यह जहां जाता वहीं पर सराय का मालिक अधिकारियों को रिश्वत दे कर साफ़ निकल जाता। एक बार यह जबरदस्ती अपनी बीवी को पकड़ लाया, लेकिन दूसरे ही दिन वह भाग गई। यह फिर उसके घर गया। लड़की घर में मौजूद थी। अन्दर जाते वक़्त उसने उसे देखा भी था। लेकिन फिर भी सराय के मालिक ने कह दिया कि नहीं है और इसे वहां से चले जाने को कहा। लड़के ने जाने से इन्कार कर दिया जिस पर सराय का मालिक और उसका नौकर इस पर पिल पड़े और अधमरा कर के छोड़ा। दूसरे ही दिन सराय में आग लग गई। सराय के मालिक ने इस लड़के और इसकी मां को मुजरिम कह कर पकड़वा दिया। जिस वक़्त आग लगी थी उस वक़्त लड़का वहां पर मौजूद ही नहीं था, बल्कि किसी दोस्त को मिलने गया हुआ था।

"सच कहते हो कि तुमने आग नहीं लगाई?"

"मुझे तो यह सूझा भी नहीं जनाव। आग ख़ुद मेरे दुश्मन ने लगाई है। कोई जन कह रहा था कि उसने कुछ ही दिन पहले सराय का बीमा करवाया था। अब कहते हैं कि आग मेरी मां और मैंने लगाई है। यह भी कहते थे कि हमने उन्हें मारने की भी धमकी दी। यह तो सच है कि मैंने उस दिन उसे गाली दी थी। मैं और बरदाश्त नहीं कर सकता था। पर घर को मैंने आग नहीं लगाई। उसने ख़ुद आग लगाई और जुर्म हमारे सिर मढ़ दिया। जब आग लगी तो मैं वहां पर था ही नहीं। लेकिन उसने ऐसा इन्तज़ाम कर के आग लगाई जब थोड़ी ही देर पहले मैं और मां उधर से गुज़रे थे।"

"क्या तुम सच कह रहे हो?"

"भगवान् देख रहा है, मैं सच कहता हूं जी। आप मुझ पर दया कीजिये, हुज़ूर..." वह झुक कर ज़मीन पर माथा रखने लगा। नेख़्लूदोव बड़ी मुश्किल से उसे रोक पाया। "मुझ पर दया कीजिये ... मैंने कोई क़सूर नहीं किया, यहां तो मैं पड़ा पड़ा मर जाऊंगा।"

सहसा उसके होंठ कांपने लगे। उसने लबादे की आस्तीनों में मुंह छिपा लिया और रोने लगा, और अपने आंसू अपनी गन्दी क़मीज़ की आस्तीन से पोंछने लगा।

"क्या बात ख़त्म हो गई?" सहायक ने पूछा।

"हां। तुम बहुत चिन्ता नहीं करो। जो मुमकिन हुआ हम करेंगे," नेख़्लूदोव ने कहा और बाहर निकल गया। मेन्शोव दरवाज़े के ऐन पास खड़ा था, इसलिए वार्डर ने दरवाज़ा बन्द करते हुए उसे धकेल कर हटा दिया। वार्डर ने दरवाज़े पर ताला चढ़ाया। मेन्शोव छोटे से सूराख़ में से बाहर झांक झांक कर देखता रहा।

५३

चौड़े बरामदे को लांघ कर वे फिर वापस जाने लगे। बरामदे में बहुत से क़ैदी खड़े थे (खाने का वक़्त हो गया था और कोठरियों के दरवाज़े खुले थे)। हल्के पीले रंग के लबादे, चौड़ी निक्करें और क़ैदियों के जूते पहने वे बड़ी उत्सुकता से नेख़्लूदोव की ओर देखे जा रहे थे।

नेख़्लूदोव के मन में एक अजीब मिश्रित सा भाव उठ रहा था। क़ैदियों के प्रति दया उठती थी। पर उन लोगों के व्यवहार के प्रति जिन्होंने उन्हें यहां बन्द कर रखा था, भय और व्यग्रता का भाव उठता था। इतना ही नहीं, उसे अपने आप पर शर्म आ रही थी कि वह यह सब चुपचाप देखे जा रहा है, हालांकि इस शर्म का कारण वह नहीं जानता था।

एक बरामदे में कोई आदमी भागता हुआ, जूते खटकाता, कोठरी के दरवाज़े पर आया। कोठरी में से कुछेक आदमी बाहर निकले और नेख़्लूदोव को सिर निवाने लगे और उसका रास्ता रोक कर खड़े हो गये।

"कृपा कीजिये, हुज़ूर,—हम आपका शुभनाम नहीं जानते,—हमारा फ़ैसला करवा दीजिये।"

"मैं सरकारी आदमी नहीं हूं। मुझे तुम्हारे मामले का कुछ भी मालूम नहीं है।"

"फिर भी आप बाहर से आये हैं। किसी से बात कीजिये—ज़रूरत हो तो यहीं के किसी अफ़सर से बात कीजिये," किसी ने क्रुद्ध आवाज़ में कहा। "यह दूसरा महीना चल रहा है। हम बेक़सूर यहां पड़े हैं।"

"क्या मतलब? क्यों?" नेख़्लूदोव ने पूछा।

"क्यों? हम ख़ुद नहीं जानते क्यों। पर हम दो महीने से यहां पर बन्द हैं।"

"ठीक है, यह ठीक कहता है। एक हादसा हो गया था, इसी लिए," सहायक इन्स्पेक्टर ने कहा। "इन लोगों के पास पासपोर्ट नहीं थे इसलिए इन्हें पकड़ा गया। चाहिए तो यह था कि इन्हें इनके इलाक़े में वापस भेज दिया जाता, लेकिन वहां के जेलख़ाने को आग लग गयी, और वहां के अधिकारियों ने हमें लिख भेजा कि इन्हें अभी नहीं भेजें। और लोगों को तो जिनके पास पासपोर्ट नहीं थे, हमने अपने अपने ज़िले में वापस भेज दिया है, लेकिन इनको यहीं पर रखे हुए हैं।"

"क्या? क्या इतने से कारण के लिए?" दरवाज़े के पास खड़े होते हुए नेख़्लूदोव ने कहा।

लगभग ४० आदमी, जेल के कपड़े पहने हुए, नेख़्लूदोव और सहायक इन्स्पेक्टर को घेर कर खड़े हो गये। कइयों ने एक साथ बोलना शुरू कर दिया। सहायक ने उन्हें चुप करा दिया।

"एक आदमी बोले।"

एक ऊंचा-लम्बा भलामानस सा किसान भीड़ में से निकल कर सामने आया। उसने नेख़्लूदोव को बताया कि सबको जेल में इसलिए बन्द रखा जा रहा है कि उनके पास पासपोर्ट नहीं हैं। वास्तव में नये पासपोर्ट बनवाने में उन्हें केवल दो हफ़्ते की देरी हुई। मगर यह कोई नई बात नहीं है, हर साल नये पासपोर्ट बनवाने में उन्हें थोड़ी बहुत देरी हो जाती रही है, और कभी किसी ने कुछ नहीं कहा। पर इस साल उन्हें पकड़ लिया गया है और मुजरिमों की तरह जेलख़ाने में रखा जा रहा है।

"हम सब थवई हैं और एक ही आर्तेल* के सदस्य हैं। हमें बताया गया है कि हमारे ज़िले के जेलख़ाने को आग लग गई है। मगर इसमें हमारा क्या दोष है? कृपा कर के ज़रूर हमारी मदद कीजिये।"

नेख़्लूदोव के कान में तो उसकी बात पड़ रही थी मगर उसे वह समझ नहीं रहा था। उसकी आंखें एकटक वृद्ध के चेहरे को देखे जा रही थीं जिस पर एक मोटी सी जूं रेंग रही थी। गहरे भूरे रंग की जूं थी, और कितनी ही उसकी टांगें थीं।

"ऐसा क्यों? क्या इतनी छोटी सी बात के लिए भी?" सहायक की ओर घूमते हुए नेख़्लूदोव ने कहा।

"हां, इन्हें अपने घरों को वापस भेज दिया जाना चाहिए था," सहायक ने कहा, "लेकिन जान पड़ता है इन्हें वे भूल गये हैं, या कोई और बात हो गई है।"

अभी सहायक बोल ही रहा था कि भीड़ में से एक छोटा सा आदमी आगे बढ़ आया। उसने भी जेल के कपड़े पहन रखे थे और बेहद उत्तेजित था। अजीब ढंग से मुंह विचका कर वह कहने लगा कि उनका कोई क़सूर नहीं फिर भी जेल में उनके साथ बुरा सलूक किया जाता है।

"कुत्तों से भी बुरा ..." वह कह रहा था।

"बस, बस, बहुत कह चुके। ज़बान बन्द करो वरना ..."

"वरना क्या?" नाटा आदमी अत्यन्त उत्तेजित हो कर चिल्लाया। "हमारा क़सूर क्या है?"

"चुप रहो!" सहायक ने चिल्ला कर कहा और वह आदमी चुप हो गया।

---

*आर्तेल—श्रमिकों का संघ।

"पर इस सब का मतलब क्या है?" बरामदे में से जाते हुए नेख़्लूदोव सोच रहा था। कोठरियों के दरवाज़ों में से अनगिनत आंखें झांक झांक कर उसकी ओर देख रही थीं। बरामदे में खड़े क़ैदी उसकी ओर एकटक देख रहे थे। उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे बरामदे के दोनों ओर क़ैदियों की कतारें खड़ी हों, और हर क़ैदी उसकी पीठ पर कोड़े लगा रहा हो।

"क्या यह संभव है कि बिलकुल निर्दोष आदमियों को भी यहां रखा जाता है?" बरामदे में से बाहर निकलते हुए नेख़्लूदोव ने कहा।

"आप क्या चाहते हैं, हम क्या करें? लेकिन वे झूठ भी बहुत बोलते हैं। उनकी बात सुनो तो जैसे सबके सब मासूम हों," सहायक इन्स्पेक्टर बोला।

"पर इन लोगों ने तो कोई क़सूर नहीं किया।"

"ठीक है, यह तो मानना पड़ता है। पर ये लोग बेहद बिगड़े हुए हैं। कोई कोई तो इनमें परले दर्जे के दुष्ट होते हैं। उन पर हमें कड़ी निगरानी रखनी पड़ती है। कल ही हमें ऐसे दो आदमियों को सज़ा देनी पड़ी।"

"सज़ा? कैसे?"

"कोड़े लगाने पड़े। हमें हुक्म हुआ था।"

"लेकिन शारीरिक दण्ड की तो क़ानूनी तौर पर मनाही कर दी गई है।"

"उन लोगों के लिए मनाही नहीं है जिन्हें अधिकारों से वंचित कर दिया गया हो। उन्हें अब भी शारीरिक दण्ड दिया जा सकता है।"

नेख़्लूदोव को कल का दृश्य याद हो आया जब वह हॉल में खड़ा इन्तज़ार कर रहा था। अब उसकी समझ में आया कि उस समय सज़ा दी जा रही थी। कुतूहल, उदासी, हैरानी—ये सब भावनाएं एक साथ उसके मन में उठने लगीं। उसकी आत्मा में एक घिन सी उठी, यहां तक कि उसे मतली होने लगी। पहले कभी भी वह इतना बेचैन नहीं हुआ था।

बिना सहायक इन्स्पेक्टर की बात सुने, और बिना घूम कर देखे, वह जल्दी से बरामदे में से निकल आया और दफ़्तर की ओर जाने लगा। इन्स्पेक्टर बरामदे में ही था, लेकिन और काम में व्यस्त हो जाने के कारण, बोगोदूख़ोव्स्काया को बुलाना तक भूल गया था। जब नेख़्लूदोव

ने दफ़्तर में पांव रखा तब उसे अपना वचन याद आया कि मैं वोगोदूख़ोव्स्काया को पहले से वुलवा भेजूंगा।

"आप तशरीफ़ रखिये। मैं अभी उसे वुलवाये लेता हूं," उसने कहा।

५४

दफ़्तर दो कमरों में वंटा हुआ था। पहले कमरे के एक कोने में एक काले रंग का स्टैंड रखा था जिस पर क़ैदियों का क़द मापा जाता था। कमरे में एक टूटा-फूटा अलावघर और दो गन्दी सी खिड़कियां थीं। दूसरे कोने में ईसा की एक वड़ी सी प्रतिमा टंगी थी। जिन स्थानों पर लोगों को यन्त्रणा दी जाती हो, वहां अक्सर ईसा की प्रतिमा टांग दी जाती है। मानो उसके उपदेशों का मज़ाक़ उड़ाने के लिए ऐसा किया जाता हो। इस कमरे में कुछेक वार्डर खड़े थे। साथ वाले कमरे में लगभग २० स्त्रियां और पुरुष थे, जो टोलियों में या जोड़ों में वैठे धीमी धीमी आवाज़ में वातें कर रहे थे। खिड़की के पास एक दफ़्तरी मेज़ रखी थी।

इन्स्पेक्टर मेज़ के सामने वैठ गया, और नेख़्लूदोव को अपने पास एक कुर्सी पर वैठने को कहा। नेख़्लूदोव वैठ कर कमरे में वैठे लोगों को देखने लगा।

सवसे पहले उसकी नज़र एक युवक पर पड़ी। इस युवक का चेहरा वड़ा प्यारा सा था और उसने छोटी सी जाकेट पहन रखी थी। वह एक स्त्री के सामने खड़ा वड़े उत्साह से, हाथ हिला हिला कर वातें कर रहा था। स्त्री अधेड़ उम्र की थी, और उसकी भौंहें काली थीं। उनके साथ ही एक बूढ़ा आदमी, आंखों पर नीले रंग का चश्मा लगाये, एक लड़की का हाथ अपने हाथ में लिये वैठा था। लड़की ने क़ैदियों के कपड़े पहन रखे थे, और बूढ़े को कोई वात सुना रही थी। एक छोटा सा स्कूली लड़का, सहमी हुई आंखों से, एकटक बूढ़े के मुंह की ओर देखे जा रहा था। एक कोने में दो प्रेमी वैठे थे। लड़की छोटी सी और काफ़ी ख़ूबसूरत थी, सिर पर सुनहरी कटे हुए वाल थे, और चेहरे से ओज टपकता था। वड़े वढ़िया कपड़े पहने हुए थी। लड़के के नाक-नक़्श सुन्दर, और वाल कुण्डलदार थे। रवड़ की जाकेट पहने हुए था। कोने में वैठे दोनों एक दूसरे से फुसफुसा कर वातें कर रहे थे और दोनों प्रेम में वेसुध हो रहे थे।

मेज़ के सबसे निकट एक सफ़ेद बालों वाली महिला बैठी थी, जिसने सिर से पांव तक काले रंग के कपड़े पहन रखे थे। उसके पास ही एक दुबला-पतला युवक बैठा था। इस युवक ने भी रबड़ की जाकेट पहन रखी थी और लगता था जैसे उसे दिक़ का रोग हो। ज़ाहिर था कि महिला इस लड़के की मां है। महिला कुछ कहना चाहती थी लेकिन सिसकियों के कारण बोल न सकती थी। कई बार उसने कोशिश की लेकिन उसे बीच ही में रुक जाना पड़ता। युवक की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। हाथ में एक काग़ज़ पकड़े वह उसे बार बार ग़ुस्से से कभी तह करता कभी मरोड़ता था। उनकी बग़ल में एक मोटी-ताज़ी सुन्दर लड़की बैठी थी, जिसके चेहरे पर ताज़गी थी और आंखें बड़ी बड़ी थीं। इस लड़की ने भूरे रंग की पोशाक पहन रखी थी और ऊपर केप लगाये थी। वह बड़े स्नेह से अपनी सिसकियां भरती मां का कंधा सहला रही थी। इस लड़की की हर चीज़ सुन्दर थी: उसके बड़े बड़े सफ़ेद हाथ, छोटे कुण्डलों वाले बाल, नाक, होंठ। पर उसके रूप का सबसे सुन्दर अंग थीं उसकी आंखें, सहृदयता और सरलता से भरी, बादामी रंग की गोल गोल आंखें। जब नेख़्लूदोव ने कमरे में प्रवेश किया तो ये सुन्दर आंखें मां पर से क्षण भर के लिए हट कर उसकी आंखों से जा मिलीं। लेकिन वह फ़ौरन् घूम गई और मां से कुछ कहने लगी। प्रेमियों से थोड़ी ही दूरी पर एक सांवला सा आदमी, अस्त-व्यस्त बाल, और उदास चेहरा, बड़े ग़ुस्से से एक आदमी से बातें कर रहा था जो उससे मिलने आया था। मुलाक़ाती के दाढ़ी-मूंछ नहीं थी और शक्ल-सूरत से हिजड़ा लगता था।

इन्स्पेक्टर की बग़ल में बैठा नेख़्लूदोव बड़े कुतूहल के साथ अपने आस-पास के लोगों को देख रहा था। एक छोटा सा लड़का, जिसने हाल ही में बाल कटवाये थे, उसके पास चला आया और पतली सी आवाज में उससे बातें करने लगा।

"तुम किसका इन्तज़ार कर रहे हो?"

सवाल सुन कर नेख़्लूदोव हैरान हुआ। लेकिन लड़के के नन्हे से चेहरे पर गंभीरता का भाव देख कर, तथा उसकी चमकती, सतर्क आंखों को देख कर जो एकटक उसके चेहरे पर जमी थीं, गंभीरता से जवाब दिया कि वह अपनी जान-पहचान की एक स्त्री का इन्तज़ार कर रहा है।

"क्या वह तुम्हारी वहिन है?" लड़के ने पूछा।

"नहीं, वहिन तो नहीं है," नेख़्लूदोव ने हैरान हो कर जवाब दिया। "और तुम, तुम यहां किसके साथ आये हो?" उसने लड़के से पूछा।

"मैं? मां के साथ हूं। वह सियासी क़ैदी है," उसने जवाब दिया।

"मारीया पाव्लोव्ना, आ कर कोल्या को ले जाओ," इन्स्पेक्टर ने कहा। प्रत्यक्षतः उसे नेख़्लूदोव का लड़के के साथ वातें करना नियम-विरुद्ध लग रहा था।

मारीया पाव्लोव्ना वही सुन्दर गोल गोल आंखों वाली लड़की थी जिसकी ओर नेख़्लूदोव का ध्यान आकर्षित हुआ था। ऊंची-लम्बी, सीधी-सतर, वह उठी और वड़ी दृढ़ता से पुरुषों की तरह डग भरती हुई नेख़्लूदोव तथा उस वालक के पास आई।

"यह आपसे क्या पूछ रहा है कि आप कौन हैं?" नेख़्लूदोव की ओर सीधा देखते हुए उसने पूछा। उसके होंठों पर हल्की सी मुस्कान थी, और वड़ी वड़ी सद्भावनापूर्ण आंखों से विश्वास छलकता था। इस सादगी से उसने यह सवाल पूछा कि सहज ही यह विश्वास हो जाता था कि इस युवती का हर किसी के प्रति वहिनों का सा स्नेह है। इससे भिन्न भावना उसके हृदय में उठ ही नहीं सकती। "यह हर वात जानना चाहता है।" ये शब्द उसने लड़के की ओर इतने प्यार और सद्भावना के साथ देखते हुए कहे कि लड़का और नेख़्लूदोव विवश हो कर जवाव में मुस्कराने लगे।

"यह मुझसे पूछ रहा था कि मैं किससे मिलने आया हूं।"

"मारीया पाव्लोव्ना, तुम जानती हो वाहर के लोगों से वात करना मना है," इन्स्पेक्टर ने कहा।

"अच्छा, अच्छा," कहते हुए उसने कोल्या का नन्हा सा हाथ अपने चौड़े सफ़ेद हाथ में लिया, और दिक़ के रोगी की मां के पास लौट गई। वालक उसके चेहरे की ओर वरावर देखे जा रहा था।

"यह नन्हा लड़का कौन है?" नेख़्लूदोव ने इन्स्पेक्टर से पूछा।

"इसकी मां सियासी क़ैदी है। यहीं जेल में ही यह पैदा हुआ था," इन्स्पेक्टर ने सन्तोषपूर्ण लहजे में कहा, मानो वह यह वता कर ख़ुश हो रहा हो कि देखो, यह हमारा जेलख़ाना कितनी विलक्षण संस्था है।

"क्या यह मुमकिन हो सकता है?"

"जी, क्यों नहीं, और अब वह अपनी मां के साथ साइबेरिया जा रहा है।"

"और वह युवती?"

"मैं आपके सवाल का जवाब नहीं दे सकता," इन्स्पेक्टर ने कन्धे बिचकाते हुए कहा। "लीजिये, बोगोदूख़ोव्स्काया आ गई।"

५५

कमरे के पीछे एक दरवाज़े में से वेरा बोगोदूख़ोव्स्काया बल खाती हुई अन्दर चली आ रही थी। उसका चेहरा ज़र्द था, बाल कटे हुए थे, और शरीर दुबला-पतला। बड़ी बड़ी आंखों से सद्भावना टपकती थी।

"बहुत बहुत शुक्रिया, आप आये," नेख़्लूदोव के साथ हाथ मिलाते हुए उसने कहा। "तो आप मुझे भूले नहीं हैं? आइये, कहीं बैठ जायं।"

"मुझे ख़्याल भी न था कि मैं तुम्हें इस स्थिति में देखूंगा।"

"मैं तो बहुत ख़ुश हूं। इस स्थिति में इतना सुख है, इतना सुख है कि मैं इससे बेहतर किसी चीज़ की इच्छा ही नहीं कर सकती," अपनी बेहद पतली गर्दन को घुमाते हुए और एकटक नेख़्लूदोव की ओर देखते हुए उसने कहा। उसकी गोल, बड़ी बड़ी, सद्भावनापूर्ण आंखों में पहले की तरह आज भी भय छाया हुआ था। और पतली किन्तु मज़बूत गर्दन को उसके ब्लाउज़ का फटा-पुराना, मैला और मुचड़ा हुआ कॉलर ढके हुए था।

नेख़्लूदोव के पूछने पर कि वह कैसे यहां आ पहुंची, उसने बड़े उत्साह से अपने अनुभवों की कहानी कहनी शुरू कर दी। उसके भाषण में कुछेक विशेष शब्दों का बार बार प्रयोग होता, जैसे प्रापेगैण्डा, अव्यवस्था, दल, विभाग, उप-विभाग, इत्यादि। उसका ख़्याल था कि हर कोई इन शब्दों से परिचित होगा, लेकिन नेख़्लूदोव ने उन्हें पहले कभी नहीं सुना था।

उसने नेख़्लूदोव को 'नरोदनाया वोल्या'* के सभी भेद बता दिये। प्रत्यक्षतः उसे यह विश्वास था कि नेख़्लूदोव उन्हें जान कर ख़ुश होगा। लेकिन नेख़्लूदोव कभी उसकी पतली सी गर्दन की ओर देखता, कभी उसके विरले उलझे बालों की ओर और हैरान हो कर सोचता कि वह ऐसी

---

*'नरोदनाया वोल्या' (जनता की आज़ादी) – पिछली शती की आठवीं दशाब्दी का एक क्रांतिकारी संगठन।

बातें क्यों करती रही है और अब मुझे उनके बारे में क्यों सुना रही है। उसका दिल इस लड़की के प्रति अनुकम्पा से भर उठा, परन्तु यह दयाभावना उस दयाभावना से भिन्न थी जो उसके हृदय में उस निर्दोष किसान मेन्शोव के प्रति उठी थी जो इस बदबूदार जेलख़ाने में पड़ा सड़ रहा था। इस लड़की की स्थिति दयनीय इसलिए थी कि उसके विचार बेहद उलझे हुए थे। यह तो स्पष्ट था कि वह अपने को एक वीरांगना समझे बैठी थी जो अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिए जान हथेली पर लिये जी रही थी। परन्तु वह लक्ष्य क्या था और उसकी सिद्धि किस बात में है, यह उसके लिए बताना बड़ा कठिन था।

जिस काम के लिए वेरा बोगोदूख़ोव्स्काया ने नेख़्लूदोव से मिलने की इच्छा प्रकट की थी, वह इस प्रकार था। लगभग पांच महीने पहले शूस्तोवा नाम की उसकी एक सहेली गिरफ़्तार हुई थी और पीटर-पॉल क़िले में बन्द थी। यह लड़की निर्दोष थी, उस तथाकथित उप-विभाग की सदस्या भी नहीं थी जिसमें बोगोदूख़ोव्स्काया स्वयं काम करती थी। उसे पकड़ा इसलिए गया था कि उसके पास अवैध साहित्य पाया गया था जो किसी और को देने के लिए उसने रखा हुआ था। अपनी उस मित्र की गिरफ़्तारी के लिए वेरा किसी हद तक अपने को दोषी समझती थी, इसी लिए वह चाहती थी कि नेख़्लूदोव उसे रिहा करवाने की पूरी पूरी कोशिश करे। चूंकि नेख़्लूदोव का अधिकारियों से मेल-जोल था, इसलिए उसने सोचा कि यह संभव होगा। इसके अतिरिक्त उसने अपने एक दूसरे मित्र, गुर्केविच का भी ज़िक्र किया। वह भी पीटर-पॉल क़िले में बन्द था। वह चाहती थी कि नेख़्लूदोव उसे अपनी मां से मिलने की इजाज़त ले दे, और उसके अध्ययन के लिए कुछेक विज्ञान-सम्बन्धी पुस्तकों के पहुंचाने का प्रबन्ध कर दे।

नेख़्लूदोव ने उसे आश्वासन दिया कि जब भी वह पीटर्सबर्ग जायेगा तो जो कुछ भी उससे बन पड़ा, करेगा।

जो कहानी उसने अपने बारे में सुनाई वह यों थी। दाइयों का कोर्स पूरा करने के बाद उसका सम्पर्क 'नरोदनाया वोल्या' के अनुयाइयों के एक दल से हो गया। पहले तो सब काम सुभीते से चलता गया। वे लोग घोषणाएं लिखते और फ़ैक्ट्रियों में प्रचार का काम करते। फिर एक दिन दल का एक प्रमुख सदस्य पकड़ा गया। अधिकारियों के हाथ ज़रूरी काग़ज़ात पड़ गये जिनसे सभी सम्बन्धित लोग गिरफ़्तार कर लिये गये।

"मैं भी पकड़ी गई। अब मुझे भी निर्वासित कर दिया जायेगा। पर क्या हुआ? मैं तो बेहद खुश हूं।" यह कहते हुए, उसने अपनी कहानी समाप्त की। उसके होंठों पर दयनीय मुस्कान खेल रही थी।

नेख़्लूदोव ने उससे उस बड़ी बड़ी आंखों वाली लड़की के बारे में पूछा। वेरा ने बताया कि वह एक जनरल की बेटी है और मुद्दत से क्रान्तिकारी पार्टी के सम्पर्क में है। अदालत में यह क़बूल करने पर कि उसने राजनीतिक पुलिस के एक सिपाही पर गोली चलाई थी उसे जेलख़ाने में बन्द कर दिया गया। वह कुछेक षड्यन्त्रकारियों के साथ एक घर में रहा करती थी। उसी घर में उन्होंने छिपा कर एक छापाख़ाना रखा हुआ था। एक रात, पुलिस उस घर की तलाशी लेने आ पहुंची। घर वालों ने उनका मुक़ाबिला करने की ठान ली और बत्तियां बुझा कर उन सब चीज़ों को नष्ट करना शुरू कर दिया जिनके कारण उन पर अभियोग चल सकता था। पुलिस दरवाज़े तोड़ कर अन्दर घुस आई। किसी षड्यन्त्रकारी ने गोली चला दी जिससे एक सिपाही को घातक चोट लगी। जब जांच शुरू हुई तो इस लड़की ने कहा कि गोली उसने चलायी थी, हालांकि वास्तव में उसने कभी रिवाल्वर को हाथ तक नहीं लगाया था, और किसी पक्षी तक पर हाथ नहीं उठा सकती थी। पर वह अपने बयान पर डटी रही, और अब उसे कड़ी मशक़्क़त की सज़ा दे कर साइबेरिया भेजा जा रहा है।

"बड़ी परोपकारी लड़की है, बहुत अच्छी लड़की है," वेरा बोगोदूख़ोव्स्काया ने उसकी सराहना करते हुए कहा।

तीसरी बात वह मास्लोवा के बारे में कहना चाहती थी। मास्लोवा के जीवन के बारे में, तथा नेख़्लूदोव के साथ उसके सम्बन्ध के बारे में वह जानती थी—जेलख़ाने में इस तरह की बातें सभी को पता चल जाती हैं। वेरा ने यह परामर्श दिया कि या तो नेख़्लूदोव उसको सियासी क़ैदियों के वार्ड में बदली करा दे, या उसे जेल के अस्पताल में भिजवा दे जहां वह रोगियों की टहल-सेवा कर सके। इस समय अस्पताल में रोगियों की संख्या बहुत ज़्यादा थी जिस कारण नर्सों की बहुत ज़रूरत थी। इस परामर्श के लिए नेख़्लूदोव ने उसका धन्यवाद किया और कहा कि वह ज़रूर इस पर अमल करने की कोशिश करेगा।

यहां पहुंच कर उनकी बातचीत कट गई। इन्स्पेक्टर उठ खड़ा हुआ और बोला कि मुलाक़ात का वक़्त ख़त्म हो चुका है, इसलिए क़ैदियों और उनके मिलनेवालों को एक दूसरे से विदा लेनी होगी। नेख़्लूदोव ने वेरा से विदा ली और दरवाज़े पर जा कर खड़ा हो गया और वहां का दृश्य देखने लगा।

"सज्जनो, वक़्त ख़त्म हो चुका है, वक़्त ख़त्म हो चुका है!" इन्स्पेक्टर बार बार कह रहा था। वह कभी उठता और कभी बैठ जाता।

इन्स्पेक्टर का हुक्म सुन कर कमरे में लोग और भी अधिक उत्साह से बातें करने लगे। कोई भी बाहर नहीं गया। कुछ लोग उठ खड़े हुए, और खड़े खड़े बातें करने लगे। कुछ बैठे बैठे ही बातें करते रहे। कुछेक ने रोना शुरू कर दिया और एक दूसरे से विदा लेने लगे। मां और उसके तपेदिक़ के रोगी बेटे की विदाई का दृश्य सचमुच मर्मस्पर्शी था। लड़का अब भी काग़ज़ के टुकड़े को मरोड़े जा रहा था, उसके चेहरे से लगता था कि वह बहुत क्रुद्ध है। वह भरसक कोशिश कर रहा था कि उसकी मां की भावना का उस पर असर न हो। जब मां ने यह सुना कि विदा लेने का वक़्त आ गया है तो लड़के के कन्धे पर सिर रख कर फफक फफक कर रोने लगी। गोल गोल, सद्भावनाभरी आंखों वाली लड़की—नेख़्लूदोव अनचाहे उसकी ओर देखे जा रहा था—सिसकती मां के सामने खड़ी उसे ढाढ़स बंधाने के लिए कुछ कह रही थी। नीली ऐनकों वाला वृद्ध, अपनी बेटी का हाथ पकड़े खड़ा था, और बेटी जो कुछ कहती उसके जवाब में बार बार सिर हिला रहा था। युवा प्रेमी उठ खड़े हुए थे, और एक दूसरे का हाथ पकड़े, चुपचाप एक दूसरे की आंखों में देखे जा रहे थे।

"यहां पर केवल यही दो ख़ुश हैं," प्रेमियों की ओर इशारा करते हुए, नेख़्लूदोव की बग़ल में खड़े छोटा सा कोट पहने युवक ने कहा। वह भी जुदा होते लोगों को देखे जा रहा था।

जब प्रेमियों को—रबड़ की जाकेट वाले लड़के और सुन्दर युवती को—यह भास हुआ कि नेख़्लूदोव और युवक उनकी ओर देख रहे हैं, तो उन्होंने बांहें फैला दीं और एक दूसरे का हाथ पकड़ कर गोल चक्कर में नाचने लगे।

"आज रात को इनकी शादी है। यहीं जेलख़ाने में। उसके वाद लड़की उसके साथ साइबेरिया जायेगी," युवक ने बताया।

"वह क्या?.."

"क़ैदी है। कड़ी मशक़्क़त की सज़ा हुई है। चलो, कम से कम इन दोनों को तो कुछ ख़ुशी नसीब हो। यहां पर तो क्लेश ही क्लेश है," तपेदिक़ के रोगी की मां की सिसकियों को सुनते हुए युवक ने कहा।

"अच्छा, भले लोगो, अब कृपा करो और मुझे मजबूर न करो कि मैं कोई सख़्त क़दम उठाऊं," इन्स्पेक्टर ने कहा और बार बार इन शब्दों को दोहराने लगा। "कृपा करो!" शिथिल, संकोचपूर्ण आवाज़ में वह कहे जा रहा था, "वक़्त कब का ख़त्म हो चुका है। आपका आख़िर मतलब क्या है? इस तरह की बात नहीं चल सकेगी... अब मैं आख़िरी बार आपसे कह रहा हूं," उसने थकी हुई आवाज़ में कहा और अपनी सिगरेट बुझा कर दूसरी सिगरेट जला ली।

अपने को ज़िम्मेवार न ठहराते हुए दूसरों को दुख पहुंचाने का अधिकार रखने की लोगों की दलीलें भले ही कितनी भी कुशल, कितनी भी पुरानी, कितनी भी परिचित क्यों न हों, फिर भी ज़ाहिर था कि इस कमरे में जो क्लेश लोगों को पहुंच रहा था, उसके लिए इन्स्पेक्टर अपने को चाहते हुए भी सर्वथा निर्दोष नहीं समझ सकता था। ज़ाहिर था कि उसे यह बात बेचैन किये हुए थी। वह जानता था कि इन लोगों को दुःख पहुंचाने वालों में से वह भी एक है।

आख़िर क़ैदी अपने अपने मुलाक़ातियों से जुदा होने लगे। क़ैदी अन्दर वाले दरवाज़े से और मुलाक़ाती बाहर वाले दरवाज़ों से जाने लगे। रबड़ की जाकेटों वाले आदमी, और तपेदिक़ का रोगी लड़का और वह आदमी जिसके बाल अस्त-व्यस्त थे, सब चले गये। मारीया पाव्लोव्ना भी उस लड़के के साथ चली जो जेल में पैदा हुआ था।

मिलने वाले भी चले गये। नेख़्लूदोव के आगे आगे नीली ऐनकों वाला वृद्ध, क़दम घसीटता हुआ चला जा रहा था।

"सचमुच बड़ी विचित्र स्थिति है," नेख़्लूदोव के साथ सीढ़ियां उतरते हुए बातूनी युवक कह रहा था, मानो टूटे हुए वार्तालाप की कड़ी फिर से जोड़ रहा हो। "फिर भी हम इन्स्पेक्टर के बड़े कृतज्ञ हैं। बहुत अच्छा आदमी है, नियमों की बहुत परवाह नहीं करता। इन लोगों के लिए

इतना भी बहुत है कि थोड़ी देर के लिए एक दूसरे से बातें कर लें। इससे इनके दिल का गुबार कुछ हल्का हो जाता है।"

"दूसरे जेलों में क्या ऐसी मुलाक़ातों की इजाज़त नहीं?"

"हा-हा! नाम भी मत लो। अकेले में नहीं मिलना चाहते जनाब? वह भी जाली के आर-पार?"

इस युवक ने अपना परिचय कराते हुए कहा था कि इसका नाम मेदिन्त्सेव है। इससे बातें करते हुए नेख़्लूदोव हॉल में पहुंचा, जहां उन्हें इन्स्पेक्टर मिला जो उसी तरह थका-मांदा उनकी ओर चला आ रहा था।

"यदि आप मास्लोवा से मिलना चाहते हैं, तो कृपया कल आइये," प्रत्यक्षतः नेख़्लूदोव के प्रति विनम्रता दिखाने की इच्छा रखते हुए उसने कहा।

"अच्छी बात है," नेख़्लूदोव ने जवाब दिया और जल्दी जल्दी वहां से निकल गया।

मेन्शोव की यन्त्रणा, जो प्रत्यक्षतः निर्दोष था, बड़ी भयानक थी। परन्तु उसकी शारीरिक यन्त्रणा से भी बढ़ कर भयानक उसकी मानसिक व्यग्रता थी, भगवान् तथा मनुष्य की अच्छाई में अविश्वास था। यह व्यग्रता और अविश्वास बरबस उसके मन में उठते जब वह इन लोगों की निर्दयता को देखता जो बिना किसी कारण के उसे यन्त्रणा पहुंचा रहे हैं। बीसियों निर्दोष लोगों को भयानक तिरस्कार और यातना सहनी पड़ती, केवल इसलिए कि काग़ज़ों पर कोई बात जिस तरह लिखी जानी चाहिए थी वैसे नहीं लिखी गई थी। वार्डर भी भयानक थे जिनका स्वभाव ही बर्बर हो गया था। इनका काम ही अपने भाइयों को यन्त्रणा पहुंचाना था। उन्हें विश्वास था कि वे अपना कर्तव्य निभा रहे हैं जो महत्वपूर्ण और उपयोगी है। परन्तु इन सबसे भयानक यह दुबला-पतला, ढलती उम्र का, नेक-दिल इन्स्पेक्टर था, जिसे मजबूर हो कर मां को बेटे से, और बाप को बेटी से अलग करना पड़ता था। आख़िर इन लोगों का भी तो सम्बन्ध वैसा ही था जैसा कि इन्स्पेक्टर का अपने बच्चों से था।

"यह सब किस लिए?" नेख़्लूदोव ने मन ही मन पूछा। जब भी वह जेलख़ाने में आता तो उसकी आत्मा बेचैन हो उठती, और यह बेचैनी मतली का रूप ले लेती। आज तो पहले से भी बढ़ कर उसकी यह दशा हुई, और इस प्रश्न का कोई उत्तर उसे नहीं सूझ पाया।

दूसरे दिन नेख़्लूदोव वक़ील से मिलने गया, और उससे मेन्शोव मां और वेटे की स्थिति के वारे में वात की और उससे आग्रह किया कि उनके मुक़द्दमे की पैरवी करे। वकील ने वचन दिया कि वह मुक़द्दमे की जांच करेगा, और यदि नेख़्लूदोव का कहना ठीक निकला—जैसा कि वहुत संभव जान पड़ता था—तो उसकी पैरवी मुफ़्त करेगा। फिर नेख़्लूदोव ने उन १३० आदमियों का ज़िक्र किया जिन्हें किसी भूल के कारण जेलख़ाने में रखा जा रहा था।

"किसे यह फ़ैसला करना है? किस का क़सूर है?"

वकील क्षण भर के लिए चुप रहा। ज़ाहिर है वह सवाल का ठीक ठीक जवाव देना चाहता था।

"किस का क़सूर है? किसी का भी नहीं," उसने निश्चयपूर्वक कहा। "सरकारी वकील से पूछिये तो वह कहेगा गवर्नर का क़सूर है, गवर्नर से पूछिये तो वह सरकारी वकील का क़सूर वतायेगा। किसी का भी क़सूर नहीं।"

"मैं अभी सहायक गवर्नर से मिलने जा रहा हूं। मैं उससे वात करूंगा।"

"इसका कुछ फ़ायदा नहीं," वकील ने मुस्करा कर कहा, "वह तो, क्या कहूं—कहीं वह आपका मित्र या सम्बन्धी तो नहीं?—वह तो निरा काठ का उल्लू है। फिर भी अपना काम साधना ख़ूब जानता है।"

नेख़्लूदोव को मास्लेन्निकोव के शब्द याद आ गये जो उसने वकील के वारे में कहे थे, और बिना कुछ भी जवाब में कहे उससे विदा ली और मास्लेन्निकोव को मिलने चल दिया।

मास्लेन्निकोव से उसे दो काम थे: एक तो यह कि मास्लोवा को जेल के अस्पताल में भेज दिया जाय, और दूसरा उन १३० आदमियों के बारे में जिन्हें विना किसी क़सूर के, पासपोर्ट न होने के कारण, जेलख़ाने में रखा जा रहा था। एक ऐसे आदमी के सामने गिड़गिड़ाना जिसके प्रति मन में कोई आदर-भाव न हो, नेख़्लूदोव के लिए वड़ा कठिन था, मगर वह क्या करता, अपना काम निकालने का यही एक तरीक़ा था और वह उसे अपनाना पड़ा।

जब नेख़्लूदोव वग्घी में वैठ कर मास्लेन्निकोव के घर पहुंचा तो उसने

पाया कि वहुत सी गाड़ियां फाटक के सामने खड़ी हैं। उसे याद हो आया कि आज सहायक गवर्नर की पत्नी का दावत का दिन है जिस पर उसे भी आमन्त्रित किया गया था। जिस वक़्त नेख़्लूदोव की गाड़ी पहुंची उसी वक़्त दरवाज़े के सामने एक गाड़ी खड़ी थी, और एक वावर्दी चोवदार, टोपी में रिव्वन लगाये, एक महिला को घर की वाहरी सीढ़ियां उतरवा रहा था। महिला ने अपने गाउन को हल्के से ऊपर उठा रखा था जिससे उसके नाज़ुक टखने, काले लम्वे मोज़े और जूते नज़र आ रहे थे। गाड़ियों में एक वन्दगाड़ी, लैण्डो, भी थी। नेख़्लूदोव जानता था कि यह गाड़ी कोर्चागिन परिवार की है। गाड़ी पर उनका कोचवान वैठा था—सफ़ेद वाल, लाल लाल गाल—उसने टोपी उतारी और सिर झुका कर वड़े अदव से, और साथ ही वड़े मैत्रीपूर्ण ढंग से अभिवादन किया, जैसे किसी सुपरिचित व्यक्ति का किया जाता है। नेख़्लूदोव मास्लेन्निकोव के वारे में पूछने जा ही रहा था जव उसने देखा कि वह एक वहुत ही प्रतिष्ठित मेहमान के साथ साथ सीढ़ियां उतरता हुआ चला आ रहा है। सीढ़ियों पर क़ालीन विछा था। मास्लेन्निकोव उसे आधी सीढ़ियों तक नहीं वल्कि नीचे तक छोड़ने जा रहा था। यह अति-प्रतिष्ठित मेहमान कोई फ़ौजी आदमी था, और फ़ांसीसी भाषा में किसी लॉटरी की चर्चा कर रहा था जिसके पैसे से शहर में अनाथालय खोले जायेंगे। वह कह रहा था कि स्त्रियों के लिए लॉटरियों के लिए काम करना वड़ा अच्छा है। "इससे उनका मनवहलाव होता है, और हमें पैसे मिलते हैं।"

"Qu'elles s'amusent et que le bon dieu les bénisse...* ओह, नेख़्लूदोव! कहो कैसे हो? वहुत दिन हो गये, कभी नज़र नहीं आये?" नेख़्लूदोव का अभिवादन करते हुए उसने कहा। Allez presenter vos devoirs à madame.** कोर्चागिन भी आये हैं, और नादीना वुक्सगेव्दन भी यहीं पर है। Toutes les jolies femmes de la ville,"*** प्रतिष्ठित मेहमान ने कहा और अपने वावर्दी कन्धे तनिक ऊपर को उठा दिये ताकि उसका नौकर

---

*इनका मनवहलाव हो और ईश्वर उन्हें आशीश दे... (फ़्रेंच)

**जाओ, गृह-स्वामिनी को अपना आदर प्रकट करो। (फ़्रेंच)

***शहर की सभी सुंदरियां, (फ़्रेंच)

उसे फ़ौजी बरानकोट पहना सके। नौकर ने भी बहुत बढ़िया वर्दी पहन रखी थी। "Au revoir, mon cher!"* और उसने मास्लेन्निकोव का हाथ दबाया।

"आओ, अब चलो। मुझे बहुत ख़ुशी है कि तुम आ गये," नेख़्लूदोव का हाथ अपने हाथ में लेते हुए मास्लेन्निकोव ने उत्तेजित स्वर में कहा। मास्लेन्निकोव मोटा था, फिर भी जल्दी जल्दी सीढ़ियां चढ़ने लगा।

मास्लेन्निकोव ख़ास तौर पर ख़ुश था। इतने बड़े आदमी ने उसके साथ बातें जो की थीं। ऐसा सोचा जा सकता था कि स्वयं ज़ार की रेजिमेंट में रह चुकने के बाद उसे राजपरिवार के लोगों से मिलने की आम आदत हो जानी चाहिए, लेकिन जान पड़ता है कि नीच की नीचता उसे पुचकारने से बढ़ती ही जाती है और हर बार किसी बड़े आदमी का ध्यान पा कर वह उसी तरह ख़ुश होता जिस तरह कोई वफ़ादार कुत्ता ख़ुश होता है जब उसका मालिक उसे थपथपाये, सहलाये या उसके कान खुजलाये। वह अपनी दुम हिलाता है, क़दमों में लोटता है, उछलता है, अपने कान दबा लेता है और ज़ोर जोर से चक्कर लगाने लगता है। मास्लेन्निकोव भी यही कुछ करने के लिए तत्पर था। नेख़्लूदोव का चेहरा गंभीर हो रहा था, लेकिन मास्लेन्निकोव ने नहीं देखा, न ही उसके शब्दों की ओर कोई ध्यान दिया, बल्कि उसे खींचता हुआ बैठक की ओर ले गया। पीछे पीछे चलते जाने के सिवाय नेख़्लूदोव के सामने कोई चारा नहीं था।

"काम बाद में होता रहेगा। जो कहोगे कर दूंगा," नाचने वाले हॉल में से नेख़्लूदोव को ले जाते हुए मास्लेन्निकोव ने कहा। फिर बिना रुके अपने चोबदार से बोला, "अन्दर जा कर कहो कि प्रिंस नेख़्लूदोव आये हैं।" चोबदार भागता हुआ उनके आगे निकल गया। "Vous n'avez qu'à ordonner.** पहले तुम्हें ज़रूर मेरी पत्नी से मिलना होगा। पिछली बार उसे बिना मिले चले गये तो उसने मेरी अच्छी गत बनाई।"

---

*अलविदा, मेरे प्रिय! (फ़्रेंच)

**तुम्हें हुक्म भर देना होगा। (फ़्रेंच)

उनकी बैठक तक पहुंचने से पहले ही चोबदार ने अन्दर जा कर सूचना दे दी थी। सहायक गवर्नर की पत्नी आन्ना इग्नात्येव्ना स्त्रियों से घिरी बैठी थी जिन्होंने बढ़िया वास्केट लगा रखे थे। खिल कर मुस्कराते हुए उसने नेख़्लूदोव का स्वागत किया। बैठक के दूसरे सिरे पर कुछ स्त्रियां चाय की मेज़ के इर्दगिर्द बैठी थीं। उनके नज़दीक ही कुछ फ़ौजी और ग़ैरफ़ौजी आदमी खड़े थे। स्त्रियां और पुरुष ख़ूब चहक चहक कर बातें कर रहे थे।

"Enfin! * हमने तो सोचा तुम हमें भूल ही गये हो! हमने क्या क़सूर किया है?"

इन शब्दों से आन्ना इग्नात्येव्ना ने नवागन्तुक का स्वागत किया। वह दिखाना चाहती थी कि नेख़्लूदोव के साथ उसकी गहरी घनिष्ठता है, हालांकि वास्तव में उनमें कोई घनिष्ठता नहीं थी, न कभी रही थी।

"तुम इन्हें जानते हो?—मदाम बेल्याव्स्काया, मि० चेर्नोव। ज़रा नज़दीक बैठो। मिस्सी, venez donc à notre table. On vous apportera votre thé... ** और तुम," उसने एक अफ़सर से कहा जो मिस्सी के साथ बातें कर रहा था, जान पड़ता था जैसे वह अफ़सर का नाम भूल गई हो, "इधर आ जाओ। चाय का प्याला बनाऊं प्रिंस?"

"मैं तुम्हारे साथ बिल्कुल सहमत नहीं हूं, बिल्कुल नहीं। सीधी सी बात है। वह उससे प्यार नहीं करती थी," किसी स्त्री की आवाज़ आ रही थी।

"पर उसे चाट-मिठाइयों से तो प्यार था।"

"उफ़! हमेशा ऐसे ही भोंडे मज़ाक़ सूझते हैं," किसी दूसरी स्त्री ने हंसते हुए कहा। स्त्री रेशमी कपड़ों, हीरे-सोने में चमचमा रही थी।

"C'est excellent, *** ये छोटी छोटी बिस्कुटें तो बहुत अच्छी हैं। कितनी हल्की हैं! मैं तो एक और लूंगी।"

---

* अंततः! (फ़्रेंच)

** हमारी मेज़ पर आ जाओ। तुम्हारी चाय यहां आ जायेगी... (फ़्रेंच)

*** लाजवाब, (फ़्रेंच)

"क्या तुम जल्दी ही शहर से चली जाओगी?"

"हां, आज हमारा यहां आख़िरी दिन है। इसी लिए हम आ गये हैं।"

"ठीक है। देहात में तो बहुत अच्छा होगा। इस बार तो वसन्त कैसा खिल कर आया है!"

मिस्सी, टोप पहने और किसी गहरे रंग की चुस्त, धारीदार पोशाक पहने, बड़ी सुन्दर लग रही थी। नेख़्लूदोव को देखते ही वह शर्मा गई।

"ओह, मैंने तो सोचा था कि तुम चले गये हो," उसने नेख़्लूदोव से कहा।

"बस जल्दी ही चला जाऊंगा। काम की वजह से शहर में रुका हुआ हूं। यहां भी काम के ही कारण आया हूं।"

"Maman को मिलने नहीं आओगे क्या? वह तुम्हें मिल कर बहुत ख़ुश होंगी," उसने कहा। यह जानते हुए कि जो कुछ वह कह रही है, वह सच नहीं है, और नेख़्लूदोव भी जानता है कि वह सच नहीं है, मिस्सी और भी शर्मा गयी।

"उमीद नहीं कि मुझे वक़्त मिल सके," नेख़्लूदोव ने गंभीरता से जवाब दिया यह दिखाने की कोशिश करते हुए कि उसने मिस्सी को शर्माते हुए नहीं देखा।

मिस्सी ने ग़ुस्से से भौंहें सिकोड़ीं, कंधे बिचकाये और बांके अफ़सर की ओर घूम गई। अफ़सर ने मिस्सी के हाथ से ख़ाली प्याला ले लिया, और बड़े जवांमर्दों की तरह उसे उठाये हुए दूसरी मेज़ पर रखने के लिए चला गया। जाते हुए, जगह जगह उसकी तलवार कुर्सियों के साथ टकरा रही थी।

"तुम्हें ज़रूर अनाथालाय के लिए दान देना चाहिए।"

"मैंने इन्कार तो नहीं किया। मैं तो केवल इतना चाहता हूं कि मैं यह दान लॉटरी के लिए तैयार रखूं। उस वक़्त देने पर इसकी शान होगी।"

"अच्छा तो भूलना नहीं!" किसी ने कहा और उसके बाद हंसने की आवाज़ आई। हंसी प्रत्यक्षतः बनावटी थी।

आन्ना इग्नात्येव्ना तो जैसे हवा में उड़ रही थी। उसकी पार्टी बेहद कामयाब रही थी।

"मीका कह रहा था कि तुम जेल-सुधार का काम करने लगे हो। मैं यह सब बड़ी अच्छी तरह समझती हूं," उसने नेख़्लूदोव से कहा, "मीका में कितने ही दोष हों लेकिन उसका दिल बड़ा कोमल है। (मीका से मतलब उस का मोटा पति, मास्लेन्निकोव था।) इन बेचारे क़ैदियों को वह अपने बच्चों के समान समझता है। और कुछ तो वह समझ ही नहीं सकता। Il est d'une bonté..."*

वह रुक गई। उसे अपने पति के bonté को अभिव्यक्त करने के लिए उपयुक्त शब्द नहीं सूझ रहे थे। और यह पति वही था जिसके आदेश से लोगों को कोड़ों से पीटा जाता था। उसी समय एक झुर्रियों से भरी वृद्ध महिला ने कमरे में प्रवेश किया और वह मुस्कराते हुए उसकी ओर घूम गई। बुढ़िया ने बेशुमार बैंगनी रंग के रिब्बन लगा रखे थे।

औपचारिकता निभाने के लिए जो दो शब्द कहने ज़रूरी थे, नेख़्लूदोव ने कहे और उठ कर मास्लेन्निकोव के पास चला गया। इन औपचारिक शब्दों का कोई अर्थ नहीं होता।

"क्या दो मिनट मेरी बात सुन सकते हो?"

"हां, हां, क्यों नहीं? कहो, क्या है? आओ, इधर अन्दर बैठ जाते हैं।"

दोनों एक छोटी सी जापानी सजावट की बैठक में खिड़की के पास जा कर बैठ गये।

५८

"अच्छा तो je suis à vous.** सिगरेट पियोगे? ज़रा ठहरो, मैं कोई इन्तज़ाम कर लूं। कहीं यहां कुछ ख़राब हो गया, तो," मास्लेन्निकोव ने कहा और एक राख़दानी उठा लाया। "अब कहो।"

"मुझे तुमसे दो काम हैं।"

"अच्छा!"

मास्लेन्निकोव का मुंह लटक गया। वह उत्तेजना एकदम हवा हो गई, जो मालिक के कान खुजलाने पर कुत्ते में पैदा हो जाती है। बड़ी बैठक

---

*वह इतना दयालु है... (फ़्रेंच)

**मैं तुम्हारी सेवा में हाज़िर हूं। (फ़्रेंच)

में से लोगों की आवाज़ें आ रही थीं। कोई स्त्री कह रही थी–"jamais, jamais je ne croirais!!"* दूसरी ओर से किसी आदमी की आवाज़ आ रही थी, जो कोई वार्ता सुना रहा था जिसमें काउंटेस वोरोन्त्सोवा और विक्तोर अप्राक्सिन का नाम वार वार आ रहा था। किसी तीसरी ओर से बातों की भनभनाहट और हंसी की मिली-जुली आवाज़ें आ रही थीं। मास्लेन्निकोव एक कान से इन आवाज़ों को सुनने की कोशिश कर रहा था और दूसरे कान से नेख़्लूदोव की बात को।

"मैं फिर उसी औरत के बारे में तुमसे मिलने आया हूं," नेख़्लूदोव ने कहा।

"हां, हां, मैं जानता हूं। वही न, जो बेक़सूर है लेकिन उसे सज़ा दी गई है?"

"मैं चाहता हूं कि उसे जेल के अस्पताल में भेज दिया जाय। वहां पर वह कोई काम करे। मुझे मालूम हुआ है कि यह मुमकिन है।"

मास्लेन्निकोव होंठ भींच कर सोचने लगा।

"मुश्किल है," उसने कहा, "फिर भी मैं देखूंगा, जो बन पड़ा कर दूंगा। मैं कल तुम्हें इसका जवाब तार द्वारा भेज दूंगा।"

"मुझे मालूम हुआ है कि वहां बीमारों की संख्या काफ़ी ज़्यादा है और सहायता की ज़रूरत है।"

"अच्छी बात है, अच्छी बात है। मैं ज़रूर तुम्हें इत्तला करूंगा।"

"ज़रूर, बड़ी कृपा होगी," नेख़्लूदोव ने कहा।

बड़ी बैठक में से लोगों के हंसने की आवाज़ आई। उनमें से कोई कोई स्वाभाविक हंसी भी हंस रहे थे।

"यह सब उस विक्तोर के कारण है। जब तरंग में हो तो किसी को सामने टिकने नहीं देता," मास्लेन्निकोव बोला।

"दूसरी बात जो मैं तुमसे कहना चाहता था, वह यह थी," नेख़्लूदोव कह रहा था, "जेल में १३० आदमी महज़ इसलिए बन्द हैं कि उन्होंने अपने पासपोर्ट नये नहीं बनवाये। एक महीने से ज़्यादा अर्से से वे वहां पड़े हुए हैं।"

---

*कभी नहीं, कभी नहीं मान सकती! (फ़्रेंच)

ग्रौर उसने उनकी स्थिति का ब्योरा दिया।

"तुम्हें यह कैसे मालूम हुग्रा?" मास्लेन्निकोव ने पूछा। उसके चेहरे पर ग्रसन्तोष ग्रौर घबराहट नज़र ग्राने लगी।

"मैं एक क़ैदी को मिलने गया, ग्रौर इन लोगों ने बरामदे में मुझे घेर लिया ग्रौर मुझसे पूछने लगे..."

"तुम किस क़ैदी से मिलने गये थे?"

"एक किसान क़ैदी। वह भी निर्दोष है ग्रौर उसे भी जेल में रखा हुग्रा है। इसका मुक़द्दमा तो मैंने एक वकील को पैरवी करने के लिए दे दिया है। लेकिन सवाल यह नहीं है। मैं यह पूछना चाहता हूं कि क्या यह मुमकिन है कि जिन लोगों ने कोई जुर्म न किया हो, उन्हें महज़ इसलिए जेल में रखा जाय कि उन्होंने नये पासपोर्ट बनवाने में देर कर दी है? ग्रौर..."

"यह काम तो सरकारी वकील का है," ग़ुस्से से बात काटते हुए मास्लेन्निकोव ने कहा। "ग्रब देख लिया तुमने! तुम कहते थे कि इस ढंग से मुक़द्दमे किये जायं तो फ़ौरी फ़ैसला होता है ग्रौर इन्साफ़ से होता है। देख लिया नतीजा? यह फ़र्ज़ सरकारी वकील का है कि जेलख़ाने में जा कर जांच करे कि क़ैदियों को क़ानून के मुताबिक रखा जा रहा है या नहीं। लेकिन उन लोगों को ताश खेलने से फ़ुर्सत मिले, तब न! वे तो यही कुछ करते हैं।"

"क्या मैं यह समझूं कि तुम कुछ नहीं कर सकते?" नेख़्लूदोव ने निराशा से कहा। उसे वकील के शब्द याद हो ग्राये कि सहायक गवर्नर सरकारी वकील पर दोष मढ़ेगा।

"नहीं, मैं कुछ न कुछ करूंगा। मैं फ़ौरन् इसकी जांच करूंगा।"

"ग्रपना ही बुरा करेगी। C'est un souffre-douleur,"* बैठक में से किसी स्त्री की ग्रावाज़ ग्राई। प्रत्यक्षतः उसे इस बात की कोई परवाह नहीं थी कि वह क्या कहे जा रही है।

"ग्रौर भी ग्रच्छी बात है। मैं इसे भी ले लूंगा," दूसरी ग्रोर से एक ग्रादमी की ग्रावाज़ ग्राई। फिर किसी स्त्री की चंचल हंसी की ग्रावाज़ ग्राई। ऐसा जान पड़ता था जैसे ग्रादमी उससे कोई चीज़ छीनना चाहता हो ग्रौर वह रोक रही हो।

---

*यह दुखिया, (फ़्रेंच)

"नहीं नहीं, कभी नहीं," औरत कह रही थी।

"अच्छी बात है, मैं यह सब कर दूंगा," मास्लेन्निकोव ने कहा और अपनी सिगरेट बुझा दी जो उसने अपने गोरे-चिट्टे हाथ में पकड़ रखी थी, और जिसकी उंगली में फ़िरोज़े की अंगूठी चमक रही थी। "और अब चलो, स्त्रियां इन्तज़ार कर रही होंगी।"

"ज़रा ठहरो," बैठक के दरवाज़े पर रुकते हुए नेख़्लूदोव ने कहा, "मुझे किसी ने बताया कि कल जेलख़ाने में किसी क़ैदी को शारीरिक दण्ड दिया गया था। क्या यह ठीक है?"

मास्लेन्निकोव का चेहरा लाल हो गया।

"ओ, वह! नहीं mon cher, तुम्हें वहां जाने देना बहुत बड़ी भूल है। तुम हर बात का पता लगाना चाहते हो। आओ, आओ, चलें—आन्ना हमें बुला रही है," नेख़्लूदोव को बाज़ू से पकड़ते हुए मास्लेन्निकोव ने कहा। वह अब भी उसी तरह उत्तेजित हो उठा था जैसा कि प्रतिष्ठित मेहमान के साथ बातें करते वक़्त हुआ था, केवल फ़र्क़ यह था कि यह उत्तेजना ख़ुशी की नहीं थी, बल्कि घबराहट की थी।

नेख़्लूदोव ने ज़ोर से बाज़ू खींच लिया, और बिना किसी से विदा लिये या कुछ कहे बैठक को लांघता हुआ नीचे हॉल में चला गया। चोबदार लपक कर उसके पास आया, लेकिन नेख़्लूदोव सीधा उसके पास से हो कर बाहर के दरवाज़े तक जा पहुंचा। सारा वक़्त उसका चेहरा गंभीर बना हुआ था।

"इसे क्या हो गया है? तुमने उसे क्या कर दिया है?" आन्ना ने अपने पति से पूछा।

"यह तो बिल्कुल à la française* है," किसी ने टिप्पणी कसी।

"वाह, à la française नहीं, à la zoulou** है।"

"हां, वह सदा से ही ऐसा सनकी है।"

कोई उठ खड़ा हुआ, फिर उसकी जगह कोई दूसरा आ गया, और लोगों का चहकना उसी तरह जारी रहा। लोगों के लिए यही घटना

---

*फ़्रांसीसियों का अंदाज़ (फ़्रेंच)

**ज़ुलुओं का अंदाज़ (फ़्रेंच)

वार्तालाप का विषय बन गई, और जितनी देर तक पार्टी चलती रही, इसी की चर्चा होती रही।

दूसरे रोज़ नेख़्लूदोव को मास्लेन्निकोव का ख़त मिला। ख़त मोटे, चमकीले काग़ज़ पर सुन्दर, दृढ़ लिखावट में लिखा था। काग़ज़ के ऊपर राज-चिन्ह छपा था और लिफ़ाफ़े पर बाक़ाइदा मोहर लगी थी। उसमें लिखा था कि मैंने मास्लोवा के बारे में अस्पताल के डाक्टर को लिख दिया है, और आशा है तुम्हारी इच्छा के अनुसार कार्रवाई की जायेगी। नीचे लिखा था: बड़े प्यार से, तुम्हारा पुराना साथी, और दस्तख़त बड़े बड़े, दृढ़ और कलापूर्ण अक्षरों में, बड़ी शान के साथ किया गया था।

"गधा कहीं का!" बरबस नेख़्लूदोव के मुंह से निकल गया, विशेषकर "साथी" शब्द को पढ़ कर जिससे मास्लेन्निकोव की उसके प्रति कृपालुता का भास होता था। जो काम मास्लेन्निकोव कर रहा था, वह नैतिक दृष्टि से घृणित और लज्जाजनक था। फिर भी वह समझे बैठा था कि बहुत बड़ा आदमी है। और नेख़्लूदोव को यह दिखाना चाहता था कि देखो, इतना बड़ा आदमी होते हुए भी मैं तुम्हें साथी कह कर बुला रहा हूं।

५९

यह मिथ्या विश्वास बहुत प्रचलित है कि हर मनुष्य में कोई न कोई विशेष गुण होता है: किसी में दयालुता है, किसी में निर्दयता, कोई बुद्धिमान है तो कोई बेवक़ूफ़, कोई चुस्त है तो कोई सुस्त। लेकिन वास्तव में लोग ऐसे नहीं होते। हम यह कह सकते हैं कि एक मनुष्य का व्यवहार अधिकतर दयालुता का होता है, निर्दयता का कम, वह अधिकतर सूझ बूझ से काम लेता है, बेवक़ूफ़ियां कम करता है, अधिकतर चुस्त रहता है, सुस्त कम। या हम इसके उलट कह सकते हैं। लेकिन यह कहना ग़लत होगा कि एक आदमी दयालु या बुद्धिमान है, और दूसरा बुरा या मूर्ख है। लेकिन फिर भी हम लोगों को हमेशा इसी तरह श्रेणियों में बांटते रहते हैं। और यह सर्वथा असत्य है। मनुष्य तो नदियों के समान होते हैं। सभी नदियों में एक सा ही जल बहता है। लेकिन प्रत्येक नदी का

पाट किसी जगह पर तंग है, कहीं पर वह तेज़ बहने लगती है, कहीं पर सुस्त हो जाती है, कहीं अधिक चौड़ी, किसी जगह पर उसका पानी साफ़ है, तो किसी दूसरी जगह पर गंदला, कहीं ठण्डा तो कहीं पर गरम। यही स्थिति मनुष्यों की भी है। प्रत्येक मनुष्य में मानव स्वभाव के सभी गुण बीजरूप में मौजूद होते हैं। पर कभी एक गुण प्रकट होता है तो कभी दूसरा, कई बार उसका स्वभाव अपने सामान्य स्वभाव के प्रतिकूल हो उठता है, हालांकि मनुष्य वही रहता है। किसी किसी मनुष्य में यह स्वभाव-परिवर्तन चरम सीमा तक जा पहुंचता है। नेख़्लूदोव ऐसा ही मनुष्य था। उसमें ये परिवर्तन शारीरिक तथा मानसिक कारणों से हुआ करते थे। ऐसा ही एक परिवर्तन अब उसमें आया।

कात्यूशा के मुक़द्दमे तथा उससे पहली बार मिलने के उपरान्त नेख़्लूदोव को ऐसा भास हुआ था जैसे वह फिर से जी उठा है और उसका हृदय विजय और उल्लास से भर उठा था। लेकिन यह भावना अब बिल्कुल ख़त्म हो चुकी थी। आख़िरी बार जब वह उससे मिल कर आया तो ख़ुशी का स्थान भय और घृणा ने ले लिया था। वह अब भी इस निश्चय पर दृढ़ था कि वह उसे छोड़ेगा नहीं, और अगर वह मान गई तो उससे अवश्य विवाह करेगा, अपने इस फ़ैसले को बदलेगा नहीं। लेकिन इस पर अमल करना उसे बड़ा कठिन लग रहा था, और इस कारण उसका मन दुःखी रहता।

मास्लेन्निकोव से मिलने के बाद, दूसरे दिन वह फिर उसे मिलने जेलख़ाने में गया।

इन्स्पेक्टर ने उसे मिलने की इजाज़त तो दे दी लेकिन दफ़्तर में नहीं, न ही वकील के कमरे में, बल्कि औरतों के मुलाक़ाती कमरे में।

इन्स्पेक्टर मेहरबान था, लेकिन नेख़्लूदोव के प्रति पहले से कुछ खिंचा खिंचा सा था। जो वार्तालाप नेख़्लूदोव का मास्लेन्निकोव से हुआ था, उसके फलस्वरूप, जान पड़ता था कि इन्स्पेक्टर को अधिक सावधान रहने का हुक्म हुआ है।

"आप उसे मिल सकते हैं," इन्स्पेक्टर ने कहा, "लेकिन पैसे देने के बारे में मैंने आपसे जो कुछ कहा था, कृपया उसे नहीं भूलिये। और उसे अस्पताल में भेजने के बारे में जनाब गवर्नर साहब ने मुझे लिखा है। यह काम हो जायेगा। डाक्टर मान जायेगा। लेकिन वह ख़ुद वहां जाना

नहीं चाहती। वह कहती है 'और नहीं तो मैं उन गले-सड़े भिखमंगों को खाना खिलाऊं। मैं नहीं जाऊंगी।' प्रिंस, आप इन लोगों को नहीं जानते।"

नेख़लूदोव ने कोई जवाब नहीं दिया, केवल उससे मिलने का प्रवन्ध करने के लिए कहा। इन्स्पेक्टर ने एक वार्डर को भेजा, और नेख़लूदोव उसके पीछे पीछे स्त्रियों के मुलाक़ाती कमरे में दाख़िल हुआ। वहां केवल मास्लोवा, अकेली वैठी इन्तज़ार कर रही थी। चुपचाप, सहमी हुई सी, वह जाली के पीछे से आई और उसके ऐन पास आ कर खड़ी हो गई। फिर, विना उसकी ओर देखे कहने लगी—

"मुझे क्षमा करना, द्मीत्री इवानोविच, परसों मैं वहुत अण्ट-सण्ट वोलती रही।"

"मैं क्या क्षमा कर सकता हूं, मैं तो..." नेख़लूदोव ने कहना शुरू किया।

"पर जो भी हो, तुम मुझे छोड़ दो," उसने वात काटते हुए कहा और अपनी ऐंची आंखों से नेख़लूदोव की ओर देखा। नेख़लूदोव को लगा जैसे उनमें फिर वही पहले सा खिंचाव और क्रोध झलक रहा है।

"क्यों छोड़ क्यों दूं?"

"तुम्हें छोड़ना होगा।"

"परन्तु क्यों?"

मास्लोवा ने फिर नेख़लूदोव की ओर देखा। नेख़लूदोव को उसकी नज़र में फिर उसी क्रोध का भास हुआ।

"वस यही वात है," उसने कहा, "तुम्हें ज़रूर छोड़ना होगा। मैं जो कुछ कह रही हूं विल्कुल ठीक है। मैं यह नहीं कर सकती। तुम यह सव छोड़ दो।" उसके होंठ कांपने लगे और वह क्षण भर के लिए चुप हो गई। "मैं ठीक कहती हूं। मैं मर जाऊंगी लेकिन यह नहीं करूंगी।"

मास्लोवा के इन्कार करने में नेख़लूदोव को घृणा और क्रोध का भास हुआ। वह उसे क्षमा नहीं करना चाहती जान पड़ती थी। लेकिन इसके साथ ही और भी कुछ था, कोई अच्छी और महत्वपूर्ण वात भी थी। पहले भी उसने इन्कार किया था। आज वह उसी इन्कार को दोहरा रही थी, लेकिन वड़ी स्थिरता के साथ। इससे नेख़लूदोव के हृदय में जितनी भी शंकाएं उठ रही थीं, सव शान्त हो गईं, और फिर से उसमें उस

गंभीर विजय भावना का संचार होने लगा जो कात्यूशा के सम्वन्ध में पहले उसके हृदय में उठी थी।

"कात्यूशा, मैंने जो कुछ तुम्हें कहा था, अब फिर कहूंगा," उसने बड़ी गंभीरता से कहा, "मुझसे शादी कर लो। अगर तुम नहीं चाहती हो, तो मैं उस वक़्त तक तुम्हारा साथ नहीं छोड़ूंगा, जहां जाओगी, वहीं तुम्हारे पीछे पीछे जाऊंगा जब तक कि तुम अपना इरादा बदल नहीं लेती हो।"

"यह तुम्हारा काम है। मैं और कुछ नहीं कहूंगी," मास्लोवा ने जवाब दिया और उसके होंठ फिर कांपने लगे।

नेख़्लूदोव भी चुप हो गया, उसके भी कहे कुछ नहीं कहा गया। जब उसका मन कुछ स्थिर हुआ तो बोला—

"अब मैं देहात में जाऊंगा, और उसके बाद पीटर्सबर्ग में। मैं पूरी पूरी कोशिश करूंगा कि तुम्हारे मुक़द्दमे पर... मेरा मतलब है हमारे मुक़द्दमे पर फिर विचार हो और भगवान् ने चाहा तो सज़ा मंसूख़ हो जायेगी।"

"अगर मंसूख़ नहीं हुई, तो तुम चिन्ता नहीं करना। मुझे अपने किये का फल मिल रहा है। इस वारदात में न सही, और कई बातों में," मास्लोवा ने कहा। नेख़्लूदोव ने देखा कि मास्लोवा के लिए अपने आंसू रोकना बेहद कठिन हो रहा है। "क्या मेन्शोव से मिले थे?" अपने आंसू छिपाने की चेष्टा करते हुए उसने झट से कहा, "वे निर्दोष हैं, क्यों, ठीक है न?"

"हां, मेरे ख़्याल में वे निर्दोष हैं।"

"वह बुढ़िया कितनी अच्छी है!"

जो जो बात नेख़्लूदोव को मेन्शोव के बारे में पता चली थी, उसने कह सुनाई और फिर पूछा कि उसे किसी चीज़ की जरूरत तो नहीं। मास्लोवा ने सिर हिला दिया।

दोनों फिर चुप हो गये।

"और, अस्पताल के बारे में," अपनी ऐंची आंखों से नेख़्लूदोव की ओर देखते हुए सहसा मास्लोवा बोली, "अगर तुम चाहते हो तो मैं वहां चली जाऊंगी। और अब से शराब भी नहीं पियूंगी।"

नेख़्लूदोव ने उसकी आंखों की ओर देखा। वे मुस्करा रही थीं।

"वड़ी अच्छी बात है," यही शब्द वह कह पाया, और फिर विदा ले कर वहां से चला आया।

"हां, हां, वह सचमुच बदल गई है," नेख़्लूदोव सोच रहा था। उसका मन पहले संशयों से घिरा रहता था। लेकिन जो भावना अब उसके मन में उठ रही थी, उसका अनुभव उसे पहले कभी नहीं हुआ था—उसे विश्वास हो रहा था कि प्रेम सचमुच अजेय है।

इस भेंट के बाद मास्लोवा अपनी बदबूदार कोठरी में लौट गई। उसने अपना लबादा उतारा और दोनों हाथ अपनी गोद में रखे तख़्ते पर बैठ गई। उस वक़्त कोठरी में केवल तपेदिक़ की बीमार स्त्री, जो व्लादीमिर से आई थी, उसका बच्चा, मेन्शोव की बुढ़िया मां, तथा चौकीदारिन और उसके बच्चे ही थे। पादरी की बेटी को परसों यहां से अस्पताल में ले गये थे। डाक्टरों ने कहा था कि उसका दिमाग़ ख़राब हो गया है। बाक़ी औरतें कपड़े धोने के लिए गई हुई थीं। बुढ़िया सो रही थी, कोठरी का दरवाज़ा खुला था और चौकीदारिन के बच्चे बाहर बरामदे में खेल रहे थे। दोनों स्त्रियां—व्लादीमिर वाली स्त्री, अपने बच्चे को उठाये हुए, और चौकीदारिन दोनों मास्लोवा के पास आ गयीं। चौकीदारिन ने हाथ में मोज़ा उठा रखा था जो वह अपनी चपल उंगलियों से बुनती जा रही थी।

"बात कर आई हो?" उन्होंने पूछा।

मास्लोवा चुपचाप ऊंचे तख़्ते पर बैठी रही, और टांगें झुलाती रही। तख़्ता इतना ऊंचा था कि उसके पैर ज़मीन पर नहीं लगते थे।

"रोने-बिसूरने से क्या होगा?" चौकीदारिन बोली, "सबसे ज़रूरी यह बात है कि मन पक्का रखो। ए कात्यूशा, क्यों दुखी होती है?" अपनी उंगलियां तेज़ तेज़ चलाते हुए वह बोली।

मास्लोवा ने कोई जवाब नहीं दिया।

"हमारी कोठरी की सब औरतें कपड़े धोने गयी हैं," व्लादीमिर वाली स्त्री बोली, "कह रही थीं कि आज बहुत ख़ैरात आई है। बहुत सी चीज़ें आयी हैं।"

"फ़िनाश्का!" चौकीदारिन ने पुकार कर कहा, "कहां गया कलमुंहा?"

उसने एक सिलाई ले कर ऊन के गोले और मोज़े दोनों में खुभोई और बाहर बरामदे में चली गई।

इसी वक़्त बरामदे में औरतों के बातें करने की आवाज़ें आने लगीं और स्त्रियां अपनी कोठरी में दाख़िल हुईं। सभी ने पांवों में जेलख़ाने के जूते पहन रखे थे, लेकिन मोज़े नहीं पहने हुए थे। हरेक के हाथ में पावरोटी थी। किसी किसी के हाथ में दो भी थीं। फ़ेदोस्या सीधी मास्लोवा के पास आ गई।

"क्या है? क्या कोई बुरी बात हुई है?" अपनी स्वच्छ नीली आंखों से, बड़ी स्नेहभरी दृष्टि से मास्लोवा की ओर देखते हुए उसने पूछा। "ये हमारी चाय के लिए हैं," और उसने पावरोटियां ऊपर तख़्ते पर रख दीं।

"क्यों, वह शादी करने को कहता था, उसने अपना मन तो नहीं बदल लिया?" कोराब्ल्योवा ने पूछा।

"नहीं, उसने तो नहीं बदला, मगर मैं नहीं चाहती," मास्लोवा बोली, "और मैंने उसे कह भी दिया है।"

"है ना बेवक़ूफ़," कोराब्ल्योवा अपनी गहरी आवाज़ में बड़बड़ाई।

"अगर एकसाथ रहना नहीं हो तो शादी करने का क्या फ़ायदा है?" फ़ेदोस्या बोली।

"तुम्हारा पति तो तुम्हारे साथ जा रहा है न?" चौकीदारिन ने कहा।

"हमारी बात दूसरी है, हमारी तो पहले से शादी हो चुकी थी," फ़ेदोस्या बोली, "अगर उसे इसके साथ रहना नहीं है, तो शादी की रस्म करने का क्या लाभ?"

"वाह, क्या लाभ? पागलों की सी बातें मत करो। तुम तो जानती हो, अगर उसने शादी कर ली तो यह धन से खेलेगी," कोराब्ल्योवा बोली।

"वह कहता है 'ये लोग जहां कहीं भी तुम्हें ले गये, मैं तुम्हारे पीछे पीछे आऊंगा,'" मास्लोवा ने कहा, "अगर उसने ऐसा किया तो

भी अच्छा है, जो नहीं किया, तो भी अच्छा है। मैं उसे कहूंगी नहीं। अब वह पीटर्सबर्ग में जा कर इस मामले के बारे में कोशिश करेगा। वहां के सब मन्त्री उसके रिश्तेदार हैं। पर फिर भी, मुझे उसकी कोई जरूरत नहीं है," वह कहती गई।

"ठीक है," कोराब्ल्योवा ने सहसा सहमति प्रकट की। ज़ाहिर है उसका ध्यान किसी दूसरी तरफ़ था। वह अपने बैग में रखी चीज़ों की जांच-पड़ताल कर रही थी। "तो कहो, एक एक घूंट हो जाय?"

"तुम पियो, मैं नहीं पियूंगी," मास्लोवा ने जवाब दिया।

पहला भाग समाप्त

दूसरा भाग

१

लगभग दो हफ़्ते के बाद मास्लोवा का मुक़द्दमा सेनेट के सामने पेश होगा, ऐसी संभावना थी। नेख़्लूदोव को उस समय पीटर्सबर्ग में मौजूद होना था। और अगर सेनेट ने अपील रद्द कर दी तो ज़ार के सामने दरख़्वास्त करनी होगी जैसा कि वकील ने कहा था। उसी ने दरख़्वास्त भी तैयार की थी। वकील का कहना था कि यह दरख़्वास्त देने के लिए तैयार रहना चाहिए, क्योंकि अपील के तर्क बहुत कमज़ोर हैं। क़ैदियों के जिस दल के साथ मास्लोवा को साइबेरिया भेजा जायेगा वह शायद जून महीने के शुरू में चल दे और चूंकि नेख़्लूदोव ने उसके पीछे पीछे साइबेरिया जाने का पक्का निश्चय कर लिया था, उस सूरत में यह ज़रूरी था कि वह अब अपनी ज़मीन-जायदाद पर जाय, और वहां पर आवश्यक बातों का निबटारा करे।

सबसे पहले नेख़्लूदोव अपनी पास ही की काली मिट्टी वाली जागीर कुज़्मिंस्कोये गया। अपनी आमदनी का अधिकांश भाग उसे इसी जागीर से प्राप्त होता था। अपने बचपन और जवानी के दिनों में नेख़्लूदोव कई बार वहां गया था। उसके बाद भी दो बार जा चुका था। एक बार तो मां के कहने पर वह एक जर्मन कारिंदे को साथ ले कर गया था और वहां का हिसाब-किताब किया था। इसलिए वहां की स्थिति से भली भांति परिचित था, तथा साथ ही किसानों के प्रवन्धक के साथ (अर्थात् मालिक के साथ) सम्बन्धों को भी अच्छी तरह जानता था। मालिक-किसान सम्बन्धों की व्याख्या यदि शिष्ट रूप में करें तो हम कहेंगे कि किसान मालिक पर पूर्णतया आश्रित थे, और यदि अशिष्ट रूप में करें तो कहेंगे कि वे इस प्रवन्ध के ग़ुलाम थे। यह वह ज़िन्दा ग़ुलामी नहीं थी जिसे १८६१

में ख़त्म कर दिया गया था। इसमें, समूचे तौर पर, सभी किसान जिनके पास या तो ज़मीन थी ही नहीं या बहुत कम थी सभी वड़े वड़े ज़मींदारों के ग़ुलाम थे, या व्यक्तिगत तौर पर उन वड़े वड़े ज़मींदारों के ग़ुलाम थे, जिनके बीच वे रहते थे। नेख़्लूदोव इसे जानता था, यह जाने बिना वह रह भी नहीं सकता था, क्योंकि उसकी ज़मीन-जायदाद का प्रवन्ध ऐसी ही ग़ुलामी पर निर्भर था। वह स्वयं इस प्रवंध को वनाये हुए था। इतना ही नहीं, वह यह भी जानता था कि यह प्रवन्ध-प्रणाली निर्दयी ग्रौर ग्रन्यायपूर्ण है। यह वह उस समय से जानता था जब वह विश्वविद्यालय का छात्र था ग्रौर हैनरी जार्ज के सिद्धान्तों को मान कर उनका प्रचार किया करता था। उन्हीं सिद्धान्तों के ग्राधार पर उसने ग्रपनी वह ज़मीन किसानों में वांट दी थी जो उसे ग्रपने पिता की ग्रोर से विरासत में मिली थी क्योंकि वह भू-स्वामित्व को ग्राजकल वैसा ही पाप समझता था, जैसा कि पचास साल पहले भू-दासों पर स्वामित्व था। हां, यह ज़रूर सच है कि फ़ौज में नौकरी करने के वाद, जहां उसे एक साल में वीस हज़ार रूवल ख़र्च कर देने की ग्रादत पड़ गई थी, वह ग्रपने को उन पहले सिद्धान्तों से वाध्य नहीं समझता था, वे उसे भूल तक गये थे। ग्रौर उसने न केवल यह पूछना छोड़ दिया था कि जो रुपया उसे मां भेजती है, वह कहां से ग्राता है, वल्कि इस वारे में सोचना तक छोड़ दिया था। पर मां की मृत्यु हो जाने से, तथा ग्रपनी विरासत की ज़मीन-जायदाद पर ग्रधिकार ग्रहण करने ग्रौर उसका प्रवंध हाथ में लेने की ग्रावश्यकता उठने पर यह सवाल उसके सामने फिर उठ खड़ा हुग्रा था कि भूमि के निजी स्वामित्व के प्रति उसकी स्थिति क्या है। महीना भर पहले यदि नेख़्लूदोव से पूछा जाता तो वह जवाव देता कि मौजूदा व्यवस्था को वदलना उसके वस की वात नहीं, वह स्वयं ग्रपनी ज़मीन-जायदाद का प्रवन्ध नहीं कर रहा है। ग्रौर वह ख़ुद ज़मीन-जायदाद से दूर रह कर, ज़रूरत के रुपये वहां से मंगवाता रहता ग्रौर इस तरह उसका जमीर साफ़ वना रहता। परन्तु ग्रव वावजूद इसके कि नेख़्लूदोव को निकट भविष्य में साइवेरिया जाना था, जहां जेलों की दुनिया के साथ कठिन ग्रौर पेचीदा संवंधों से उसका सावका पड़ेगा ग्रौर ज़हां पैसों की ज़रूरत होगी उसने निश्चय कर लिया था कि वह मौजूदा व्यवस्था को यों नहीं छोड़ सकता वल्कि उसे नुक़सान उठा कर भी इसको वदलना होगा। इसके लिए उसने निश्चय

किया कि वह ज़मीन की ख़ुद काश्त तो नहीं करवायेगा बल्कि उसे मामूली लगान पर किसानों को दे देगा और इस तरह उन्हें ज़मींदार पर निर्भर हुए बिना ज़मीन की काश्त करते रहने का अवसर देगा। कई बार ज़मींदारों की स्थिति की तुलना भू-दासों के स्वामियों से करते हुए नेख़्लूदोव ने यह सोचा था कि उनके द्वारा किसानों को ज़मीन लगान पर दे देना वैसा ही है जैसा कि किसी ज़माने में भू-दासों के स्वामियों द्वारा अपने दासों से बेगार पर काम लेने की जगह उन्हें उन्मोचन भाटक पर खेती करने देना था। इससे समस्या का समाधान तो नहीं हो जाता, लेकिन उसे हम समाधान की ओर एक क़दम ज़रूर कह सकते हैं। यह ग़ुलामी की बर्बरता को कम करने में सहायक है। और इसी के अनुसार अब वह आचरण भी करना चाहता था।

नेख़्लूदोव लगभग दोपहर के समय कुज़्मिंस्कोये पहुंचा। वह अपने जीवन को हर तरह से सादा बनाने की कोशिश कर रहा था, इसलिए उसने पहले तार नहीं दी और स्टेशन से भी दो घोड़ों वाले एक छकड़े में बैठ कर चला। गाड़ीवान–नौजवान छोकरा मोटे सूती कपड़े का कोट पहने था, जिसे उसने लम्बी सी कमर के नीचे पेटी से कस रखा था। गाड़ीवान को साहब के साथ बातें करने में मज़ा आ रहा था, विशेषकर इसलिए भी कि इस तरह उसका लंगड़ा सफ़ेद मरियल बिचला घोड़ा और बग़ल वाला दुबला-पतला थका-हारा घोड़ा–दोनों धीमी चाल से चल सकते थे, और उन्हें इसी चाल से चलना पसन्द भी था।

गाड़ीवान कुज़्मिंस्कोये जागीर के कारिन्दे के बारे में बातें करने लगा। उसे मालूम नहीं था कि जागीर का मालिक उसके छकड़े में बैठा है। नेख़्लूदोव ने जान बूझ कर उसे अपने बारे में नहीं बताया था।

गाड़ीवान अपनी सीट पर तिरछा हो कर बैठ गया, अपनी लम्बी चाबुक पर ऊपर से नीचे तक हाथ फेरा और अपनी योग्यता दिखाने की कोशिश करते हुए (वह शहर हो आया था और कुछेक उपन्यास पढ़ चुका था) बोला–

"वह जर्मन बड़ा दिखावटी आदमी है! कहीं से तीन जवान, मुश्की घोड़े ले आया है। जब वह अपनी औरत को बग़ल में बैठाल कर सवारी को निकलता है, तो बाप रे, देखते बनता है! बड़े दिन पर उसने ज़मींदार की कोठी में क्रिसमस का पेड़ खड़ा किया। मैं कुछ मेहमानों को गाड़ी

में विठला कर वहां ले गया था। पेड़ में विजली के कुमकुमे चमक रहे थे! सारे इलाक़े में आपको ऐसी सजावट कहीं देखने को नहीं मिलेगी। मालिक के रुपये मार मार के उसने वहुत सा धन बटोर लिया है। और वटोरे भी क्यों नहीं? उसे रोकने वाला तो कोई है ही नहीं। सुनते हैं उसने एक बहुत वढ़िया जागीर मोल ले ली है।

नेख़्लूदोव समझता था कि उसे इस वात की कोई परवाह नहीं कि कारिन्दा उसकी ज़मीन-जायदाद का कैसा प्रवन्ध करता है, और उसमें से अपने लिए क्या क्या लाभ निकालता है। फिर भी जो वातें इस लम्बी कमर वाले लड़के ने कहीं, उसे अप्रिय लगीं।

दिन वड़ा सुहावना था, उसे वहुत प्यारा लग रहा था। किसी किसी वक़्त गहरे, अन्धियारे वादलों की टुकड़ियां सूरज को ढक लेतीं। खेतों में किसान, चारों ओर ताज़ा जई की गुड़ाई कर रहे थे। मैदानों पर हरियावल विछी थी और उनके ऊपर लार्क पक्षी पंख फैलाये उड़ रहे थे। वलूत के कुछेक पेड़ों को छोड़ कर सभी पेड़ नये पत्तों की ओढ़नी ओढ़े हुए थे। चरागाहों में जगह जगह ढोर और घोड़े चर रहे थे। दूर दूर तक खेतों में जोताई हो चुकी थी। समूचा दृश्य वहुत सुन्दर था, फिर भी किसी किसी वक़्त उसे ऐसा भास होता जैसे कहीं कोई अप्रिय वात हुई है। जव वह मन ही मन पूछता कि यह अप्रिय वात क्या हो सकती है तो उसे गाड़ीवान की वार्ता याद हो आती, जो उसने कुज़्मिंस्कोये की ज़मीन के वारे में की थी कि जर्मन उसका कैसे प्रवन्ध कर रहा है।

लेकिन जव वह अपने ठिकाने पर पहुंच गया और काम में जुट गया तो यह अप्रिय भावना जाती रही।

नेख़्लूदोव ने हिसाव देखा। कारिन्दे से वातें कीं। कारिन्दे ने वड़ी सरलता से उसे समझाना शुरू किया कि किसानों के पास अपनी ज़मीन वहुत कम है, जो है भी तो वह ज़मींदार की ज़मीनों के वीच में है। इससे ज़मींदार को वहुत फ़ायदा है। इन वातों से नेख़्लूदोव का निश्चय और भी पक्का हो गया कि वह खेतीवारी छोड़ देगा और ज़मीन किसानों को लगान पर दे देगा।

दफ़्तर में रखे वही-खाते और कारिन्दे की वातों से नेख़्लूदोव को पता चला कि सवसे अच्छी ज़मीन के दो तिहाई भाग पर वढ़िया औज़ारों द्वारा मज़दूरों से काश्त करवाई जाती है, और मज़दूरों को निश्चित पगार

दी जाती है। बाक़ी एक तिहाई ज़मीन की जोताई किसान करते हैं और उन्हें पांच रूबल फ़ी देस्यातीना के हिसाब से पैसे मिलते हैं। इसका मतलब यह है कि किसान प्रत्येक देस्यातीना पर तीन बार हल चलाते हैं, तीन बार उस पर हेंगी करते हैं, अनाज बोते और काटते हैं, उसके गट्ठर बना कर अनाज साफ़ करने वाले स्थान तक पहुंचाते हैं, और इस सब काम के लिए उन्हें पांच रूबल मिलते हैं। यही काम अगर मज़दूरों द्वारा पगार दे कर करवाया जाय तो इसके लिए कम से कम दस रूबल देने पड़ेंगे। किसान जो कुछ भी ज़मींदारी में से उठाते हैं उसके लिए उन्हें श्रम के रूप में बहुत अधिक मूल्य चुकाना पड़ता है। अपने ढोर चराने का, लकड़ी का, आलुओं के डंठल-पत्तों का—इन सब चीज़ों का मूल्य उन्हें कड़े श्रम द्वारा चुकाना पड़ता है। इस तरह अगर हिसाब लगा कर देखा जाय तो काश्त शुदा ज़मीनों से परे जो ज़मीनें किसानों को लगान पर दी गई हैं, अगर उनके मूल्य की रक़म पांच प्रतिशत ब्याज पर लगायी जाय तो जो आमदनी उससे होगी, उससे चार गुना ज्यादा आमदनी ज़मींदार किसानों से वसूल कर लेता है।

नेख़्लूदोव यह सब पहले से जानता था, लेकिन ये बातें अब उसे एक नयी रोशनी में नज़र आने लगी थीं। वह इस बात पर हैरान हो रहा था कि उसे और उस जैसे अन्य ज़मींदारों को इस स्थिति की अस्वाभाविकता का बोध क्यों नहीं होता। कारिन्दे का यह तर्क था कि अगर ज़मीनें लगान पर चढ़ा दी गई तो खेतीबारी के औज़ारों से कुछ भी प्राप्त नहीं होगा, उनकी क़ीमत का एक चौथाई भी वसूल नहीं होगा; किसान ज़मीन ख़राब कर देंगे और नेख़्लूदोव का बड़ा नुक़सान होगा। ये तर्क सुन कर नेख़्लूदोव का विश्वास और भी दृढ़ हो रहा था कि ज़मीन किसानों को लगान पर दे कर और इस तरह अपनी आय के बहुत बड़े भाग से वंचित रह कर वह बहुत ही शुभ काम कर रहा है। उसने निश्चय कर लिया कि इस बात का निबटारा अभी वह अपनी मौजूदगी में कर के जायेगा। बाक़ी काम—अनाज की कटाई, बिक्री, खेतीबारी के औज़ारों का बेचना, अनुपयोगी मकानों का बेचना इत्यादि—वक़्त आने पर कारिन्दा ख़ुद करता रहेगा। परन्तु इस समय उसने कारिन्दे को उन तीन गांवों के किसानों की मीटिंग बुलाने को कहा जो कुज़्मिंस्कोये ज़मींदारी

से घिरे थे। इस मीटिंग में वह अपना इरादा साफ़ कर देना चाहता था और लगान की शर्तों का फ़ैसला कर देना चाहता था।

जब नेख़्लूदोव दफ़्तर में से निकल कर बाहर आया तो वह मन ही मन ख़ुश था। कारिन्दे के तर्कों के सामने वह दृढ़ रहा था और स्वयं नुक़सान उठाने के लिए तत्पर था। अपने अगले काम के बारे में सोचते हुए वह घर के आस-पास टहलने लगा। फूलों की क्यारियां उपेक्षित पड़ी थीं—अब की फूल कारिंदे के घर के सामने लगाये गये थे। टेनिस के मैदान में चिकोरी उग आई थी। इनके पास से टहलते हुए वह उस रास्ते पर जाने लगा जिसके दोनों ओर लाइम-वृक्ष लगे थे। किसी ज़माने में वह यहां पर सिगार पीने आया करता था। यहीं पर वह किरिमोवा से चुहलें किया करता था। किरिमोवा एक बड़ी सुन्दर युवती थी जो उसकी मां से मिलने आया करती थी। मन ही मन उसने संक्षेप रूप में अपना भाषण तैयार कर लिया जो वह दूसरे रोज़ किसानों के सामने देना चाहता था। इसके बाद वह कारिन्दे के पास गया और चाय पीते समय उसके साथ एक बार फिर इस बात पर विचार-विमर्श किया कि कैसे ज़मीन-जायदाद किसानों को दी जाय और इस ओर से बिल्कुल शांत हो कर अपने कमरे में आराम करने के लिए चला गया। यह कमरा बड़ी कोठी में उसके लिए तैयार किया गया था। पहले इस कमरे को एक फ़ालतू सोने वाले कमरे के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।

कमरा छोटा सा और साफ़-सुथरा था। दीवारों पर वेनिस नगर के चित्र टंगे थे। दो खिड़कियों के बीच, दीवार पर आईना लटक रहा था। बिस्तर बड़ा साफ़ था और उस पर कमानीदार गद्दा बिछा था। पलंग के पास ही एक छोटी सी मेज़ पर पानी की सुराही, दियासलाई और मोमबत्ती बुझाने वाला उपकरण रखा था। आईने के नीचे एक मेज़ पर उसका बैग खुला पड़ा था। उसमें उसका साबुन-तेल का डिब्बा और कुछेक किताबें रखी थीं। किताबों में से एक किताब रूसी भाषा में थी: 'ज़ाब्ता फ़ौजदारी की जांच'। इसके अलावा एक किताब जर्मन भाषा में और एक अंग्रेज़ी में थी। इन किताबों का भी विषय वही था। इन्हें वह देहात में सफ़र करते वक़्त पढ़ने के लिए ले आया था। लेकिन आज पढ़ना संभव नहीं था, बहुत देर हो गई थी। इसलिए वह सोने की तैयारी करने लगा ताकि सुबह जल्दी उठ कर किसानों से भेंट करने के लिए तैयार हो सके।

कमरे के एक कोने में एक आराम-कुर्सी रखी थी। पुराने ढंग की; महागोनी की बनी कुर्सी थी, जिस पर पच्चीकारी का काम किया हुआ था। नेख़्लूदोव को याद आ गया कि यही कुर्सी मां के सोने वाले कमरे में रखी रहती थी। यह याद आने की देर थी कि उसके हृदय में एक ऐसी भावना जाग उठी जिसकी उसे तनिक भी आशा न थी। वह सोचने लगा कि यह घर खण्डहर बन जायेगा, बाग़ में झाड़-झंखाड़ उगने लगेंगे, जंगल काट डाला जायेगा, ये सब चौपाल, अस्तबल, छप्पर, यन्त्र; घोड़े, गौएं उपेक्षित पड़े रह जायेंगे जिन्हें जुटाने में और जिनकी सार-संभाल करने में इतनी मेहनत करनी पड़ी थी – भले ही यह मेहनत नेख़्लूदोव को नहीं करनी पड़ी हो। उसका हृदय अनुताप से भर उठा। इन सब चीज़ों को छोड़ देना पहले आसान लगता था, लेकिन अब मुश्किल हो रहा था। न केवल इन्हें त्यागना ही, बल्कि ज़मीन का लगान पर चढ़ा देना भी, क्योंकि उससे आमदनी आधी रह जायेगी। सहसा एक दूसरे तर्क ने इस भावना की पुष्टि की। किसानों को ज़मीन देने से उसकी सारी जागीर नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगी, ऐसा करना सर्वथा अनुचित होगा।

"ज़मीन का स्वामी बन कर मुझे नहीं रहना चाहिए। लेकिन अगर यह स्वामित्व न रहा तो इस सारी जायदाद को भी मैं संभाल नहीं सकता। इसके अलावा साइबेरिया जाना है, मुझे न घर की ज़रूरत होगी न ज़मीन की," उसके अन्दर एक आवाज़ उठती। पर जवाब में दूसरी आवाज़ कहती – "यह सब ठीक है, लेकिन साइबेरिया में तुम सारी ज़िन्दगी तो नहीं बैठे रहोगे। संभव है तुम शादी क ो, तुम्हारे बच्चे हों, तुम्हारा फ़र्ज़ हो जाता है कि यह जायदाद उतनी ही अच्छी हालत में तुम उनके सुपुर्द करो जितनी अच्छी हालत में तुम्हें स्वयं प्राप्त हुई थी। ज़मीन के प्रति भी तुम्हारा वैसा ही कर्तव्य है। इसे छोड़ देना, हर चीज़ को नष्ट-भ्रष्ट कर देना आसान है, लेकिन फिर बनाना बहुत मुश्किल होगा। सबसे ज़रूरी बात यह है कि तुम अपने भविष्य के बारे में सोचो, कि तुम क्या करोगे, और उसी के अनुसार ज़मीन-जायदाद का निबटारा करो। फिर यह तो बताओ, क्या तुम यह त्याग सचमुच अपनी अन्तरात्मा के आदेश का पालन करते हुए कर रहे हो, या महज़ दिखावा करने के लिए?" नेख़्लूदोव ने मन ही मन अपने से ये सब सवाल किये। उसे स्वीकार करना पड़ा कि उस पर इस विचार का ज़रूर असर हुआ था कि लोग उसके

बारे में क्या कहेंगे। जितना अधिक वह इन प्रश्नों के बारे में सोचता, उतनी ही अधिक संख्या में प्रश्न उसके मन में उठते, और उतने ही अधिक वे असाध्य जान पड़ते।

वह अपने साफ़-सुथरे बिस्तर पर लेट गया और सोने की कोशिश करने लगा। सो जाऊंगा तो ये विचार परेशान नहीं करेंगे। सुबह के वक़्त दिमाग़ साफ़ होता है, उस वक़्त इन समस्याओं को सुलझाऊंगा। लेकिन फिर भी उसे बड़ी देर तक नींद नहीं आयी। कमरे में ताज़ा हवा के झोंके आ रहे थे और चांद की चांदनी छन छन कर आ रही थी। बाहर मेंढक टर्रा रहे थे। उनकी आवाज़ दो बुलबुलों की आवाज़ से मिल कर सुनाई पड़ रही थी, एक बुलबुल बाग़ में और दूसरी खिड़की के पास लिलक की फूलों से लदी झाड़ी में बैठी गा रही थी। बुलबुलों और मेंढकों की आवाज़ों को सुनते हुए नेख़्लूदोव को सहसा इन्स्पेक्टर की बेटी का संगीत याद हो आया और फिर स्वयं इन्स्पेक्टर भी। उससे उसे मास्लोवा की याद आयी। मास्लोवा ने जब कहा था—"तुम्हें यह सब बिल्कुल छोड़ देना होगा," तो उसके होंठ किस तरह कांप रहे थे बिल्कुल उसी तरह जिस तरह ये मेंढक टर्रा रहे हैं। फिर जर्मन कारिन्दा मेंढकों के पास जाने लगा। उसे ज़बरदस्ती पीछे हटाया गया। लेकिन वह नहीं रुका, बल्कि मास्लोवा में बदल गया और मास्लोवा धिक्कारने लगी—"तुम प्रिंस हो, मैं मुजरिम हूं।" "नहीं, मैं हार कभी नहीं मानूंगा," नेख़्लूदोव ने सोचा, फिर जाग कर अपने से पूछा—"मैं जो कुछ कर रहा हूं क्या यह ठीक है या ग़लत? मैं नहीं जानता। और मुझे इसकी कोई परवाह नहीं है। कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। मुझे सो जाना चाहिए।" और जिस ओर उसने कारिन्दे और मास्लोवा को नीचे उतरते देखा था, उसी ओर वह स्वयं भी उतरने लगा। वहीं पर यह सब ख़त्म हो गया।

२

दूसरे दिन सुबह नौ बजे नेख़्लूदोव की नींद टूटी। उसकी टहल-सेवा का काम एक युवक कर रहा था जो दफ़्तर में क्लर्क था। ज्यों ही उसने देखा कि मालिक बिस्तर पर हिल-डुल रहे हैं, तो वह उनके बूट ले आया।

बूट ऐसे चमक रहे थे जैसे पहले कभी नहीं चमके थे। साथ ही मुंह-हाथ धोने के लिए चश्मे का स्वच्छ ठण्डा जल भी लाया। और मालिक से कहा कि किसान अभी से जमा होने लगे हैं। नेख़्लूदोव उठ कर खड़ा हो गया और स्थिरता से सोचने लगा। जो अनुताप उसे कल यह सोच कर होने लगा था कि अपनी ज़मीन-जायदाद दे कर वह उसे नष्ट-भ्रष्ट कर रहा है उसका लेशमात्र भी इस समय नहीं था। इस अनुताप को याद कर के वह हैरान हुआ। इस समय जो काम उसके सामने था, उसके बारे में सोचते हुए उसके हृदय में उल्लास था, और अनजाने में ही उसे गर्व का भास होने लगा था।

खिड़की में से उसे टेनिस खेलने का मैदान नज़र आ रहा था जिस पर चिकरी उग रही थी। वहीं पर किसान इकट्ठे हो रहे थे। पिछली रात जो मेंढक टर्राते रहे थे तो किसी कारण ही। आज दिन साफ़ नहीं था, बादल छाये थे। हवा बन्द थी। सुबह सवेरे ही हल्की हल्की, स्निग्ध सी बूंदाबांदी होने लगी थी, और बारिश की बूंदें पेड़ों की शाख़ों और पत्तों और घास पर लटक रही थीं। खिड़की में से ताज़ा हरियाली, और भीगी धरती की गन्ध आ रही थी। जान पड़ता जैसे धरती और बारिश मांग रही है।

कपड़े पहनते हुए नेख़्लूदोव ने कई बार किसानों की ओर देखा जो टेनिस के मैदान पर जमा हो रहे थे। एक एक कर के वे आ रहे थे। एक किसान आता, सिर पर से टोपी उतार कर, झुक कर सब का अभिवादन करता, अपनी जगह पर जा खड़ा होता। सभी लोग एक दायरे की शक्ल में खड़े हो रहे थे, और अपनी अपनी लाठी की टेक ले कर खड़े बातें कर रहे थे। कारिन्दा अन्दर आया और बोला कि सभी किसान पहुंच गये हैं लेकिन आप पहले नाश्ता कर लीजिये, चाय और कॉफ़ी दोनों हाज़िर हैं, इतनी देर तक किसान इन्तज़ार कर सकते हैं। कारिन्दा हृष्ट-पुष्ट, गठे हुए बदन का युवक था। उसने एक छोटी सी जाकेट पहन रखी थी जिस पर बड़े बड़े बटन लगे थे और हरे रंग का खड़ा सा कॉलर था।

"नहीं, मैं सोचता हूं मैं अभी उनसे मिलूंगा," नेख़्लूदोव ने कहा। सहसा यह सोच कर कि वह किसानों से क्या बातें करने जा रहा है, नेख़्लूदोव को झेंप और शर्म महसूस होने लगी थी।

वह किसानों की इच्छा-पूर्ति करने जा रहा था, जिस इच्छा-पूर्ति की आशा तक करने का उन्हें साहस नहीं हो पाता था। वह मामूली से लगान पर अपनी ज़मीन उन्हें देने जा रहा था, उन पर बहुत बड़ा उपकार करने जा रहा था। फिर भी किसी बात पर उसे शर्म महसूस हो रही थी। नेख़्लूदोव किसानों के पास पहुंचा। किसानों ने सिर पर से टोपियां उतारीं, कितने ही सिर उसके सामने नंगे हो गये, किसी पर सुनहरे बाल थे, किसी पर घुंघराले, कोई सिर गंजा था, किसी पर सब बाल सफ़ेद हो चुके थे। उस समय घबराहट के कारण नेख़्लूदोव के मुंह से एक शब्द भी नहीं निकल सका। हल्की हल्की बूंदाबांदी अब भी हो रही थी जिससे किसानों के बाल, उनकी दाढ़ियां, उनके खुरदरे कोटों के रोएं भीग रहे थे। किसान इस इन्तज़ार में थे कि कब मालिक बोलना शुरू करें, वे उनकी ओर देखे जा रहे थे, लेकिन नेख़्लूदोव इस क़दर शर्मा रहा था कि उसके मुंह से एक शब्द भी नहीं निकल रहा था। एक झेंप भरी चुप्पी छाई हुई थी। आख़िर इसे तोड़ा जर्मन कारिन्दे ने, जो धीर-गंभीर, आत्म-विश्वासी आदमी था, और समझता था कि वह रूसी किसानों की रग-रग पहचानता है, और जो बहुत अच्छी तरह रूसी बोल सकता था। एक तरफ़ यह हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताज़ा आदमी खड़ा था। उसके साथ खड़ा नेख़्लूदोव भी वैसा ही था। दूसरी ओर किसान थे, उनके दुबले-पतले, झुर्रियों भरे चेहरे, मोटे मोटे कोटों में से कन्धों की हड्डियां निकली हुईं। कितना अन्तर था!

"प्रिंस तुम पर बहुत बड़ा उपकार करने वाले हैं, परन्तु तुम इस उपकार के योग्य नहीं हो। वह तुम्हें ज़मीन लगान पर दे देंगे," कारिंदे ने कहा।

"योग्य कैसे नहीं हैं वासीली कार्लोविच, क्या हम तुम्हारे लिए काम नहीं करते? जब कुंवर जी की मां ज़िन्दा थीं—भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति दें—तो हम बड़े आराम से रहते थे। और हमें विस्वास है, कुंवर जी भी हमें बिसरायेंगे नहीं। हम इनके बहुत शुक्रगुज़ार हैं," लाल बालों वाले एक वाक्-पटु किसान ने कहा।

"हां, इसी लिए मैंने आज तुम सबको बुलाया है। अगर तुम चाहो तो सारी की सारी ज़मीन मैं तुम्हें लगान पर दे दूंगा।"

किसान कुछ नहीं बोले। ऐसा जान पड़ता था जैसे या तो वात उनकी समझ में नहीं आयी, या उस पर उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था।

"ज़रा ठहरो जी। ज़मीन हमें देंगे। क्या मतलव हुआ?" एक वयस्क आदमी बोला।

"ज़मीन तुम्हें देंगे ताकि तुम उस पर खेतीवारी कर सको। लगान तुम्हें बहुत कम देना पड़ेगा।"

"अच्छी वात है," एक बूढ़े ने कहा।

"बस, लगान हमारे बूते में हो," एक दूसरा बोला।

"हां, हां, ज़मीन क्यों न ली जाय।"

"खेती कर के ही तो अपना पेट पालते हैं। वाप-दादा से यही चल रहा है।"

"इससे तुमको भी आराम रहेगा। कोई काम नहीं करना पड़ेगा। घर बैठे बैठे लगान लेते रहोगे। सोचो तो, आजकल तुम्हें कोई चैन नहीं। और कितना पाप तुम्हारे सिर पर है!" कुछेक के मुंह से निकला।

"पाप सव तुम्हारे सिर है," जर्मन बोला, "अगर काम ठीक तरह रते और ढंग से रहते..."

"यह हम जैसों के लिए नामुमकिन है," तीखी नाक वाले एक बूढ़े ने कहा। "तुम हमसे कहते हो कि 'तुमने खेत में क्यों घोड़ा घुसने दिया?' जैसे मैंने ख़ुद उसे खेत के अन्दर डाल दिया हो। मैं इधर दिन भर अपने हाड़ तोड़ता रहा, हंसिया चलाता रहा या कुछ और, लगे जैसे दिन कभी ख़त्म ही नहीं होगा। किसान का एक एक दिन एक एक साल वरावर होता है। रात को घोड़ों को चराने ले गया तो कहीं नींद आ गई। पता नहीं चला और घोड़ा तुम्हारी जई में घुस गया। और अव तुम मेरी चमड़ी उधेड़ रहे हो।"

"कहा तो, सव कुछ ढंग से रखो।"

"तुम्हें तो क्या, कह दिया ढंग से रखो। किसान के इतने हाड़ कहां।" अधेड़ उम्र के एक ऊंचे-लम्बे आदमी ने कहा। उसके सिर और मुंह पर काले बाल ही वाल थे।

"कहा नहीं था कि बाड़ लगाओ?"

"लाओ लकड़ी दो, हम बाड़ बना लेंगे," एक नाटे क़द के, सीधे-सादे किसान ने कहा। "पिछले साल मैं बाड़ लगाने चला था। मैंने ज्योंही

एक पेड़ पर कुल्हाड़ी चलायी तो तुमने मुझे तीन महीने के लिए जेल में डाल दिया। बस, बाड़ बन गई।"

"यह क्या कह रहा है?" कारिन्दे की ओर घूम कर नेख़्लूदोव ने पूछा।

"Der erste Dieb im Dorfe,"* कारिन्दे ने जर्मन भाषा में उत्तर दिया, "हर साल यह आदमी जंगल में से लकड़ी चुराते हुए पकड़ा जाता है।" फिर किसान को सम्बोधित करते हुए बोला, "दूसरे की चीज़ को इज़्ज़त से देखना चाहिए।"

"क्या हम तुम्हारी इज़्ज़त नहीं करते?" बूढ़े ने कहा। "तुम्हारी इज्जत नहीं करेंगे तो जायेंगे कहां? हम तो तुम्हारे हाथ में हैं, तुम चाहो तो हमें बट कर रस्सी बना सकते हो।"

"उलटी बात कह रहे हो, भले आदमी। तुम्हारे साथ ऐसा करना नामुमकिन है। उलटे तुम हमारी गर्दन पर सवार रहते हो," जर्मन बोला।

"हम सवार रहते हैं। भली कही। तुम्हीं ने मेरा जबड़ा तोड़ा था न। मुझे क्या मिला। अमीरों के सामने भला ग़रीब की भी कभी चली है।"

"तुम्हें क़ानून के मुताबिक चलना चाहिए।"

तू-तू मैं-मैं का मुक़ाबला चल रहा था। इसमें भाग लेने वाले भी नहीं जानते थे कि वे क्यों ऐसा कर रहे हैं। पर इतना ज़रूर नज़र आ रहा था कि एक ओर कटुता है जिसे भय के कारण दबाने की कोशिश की जा रही है। दूसरी ओर अपनी ताक़त और बड़प्पन का घमण्ड है। इन बातों को सुनना नेख़्लूदोव के लिए बहुत मुश्किल हो रहा था। इसलिए उसने लगान की फिर चर्चा शुरू कर दी कि यह निश्चय किया जाय कि लगान कितना हो और किन शर्तों पर हो।

"अच्छा, अब ज़मीन की बात करो। लेना चाहते हो? अगर मैं सारी की सारी तुम्हें दे दूं तो कितना लगान दोगे?"

"माल तुम्हारा है, तुम्हीं बताओ।"

नेख़्लूदोव ने रक़म बतायी। पास-पड़ोस में जो लगान लिया जाता था, उससे यह बहुत कम था। फिर भी किसानों ने कहा कि यह बहुत

---

*गांव का एक नंबर चोर है, (जर्मन)

ज़्यादा है, और आदत के मुताबिक सौदाबाज़ी करने लगे। नेख़्लूदोव का ख़्याल था कि रक़म सुनते ही उनके चेहरे ख़ुशी से खिल उठेंगे, मगर वहां ख़ुशी कहीं नज़र नहीं आती थी। हां एक बात ऐसी हुई जिससे नेख़्लूदोव को पता चल गया कि उसके प्रस्ताव से किसानों को लाभ पहुंचेगा। जब उनके सामने यह सवाल रखा गया कि ज़मीन किसको दी जाय, सारे ग्राम-समुदाय को जिसमें सभी किसान शामिल हैं या किसी ख़ास सोसाइटी को जिसमें केवल वही किसान शामिल होंगे जो ज़मीन लेना चाहते हैं, तो झगड़ा खड़ा हो गया। कुछ किसान चाहते थे कि ऐसे किसानों को जो ग़रीब हैं और वक़्त पर लगान नहीं चुका सकेंगे बाहर रखा जाय। जवाब में वे लोग शिकवा-शिकायत करने लगे जिन्हें डर था कि उन्हें इस कारण शामिल नहीं किया जायेगा। आख़िर कारिन्दे ने स्थिति संभाल ली, लगान की रक़म और शर्तें मुक़र्रर की गईं। किसान ऊंचा ऊंचा बोलते हुए पहाड़ी उतर कर अपने अपने गांवों को जाने लगे। नेख़्लूदोव और कारिन्दा क़रारनामा तैयार करने के लिए दफ़्तर में चले गये।

हर बात का फ़ैसला नेख़्लूदोव की इच्छानुसार तथा आशानुसार हो गया। ज़िले भर में जिस लगान पर किसानों को ज़मीन मिल सकती थी, उससे तीस प्रतिशत कम पर उन्हें यहां पर मिली। नेख़्लूदोव के लिए ज़मीन से आमदनी पहले से आधी रह गई। पर अब भी यह रक़म उसकी ज़रूरतों से ज़्यादा थी विशेषकर इसलिए कि उसने एक जंगल बेच दिया था और कुछ रक़म खेतीबारी के औज़ार बेचने पर भी उसे वसूल होगी। हर बात का इन्तज़ाम बहुत बढ़िया ढंग से हुआ था, फिर भी वह किसी कारण लज्जित सा अनुभव कर रहा था। किसानों ने उसका धन्यवाद तो किया था लेकिन वे सन्तुष्ट नहीं थे। उन्हें इससे भी अधिक लाभ की आशा थी। परिणाम यह निकला कि उसने अपने को बहुत सी रक़म से वंचित भी कर दिया, और फिर भी किसान सन्तुष्ट नहीं हुए।

दूसरे दिन क़रारनामे पर दस्तख़त हो गया। नेख़्लूदोव, कुछेक वयोवृद्ध किसानों के साथ जिन्हें प्रतिनिधि चुना गया था, दफ़्तर में से बाहर निकला। उसका मन अब भी अशान्त था, मानो कोई बात अधूरी रह गई हो। दफ़्तर में से निकल कर वह कारिन्दे की रईसाना सवारी में (स्टेशन से उसे लाने वाले गाड़ीबान के शब्दों में) जा बैठा, किसानों

से विदा ली और स्टेशन की ओर चल दिया। किसान अब भी खड़े सिर हिलाये जा रहे थे, मानो निराश और असन्तुष्ट हों। नेख्लूदोव मन ही मन अपने आपसे असन्तुष्ट था। सारा वक़्त, अनजाने में ही, वह किसी बात पर उदास और लज्जित अनुभव करता रहा।

३

कुज़्मिंस्कोये से नेख्लूदोव सीधा उस जागीर पर गया जो उसे फूफियों से विरासत में मिली थी। यह वही जगह थी जहां उसकी कात्यूशा से भेंट हुई थी। उसका इरादा यह था कि कुज़्मिंस्कोये की तरह यहां पर भी ज़मीन का वैसा ही प्रबन्ध कर दिया जाय। इसके अलावा वह कात्यूशा तथा अपने बच्चे के बारे में भी पता लगाना चाहता था। क्या बच्चा सचमुच मर गया था? और जो मर गया था तो किन परिस्थितियों में मरा?

वह सुबह सवेरे पानोवो पहुंच गया। घर पहुंचा तो देखा कि सभी इमारतें जर्जर और जीर्ण-शीर्ण दशा में पड़ी हैं, विशेषकर रिहाइशी मकान। छत पर मुद्दत से रंग नहीं किया गया था, जिससे लोहे की चादरें ज़ंग के कारण लाल हो रही हैं। पहले उन पर हरा रंग किया जाता था। कुछ चादरें तो ऊपर को मुड़ी थीं, शायद अंधड़ और तूफ़ान के कारण। दिवारों पर मढ़े हुए तख़्तों को लोग जगह जगह से उखाड़ ले गये थे। जिन जगहों पर कीलें ज़ंग खाकर कमज़ोर हो गयी थीं, वहीं उन्होंने तख़्ते उखाड़ लिये थे। दोनों ओसारे टूट-फूट गये थे, विशेषकर बग़ल का ओसारा जिससे वह भली भांति परिचित था। केवल कड़ियां अब तक खड़ी थीं। कुछ खिड़कियों पर शीशों की जगह तख़्ते मढ़े हुए थे। मकान का बग़ल वाला हिस्सा जिसमें कारिन्दा रह रहा था, बावर्चीख़ाना और अस्तबल–सभी कुछ गयी-गुज़री हालत में था और गल सड़ रहा था। अगर कोई स्थान जर्जर नहीं हुआ था तो वह बाग़ था। वह पहले से भी घना हो रहा था, और पूरे जोबन पर था। बाड़ के पीछे से ही चेरी, सेब और आलूबुख़ारे के पेड़ नज़र आ रहे थे। उन पर फूल आये हुए थे जिससे वे सफ़ेद बादलों के पुंज से लग रहे थे। लिलक की झाड़ियां ख़ूब खिल

रही थीं। बारह साल पहले भी वे इसी तरह खिल रही थीं जब नेख़्लूदोव ने कात्यूशा के साथ यहां नाम का खेल खेला था और इनके पीछे वह कंटीले पौदे पर गिर पड़ा था, जिससे उसके हाथ छिल गये थे। तब कात्यूशा की उम्र सोलह वर्ष की थी। घर के निकट ही फूफी सोफ़िया इवानोव्ना ने लार्च का पेड़ लगाया था। उन दिनों वह एक छड़ी के समान छोटा सा था। अब वह एक पेड़ बन गया था। उसका तना इतना मोटा था कि उसमें से मकान की कड़ी निकल सकती थी। उसकी टहनियों पर कोमल, हरे रंग की, सुइयों जैसी पत्तियां उग रही थीं, ऐसे लगता था जैसे रोयें निकल आये हों। नदी का प्रवाह, अपने दोनों किनारों में सीमित, पनचक्की के बांध पर से ठाठें मारता हुआ बहे जा रहा था। नदी के पार घास का मैदान था जिसमें जगह जगह किसानों के मिले-जुले ढोर चर रहे थे।

आंगन में ही उसे कारिन्दा मिला जो खड़ा मुस्करा रहा था। वह कोई विद्यार्थी था जो विद्यालय की शिक्षा पूरी करने से पहले ही चला आया था। जब उसने नेख़्लूदोव से दफ़्तर में चलने को कहा तब भी उसके होंठों पर मुस्कराहट थी। अन्दर पहुंचते ही मुस्कराते हुए वह पार्टीशन के पीछे चला गया, मानो उसकी मुस्कराहट के पीछे कोई भेद छिपा हो, वह कोई बहुत ही बढ़िया चीज़ नेख़्लूदोव को भेंट करना चाहता हो। कुछ देर तक पार्टीशन के पीछे फुसफुसा कर बातें करने की आवाज़ें आती रहीं। इसके बाद वह गाड़ीवान जो नेख़्लूदोव को स्टेशन पर से लाया था, बख़्शीश ले कर अपनी गाड़ी हांक ले गया। चलती गाड़ी से घंटियों की आवाज़ आती रही। फिर सब चुप हो गया। उसके बाद खिड़की के सामने से एक लड़की गाढ़े की कामदार क़मीज़ पहने, नंगे पांवों भागती हुई निकल गई। उसने कानों में बुन्दों के स्थान पर रेशम के फुनगे लटका रखे थे। फिर एक किसान सामने से गुज़रा। उसके बूटों के नीचे कील लगे थे जिससे बाहर पगडण्डी पर चलते हुए उसके बूटों से खटखट की आवाज़ आ रही थी।

छोटी सी खिड़की के पास बैठ कर नेख़्लूदोव बाहर बाग़ की ओर देखने लगा। उसके कान बाहर की ओर लगे हुए थे। खिड़की में से वसन्त की ताज़ा हवा के हल्के हल्के झोंके आ रहे थे, उनमें धरती की गंध थी जिसे हाल ही में खोदा गया हो। हवा के झोंके उसके पसीने से गीले

माथे पर लटक आये बालों के साथ और चाकू से कटे-फटे दासे पर रखे कागज़ों के साथ खिलवाड़ करते वह रहे थे।

"त्रा-पा-तप! त्रा-पा-तप!" नदी पर से स्त्रियों के कपड़े धोने की आवाज़ आ रही थी। सभी एकलय में लकड़ी के बल्लों से कपड़ों को पीट रही थीं। पनचक्की का तालाब झिलमिल कर रहा था। ऐसा जान पड़ता जैसे यह आवाज़ छितर कर तालाब पर फैल रही हो। पनचक्की पर से गिरते पानी की लयबद्ध आवाज़ आ रही थी। नेख़्लूदोव के कान के पास से एक डरी हुई मक्खी ज़ोर ज़ोर से भिनभिनाती हुई उड़ गई।

और सहसा नेख़्लूदोव को याद आया जैसे बरसों पहले, जब वह भोला-भाला युवक था, पनचक्की पर से यही लयबद्ध शब्द सुनाई दिया करता था, और उस पर से स्त्रियों के कपड़ा पीटने की आवाज़ इसी तरह आया करती थी। इसी तरह वसन्त समीर के झोंके उसके गीले माथे पर लटकते बालों को सहलाते थे तथा खिड़की के कटे-फटे दासे पर रखे कागज़ों को उड़ाते थे। इसी तरह एक मक्खी भिनभिनाती हुई उसके कान के पास से उड़ कर गई थी। यह कहना ग़लत होगा कि नेख़्लूदोव को उन दिनों की बातें याद हो आयी थीं जब वह अठारह वर्ष का युवक था। लेकिन इस समय वह ऐसा ही महसूस कर रहा था जैसे वह अठारह वर्ष का युवक हो, वही ताज़गी और स्वच्छता, ऐसी मानसिक स्थिति जब भविष्य की महान तथा असीम संभावनाएं उसके सामने खुल रही हों। पर साथ ही वह यह भी महसूस कर रहा था—जैसा कि सपना देखते समय होता है—कि यह सब अब नहीं रहेगा, और इससे उसका हृदय बेहद उदास हो उठा।

"आप भोजन किस समय करना चाहते हैं?" कारिन्दे ने मुस्कराते हुए पूछा।

"जब भी तुम कहो। मुझे भूख नहीं है। मैं पहले गांव में थोड़ा टहलने जाऊंगा।"

"क्या आप घर के अन्दर नहीं चलना चाहते? सब चीज़ें बड़े ढंग से रखी हैं। कृपया अन्दर चलिये। यदि बाहर..."

"इस समय नहीं, धन्यवाद, बाद में चलूंगा। मेहरबानी कर के यह तो बताओ, क्या यहां कोई मत्र्योना ख़ारिना नाम की औरत रहती है?" (यह कात्यूशा की मौसी का नाम था।)

"जी हां, गांव में रहती है। उसने अपने घर में शराबख़ाना खोल

रखा है, जहां लोग लुक-छिप कर शराब पीने जाते हैं। मुझे मालूम है, मैंने कई बार उसे समझाया-झिड़का भी है कि तुम जुर्म कर रही हो, लेकिन उसे पकड़ने को तो दिल नहीं मानता, बूढ़ी औरत है, नाती-पोते हैं उसके," कारिन्दे ने कहा। वह अब भी मुस्करा रहा था। वह मालिक को ख़ुश भी करना चाहता था, और अपना यह विश्वास भी व्यक्त करना चाहता था कि इन बातों के प्रति नेख़्लूदोव का और उसका एक ही मत है।

"वह किस जगह रहती है? मैं चाहता हूं कि अभी टहलते हुए चला जाऊं और उससे मिल लूं।"

"गांव के दूसरे सिरे पर रहती है। उस तरफ़ से तीसरा झोंपड़ा है। बायें हाथ पहले एक पक्का, ईंटों का मकान आता है, उसके आगे उसका झोंपड़ा है। लेकिन मैं आपको ले चलूंगा," ख़ुशी से मुस्कराते हुए कारिन्दे ने कहा।

"नहीं, शुक्रिया, मैं ख़ुद ढूंढ़ लूंगा। तुम एक बात करो। कृपया किसानों की एक मीटिंग बुला लो। उनसे कहो कि मैं उनसे ज़मीन के बारे में बात करना चाहता हूं," नेख़्लूदोव ने कहा। उसका इरादा यह था कि यहां के किसानों के साथ भी वह वैसा ही क़रारनामा कर ले जैसा कि उसने कुज़िमंस्कोये के किसानों के साथ किया था। और अगर हो सके तो वह उसी दिन शाम को इस काम से निबट जाना चाहता था।

४

नेख़्लूदोव फाटक में से बाहर निकला तो उसे फिर वही लड़की मिली जिसने कानों में रेशमी फुनगे लटका रखे थे। वह उसी पुरानी पगडण्डी पर चरागाह की ओर से लौट रही थी जिस पर तरह तरह के झाड़-पात उग रहे थे। उसने शोख़ रंग का, लम्बा सा एप्रन पहन रखा था। उसके गुदगुदे पांव अब भी नंगे थे। भागते हुए वह अपना बायां बाज़ू तेज़ तेज़ झुला रही थी। दायें बाज़ू से वह एक मुर्ग़ को पेट के साथ चिपकाये हुए थी। मुर्ग़ चुपचाप बैठा था, उसकी लाल कलगी हिल रही थी। बस कभी कभी वह आंखें घुमाता और अपनी काली टांग को कभी बाहर निकाल देता और कभी वापस खींच लेता। उसका पंजा बार बार लड़की के एप्रन से अटक रहा था। जब लड़की मालिक के अधिक नज़दीक पहुंची तो उसने

अपनी रफ़्तार धीमी कर दी, और दौड़ने के बजाय चलने लगी। उसके सामने पहुंच कर वह खड़ी हो गई और एक बार अपना सिर पीछे की ओर झटका, और झुक कर अभिवादन किया। जब नेख़्लूदोव आगे निकल गया तो वह फिर मुर्ग़ी को लिये घर की ओर भागने लगी। कुएं की ओर जाते हुए नेख़्लूदोव को एक बुढ़िया मिली। उसने गाढ़े की मोटी सी क़मीज़ पहन रखी थी, और वहंगी पर दो बल्टियां पानी की लटकाये चली जा रही थी। वहंगी के नीचे उसकी पीठ बैठी जा रही थी। बुढ़िया ने बड़े ध्यान से दोनों बाल्टियां ज़मीन पर रखीं, उसी तरह सिर को पीछे झटका और फिर झुक कर अभिवादन किया।

कुएं के पास से हो कर नेख़्लूदोव ने गांव में प्रवेश किया। सूरज चमक रहा था, और हवा में घुटन और गर्मी थी, हालांकि अभी दिन के केवल दस ही बजे थे। आकाश में बादल घिर रहे थे, जो किसी किसी वक़्त सूरज को ढक लेते। गांव की गली में पहुंचा तो हवा में गोबर की तीखी गन्ध छाई हुई थी, परन्तु यह गन्ध अप्रिय नहीं लगती थी। यह गन्ध कुछ तो उन छकड़ों में से आ रही थी जो खाद से लदे पहाड़ी पर चढ़ रहे थे, लेकिन मुख्यतया यह गन्ध घरों के आंगनों में लगे खाद के ढेरों में से आ रही थी। ढेर में से खाद निकालने पर गन्ध उड़ती थी। जिस जिस घर के सामने से नेख़्लूदोव गुज़रा उसका दरवाज़ा खुला था। किसान घूम घूम कर इस ऊंचे-लम्बे, हृष्ट-पुष्ट धनी आदमी को देखते, जो भूरे रंग का टोप पहने और उसमें छम छम करता रेशमी फीता लगाये, हाथ में बढ़िया, चमकती मूट वाली छड़ी पकड़े, जिसे वह हर दूसरे क़दम पर ज़मीन से छूता हुआ गांव की सड़क पर चला जा रहा था। किसानों के पांव नंगे थे और जो क़मीज़ें और पतलूनें उन्होंने पहन रखी थीं, उन पर जगह जगह गोबर लगा हुआ था। कुछ किसान अपने ख़ाली छकड़ों में बैठे दुलकी चाल से चलते, हिचकोले खाते खेतों से लौट रहे थे। सिर पर से अपनी टोपियां उठा उठा कर वे नेख़्लूदोव का अभिवादन करते और फिर विस्मित आंखों से इस विलक्षण आदमी को देखते रह जाते जो गांव की सड़क पर चला जा रहा था। औरतें घरों के फाटकों से बाहर आ खड़ी होतीं या घरों के ओसारों के नीचे खड़ी, एक दूसरी से नेख़्लूदोव की ओर इशारा करती हुई, आंखें फाड़ फाड़ कर देखे जा रही थीं।

चौथे घर के सामने से जाते हुए नेख़्लूदोव को रुक जाना पड़ा। फाटक में से एक छकड़ा निकल रहा था। पहिये चीं-चीं कर रहे थे। छकड़े पर ढेरों खाद रखी थी, और ऊपर से दबा कर उस पर चटाई बिछा दी गई थी ताकि बैठा जा सके। छकड़े के पीछे पीछे एक छोटा सा छः साल का लड़का चला आ रहा था। इस आशा से कि छकड़े में सवारी मिलेगी, वह बड़ा उत्तेजित हो रहा था। एक किसान युवक, छाल के जूते पहने, लम्बे लम्बे डग भरता हुआ घोड़ी को हांक कर बाहर ला रहा था। फाटक में से एक भूरे रंग का बछेड़ा, लम्बी लम्बी टांगों वाला, कूद कर निकला, परन्तु नेख़्लूदोव पर नज़र पड़ते ही वह छकड़े के पास दुबक गया। उसकी टांगें गाड़ी के पहियों के साथ रगड़ने लगीं। अपने पीछे भारी बोझ को खींचते हुए घोड़ी उत्तेजित हो रही थी और हल्के हल्के हिनहिना रही थी। फिर बछेड़े ने एक छलांग लगाई और अपनी मां से आगे निकल गया। दूसरे घोड़े को एक बूढ़ा आदमी हांक कर बाहर लाया। वह दुबला-पतला मगर बड़ा फुर्तीला था। पांवों से नंगा, कन्धों की हड्डियां बाहर को निकली हुईं, वह एक मैली क़मीज़ और धारीदार पतलून पहने हुए था।

जब दोनों घोड़े पक्की सड़क पर पहुंच गये जहां जगह जगह सूखी, भूरे रंग की खाद बिखरी पड़ी थी, तो बूढ़ा लौट कर फाटक के पास आ गया और झुक कर नेख़्लूदोव का अभिवादन किया।

"आप तो हमारी मालकिनों के भतीजे हैं न?"

"हां, मैं उनका भतीजा हूं।"

"आप हमें देखने आये हैं? बड़ी किरपा की।" बूढ़ा आदमी बड़ा बातूनी जान पड़ता था।

"हां, तुम्हें देखने आया हूं। कहो तुम्हारे कैसे हाल-चाल हैं?" नेख़्लूदोव ने पूछा। उसे कुछ सूझ नहीं रहा था कि क्या कहे।

"हाल-चाल कैसे हैं? बहुत बुरे," बूढ़े ने लटका लटका कर कहा, मानो इस तरह बोलने से उसे ख़ुशी मिलती हो।

"बहुत बुरे क्यों?" फाटक के अन्दर क़दम रखते हुए नेख़्लूदोव ने पूछा।

"हमारी ज़िन्दगी क्या है जी, बहुत बुरी," बूढ़े ने कहा और नेख़्लूदोव के पीछे पीछे आंगन के उस हिस्से में जा खड़ा हुआ जो ऊपर से छता हुआ था।

नेख्लूदोव छत के नीचे जा कर खड़ा हो गया।

"यह देखो, पूरे बारह जन हैं खाने वाले," उन दो औरतों की ओर इशारा करते हुए बूढ़े ने कहा, जो हाथों में तंगली उठाये, खाद के बचे खुचे ढेर के पास पसीने से तर खड़ी थीं। उनके सिर पर के रूमाल फिसल आये थे, घाघरे उन्होंने ऊपर को चढ़ा रखे थे जिससे उनकी नंगी, मैली पिंडलियां नज़र आ रही थीं। "एक महीना गुज़रे न गुज़रे छः पूड अनाज ख़रीद दो इन्हें। इतने पैसे कहां से आवें?"

"तुम्हारा अपना अनाज काफ़ी नहीं होता?"

"हमारा अपना?" बूढ़े ने दोहरा कर कहा। उसके होंठों पर तिरस्कार भरी मुस्कराहट थी। "मेरे पास ज़मीन ही कितनी है—तीन आदमियों के लिए। पिछले साल तो इतना भी अनाज नहीं हुआ कि बड़े दिन तक गुज़र चल सके।"

"फिर तुम क्या करते हो?"

"क्या करते हैं? एक बेटे को मजूरी करने भेज दिया है। फिर हुज़ूर की कोठी से भी मैंने उधार ले रखा है। यह सब पैसे लेंट से पहले ही चुक गये। और टैक्स अभी तक नहीं दिया गया।"

"टैक्स कितना है?"

"हमारे घर को साल में तीन बार सत्रह सत्रह रूबल देने होते हैं। हे भगवान्, यह भी कोई ज़िन्दगी है! मालूम नहीं हम जी कैसे रहे हैं।"

"मैं तुम्हारे घर के अन्दर जा सकता हूं?" नेख़्लूदोव ने पूछा और आंगन पार करने लगा। आंगन में खाद के ढेर पर से उतारी हुई पीली-मटमैली परतें रखी थीं, जिन्हें तंगली से उतारा गया था। उनके कारण गोबर की तीखी गन्ध उठ रही थी।

"ज़रूर ज़रूर, चलिये!" बूढ़े ने कहा और गोबर पर अपने नंगे पांव रखता हुआ, जिससे उसकी पांवों की उंगलियों से गोबर का पानी चू रहा था, वह नेख़्लूदोव के पास से हो कर आगे गया और घर का दरवाज़ा खोल दिया।

औरतों ने सिर पर रूमाल ठीक कर लिये, घाघरे ठीक किये, और बड़े विस्मय और आदर से इस साफ़-सुथरे कुलीन की ओर देखने लगीं जिसकी आस्तीनों पर सोने के स्टड लगे थे और जो उनके घर के अन्दर जा रहा था।

घर के अन्दर से दो छोटी छोटी लड़कियां भाग कर निकलीं। उन्होंने केवल नीचे की कुर्तियां ही पहन रखी थीं। दरवाज़ा छोटा था। नेख़्लूदोव ने अन्दर जाने के लिए सिर पर से टोप उतारा और सिर झुका कर वरामदे में दाख़िल हुआ, और वरामदे में से होकर घर के अन्दर गया। घर तंग और गंदा था और उसमें से खट्टे खाने की गन्ध आ रही थी। वहुत सी जगह दो खड्डियों ने घेर रखी थी। झोंपड़े के अन्दर, चूल्हे के पास एक वृद्धा स्त्री आस्तीनें चढ़ाये खड़ी थी। उसकी संवलाई हुई वांहें पतली लेकिन मज़वूत थीं।

"मालिक आये हैं," वूढ़े ने कहा।

"धन्नभाग हमारे," वुढ़िया ने स्नेह भरे स्वर में कहा, और आस्तीनें उतारने लगी।

"मैं देखना चाहता था कि तुम लोग कैसे रहते हो।"

"वस, ऐसे ही रहते हैं जैसे देख रहे हो। झोंपड़ा आज गिरा कि कल गिरा। किसी की जान ज़रूर लेगा। मगर मेरा घर वाला कहता है कि यह चंगा-भला है, इसलिए हम वादशाहों की तरह रहते हैं," वुढ़िया ने सिर झटकते हुए कहा। वुढ़िया चुस्त औरत थी। "अव खाना लगाने लगी हूं, अपने मजूरों का पेट भरूंगी।"

"भोजन के लिए क्या दोगी?"

"भोजन? हमारा भोजन वहुत अच्छा होता है। सवसे पहले डवलरोटी और क्वास*, उसके वाद क्वास और डवलरोटी," वुढ़िया ने अपने दांत दिखाते हुए कहा, जो आधे से ज़्यादा घिस चुके थे।

"नहीं नहीं, सच सच वताओ, तुम लोग क्या खाओगे?"

"क्या खायेंगे?" वूढ़े ने हंसते हुए कहा। "हमारी ख़ुराक सीधी-सादी है। इन्हें दिखा दो, वीवी।"

वुढ़िया ने सिर हिला दिया।

"हम किसान क्या खाते हैं, यह देखना चाहते हो? बड़ी खोज-वीन करने वाले आदमी जान पड़ते हो। सव वात जानना चाहते हो, क्यों? मैंने कहा नहीं, डवलरोटी और क्वास खायेंगे। इसके पीछे शोरवा पियेंगे।

---

*एक खट्टा पेय।

एक औरत हमारे लिए मछली लेती आयी थी। उसी का शोरबा बनाया है। उसके बाद आलू खायेंगे।"

"बस इतना ही?"

"और क्या चाहते हो? थोड़ा सा दूध भी होगा," हंसती हुई आंखों से दरवाज़े की ओर देखते हुए बुढ़िया ने कहा।

दरवाज़ा खुला था, और बरामदे में लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गई थी—लड़के, लड़कियां, औरतें जिन्होंने गोद में बच्चे उठा रखे थे—सभी भीड़ बनाये इस विचित्र आदमी की ओर देख रहे थे जो किसानों की ख़ुराक देखना चाहता था। बुढ़िया को इस बात पर बड़ा गर्व था कि वह कुलीनों के साथ व्यवहार करना जानती है।

"हां, हुज़ूर, बहुत ही ख़राब ज़िंदगी है हमारी, कहना ही क्या," बूढ़ा बोला। "ऐ, कहां चले आ रहे हो!" बरामदे में खड़े लोगों की ओर देखते हुए उसने चिल्ला कर कहा।

"अच्छा, तो मैं अब चलूंगा," नेख़्लूदोव ने कहा। वह फिर बेचैन और लज्जित सा अनुभव करने लगा था, हालांकि इसका कारण वह नहीं जानता था।

"बड़ी किरपा की, हुज़ूर, जो हमारी खोज-ख़बर ली," बूढ़े ने कहा।

बरामदे में खड़े लोग एक दूसरे के साथ सट कर खड़े हो गये ताकि नेख़्लूदोव को निकल जाने दें। नेख़्लूदोव बाहर निकल आया और फिर पहले की तरह सड़क पर जाने लगा। दो नंगे-पांव लड़के उसके पीछे पीछे बरामदे में से निकल कर आ गये। दोनों ने क़मीज़ें पहन रखी थीं। बड़े लड़के की क़मीज़ किसी ज़माने में सफ़ेद रंग की रही होगी। दूसरे की फटी-पुरानी क़मीज़ गुलाबी रंग की थी, मगर उसका भी रंग फीका पड़ गया था। नेख़्लूदोव ने मुड़ कर उनकी ओर देखा।

"अब आप कहां जाओगे?" सफ़ेद क़मीज़ वाले लड़के ने पूछा।

"मत्र्योना ख़ारिना के घर," नेख़्लूदोव ने जवाब दिया, "क्या तुम उसे जानते हो?"

गुलाबी क़मीज़ वाला लड़का किसी बात पर हंसने लगा। लेकिन बड़े लड़के ने गंभीरता से पूछा—

"कौन सी मत्र्योना? वह जो बूढ़ी है?"

"हां, वही।"

"ओ–ह! वह वाली!" उसने लम्बा कर के कहा, "वह गांव के दूसरे सिरे पर रहती है। चल फ़ेदका, हम इन्हें ले चलें।"

"चल, मगर घोड़ों का क्या करेंगे?"

"उनकी कोई फ़िक्र नहीं।"

फ़ेदका मान गया, और तीनों सड़क पर जाने लगे।

५

नेख़्लूदोव को बड़ी उम्र के लोगों के साथ बातें करने से बच्चों के साथ बातें करना कहीं आसान लगा और वह रास्ते में लड़कों के साथ खुल कर बातें करने लगा। छोटे लड़के ने हंसना बंद कर दिया, और बड़े लड़के की तरह ही हर बात का जवाब ठीक ठीक और गंभीरता से देने लगा।

"यहां पर सबसे ग़रीब लोग कौन हैं, क्या तुम बता सकते हो?" नेख़्लूदोव ने पूछा।

"सबसे ग़रीब? मिख़ाईल ग़रीब है, सेम्योन माकारोव और मार्फ़ा ग़रीब हैं।"

"और अनीसिया, वह उनसे भी ज़्यादा ग़रीब है। उसके पास तो गाय भी नहीं। वे लोग तो मांग कर खाते हैं," नन्हें फ़ेदका ने कहा।

"उसके पास गाय तो नहीं है, मगर उसके घर में केवल तीन जने हैं। मार्फ़ा के घर में तो पांच जने हैं," बड़े लड़के ने आपत्ति की।

"लेकिन अनीसिया तो विधवा है," गुलाबी क़मीज़ वाले लड़के ने अनीसिया का पक्ष लेते हुए कहा।

"अनीसिया विधवा है तो मार्फ़ा कौन सी उससे अच्छी है, वह भी विधवा जैसी ही है," बड़े लड़के ने कहा, "उसका भी तो घर वाला कोई नहीं।"

"कहां है उसका घर वाला?" नेख़्लूदोव ने पूछा।

"जेल में उसे कीड़े खा रहे हैं," बड़े लड़के ने किसानों के प्रचलित शब्दों में जवाब दिया।

"दो साल हुए उसने ज़मींदार के जंगल में से दो बर्च के पेड़ काट डाले थे," गुलाबी क़मीज़ वाला छोटा लड़का झट से बोल उठा, "बस,

उसे जेल में डाल दिया। अब वह छः महीने से वहीं पड़ा है, और उसकी घर वाली भीख मांगती है। घर में तीन बच्चे हैं और एक बूढ़ी नानी है," ब्योरा देते हुए उसने कहा।

"रहती कहां पर है?" नेख़्लूदोव ने पूछा।

"इसी घर में," एक झोंपड़े की ओर इशारा करते हुए लड़के ने कहा। झोंपड़े के सामने, जिस रास्ते पर नेख़्लूदोव जा रहा था, एक नन्हा सा लड़का, पटुए के से पीले बाल, अपनी पतली, टेढ़ी, घुटनों पर बाहर को मुड़ी हुई टांगों पर खड़ा था, और लगता था कि अभी गिरा कि गिरा।

"वास्का! कहां गया कम्बख़त?" एक स्त्री ने चिल्ला कर कहा, जो घर में से बाहर दौड़ी आ रही थी। उसने भूरे रंग की मैली सी क़मीज़ पहन रखी थी। त्रस्त आंखों से देखती हुई वह भागी हुई आयी, और नेख़्लूदोव के पहुंचने से पहले ही उसे उठा कर अन्दर ले गई, मानो डर रही हो कि नेख़्लूदोव उसके बच्चे को पीट डालेगा।

यही वह स्त्री थी जिसका पति नेख़्लूदोव के वर्च-वृक्षों के कारण जेल भुगत रहा था।

"और मात्र्योना? क्या वह भी ग़रीब है?" मात्र्योना के घर के सामने पहुंचते हुए नेख़्लूदोव ने पूछा।

"वह ग़रीब क्यों होगी, वह तो शराब बेचती है," गुलाबी क़मीज़ वाले, दुबले-पतले लड़के ने निश्चय से जवाब दिया।

झोंपड़े के पास पहुंच कर नेख़्लूदोव ने लड़कों को बाहर ही रुकने को कहा और बरामदा लांघ कर अन्दर चला गया। झोंपड़ा चौदह फ़ुट लम्बा था। झोंपड़े में एक बड़ा सा अलावघर लगा था, जिसके पीछे एक खाट थी। खाट लम्बाई में इतनी छोटी थी कि लम्बे क़द का आदमी उस पर नहीं सो सकता था। "इसी खाट पर," नेख़्लूदोव सोच रहा था, "कात्यूशा ने बच्चे को जन्म दिया था, और बाद में बीमार पड़ी रही थी।" झोंपड़े में बहुत सी जगह खड्डी ने घेर रखी थी। जब नेख़्लूदोव ने झोंपड़े में प्रवेश किया उस समय बुढ़िया अपनी सबसे बड़ी पोती के साथ उस पर ताना ठीक कर रही थी। दरवाज़ा नीचा था जिस कारण नेख़्लूदोव का माथा उससे टकरा गया। नेख़्लूदोव के पीछे पीछे और दो पोते भागते हुए अन्दर आये, लेकिन दरवाजे पर ही रुक गये और चौखटा पकड़ कर खड़े हो गये।

"क्या चाहिए?" रुखी आवाज़ में बुढ़िया ने पूछा। उसका मिज़ाज

बिगड़ा हुआ था, एक तो इसलिए कि ताना ठीक नहीं बैठ रहा था, दूसरे इसलिए कि अवैध शराब बेचने के कारण जब भी कोई अजनबी उसके झोंपड़े में आता तो वह डर जाती थी।

"मैं यहां का ज़मींदार हूं। तुम्हारे साथ बात करना चाहता हूं।"

बुढ़िया चुप हो गई और उसकी ओर बड़े ध्यान से देखने लगी, फिर सहसा उसके चेहरे का भाव बदल गया।

"अरे लाला, तुम आये हो! मैं भी कैसी पगली हूं, मैं सोच रही थी कि कोई राह-जाता आदमी अन्दर घुस आया है। छिमा करना, लाला, भगवान् के वास्ते," बुढ़िया ने स्नेह का स्वांग भरते हुए कहा।

"मैं तुम्हारे साथ अकेले में बात करना चाहता हूं," नेख़्लूदोव ने दरवाज़े की ओर देखते हुए कहा, जहां बच्चों के पीछे एक स्त्री क्षीणकाय, पीले बच्चे को गोद में लिये खड़ी थी। बच्चे के सिर पर टुकड़े जोड़ कर बनायी टोपी रखी थी, और होंठों पर जीर्ण मुस्कान थी।

"क्या देख रहे हो? लाओ तो ज़रा बैसाखी मेरी, मैं इन्हें सीधा करूं," दरवाज़े पर खड़े लोगों की ओर देख कर वह चिल्लायी। "दरवाज़ा बन्द कर दो, सुनते हो?"

बच्चे भाग गये और बच्चे वाली औरत ने दरवाज़ा बन्द कर दिया।

"मैं सोच रही थी 'यह आदमी कौन है?' मुझे क्या मालूम कि ख़ुद मालिक आये हैं, मैं वारी वारी जाऊं, तुम पर लाला," बुढ़िया बोली, "आज तो चींटी के घर भगवान् आये हैं, आओ, आओ मालिक, यहां बैठो," अपने एप्रन से एक तख़्ता साफ़ करते हुए वह बोली। "मैं सोच रही थी, 'यह कौन कलमुंहा अन्दर घुसा आ रहा है' और निकला कौन, हाय, हाय, ख़ुद मालिक, हमारे सिर के स्वामी, साधु-सज्जन, हमारा रक्षक। छिमा करना, मैं तो बुढ़ा गई हूं, मैं तो अन्धी हो गई हूं।"

नेख़्लूदोव बैठ गया, और बुढ़िया उसके सामने खड़ी हो गई। दायां हाथ उसका गाल पर था, और बायें हाथ से दायें बाज़ू की कोहनी थामे हुए थी। फिर गाती हुई आवाज़ में कहने लगी—

"मैं वारी वारी जाऊं, मालिक, तुम्हारे तो अब बाल पकने लगे। तुम्हारा तो चेहरा ऐसा खिला खिला होता था जैसे सदाबहार का फूल। और अब देखो! बहुत चिन्ता करते होगे?"

"मुझे तुमसे यह पूछना था: कात्यूशा मास्लोवा तुम्हें याद है?"

"येकातेरीना, क्यों नहीं। वह तो मेरी भांजी रही। उसे कैसे भूल सकती हूं? मुझे सब मालूम है। ओह, मालिक, कौन है जिसकी चादर साफ़ हो? कौन है जिसने राजा का क़ानून नहीं तोड़ा हो? जवानी मस्तानी होती है। तुम दोनों चाय-कॉफ़ी मिल कर पीते थे न, बस, शैतान ने तुम्हें बस में कर लिया। कभी कभी उसके आगे किसी की नहीं चलती। अब करते तो क्या करते? उसे छोड़ देते, तो? मगर नहीं, तुमने तो उसकी झोली भर दी, उसे पूरे एक सौ रूबल दे डाले। और वह? जानते हो उसने क्या किया? उसने कोई भी बात समझदारी की नहीं की। मेरा कहा मानती तो सुख से रहती। मैं तो सच्ची बात कहती हूं, भले ही वह मेरी भांजी है, वह लड़की अच्छी नहीं है। मैंने उसे इतनी अच्छी नौकरी दिलवायी! वहां मालिक की उसने नहीं मानी, उलटे उसे गालियां दीं। हम जैसे लोग क्या भले आदमियों को गालियां देंगे? उन्होंने उसे निकाल बाहर किया। फिर जंगलात वाले के घर। वहां आराम से रह सकती थी, मगर नहीं, वहां से भी चली आयी।"

"मैं बच्चे के बारे में जानना चाहता हूं। बच्चा तुम्हारे ही घर में हुआ था न? वह कहां है?"

"अब बच्चे की सुनो। उस वक़्त मैंने उसके बारे में बहुत सोचा। कात्यूशा की एक सांस ऊपर एक नीचे, मैं सोचूं यह तो जीती नहीं बचेगी। मैंने बच्चे का बपतिस्मा करवाया और उसे यतीमख़ाने में भेज दिया। अब मां मर रही हो तो बच्चे को तो बचाना चाहिए। उस बेचारे ने क्या क़ुसूर किया है। और लोग तो बस, बच्चे को छोड़ देते हैं, खाने को कुछ नहीं देते, वह अपने आप सूख कर ख़त्म हो जाता है। पर मैं सोचूं, हाय नहीं, मैं थोड़ा कष्ट सह लूंगी, मगर इसे यतीमख़ाने में ज़रूर भेजूंगी। पैसे थे, बस मैंने उसे भिजवा दिया।"

"तो यतीमख़ाने के अस्पताल से रसीद ली होगी। उसका नंबर तो होगा तुम्हारे पास?"

"हां नंबर तो था, मगर बच्चा मर गया," वह बोली, "वह औरत बता रही थी कि ले के पहुंची ही कि मर गया।"

"औरत, कौन औरत?"

"वही जो स्कोरोद्नो में रहती थी। उसका यही धन्धा था। मालानिया नाम था उसका। अब तो वह मर गई है। बड़ी समझदार औरत थी।

जानते हो वह क्या करती थी? लोग उसके पास कोई बच्चा ले जाते तो वह उसे अपने पास रख लेती, उसे खिलाती-पिलाती। जब काफ़ी बच्चे हो जाते—तीन या चार— तो उन्हें सीधे यतीमख़ाने में दे आती। उसने बहुत बढ़िया इन्तज़ाम कर रखा था—एक बड़ा सा पालना बना रखा था, दोहरा पालना। उसमें वह बच्चों को एक तरफ़ से या दूसरी तरफ़ से लिटा देती थी। उसके साथ हैंडल भी लगा था। उसमें वह चारों बच्चों को लिटा देती—एक के पांव दूसरे के साथ जुड़े होते, मगर सिर दूर-दूर रखती ताकि एक दूसरे के साथ टकरायें नहीं। इस तरह वह चारों बच्चों को एक साथ ले जाती थी। वह उनके मुंह में चीथड़ों के चूचुक बना कर दे देती जिससे वे बेचारे चुप बने रहते।"

"कहो, आगे कहो।"

"बस, येकातेरीना के बच्चे को चौदह दिन तक अपने पास रखा। फिर उसी तरह उसे भी ले गई। मगर बच्चा उसी के घर में बीमार पड़ने लगा था।"

"क्या बच्चा सुन्दर था?" नेख़्लूदोव ने पूछा।

"ऐसा सुन्दर, ऐसा सुन्दर, हाथ लगाओ तो मैला होता था। बिल्कुल तुम्हारी सूरत थी," बुढ़िया ने आंख मार कर कहा।

"बीमार क्यों होने लगा था? क्या ख़ुराक अच्छी नहीं थी?"

"ख़ुराक कहां थी, ख़ुराक का तो नाम ही था। बात भी ठीक है, अपना बच्चा न हो तो कोई क्यों पाले। इतना भर देती थी कि यतीमख़ाने पहुंचने तक बचे रहें। कहती थी, किसी तरह मैंने उसे मास्को पहुंचाया। मगर वहां पहुंचते ही वह मर गया। वह वहां से सार्टीफ़ीकट भी ले आयी थी—बिल्कुल क़ायदे के मुताबिक़। इतनी समझदार औरत थी वह।"

बस, अपने बच्चे के बारे में नेख़्लूदोव को यही कुछ पता चल पाया।

६

नेख़्लूदोव बाहर सड़क पर आ गया। अब की बार फिर बाहर निकलते हुए उसका सिर दोनों दरवाज़ों से टकराया। सड़क पर सफ़ेद और गुलाबी क़मीज़ों वाले दोनों लड़के उसका इन्तज़ार कर रहे थे। कुछेक अन्य लोग

भी उनके पास आ खड़े हुए थे। स्त्रियों में से कई एक की गोद में बच्चे थे। इनमें वह दुबली-पतली स्त्री भी थी जिसने अपने बच्चे के सिर पर चीथड़ों की बनी टोपी पहना रखी थी। बच्चा दुबला था, और उसके सूखे हुए पतले चेहरे पर एक अजीब सी मुस्कान खेल रही थी। बार बार वह अपना टेढ़ा सा अंगूठा हिलाने लगता। नेख्लूदोव जानता था कि इस मुस्कान में यन्त्रणा छिपी है। उसने लड़कों से उस औरत के बारे में पूछा।

"यही तो अनीसिया है। मैंने आपको बताया था न?" बड़े लड़के ने कहा।

नेख्लूदोव ने अनीसिया को सम्बोधित कर के पूछा—

"तुम्हारी गुजर कैसे होती है? क्या काम करती हो?"

"क्या काम करती हूं—भीख मांगती हूं," अनीसिया ने कहा और रोने लगी।

बच्चे के सूखे हुए चेहरे पर फिर मुस्कान खेल गई और वह लातें मारने लगा। उसकी टांगें सूख कर कांटा हो रही थीं।

नेख्लूदोव ने जेब में से बटुआ निकाला और दस रूबल का एक नोट उस औरत के हाथ में दे दिया। वह दो-एक क़दम ही आगे बढ़ पाया होगा जब एक और औरत उसके पास आ पहुंची। उसकी गोद में भी बच्चा था। उसके पीछे पीछे एक बूढ़ी औरत चली आई, और उसके बाद एक और जवान स्त्री आ पहुंची। सभी अपनी ग़रीबी का रोना रोने लगीं और नेख्लूदोव के आगे हाथ फैला दिये। नेख्लूदोव के पास कुल मिला कर साठ रूबल थे। उसने सबके सब उन्हें दे डाले, और कारिन्दे के घर की ओर लौट पड़ा। उसका हृदय व्याकुल हो उठा।

कारिन्दा अब भी मुस्करा रहा था। कहने लगा कि किसान शाम के वक़्त मीटिंग के लिए इकट्ठे हो जायेंगे। नेख्लूदोव ने धन्यवाद किया और सीधा बाग़ में जा कर टहलने लगा। सेब के पेड़ों पर बूर आया हुआ था, और फूलों की पत्तियां घास-पत्तर से भरी रविशों पर छितरी हुई थीं। आज जो कुछ नेख्लूदोव ने देखा था वह उस पर विचार करना चाहता था।

पहले तो चारों ओर मौन छाया रहा, लेकिन फिर सहसा कारिन्दे के घर के पिछवाड़े से आवाज़ें आने लगीं। दो औरतें ग़ुस्से से बोल रही थीं, और एक दूसरी की बात बार बार काट रही थीं। बीच में कभी कभी

मुस्कराते कारिन्दे की भी आवाज़ सुनाई पड़ जाती। नेख़्लूदोव कान लगा कर सुनने लगा।

"मुझमें अब और सकत नहीं है। तुम क्या कर रहे हो, मेरे गले का क्रॉस छीन रहे हो," एक औरत की क्रुद्ध आवाज़ आयी।

"मेरी गाय तो ज़रा सी देर के लिए घुसी थी," दूसरी औरत बोली। "मुझे मेरी गाय वापस कर दो। पशु पर तो जुल्म नहीं करो। मेरे बच्चे क्या करेंगे, उन्हें दूध कैसे मिलेगा?"

"गाय चाहती हो तो पैसे निकालो, या पैसे के बदले काम करो," कारिन्दे की आवाज़ आई।

नेख़्लूदोव बाग़ में से निकल कर सायबान में आ गया। उसी के पास दो फटेहाल स्त्रियां खड़ी थीं, और उनमें से एक गर्भवती थी, लगता था जैसे उसके दिन पूरे होने वाले हैं। कारिन्दा, सायबान की सीढ़ियों पर, दोनों हाथ अपने हॉलैंड-कोट की जेबों में डाले, खड़ा था। मालिक को देखते ही स्त्रियां चुप हो गयीं और सिर पर से फिसल आये रूमाल ठीक करने लगीं, कारिन्दा भी जेबों में से हाथ निकाल कर मुस्कराने लगा।

जो कुछ हुआ था वह यह था। कारिन्दे का कहना था कि किसान लोग अक्सर अपने बछड़े, और कभी कभी गौएं भी, ज़मींदार के मैदान में चरने के लिए छोड़ देते हैं। इन दो औरतों के घरों की दो गौएं मैदान में चरती पायी गयीं। उन्हें हांक कर बाड़े में ले जाया गया। कारिन्दे ने औरतों पर फ़ी गाय तीस तीस कोपेक जुर्माना कर दिया, और कहा कि अगर पैसे नहीं देना चाहती हो तो दो दो दिन काम करो। औरतों ने जवाब दिया कि गौएं ख़ुद मैदान में चली गयीं, इसमें हमारा कोई दोष नहीं। हमारे पास पैसे नहीं हैं। गौएं वापस कर दो, उन पर दया करो, देखो, वे सुबह से भूखी खड़ी डकार रही हैं। जो कहोगे तो हम बाद में जुर्माना भी दे देंगी।

"मैं बार बार तुम्हारी मिन्नतें कर चुका हूं कि जब दोपहर को अपने ढोर घर वापस ले जाया करो, तो उन पर नज़र रखा करो," नेख़्लूदोव की ओर देखते हुए कारिन्दा मुस्करा कर कहने लगा मानो उसे अपना गवाह बना रहा हो।

"मैं अपने नन्हें को पकड़ने के लिए उसके पीछे भागी। मेरी पीठ हुई कि वे मैदान में घुस गयीं।"

"जब ढोर देखने का जिम्मा लिया है तब भागना तो नहीं चाहिए।"

"मेरे बच्चे को कौन दूध पिलाता? क्या तुम पिलाते?"

"अगर गौएं मैदान में नुक़सान करतीं तब तो कोई बात थी, पर वे तो मिनट भर के लिए अन्दर गई थीं," दूसरी औरत बोली।

"सभी मैदान चौपट हो गये हैं," नेख़्लूदोव की ओर देखते हुए कारिन्दे ने कहा। "मैं जुर्माना नहीं करूं तो घास का तिनका भी नहीं बचेगा।"

"यह पाप मत करो, झूठ नहीं बोलो। मेरी गौएं कभी भी पहले वहां गई हैं?" गर्भवती स्त्री ने चिल्ला कर कहा।

"आज तो गई थी। बस, जुर्माना अदा करो या बदले में मजूरी करो।"

"अच्छी बात है, मैं मजूरी कर दूंगी। अब गाय मेरे हवाले करो। उसे भूखों तो नहीं मारो," उसने गुस्से से कहा। "यों मैं कौन सी सुखी हूं, न दिन को चैन है न रात को। सास बीमार और घर वाला शराबी। सारा काम मुझे करना पड़ता है, और सरीर में ताक़त नहीं। भाड़ में जाओ तुम और तुम्हारे जुर्माने!"

नेख़्लूदोव ने कारिन्दे को गौएं लौटा देने को कहा और ख़ुद बाग़ में वापस लौट गया, ताकि फिर अपनी समस्या पर विचार कर सके। पर सोचने के लिए बाक़ी रह ही क्या गया था? उसे हर बात इतनी स्पष्ट जान पड़ती थी कि वह हैरान था कि सब लोग उसे क्यों नहीं देख पाते, और वह स्वयं भी उस बात को पहले क्यों नहीं देख पाया, जो अब इतनी स्पष्ट लग रही है।

"लोग मर रहे हैं। मरने का एक क्रम चल रहा है, और वे उसके अभ्यस्त हो गये हैं। इसी के अनुसार उन्होंने अपने जीवन को भी ढाल लिया है। अनगिनत बच्चे मर जाते हैं, स्त्रियां काम के बोझ के नीचे पिस रही हैं, लोगों को भर-पेट खाना नहीं मिलता, विशेष रूप से बूढ़ों को। धीरे धीरे लोगों की यह स्थिति हो गई है कि वे इसकी वीभत्सता को नहीं देख पाते, और कोई शिकवा-शिकायत नहीं करते। इसलिए हम भी यह समझते हैं कि उनकी स्थिति स्वाभाविक और न्यायोचित ही है।" अब यह बात उसके लिए सर्वथा स्पष्ट हो गई थी कि जनता के घोर दारिद्र्य का मुख्य कारण यही है कि जिस जमीन से उनका पालन-पोषण हो सकता था, उसे जमींदारों ने हथिया लिया है। किसान स्वयं यह बात जानते थे

और हमेशा इसकी ओर संकेत भी किया करते थे। बात बिल्कुल स्पष्ट थी कि बच्चे और बूढ़े इसलिए मर रहे हैं कि उन्हें दूध मुयस्सर नहीं होता। और दूध इसलिए मुयस्सर नहीं होता कि उनके पास गोचर-भूमि नहीं है, न ही ज़मीन है जिस पर वे अनाज या चारा पैदा कर सकें। लोगों के सभी क्लेशों का स्वतः स्पष्ट कारण यही है—या कम से कम उनके सारे दुःख-दर्द का मुख्य कारण यही है कि जो ज़मीन उनका पेट पाल सकती है, वह उनके अपने हाथ में नहीं है। इसके विपरीत वह उन लोगों के हाथ में है जो भूमि के स्वामित्व का लाभ उठाते हुए इन लोगों की मेहनत पर जीते हैं। यह भूमि लोगों के लिए अत्यावश्क है। उससे वंचित हो जाने पर वे मरने लगते हैं। उसी भूमि पर भूखे पेट रह कर ये लोग काश्त करते हैं ताकि अनाज विदेश में जा कर बिके और भूमि के स्वामी टोप और छड़ियां, घोड़े-गाड़ियां और कांसे की मूर्तियां ख़रीद सकें। नेख़्लूदोव के लिए यह सारी बात वैसे ही स्पष्ट हो गयी थी, जैसे कि यह स्पष्ट था कि बाड़े में बंद घोड़े अपने पैरों तले की घास खा चुकने के बाद दुबले होने लगेंगे और भूखों मरने लगेंगे जब तक कि उन्हें उस ज़मीन पर न जाने दिया जाय, जहां वे अपने लिए चारा ढूंढ़ सकते हों... वर्तमान स्थिति अत्यन्त भयानक है और उसे क़ायम नहीं रहने देना होगा। उसे बदलने के साधन ढूंढ़ने होंगे। यदि ऐसा नहीं कर सकते तो कम से कम उसमें भाग नहीं लेना होगा। "मैं उन्हें अवश्य ढूंढ़ूंगा," बर्च के पेड़ों के नीचे टहलते हुए नेख़्लूदोव सोच रहा था। "वैज्ञानिक क्षेत्रों, सरकारी दफ़्तरों, और अख़बारों इत्यादि में हम लोगों की दरिद्रता के कारणों की चर्चा करते हैं तथा उसे दूर करने के साधनों पर विचार करते हैं। परन्तु उनकी स्थिति को सुधारने का जो एक मात्र निश्चित साधन है—उन्हें ज़मीन लौटा देना जिसकी उन्हें बेहद ज़रूरत है—उसकी चर्चा कभी नहीं करते।"

नेख़्लूदोव को हैनरी जार्ज का मूल सिद्धान्त याद हो आया। कोई ज़माना था जब इस सिद्धान्त से वह बेहद प्रभावित हुआ था। वह हैरान था कि उसे भूल कैसे गया। "भूमि पर किसी का स्वामित्व नहीं हो सकता। जिस भांति जल, वायु तथा धूप का क्रय-विक्रय नहीं किया जा सकता, उसी भांति ज़मीन को भी ख़रीदा और बेचा नहीं जा सकता। इससे प्राप्त होने वाले लाभ पर सभी का समान अधिकार है।" अब उसकी समझ में आया कि कुज़्मिंस्कोये के प्रबन्ध से उसे क्यों लज्जा का अनुभव हो

रहा था। वह अपने को धोखा देता रहा था। यह जानते हुए कि ज़मीन के स्वामित्व का अधिकार किसी को भी नहीं होना चाहिए, फिर भी उसने अपने लिए इस अधिकार को स्वीकार किया था, और किसानों को एक ऐसी चीज का एक भाग दिया था जिस पर स्वयं उसका कोई अधिकार नहीं था। उसका अन्तर्तम इस बात को जानता था। यहां पर वह वही बात नहीं दोहरायेगा, बल्कि, कुज़िमंस्कोये वाले प्रवन्ध को भी बदल देगा। उसने मन ही मन एक योजना तैयार की, जिसके अनुसार वह ज़मीन किसानों को लगान पर दे देगा, और उनके सामने यह स्वीकार करेगा कि जो लगान वे देंगे उस पर उन्हीं का अधिकार रहेगा, और वे उसे टैक्स अदा करने तथा सामूहिक हित के कामों के लिए ही इस्तेमाल करेंगे। यह Single tax* तो नहीं होगा, परन्तु आधुनिक परिस्थितियों में यह उस प्रणाली के निकटतम अवश्य होगा। मुख्य बात यह थी कि वह भू-स्वामित्व का लाभ उठाने से इन्कार कर रहा था।

जब नेख़्लूदोव लौट कर आया तो कारिन्दे ने उसे भोजन करने को कहा। इस समय भी वह मुस्करा रहा था, और यह मुस्कान विशेषतया हर्षपूर्ण थी। उसकी पत्नी जियाफ़त तैयार कर रही थी, और इसमें उस लड़की की मदद ले रही थी जिसके कानों में रेशमी फुनगे थे। कारिन्दे को डर था कि यदि भोजन करने में देरी हो गयी, तो भाजियां बहुत ज्यादा उबल जायेंगी।

मेज़ पर गाढ़े का मेज़पोश बिछा था। नैप्किन की जगह एक तौलिया रखा हुआ था जिस पर कढ़ाई का काम हुआ था। एक पुराने सैक्सन बर्तन में जिसका दस्ता टूटा हुआ था आलुओं का शोरबा रखा था। शोरबे में मुर्ग़ के टुकड़े तैर रहे थे। यह वही मुर्ग़ था जिसने फड़फड़ा कर अपनी काली टांग खींची थी। अब उसे काट डाला गया था, या यों कहें कि टुकड़े कर डाले गये थे, और किसी किसी टुकड़े पर अब भी उसके बाल मौजूद थे। शोरबे के बाद फिर यही बालों वाला मुर्ग़ परोसा गया। अब की इसके टुकड़े भून कर रखे गये थे। उसके बाद दही में तैयार की गयी पेस्ट्रियां रखी गयीं, उनमें से घी चू रहा था, और बेहद शक्कर डाली गई थी। इस भोजन को खाने में किसी की तनिक भी रुचि नहीं हो सकती

---

*एकीकृत कर (अंग्रेजी)

थी, लेकिन नेख़्लूदोव इसे खाता गया। इसके ज़ायके की ओर उसका ध्यान तक नहीं गया। जब वह गांव में से लौट कर आया था तो वह उदास था, लेकिन एक विचार ने उस सारी उदासी को छिन्न-भिन्न कर दिया था। और भोजन करते समय यही विचार उसके मन में घूम रहा था।

मेज़ पर वही सहमी हुई लड़की भोजन ला रही थी जिसने कानों में फुनगे लटका रखे थे। कारिन्दे की पत्नी बार बार दरवाज़े पर आ कर अन्दर झांक जाती, और कारिन्दा बराबर मुस्कराये जा रहा था, वह फूला नहीं समा रहा था, और मन ही मन इस बात पर गर्व कर रहा था, कि उसकी पत्नी कैसी अच्छी रसोई बना लेती है।

भोजन समाप्त हुआ, और नेख़्लूदोव आख़िर किसी तरह कारिन्दे को अपने पास बिठा पाया। उसे बिठाना आसान नहीं था। नेख़्लूदोव अपनी योजना पर फिर एक बार विचार करना चाहता था और किसी को सुनाना चाहता था। इस कारण उसने किसानों को ज़मीन देने की अपनी योजना कारिन्दे को सुनाई और उससे उसकी राय पूछी। वह मुस्कराता रहा, मानो मुद्दत से उसने स्वयं यही बात सोच रखी हो और अब उसे नेख़्लूदोव के मुंह से सुन कर ख़ुश हो रहा हो। लेकिन वास्तव में उसके पल्ले कुछ भी नहीं पड़ा था। इसलिए नहीं कि नेख़्लूदोव ने अपने विचार स्पष्टता से नहीं समझाये थे, बल्कि इसलिए कि नेख़्लूदोव दूसरों के लाभ के लिए अपना लाभ त्याग कर रहा था। कारिन्दे के दिमाग़ में यह धारणा जड़ पकड़ चुकी थी कि हर व्यक्ति को केवल अपने लाभ का और दूसरों के नुक़सान का ही ख़्याल होता है। इसलिए जब नेख़्लूदोव ने बताया कि भूमि से प्राप्त होने वाली सारी आय से किसानों की सामूहिक पूंजी तैयार की जायेगी तो उसने सोचा कि यह बात उसकी समझ में नहीं आ रही है।

"जी, समझा, तो आपको इस पूंजी में से हिस्सा मिलता रहेगा," कारिन्दे ने कहा। उसका चेहरा खिल उठा।

"अरे नहीं भाई, नहीं, ज़मीन व्यक्तिगत रूप से अलग अलग व्यक्तियों की मिलकियत नहीं हो सकती। आया समझ में?"

"जी, आ गया।"

"इस तरह ज़मीन की सारी उपज पर सबका अधिकार होगा।"

"तो फिर आपको कुछ नहीं मिलेगा?" कारिन्दे ने कहा। उसकी हंसी उड़ गई थी।

"नहीं, उसे मैं छोड़ रहा हूं।"

कारिन्दे ने ठण्डी उसांस भरी, और फिर मुस्कराने लगा। अब बात उसकी समझ में आ गयी थी। ज़ाहिर है नेख़्लूदोव का दिमाग़ ठीक नहीं है। वह फ़ौरन् इस बात पर विचार करने लगा कि नेख़्लूदोव की इस योजना से, जिसके अनुसार वह अपनी ज़मीन सौंप देगा, वह अपने लिए क्या लाभ निकाल सकता है। वह इस योजना को अपने लाभ की दृष्टि से देखने लगा।

पर जब उसने देखा कि यह भी संभव नहीं तो उसका चेहरा लटक गया, योजना में उसकी रुचि जाती रही। अब भी जो वह मुस्करा रहा था तो केवल मालिक को ख़ुश करने के लिए। यह देख कर कि कारिन्दे की समझ में उसकी बात नहीं आ रही है, नेख़्लूदोव ने उसे वहां से भेज दिया, और स्वयं मेज़ के सामने बैठ कर अपनी योजना को काग़ज़ पर लिखने लगा। मेज़ जगह जगह से कटी-छिली थी और स्याही के धब्बों से गन्दी हो रही थी।

लाइम-वृक्षों के पीछे, जिन पर नयी हरियावल छायी थी, सूरज डूब गया। कमरे में धड़ाधड़ मच्छर आने लगे, और नेख़्लूदोव को काटने लगे। ज्यों ही उसने अपनी टिप्पणियों को लिखना समाप्त किया तो उसे गांव की ओर से आती आवाज़ें सुनाई दीं। ढोर डकार रहे थे और फाटक चर्रा कर खुल रहे थे। इसके अतिरिक्त किसानों की आवाज़ें थीं जो मीटिंग के लिए इकट्ठे हो रहे थे। नेख़्लूदोव ने कारिन्दे को कह रखा था कि वह किसानों को दफ़्तर में नहीं बुलाये, क्योंकि वह स्वयं गांव में जा कर उसी स्थान पर उनसे मिलना चाहता था जहां पर वे इकट्ठे हुए थे। जल्दी जल्दी एक प्याला चाय पी कर, जो कारिन्दे ने उसे ला कर दिया, नेख़्लूदोव गांव की ओर चल पड़ा।

७

गांव के मुखिया के घर के सामने भीड़ खड़ी थी, और लोगों के बतियाने की आवाज़ें आ रही थीं। पर ज्यों ही नेख़्लूदोव वहां पहुंचा तो सब चुप हो गये। किसानों ने सिर पर से टोपियां उतार लीं, उसी तरह

जिस तरह कुज़्मिंस्कोये के किसानों ने किया था। यहां के किसान कुज़्मिंस्कोये के किसानों से भी अधिक ग़रीब थे। लड़कियां और स्त्रियां कानों में सिर्फ़ रेशमी फुनगे लटकाये हुए थीं, पुरुषों ने पांवों में छाल के जूते पहन रखे थे और बदन पर गाढ़े के कुर्ते और कोट लगाये थे। कुछेक ने केवल कुर्ते पहन रखे थे और पांवों से नंगे थे। जिस तरह वे काम पर से लौटे थे उसी तरह सीधे यहां चले आये थे।

नेख़्लूदोव ने भाषण देने की कोशिश की, और कहने लगा कि मैं अपनी ज़मीन पूर्णतया आप लोगों को सौंप देना चाहता हूं। किसान चुपचाप सुनते रहे, उनके चेहरों पर कोई भाव-परिवर्तन नहीं आया।

"मैं यह मानता हूं, और मेरा यह दृढ़ विश्वास है," नेख़्लूदोव ने लजाते हुए कहा, "कि जो आदमी ज़मीन पर काम नहीं करता, उसे ज़मीन का मालिक बनने का कोई अधिकार नहीं। और हर इन्सान को हक़ है कि वह ज़मीन का इस्तेमाल करे।"

"ठीक बात है, बिल्कुल सच है," कुछेक लोगों की आवाज़ें आयीं।

नेख़्लूदोव ने कहा कि ज़मीन से जो आमदनी होगी उसे सबमें बांट देना चाहिए। मैं तुम्हें ज़मीन देता हूं, और मेरी राय है कि तुम लोग ख़ुद ज़मीन का मोल लगा कर उस पर लगान का निश्चय करो। और यह लगान की रक़म सबके साझे इस्तेमाल के लिए एक जगह जुड़ती जायेगी। भीड़ में से समर्थन की आवाज़ें अब भी आ रही थीं, लेकिन किसानों के गंभीर चेहरे और भी गंभीर हो गये थे। जो लोग पहले ज़मींदार की ओर देख रहे थे, उन्होंने आंखें नीची कर लीं, मानो ज़मींदार की कपट चाल को समझ गये हों और उसे यह दिखा कर कि वे उसके जाल में नहीं फंसेंगे, उसे शरमिन्दा नहीं करना चाहते हों।

नेख़्लूदोव ने अपनी बात बड़े स्पष्ट शब्दों में कही थी। किसान भी समझदार थे। लेकिन फिर भी वे उसकी बात को नहीं समझे, और न ही समझ सकते थे। कारण वही रहा होगा जिस कारण कारिन्दा अभी तक उसकी बात को नहीं समझ पाया था। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि प्रत्येक मनुष्य स्वभावतः अपने ही हित की बात सोचता है। कई पुश्तों के अनुभव ने उन पर यह बात सिद्ध कर दी थी कि ज़मींदार सदा अपने हित का सोचते हैं और उनसे सदा किसानों का अहित होता है। इसलिए आज जो ज़मींदार ने मीटिंग बुलाई है जिसमें वह कोई नई तजवीज़ उनके सामने

रखना चाहता है, तो उसका एक ही अभिप्राय हो सकता है कि वह पहले से भी अधिक धूर्तता के साथ उन्हें ठगना चाहता है।

"तो बोलो ज़मीन का क्या लगान लगाओगे?" नेख़्लूदोव ने पूछा।

"हम कैसे मोल लगा सकते हैं? हम नहीं लगा सकते। ज़मीन आपकी है, और ताक़त भी आपके हाथ में है," जवाब में भीड़ में से कुछेक आवाज़ें आयीं।

"नहीं, नहीं, जो रक़म इकट्ठी होगी उसे तुम सब साझे ख़र्च के लिए उठा सकोगे।"

"हम ऐसा नहीं कर सकते। ग्राम-समुदाय एक बात है, और यह बिल्कुल दूसरी बात है।"

"क्या तुम यह नहीं समझते," कारिन्दे ने मुस्कराते हुए कहा (वह मीटिंग में नेख़्लूदोव के पीछे पीछे चला आया था) "कि प्रिंस लगान पर तुम्हें ज़मीन दे रहे हैं, और लगान की रक़म तुम्हीं को वापस भी लौटा रहे हैं ताकि उस रक़म से ग्राम-समुदाय की साझी पूंजी बनती जाय?"

"हम ख़ूब समझते हैं," आंखें ऊपर उठाये बिना एक बूढ़ा बोला, जिसके मुंह में दांत नहीं थे। "यह भी बैंक ही की तरह की चीज़ है, और क्या? हमें मुक़र्रर वक़्त पर पैसे देने होंगे। हम यह नहीं चाहते। पहले ही हमारे लिए मुश्किलें कम नहीं हैं, इससे तो हम बिल्कुल तबाह हो जायेंगे।"

"यह नहीं चलेगा। हमारे लिए वही रास्ता ठीक है जिस रास्ते हम चलते आये हैं," कई एक लोगों की आवाज़ें आयीं। उनकी आवाज़ में असन्तोष और धृष्टता थी।

और जब नेख़्लूदोव ने कहा कि वह एक क़रारनामा तैयार करेगा जिस पर उसे और सब किसानों को दस्तख़त करना होगा तब तो किसानों का विरोध और भी तीव्र हो उठा।

"दस्तख़त किस बात का? हम जिस तरह पहले काम करते रहे हैं, उसी तरह अब भी करते जायेंगे। इस सबका क्या मतलब है? हम कुछ जानते-समझते नहीं।"

"हमें यह मंज़ूर नहीं। हमारे लिए यह बिल्कुल नयी चीज़ है। जैसे पहले चलता रहा है वैसे ही अब भी चलने दीजिये। हां, हम चाहते हैं कि हमें बीज नहीं देना पड़े।"

इसका मतलब यह था कि मौजूदा प्रबन्ध में बीज किसानों को देना पड़ता था, अब वे चाहते थे कि बीज ज़मींदार दे।

"तो क्या मैं यह समझूं कि तुम लोग ज़मीन लेने से इन्कार करते हो?" नेख़्लूदोव ने एक वयस्क किसान से पूछा जो चेहरे से समझदार लगता था। उसके पांवों में जूते नहीं थे, एक फटा-पुराना कोट पहने वह बायें हाथ में फटी-पुरानी टोपी उठाये इस अन्दाज़ से सीधा खड़ा था जिस अन्दाज़ में सिपाही खड़े होते हैं जब उन्हें टोपी उतारने का हुक्म होता है।

"जी, ठीक है," किसान बोला। प्रत्यक्षतः उस पर से फ़ौज की नौकरी का जादू अभी तक नहीं उतरा था।

"क्या इसका मतलब यह है कि तुम्हारे पास काफ़ी ज़मीन है?" नेख़्लूदोव ने कहा।

"नहीं, हुज़ूर, हमारे पास काफ़ी ज़मीन नहीं है," भूतपूर्व फ़ौजी ने जवाब दिया। उसके चेहरे पर बनावटी ख़ुशी का भाव था, और वह अपनी फटी-पुरानी टोपी सामने की ओर किये हुए खड़ा था, मानो कह रहा हो कि जिसे ज़रूरत हो, ले ले।

"फिर भी जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, उस पर विचार करना," नेख़्लूदोव ने हैरान हो कर कहा और फिर एक बार अपनी तजवीज़ दोहरा कर सुना दी।

"हमें विचार करने की कोई ज़रूरत नहीं है। जो कुछ हमने कहा है, वही होगा," दंतहीन, गुस्सैल बूढ़े ने बड़बड़ा कर कहा।

"मैं कल तक यहीं पर रहूंगा। अगर तुम्हारा ख़्याल बदल जाय तो तुम मुझे इत्तला करना।"

किसानों ने कोई जवाब नहीं दिया।

इस तरह इस भेंट द्वारा किसी भी परिणाम तक पहुंचने में नेख़्लूदोव सफल नहीं हुआ।

जब नेख़्लूदोव घर पहुंचा तो कारिन्दा उससे कहने लगा—

"इजाज़त हो तो मैं एक बात कहूं, प्रिंस! इस तरह आप किसानों के साथ किसी भी फ़ैसले पर नहीं पहुंच पायेंगे। ये लोग बड़े ज़िद्दी होते हैं। मीटिंग में ये लोग एक बात पर अड़ जाते हैं और उससे टस से मस नहीं होते। कारण यह है कि इन्हें हर बात से डर लगता है। लेकिन यही किसान—जैसे वह सफ़ेद बालों वाला, या वह सांवले रंग वाला किसान—

समझदार लोग हैं। जब इन्हीं में से कोई दफ़्तर में आता है, और हम उसके आगे चाय का प्याला रखते हैं, तो उसका मन इस तरह चलने लगता है जैसे वह कोई राजनीतिज्ञ हो," उसने मुस्कराते हुए कहा। "हर बात पर वह ठीक तरह से विचार करेगा। लेकिन मीटिंग में वह बदल जाता है, वह आदमी नहीं रहता। वहां वह एक ही बात की रट लगाये रहता है।"

"जो लोग इनमें से ज़्यादा समझदार हैं, क्या उन्हें यहां पर नहीं बुलाया जा सकता?" नेख़्लूदोव ने कहा, "मैं अपनी तजवीज़ ज़्यादा ध्यान से उन्हें समझाऊंगा।"

"यह हो सकता है," मुस्कराते हुए कारिन्दे ने कहा।

"ठीक है, तो उन्हें कल बुला लो।"

"ज़रूर, मैं ज़रूर बुला लूंगा," कारिन्दे ने कहा और पहले से भी अधिक ख़ुशी के साथ मुस्कराया। "मैं उन्हें कल बुला लूंगा।"

"उसकी बात सुनो तुम। बड़ा सीधा बनता है," दो घोड़ों पर साथ साथ जाते दो किसानों में से एक किसान ने कहा। सिर पर काले बाल, अस्त-व्यस्त दाढ़ी, वह अपनी मोटी-ताज़ी घोड़ी की पीठ पर बैठा दायें से बायें हिचकोले खा रहा था। जिस आदमी से वह बात कर रहा था वह बूढ़ा था और फटा हुआ कोट पहने था। रात का वक़्त था और ये दोनों आदमी किसानों के घोड़ों के एक झुण्ड को घास चराने के लिए ले जा रहे थे। प्रत्यक्षतः तो वे उन्हें बड़ी सड़क के किनारे किनारे घास चरा रहे थे लेकिन उनका अभिप्राय यह था कि लुक-छिपकर ज़मींदार के जंगल में चरने के लिए ले जायेंगे।

"हम मुफ़्त में तुम्हें ज़मीन दे देंगे, बस इधर दस्तख़त कर दो— ये पहली बार थोड़े ही हमें झांसा देने की कोशिश कर रहे हैं। हम जैसों के साथ पहले भी कई बार यह दाव खेले जा चुके हैं। नहीं, भले आदमी, अब हम तुम्हारे झांसे में नहीं आने के। अब हमें कुछ अक़्ल आ गई है," उसने कहा और एक बछेड़े को हांक लगाने लगा जो भटक कर पीछे रह गया था।

उसने अपना घोड़ा रोक लिया और आस-पास देखने लगा। बछेड़ा पीछे नहीं रह गया था, वास्तव में वह सड़क के किनारे एक चरागाह में घुस गया था।

"देखो उस बदज़ात को, ज़मींदार की चरागाहों में घुसने लगा है," सांवले रंग वाला किसान बोला जिसकी दाढ़ी के बाल बिखरे हुए थे। बछेड़ा हिनहिनाता हुआ महकती चरागाह में चूके के डण्ठलों को रौंदता, भागा चला जा रहा था। उसके पांवों के नीचे डण्ठल चरमरा रहे थे।

"यह चर्र-मर्र सुन रहे हो? किसी छुट्टी के दिन औरतों को चरागाह में भेजना होगा कि आ कर यहां से मोथा साफ़ कर जायं," पतले किसान ने कहा जिसने फटा हुआ कोट पहन रखा था, "वरना यहां हमारी दरांतियां टूट के रहेंगी।"

"कहता है 'दस्तख़त करो'," ज़मींदार के भाषण पर टिप्पणी कसते हुए बिखरी दाढ़ी वाला किसान कहने लगा, "'दस्तख़त करो', जी ज़रूर ताकि तुम हमें ज़िन्दा ही हड़प कर जाओ!"

"यह तो पक्की बात है," बूढ़े ने जवाब दिया।

फिर दोनों चुप हो गये। बड़ी सड़क पर केवल घोड़ों के चलने की आवाज़ आने लगी।

८

नेख़्लूदोव ने लौट कर देखा कि दफ़्तर में ही उसके सोने का प्रबन्ध कर दिया गया है। कमरे में एक ऊंचा पलंग बिछाया गया है, जिस पर पंखों का बिस्तर और दो बड़े बड़े तकिये लगा दिये गये हैं। बिस्तर के ऊपर गहरे लाल रंग का बड़ा सा रेशमी लिहाफ़ रखा है। लिहाफ़ को बड़ी बारीकी से और बड़े परिश्रम के साथ तागा गया था, प्रत्यक्षतः कारिन्दे की जब शादी हुई थी तो उसकी पत्नी दहेज में इसे अपने साथ लाई थी। कारिन्दे ने नेख़्लूदोव से फिर भोजन करने को कहा। वह दिन के भोजन से बची हुई चीज़ें उसके सामने रखना चाहता था। लेकिन नेख़्लूदोव ने इन्कार कर दिया, जिस पर कारिन्दा अपने ग़रीबाना दस्तरख़ान और ग़रीबाना रहन-सहन के लिए माफ़ी मांगने के बाद नेख़्लूदोव से विदा ले कर बाहर चला गया।

किसानों ने ज़मीन लेने से इन्कार कर दिया था, लेकिन इससे नेख़्लूदोव के मन को तनिक भी क्लेश नहीं पहुंचा। कुज़िमंस्कोये में किसानों ने उसका प्रस्ताव स्वीकार किया था और उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट की थी। इसके

विपरीत यहां पर उसे सन्देह और विरोध का सामना करना पड़ा था। फिर भी उसका हृदय सन्तुष्ट और उल्लासित था।

दफ़्तर वहुत साफ़ नहीं था, और उसमें घुटन महसूस होती थी। नेख़्लूदोव वाहर आंगन में चला गया। वहां से वह वाग़ की ओर जा रहा था जव उसे वह रात याद आ गयी – दासियों के कमरे की वह खिड़की, और वग़ल वाला सायवान – और उसका मन विचलित हो उठा। वह उस स्थान के पास से हो कर नहीं जाना चाहता था, जिसके साथ इतनी अनुतापपूर्ण स्मृतियां जुड़ी हुई थीं। वह दरवाज़े के वाहर सीढ़ियों पर वैठ गया और वाग़ के अन्धेरे में देखने लगा। हल्की हल्की स्निग्ध हवा वह रही थी, और उसमें वर्च-वृक्षों के नये नये पत्तों की महक फैली हुई थी। पनचक्की की आवाज़ वरावर आ रही थी, वुलवुलें गा रही थीं, और नज़दीक ही किसी झाड़ी में कोई पक्षी नीरस आवाज़ में निरन्तर सीटी वजा रहा था। कारिन्दे के कमरे की खिड़की में से रोशनी वुझ गई। पूर्व की ओर, खलिहान के पीछे, आकाश नवोदित चांद की ज्योत्स्ना से भरने लगा। वार वार विजली चमकने लगी जिसकी रोशनी में टूटा-फूटा घर और फूलों से लदा तथा झाड़-झंखाड़ से भरा वाग़ नज़र आने लगे। दूर से वादलों का गर्जन सुनाई देने लगा, और एक तिहाई आकाश में घने वादल छा गये। वुलवुलें और अन्य पक्षी चुप हो गये। पनचक्की में से पानी की गड़गड़ाहट सुनाई देती, किन्तु उससे भी अधिक कलहंसों की चूं चूं सुनाई देने लगी। इसके वाद गांव में तथा कारिन्दे के आंगन में मुर्ग़ वांग देने लगे। गर्मी के मौसम में जव वादल गरजते हैं तो मुर्ग़ वक़्त से पहले वांग देने लगते हैं। कहावत है कि अगर मुर्ग़ वांग जल्दी दें तो रात अच्छी गुज़रती है। नेख़्लूदोव के लिए रात सुखद ही नहीं, उल्लसित और आह्लादपूर्ण भी हो उठी थी। उसकी कल्पना जाग उठी और उसे वे दिन याद आने लगे जव लड़कपन में उसने यहां गर्मियों का मौसम व्यतीत किया था। वे दिन कितने ख़ुशियों से भरे थे, और वह कितना सरल वालक हुआ करता था! मन ही मन वह फिर अपने को वैसा ही महसूस करने लगा, न केवल उस समय ही वल्कि ऐसे सव अवसरों पर जिन्हें वह अपने जीवन की सर्वोत्कृष्ट घड़ियां समझता था। उसे वह दिन याद हो आया – याद ही नहीं, वह वैसा ही महसूस भी करने लगा – जव चौदह वर्ष की उम्र में उसने भगवान् से प्रार्थना की थी कि मुझे सत्य के दर्शन कराइये।

या वह घड़ी जब मां से विदा होते समय वह उसकी गोद में सिर रख कर रोया था और उसे वचन दिया था कि मैं कभी भी कोई बुरा काम नहीं करूंगा, और कभी आपको क्लेश नहीं पहुंचाऊंगा। उसके हृदय में फिर वही भावनाएं जाग उठीं, जब निकोलेंका इर्तेनेव के साथ मिल कर उसने शपथ ली थी कि स्वच्छ, सदाचारी जीवन व्यतीत करने में सदा एक दूसरे की मदद करेंगे और सबको ख़ुश रखने की कोशिश करेंगे।

उसे याद आया कि किस तरह कुज़्मिंस्कोये में वह प्रलोभन में फंसने लगा था, और उसे अपना घर, जंगल, खेत और ज़मीन त्यागते हुए अफ़सोस होने लगा था। उसने मन ही मन पूछा कि क्या अब भी मुझे उनके लिए अफ़सोस हो रहा है? उसे यह सोच कर ही हैरानी हो रही थी कि उसे कभी अफ़सोस हुआ था। फिर आज की सब घटनाएं उसकी आंखों के सामने घूम गयीं। बच्चों वाली वह मां जिसके पति को इसलिए जेलख़ाने में ठूंस दिया गया था कि उसने नेख्लूदोव के जंगल में से पेड़ काटा था। फिर उसे वह भयानक औरत माल्योना याद आई जो यह समझती थी—कम से कम उसकी बातों से तो ऐसा ही लगता था—कि कुलीन लोग यदि उस जैसी स्थिति की औरतों से व्यभिचार करना चाहें तो उन्हें विरोध नहीं करना चाहिए। बच्चों के प्रति उसका कैसा रुख़ था, किस तरह बच्चों को यतीमख़ाने में पहुंचाया जाता था। उसे वह अभागा चिथड़ों की टोपी वाला बच्चा याद हो आया जिसके सूखे हुए चेहरे पर मुस्कान खेल रही थी, और जो भूख के कारण धीरे धीरे मर रहा था। उसे वह दुबली-पतली, गर्भवती स्त्री याद आयी, जिसे विवश हो कर उसके लिए मज़दूरी करनी पड़ेगी, क्योंकि कमर-तोड़ काम के कारण वह अपनी भूखी गाय की ओर ध्यान नहीं दे पायी थी। फिर सहसा उसे वह जेलख़ाना याद हो आया, क़ैदियों के मुंडे हुए सिर, कोठरियां, दुर्गन्ध, बेड़ियां-हथकड़ियां, और दूसरी तरफ़ शहर में अमीरों की ऐशो-इशरत से भरी ज़िन्दगी, जिसमें वह भी शामिल था। हर चीज़ नग्न स्पष्टता में उसकी आंखों के सामने घूम गई।

खलिहान के ऊपर चांद उभर कर आ गया—लगभग पूर्णिमा का चांद, चमकता हुआ। आंगन में लम्बे लम्बे साये पड़ने लगे। उजड़े हुए घर की लोहे की छत चमकने लगी।

बुलबुल फिर गाने लगी, मानो वह इस रोशनी का पूरा पूरा लाभ उठाना चाहती हो।

कुज़िमंस्कोये में उसका मन उलझन में पड़ गया था। जो क़दम वह उठाने जा रहा था उसका निश्चय करते समय उसे अपने जीवन की चिन्ता होने लगी थी। उसके लिए निश्चय करना कठिन हो गया था, एक एक सवाल पर कितनी ही कठिनाइयां उठ खड़ी होती थीं। उसने वही सवाल अब फिर अपने से पूछे और देख कर हैरान रह गया कि सारी बात कितनी सरल है। अब वह यह नहीं सोच रहा था कि इन कार्यों का परिणाम उसके अपने हित में कैसा होगा, वह केवल अपने कर्तव्य का सोच रहा था। इसी लिए सारी बात सरल हो उठी थी। और अजीब बात यह थी कि उसके लिए अपने हित की बात का निश्चय करना कठिन था, लेकिन जब वह सोचता कि उसे औरों के लिए क्या करना चाहिए तो उसके मन में कोई संशय नहीं रहता। उसे यक़ीन हो गया था कि उसे किसानों को ज़रूर ज़मीन दे देनी चाहिए, क्योंकि यदि वह नहीं देगा तो यह शठता होगी। वह निश्चित तौर पर जानता था कि उसे कात्यूशा को कभी भी नहीं छोड़ना चाहिए, बल्कि उसकी निरन्तर सेवा करनी चाहिए तथा उसके प्रति किये गये अपने पाप का प्रायश्चित करना चाहिए। वह पक्के तौर पर जनता था कि मुक़द्दमों और दण्डों के इस प्रश्न पर उसे अध्ययन करना चाहिए, इस सवाल का स्पष्टीकरण करना तथा उसे समझना चाहिए, क्योंकि उसका ख़्याल था कि इसके प्रति उसका दृष्टिकोण और लोगों के दृष्टिकोण से भिन्न है। इस सबका क्या परिणाम होगा, वह नहीं जानता था, परन्तु इतना वह निश्चय जानता था कि यह काम उसे ज़रूर करना होगा। और इस दृढ़ आश्वासन से उसका हृदय उल्लास से भर उठता था।

सारा आकाश काले बादलों से ढक गया। चकाचौंध करने वाली बिजली बार बार चमकती जिससे आंगन तथा पुराना घर और उसके टूटे-फूटे सायबान स्पष्ट हो उठते। सिर पर बादल गरज रहे थे। पक्षी चुप थे, लेकिन पेड़ों के पत्ते सरसरा रहे थे, और जिन सीढ़ियों पर नेख़्लूदोव बैठा था, वहां हवा के झोंके आने लगे थे और नेख़्लूदोव के बालों से खेलने लगे थे। पहले बारिश की एक बूंद गिरी, फिर दूसरी, और तत्पश्चात् बरडॉक के बड़े बड़े पत्तों और लोहे की छत पर टपाटप बूंदें पड़ने लगीं।

सारा वातावरण आलोकित हो उठा। और पलक मारने की देर थी कि सिर के ऊपर विजली कड़की और उसकी भयानक कड़क दूर तक आकाश में गूंजती हुई सुनाई दी।

नेख़्लूदोव अन्दर चला गया।

"ठीक है, ठीक वात है," वह सोच रहा था, "जीवन द्वारा कौन सा कार्य सिद्ध होता है, यह सारा काम, इसका अर्थ, यह सब मैं नहीं समझता, न ही समझ सकता हूं। मेरी फूफियां किस लिए संसार में आयी थीं? निकोलेंका इर्तेनेव की मृत्यु हो गई, और मैं जी रहा हूं, यह क्यों? कात्यूशा के जीवन का प्रयोजन क्या था? और मेरा पागलपन? और उस जंग का प्रयोजन? बाद में मैं क्यों वैसा अनियन्त्रित जीवन व्यतीत करने लगा? इसे समझना, भगवान् की इच्छा की पूरी थाह पाना मेरे वस की वात नहीं। परन्तु मेरे अन्तःकरण में भगवान् की जो इच्छा व्याप रही है . मैं उसका पालन करने में समर्थ हूं। और इस इच्छा को मैं भली भांति जानता हूं। और इस इच्छा का पालन करते समय मेरी आत्मा में शान्ति होती है।"

मूसलाधार बारिश होने लगी, और छत पर से वह वह कर नीचे वने एक हौज़ में गिरने लगी। अब विजली कम चमकने लगी थी, जिससे घर और आंगन पर रोशनी कम पड़ती थी। नेख़्लूदोव अन्दर चला गया और कपड़े उतार कर लेट गया। दीवार पर लगा हुआ काग़ज़ गन्दा हो रहा था और जगह जगह से फट रहा था जिस कारण उसे डर था कि यहां पर खटमल होंगे।

"हां, मुझे स्वयं को मालिक नहीं, सेवक समझना चाहिए," वह सोच रहा था और इस विचार से ख़ुश हो रहा था।

वही वात निकली। वत्ती वुझाने की देर थी कि खटमल आ पहुंचे और उसे काटने लगे।

"ज़मीन दे दूं और साइवेरिया चला जाऊं—पिस्सू, खटमल, गन्दगी! तो क्या हुआ? यदि यह अनिवार्य है तो मैं इसे सहन करूंगा।" परन्तु अपने नेक इरादों के वावजूद भी वह सहन नहीं कर पाया। वह उठ कर खुली खिड़की के सामने बैठ गया। वादल छितरने लगे थे और चांद फिर निकल आया था। नेख़्लूदोव मुग्ध नेत्रों से उनकी ओर देखने लगा।

सुबह जा कर कहीं नेख़्लूदोव को नींद आयी, इसलिए जब वह जागा तो काफ़ी देर हो गई थी।

दोपहर के समय किसानों के सात प्रतिनिधि, जिन्हें कारिन्दे ने चुन कर बुला लिया था, फलों के बाग़ में आ पहुंचे। सेबों के पेड़ों के नीचे, ज़मीन में छोटे छोटे खम्भे गाड़ कर और उन पर तख़्ते रख के कारिन्दे ने एक मेज़ और बेंचों का प्रबन्ध कर दिया था। बड़ी देर के बाद किसान इस बात पर रज़ामंद हो पाये कि वे अपनी टोपियां सिर पर पहन लेंगे और बेंचों पर बैठ जायेंगे। सबसे ज़्यादा हठ तो भूतपूर्व फ़ौजी ने किया जो आज छाल के जूते पहन कर आया था। वह तन कर खड़ा था और हाथ में अपनी टोपी इस तरह उठाये हुए था जिस तरह फ़ौज में अर्थी के समय उठाने का नियम है। उनमें से एक बूढ़े किसान ने जो शकल-सूरत से बड़ा रोबदार लगता था, सिर पर अपनी बड़ी सी टोपी रख ली और अपने इर्दगिर्द कोट लपेटता हुआ मेज़ के पीछे आ कर बैठ गया। चौड़े कन्धे, उसकी दाढ़ी में कुण्डल पड़ते थे जैसे मिकेल अंजेलो द्वारा बनाई गई तस्वीर में मोज़िस की दाढ़ी में हैं, और संवलाये ऊंचे माथे पर सफ़ेद घुंघराले बालों की लटें गिरती थीं। उसे बैठते देख कर बाक़ी किसानों ने भी सिर पर टोपियां रखीं और बैठने लगे।

जब सब बैठ गये तो उनके सामने नेख़्लूदोव भी आ कर बैठ गया। मेज़ पर उसके सामने एक काग़ज़ रखा था जिस पर उसने अपनी योजना लिख रखी थी। तनिक आगे की ओर झुकते हुए नेख़्लूदोव ने अपनी बात समझानी शुरू की।

अब की बार नेख़्लूदोव के मन में कोई उलझन नहीं थी। उसका कारण शायद यह रहा हो कि आज किसानों की संख्या बहुत कम थी, या शायद यह कि उसका ध्यान अपने काम की ओर ज़्यादा था, और अपने अहं की ओर कम। उसने अपने आप ही उस चौड़े कन्धों और घुंघराली दाढ़ी वाले वृद्ध को सम्बोधित करना शुरू कर दिया। उसका ख़्याल था कि उसी की ओर से अनुमोदन अथवा आपत्ति के शब्द सुनने को मिलेंगे। लेकिन नेख़्लूदोव का अनुमान ग़लत निकला। यह रोबदार आदमी, जो वयोवृद्ध कुलपति लगता था, किसी किसी वक़्त स्वीकृति में अपना ख़ूबसूरत

सिर हिला देता, और जब कोई किसान आपत्ति करता तो यह भी भौंहें चढ़ा कर सिर हिलाता। लेकिन इसके बावजूद, उसे समझने में प्रत्यक्षतः बड़ी कठिनाई हो रही थी। जब और लोग नेख़्लूदोव के शब्दों को अपने शब्दों में दोहरा कर कहते तब कहीं कुछ उसके पल्ले पड़ता। इसी कुलपति के साथ ही एक टुइंयां सा बूढ़ा आदमी बैठा था, जो इससे बेहतर समझ रहा था। उसने नेनकिन का कोट पहन रखा था जिस पर जगह जगह पैवंद लगे थे। पांवों में पुराने बूट थे। एक आंख से काना था, और दाढ़ी ख़स्ता हो रही थी। बाद में नेख़्लूदोव को मालूम हुआ कि यह आदमी भट्ठी बनाता है। यह आदमी अपनी भौंहें बड़ी तेज़ तेज़ हिलाता, बड़े ध्यान से नेख़्लूदोव के शब्द सुनता और सुनते ही उन्हें अपने शब्दों में दोहरा लेता था। एक और आदमी भी बातों को उतनी ही जल्दी समझ रहा था। गठीले बदन का बूढ़ा आदमी था, सफ़ेद दाढ़ी, पैनी आंखें, व्यंग करने का कोई मौक़ा हाथ से नहीं जाने देता था। प्रत्यक्षतः दिखावे के लिए ठिठोली करता था। भूतपूर्व फ़ौजी भी, जान पड़ता था कि बातों को समझ रहा है, लेकिन चूंकि उसे केवल फ़ौजियों का बकवाद सुनने की आदत थी, इसलिए वह उलझन में पड़ जाता था। लेकिन जो आदमी बातों को सबसे अधिक गंभीरता और ध्यान से सुन रहा था, वह था एक ऊंचे-लम्बे क़द का किसान, छोटी सी दाढ़ी, लम्बी नाक और गहरी आवाज़ वाला। उसने घर के कते-बुने मगर साफ़-सुथरे कपड़े पहन रखे थे और छाल के नये जूते पहन कर आया था। इस आदमी के दिमाग़ में हर बात बैठ रही थी, और वह तभी बोलता था जब ज़रूरत होती थी। इनके अलावा दो वृद्ध पुरुष और थे। एक तो वही बूढ़ा था जिसके मुंह में दांत नहीं थे और जो पहली मीटिंग में नेख़्लूदोव की हर तजवीज़ को रद्द करता रहा था। दूसरा एक ऊंचे-लम्बे क़द का गोरा-चिट्टा आदमी था जिसके चेहरे से सद्भावना टपकती थी। यह आदमी लंगड़ा था, और उसने अपनी पतली पतली टांगों पर कस कर पट्टियां बांध रखी थीं। वे दोनों बोलते बहुत कम थे, हालांकि हर बात को बड़े ध्यान से सुन रहे थे।

नेख़्लूदोव ने सबसे पहले भूमि पर निजी स्वामित्व के बारे में अपने विचार बताये।

"मेरे विचार में भूमि का क्रय-विक्रय नहीं हो सकता। यदि यह हो सकता हो तो जिस आदमी के पास पर्याप्त धन-राशि होगी वह सारी की

सारी ज़मीन ख़रीद लेगा, और जिनके पास भूमि नहीं है, उन्हें इस्तेमाल के लिए दे कर उनसे मनमानी रक़म ऐंठेगा। यहां तक कि वह ज़मीन पर खड़ा तक होने के पैसे ले सकेगा," स्पेंसर का तर्क दोहराते हुए उसने कहा।

"एक ही उपाय रह जायेगा—पंख जोड़ लो और उड़ो," सफ़ेद दाढ़ी और हंसोड़ आंखों वाला बूढ़ा बोला।

"सच है," लम्बी नाक वाले ने अपनी गहरी आवाज़ में कहा।

"बिल्कुल ठीक है," भूतपूर्व फ़ौजी बोला।

"एक औरत अपनी गाय के लिए मुट्ठी भर घास उखाड़ती है, उसे पकड़ कर जेल में ठूंस देते हैं," नेकदिल लंगड़े आदमी ने कहा।

"हमारी अपनी ज़मीन तो यहां से पांच वेर्स्ता दूर है। लगान पर ज़मीन लेने के लिए हमारी तौफ़ीक नहीं है: लगान इतना बढ़ा देते हैं कि उससे हमारे लिए कुछ बचता ही नहीं है," चिड़चिड़े, दंतहीन बूढ़े ने कहा, "वे हमारे सरीर की रस्सियां बनाते हैं। यह तो ज़मीन-ग़ुलामों से भी बुरा है।"

"मेरे भी वही विचार हैं जो तुम्हारे हैं। मैं ज़मीन की मिल्कियत को पाप समझता हूं। इसलिए मैं उसे दे देना चाहता हूं," नेख़्लूदोव ने कहा।

"बड़ी अच्छी बात है," मिकेल अंजेलो के मोज़िस के से घुंघराले बालों वाले बूढ़े ने कहा। प्रत्यक्षतः वह यह समझ रहा था कि नेख़्लूदोव अपनी ज़मीन लगान पर देना चाहता है।

"मैं यहां इसलिए आया हूं कि मैं ज़मीन का मालिक नहीं बने रहना चाहता। अब आइये, इस बात पर विचार करें कि ज़मीन का कैसे बटवारा किया जाय।"

"किसानों के हवाले कर दीजिये, बस," चिड़चिड़े, दंतहीन बूढ़े ने कहा।

क्षण भर के लिए नेख़्लूदोव लज्जित सा अनुभव करने लगा। उसे महसूस होने लगा कि इस टिप्पणी का मतलब है इन लोगों को मेरे इरादों पर शक़ है। पर वह फ़ौरन् संभल गया और इसी टिप्पणी का प्रयोग करते हुए अपना मतलब साफ़ करने लगा।

"मैं तो ख़ुशी से दे दूं," वह बोला, "मगर किसे दूं और कैसे दूं?

किस गांव के किसानों को दूं? तुम्हारे गांव को क्यों दूं और द्योमिन्स्कोये के किसानों को क्यों नहीं दूं?" (यह पड़ोस के एक गांव का नाम था जहां बहुत कम ज़मीन थी।)

सब चुप रहे, केवल भूतपूर्व फ़ौजी ने कहा—

"बिल्कुल ठीक है।"

"अच्छा," नेख़्लूदोव ने कहा, "तो अगर ज़ार कहे कि ज़मींदारों से सारी की सारी ज़मीन ले कर किसानों में बांट दी जायेगी, तो इसे आप कैसे करेंगे?"

"कोई अफ़वाह है क्या?" उसी बूढ़े ने पूछा।

"नहीं, ज़ार ने कुछ नहीं कहा है। मैं वैसे ही अपनी ओर से कह रहा हूं: अगर ज़ार कहे: ज़मींदारों से सारी ज़मीन ले कर किसानों में बांट दी जाय, तो तुम लोग यह कैसे करोगे?"

"कैसे करेंगे? बस, बराबर बराबर बांट लेंगे। इतनी इतनी ज़मीन हर आदमी के लिए, चाहे वह किसान हो या ज़मींदार," भट्ठी बनाने वाले ने कहा। वह जब बात करता तो अपनी भवें बड़ी तेज़ी से उठाता और गिराता था।

"और कौन सा तरीक़ा है? बस फ़ी आदमी इतना इतना दे दो," दयालुस्वभाव लंगड़ा बोला, जिसने टांगों पर सफ़ेद पट्टियां बांध रखी थीं।

सबने इस बात का समर्थन किया, सबको यह सन्तोषजनक लगी।

"फ़ी आदमी इतना दे दो? तो क्या घर के नौकरों को भी हिस्सा दोगे?" नेख़्लूदोव ने पूछा।

"नहीं हुज़ूर," भूतपूर्व फ़ौजी बोला। वह बड़ा लापरवाह और ख़ुशमिज़ाज नज़र आने की कोशिश कर रहा था।

लेकिन ऊंचे क़द का समझदार आदमी उससे सहमत नहीं हुआ।

"अगर बांटना हो तो सबको एक जैसा हिस्सा मिलना चाहिए," थोड़ी देर सोचते रहने के बाद वह अपनी गहरी आवाज़ में बोला।

"यह नहीं हो सकता," नेख़्लूदोव ने कहा। उसने अपना जवाब पहले से तैयार कर लिया था। "अगर सबको एक जैसा हिस्सा मिले तो जो लोग काम नहीं करते, ख़ुद हल नहीं चलाते, वे अपना हिस्सा अमीर लोगों को बेच देंगे—जैसे, मालिक और नौकर, बावर्ची, अधिकारी, क्लर्क, सभी शहरी लोग। नतीजा यह होगा कि ज़मीन फिर अमीर लोगों के हाथ

में चली जायेगी। ज़मीन पर काम करने वालों की संख्या बढ़ती चली जायेगी और ज़मीन का मिलना मुश्किल होता जायेगा। इस तरह अमीर लोगों का फिर उन लोगों पर अधिकार हो जायेगा जिन्हें ज़मीन की ज़रूरत होगी।"

"बिल्कुल ठीक है," भूतपूर्व फ़ौजी बोल उठा।

"ज़मीनों को बेचने की मनाही कर दो। ज़मीन केवल उसी को मिले जो उस पर हल चलाता हो," भट्ठी बनाने वाला झल्ला कर बीच में बोल उठा।

इसका जवाब नेख़्लूदोव ने यह दिया कि यह जानना असंभव है कि कौन आदमी अपने लिए हल जोत रहा है, और कौन किसी दूसरे के लिए।

ऊंचे क़द वाले समझदार आदमी ने सुझाव दिया कि ऐसी व्यवस्था की जाय जिससे सब मिल कर हल जोतें। जो जोतें उन्हें ज़मीन मिले, और जो नहीं जोतें उन्हें कुछ नहीं मिले।

इस साम्यवादी योजना का जवाब भी नेख़्लूदोव के पास तैयार था। वह कहने लगा कि ऐसी व्यवस्था के लिए ज़रूरी होगा कि सबके पास हल हों, सबके पास बराबर संख्या में घोड़े हों, ताकि कोई पीछे न रह जाय। हल, घोड़े, अनाज निकालने की मशीनें तथा बाक़ी सब औज़ार साझे होने चाहिए। लेकिन ऐसा आप तभी कर सकते हैं जब सभी लोग सहमत हों।

"हमारे लोगों को मनाना कौन सा आसान काम है। मरते दम तक सहमत नहीं होंगे," चिड़चिड़े स्वभाव वाला बूढ़ा बोला।

"रोज़ लड़ाइयां होंगी," हंसोड़ आंखों वाले बूढ़े ने कहा। "औरतें एक दूसरी की आंखें नोच डालेंगी।"

"ज़मीन की समानता के बारे में फिर क्या कहते हो?" नेख़्लूदोव ने पूछा, "एक आदमी को उपजाऊ ज़मीन मिले और दूसरे को ऐसी जिसमें रेता और कीच हो, ऐसा क्यों?"

"यह बात है तो ज़मीन के छोटे छोटे टुकड़े बनाये जायें, और सबको हिस्से में बराबर बराबर टुकड़े मिलें," भ ी बनाने वाला बोला।

इसके जवाब में नेख़्लूदोव ने कहा कि वह केवल एक ही ग्राम में ज़मीन के बटवारे की बात नहीं सोच रहा है, बल्कि अलग अलग गुबेर्नियाओं में ज़मीन के व्यापक बटवारे की। यदि ज़मीन किसानों में मुफ़्त बांटी जायेगी

तो फिर कुछ किसानों को अच्छी और कुछ को बुरी ज़मीन क्यों मिले? सभी की इच्छा होगी कि उन्हें अच्छी ज़मीन मिले।

"विल्कुल टीक है," भूतपूर्व फ़ौजी ने कहा।

वाक़ी लोग चुप रहे।

"इसका मतलव है कि यह वात इतनी आसान नहीं है जितनी कि नज़र आती है," नेख़्लूदोव ने कहा। "पर इस सवाल के वारे में केवल हम ही नहीं बल्कि वहुत से लोगों ने विचार किया है। मसलन हैनरी जार्ज नाम का एक अमरीकी है, मैं उससे सहमत हूं। उसका विचार यह था कि..."

"आप तो मालिक हो, जैसे चाहो ज़मीन दे सकते हो। आपको कौन रोक सकता है? ताक़त आपके हाथ में है," चिड़चिड़े स्वभाव वाले वूढ़े ने कहा।

इस वाक्य को सुन कर नेख़्लूदोव सकपका गया। मगर उसे यह देख कर ख़ुशी हुई कि केवल वही इस वाधा पर नाराज़ नहीं हुआ था।

"वीच में नहीं वोलो, चाचा सेम्योन, उन्हें वात कर लेने दो," समझदार आदमी ने अपनी गहरी, रोवीली आवाज़ में कहा।

इससे नेख़्लूदोव को हौसला हुआ और वह हैनरी जार्ज द्वारा प्रतिपादित उस पद्धति की व्याख्या करने लगा जिसके अनुसार ज़मीन पर एक ही कर लगाया जाना चाहिए।

"धरती भगवान् की है, धरती किसी आदमी की नहीं है," वह कहने लगा।

"ठीक है, विल्कुल ठीक है," एक साथ कई आवाज़ें आयीं।

"ज़मीन सबकी साझी है। सभी को उस पर समान अधिकार है। पर ज़मीन अच्छी भी है और बुरी भी है, सभी चाहेंगे कि उन्हें अच्छी ज़मीन मिले। अब यह किस भांति किया जाय ताकि वटवारा इन्साफ़ के साथ हो? तरीक़ा यह है: जो अच्छी ज़मीन का प्रयोग करे वह उस ज़मीन की लागत उन लोगों को अदा करे जिनके पास कोई ज़मीन नहीं है।" अपने ही प्रश्न का उत्तर देते हुए नेख़्लूदोव कहने लगा, लेकिन यह कहना मुश्किल है कि कौन किसको पैसे दे, और सामूहिक ज़रूरतों को पूरा करने के लिए भी पैसे की ज़रूरत है, इसलिए प्रवन्ध ऐसा हो कि जो अच्छी ज़मीन का प्रयोग करे वह उस ज़मीन की क़ीमत ग्राम-समुदाय को उसकी

ज़रूरतों के लिए दे दे। इस तरह सब को बराबर बराबर हिस्सा मिलेगा। अगर तुम ज़मीन को इस्तेमाल करना चाहते हो तो उसका दाम चुकाओ —अच्छी ज़मीन के लिए ज़्यादा, बुरी के लिए कम। अगर ज़मीन का इस्तेमाल नहीं करना चाहते तो कुछ भी मत दो, जो लोग ज़मीन का इस्तेमाल करेंगे वे तुम्हारी जगह टैक्स तथा सामूहिक ख़र्च अदा करेंगे।"

"यह ठीक है," भट्ठी बनाने वाले ने भौंहें हिलाते हुए कहा, "जिसके पास अच्छी ज़मीन हो वह ज़्यादा पैसे दे।"

"वाह भाई वाह, बड़ा सियाना आदमी था यह जार्ज," घुंघराले बालों वाला बुज़ुर्ग बोला।

"बस, जो पैसे हमें देने पड़ें वे अगर हमारी तौफ़ीक के बाहर न हों तो सब ठीक है," गहरी आवाज़ वाले लंबे क़द के आदमी ने कहा। प्रत्यक्षतः वह समझ गया था कि इस योजना का लक्ष्य क्या है।

"जो रक़म तुम्हें देनी पड़ेगी वह न बहुत ज़्यादा होनी चाहिए और न ही बहुत कम। अगर बहुत ज़्यादा होगी तो कोई भी नहीं देगा, नतीजा यह होगा कि नुक़सान होगा। अगर बहुत कम हुई तो लोग ज़मीन की ख़रीद-फ़रोख़्त करने लगेंगे। ज़मीन का व्यापार होने लगेगा," नेख़्लूदोव ने कहा। "मैं तुम्हारे लिए इसी बात का प्रबन्ध करना चाहता हूं।"

"बड़ी इन्साफ़ की बात है, बिल्कुल ठीक है, यह बिल्कुल ठीक रहेगा," किसानों ने कहा।

"बड़ा सियाना आदमी था, वह जार्ज," चौड़े कन्धों और घुंघराले बालों वाले बूढ़े ने कहा, "वाह, कैसी बात सोच निकाली है!"

"और यदि मैं कुछ ज़मीन लेना चाहूं, तो?" मुस्कराते कारिन्दे ने कहा।

"कोई टुकड़ा ख़ाली हो तो उसे ले कर काश्त करो," नेख़्लूदोव ने कहा।

"तुम्हें ज़मीन की क्या ज़रूरत है? तुम तो वैसे ही खाते-पीते हो," हंसोड़ आंखों वाले बूढ़े ने कहा।

इस पर मीटिंग समाप्त हो गई।

नेख़्लूदोव ने अपना प्रस्ताव फिर एक बार समझाया। उसने कहा कि मैं आप लोगों से इसी वक़्त कोई जवाब देने को नहीं कह रहा हूं। आप

इस पर विचार करें, गांव के बाक़ी लोगों से सलाह-मश्विरा करें, और फिर जिस नतीजे पर पहुंचे मुझे आ कर बताएं।

किसानों ने कहा कि वे आपस में बात करेंगे, और जो जवाब हुआ ला कर देंगे, और बड़ी उत्तेजना में वहां से विदा हुए। सड़क पर जाते हुए भी उनके ऊंचा ऊंचा बोलने की आवाज़ आ रही थी। और गहरी रात गये तक भी नदी के पास, गांव में से उनकी आवाज़ आती रही।

किसान लोग दूसरे दिन काम पर नहीं गये। वे ज़मींदार के प्रस्ताव पर विचार करते रहे। किसानों की कम्यून में दो पार्टियां बन गई। एक वे थे जिन्हें इस प्रस्ताव में फ़ायदा नज़र आता था, और जो समझते थे कि इसे मंज़ूर करने में कोई ख़तरा नहीं। दूसरे वे थे जिनकी समझ में यह प्रस्ताव बैठा ही नहीं, इसलिए वे डरते थे और शक करते थे। मगर तीसरे दिन सभी सहमत हो गये, और अपने कुछ प्रतिनिधि भी नेख़्लूदोव के पास यह कहने के लिए भेज दिये कि हमें आपका प्रस्ताव मंज़ूर है। उनके इस निर्णय पर पहुंचने का एक कारण था। एक बुढ़िया ने उन्हें कहा कि मालिक तो बहुत भला आदमी है, उसे अपनी आत्मा की चिन्ता होने लगी है, वह यह काम इसलिए कर रहा है कि उसे मोक्ष मिले। इस बात का उन पर बहुत असर हुआ और उनके दिल में से यह भय जाता रहा कि उनके साथ धोखा होने जा रहा है। इसके बाद जब लोगों को पता चला कि मालिक पानोवो में बहुत दान-पुण्य कर रहे हैं तो इस बात की पुष्टि भी हो गई। वास्तव में नेख़्लूदोव ने पहले कभी इतनी घोर दरिद्रता तथा जीवन में इतनी साधनहीनता नहीं देखी थी, जितनी कि यहां उसे अपने किसानों में नज़र आयी। वह इसे देख कर सिहर उठा था, और यह जानते हुए कि इस तरह पैसे देना उचित नहीं, वह देता रहा। पैसे दिये बिना वह रह नहीं सकता था, और उसके पास पैसे थे भी बहुत। पिछले साल ही उसने एक जंगल बेचा था, उससे बहुत सी रक़म मिली थी। इसके अतिरिक्त हाल ही में कुज़्मिंस्कोये ज़मींदारी के पशु और औज़ार बेचने का बयाना उसे मिला था।

यह पता चलने की देर थी कि मालिक दान दे रहे हैं कि धड़ाधड़ लोग विशेषतया औरतें, मांगने के लिए आ पहुंचीं। नेख़्लूदोव को कुछ भी मालूम नहीं था कि दान कैसे दिया जाता है, अथवा यह निश्चय कैसे किया

जाता है कि किसको कितना देना चाहिए। एक तरफ़ तो उसकी जेब में पैसे थे, और उसके सामने लोगों का घोर दारिद्र्य था, वह अपना हाथ कैसे रोक सकता था। दूसरी तरफ़ वह यह भी समझता था कि इस तरह ऊलजलूल पैसे देना बुद्धिमत्ता नहीं है। इस स्थिति में उसे एक ही रास्ता सूझ रहा था, और वह यह कि यहां से भाग चले और यही उसने किया भी।

पानोवो में नेख्लूदोव का आख़िरी दिन था। वह अपनी फूफियों का साज़-सामान देख रहा था। वहां एक महागनी की कपड़ों की आलमारी रखी थी जिस पर तांबे के बने शेरों के मुंह लगे थे जिनमें गोल गोल रिंग डले हुए थे। इस आलमारी के निचले दराज़ में उसे बहुत सी चिट्ठियां मिलीं जिनमें एक तसवीर भी पड़ी थी। यह तसवीर एक ग्रुप की थी जिसमें उसकी फूफियां—सोफ़िया इवानोव्ना तथा मारीया इवानोव्ना, स्वयं नेख्लूदोव और कात्यूशा शामिल थे। उस ज़माने की तसवीर थी जब वह विद्यार्थी था और कात्यूशा पवित्र, सुन्दर और जीवन के उल्लास से छलछला रही थी। घर की सभी चीज़ों में से केवल ये चिट्ठियां और तसवीर ही उसने उठायी। बाक़ी सब पनचक्की के मालिक के हवाले कर दीं। मुस्कराते कारिन्दे की सिफ़ारिश पर पनचक्की के मालिक ने मकान और उसका सारा सामान असल लागत का केवल दसवां हिस्सा दे कर ख़रीद लिया था। नेख्लूदोव के चले जाने पर मकान गिरा दिया जायेगा और सामान छकड़ों पर लाद कर यहां से ले जाया जायेगा।

कुज़्मिंस्कोये में अपनी ज़मीन-जायदाद छोड़ते हुए नेख्लूदोव को अफ़सोस हुआ था। आज वह हैरान हो रहा था कि क्योंकर उसके मन में उस दिन पश्चात्ताप की भावना उठी थी। आज इस मुक्ति पर उसके हृदय में निरन्तर उल्लास की भावना थी। आज उसे नवीनता का भास हो रहा था, उस यात्री की तरह जो नये नये स्थलों तथा देश-देशान्तरों को पहली बार देख रहा हो।

१०

जब नेख्लूदोव वापस लौटा तो उसे अपना शहर नये और विचित्र रंग में नज़र आया। वह शाम के वक़्त लौटा था जब बत्तियां जल चुकी थीं, और रेलवे-स्टेशन से सीधे घर आया। कमरों में अब भी फ़ीनाइल की बू छायी हुई थी। आग्राफ़ेना पेत्रोव्ना और कोर्नेई दोनों थके हुए और

असन्तुष्ट लग रहे थे। उनकी आपस में झड़प भी हो चुकी थी, इन चीज़ों को ले कर, जिन्हें, जान पड़ता है, केवल वाहर टांगने, हवा लगवाने और फिर तह कर के वक्सों में बन्द कर देने के लिए ही वनाया गया हो। नेख़्लूदोव का कमरा ख़ाली, लेकिन अव्यवस्थित था। दरवाज़े में ट्रंक पड़े थे, जिस कारण रास्ता रुका हुआ था। प्रत्यक्षतः उसके आ जाने से उस काम में वाधा पड़ गई थी, जो एक अजीव परंपरा के अनुसार इस घर में चल रहा था। किसानों के दीन-हीन जीवन का जो प्रभाव उसके मन पर पड़ा था, उसके वाद यह काम प्रत्यक्षतः उसे फ़िज़ूल लग रहा था, जिसमें वह स्वयं भी किसी ज़माने में भाग लेता रहा था। अव उसे यह इतना अरुचिकर लगने लगा कि उसने दूसरे ही दिन किसी होटल जा कर रहने का निश्चय कर लिया, और चीज़ों के संभालने का काम आग्राफ़ेना पेत्रोव्ना पर छोड़ दिया कि वह जैसा ठीक समझे इन्हें ठिकाने लगा दे। नेख़्लूदोव की वहिन वाद में आ कर घर के साज़-सामान का जैसा चाहेगी निवटारा कर देगी।

दूसरे दिन नेख़्लूदोव जल्दी ही घर से निकल पड़ा और एक होटल में दो कमरे किराये पर ले लिये। साधारण सी जगह थी, और वहुत साफ़ भी नहीं थी। जेलख़ाने के नज़दीक थी। फिर कुछेक चीज़ों के वारे में आदेश दे कर कि उन्हें वहां भिजवा दिया जाय, वह स्वयं वकील को मिलने चला गया।

वाहर सर्दी थी। कुछ दिन तक वारिश और अन्धड़ रहने के वाद सर्दी हो गई थी, जैसा कि वसन्त ऋतु में अक्सर होता है। नेख़्लूदोव ने हल्का ओवरकोट पहन रखा था, फिर भी सर्दी इतनी अधिक थी और हवा इतनी तीखी कि वदन को काटती थी। नेख़्लूदोव तेज़ तेज़ चलने लगा ताकि शरीर में कुछ गरमी आ जाय।

उसके मन में अव भी किसानों की आकृतियां घूम रही थीं—स्त्रियां, वच्चे, वूढ़े—उनकी ग़रीवी और थकान जिसे उसने मानो पहली वार देखा हो। विशेषकर उसकी आंखों के सामने उस नन्हें वच्चे का सूखा हुआ चेहरा घूम जाता जिसके होंठों पर मुस्कान थी और जो वार वार पतली टांगें मरोड़ता। ऐसा जान पड़ता जैसे उन टांगों में पिंडलियां नहीं हैं। वरवस वह इस जीवन की तुलना शहरी जीवन से करने लगा। गोश्त, मछली और कपड़े इत्यादि की दूकानों के सामने से जाते हुए उसे फिर यही भास हुआ जैसे

वह इस दृश्य को पहली बार देख रहा है। लगभग सभी दूकानदार कितने साफ़-सुथरे और मोटे-ताज़े लग रहे थे। उन जैसे डील-डौल का एक भी किसान ढूंढ़ने से नहीं मिलेगा। इनका काम लोगों को धोखा देना था, जो इनकी चीज़ों का वास्तविक मूल्य नहीं जानते थे। और इस पर वे बड़ी मेहनत करते थे। इसे वे निरर्थक काम नहीं समझते थे। इसके विपरीत उन्हें पूर्ण विश्वास था कि वे बड़ा महत्वपूर्ण काम कर रहे हैं। सड़क पर जो भी लोग उसे नज़र आये, सभी खाते-पीते और मोटे-ताज़े लग रहे थे। बड़े बड़े नितंबों वाले कोचवान, जिनकी पीठों पर बटन चमक रहे थे और सुनहरी डोरी वाली टोपियां पहने दरबान, एप्रन पहने कुंडलों वाली दासियां—सभी ऐसे ही खाते-पीते नज़र आते थे। और विशेष कर हृष्ट-पुष्ट तो गाड़ीवान नज़र आ रहे थे, गर्दन पीछे से मुंडी हुई, अपनी बग्घियों में आराम से टेक लगाये बैठे थे और आने-जाने वालों को देखे जा रहे थे। उनकी आंखों से घृणा और दुर्वासना का भाव टपकता था। इन सब लोगों में उसे अनचाहे ही वे किसान नज़र आ रहे थे जो ज़मीनें न होने के कारण गांव छोड़ कर शहरों में आ गये थे। कुछेक को तो शहरी जीवन की स्थिति से लाभ उठाने का अवसर मिल गया था, और अब वे भी अपने मालिकों की तरह ही हो गये थे और अपनी स्थिति से सन्तुष्ट थे। लेकिन बाक़ी लोगों की हालत तो गांव से भी बदतर थी। उनकी दशा तो किसानों की दशा से भी अधिक दयनीय थी। मिसाल के तौर पर ऐसे ही लोग थे वे जूते बनाने वाले मोची जिन्हें नेख़्लूदोव ने एक मकान के तहख़ाने में काम करते देखा था। या वे धोबिनें जो खुली खिड़कियों में अपनी पतली पतली बांहों से कपड़े इस्त्री करती हुई नज़र आती हैं—चेहरे पीले, बाल अस्त-व्यस्त, खिड़कियों में से साबुन से भरी भाप निकलती हुई। या वे दो रंगसाज़ जिन्हें नेख़्लूदोव ने सड़क पर देखा था। एप्रन लगाये और हाथों में रंग से भरी बाल्टी उठाये वे एक दूसरे से झगड़ते चले जा रहे थे। पांवों में उनके मोज़े तक न थे, ऊपर से नीचे तक रंग ही रंग पुता हुआ था। दोनों आस्तीनें चढ़ाये थे जिससे कोहनियों तक उनकी दुबली-पतली और संवलाई बांहें नज़र आ रही थीं। उनके चेहरे थके-मांदे और चिड़चिड़े लग रहे थे। यही भाव छकड़े वालों के संवलाये चेहरों पर भी नज़र आ रहा था, जो हिचकोले खाते छकड़ों पर चले जा रहे थे। और उन मर्दों और औरतों के चेहरों पर भी जो चिथड़े पहने

सड़कों के नाकों पर खड़े भीख मांग रहे थे। ऐसे ही चेहरे उसे ढावों की खिड़कियों में से भी नज़र आये, जिनके सामने से हो कर नेख़्लूदोव जा रहा था। गन्दे मेज़ों पर चाय के बरतन और बोतलें रखी थीं, और मेज़ों के बीच सफ़ेद क़मीजें पहने वेटर इधर-उधर भाग रहे थे। और मेज़ों के सामने लोग बैठे चिल्ला रहे थे या गा रहे थे। उनके चेहरे लाल और पसीने से तर हो रहे थे और उन पर मूढ़ता छाई हुई थी। ऐसा ही एक आदमी एक खिड़की के सामने बैठा था भौंहें चढ़ी हुई, होंठ फूले हुए, और आंखें एकटक देखती हुई, मानो कोई बात याद करने की कोशिश कर रहा हो।

"ये लोग यहां पर क्यों जमा हैं?" नेख़्लूदोव ने मन ही मन पूछा। ठण्डी तेज़ हवा के कारण सड़क पर धूल उड़ रही थी। धूल के अतिरिक्त हवा में जले तेल और ताज़ा रोग़न की गन्ध छाई हुई थी।

एक सड़क पर चलता हुआ वह किसी छकड़ों की क़तार के पास जा पहुंचा जिन पर किसी प्रकार का कोई लोहे का सामान लदा था। सड़क में जगह जगह खड्डे थे जिस कारण लोहे की इतनी खड़खड़ हो रही थी कि नेख़्लूदोव के कान फटने लगे और सिर-दर्द होने लगा। उसने क़दम तेज कर दिये ताकि छकड़ों की क़तार से आगे निकल जाय। सहसा इस शोर में उसे अपना नाम सुनाई दिया। कोई उसे बुला रहा था। नेख़्लूदोव खड़ा हो गया और देखा कि एक छैले गाड़ीवान की बग्घी में एक फ़ौजी अफ़सर बैठा मुस्करा रहा है और उसकी ओर बड़े दोस्ताना ढंग से हाथ हिला रहा है। अफ़सर की पतली नोकदार मूंछें ख़ूब चुपड़ी हुई थीं, चेहरा चमक रहा था, और दांत बेहद सफ़ेद थे।

"नेख़्लूदोव! अरे, तुम यहां?"

उसे देख कर नेख़्लूदोव को पहले तो बड़ी ख़ुशी हुई।

"वाह शेनबोक!" उसने बड़े उत्साह से कहा, परन्तु दूसरे ही क्षण उसे ख़्याल आया कि ख़ुश होने का कोई मतलब नहीं है।

यह वही शेनबोक था जो उस दिन उसकी फूफियों के घर आया था। मुद्दत से नेख़्लूदोव ने उसे नहीं देखा था, मगर उसने इतना सुन रखा था कि क़र्ज़ों के बावजूद अब भी शेनबोक किसी तरह रिसाले में अपने पद पर क़ायम है और अमीरों में अपना स्थान बनाये हुए है। उसके दमकते, सन्तुष्ट चेहरे को देख कर नेख़्लूदोव समझ गया कि जो कुछ उसने सुन रखा था वह ग़लत नहीं था।

"वहुत अच्छा हुआ जो मुलाक़ात हो गई। शहर में कोई भी नहीं है। अरे, यार, तुम तो वूढ़े हो चले हो," वग्घी में से निकल कर कन्धे फैलाते हुए उसने कहा। "मैं तो तुम्हारी चाल से ही तुम्हें पहचान गया। अच्छा सुनो, आज खाना इकट्ठे खायेंगे। यहां कोई अच्छा होटल-वोटल भी है जहां ढंग का खाना मिल सकता हो?"

"माफ़ करना, मेरे पास तो वक़्त नहीं होगा," नेख़्लूदोव ने कहा। वह चाहता था कि किसी तरह इस आदमी से पिण्ड छूट जाय, परन्तु ऐसे ढंग से कि वह नाराज़ न हो। "कहो, तुम्हारा यहां कैसे आना हुआ?"

"काम पर आया हूं, दोस्त। अभिभावक के काम पर। आजकल मैं अभिभावक वना हुआ हूं। समानोव को जानते हो न? वही लखपती? उसके मामलों की देख-रेख करता हूं। उसका दिमाग़ कुछ सठिया गया है, लेकिन चौवन हज़ार देस्यातीना ज़मीन का मालिक है," उसने विशेष गर्व के साथ कहा मानो यह सारी ज़मीन उसकी अपनी कमाई हो। "उसके मामले वुरी तरह उलझे हुए थे, कोई देखने वाला न था। सारी की सारी ज़मीन किसानों को लगान पर चढ़ा दी गई थी, मगर उन्होंने एक कौड़ी लगान नहीं दिया। इधर अस्सी हज़ार रूवल से भी ज़्यादा क़र्ज़ चढ़ा हुआ था। मैंने साल भर में सब वदल के रख दिया, और सत्तर फ़ीसदी मुनाफ़ा भी निकाल दिखाया। कहो, क्या कहते हो?" उसने गर्व से पूछा।

नेख़्लूदोव को याद आया, किसी ने उससे कहा था कि शेनवोक अपनी सारी दौलत लुटा चुका है और उस पर बड़ा क़र्ज़ है, लेकिन किसी आदमी के ज़रिए असर-रसूख़ से वह किसी जायदाद का अभिभावक वना दिया गया है। जायदाद किसी वूढ़े धनी की है जो उसके हाथ से निकली जा रही है। प्रत्यक्षत: अव इसी अभिभावकता पर शेनवोक का गुज़र चल रहा था।

"इस आदमी से कैसे पीछा छुड़ाऊं ताकि यह नाराज़ भी न हो?" शेनवोक के चमकते चेहरे और ऐंठी हुई मूंछों की ओर देखते हुए नेख़्लूदोव सोच रहा था। यह आदमी वड़े दोस्ताना ढंग से हंस हंस कर वतिया रहा है कि कहां पर सवसे अच्छा खाना मिल सकता है, और अभिभावक के नाते उसने क्या क्या कारनामे किये हैं।

"अच्छा तो कहो, कहां पर भोजन करें?"

"सच मानो, मेरे पास वक़्त नहीं है," अपनी घड़ी की ओर देखते हुए नेख़्लूदोव ने कहा।

"अच्छा तो यह बताओ आज शाम को घुड़दौड़ पर जाओगे?"

"नहीं, मैं नहीं जा पाऊंगा।"

"ज़रूर आना। मेरे पास अपने घोड़े तो नहीं हैं, लेकिन मैं ग्रीशा के घोड़ों पर खेलता हूं। तुम्हें याद है न, उसके पास बहुत बढ़िया घोड़े हैं। तो आओगे न? शाम का खाना मिल कर खायेंगे।"

"नहीं, मैं तुम्हारे साथ शाम का खाना भी नहीं खा पाऊंगा," नेख़्लूदोव ने मुस्करा कर कहा।

"उफ़ ओ! यार यह तो बहुत बुरी बात है। कहो, इस वक़्त कहां जा रहे हो? मेरे साथ बग्घी में बैठ चलो।"

"मैं एक वकील से मिलने जा रहा हूं। वह नज़दीक ही, इसी सड़क के मोड़ पर रहता है।"

"हां, हां, याद आया। तुम जेलख़ानों के बारे में कुछ कर रहे हो न? क़ैदियों के मध्यस्थ बन गये हो, मैंने सुना है," शेनबोक ने हंस कर कहा, "मुझे कोर्चागिनों के घर से पता चला था। वे तो अभी से शहर छोड़ कर चले गये हैं। इस सबका क्या मतलब है, कुछ समझाओ तो?"

"हां, हां, बिल्कुल ठीक है," नेख़्लूदोव ने जवाब दिया, "मगर यहां सड़क पर मैं तुम्हें क्या बता सकता हूं?"

"ठीक है, ठीक है, तुम हमेशा से सनकी रहे हो। मगर घुड़दौड़ पर तो आओगे?"

"नहीं, मैं नहीं आ सकूंगा, और आना चाहता भी नहीं हूं। देखो, नाराज़ नहीं होना।"

"नाराज़? अरे नाराज़ किस बात पर? बताओ, रहते कहां हो?" सहसा उसके चेहरे पर गंभीरता आ गई, आंखें एकटक देखने लगीं, और भौंहें सिकुड़ गईं। जान पड़ता था जैसे कुछ याद करने की कोशिश कर रहा हो। नेख़्लूदोव को उसके चेहरे पर वही जड़ता का भाव नज़र आया जो उसे उस आदमी के चेहरे पर नज़र आया था जो भौंहें चढ़ाये और होंठ फुलाये ढाबे की खिड़की में बैठा था।

"आज कितनी सर्दी है, क्यों?"

"हां, बहुत सर्दी है।"

"सामान तेरे पास है ना?" गाड़ीबान की ओर घूम कर शेनबोक ने पूछा।

"अच्छा तो ख़ुदा-हाफ़िज़! तुम्हें मिल कर सचमुच बड़ी ख़ुशी हुई।" और बड़े तपाक से नेख़्लूदोव के साथ हाथ मिला कर उछल कर बग्घी में जा बैठा और मुस्कराते हुए हाथ हिलाने लगा। हाथ पर उसने सफ़ेद दस्ताना पहन रखा था। हाथ के पीछे उसका चमकता चेहरा और चमकते सफ़ेद दांत नज़र आ रहे थे।

"क्या यह संभव है कि मैं भी इसी आदमी जैसा था?" वकील के घर की ओर जाते हुए नेख़्लूदोव सोच रहा था। "हां, मैं उस जैसा बनना चाहता था, हालांकि मैं बिल्कुल उस जैसा नहीं था। मैं उसी की तरह का जीवन बिताने की सोचा करता था।"

११

नेख़्लूदोव के पहुंचते ही वकील ने उसे अन्दर बुला लिया हालांकि बहुत से लोग बाहर बैठे इन्तज़ार कर रहे थे, और छूटते ही मेन्शोव के मुक़द्दमे की चर्चा करने लगा। उसने मुक़द्दमे की मिसाल पढ़ी थी और पढ़ कर उसे बेहद गुस्सा आया था क्योंकि जो अभियोग लगाया गया था वह बिल्कुल असंगत था।

"इस मुक़द्दमे के बारे में पढ़ कर तो सचमुच रोंगटे खड़े हो जाते हैं," वह कहने लगा, "ऐन मुमकिन है कि घर के मालिक ने ख़ुद आग लगाई हो ताकि उसे बीमे के पैसे मिल सकें। पर मुख्य बात तो यह है कि मेन्शोव का दोष साबित नहीं हुआ। कोई शहादत ही वहां पर नहीं है। यह सब जांचकर्ता के बढ़े-चढ़े जोश और सरकारी वकील की इतनी ही बढ़ी-चढ़ी लापरवाही का नतीजा है। अगर यह मुक़द्दमा इस अदालत में पेश हो—प्रान्तीय अदालत में नहीं—तो मैं यक़ीन से कह सकता हूं कि वे बरी हो जायेंगे, और मैं पैरवी का कुछ भी नहीं लूंगा। अब दूसरे मुक़द्दमे की सुनिये—फ़ेदोस्या बिर्युकोवा वाले मुक़द्दमे की ज़ार के नाम अपील मैंने लिख दी है। जब आप पीटर्सबर्ग जायें तो उसे साथ लेते जाइये, और ख़ुद दाख़िल करवा आइये। उसके लिए ख़ुद वहां बात भी कीजिये वरना वे लोग मामूली तफ़तीश कर के मामला ख़त्म कर देंगे, बने-बनायेगा कुछ नहीं। और आप कोशिश कीजिये ऊपर तक पहुंच निकालने की।"

"ज़ार तक?" नेख़्लूदोव ने पूछा।

वकील हंस पड़ा।

"यह तो सबसे ऊपर की पहुंच होगी। ऊपर का मतलब अपील कमेटी का सेक्रेटरी या अध्यक्ष वगैरा तक किसी की सिफ़ारिश ढूंढिये। सो, जनाब अब बस?"

"नहीं, एक बात और। मुझे यह ख़त मिला है। किसी धार्मिक सम्प्रदाय के लोगों ने मुझे लिखा है," जेब में से चिट्ठी निकालते हुए नेख़्लूदोव ने कहा। "जो कुछ उन्होंने ख़त में लिखा है अगर वह ठीक है, तो सचमुच उनका मुक़द्दमा बहुत दिलचस्प है। आज मैं उन्हें ख़ुद मिल कर पता लगाऊंगा।"

"आप तो एक तरह से जेल का चोंगा बने हुए हैं, या नल कह लीजिये, जिसके ज़रिये क़ैदियों की शिकायतें बाहर पहुंचने लगी हैं," वकील ने मुस्करा कर कहा, "यह बहुत बड़ा काम है, आप इसे संभाल नहीं पायेंगे।"

"लेकिन यह एक ख़ास ही क़िस्म का मुक़द्दमा है," नेख़्लूदोव ने कहा और मुक़द्दमे का संक्षिप्त सा ब्योरा देने लगा। कुछ किसान इंजील पढ़ने के लिए अपने गांव में इकट्ठे हुए, लेकिन पुलिस ने आ कर उन्हें उठा दिया। अगले इतवार को वे फिर इकट्ठे हुए। अब की बार पुलिस का एक अफ़सर आया और उन्हें पकड़ कर कचहरी में ले गया। मेजिस्ट्रेट ने जिरह की, और सरकारी वकील ने अभियोग लगाया और जजों ने उन्हें अदालत के सुपुर्द किया। सरकारी वकील ने उन पर वह अभियोग लगाया जिसके लिए ठोस शहादत मौजूद थी—इंजील। बस, उन्हें देश-निकाला दे दिया गया। "कितनी भयानक बात है," नेख़्लूदोव ने कहा, "क्या सचमुच ऐसी बातें हो सकती हैं?"

"इसमें हैरान होने की बात क्या है?"

"क्यों, मैं तो सोचता हूं इसकी हर बात विचित्र है। पुलिस के अफ़सर का रवैया तो मेरी समझ में आ सकता है, क्योंकि वे लोग तो केवल हुक्म की तामील करना जानते हैं, लेकिन सरकारी वकील तो एक पढ़ा-लिखा आदमी होता है, वह ऐसी नालिश लगाये..."

"बस, यहीं हम लोग भूल कर जाते हैं। हम समझते हैं कि सरकारी वकील और सामान्यतया जज वग़ैरा उदार विचारों वाले लोग होंगे। एक

ज़माना था जब वे उदार हुआ करते थे, लेकिन अब वह बात नहीं रही। अब तो वे केवल सरकारी अफ़सर हैं, इससे ज़्यादा कुछ नहीं, उन्हें तो केवल अपनी तनख़्वाह से मतलब है। उन्हें तनख़्वाहें मिलती हैं, मगर वे इससे भी ज़्यादा पैसे चाहते हैं। बस, सिद्धान्त तो वहीं ख़त्म हो जाते हैं। जिस पर चाहें आप उनसे मुक़द्दमा चलवा सकते हैं, अदालत में पेश करवा सकते हैं, सज़ा दिलवा सकते हैं।"

"हां, मगर ऐसा तो कोई क़ानून नहीं कि कुछ आदमी मिल कर इंजील पढ़ना चाहते हैं तो आप उन्हें पकड़ कर साइबेरिया भिजवा दें।"

"हां, कड़ी मशक़्क़त की सज़ा दिलवा कर साइबेरिया भेज सकते हैं। बस, केवल इतना भर साबित करने की ज़रूरत है कि इंजील की व्याख्या करते समय ऐसी बातें कही गईं जो चर्च द्वारा दी गई व्याख्या से पृथक हैं। यदि लोगों के सामने आप प्राचीन यूनानी चर्च की आलोचना करते हैं तो धारा १९६ के अनुसार आपको साइबेरिया में निर्वासित किये जाने की सज़ा होगी।"

"नामुमकिन है!"

"मैं ठीक कहता हूं, आप यक़ीन मानिये। मैं तो इन सज्जनों को, अपने जज-भाइयों को हमेशा कहा करता हूं," वकील कहता गया, "कि मैं आपका एहसान माने बिना नहीं रह सकता क्योंकि मैं अभी तक जेलख़ाने से बाहर हूं। अगर हम और आप, और सब लोग जेलख़ाने से बाहर हैं तो उन्हीं की मेहरबानी से। वरना उनके इशारे भर की देर है कि हमारे अधिकार छीन कर हमें ये साइबेरिया भेज दें। दूर नहीं सही, साइबेरिया के नज़दीकी इलाक़ों में तो भेज ही देंगे।"

"अगर सब बात सरकारी वकील और उस जैसे अन्य अफ़सरों पर ही निर्भर है कि उनका मन आये तो क़ानून की पैरवी कराएं, वरना उसे भूले रहें तो फिर मुक़द्दमे चलाने का मतलब ही क्या है?"

वकील ठहाका मार कर हंस पड़ा।

"आप भी अजीब सवाल पूछते हैं! भले आदमी, यह तो फ़िलासफ़ी है, दर्शनशास्त्र की बात है। इस पर भी हम विचार कर सकते हैं। क्या आप शनिवार को हमारे यहां आ सकते हैं? वहां आपको वैज्ञानिक, साहित्यकार और कलाकार मिलेंगे। वहां पर हम इन आम विषयों पर विचार कर सकते हैं," वकील ने आम विषयों पर बल देते हुए कहा, मानो

व्यंग से एक आडम्वरपूर्ण शव्द का प्रयोग कर रहा हो। "आप मेरी पत्नी से तो मिल चुके हैं न? ज़रूर आइये।"

"शुक्रिया, मैं कोशिश करूंगा," नेख़्लूदोव ने कहा, मगर वह जानता था कि झूठ कह रहा है। अगर वह कोशिश करेगा तो इस वात की कि वकील की साहित्यिक गोष्ठी से तथा उसकी वैज्ञानिकों, साहित्यिकों और कलाकारों की मित्रमण्डली से दूर रहे।

जव नेख़्लूदोव ने कहा कि अगर क़ानून की पैरवी कराने में जज लोग मनमानी कर सकते हैं तो फिर मुक़द्दमे करने का कोई मतलव ही नहीं रह जाता तो जिस ढंग से वकील ठहाका मार कर हंसा था, और जिस लहजे में वह 'दर्शनशास्त्र' और "आम विषय" शव्दों का उच्चारण कर रहा था, उसी से पता चल जाता था कि नेख़्लूदोव, वकील और उसकी मण्डली से कोसों दूर है। नेख़्लूदोव का शेनवोक जैसे अपने भूतपूर्व साथियों से भी अव कोई मेल नहीं रह गया था लेकिन उनसे भी उसकी भिन्नता इतनी अधिक नहीं होगी जितनी कि वकील तथा उसकी मित्रमण्डली से।

१२

जेलख़ाना यहां से दूर था, और काफ़ी देर हो चुकी थी, इसलिए नेख़्लूदोव वग्घी में वैठ गया। गाड़ीवान अधेड़ उम्र का आदमी था और शकल-सूरत से समझदार और दयालुस्वभाव का जान पड़ता था। एक सड़क पर एक वहुत वड़ी इमारत वन रही थी। जव वग्घी उसके पास से गुज़री तो गाड़ीवान उसकी ओर इशारा करते हुए नेख़्लूदोव को वोला—

"देखिये हुज़ूर कितनी शानदार इमारत वन रही है," उसने इस तरह गर्व से कहा मानो इमारत में उसका भी हाथ हो।

इमारत सचमुच वहुत वड़ी थी, और उसकी वनावट पेचीदा और मौलिक थी। इमारत के चारों तरफ़ देवदार की मज़वूत वल्लियों की मज़बूत मचान लग रही थी जिन्हें लोहे के विच्छुओं से एक दूसरे के साथ वांधा गया था। सड़क से इमारत को अलग रखने के लिए सड़क के किनारे लकड़ी की एक दीवार खड़ी कर दी गई थी। मचान के तख़्तों पर कामगार चींटियों की तरह इधर-उधर आ जा रहे थे। उनके कपड़े गारे से पुते हुए थे। उनमें से कुछ ईंटें लगा रहे थे, कुछ उन्हें तराश रहे थे, कुछ तसले

और वाल्टियां ढो ढो कर ऊपर ले जा रहे थे और उन्हें ख़ाली कर कर के नीचे ला रहे थे।

मचान के पास ही एक मोटा-ताज़ा आदमी, वढ़िया कपड़े पहने खड़ा, ऊपर की ओर इशारा करता हुआ किसी ठेकेदार को कुछ समझा रहा था। यह आदमी शायद गृहशिल्पी था। टेकेदार व्लादीमिर गुवेर्निया का रहने वाला था और वड़े आदर के साथ उसकी वातों को सुन रहा था। पास ही, फाटक में से इमारती सामान से लदे हुए छकड़े अन्दर जा रहे थे और ख़ाली छकड़े वाहर निकल रहे थे।

"इन लोगों को पूरा पूरा विश्वास है—जो काम कर रहे हैं उन्हें भी, और जो दूसरों से काम करवा रहे हैं, उन्हें भी—कि यह बड़ा शानदार काम हो रहा है। घर में इनकी औरतें, गर्भ में वच्चे लिए, जी तोड़ मेहनत करती हैं, इनके वच्चे, सिर पर चिथड़ों की टोपियां पहने, भूख से वेवस, धीरे धीरे मौत के मुंह में जा रहे हैं, वे हंसते भी हैं तो बूढ़ों की तरह और वार वार उनकी टांगें ऐंठ जाती हैं। लेकिन यहां इन लोगों को ज़रूर महल खड़ा करना है, एक विल्कुल फ़िज़ूल और मूर्खतापूर्ण महल, किसी उतने ही फ़िज़ूल और वेसमझ आदमी के लिए, वैसे ही किसी आदमी के लिए जो इन्हें लूटता और वरवाद करता है।"

"ठीक कहते हो, यह घर बनाना हिमाकत है," नेख़्लूदोव ने अपने मन की वात खुल कर कह दी।

"हिमाकत क्यों साहिव?" गाड़ीवान ने नाराज़ हो कर कहा, "इससे लोगों को रोज़गार मिलता है, यह हिमाकत क्यों है?"

"लेकिन इस काम का कोई फ़ायदा नहीं।"

"फ़ायदा न हो तो ये करें ही क्यों?" गाड़ीवान वोला। "लोगों को इससे रोटी मिलती है।"

नेख़्लूदोव चुप हो गया। यों भी गाड़ी के पहियों की खड़खड़ इतनी ज़्यादा थी कि वातें करना मुश्किल हो रहा था। लेकिन जव वे जेलख़ाने के नज़दीक पहुंचे और गाड़ी गोल पत्थरों वाली सड़क से हट कर समतल सड़क पर चलने लगी तो वातें करना आसान हो गया। गाड़ीवान ने फिर नेख़्लूदोव को संवोधित किया—

"शहर में इतने लोग वाहर से चले आ रहे हैं कि क्या कहूं," उसने कहा और अपनी सीट पर घूम कर किसान-मज़दूरों के एक दल की ओर

इशारा किया जो उनकी ओर चला आ रहा था। मज़दूरों ने हाथ
और कुल्हाड़ियां उठा रखी थीं और कन्धों पर अपने खाल के कोट और थैले बांधे हुए थे।

"क्या पिछले सालों से भी ज़्यादा?" नेख़्लूदोव ने पूछा।

"कोई मुक़ाबिला नहीं, साहिब। शहर में कोई जगह ख़ाली नहीं मिलती। पूछिये मत क्या हो रहा है। मालिक लोग यों मज़दूरों को इस तरह काम से बरख़ास्त करते हैं, मानो चोकर साफ़ कर रहे हों। कहीं काम नहीं मिलता।"

"क्यों?"

"आदमी बहुत ज़्यादा आ गये हैं। इतने आदमियों के लिए गुंजाइश नहीं है।"

"इतने ज़्यादा लोग क्यों आ गये हैं? वे अपने गांवों में क्यों नहीं रहते?"

"गांवों में क्या करेंगे। उन्हें ज़मीन ही जो नहीं मिलती।"

नेख़्लूदोव को ऐसा लगा जैसे गाड़ीवान ने उसकी दुखती रग छेड़ दी हो। जिस अंग पर हमें चोट लगी हो, हमें लगता है जैसे उसी पर सदा ठोकर लगती रहती है। लेकिन यह इसलिए कि अंग दुखता है और उस पर लगी ठोकर को हम अधिक महसूस करते हैं, इसी कारण ऐसा सोचते हैं।

"क्या यह संभव है कि सब जगहों पर यही कुछ हो रहा है?" नेख़्लूदोव सोचने लगा और गाड़ीवान से पूछने लगा कि उसके गांव में कुल ज़मीन कितनी है, उसके अपने पास कितनी ज़मीन है, और वह गांव छोड़ कर क्यों चला आया है।

"हमारे गांव में फ़ी किसान एक देस्यातीना ज़मीन है, हुज़ूर, और हमारे घर वालों के पास तीन देस्यातीना हैं, तीन आदमियों का हिस्सा," गाड़ीवान बड़े शौक़ से सुनाने लगा, "मेरा बाप और भाई गांव में रहते हैं और खेती करते हैं, मेरा एक दूसरा भाई फ़ौज में है। पर खेती में कुछ हो तब न! मेरा भाई भी मास्को चले आने की सोच रहा है।"

"क्या ज़मीन लगान पर नहीं मिल सकती?"

"आजकल लगान पर कैसे मिलेगी? ज़मींदारों ने तो अपनी ज़मीनें लुटा दीं, और वे अब आ गई हैं व्यापारियों के हाथ। उनसे लगान पर ज़मीन नहीं मिल सकती, वे ख़ुद काश्त करते हैं। हमारे गांव में एक

फ़्रांसीसी साहिब की हुकूमत है। हमारे पहले ज़मींदार से उसने सारी ज़मीन-जायदाद ख़रीद ली, अब वह आगे किसी को लगान पर नहीं देता। बस, क़िस्सा ख़त्म हुआ।"

"यह फ़्रांसीसी कौन है?"

"दुफ़ार है साहिब, इस फ़्रांसीसी का नाम। शायद आपने कहीं सुना हो। बड़े थियेटर में ऐक्टरों के लिए बनावटी बालों की टोपियां बना बना कर बेचता है। काम अच्छा है इसलिए उसने ख़ूब पैसे बनाये हैं। हमारी मालकिन से उसने सारी की सारी जायदाद मोल ले ली, अब हमें लताड़ता है, जैसे उसका मन चाहे। ख़ुद आदमी बुरा नहीं है, शुक्र है भगवान् का, मगर उसकी घर वाली, क्या कहूं, ऐसी ज़ालिम है वह कि भगवान् बचाये। रूसी औरत है वह। लोगों को तो बस लूटती है। बहुत बुरी हालत है। लीजिये साहिब, यह रहा जेलख़ाना। फाटक तक ले चलूं? मगर मुझे डर है, वहां तक हमें जाने नहीं देंगे।"

१३

बाहर के दरवाज़े के पास पहुंच कर नेख़्लूदोव ने घण्टी बजायी। मगर यह सोच कर उसका दिल बैठ गया कि न मालूम आज मास्लोवा किस हालत में होगी। उसे मास्लोवा में और जेल के सभी लोगों में किसी गूढ़ रहस्य का भास होता था, और उस रहस्य के बारे में सोच कर उसका साहस टूट जाता था।

वार्डर के दरवाज़ा खोलने पर नेख़्लूदोव ने कहा कि वह मास्लोवा से मिलना चाहता है। वार्डर ने अन्दर जा कर कुछ पूछ-ताछ की और फिर लौट कर कहा कि मास्लोवा अस्पताल में है। नेख़्लूदोव अस्पताल गया। वहां पर एक नेकदिल बूढ़ा आदमी दरवाज़े पर पहरी का काम कर रहा था। उसने फ़ौरन् नेख़्लूदोव को अन्दर जाने दिया, और यह पूछ कर कि वह किससे मिलना चाहता है, उसे सीधा बच्चों के वार्ड का रास्ता बता दिया।

गलियारे में पहुंचा तो एक युवा डाक्टर बाहर निकल आया और बड़े रूखे ढंग से नेख़्लूदोव से पूछा कि क्या चाहता है। उससे कार्बोलिक ऐसिड की तीखी गन्ध आ रही थी। यह युवा डाक्टर क़ैदियों को सहूलियत दिया करता था, इसी कारण उसकी जेल के अधिकारियों से, यहां तक कि बड़े

डाक्टर तक से मुठभेड़ होती रहती थी। उसे डर था कि नेख़्लूदोव कोई नाजायज़ मांग पेश करने आया है। वह उसे दिखाना चाहता था कि वह किसी का भी लिहाज़ नहीं करता, इसी लिए वह उसके साथ रूखाई से पेश आया।

"यहां पर औरतें-वौरतें नहीं हैं। यह बच्चों का अस्पताल है।"

"हां, मैं जानता हूं, लेकिन एक क़ैदी-औरत को यहां पर सहायक नर्स के काम पर रखा गया है।"

"हां, ऐसी दो औरतें यहां पर काम करती हैं। आप क्या चाहते हैं?"

"उनमें से एक—मास्लोवा—के साथ मेरा नज़दीक का सम्बन्ध है," नेख़्लूदोव ने जवाब दिया, "मैं उससे मिलना चाहता हूं। मैं सेनेट के दफ़्तर में उसके मुक़द्दमे की अपील दाख़िल करने पीटर्सबर्ग जा रहा हूं। साथ ही मुझे उसको यह भी देना है। केवल एक तसवीर है, और कुछ नहीं," जेब में से एक लिफ़ाफ़ा निकालते हुए नेख़्लूदोव ने कहा।

"अच्छी बात है, दे दो," डाक्टर ने पसीजते हुए कहा और एक बुढ़िया को सम्बोधित करते हुए जिसने सफ़ेद एप्रन पहन रखा था, क़ैदी मास्लोवा को बुलाने के लिए कहा। "आप यहां बैठेंगे या वेटिंग रूम में?" उसने पूछा।

"शुक्रिया," नेख़्लूदोव ने कहा, फिर यह देख कर कि डाक्टर का रुख़ बदल गया है, उसने अवसर का लाभ उठाते हुए पूछ लिया कि मास्लोवा काम कैसा करती है, क्या वे उसके काम से सन्तुष्ट हैं।

"अच्छा काम करती है, जिस तरह की ज़िन्दगी वह पहले बिताती रही है, उसे देखते हुए तो मैं कहूंगा कि काफ़ी अच्छा काम करती है। लीजिये वह आ गई।"

एक दरवाज़े में से बूढ़ी नर्स निकल कर आई और उसके पीछे मास्लोवा चली आ रही थी। मास्लोवा ने धारीदार पोशाक पहन रखी थी और उसके ऊपर सफ़ेद एप्रन लगा रखा था। सिर पर रूमाल था, जिससे उसके बाल प्रायः बिल्कुल ढक गये थे। नेख़्लूदोव को देखते ही वह लजा गई, और खड़ी हो गई मानो संकोच कर रही हो। फिर उसने भौंहें सिकोड़ीं, और नीचे की ओर देखते हुए गलियारे के बीचोंबीच जहां छोटी सी दरी बिछी थी तेज़ तेज़ चलती हुई सीधी उसकी ओर आने लगी। पास पहुंचने पर पहले तो नेख़्लूदोव से हाथ नहीं मिलाना चाहती थी, फिर

मिला भी लिया, और उसका चेहरा लज्जा से और भी लाल हो गया।

नेख़्लूदोव को उससे मिले काफ़ी दिन हो गये थे। आख़िरी बार उस दिन मिला था जब मास्लोवा ने उससे माफ़ी मांगी थी कि वह गुस्से में आ कर अंट-संट बोलती रही थी। नेख़्लूदोव का ख़्याल था कि आज भी उसकी मन:स्थिति वैसी ही होगी। मगर नहीं, आज वह बहुत कुछ बदली हुई थी। उसके चेहरे पर एक नया ही भाव नजर आ रहा था, एक प्रकार का संकोच और लज्जा का भाव और साथ ही, उसे लगा, जैसे उसके प्रति एक प्रकार का वैमनस्य का भाव भी है। नेख़्लूदोव ने मास्लोवा से भी वही बात कही जो उसने डाक्टर से कही थी कि वह पीटर्सबर्ग जा रहा है। फिर उसने तसवीर वाला लिफ़ाफ़ा निकाल कर उसके हाथ में दिया जिसे वह पानोवो से लाया था।

"पानोवो में मुझे यह तसवीर मिली—पुरानी तसवीर है—मैं साथ लेता आया। शायद तुम्हें अच्छी लगे। इसे ले लो।"

मास्लोवा ने भौंहें उठा कर नेख़्लूदोव की ओर देखा। उसकी ऐंचदार आंखें आश्चर्य से उसकी ओर देख रही थीं, मानो पूछ रही हों—"यह किस लिए?" बिना कुछ कहे उसने तसवीर ले ली और उसे अपने एप्रन की जेब में रख लिया।

"वहां मैं तुम्हारी मौसी से मिला था," नेख़्लूदोव बोला।

"अच्छा?" मास्लोवा ने उपेक्षा से कहा।

"यहां रहना अच्छा लगता है?" नेख़्लूदोव ने पूछा।

"हां, अच्छा है," मास्लोवा ने जवाब दिया।

"काम बहुत मुश्किल तो नहीं?"

"नहीं, मगर मुझे इस काम की अभी आदत नहीं है।"

"चलो, अगर तुम ख़ुश हो तो मैं भी ख़ुश हूं। वहां से तो बेहतर है।"

"वहां से—कहां से?" वह बोली, और उसका चेहरा फिर लाल हो गया।

"वहां से—जेलख़ाने से," नेख़्लूदोव ने फ़ौरन् जवाब दिया।

"बेहतर क्यों?" मास्लोवा ने पूछा।

"मैं सोचता हूं कि यहां पर ज़्यादा अच्छे लोग मिलते होंगे। जिस तरह के लोग वहां पर थे वैसे यहां पर नहीं होंगे।"

"वहां पर भी कई लोग बहुत अच्छे थे," वह बोली।

"मैं मेन्शोव मां-बेटे के मुक़द्दमे के बारे में कोशिश कर रहा हूं। ख़्याल है उन्हें छोड़ दिया जायेगा," नेख़्लूदोव ने कहा।

"भगवान् करें छूट जायं। वह बुढ़िया इतनी भली औरत है," बुढ़िया के बारे में फिर एक बार मास्लोवा ने अपनी राय दोहरा दी। उसके होंठों पर हल्की सी मुस्कान आ गई।

"मैं आज पीटर्सबर्ग जा रहा हूं। जल्दी ही तुम्हारी अपील की सुनाई होगी, और मेरा ख़्याल है कि सज़ा मंसूख़ हो जायेगी।"

"मंसूख़ हो या न हो अब कोई फ़रक़ नहीं पड़ता," वह बोली।

"अब क्यों?"

"यों ही," उसने कहा और झट से नेख़्लूदोव की आंखों में देखा, मानो कुछ पूछ रही हो।

इस शब्द से और उसकी आंखों के भाव से नेख़्लूदोव ने यह मतलब निकाला कि मास्लोवा जानना चाहती है कि क्या मैं अपने निश्चय पर अब भी दृढ़ हूं या मैं उसके इन्कार कर देने पर चुप हो गया हूं।

"तुम कहती हो कि कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। मैं नहीं समझ सकता कि क्यों," वह बोला, "जहां तक मेरा सम्बन्ध है, मुझे सचमुच कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि तुम्हें छोड़ते हैं या नहीं। मैं तो हर हालत में वही करूंगा जो मैंने कहा था," उसने निश्चय से कहा।

मास्लोवा ने सिर ऊंचा किया। उसकी काली ऐंचदार आंखें एकटक नेख़्लूदोव के चेहरे को देखने लगीं, चेहरे को ही नहीं, मानो उससे आगे भी कहीं देख रही हों। उसका चेहरा ख़ुशी से चमक उठा। लेकिन जो भाव उसकी आंखों में था, वह उसके शब्दों से लक्षित नहीं हुआ।

"यह तुम व्यर्थ ही कह रहे हो," वह बोली।

"मैं तो इसलिए कह रहा हूं कि तुम्हें पता चल जाय।"

"सब कुछ कहा जा चुका है, और कुछ कहने की कोई ज़रूरत नहीं है," बड़ी मुश्किल से अपनी मुस्कराहट दबाते हुए उसने कहा।

सहसा अस्पताल के अन्दर से शोर सुनाई दिया, फिर एक बच्चे के रोने की आवाज़ आई।

"शायद मुझे बुला रहे हैं," वह बोली और बेचैनी से मुड़ कर देखा।

"अच्छा, तो ख़ुदा हाफ़िज़," नेख़्लूदोव ने कहा।

नेख़्लूदोव ने हाथ आगे बढ़ाया, लेकिन मास्लोवा बिना हाथ मिलाये, घूम कर वापस जाने लगी, मानो उसने नेख़्लूदोव को हाथ बढ़ाते देखा ही न हो। उसका दिल बल्लियों उछल रहा था जिसे वह छिपाने की चेष्टा कर रही थी। वह तेज़ तेज़ चलती हुई उसी छोटी सी दरी पर वापस जाने लगी।

"इसके दिल में क्या है? वह क्या महसूस करती है? क्या वह मेरा इम्तहान लेना चाहती है या सचमुच वह मुझे माफ़ नहीं कर सकती? क्या अपने दिल की बात वह बता नहीं पा रही है, या बताना चाहती ही नहीं? उसका दिल पसीजा है या और भी कड़ा हो गया है?" नेख़्लूदोव मन ही मन सोचने लगा, मगर इन प्रश्नों का उसे कोई उत्तर नहीं मिला। वह केवल इतना ही जानता था कि मास्लोवा बदल गई है, उसकी आत्मा की गहराइयों में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहा है। और यह परिवर्तन उसे न केवल मास्लोवा के साथ ही परन्तु भगवान् के साथ भी मिलाता था, उसी की दया से यह परिवर्तन हो रहा था। इस संयोग से उसका रोम रोम पुलकित हो रहा था।

मास्लोवा अपने वार्ड में लौट कर आयी जहां आठ छोटी छोटी खाटें बिछी थीं। नर्स ने उसे एक खाट का बिस्तर ठीक करने को कहा। बिस्तर की चादर ठीक करते समय वह बहुत ज़्यादा आगे की ओर झुक गई जिस कारण उसका पांव फिसल गया और मुश्किल से गिरते गिरते बची।

एक नन्हा सा लड़का जिसके गले पर पट्टी बन्धी थी, और जो बीमारी से अभी अभी उठा था, यह देख कर हंस पड़ा। मास्लोवा भी अपने को रोक न सकी और ठहाका मार कर हंस पड़ी। उसे हंसते देख कर कुछेक और बच्चे भी हंसने लगे। नर्स गुस्से से डांटने लगी—

"क्या हुआ है जो खी खी कर रही हो। क्या इसे भी चकला समझ रखा है? जाओ और जा कर खाना लाओ।"

मास्लोवा चुप हो गई, और बर्तन उठा कर बाहर जाने लगी। लेकिन जाते हुए उसकी नज़र फिर उसी पट्टी वाले लड़के से जा मिली जिसे हंसने की मनाही थी और वह फिर मुंह दबा कर हंस दी।

जब कभी मास्लोवा अकेली होती तो वह लिफ़ाफ़े में से तसवीर को थोड़ा सा खींच कर देख लेती और ख़ुश हो लेती। लेकिन पूरी की पूरी तसवीर को वह केवल शाम के ही वक़्त देख पायी जब ड्यूटी से फ़ारिग़

हो कर, वह अपने सोने वाले कमरे में गई, जिसमें वह बुढ़िया नर्स के साथ रहती थी। उसने लिफ़ाफ़े में से तसवीर निकाली और चुपचाप बैठ कर निहारने लगी, उसकी आंखें तसवीर की एक एक चीज़ को सहलाने लगीं—चेहरे, कपड़े, बरामदे की सीढ़ियां, पीछे की झाड़ियां जिनके आगे वह और नेख्लूदोव और उसकी फूफियों के चेहरे थे। तसवीर पुरानी हो कर फीकी पड़ गई थी। बड़ी देर तक वह उसे देखती रही। उसकी आंखें विशेषकर अपनी आकृति पर बार बार जातीं। कितना प्यारा चेहरा था मेरा बचपन के दिनों में! माथे पर घुंघराले बाल झूला करते थे। वह उसे देखने में इतनी खो गई कि जब उसकी साथिन-नर्स कमरे में आयी तो उसे पता ही नहीं चला।

"क्या दे गया है तुम्हें?" फ़ोटो को झुक कर देखते हुए नर्स ने पूछा। नर्स मोटी-ताज़ी और अच्छे स्वभाव की थी। "यह कौन है? क्या तुम हो?"

"और कौन होगा?" मुस्करा कर अपनी साथिन के चेहरे की ओर देखते हुए मास्लोवा ने कहा।

"और यह कौन है—क्या वह है? और यह कौन है, उसकी मां है?"

"नहीं, फूफी है। क्या तसवीर देख कर तुम मुझे पहचान पातीं?"

"कभी नहीं। तुम्हारी शक्ल तो बिल्कुल बदल गई है। वक़्त भी तो बहुत हो चुका है, दस साल हो गये होंगे?"

"दस साल क्या, ज़िन्दगी बीत गई है।" सहसा मास्लोवा का दिल मसोस उठा, चेहरा उदास हो गया और भौंहों के बीच एक गहरी रेखा खिंच गई।

"क्यों भला? तुम्हारे दिन तो बड़े आराम से कटते रहे होंगे?"

"आराम से जरूर," आंखें बन्द कर सिर हिलाते हुए मास्लोवा ने दोहराया। "नरक से भी बुरी जगह थी।"

"क्यों?"

"क्यों? शाम के आठ बजे से लेकर सुबह चार बजे तक, हर रोज़।"

"तो औरतें यह धन्धा छोड़ क्यों नहीं देतीं?"

"छोड़ना चाहें भी तो नहीं छोड़ सकतीं। लेकिन इन बातों में क्या रखा है?" मास्लोवा ने कहा और फ़ोटो को मेज़ के दराज़ में फेंकती हुई उठ खड़ी हुई। वह क्षुब्ध हो उठी और बड़ी मुश्किल से अपने आंसू रोकते हुए अपने पीछे दरवाज़ा ज़ोर से बन्द करती हुई भाग कर बाहर बरामदे में चली गई।

तसवीर में खड़े सभी लोगों को देखते हुए वह अपने को उन दिनों जैसी महसूस करने लगी थी। मन ही मन कल्पना करने लगी थी कि वह उन दिनों कैसी हुआ करती थी, कितनी ख़ुश थी वह तब और अब भी उसके साथ उसका जीवन सुखी हो सकता था। उसकी साथिन के शब्दों ने उसे याद दिला दिया कि वह क्या है और "वहां" क्या रही थी और उसकी आंखों के सामने अपने जीवन की सभी वीभत्सताएं साकार हो गई, जिनका धूमिल भास तो उसे हमेशा रहता था परन्तु जिनके बारे में कभी भी उसे ध्यान से सोचने का साहस नहीं हुआ था। केवल आज वे भयानक रातें उसे स्पष्टता से याद आने लगीं। उनमें से एक रात तो ख़ास तौर पर भयानक थी। शीत-समाप्ति पर्व की रात थी और वह एक विद्यार्थी का इन्तज़ार कर रही थी। उसने उसे वचन दिया था कि वह पैसे दे कर उसे चकले में से छुड़ा ले जायेगा। उसे याद आया—रात के दो बजे का वक़्त होगा, जो लोग उसके साथ हम-बिस्तरी करने आये थे, जा चुके थे। उसने नीचे गले का रेशमी फ़्रॉक पहन रखा था, जिस पर जगह जगह शराब के धब्बे थे। बाल उलझे हुए थे और उनमें लाल फीता बंधा हुआ था। थकी-मांदी, अंग अंग में शिथिल, और कुछ कुछ नशे में बेसुध वह अपनी आसामियों को विदा कह कर आयी थी और पियानो बजाने वाली के पास जा बैठी थी। उस वक़्त नाच थोड़ी देर के लिए थम गया था। पियानो बजाने वाली औरत बड़ी दुबली-पतली थी और उसके चेहरे पर दाग़ थे। वह पियानो पर वायलिन बजाने वाले का साथ देती थी। मास्लोवा अपने असह्य, कठोर जीवन की बातें करने लगी थी। पियानो बजाने वाली औरत ने भी यही कहा, कि मैं भी परेशान हूं और इस तरह की ज़िन्दगी को बदलना चाहती हूं। सहसा क्लारा भी उनसे आ मिली, और तीनों ने अपनी ज़िन्दगी बदलने का निश्चय कर लिया। वे सोच रही थीं कि अब चकले में और कोई नहीं आयेगा, रात ख़त्म हो चुकी है। वे अपने अपने कमरों में जाने ही वाली थीं कि ड्योढ़ी में से कुछेक शराबियों की आवाज़ें आने लगीं। वायलिन पर फिर धुन बजने लगी और पियानो बजाने वाली ने उसका साथ देते हुए क्वाड्रिल नाच की धुन बजानी शुरू कर दी। यह धुन किसी जोशीले रूसी गीत की थी। एक नाटा सा आदमी दुमदार कोट पहने और सफ़ेद नकटाई लगाये मास्लोवा की तरफ़ बढ़ आया। पसीने से तर, उसके मुंह से शराब की बू आ रही थी। हिचकियां लेता हुआ

वह उसके पास आया और उसे बग़ल में भर कर नाचने लगा। जब नाच का पहला भाग ख़त्म हुआ तो उसने अपना कोट भी उतार दिया। इसी तरह एक मोटे से, दाढ़ी वाले आदमी ने क्लारा को पकड़ लिया। उसने भी ड्रेस-कोट पहन रखा था (ये लोग सीधे एक नाच पर से आ रहे थे), बड़ी देर तक वे नाचते, उछलते, चीख़ते-चिल्लाते और शराब पीते रहे... और इस तरह एक साल गुज़र गया, फिर दूसरा साल, फिर तीसरा। उसका चेहरा बदलता नहीं तो क्या होता? और इस सब का मूलकारण नेख़्लूदोव था! सहसा उसका मन नेख़्लूदोव के विरुद्ध फिर पहली सी कटुता से भर उठा। उसका जी चाहा कि उसे जी भर कर गालियां दे, उसे बुरा-भला कहे। उसे अफ़सोस होने लगा कि आज उसे क्यों कुछ नहीं कहा। मुझे चाहिए था मैं उससे कहती कि मैं तुम्हें अच्छी तरह जानती हूं, अब तुम्हारे झांसे में नहीं आऊंगी। तुमने मेरे शरीर का तो उपभोग किया है, पर अब मैं तुम्हें अपनी आत्मा का उपयोग नहीं करने दूंगी, तुम कभी भी मुझे अपनी उदारता का पात्र नहीं बना सकोगे। मास्लोवा को अपने आप पर तरस आने लगा। उसका जी चाहा कि कहीं से दो घूंट शराब मिल पाय ताकि दिल में यह उठती हुई आत्मानुकम्पा की भावना तथा नेख़्लूदोव के प्रति निरर्थक भर्त्सना की भावना दब जायं। जेलख़ाने में होती तो वह ज़रूर अपना वचन तोड़ देती, लेकिन यहां शराब मिलती नहीं थी। उसे हासिल करने के लिए छोटे डाक्टर से दरख़ास्त करनी पड़ती थी। मगर मास्लोवा उससे डरती थी क्योंकि वह उससे छेड़छाड़ करने लगता था। पुरुषों के साथ अब किसी प्रकार का भी घनिष्ठ सम्पर्क रखने में उसे घृणा होती थी। थोड़ी देर तक वह बरामदे में एक बेंच पर बैठी रही फिर अपने छोटे से कमरे में लौट आयी। उसने अपनी साथिन के शब्दों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया और बड़ी देर तक अपने बर्बाद जीवन के बारे में सोचती हुई आंसू बहाती रही।

१४

पीटर्सबर्ग में नेख़्लूदोव को तीन काम करने थे: सेनेट में मास्लोवा की दरख़्वास्त देना, अपील कमेटी में फ़ेदोस्या विर्युकोवा का मामला पेश करना, वेरा बोगोदूख़ोव्स्काया का काम: उसकी मित्र शूस्तोवा को जेल

से रिहा करवाना, और जेंडार्मेरी के दफ़्तर में जा कर इस बात की इजाज़त हासिल करना कि एक मां को अपने बेटे से जेल में मिलने दिया जाय। इन दो बातों को जिनके बारे में वेरा ने उसे लिखा था, वह मन में एक ही समझता था। और चौथा मामला उस मण्डली का था जिन्हें अपने परिवारों से अलग कर के काकेशस में निर्वासित किया जा रहा था क्योंकि उसके सदस्य इकट्ठे बैठ कर इंजील पढ़ते और उस पर विचार करते थे। इस मामले को निबटाने की उसने मन ही मन शपथ ले ली थी, हालांकि उस मंडली को उसने कोई ऐसा वचन नहीं दिया था।

आख़िरी बार मास्लेन्निकोव को मिलने के बाद और गांवों का दौरा करने के बाद नेख़्लूदोव का मन उस समाज के प्रति घृणा से भर उठा था जिसमें वह आज तक रहता आया था। यह वह समाज था जो करोड़ों इन्सानों की यन्त्रणा को बड़ी सावधानी से छिपाये रहता है ताकि कुछेक लोग ऐश-आराम की ज़िन्दगी बसर कर सकें। इस समाज में रहने वाले लोग इन यन्त्रणाओं को नहीं देखते, न ही देख सकते हैं, न ही वे अपने जीवन की क्रूरता तथा दुष्टता को ही देख पाते हैं। समाज के प्रति नेख़्लूदोव की यह भावना थी हालांकि इस सम्बन्ध में उसने कोई निश्चय नहीं किया था। अब इस समाज में रहते हुए नेख़्लूदोव को झेंप होती थी और उसका मन आत्मभर्त्सना से भर उठता था। फिर भी वह बार बार इसी समाज की ओर खिंचा जाता था, क्योंकि उसके मित्र और सम्बन्धी इसी समाज के रहने वाले थे, और उसे स्वयं इस समाज में रहने की आदत पड़ गई थी। इस समय उसका सारा ध्यान एक ही बात पर केन्द्रित था कि वह किसी भांति मास्लोवा तथा अन्य दुःखी जनों की सहायता कर सके। इस काम को करने के लिए भी यह ज़रूरी हो जाता था कि वह इसी समाज के लोगों से मिले और उनसे मदद मांगे, हालांकि उनके प्रति उसके मन में कोई आदर का भाव नहीं उठता था। आदर ही क्यों, उन्हें मिल कर उसके मन में क्रोध और घृणा पैदा होती थी।

पीटर्सबर्ग में पहुंच कर नेख़्लूदोव अपनी मौसी के यहां ठहरा। उसकी मौसी काउंटेस चार्स्काया एक भूतपूर्व मन्त्री की पत्नी थी। वहां पहुंचते ही नेख़्लूदोव ने फिर अपने को उसी कुलीन समाज में पाया जिससे वह मन ही मन दूर होता जा रहा था। यह उसे बड़ा अप्रिय लगा मगर करता भी तो क्या। अगर किसी होटल में रहता तो मौसी नाराज़ होती। इसके

अतिरिक्त उसकी मौसी का बड़े बड़े लोगों से सम्पर्क था, और जो काम नेख़्लूदोव यहां करने आया था उनमें उसे मौसी से बड़ी मदद मिल सकती थी।

"ज़रा बताओ तो, यह मैं क्या सुन रही हूं। यह तुम क्या घोड़े दौड़ाने लगे हो," नेख़्लूदोव के पहुंचने के फ़ौरन् ही बाद, अपने भांजे को काफ़ी पिलाते हुए काउंटेस येकातेरीना इवानोव्ना चार्स्काया ने कहा। "Vous posez pour un Howard!* मुजरिमों की मदद करते फिरते हो, जेलख़ानों के चक्कर काटते हो, सुधार का काम करने लगे हो।"

"नहीं नहीं, मैं सुधार क्या करूंगा।"

"क्यों नहीं। बड़ी अच्छी बात है। पर मैं सुनती हूं इस काम से कोई प्रेम-कहानी भी जुड़ी हुई है। सुनाओ मुझे सारा क़िस्सा क्या है।"

मास्लोवा के साथ अपने सम्बन्ध की सारी कहानी नेख़्लूदोव ने अपनी मौसी को सच सच सुना दी।

"हां मुझे याद है। तुम्हारी मां बेचारी ने मुझे बताया था। यह उन दिनों की बात है जब तुम उन बुढ़िया औरतों के पास रहते थे। उनकी ज़रूर यह इच्छा रही होगी कि तुम उनकी नौकरानी से शादी कर लो।" (काउंटेस येकातेरीना इवानोव्ना को नेख़्लूदोव की फूफियों से नफ़रत थी)। "तो यह वह लड़की है। Elle est encore jolie?"**

येकातेरीना इवानोव्ना साठ साल की हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थ, फुर्तीली और बातूनी औरत थी। क़द की ऊंची-लम्बी और मज़बूत थी, और होंठों पर उसके हल्की सी काली मूंछ थी। नेख़्लूदोव उसे बहुत चाहता था। बचपन से ही वह उसके हंसमुख स्वभाव और ओजस्विता की ओर आकर्षित हुआ था।

"नहीं ma tante,*** वह बात तो ख़त्म हो चुकी है। अब तो मैं केवल उसकी मदद करना चाहता हूं क्योंकि बिना किसी जुर्म के उसे जेल में डाल दिया गया है। यह मेरे कारण हुआ है, मैं ही उसके दुर्भाग्य का कारण हूं। मैं सोचता हूं यह मेरा कर्त्तव्य है कि जो भी उसके लिए कर सकूं, करूं।"

---

*तुम बड़े हॉवर्ड बनते फिरते हो। (फ़्रेंच)

**वह अभी भी सुंदर है? (फ़्रेंच)

***मौसी, (फ़्रेंच)

"पर मैंने तो सुना है कि तुम उसके साथ शादी करने की सोच रहे हो। क्या यह सच है?"

"हां, मेरा इरादा था, लेकिन वह शादी करना नहीं चाहती।"

येकातेरीना इवानोव्ना आश्चर्यचकित रह गई। चुपचाप, भौंहें चढ़ाये और आंखें नीची किये वह अपने भांजे के चेहरे की ओर देखती रही। फिर सहसा उसके चेहरे का भाव बदल गया। वह अधिक ख़ुश नज़र आने लगी और बोली—

"तो वह तुमसे ज़्यादा समझदार है। तुम तो निरे पागल हो। क्या तुम सचमुच उसके साथ शादी कर लेते?"

"ज़रूर।"

"यह जानते हुए भी कि उसकी ज़िन्दगी कैसी रही है?"

"यह जान कर तो और भी निश्चय से शादी करता, क्योंकि मैं ही उसका कारण था।"

"तुम बहुत भोले हो," होंठों पर आयी मुस्कान दबाते हुए मौसी ने कहा। "बहुत ही भोले हो, और इसी कारण मुझे इतने प्यारे भी लगते हो," उसने "भोले" शब्द को दोहराते हुए कहा, प्रत्यक्षतः इसे बार बार कहना उसे अच्छा लग रहा था। ऐसा जान पड़ता था जैसे इस एक शब्द से उसे अपने भांजे की नैतिक स्थिति का ठीक ठीक पता चल रहा हो। "क्या तुम जानते हो एलीन एक बहुत अच्छा आश्रम चला रही है—मैग्डेलीन गृह। यह तो बड़ा अच्छा हुआ जो मुझे तुमने यह बात सुना दी। मैं एक बार वहां गई थी। उनमें जो लोग रहते हैं, उफ़! क्या बताऊं बेहद गंदे हैं! घर लौट कर मुझे बार बार नहाना पड़ा। पर एलीन तन-मन से इस काम में जुटी हुई है। हम उसे उसी आश्रम में रख देंगे—मेरा मतलब है, तुम्हारी उस लड़की को। अगर कहीं उसका सुधार हो सकता है तो एलीन के ही आश्रम में, और कहीं नहीं।"

"पर उसे तो कड़ी मशक़्क़त की सज़ा मिल चुकी है। उसी की अपील करने तो मैं यहां आया हूं। इसके लिए मैं आपसे भी प्रार्थना करना चाहता हूं।"

"अरे, और अपील कहां करोगे?"

"सेनेट में।"

"ओह, सेनेट में। मेरा चचेरा भाई लेव सेनेट में ही है, लेकिन वह

तो बेवकूफ़ों के विभाग–हैरल्डी डिपार्टमेंट–में है। वहां के किसी असली अधिकारी को तो मैं नहीं जानती। सेनेट में जर्मन ही जर्मन भरे पड़े हैं–गे, फ़े, डे–tout l'alphabet,* या सभी तरह के इवानोव, सेम्योनोव, निकीतन, और या फिर इवानेन्को, सिमोनेन्को, निकीतेन्को pour varier** भरे पड़े हैं। Des gens de l'autre monde.*** फिर भी मैं तुम्हारे मौसा जी से बात करूंगी। वह उन्हें जानते हैं। वह सब तरह के लोगों को जानते हैं। मैं उन से ज़िक्र तो कर दूंगी, लेकिन समझाना तुम्हीं। वह मेरी बात कभी नहीं समझते। मैं कुछ भी कहूं, वह यही रट लगाये रहते हैं कि उनके पल्ले कुछ नहीं पड़ा। C'est un parti pris.**** बाक़ी सबके पल्ले पड़ जाता है, केवल इन्हीं के पल्ले कुछ नहीं पड़ता।"

ऐन उसी वक़्त मोज़े पहने एक चोबदार ने कमरे में प्रवेश किया और चांदी की रकाबी में एक चिट्ठी ला कर मालकिन के सामने पेश की।

"लो, ख़ुद एलीन की ही चिट्ठी है। तुम्हें कीज़ेवेतेर का भाषण सुनने का भी मौक़ा मिल जायेगा।"

"कीज़ेवेतेर कौन है?"

"कीज़ेवेतर? आज शाम मेरे साथ चलना, तुम्हें पता चल जायेगा कीज़ेवेतेर कौन है। उसकी वाणी में ऐसी शक्ति है कि बड़े से बड़ा मुजरिम भी उसके सामने घुटनों के बल बैठ कर रोने लगता है और अपने पापों का प्रायश्चित्त करने लगता है।"

काउंटेस येकातेरीना इवानोव्ना उन लोगों के मत की अनुयायी थी जो यह मानते हैं कि अपने पाप क़बूलने में ईसाई धर्म का सार निहित है। यह बड़ी अजीव बात थी क्योंकि येकातेरीना इवानोव्ना का यह विश्वास उसके स्वभाव से मेल नहीं खाता था। उन दिनों इस मत का फ़ैशन सा चल पड़ा था। जहां कहीं भी, जिस किसी सभा में इसका प्रचार होता, येकातेरीना इवानोव्ना वहां जा पहुंचती। और इस मत के "अनुयाइयों" की अपने घर में भी सभाएं करती। इस मत में हर प्रकार की धार्मिक विधियों, देव-प्रतिमाओं, अनुष्ठानों इत्यादि का निषेध था, परन्तु येकातेरीना

*पूरी वर्णमाला, (फ़्रेंच)

**विविधता के लिए। (फ़्रेंच)

***दूसरी सोसाइटी के लोग। (फ़्रेंच)

****यह तो उसने पहले से ही निश्चित कर रखा है। (फ़्रेंच)

इवानोव्ना ने अपने सभी कमरों में देव-प्रतिमाएं लटका रखी थीं, यहां तक कि सोने वाले कमरे में पलंग के ऐन ऊपर भी दीवार पर एक देव-प्रतिमा लटक रही थी। साथ ही वह चर्च की सभी विधियों-अनुष्ठानों का पालन भी करती थी। उसे इसमें कोई असंगति नज़र नहीं आती थी।

"अगर तुम्हारी वह मैग्डेलीन उसका भाषण सुन पाये तो सचमुच उसके पाप धुल जायेंगे। वह बदल जायेगी," काउंटेस ने कहा। "आज रात ज़रूर घर पर ही रहना। तुम उसका भाषण सुन पाओगे। वह बड़ा विलक्षण आदमी है।"

"मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं ma tante."

"लेकिन मैं जो तुम्हें कहती हूं कि वह बड़ा दिलचस्प होगा। ज़रूर घर पहुंच जाना। इसके अलावा तुम्हें मेरे साथ कौन सा काम है? Videz votre sac."*

"एक काम मुझे क़िले में करवाना है।"

"क़िले में? उसके लिए मैं तुम्हें बैरन क्रीगस्मथ के नाम चिट्ठी दे सकती हूं। C'est un très brave homme.** लेकिन तुम भी तो उसे जानते हो, वह तुम्हारे पिता का अच्छा मित्र था। Il donne dans le spiritisme.*** पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, वह अच्छा आदमी है। वहां तुम्हें क्या काम है?"

"एक स्त्री के लिए इजाज़त लेनी है कि वह जेलख़ाने में अपने बेटे से मिल सके। लेकिन मुझे मालूम हुआ है कि यह काम क्रीगस्मथ के बस का नहीं है, केवल चेर्व्यान्स्की ही इसकी इजाज़त दे सकता है।"

"दो कौड़ी का आदमी है, चेर्व्यान्स्की। पर मेरियेट उसी की बीबी है न। मेरे कहने पर वह ज़रूर यह काम कर देगी। Elle est très gentille."****

"मुझे एक दूसरी औरत के लिए भी अर्ज़ी करना है। वह भी जेल में बन्द है, उसे यह मालूम तक नहीं कि उसे क्यों क़ैद किया गया।"

"रहने दो जी, उसे ख़ूब मालूम होगा। ये बाल-कटी छोकरियां सब

---

*बता दो सब कुछ। (फ़्रेंच)

**वह बहुत नेक आदमी है। (फ़्रेंच)

***उसे प्रेतवाद में रुचि है। (फ़्रेंच)

****वह बहुत भली है। (फ़्रेंच)

अच्छी तरह जानती हैं कि इन्हें क्यों वहां रखा हुआ है। जो हुआ है ठीक हुआ है। उन्हें अपने किये की मिल रही है।"

"यह तो मैं नहीं जानता कि ठीक हुआ है या नहीं, लेकिन वे बड़े कष्ट में हैं। आप तो मौसी, ईसाई धर्म को मानने वाली हैं, और इंजील के सदुपदेशों में विश्वास रखती हैं, फिर भी आपके दिल में दर्द नहीं है।"

"उसका इसके साथ क्या सम्बन्ध है? इंजील इंजील है, और जो चीज़ बुरी है वह बुरी है। मैं तो दिखावे के लिए भी यह नहीं कह सकती कि मुझे नकारवादी अच्छे लगते हैं। ख़ास तौर पर ये कटे बालों वाली नकारवादी छोकरियां तो मुझे फूटी आंख नहीं सुहातीं।"

"क्यों नहीं सुहातीं?"

"पूछते हो क्यों? पहली मार्च के क़िस्से के बाद यह पूछते हो?"*

"हर किसी ने तो उसमें भाग नहीं लिया था।"

"भले ही न लिया हो। जो काम उनका नहीं उसमें वे क्यों नाक घुसेड़ती हैं? ये काम औरतों के नहीं हैं।"

"पर आप मेरियेट के बारे में तो समझती हैं कि वह काम कर सकती है।"

"मेरियेट? हां, मेरियेट आख़िर मेरियेट ठहरी। वे छोकरियां भगवान् जाने क्या हैं। हर किसी को सीख देती फिरती हैं।"

"सीख नहीं, वे तो जनता की मदद करना चाहती हैं।"

"उनके बिना भी हम जानती हैं किसकी मदद करें और किसकी न करें।"

"पर जनता की हालत तो बहुत बुरी है। मैं अभी देहात से आ रहा हूं। कितना अन्याय है कि किसान तो ख़ून-पसीना एक करते रहें और फिर भी उन्हें भर-पेट खाना न मिले। और हम लोग गुलछर्रे उड़ाते रहें," नेख़्लूदोव बोला। उसकी मौसी का स्वभाव बहुत अच्छा था। नेख़्लूदोव निःसंकोच अपने मन की बात कहने लगा।

"तुम क्या चाहते हो? मैं भी काम करूं और मेरे पास भी खाने-पीने को कुछ न हो?"

---

*पहली मार्च, १८८१ को (पुराने कैलेंडर के अनुसार) ज़ार अलेक्सांदर द्वितीय की हत्या की गई थी।

"नहीं, मैं यह नहीं चाहता," नेख़्लूदोव बरबस मुस्करा उठा, "मैं तो चाहता हूं कि हम सभी काम करें और सभी आराम से रहें।"

मौसी ने फिर पहले की तरह भौंहें चढ़ायीं, आंखें नीची कीं, और अनोखे ढंग से उसकी ओर देखा।

"Mon cher, vous finirez mal,"* वह बोली।

"पर क्यों?"

ऐन उसी वक़्त काउंटेस चार्स्काया के पति ने कमरे में प्रवेश किया। ऊंचा-लम्बा, चौड़े कन्धों वाला जनरल, जो पहले मन्त्री के पद पर था।

"ओह द्मीत्री, कहो कैसे हो?" उसने कहा और चुम्बन के लिए अपना गाल नेख़्लूदोव के सामने कर दिया। वह अभी अभी दाढ़ी बना कर आया था।

"तुम कब आये?" और काउंट ने चुपचाप अपनी पत्नी को माथे पर चूमा।

"Non, il est impayable,"** पति को संबोधित करते हुए काउंटेस ने कहा। "वह चाहता है कि मैं कपड़े धोया करूं और आलू खा कर गुज़र करूं। कैसा मूढ़ है। लेकिन फिर भी इसका काम कर देना। बड़ा भोला है," उसने लहजा बदल कर कहा। "तुमने सुना? कामेन्स्की की मां बहुत कष्ट में है। लोग कहते हैं कि वह बचेगी नहीं," उसने अपने पति से कहा, "तुम्हें जा कर मिलना चाहिए।"

"हां, बहुत बुरी बात है," पति ने कहा।

"अब मुझे कुछ चिट्ठियां लिखनी हैं। तुम जाओ और इनसे बात करो।"

नेख़्लूदोव ने बैठक में से निकल कर साथ वाले कमरे में क़दम रखा ही था कि मौसी की आवाज़ आयी—

"तो फिर मेरियेट को ख़त लिख दूं?"

"ज़रूर, ma tante."

"मैं ख़त में थोड़ी जगह ख़ाली रख दूंगी। बाल-कटी छोकरी के बारे में जो कुछ लिखवाना चाहोगे मैं बाद में लिख दूंगी। मेरियेट के हुक्म देने की देर है कि उसका पति तुम्हारा काम कर देगा। क्या तुम मुझे बुरी

---

*मेरे प्रिय तेरा अंत बुरा होगा, (फ़्रेंच)

**नहीं, यह बिल्कुल लाजवाब है, (फ़्रेंच)

औरत समझते हो? जिन बाल-कटी छोकरियों की तुम मदद करना चाहते हो बड़ी भयानक होती हैं। पर je ne leur veux pas de mal.* भगवान उनका मालिक है! अच्छा जाओ। मगर शाम को घर पर रहना, भूलना नहीं, कीज़ेवेतेर का उपदेश होगा, और हम प्रार्थना करेंगे। अगर कहीं तुम यों हठ न करो, पर ça vous fera beaucoup de bien.*** पर मैं जानती हूं, तुम्हारी मां और तुम भी इन मामलों में बहुत पिछड़े हुए थे। अच्छा, अब जाओ।"

१५

काउंट इवान मिख़ाइलोविच मन्त्री रह चुका था और विश्वास का बड़ा पक्का आदमी था।

एक तो उसे इस बात का दृढ़ विश्वास था कि जिस भांति पक्षी स्वभावतः कीड़े खाता है, मुलायम परों से अपने को ढके रहता है, हवा में उड़ानें भरता है उसी भांति उसके लिए भी यह स्वाभाविक है कि वह सबसे लज़ीज़ और सबसे बढ़िया व्यंजनों से भोजन करे, जिन्हें ऊंची तनख़्वाह पाने वाले बावर्चियों ने तैयार किया हो, सबसे उमदा और सबसे बढ़िया कपड़े पहने, उसकी गाड़ी में सबसे सुन्दर और सबसे तेज़ भागने वाले घोड़े जुते हों। अतः उसका यह अधिकार है कि ये सब चीज़ें उसके लिए जुटाई जायं। इसके अतिरिक्त काउंट इवान मिख़ाइलोविच का विचार था कि सरकारी ख़ज़ाने में से उसे ज़्यादा से ज़्यादा रुपया बटोरना चाहिए, जैसे भी बटोरा जा सके, ज़्यादा से ज़्यादा उपाधियां प्राप्त करनी चाहिएं, यहां तक कि वह अधिकार-चिन्ह भी, जिसमें हीरे जड़े होते हैं, और ज़्यादा से ज़्यादा राज परिवार के लोगों—स्त्रियों और पुरुषों—के सम्पर्क में रहना चाहिए। इन धारणाओं की तुलना में बाक़ी सब चीज़ों को काउंट इवान मिख़ाइलोविच तुच्छ और निरर्थक समझता था। बाक़ी चीज़ें वैसी की वैसी रहें या बदल जाएं, उसे इनसे कोई सरोकार न था। इन्हीं धारणाओं का अनुसरण करते हुए काउंट इवान मिख़ाइलोविच पीटर्सबर्ग में पिछले चालीस

---

*मैं उनका बुरा नहीं चाहती। (फ़्रेंच)

**तुम्हें इससे बहुत लाभ होगा। (फ़्रेंच)

वर्ष से रह रहा था और इस लम्बे अर्से के अन्त में मन्त्री के पद पर जा पहुंचा था।

वे कौन से प्रधान गुण थे जिनके बल पर वह इस पद पर पहुंचा? सबसे पहले तो यह गुण कि उसमें सभी सरकारी दस्तावेज़ों और क़ानूनों को समझने, तथा सरकारी दस्तावेज़ तैयार करने की योग्यता थी। इन दस्तावेज़ों की भाषा भले ही भोंडी हो, मगर समझ में आ जाती थी और शब्दों के जोड़ ठीक होते थे। दूसरे, उसकी रोबीली चाल-ढाल। इसके बल पर वह ज़रूरत पड़ने पर बेहद गर्वीला और शाहाना नज़र आ सकता था, एक ऐसा व्यक्ति जिसके पास तक पहुंचना कठिन हो। और वक़्त का तक़ाज़ा होने पर वह चापलूसी और कमीनेपन की सभी सीमाएं तोड़ सकता था। तीसरे, उसके कोई सामान्य नैतिक सिद्धान्त अथवा नियम नहीं थे—न शासकीय, न व्यक्तिगत। इस गुण के बल पर वह ज़माने का रुख़ देख लेता था और उसी के अनुसार लोगों से या तो सहमत होता या उनका विरोध करता था। इस तरह का आचरण करते समय वह एक बात का ख़्याल रखता: शिष्टता का आवरण बना रहे, और लोगों को यह पता न चले कि उसके व्यवहार में अस्थिरता है। उसे इस बात की कोई परवाह नहीं थी कि उसका आचरण अपने आप में नैतिक है अथवा अनैतिक, और वह लोगों के लिए हितकर होगा अथवा समूचे रूसी साम्राज्य के लिए घोर हानि का कारण।

वह मन्त्री बना। लोगों ने समझा कि वह बड़ा चतुर राजनेता है। इनमें केवल वे लोग ही शामिल नहीं थे जो उस पर निर्भर हों (उनकी संख्या भी कम नहीं थी) अथवा उसके सम्पर्क में हों, बल्कि कई अजनबी लोगों ने भी यही समझा। उसे स्वयं भी अपने बारे में यही विश्वास था। फिर वक़्त गुज़रा। इस बीच उसने कोई बड़ा काम नहीं कर दिखाया, न ही उसके द्वारा किसी महत्वपूर्ण बात का स्पष्टीकरण हुआ। अब यहां पर उस जैसे और भी कई रोबीले अफ़सर मौजूद थे जिनका जीवन में कोई उसूल नहीं था। इन लोगों ने भी दस्तावेज़ लिखना और पढ़ना सीख लिया था। जीवन के संघर्ष-नियम के अनुसार क़ाउंट को धकेल कर उन्होंने उसकी जगह संभाल ली। तब सब लोग समझ गये कि इस आदमी में कोई चतुराई नहीं। बल्कि वह बड़ा ओछा, अशिक्षित और दंभी आदमी है, और उसके विचारों का स्तर मुश्किल से उन सम्पादकीय लेखों के स्तर तक पहुंच पाता

है जो सबसे घटिया, कट्टरपन्थी अख़बारों में छपते रहते हैं। पता चल गया कि इस आदमी में कोई विशेषता नहीं। यह भी उन अशिक्षित और दंभी अफ़सरों जैसा ही है जिन्होंने उसकी जगह संभाल ली है। उसे स्वयं भी इस बात का पता चल गया। पर फिर भी उसकी यह धारणा ज्यों की त्यों बनी रही कि उसे हर साल सरकारी ख़ज़ाने में से बहुत सी रक़म खींचनी है और अपनी पोशाकों के लिए नये नये पदक प्राप्त करते रहना है। उसकी यह धारणा इतनी दृढ़ थी कि किसी में भी यह साहस न था कि इन्हें देने से इन्कार कर सके। इस तरह वह हर साल हज़ारों रूबल वसूल कर लेता था। इनमें कुछ रक़म तो उसकी पेंशन की थी, और कुछ किसी सरकारी संस्था के सदस्य होने के नाते तथा तरह तरह की कमेटियों और परिषदों का अध्यक्ष होने के नाते। इसके अतिरिक्त उसे यह अधिकार भी प्राप्त था–और इसे वह बहुत बड़ा अधिकार समझता था–कि वह तरह तरह की डोरी कन्धों और पतलूनों के साथ लगाता रहे और अपने कपड़ों को फ़ीतों और इनेमल के सितारों से सजाता रहे। इस कारण काउंट इवान मिख़ाइलोविच की बड़े ऊंचे पदाधिकारियों तक पहुंच थी।

काउंट इवान मिख़ाइलोविच ने नेख़्लूदोव की बात उसी ढंग से सुनी जिस ढंग से वह अपने विभाग के स्थायी सेक्रेटरी की रिपोर्टें सुनने का आदी था। जब सुन चुका तो कहने लगा कि वह उसे दो चिट्ठियां लिख कर देगा, एक तो अपील विभाग के सेनेटर वोल्फ़ के नाम।

"उसके बारे में तरह तरह की बातें सुनने में आती हैं, लेकिन dans tous les cas c'est un homme très comme il faut,"* वह बोला, "लेकिन मैंने उस आदमी पर बहुत एहसान किये हैं, इसलिए मेरी बात नहीं टालेगा। जो भी उससे बन पड़ा ज़रूर कर देगा।"

दूसरी चिट्ठी काउंट ने अपील कमेटी के एक सदस्य के नाम लिख दी जिसका बड़ा असर-रसूख़ था। नेख़्लूदोव ने फ़ेदोस्या बिर्युकोवा की कहानी सुनाई जिसे काउंट ने बड़ी दिलचस्पी से सुना। नेख़्लूदोव ने कहा कि मैं इसके बारे में सीधे महारानी को दरख़्वास्त देना चाहता हूं। सुन कर काउंट बोला कि कहानी सचमुच बड़ी दर्दनाक है, और मौक़ा मिलने पर महारानी को सुनाई भी जा सकती है, लेकिन मैं इसका वचन नहीं

---

*जो भी हो वह आदमी बिल्कुल अच्छा है। (फ़्रेंच)

दे सकता। बेहतर यही है कि दरख़्वास्त ज़ाब्ते के मुताबिक़ दाख़िल कर दी जाय। मन ही मन उसने सोचा कि अगर मौक़ा मिला, और अगर बृहस्पतिवार को ही petit comitè* में उसे बुलाया गया तो महारानी से इस बारे में बात हो जायेगी।

नेख़्लूदोव ने दोनों चिट्ठियां ले लीं। साथ ही एक चिट्ठी मेरियेट के नाम अपनी मौसी से भी ले ली और इन लोगों को मिलने के लिए निकल पड़ा।

सबसे पहले वह मेरियेट के घर गया। किसी ज़माने में नेख़्लूदोव का उससे परिचय रहा था। तब वह १६-१७ बरस की लड़की थी। मेरियेट ऊंचे खानदान की थी लेकिन उसके मां-बाप अमीर नहीं थे। उसकी शादी एक ऐसे आदमी से हुई थी जो नौकरी में तो बड़े ऊंचे ओहदे तक जा पहुंचा था लेकिन यों उसकी इज़्ज़त नहीं थी। नेख़्लूदोव ने उसके बारे में बहुत कुछ सुन रखा था—विशेषकर यह कि वह राजनीतिक क़ैदियों पर ज़रा भी रहम नहीं करता था। सैकड़ों-हज़ारों उसके अधीन थे जिन पर ज़ुल्म करना वह अपना सरकारी फ़र्ज़ समझता था। हमेशा की तरह अब भी नेख़्लूदोव को यह बात नागवार गुज़री कि पीड़ितों की मदद करने के लिए उसे उत्पीड़कों का पक्ष लेना पड़ रहा है। अब जब वह उनके पास दरख़्वास्त भी करने जाता कि कम से कम कुछ व्यक्तियों पर ज़ुल्म कम करें तो उसे लगता जैसे वह उनके काम का समर्थन कर रहा है। ज़ुल्म करने की अब उन्हें आदत पड़ गई थी, और संभवतः इसका उन्हें आभास तक न होता था। ऐसी स्थिति में उसके अन्दर द्वन्द्व होने लगता और उसका मन खिन्न हो उठता। वह द्विविधा में पड़ जाता कि फ़रमाइश करे या न करे, पर अन्त में हमेशा फ़रमाइश करने का ही निश्चय करता था। आख़िर बात तो यही है न कि इस मेरियेट और उसके पति के यहां जाना उसके लिए अप्रिय है, कि उनके यहां वह घबराया हुआ सा और शर्मिंदा महसूस करेगा, लेकिन इस सब के बदले हो सकता है एक अभागी, एकाकी कारावास में पड़ी लड़की रिहा हो जाय और उसकी तथा उसके घर वालों की यातनाएं समाप्त हो जायं। अपने को अब वह इन लोगों की श्रेणी का नहीं समझता था, इसलिए इनके साथ उठना-बैठना उसे असंगत और अभद्र लगता था। लेकिन ये लोग उसे अब भी अपना ही समझते थे। इसलिए भी नेख़्लूदोव

---

*अंतरंग बैठक (फ़्रेंच)

को महसूस होने लगता कि वह पुराने ही ढर्रे पर चला जा रहा है और अपनी धारणाओं के बावजूद उन्हीं के से भोंडे और अश्लील लहजे में बातें करने लगता है। यह उसने अपनी मौसी के घर पर भी महसूस किया था। आज सुबह जब अत्यन्त गंभीर बातों की चर्चा हो रही थी वह स्वयं छिछले, मज़ाक़िया लहजे में बात करने लग गया था।

बड़ी मुद्दत के बाद वह पीटर्सबर्ग आया था। इस बार भी यहां के वातावरण का वही आम प्रभाव उस पर पड़ा था। वह एक ओर तो शारीरिक स्फूर्ति, परंतु दूसरी ओर नैतिक जड़ता का अनुभव कर रहा था। यहां पर हर चीज़ साफ़-सुथरी, आरामदेह थी, हर बात में करीना था। आचार सम्बन्धी बातों में लोग उदार थे जिससे जीवन बड़ा सुभीते से चलता हुआ जान पड़ता था।

जिस गाड़ीवान की गाड़ी में वह बैठा था, वह बड़ा साफ़-सुथरा, चिकना-चुपड़ा और मीठी मीठी बातें करने वाला आदमी था। वहां खड़े सिपाही बड़े चिकने-चुपड़े, साफ़-सुथरे और मधुरभाषी थे। जिन सड़कों पर उसकी गाड़ी बढ़ चली, वे भी बड़ी नफ़ीस, साफ़-सुथरी, पानी से धुली सड़कें थीं। सड़कों के किनारों पर के घर भी बढ़िया और साफ़-सुथरे थे। इन्हीं में से एक घर में मेरियेट रहती थी।

फाटक के सामने एक फ़िटन खड़ी थी जिसमें दो अंग्रेज़ी घोड़े जुते थे। उन पर लगा साज़ भी अंग्रेज़ी था। बावर्दी कोचवान भी जो हाथ में छांटा लिये अपनी सीट पर बड़े गर्व से बैठा था, अंग्रेज़ी जान पड़ता था। उसने बड़े बड़े गलमुच्छे उगा रखे थे जो उसकी आधी गालों को ढके हुए थे।

जिस दरबान ने ड्योढ़ी का दरवाज़ा खोला, उसने भी बेहद साफ़ वर्दी पहन रखी थी। ड्योढ़ी के अन्दर चोबदार खड़ा था। उसकी वर्दी दरबान की वर्दी से भी ज़्यादा साफ़ थी और उस पर सुनहरी डोरी लगी थी। मुंह पर बड़े रोबीले गलमुच्छे थे जिन्हें उसने ख़ूब कंघी कर रखा था। उसके साथ एक अर्दली खड़ा था। अर्दली ने भी बढ़िया नई वर्दी पहन रखी थी।

"आज जनरल साहब किसी से नहीं मिलेंगे। मेम साहब भी नहीं मिल सकेंगी। वे अभी बाहर जा रही हैं।"

नेख़्लूदोव ने येकातेरीना इवानोव्ना की चिट्ठी चोबदार को दे दी। एक मेज़ पर मुलाक़ातियों का रजिस्टर रखा था। नेख़्लूदोव वहां जा बैठा

श्रौर अपना कार्ड निकाल कर उसके पीछे लिखने लगा कि खेद है घर में किसी से भी भेंट नहीं हो पायी। इतने में चोबदार सीढ़ियों की ओर बढ़ गया, दरबान बाहर जा कर कोचवान को पुकारने लगा, और अर्दली तन कर खड़ा हो गया है। अर्दली की आंखें सीढ़ियों पर गड़ी थीं जिन पर से एक छोटी सी महिला तेज़ तेज़ क़दम रखती हुई नीचे उतर रही थी। उसकी शान-शौक़त को देखते हुए उसका यों तेज़ तेज़ उतरना बड़ा बेढब लग रहा था।

मेरियेट ने काले रंग की पोशाक पहन रखी थी, ऊपर काले ही रंग का केप था, सिर पर बड़ा सा टोप जिसमें पंख लगे थे और हाथों में नये काले रंग के दस्ताने थे। चेहरे पर एक हल्की सी जाली लटक रही थी।

नेख़्लूदोव को देख कर उसने चेहरे पर से जाली उठा दी, उसके पीछे से चमकती आंखों वाला उसका सुन्दर चेहरा निकला, बड़े कुतूहल से उसने नेख़्लूदोव की ओर देखा।

"ओह, प्रिंस द्मीत्री इवानोविच," कोमल, मधुर आवाज में उसने कहा, "मैं ज़रूर पहचान जाती..."

"अच्छा, आपको मेरा नाम भी याद है?"

"क्यों नहीं। मेरी बहिन और मैं तो तुमसे प्रेम भी करती थीं," उसने फ़्रांसीसी भाषा में कहा। "लेकिन तुम तो बड़े बदल गये हो। च च च, मुझे खेद है कि मुझे कहीं जाना है। मगर कोई बात नहीं, चलो आओ, ऊपर चलें।" कहते हुए वह खड़ी हो गई और फिर द्विविधा में पड़ गई। फिर उसने घड़ी की ओर देखा। "नहीं, नहीं, मैं नहीं रुक सकती। मुझे कामेन्स्की के घर जाना है, वहां मृतक की आत्मा के लिए प्रार्थना होगी। मां बेचारी का बुरा हाल है।"

"कामेन्स्की कौन है?"

"क्या तुमने नहीं सुना? उनका बेटा द्वन्द्व युद्ध में मारा गया था। पोज़ेन के साथ उसकी लड़ाई हुई थी। मां-बाप का इकलौता बेटा था। बड़ा ज़ुल्म हुआ है! मां बेचारी का तो बुरा हाल है।"

"हां, मैंने कुछ कुछ सुना है।"

"तो मैं चलूंगी। तुम कल या आज शाम को ही आ जाना," उसने कहा और हल्के हल्के, तेज़ तेज़ क़दम रखती हुई दरवाज़े की ओर जाने लगी।

"आज शाम को तो मैं नहीं आ सकूंगा," उसके पीछे पीछे बाहर निकलते हुए वह बोल रहा था, "पर मैं तो आपके पास एक काम से आया था।" लाखी घोड़ों को फाटक के सामने लाये जाते देख कर उसने कहा।

"क्यों, क्या हुआ?"

"यह मौसी ने आपके नाम एक चिट्ठी दी है," एक छोटा सा लिफ़ाफ़ा उसके हाथ में देते हुए नेख़्लूदोव ने कहा। लिफ़ाफ़े पर बड़ी सी वंश-चिन्ह समेत सील थी। "चिट्ठी में सब कुछ लिखा है।"

"काउंटेस येकातेरीना इवानोव्ना सोचती हैं कि मेरे पति मेरी बात सुनते हैं, कि काम-काज के मामलों में मैं उनसे कुछ करवा सकती हूं। यह उनकी सरासर भूल है। मैं कुछ भी नहीं कर सकती। न ही मैं उनके मामलों में दख़ल देना चाहती हूं। पर कोई बात नहीं, तुम्हारी ख़ातिर और काउंटेस की ख़ातिर, मैं उपना असूल तोड़ दूंगी। काम क्या है?" उसने कहा और अपना नन्हा सा हाथ जिस पर काला दस्ताना चढ़ा था, जेब में डालने का विफल प्रयास करने लगी।

"क़िले में एक लड़की क़ैद है। वह बीमार है, और बेगुनाह है।"

"उसका नाम क्या है?"

"शूस्तोवा, लीदिया शूस्तोवा। चिट्ठी में लिखा है।"

"अच्छी बात है। मुझसे जो बन पड़ा मैं करूंगी।" कहते हुए मेरियेट उछल कर अपनी गाड़ी में जा बैठी। गाड़ी छोटी सी और ऊपर से खुली थी और उसमें नरम नरम गद्दे बिछे थे। गाड़ी के मड-गार्ड ख़ूब पालिश किये हुए थे और धूप में चमक रहे थे। गाड़ी में बैठते ही उसने अपनी छोटी छतरी खोल ली। चोबदार बॉक्स पर चढ़ गया और कोचवान को गाड़ी चलाने का इशारा किया। गाड़ी चलने लगी। लेकिन सहसा उसने छतरी की नोक कोचवान की पीठ में खोंसी। पतली पतली टांगों वाली सुन्दर लाखी घोड़ियां फ़ौरन् खड़ी हो गईं। लगाम खिंच जाने से उनकी गर्दनें कमान की तरह तन गई थीं, और वे खड़ी खड़ी बार बार पांव बदलने लगी थीं।

"मिलने ज़रूर आना, पर अपना स्वार्थ ले कर नहीं," उसने कहा और नेख़्लूदोव की ओर मुस्करा कर देखा। अपनी मुस्कान का प्रभाव वह जानती थी। इसके बाद उसने अपने चेहरे पर फिर जाली गिरा ली,

मानो अभिनय समाप्त हो गया हो और नाटक पर पर्दा गिराने का वक़्त आ गया हो। "अच्छा, चलो।" और उसने फिर छतरी की नोक कोचवान की पीठ में खोंसी।

नेख़्लूदोव ने सिर पर से टोप उतार कर अभिवादन किया। नस्ली घोड़ियां हल्के से फड़फड़ायीं, फिर सड़क के पत्थरों पर अपने खुर खटखटाती हुई चल निकलीं। गाड़ी नये रबड़ के टायरों पर तेज़ तेज़ और समतल गति से जाने लगी। केवल किसी किसी जगह, सड़क ऊंची-नीची होने के कारण गाड़ी हल्का सा हिचकोला खाती थी।

१६

मेरियेट की मुस्कराहट के जवाब में नेख़्लूदोव भी मुस्कराया था। उसे याद कर के नेख़्लूदोव ने सिर हिला दिया।

"इस तरह की ज़िन्दगी में से निकलने की अभी सोच ही रहा होता हूं कि पांव फिर उसी की ओर खिंच जाते हैं," वह सोचने लगा। उसके अन्दर फिर द्वन्द्व छिड़ गया और संशय उठने लगे। जब कभी उसे ऐसे लोगों की चापलूसी करनी पड़ती जिनके लिए उसके दिल में कोई इज़्ज़त न थी, तो उसका मन इसी तरह की भावनाओं से विचलित हो उठता था।

यह सोचते हुए कि पहले कहां जाया जाये, कहां बाद में, ताकि चक्कर न लगाना पड़े नेख़्लूदोव सबसे पहले सेनेट की ओर चला। उसे अन्दर दफ़्तर तक ले जाया गया, जहां उसने आलीशान इमारत में बड़ी संख्या में बहुत ही सलीकेदार और साफ़-सुथरे क्लर्कों को बैठे पाया।

मास्लोवा की दरख़्वास्त पहुंच चुकी थी और उसी सेनेटर वोल्फ़ के पास उस पर विचार करने और रिपोर्ट देने के लिए भेज दी गई थी, जिसके नाम नेख़्लूदोव अपने मौसा से सिफ़ारिशी चिट्ठी लाया था।

"सेनेट की एक बैठक इसी हफ़्ते में होगी," एक अफ़सर ने नेख़्लूदोव से कहा। "पर मास्लोवा का मुक़द्दमा इस बैठक में पेश नहीं होगा। हां, अगर ख़ास तौर पर इसके लिए फ़रमाइश की जाय तो मुमकिन है बुधवार को ही इस पर विचार किया जा सके।"

मास्लोवा के मुक़द्दमे के काग़ज़ात वग़ैरा निकलवाने में कुछ देर लगी।

नेख़्लूदोव दफ़्तर में बैठा रहा। सेनेट के दफ़्तर में सभी लोग उसी द्वन्द्व युद्ध की चर्चा कर रहे थे, जिसमें युवा कामेन्स्की मारा गया था। उनकी बातें सुनते सुनते उसे इस घटना की पूरी तफ़सील मालूम हो गई। सारा पीटर्सबर्ग उसी की बातें कर रहा था। बात यों हुई थी: कुछ अफ़सर एक शराबख़ाने में बैठे थे, ऑयस्टर और शराब के दौर चल रहे थे। जैसा कि अक्सर होता है सबने ख़ूब पी रखी थी। किसी ने कामेन्स्की की रेजिमेन्ट के बारे में कुछ ऊंच-नीच कह दिया। जवाब में कामेन्स्की ने कहा कि तुम झूठ बकते हो। कहने वाले ने कामेन्स्की को घूंसा दे मारा। बस दूसरे दिन दोनों का द्वन्द्व युद्ध हो गया। कामेन्स्की को पेट में गोली लगी और दो घण्टे के बाद प्राण निकल गये। हत्या करने वाला और दोनों के सहायक पकड़ लिये गये। उन्हें हिरासत में तो रखा गया लेकिन सुनने में आ रहा था कि दो हफ़्ते तक में उन्हें रिहा कर दिया जायेगा।

सेनेट में से निकल कर नेख़्लूदोव अपील कमेटी के एक सदस्य, बैरन वोरोब्योव को मिलने गया। वह बड़े शानदार मकान में रहता था जो ज़ार की ओर से मिला हुआ था। दरवान ने बड़े रूखे लहजे में नेख़्लूदोव को जवाब दे दिया कि बैरन हर रोज़ नहीं मिल सकते, केवल मुलाक़ातों के दिन ही मिल सकते हैं। इस समय वह ज़ार से मिलने गये हैं, और कल उन्हें कोई रिपोर्ट पढ़नी है। नेख़्लूदोव ने वह चिट्ठी दरवान के हाथ में दी जो वह अपने मौसा से लाया था और सीधा सेनेटर वोल्फ़ से मिलने चला गया।

जब नेख़्लूदोव अन्दर दाख़िल हुआ तो वोल्फ़ उसी वक़्त भोजन कर के हटा था, और आदत के मुताबिक़ सिगार सुलगाये कमरे में टहल रहा था। उसका विचार था कि इससे भोजन पचाने में सहायता मिलती है। व्लादीमिर वासील्येविच वोल्फ़ सही मानों में un homme très comme il faut था। इस गुण को वह अपनी बहुत बड़ी विशेषता समझता था, और इसी लिए वह औरों के साथ बड़प्पन का व्यवहार भी करता था। यों इस गुण को विशेषता देना उसके लिए स्वाभाविक भी था, क्योंकि केवल इसी की बदौलत वह ऊंचे ओहदे पर पहुंचा था। जीवन में वह चाहता भी यही कुछ था। जिस जगह उसने ब्याह किया वहां से उसे ऐसी सम्पत्ति हाथ लगी जिससे अठारह हज़ार रूबल सालाना की आमदनी होती थी। अपनी कोशिशों से उसने सेनेटर का पद ग्रहण किया। वह अपने को केवल

un homme très comme il faut ही नहीं समझता था बल्कि सही मानों में ईमानदार भी मानता था। ईमानदारी से मतलब वह यह निकालता था कि स्वयं किसी से भी चोरी-छिपे रिश्वत नहीं लेता था। लेकिन सरकार से आग्रह कर के तरह तरह के भत्ते, किराये, सफ़र-ख़र्च इत्यादि ऐंठने को वह बेईमानी की बात नहीं समझता था। और बदले में जिस तरह का भी काम सरकार करने को कहे, बड़ी तत्परता से करता था। पहले वह पोलैण्ड के एक प्रान्त का गवर्नर हुआ करता था। उस समय उसने सैकड़ों बेगुनाहों का सर्वनाश किया। उन्हें जेलों में ठूंसा, तथा जलावतन करवाया, इसलिए कि वे अपनी जनता तथा अपने पुरखाओं के धर्म से प्रेम करते थे। उसे वह बेईमानी की बात नहीं समझता था बल्कि उत्कृष्ट, वीरोचित तथा देशभक्ति का काम समझता था। वह अपनी पत्नी (जो उससे प्रेम करती थी) तथा उसकी बहिन की सारी सम्पत्ति हड़प कर गया। इसे भी वह बेईमानी की बात नहीं समझता था। इसके विपरीत, उसका विचार था कि उसने बड़े अच्छे ढंग से अपने घरेलू मामलों की व्यवस्था कर दी है।

उसके परिवार के सदस्य थे: उसकी सहमी हुई पत्नी, उसकी साली तथा बेटी। साली की सारी ज़मीन-जायदाद बेच कर जितना भी रुपया वसूल हुआ उसने अपने नाम पर जमा करवा लिया था। उसकी बेटी देखने में साधारण, भीरु और विनीत स्वभाव की थी। उसका जीवन बिल्कुल एकाकी और नीरस था, अतः मन बहलाने के लिए उसने हाल ही में इवैंजेलिकल मत में दिलचस्पी लेना शुरू कर दिया था और एलीन तथा काउंटेस येकातेरीना इवानोव्ना के यहां प्रार्थना-सभाओं में जाने लगी थी।

वोल्फ़ के एक बेटा भी था। लापरवाह तबीयत का युवक पन्द्रह बरस की उम्र में ही उसने दाढ़ी रख ली, पीना-पिलाना शुरू कर दिया और हर तरह के व्यसनों में पड़ गया। बीस बरस की उम्र तक वह यही कुछ करता रहा और अन्त में पिता ने उसे घर से निकाल दिया। वह पढ़ाई पूरी नहीं कर सका था और बुरे लोगों की सोहबत में घूमता, और क़र्ज़ चढ़ाता हुआ अपने पिता की इज़्ज़त पर दाग़ लगाता रहा था। एक बार पिता ने उसका दो सौ तीस रूबल क़र्ज़ अदा किया, दूसरी बार छः सौ रूबल। पर इस बार उसे चेतावनी दे दी कि इसके बाद वह कोई क़र्ज़ अदा नहीं करेगा। बेटे को डराया-धमकाया कि संभल जाओ तो ठीक वरना घर से

बाहर निकाल दूंगा और घर के साथ कोई संबंध नहीं रहने दूंगा। लड़का नहीं सुधरा, बल्कि अब की एक हज़ार रूबल क़र्ज़ चढ़ा आया और पिता को साफ़ साफ़ कह दिया कि घर में रहना उसके लिए नरक भोगने के बराबर है। वोल्फ़ ने घोषणा कर दी कि आज से तुम मेरे बेटे नहीं हो, जहां जाना चाहो जा सकते हो। उस दिन से वोल्फ़ लोगों से यही कहता था कि उसके कोई बेटा नहीं है। घर में भी बेटे के बारे में उसके साथ बात करने का किसी को साहस नहीं होता था। और व्लादीमिर वासील्येविच वोल्फ़ को पक्का विश्वास था कि उसने अपनी गृहस्थी सर्वोत्कृष्ट ढंग से संभाली हुई है।

जब नेख़्लूदोव अन्दर पहुंचा तो वोल्फ़ चलते चलते रुक गया और मैत्रीपूर्ण ढंग से मुस्करा कर नेख़्लूदोव का स्वागत किया। इस मुस्कराहट में व्यंग का भी हल्का सा पुट था। इस तरह मुस्कराते हुए वह मानो लोगों को जताना चाहता था कि वह कितना comme il faut है, और अधिकांश लोगों से कितना ऊंचा है। उसने वह चिट्ठी बड़े ध्यान से पढ़ी जो नेख़्लूदोव ने उसके हाथ में दी थी।

"तशरीफ़ रखिये। आपकी इजाज़त हो तो मैं कमरे में टहलता रहूं," कोट की जेबों में हाथ डालते हुए और हल्के हल्के क़दम रख कर टहलना जारी रखते हुए उसने कहा। यह उसका पढ़ने का कमरा था जो काफ़ी बड़ा और बिल्कुल मुनासिब ढंग से सजाया गया था। "आपसे मिल कर बड़ी ख़ुशी हुई। और जो काउंट इवान मिख़ाइलोविच ने करने का हुक्म दिया है, सिर आंखों पर," मुंह में से सिगार का ख़ुशबूदार नीला धुआं छोड़ते हुए वह बोला, फिर सिगार को बड़े ध्यान से मुंह में से निकाल लिया ताकि राख नीचे न गिरने पाये।

"मेरी केवल यही प्रार्थना है कि इस मुक़द्दमे की सुनवाई जल्दी हो जाय, ताकि अगर क़ैदी को साइबेरिया भेजे जाना है तो वह जल्दी रवाना हो सके," नेख़्लूदोव ने कहा।

"ज़रूर, ज़रूर, नीज्नी नवगोरोद से जो पहला जहाज़ जाय, उसी में जा सकती है," बड़प्पन के अन्दाज़ से मुस्कराते हुए वोल्फ़ ने कहा। उसे लोगों की फ़रमाइश का पहले ही पता चल जाता था। "क़ैदी का नाम क्या है?"

"मास्लोवा।"

वोल्फ़ मेज़ के पास गया और फ़ाइल में, काम-काज के अन्य काग़ज़ों में से एक काग़ज़ उठा कर देखने लगा।

"हां, मास्लोवा, ठीक है। मैं और सदस्यों से बात करूंगा। हम बुधवार के दिन इस मुक़द्दमे पर विचार करेंगे।"

"तो क्या मैं वकील को तार दे दूं?"

"ओह, आपने वकील कर रखा है? इसकी क्या ज़रूरत थी? पर ख़ैर, अगर आप चाहते हैं तो बेशक तार दे दें।"

"अपील के तर्क शायद काफ़ी न हों," नेख़्लूदोव ने कहा, "पर मैं समझता हूं मुक़द्दमे की फ़ाइल देखने पर पता चल जायेगा कि सज़ा ग़लतफ़हमी के कारण दी गई थी।"

"हां, हो सकता है। लेकिन सेनेट मुक़द्दमे का फ़ैसला गुण-दोष के आधार पर नहीं कर सकती।" वोल्फ़ ने रुखाई के साथ कहा। उसकी आंखें सिगार की राख पर अटकी थीं। "सेनेट केवल यह देखती है कि क़ानून ठीक तरह से लागू किया गया है या नहीं, और उसका ठीक ठीक मतलब निकाला गया या नहीं।"

"लेकिन मैं समझता हूं कि यह असाधारण मुक़द्दमा है।"

"मुझे मालूम है, मालूम है। सभी मुक़द्दमे असाधारण होते हैं। हम अपना फ़र्ज़ निभायेंगे। बस।" सिगार के सिरे पर राख अब भी अटकी हुई थी, हालांकि उसमें दरार पड़ गयी थी, और डर था कि कहीं नीचे गिर न पड़े। "आप पीटर्सबर्ग बहुत कम आते हैं, क्या?" सिगार को इस ढंग से पकड़े हुए कि राख गिरे नहीं, वोल्फ़ ने पूछा। पर राख हिलने लगी थी। वोल्फ़ ध्यान से चलते हुए उसे राखदानी तक ले आया, जहां पहुंचते ही वह ढेर हो गई। "कामेन्स्की वाली घटना कितनी भयानक है!" वह बोला। "कितना अच्छा लड़का था! इकलौता बेटा। मां की हालत पर तो सचमुच रहम आता है।" उसके मुंह से भी वही शब्द निकल रहे थे जो इस समय कामेन्स्की के बारे में पीटर्सबर्ग में हर किसी की ज़बान पर थे।

कुछेक शब्द वोल्फ़ ने काउंटेस येकातेरीना इवानोव्ना के बारे में तथा उसके नये धर्म अनुराग के बारे में भी कहे। लेकिन सहमति अथवा विरोध प्रकट नहीं किया। इसकी ज़रूरत भी नहीं थी क्योंकि वह तो comme il faut था। इसके बाद उसने घण्टी बजाई।

नेख़्लूदोव ने झुक कर विदा ली।

"अगर तकलीफ़ न हो तो बुधवार के दिन भोजन मेरे साथ कीजिये। मैं इस बारे में पक्का जवाब भी दे सकूंगा," अपना हाथ बढ़ाते हुए वोल्फ़ ने कहा।

देर हो चुकी थी, इसलिए नेख़्लूदोव सीधा अपनी मौसी के घर लौट गया।

१७

काउंटेस यकातेरीना इवानोव्ना के घर शाम के भोजन का समय साढ़े सात बजे था। खाना परोसने का ढंग नया था, जिसे नेख़्लूदोव पहली बार देख रहा था। चोबदारों ने मेज़ पर प्लेटें वग़ैरा रखीं, खाने का पहला व्यंजन भी और फ़ौरन् कमरे में से निकल गये, सो खाने वाले ख़ुद ही खाना ले रहे थे। पुरुष स्त्रियों को किसी तरह का कष्ट नहीं उठाने देना चाहते थे और इसलिए ख़ुद बड़ी मर्दानगी से उनके लिए और अपने लिए प्लेटों में खाना डालने और जाम उंडेलने का भार उठा रहे थे। मेज़ के साथ ही एक बिजली की घंटी का बटन लगा था। जब एक व्यंजन समाप्त हो जाता तो काउंटेस बटन दबाती, चोबदार फिर हौले हौले चलते हुए कमरे में आते, प्लेटें बदल देते, दूसरा व्यंजन मेज़ पर रख देते और फिर पहले की तरह कमरे में से निकल जाते। भोजन अत्यन्त स्वादिष्ट और शराबें बेहद महंगी थीं। एक फ़्रांसीसी सफ़ेद लबादे पहने दो छोटे बावर्चियों के साथ खुले, रोशन रसोईघर में काम कर रहा था। छः व्यक्ति भोजन कर रहे थे: काउंट तथा काउंटेस, उनका बेटा, सदा नाराज़ सा रहने वाला एक आदमी जो गार्ड रेजिमेंट में अफ़सर के पद पर था और इस समय मेज़ पर कोहनियां चढ़ाये बैठा था, नेख़्लूदोव, एक फ़्रांसीसी अध्यापिका, और काउंट का मुख्य कारिंदा जो देहात से आया हुआ था।

यहां पर भी वार्तालाप द्वन्द्व युद्ध के ही बारे में चल रहा था, और सभी अपनी अपनी राय दे रहे थे कि ज़ार के इस सम्बन्ध में क्या विचार होंगे। इतना तो सब को मालूम था कि ज़ार की बेचारी मां के साथ बड़ी हमदर्दी है, सभी को उससे हमदर्दी थी। साथ ही लोगों को यह भी मालूम था कि ज़ार हत्या करने वाले को भी कड़ी सज़ा नहीं देना चाहते, क्योंकि

उसने अपनी वर्दी की इज़्ज़त की रक्षा के लिए द्वन्द्व युद्ध लड़ा था। लोग भी उस अफ़सर के प्रति दयावान थे क्योंकि उसने अपनी वर्दी की इज़्ज़त के लिए द्वन्द्व युद्ध लड़ा था। केवल काउंटेस येकातेरीना इवानोव्ना ही इसका विरोध कर रही थी—

"पहले शराब पीते रहते हैं फिर भोले भाले युवकों को मार डालते हैं। ऐसे लोगों को मैं किसी सूरत में भी माफ़ नहीं करूं," उसने कहा।

"अब यह बात मेरी समझ में नहीं आ सकती," काउंट बोला।

"मेरी बात तो तुम्हारी समझ में कभी आ ही नहीं सकती। यह तो मैं जानती हूं," काउंटेस कहने लगी, फिर नेख़्लूदोव की ओर घूम कर बोली, "सब को मेरी बात समझ आ जाती है, लेकिन मेरे पति को समझ नहीं आती। मुझे मां के साथ दिली हमदर्दी है, और मैं नहीं चाहती कि हत्यारा पहले तो क़त्ल करे और फिर उसे कुछ कहा भी न जाय।"

इस पर उनका बेटा जो अब तक चुप बैठा था, हत्यारे का पक्ष ले कर बड़ी गुस्ताख़ी से मां का विरोध करने लगा। कहने लगा कि हत्यारे के लिए और कोई चारा ही न था, अगर वह लड़ता नहीं तो उसके साथी अफ़सर उसकी लानत-मलामत करते और उसे रेजिमेंट में से निकाल देते। नेख़्लूदोव कान लगा कर वार्तालाप सुन रहा था लेकिन स्वयं उसमें भाग नहीं ले रहा था। वह ख़ुद फ़ौज में अफ़सर रह चुका था, इसलिए युवा चार्स्की के तर्क को समझता था, हालांकि उसके साथ सहमत नहीं था। साथ ही उसे रह रह कर ख़्याल आ रहा था कि इस अफ़सर के भाग्य से उस युवक का भाग्य कितना पृथक् है जिसे उसने जेल में बन्द देखा था। उस पर भी यही इलज़ाम था कि उसने किसी आदमी से लड़ाई की थी और उसे मार डाला था। उसे कड़ी मशक़्क़त की सज़ा दी गई थी। दोनों ने शराब के नशे में हत्या की थी। पर उस किसान को, जिसने आवेग में आ कर आदमी को मार डाला था, अब बीवी-बच्चों से अलग कर के, पांवों में बेड़ियां पहना कर, और सिर मूंड कर कड़ी मशक़्क़त करने साइबेरिया भेजा जा रहा है। और अफ़सर गार्ड-हाउस में एक सजे-सजाये कमरे में रखा गया है, उसे बढ़िया भोजन और शराब मिलती है, किताबें पढ़ता है, और दो-एक दिन में उसे छोड़ भी दिया जायेगा, ताकि वह फिर उसी तरह रह सके जैसे पहले रहा करता था। इस घटना की बदौलत, लोगों की नज़रों में वह और भी रोचक व्यक्ति होगा।

जो विचार नेख़्लूदोव के मन में उठ रहे थे, उसने कह डाले। पहले तो ऐसा जान पड़ा जैसे उसकी मौसी येकातेरीना इवानोव्ना उससे सहमत है। पर फिर वह भी और लोगों की तरह बिल्कुल चुप हो गई, और नेख़्लूदोव को भास होने लगा जैसे उसने कोई अनुचित बात कह दी हो।

शाम के समय, भोजन के फ़ौरन् ही बाद, लोग कीज़ेवेतेर का भाषण सुनने आने लगे। नाचने वाले कमरे में ऊंची पीठ वाली कामदार कुर्सियां लाइनों की शक्ल में जोड़ दी गई थीं जैसा कि किसी मीटिंग के समय किया जाता है। एक ओर, एक छोटे से मेज़ पर वक्ता के लिए पानी का जग रखा गया था, और उसके साथ ही एक आराम कुर्सी रख दी गई थी।

बड़ी बड़ी शानदार गाड़ियां फाटक पर खड़ी थीं। कमरे की सजधज चकाचौंध करती थी। स्त्रियां रेशमी और मख़मली कपड़े पहने, गोटे-किनारी से सजी, सिर पर मसनूई बाल लगाये, बदन को गदराया दिखाने के लिए जगह जगह कपड़ों के अन्दर गद्दियां लगाये और नाज़ुक कमर को कस कर बांधे बैठी थीं। उनके साथ आये पुरुष वर्दियों में या शाम के कपड़ों में लैस थे। इनके अतिरिक्त आधी दर्जन के क़रीब साधारण लोग भी थे: दो घर के नौकर, एक दूकानदार, एक चोबदार, और एक कोचवान।

कीज़ेवेतेर हट्टा-कट्टा, पके बालों वाला आदमी था। वह अपना भाषण अंग्रेज़ी में दे रहा था। साथ में एक पतली सी छोटी उम्र की लड़की, जिसने आंख पर बिना डण्डी के चश्मा चढ़ा रखा था, उसके वाक्यों का फ़ौरन् रूसी भाषा में अनुवाद करती जाती थी। अनुवाद अच्छा था।

वह कह रहा था कि हमने घोर पाप किये हैं, और उनकी हमें कड़ी सज़ा मिलेगी। कोई छुटकारा नहीं। इस आने वाली सज़ा के बारे में सोच कर जीना असंभव हो जाता है।

"प्यारे भाइयो तथा बहिनो, ज़रा सोचिये तो कि हम कर क्या रहे हैं, कैसा जीवन व्यतीत कर रहे हैं, दयामय भगवान् की आज्ञा का किस भांति उल्लंघन कर रहे हैं, यीसु को कितना दुखी कर रहे हैं। और हम यह समझे बिना नहीं रह सकते कि हम क्षमा के अधिकारी नहीं हैं, हमारे लिए कोई छुटकारा नहीं, कोई मुक्ति नहीं। हमारा सर्वनाश अनिवार्य है। हम पर भयानक दुर्भाग्य—अनन्त दुर्भाग्य टूटेगा," वह कांपती हुई, रोनी आवाज़ में कह रहा था। "भाइयो, हम कैसे बच सकते हैं? इस भयानक आग से हम कैसे बच सकते हैं जो किसी के भी बुझाये बुझ

नहीं सकती। घर में से आग के शोले निकल रहे हैं, इसमें से भाग कर कोई नहीं निकल सकता।"

कुछ देर तक वह चुप रहा। सचमुच के आंसू उसके गालों पर बह रहे थे। पिछले आठ साल से जब भी वह भाषण करता हुआ इस स्थल पर पहुंचता तो उसका गला रुंधने लगता और नाक में खुजली सी होने लगती और अपने आप आंखों में आंसू आ जाते। भाषण का यह अंश उसे स्वयं भी बहुत अच्छा लगता था। इन आंसुओं से उसका हृदय और भी द्रवित हो उठता। कमरे में लोग सिसकियां लेने लगे। अपने सामने जड़ाऊ मेज़ पर दोनों कोहनियां रखे, हाथों पर सिर रखे, काउंटेस येकातेरीना इवानोव्ना झुकी हुई थी, और सिसकियों के कारण उसके मोटे मोटे कन्धे हिल रहे थे। कोचवान भयातुर तथा विस्मयपूर्ण आंखों से जर्मन वक्ता की ओर देखे जा रहा था। उसे लग रहा था जैसे उसकी गाड़ी आगे बढ़ रही है और उसके बम से यह आदमी खदेड़ा जायेगा, मगर यह विदेशी आगे से हटने का नाम नहीं लेता। सभी लोग काउंटेस की सी मुद्रा में बैठे थे। वोल्फ़ की बेटी हाथों में मुंह ढांपे घुटनों के बल बैठी थी। दुबली-पतली सी लड़की थी और बड़े फ़ैशनेबुल कपड़े पहने हुए थी। उसकी शकल-सूरत अपने बाप से बहुत कुछ मिलती थी।

वक्ता ने सहसा चेहरे पर से हाथ हटाया और मुस्कराने लगा। उसकी मुस्कान सच्ची जान पड़ती थी, ऐसी मुस्कान जिससे नाटक के अभिनेता ख़ुशी का भाव दर्शाते हैं। फिर बड़ी मधुर, विनम्र आवाज़ में कहने लगा–

"लेकिन बचाव का उपाय है। और यह उपाय आसान भी है और उल्लासपूर्ण भी। भगवान् के इकलौते बेटे ने हमारी ख़ातिर घोर यातनाएं सहीं, हमारी मुक्ति उस ख़ून में है जो उसने बहाया। उसकी यातनाएं, उसका ख़ून हमारी रक्षा करेगा। बहिनो तथा भाइयो," उसकी आवाज़ फिर कांपने लगी, "आओ हम उस भगवान् की आराधना करें, जिसने अपना एक मात्र बेटा संसार को उबारने के लिए अर्पण कर दिया। उसका पवित्र रुधिर..."

नेख़्लूदोव के मन में ऐसी घिन उठी कि वह चुपचाप उठ खड़ा हुआ और दबे पांव बाहर निकल गया और सीधा अपने कमरे में चला गया। उसकी भौंहें तनी थीं और लज्जावश उसके मुंह से एक आह सी निकलने जा रही थी जिसे वह बड़ी मुश्किल से रोक पाया।

१८

दूसरे दिन प्रातः नेख़्लूदोव ने कपड़े पहने और नीचे जाने ही को था जब चोबदार ने आ कर उसे एक कार्ड दिया। कार्ड मास्को के वकील की ओर से था। वकील अपने काम पर पीटर्सबर्ग आया था, और उसका ख़्याल था कि अगर उसी समय मास्लोवा का मुक़द्दमा भी पेश हो गया तो वह सेनेट में उपस्थित हो सकेगा। जब नेख़्लूदोव ने तार भेजी तो वह मास्को से चल चुका था। जब नेख़्लूदोव से उसे पता चला कि मास्लोवा का मुक़द्दमा कब पेश होने वाला है और सेनेट के कौन कौन से सदस्य उस पर विचार करेंगे तो वह मुस्कराने लगा।

"तीनों प्रकार के सेनेटर वहां मौजूद होंगे," वह बोला, "वोल्फ़ पीटर्सबर्ग का अफ़सर है, स्कोवोरोद्निकोव क़ानून का विद्वान, और बे व्यावहारिक दृष्टि से विचार करने वाला, इसी लिए वह सबसे अधिक जानदार आदमी है," वकील ने कहा, "उसी से हमें सबसे ज़्यादा उमीद हो सकती है। अब अपील कमेटी के बारे में कुछ बताइये।"

"आज मैं बैरन वोरोब्योव से मिलने जा रहा हूं। कल उनसे भेंट नहीं हो सकी," नेख़्लूदोव ने बैरन शब्द पर बल देते हुए कहा। सेनेटर का नाम रूसी था मगर ख़िताब विदेशी।

"क्या आपको मालूम है उसे 'बैरन' का ख़िताब कहां से मिला?" नेख़्लूदोव की आवाज़ में हल्के से व्यंग का भास पा कर वकील बोला, "उसके दादा को ज़ार पावेल ने यह ख़िताब इनाम में दिया था। मेरा ख़्याल है वह दरबार में चोबदार था। ज़ार उससे किसी बात पर ख़ुश हुआ था इसलिए उसे बैरन बना दिया। 'मेरी यही इच्छा है, इसका विरोध मत करो!' उसने कहा, और लीजिये आज यह 'बैरन' वोरोब्योव भी मौजूद हैं, जो इस ख़िताब पर इतना अकड़ते हैं। एकदम चालाक धूर्त है यह बूढ़ा!"

"आज मैं उसे मिलने जा रहा हूं," नेख़्लूदोव बोला।

"अच्छी बात है, हम एक साथ चलेंगे। मैं अपनी गाड़ी में आपको वहां तक ले चलूंगा।"

वे घर से निकल ही रहे थे जब ड्योढ़ी में एक चोबदार ने नेख़्लूदोव को एक चिट्ठी ला कर दी। चिट्ठी मेरियेट की ओर से थी—

"Pour vous faire plaisir, j'ai agi tout à fait contre mes principes, et j'ai intercedé auprès de mon mari pour votre protégée. Il se trouve que cette personne peut être relachée immédiatement. Mon mari a ecrit au commandant. Venez donc, पर अपना स्वार्थ ले कर नहीं। Je vous attend.* मे०।"

"देखा आपने?" नेख़्लूदोव ने वकील से कहा। "कितनी भयानक बात है! सात महीने से एक लड़की को यह क़ैद-तनहाई में रखे रहे हैं। और वह बेगुनाह निकली। बस कहलवाने भर की देर थी कि उसे रिहा कर दिया गया।"

"यही कुछ हमेशा होता है। चलिये, आप अपने काम में सफल तो हो गये।"

"ठीक है, पर इस सफलता से मेरा मन और भी क्षुब्ध हो उठा है। ज़रा सोचो तो वहां पर कैसे कैसे कांड होते होंगे। सरकार उसे क्यों क़ैद किये हुए थी?"

"इन बातों पर ज़्यादा नहीं सोचा करते। कोई लाभ नहीं। तो चलिये, मेरी गाड़ी में चलेंगे न?" घर से बाहर क़दम रखते हुए वकील ने कहा। एक बढ़िया गाड़ी जो वकील ने किराये पर ले रखी थी, फाटक के सामने आ कर खड़ी हो गई। "आप बैरन वोरोब्योव से ही मिलने जा रहे हैं न?"

वकील ने गाड़ीवान से कह दिया कि कहां चलना है। दोनों घोड़े बहुत बढ़िया थे। शीघ्र ही गाड़ी बैरन के घर के सामने जा पहुंची। बैरन घर पर ही था। बाहर वाले कमरे में एक बावर्दी युवा अफ़सर और दो स्त्रियां थीं। युवक की गरदन पतली और लम्बी थी और टेंटुआ आगे को बढ़ा हुआ था। जब चलता तो बड़े हल्के हल्के क़दम रखते हुए।

"आपका शुभनाम?" बड़े बांकेपन से स्त्रियों के पास से हौले हौले आगे बढ़ कर उसने नेख़्लूदोव से पूछा।

---

*आपकी ख़ुशी के लिए मैंने अपना नियम तोड़ कर अपने पति से आपकी संरक्षिता की सिफ़ारिश की है। इनका कहना है कि उसे फ़ौरन् रिहा किया जा सकता है। इन्होंने क़िले के कमांडेंट को लिख दिया है। सो, अब तो आना... आपका इंतज़ार करूंगी। (फ़्रेंच)

नेख़्लूदोव ने अपना नाम बताया।

"बैरन आपका ज़िक्र कर रहे थे। ज़रा ठहरिये," युवक ने कहा और भीतर के एक दरवाज़े में से निकल गया। जब वह लौट कर आया तो उसके साथ साथ एक स्त्री भी रोती हुई आयी जिसने मातमी कपड़े पहन रखे थे। अपने आंसू छिपाने के लिए वह महिला अपनी पतली सूखी हुई अंगुलियों से चेहरे पर की जाली नीचे खींचने की कोशिश कर रही थी। जाली उलझी हुई थी।

"तशरीफ़ लाइये," युवक ने नेख़्लूदोव से कहा और तनिक आगे बढ़ कर कमरे का दरवाज़ा खोल कर खड़ा हो गया।

जब नेख़्लूदोव अन्दर पहुंचा तो कमरे में एक मझोले क़द का गठीला सा आदमी बड़ी सी मेज़ के पीछे आराम कुर्सी पर बैठा था। सिर पर छोटे छोटे बाल थे और फ़्रॉक-कोट पहने हुए था। चेहरे का भाव बड़ा हंसमुख था। सिर के बाल, मूंछें तथा दाढ़ी सब सफ़ेद पड़ गये थे, लेकिन इसके विपरीत, चेहरा गुलाब की तरह लाल था और आंखों से दयालुता टपक रही थी। दोस्तों की तरह मुस्कराते हुए उसने नेख़्लूदोव को सम्बोधित किया—

"तुमसे मिल कर बड़ी ख़ुशी हुई। तुम्हारी मां से मेरी अच्छी जान-पहचान थी, अच्छी मैत्री थी। मैंने तुम्हें उस वक़्त देखा था जब तुम छोटे से लड़के थे। बाद में भी तुम्हें देखा जब तुम अफ़सर बन गये थे। आओ बैठो। बताओ क्या काम है... हां, हां," जब नेख़्लूदोव ने फ़ेदोस्या की कहानी सुनानी शुरू की तो अपने सिर के छोटे छोटे सफ़ेद बाल झटकते हुए कहने लगा, "कहो, कहो, कहते जाओ। ठीक कहते हो, कहानी बड़ी दर्दनाक है। क्या तुमने दरख़्वास्त दाखिल कर दी है?"

"दरख़्वास्त मैं साथ लेता आया हूं," जेब में से दरख़्वास्त निकालते हुए उसने कहा, "पर मैंने सोचा आपसे पहले बात कर लूं, इस आशा से कि इस तरह मुक़द्दमे की ओर विशेष ध्यान दिया जायेगा।"

"तुमने ठीक ही किया। मैं ख़ुद इसकी रिपोर्ट दूंगा," अपने हंसमुख चेहरे पर अनुकम्पा का भाव लाने का विफल प्रयास करते हुए बैरन ने कहा। "बड़ी दर्दनाक कहानी है। साफ़ मालूम होता है कि वह बच्चा थी। पति ने उसके साथ बुरा व्यवहार किया जिससे उसके दिल में घृणा उठी, पर ज्यों ज्यों वक़्त गुज़रता गया वे एक दूसरे के निकट आने लगे और एक दूसरे से प्यार करने लगे। ठीक है, मैं इसकी रिपोर्ट दूंगा।"

"काउंट इवान मिख़ाइलोविच कह रहे थे कि वे महारानी से इस बारे में बात करेंगे।"

नेख़्लूदोव के मुंह से ये शब्द निकलने की देर थी कि बैरन के चेहरे का भाव बदल गया।

"तुम दरख़्वास्त दफ़्तर में दे दो, फिर जो मुमकिन होगा किया जायेगा," उसने कहा।

इसी वक़्त युवा अफ़सर फिर कमरे में दाख़िल हुआ। ज़ाहिर था कि वह अपनी बांकी चाल दिखाना चाहता है।

"वही महिला फिर आपसे मिलना चाहती है। कहती है थोड़ी सी बात और कहनी है।"

"भेज दो। ओह, mon cher, कितने लोगों की विपदा हमें देखनी पड़ती है। काश कि हम सभी के आंसू पोंछ पाते। जो हमसे बन पड़ता है, हम करते हैं।"

महिला अन्दर दाख़िल हुई।

"मैं आपसे यह कहना भूल गई थी। मैं चाहती हूं कि उसे अपनी बेटी को छोड़ देने की इजाज़त नहीं दी जाय। वह तो तैयार है कि ..."

"मैंने आपसे पहले ही कह दिया है कि मुझसे जो कुछ भी बन पाया कर दूंगा।"

"भगवान् के लिए, बैरन, आप एक मां की रक्षा करेंगे।"

स्त्री ने बैरन का हाथ पकड़ लिया और उसे बार बार चूमने लगी।

"हर मुमकिन कोशिश की जायेगी।"

महिला के चले जाने पर नेख़्लूदोव भी रुख़सत लेने लगा।

"जो बन पड़ा किया जायेगा। मैं न्यायमन्त्रालय में इस सम्बन्ध मे बात करूंगा। उनका जवाब आने पर जो कुछ भी संभव हुआ ज़रूर किया जायेगा।"

कमरे में से निकल कर नेख़्लूदोव फिर दफ़्तर में गया। बड़ा ठाटदार दफ़्तर था, और उसमें भी, सेनेट के दफ़्तर की तरह बांके अफ़सर बैठे थे—साफ़-सुथरे, मधुरभाषी, हर बात नियमानुकूल करने वाले। उनके लिबास से, उनकी बोल-चाल से, शिष्टता टपकती थी।

"इन अफ़सरों का कोई अन्त नहीं, अनगिनत अफ़सर हैं। और सभी कितने मोटे-ताज़े हो रहे हैं। क़मीज़ें कितनी साफ़-सुथरी पहन रखी हैं

और इनके हाथ कितने साफ़ हैं। इनके बूट पालिश से कैसे चमकते हैं। यह सब इनके लिए कौन करता होगा? क़ैदियों की ही तुलना में क्यों, ये लोग तो किसानों की तुलना में भी बड़े सुखी जान पड़ते हैं!" नेख़्लूदोव के मन में अपने आप फिर ये विचार उठने लगे।

१६

यदि कोई व्यक्ति पीटर्सबर्ग के बन्दियों का भाग्य सुधार सकता था तो वह एक प्रसिद्ध बूढ़ा जनरल था, एक बैरन जिसके पुरखा जर्मन थे और जिसके बारे में लोग कहा करते थे कि उसकी अक़्ल अब काम नहीं करती। अपने जीवन में उसने बहुत से पदक प्राप्त किये थे, लेकिन छाती पर केवल एक ही पदक—श्वेत क्रॉस का पदक—लगाया करता था। इस पदक को वह बहुत बड़ा पुरस्कार मानता था। इससे उसे काकेशस में की गई सेवाओं के फलस्वरूप विभूषित किया गया था। उस समय उसके आदेश पर फ़ौज के सिपाहियों यानी बाल कटे, फ़ौजी वर्दी पहने, बंदूकों और संगीनों से लैस रूसी किसानों ने एक हज़ार से अधिक लोगों को मौत के घाट उतार दिया था, उन लोगों को जो अपनी स्वाधीनता, अपने देश तथा अपने परिवारों की रक्षा कर रहे थे। इसके बाद वह पोलैंड में नियुक्त हो कर चला गया। वहां पर भी उसने फ़ौजी सिपाहियों—रूसी किसानों के हाथों तरह तरह के जुर्म करवाये। इनके फलस्वरूप भी उसे अपनी वर्दी की शोभा बढ़ाने के लिए बहुत से पदक तथा पुरस्कार प्राप्त हुए। उसके बाद वह कहीं और चला गया। अब वह बूढ़ा और कमज़ोर हो चला था, इसलिए उसे इस पद पर नियुक्त किया गया था। इससे उसे रहने के लिए एक अच्छा घर, बंधी-बंधाई आमदनी और समाज में सम्मान प्राप्त था। वह बड़ी दृढ़ता से उन सभी नियमों का पालन करता था जो "ऊपर से" निर्धारित किये जाते थे। इन नियमों को वह विशेषतया महत्वपूर्ण मानता था और इन्हें वह तन-मन से पूरा करने की चेष्टा करता था। उसकी यह धारणा थी कि संसार की किसी भी दूसरी चीज़ में अदला-बदली की जा सकती है, लेकिन "ऊपर से" आये नियम नहीं बदल सकते। उसका काम राजनीतिक क़ैदियों को क़ैद तनहाई में रखना था, और वह उन्हें इस कुशलता से रखता था कि आधे से ज़्यादा

क़ैदी दस साल के अन्दर ही अन्दर ख़त्म हो जाते थे, कुछ पागल हो जाते, कुछ तपेदिक का शिकार हो जाते, कुछ आत्महत्या कर लेते—भूखे रह कर, कांच के टुकड़ों से अपनी नाड़ियां काट कर या अपने को आग लगा कर।

बूढ़ा जनरल सब जानता था। ये बातें उसकी आंखों के सामने घटती थीं। पर इनका उसकी अन्तरात्मा पर कोई असर नहीं होता था। वह इन्हें उतना ही महत्व देता था जितना कि दुर्घटनाओं को जो आंधी-तूफ़ान या बाढ़ आने पर घट जाती हैं। "ऊपर से" ज़ार के नाम से जो नियम बन कर आते थे, वह उनका पालन करता था, और उन्हीं के फलस्वरूप ये घटनाएं हो जाती थीं। इन नियमों का पालन करना अनिवार्य था, इसलिए उनके पालन के परिणामस्वरूप होने वाली घटनाओं पर विचार करना व्यर्थ था। बूढ़ा जनरल इसे एक सैनिक का देशभक्तिपूर्ण कर्तव्य समझता था कि वह इन बातों के बारे में सोचे तक नहीं, क्योंकि बहुत सोचने से उसके संकल्प में शिथिलता आ सकती थी जिससे वह अपनी ज़िम्मेवारियां ठीक तरह से नहीं निभा पायेगा।

हफ़्ते में एक दिन बूढ़ा जनरल क़ैदियों की कोठरियों का दौरा करता था। यह भी उसका काम था। उस समय वह क़ैदियों से पूछता कि अगर कोई फ़रमाइश करनी हो तो कर सकते हो। क़ैदी तरह तरह की फ़रमाइशें करते। वह चुपचाप उन्हें सुनता रहता। इस चुप्पी की कोई थाह नहीं पा सकता था। और सब सुन चुकने के बाद वह किसी एक फ़रमाइश को भी पूरा नहीं करता था। कारण, सभी फ़रमाइशें नियमों की दृष्टि से असंगत होती थीं।

नेख़्लूदोव गाड़ी में बूढ़े जनरल के मकान पर जा पहुंचा। ऐन उसी वक़्त मीनार पर के घंटाघर से घंटियों की सुरीली धुन बजी—"भगवान्, तेरी महिमा अपार है!" और उसके बाद घड़ी ने दो बजाये। घण्टियों की यह धुन सुन कर नेख़्लूदोव को दिसम्बरवादियों* के संस्मरण याद हो

---

*दिसम्बरवादी—अभिजात वर्ग के रूसी क्रांतिकारी; उन्होंने सामंतशाही और स्वेच्छाचारी शासन का विरोध किया। १४ दिसम्बर, १८२५ को उन्होंने सशस्त्र विद्रोह छेड़ दिया।

आये जो उसने किसी ज़माने में पढ़ थे। उनमें लिखा था कि जिन लोगों को उम्र भर क़ैद भोगनी हो, उनके दिल में किस भांति एक एक घण्टे के बाद बजने वाली यह मधुर धुन बार बार गूंजती है।

इस समय बूढ़ा जनरल अपनी बैठक में एक जड़ाऊ मेज़ के सामने बैठा था। कमरे में अन्धेरा किया हुआ था। मेज़ पर एक काग़ज़ के ऊपर एक चाय की तश्तरी रखी थी। कमरे में उसके साथ एक युवा कलाकार भी था जो जनरल के नीचे काम करने वाले एक अफ़सर का छोटा भाई था। कलाकार की पतली, नम, दुर्बल उंगलियां बूढ़े जनरल की कर्कश, झुर्रियों भरी, जोड़ों पर सख्त पड़ गयी उंगलियों में गुंथी हुई थीं और ये जुड़े हुए हाथ तश्तरी को लिये हुए झटकों के साथ काग़ज़ पर चल रहे थे, जिस पर वर्ण-माला के सभी अक्षर लिखे थे। तश्तरी जनरल के प्रश्न के उत्तर में बता रही थी कि मृत्यु के बाद आत्माएं किस भांति एक दूसरी को पहचानती हैं।

एक अर्दली बाहर खड़ा चोबदार का काम कर रहा था। उसके हाथ जिस समय नेख़्लूदोव ने अपना कार्ड अन्दर भेजा, उस समय तश्तरी के माध्यम से जोन ऑफ़ आर्क की आत्मा बोल रही थी। एक एक अक्षर जोड़ कर जोन ऑफ़ आर्क की आत्मा ने ये शब्द बना डाले थे—"उनके पहचानने का माध्यम..." और ये शब्द बाक़ाइदा नोट कर लिये गये थे। जब अर्दली अन्दर आया उस समय तश्तरी "हो" और "गी" पर आ कर अटक गई थी, और इसके बाद कभी एक तरफ़ को और कभी दूसरी तरफ़ को हिचकोले खाने लगी थी। इन हिचकोलों का कारण यह था कि जनरल चाहता था कि तश्तरी "आ" की ओर मुड़े, कि जोन ऑफ़ आर्क को यह कहना चाहिए कि आत्माओं के पहचानने का माध्यम होगी आन्तरिक शुद्धता, जो वे लौकिक जीवन के कलुष को धो कर प्राप्त करेंगी, या ऐसा ही कुछ। परन्तु कलाकार का यह मत नहीं था। वह चाहता था कि अगला अक्षर "ज्यो" हो, अर्थात् आत्माएं "ज्योति" द्वारा एक दूसरी को पहचानेंगी जो उनके अलौकिक प्रतिरूपों से फूट रही होगी। जनरल की सफ़ेद, घनी भौंहें चढ़ी हुई थीं, और वह एकटक तश्तरी पर रखे हाथों की ओर देख रहा था। उसका ख़्याल था कि तश्तरी अपने आप चल रही है, पर वास्तव में वह उसे "आ" की ओर खींच रहा था। दुबला-पतला कलाकार, जिसने अपने पतले पतले बालों को

कानों के पीछे कंघी कर रखा था, अपनी कान्तिहीन नीली आंखों से बैठक के एक अन्धेरे कोने की ओर देखे जा रहा था, और तश्तरी को "ज्यो" अक्षर की ओर खींचे जा रहा था। उत्तेजना में उसके होंठ फड़फड़ा रहे थे।

अर्दली के यों बीच में आ टपकने पर जनरल ने मुंह बनाया, लेकिन क्षण भर बाद उसके हाथ से कार्ड ले लिया। फिर चश्मा लगा, बड़बड़ाते हुए उठ खड़ा हुआ। उसकी पीठ में दर्द था, फिर भी वह सीधा-सतर खड़ा हो गया, और अपनी ठिठुरती अंगुलियों को एक दूसरी के साथ रगड़ने लगा।

"उन्हें पढ़ने वाले कमरे में ले चलो।"

"हुज़ूर की आज्ञा हो तो मैं अकेले ही इस सन्देश को प्राप्त कर लूं," कलाकार ने कहा, "मुझे भास हो रहा है कि आत्मा उतर रही है।"

"अच्छी बात है, अकेले ही प्राप्त कर लो," जनरल ने दृढ़ता से सख़्ती भरी आवाज़ में कहा, और बड़े बड़े, नपे-तुले क़दम रखते हुए, चुस्ती से पढ़ने वाले कमरे की ओर चला गया।

"आपसे मिल कर बड़ी ख़ुशी हुई," जनरल ने नेख़्लूदोव से कहा, और मेज़ की बग़ल में रखी आराम-कुर्सी की ओर बैटने का इशारा किया। जनरल के शब्द तो मैत्रीपूर्ण थे लेकिन आवाज़ रूखी थी। "पीटर्सबर्ग में आये बहुत दिन हो गये?"

नेख़्लूदोव ने जवाब दिया कि नहीं, अभी अभी आया हूं।

"आपकी मां, प्रिंसेस, कैसी हैं?"

"मां का तो देहान्त हो चुका है।"

"क्षमा करना। मुझे बड़ा अफ़सोस है। मेरे बेटे ने मुझे बताया था कि वह आपसे मिला था।"

जनरल का बेटा भी नौकरी में बाप की ही तरह आगे बढ़ता जा रहा था। फ़ौजी अकादमी में से निकलने के बाद वह अब गुप्त विभाग में काम करता था, और उसे अपने काम पर बड़ा गर्व था। सरकारी गुप्तचर उसी के अधीन काम करते थे।

"मैं और आपके पिता एक साथ फ़ौज में रहे। हमारी बड़ी अच्छी दोस्ती थी, हम कॉमरेड थे। और आप क्या नौकरी में हैं?"

"जी नहीं।"

जनरल ने असम्मति प्रकट करते हुए अपना सिर एक तरफ़ को झुका दिया।

"मुझे आपसे एक दरख़्वास्त करनी है।"

"बड़ी ख़ुशी से, कहिये। मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?"

"यदि मेरी दरख़्वास्त नामुनासिब हो तो क्षमा कीजियेगा। मैं मजबूर हो कर आपके पास आया हूं।"

"कहिये क्या है?"

"क़िले में एक गुर्केविच क़ैद है। उसकी मां चाहती है कि उसे बेटे से मिलने की इजाज़त मिल जाय। और नहीं तो कम से कम उसे कुछ किताबें भेजने की इजाज़त मिल जाय।"

नेख़्लूदोव की प्रार्थना पर जनरल ने न तो सन्तोष प्रकट किया न असन्तोष ही। सिर एक ओर को टेढ़ा कर के उसने आंखें बन्द कर लीं, मानो उस पर विचार कर रहा हो। लेकिन वास्तव में वह किसी बात पर भी विचार नहीं कर रहा था। न ही उसे नेख़्लूदोव की दरख़्वास्तों में कोई दिलचस्पी थी। वह भली भांति जानता था कि जवाब वही होगा जिसकी क़ानून इजाज़त देता है। वह तो केवल अपने दिमाग़ को आराम दे रहा था और कुछ भी नहीं सोच रहा था।

"देखिये," वह आख़िर बोला, "यह मेरे बस की बात नहीं है। मुलाक़ातों के बारे में स्वयं ज़ार द्वारा अनुमोदित एक नियम है, और जिस बात की उसमें इजाज़त है, उसी की इजाज़त मिल सकती है। जहां तक किताबों का सवाल है, हमारे पास पुस्तकालय है। जो जो किताबें पढ़ने की इजाज़त है, वे मिल सकती हैं।"

"ठीक है, परन्तु वह विज्ञान की किताबें मंगवाना चाहता है। वह पढ़ाई करना चाहता है।"

"उसकी बातों में न आइये," जनरल ने कहा और थोड़ी देर के लिए चुप हो गया। "वह पढ़ाई करना नहीं चाहता। यह केवल बेचैनी है।"

"पर किया क्या जाय? उनका जीवन इतना कड़ा है कि वक़्त काटने के लिए कुछ तो करना ही पड़ता है," नेख़्लूदोव ने कहा।

"ये लोग हमेशा शिकायत करते रहते हैं," जनरल बोला, "हम उन्हें अच्छी तरह जानते हैं।" वह क़ैदियों के बारे में इस तरह बात कर

रहा था जैसे वे किसी ख़ास, वहुत बुरी जाति के लोग हों। "जो आराम उन्हें यहां पर है वह शायद ही किसी दूसरे जेलख़ाने में मिले," जनरल कहता गया।

और अपनी सफ़ाई सी देते हुए वह उन सुविधाओं को गिनाने लगा जो क़ैदियों को प्राप्त थीं, मानो इस संस्था का उद्देश्य क़ैदियों को आरामदेह घर वना कर देना हो।

"किसी ज़माने में ज़रूर वे तकलीफ़ में थे, लेकिन अब तो उनका वड़ी अच्छी तरह से ख़्याल रखा जाता है," वह कह रहा था। "खाने के लिए उन्हें हमेशा तीन व्यंजन मिलते हैं, और उनमें से एक ज़रूर गोश्त होता है, चाहे कटलेट के रूप में हो या रिस्सोल के रूप में। इतवार के दिन चार व्यंजन दिये जाते हैं, एक मीठी चीज़ भी उन्हें मिलती है। भगवान् करे हर रूसी को ऐसा खाना नसीव हो जो इन क़ैदियों को मिलता है।"

वृद्ध पुरुष जव भी अपने प्रिय विषय पर वातें करने लगते हैं तो उनके लिए रुकना कठिन हो जाता है। जनरल भी, एक के वाद एक, तरह तरह के सवूत दे रहा था, यह सिद्ध करने के लिए कि क़ैदियों की मांगें कितनी अनुचित हैं और वे कितने कृतघ्न लोग हैं। ये सवूत वह पहले भी कई वार दे चुका था।

"उन्हें धार्मिक पुस्तकें तथा पुराने रसाले दिये जाते हैं। हमने मुनासिव पुस्तकालय खोल रखा है। लेकिन वे लोग वहुत कम पढ़ते हैं। शुरू शुरू में तो वे वड़ी दिलचस्पी दिखाते हैं, लेकिन वाद में नई कितावें ज्यों की त्यों पड़ी रहती हैं, उनके आधे पन्ने काटे तक नहीं जाते। और पुरानी कितावों के पन्ने कोई उलटता ही नहीं। हमने यह आज़मा कर देख लिया है," वूढ़े जनरल ने कहा, और उसके चेहरे का भाव कुछ वदला, मानो हल्की सी मुस्कान आई हो। "कितावों में हम जान वूझ कर काग़ज़ों की छोटी छोटी निशानियां रख देते थे। और वे ज्यों की त्यों वहीं पड़ी रहतीं। लिखने की भी कोई मनाही नहीं है," वह कहता गया, "वहां एक स्लेट रख दी गई है और साथ में स्लेट-पेंसिल भी। मनवहलाव के लिए जी भर कर लिख सकते हैं। जव स्लेट भर जाय तो उसे पोंछ कर फिर लिख सकते हैं। मगर उन्हें लिखने का कोई शौक़ नहीं है। जल्दी ही वे शान्त हो जाते हैं। शुरू शुरू में वे वेचैन होते हैं, लेकिन वाद में

तो वे मोटे होने लगते हैं और बड़े चुपचाप रहते हैं।" इस तरह की बातें जनरल कहे जा रहा था। वह सोच तक न सकता था कि उसके शब्दों का कितना भयानक अर्थ है।

नेख्लूदोव उसकी जीर्ण फटी हुई आवाज़ को सुन रहा था, उसके कठोर पड़ गये अवयवों, सफ़ेद भौंहों के नीचे कान्तिहीन आंखों, तथा बूढ़े, सफ़ाचट, लटकते गालों को जिन्हें उसकी फ़ौजी वर्दी का कॉलर ऊपर उठाये हुए था, देखे जा रहा था। उसकी छाती पर सफ़ेद क्रॉस लटक रहा था जिस पर उसे बेहद गर्व था, मुख्यतया इस कारण कि इसे प्राप्त करने के लिए उसने बड़े विस्तृत पैमाने पर क़त्ले-आम किया था और ज़ुल्म ढाये थे। नेख्लूदोव समझ गया था कि बूढ़े की बातों का जवाब देना या उसे यह बताना कि उसके शब्दों के पीछे कैसे भयानक अर्थ छिपे हैं, सर्वथा निरर्थक था। उसने फिर एक बार प्रयास किया और क़ैदी शूस्तोवा के बारे में पूछा जिसकी रिहाई का हुक्म जारी हो चुका था, जैसा कि उसे उसी दिन प्रातः मालूम हुआ था।

"शूस्तोवा – शूस्तोवा? क़ैदी इतने ज़्यादा हैं कि मुझे हरेक का नाम कैसे याद रह सकता है?" उसने कहा मानो उनकी संख्या के लिए उनकी भर्त्सना कर रहा हो। उसने घण्टी बजायी और अपने सेक्रेटरी को बुलवा भेजा। जितनी देर सेक्रेटरी नहीं आया, वह नेख्लूदोव को समझाता रहा कि उसे सरकारी नौकरी करनी चाहिए, क्योंकि ईमानदार और कुलीन लोगों की (जिनमें वह अपने को भी शामिल करता था) ज़ार को, तथा देश को बहुत ज़रूरत है। ज़ाहिर था कि अन्तिम शब्द उसने केवल वाक्य को सुगठित रूप देने के लिए ही कहे थे।

"मैं बूढ़ा हो चला हूं, फिर भी यथाशक्ति सेवा किये जा रहा हूं।"

सेक्रेटरी आया। क्षीण, दुर्बल चेहरा, आंखों में बुद्धिमत्ता तथा बेचैनी झलकती थी। उसने रिपोर्ट दी कि शूस्तोवा किसी अजीब सी जगह पर बन्द है, और उसके बारे में अभी तक कोई आर्डर नहीं मिला।

"जिस दिन आर्डर मिला, हम उसी दिन उसे रिहा कर देंगे। हम उन्हें रखना नहीं चाहते। उन्हें अपने पास रखने की हमें बहुत चाह नहीं है," फिर एक बार चेहरे पर मीठी मुस्कान लाने की चेष्टा करते हुए जनरल ने कहा। लेकिन इस मुस्कराहट से उसका वृद्ध चेहरा और भी कुरूप हो उठा।

नेख़्लूदोव उठ खड़ा हुआ। उसके मन में इस भयानक वृद्ध पुरुष के प्रति घृणा और अनुकम्पा की मिश्रित सी भावना पैदा हो गई थी। लेकिन वह इस कोशिश में था कि उसे ज़बान पर न लाये। दूसरी तरफ़ वृद्ध जनरल यह महसूस कर रहा था कि नेख़्लूदोव के साथ बहुत रुखाई से पेश नहीं आना चाहिए। ज़ाहिर है कि यह गुमराह, लापरवाह युवक है, लेकिन आख़िर उसके साथी का बेटा है, इसलिए उसे सीधा रास्ता दिखाये बिना नहीं जाने देना चाहिए।

"अच्छा, तो चलते हो? मेरे कहे का बुरा नहीं मानना। मेरे दिल में तुम्हारे लिए प्यार है इसी लिए कह दिया। इन लोगों का संग नहीं करो। इनमें कोई भी निर्दोष नहीं है। सबके सब बहुत गिरे हुए हैं। हम उन्हें ख़ूब जानते हैं," उसने इस लहजे में कहा जिसमें शक की कोई गुंजाइश ही न थी।

और उसके मन में कोई संशय नहीं था। इसलिए नहीं कि यह बात सच थी, वरन् इसलिए, कि यदि यह सच न होती, तो उसे मानना पड़ता कि वह कोई वीर नायक नहीं है जो अपने उत्कृष्ट जीवन के अन्तिम दिन व्यतीत कर रहा है, बल्कि एक महानीच आदमी है जिसने अपना ईमान बेच डाला है, और इस बुढ़ापे में भी इसे बेचे जा रहा है।

"सबसे अच्छी बात तो यह है कि तुम सरकारी नौकरी कर लो," वह कहता गया। "ज़ार को ईमानदार लोगों की ज़रूरत है—और देश को भी," उसने जोड़ा। "अगर मैं और अन्य लोग भी तुम्हारी तरह सेवा करना छोड़ दें तो क्या होगा? पीछे रह कौन जायेगा? यहां हम बैठे सरकार के प्रबन्ध की आलोचना कर रहे हैं, लेकिन सरकार की कोई मदद नहीं करना चाहते।"

नेख़्लूदोव ने एक भरपूर ठण्डी सांस ली, और झुक कर नमस्कार किया, फिर उसके बड़े से, कर्कश हाथ से हाथ मिलाया, जो जनरल ने बड़ी कृपालुता से आगे बढ़ा दिया था, और कमरे में से बाहर निकल आया।

जनरल ने भर्त्सना में सिर हिलाया, और पीठ मलते हुए बैठक में वापस लौट गया जहां कलाकार उसका इन्तज़ार कर रहा था। उसने जोन ऑफ़ आर्क की आत्मा का पूरा उत्तर लिख दिया था। जनरल ने

चश्मा लगाया और पढ़ने लगा। लिखा था—"उनके पहचानने का माध्यम होगी वह ज्योति जो उनके अलौकिक प्रतिरूपों से फूट रही होगी।"

"ओह," जनरल ने समर्थन की आवाज़ में कहा और आंखें बन्द कर लीं। "लेकिन यदि सबकी ज्योति एक जैसी हुई तो वे एक दूसरी को कैसे पहचान पायेंगी?" उसने पूछा और फिर तश्तरी पर कलाकार की अंगुलियों में अपनी अंगुलियां गूंथ कर बैठ गया।

गाड़ीवान ने गाड़ी चलाई और नेख़लूदोव को फाटक में से बाहर ले आया।

"यहां पर बहुत ऊब उठती थी, हुज़ूर," नेख़लूदोव की ओर घूम कर वह कहने लगा। "मेरा तो जी चाहता था कि आपका इन्तज़ार किये बिना यहां से चल दूं।"

"हां, ज़रूर ऊब उठती है," नेख़लूदोव ने सहमति प्रकट की और एक गहरी सांस ली। आकाश में भूरे रंग के बादल उड़ रहे थे। नेवा नदी की सतह पर जहाज़ और किश्तियां चल रही थीं जिनसे पानी में उठती हुई हल्की हल्की लहरें सूरज की रोशनी में झिलमिला रही थीं। इनकी ओर देखते हुए नेख़लूदोव के मन को कुछ चैन मिला।

२०

दूसरे दिन सेनेट में मास्लोवा के मुक़द्दमे की सुनाई थी। सेनेट भवन के शानदार फाटक के सामने बहुत सी गाड़ियां खड़ी थीं। यहीं पर नेख़लूदोव और वकील एक दूसरे से मिले, और एक साथ सीढ़ियां चढ़ते हुए पहली मंज़िल पर पहुंचे। इस भवन की सीढ़ियां इतनी बढ़िया थीं कि देखते आंखें नहीं थकती थीं। फ़ानारिन इस घर के कोने कोने से वाकिफ़ था। ऊपर पहुंच कर वे बाईं ओर घूम गये और एक दरवाज़े में से अन्दर दाख़िल हुए जिसके ऊपर बड़े बड़े अक्षरों में वह तारीख़ लिखी थी जिस दिन से ज़ाब्ता-क़ानून लागू हुआ था।

एक तंग से कमरे में फ़ानारिन ने अपना ओवरकोट उतारा। वहां खड़े कर्मचारी से उसे पता चला कि सभी सेनेटर पहुंच चुके हैं। आख़िरी सेनेटर को आये कुछ ही मिनट हुए थे। फ़ानारिन ने अपना दुमदार कोट

पहन रखा था और सफ़ेद क़मीज़ पर सफ़ेद नकटाई लगाये हुए था। उसके होंठों पर आत्मविश्वास की मुस्कान खेल रही थी। वहां से निकल कर वह साथ वाले कमरे में चला गया जहां दायें हाथ एक बड़ी सी अलमारी और एक मेज़ रखी थी और बायीं ओर एक घुमावदार सीढ़ी ऊपर को चली गयी थी। एक बांका सा सरकारी अफ़सर, बग़ल में बस्ता दबाये, सीढ़ी पर से नीचे उतर रहा था। इस कमरे में एक वयोवृद्ध पुरुष खड़ा था, जिसके सिर पर लम्बे लम्बे सफ़ेद बाल थे। एक छोटा सा कोट और भूरे रंग की पतलून पहने हुए, वह सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। उसके पास दो नौकर बड़े अदब से खड़े थे।

वयोवृद्ध पुरुष उस अलमारी के अन्दर चला गया और अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लिया।

फ़ानारिन को एक साथी-वकील नज़र आ गया, जिसने उसी की तरह सफ़ेद नकटाई और ड्रेस-कोट पहन रखे थे और फ़ौरन् उसके साथ बड़ी गर्मजोशी से बातें करने लगा। इस बीच नेख़्लूदोव कमरे में बैठे लोगों की जांच करने लगा। वहां पर लगभग पन्द्रह व्यक्ति बाहर के थे, जिनमें से दो स्त्रियां थीं—एक तो छोटी उम्र की थी जिसने कमानीदार चश्मा लगा रखा था और दूसरी स्त्री बड़ी उम्र की थी, और उसके बाल सफ़ेद हो रहे थे।

उस दिन किसी अख़बार में छपे एक लेख के संबंध में मानहानि के मुक़द्दमे की सुनाई थी, जिसे सुनने के लिए बाहर से लोग अधिक संख्या में आये हुए थे। इनमें से अधिकांश पत्रकारिता के धन्धे से सम्बन्ध रखते थे।

अदालत का पेशकार हाथ में एक काग़ज़ उठाये फ़ानारिन के पास आया। पेशकार लाल लाल गालों वाला एक सुन्दर आदमी था और बहुत बढ़िया वर्दी पहने हुए था। फ़ानारिन के पास पहुंच कर उसने उसका काम पूछा, और यह सुन कर कि वह मास्लोवा के मुक़द्दमे के सम्बन्ध में आया है, काग़ज़ पर कुछ नोट कर के वहां से चला गया। इसके बाद अलमारी का दरवाज़ा खुला और लम्बे लम्बे सफ़ेद बालों वाले वृद्ध ने बाहर क़दम रखा। अब वह छोटा कोट पहने हुए नहीं था। उसके स्थान पर उसने दूसरी पोशाक पहन रखी थी जिस पर सुनहरी गोटा लगा था और छाती पर धातु के चमकते पतरे लगे थे। इस लिबास में वह पंछी सा लगता था।

यह अजीब सी पोशाक पहन कर वृद्ध को स्वयं झेंप होने लगी थी। अपनी आम रफ़्तार से तेज़ चलता हुआ वह जल्दी जल्दी सामने के दरवाज़े में से बाहर निकल गया।

"यह बे था। उसकी बड़ी इज़्ज़त है," फ़ानारिन ने नेख़्लूदोव से कहा, फिर उसे अपने सहकर्मी से मिलाया और उस मुक़द्दमे की चर्चा करने लगा जो अभी पेश होने जा रहा था। कहने लगा कि वह बड़ा दिलचस्प मुक़द्दमा है।

कुछ ही देर बाद मुक़द्दमे की सुनवाई शुरू हो गई, और नेख़्लूदोव, अन्य लोगों के साथ बाईं ओर अदालत के कमरे में चला गया। अन्दर जा कर, फ़ानारिन समेत, सभी एक डण्डहरे के पीछे बैठ गये। केवल पीटर्सबर्ग का वकील डण्डहरे के सामने एक मेज़ पर जा बैठा।

आकार में सेनेट का अदालती कमरा इतना बड़ा नहीं था जितना कि ज़िला-कचहरी। इसकी साज-सज्जा भी अधिक साधारण थी। हां, सेनेट के सामने रखे मेज़ का कपड़ा हरे रंग का होने के बजाय गुलाबी मख़मल का था और उसके किनारों पर सुनहरी गोटा लगा था। पर यहां पर भी वही चीज़ें रखी थीं जो सभी न्यायालयों में रखी रहती हैं: बड़ा शीशा, देव-प्रतिमा तथा ज़ार की तसवीर। उसी तरह गंभीर आवाज़ में पेशकार ने पुकारा—"जज साहिबान तशरीफ़ ला रहे हैं।" उसी तरह सभी लोग खड़े हो गये। वर्दी पहने सेनेटरों ने उसी तरह प्रवेश किया और ऊंची पीठ वाली कुर्सियों पर बैठ कर, स्वाभाविक लगने की कोशिश में मेज़ पर झुक गये।

वहां पर चार सेनेटर बैठे थे—निकीतिन, जो प्रधान की कुर्सी पर बैठा था, सफ़ाचट, पतले चेहरे और कठोर आंखों वाला आदमी था। दूसरा वोल्फ़ था। उसके होंठ एक विचित्र अर्थपूर्ण ढंग से भिंचे हुए थे। अपने छोटे छोटे सफ़ेद हाथों से वह मुक़द्दमों के काग़ज़ात के पन्ने उलट रहा था। तीसरा स्कोवोरोद्निकोव था, मोटा, बोझल सा व्यक्ति जिसके मुंह पर चेचक के दाग़ थे। यह क़ानून का बड़ा विद्वान था। और चौथा बे था, लम्बे लम्बे सफ़ेद बालों वाला आदमी जो सबसे आख़िर में पहुंचा था।

सेनेटरों के साथ ही मुख्य सेक्रेटरी और सरकारी वकील भी अन्दर आ गया था। सरकारी वकील दुबला-पतला, मझोले क़द का युवक था,

जिसने दाढ़ी-मूंछ मूंड रखी थी। चेहरा सांवला और आंखें स्याह तथा उदास सी थीं। नेख़्लूदोव ने उसे देखते ही पहचान लिया, हालांकि वह बड़ी अजीब सी वर्दी पहने हुए था और नेख़्लूदोव को उससे मिले छः साल का अर्सा हो चुका था। पढ़ाई के ज़माने में वह नेख़्लूदोव के सब से गहरे मित्रों में से था।

"क्या सरकारी वकील का नाम सेलेनिन है?" नेख़्लूदोव ने वकील से पूछा।

"हां, क्यों, क्या बात है?"

"मैं उसे बहुत अच्छी तरह जानता हूं। बहुत ही भला आदमी है।"

"अपने काम में भी अच्छा है। इधर-उधर की बातें नहीं करता, मतलब की बात करता है। आपको इस आदमी से मिलना चाहिए था।"

"कोई डर नहीं, वह अपने ज़मीर के ख़िलाफ़ कोई काम नहीं करेगा, बड़ा ईमानदार आदमी है," नेख़्लूदोव ने कहा। उसे सेलेनिन के साथ अपने घनिष्ठ सम्बन्ध तथा मैत्री याद आ रही थी। और उसके व्यक्तित्व के विशेष गुण याद आ रहे थे। सेलेनिन बड़े सच्चे दिल का, ईमानदार तथा शिष्ट युवक हुआ करता था।

"ठीक है, अब तो समय भी नहीं है," फ़ानारिन ने फुसफुसा कर कहा। मुक़द्दमा शुरू हो गया था और उसकी रिपोर्ट पढ़ी जाने लगी थी। फ़ानारिन का ध्यान रिपोर्ट की तरफ़ था।

मुक़द्दमे में अपील-न्यायालय के एक फ़ैसले के विरुद्ध अपील की गई थी जिसमें उसने ज़िला-कचहरी के निर्णय की पुष्टि की थी।

नेख़्लूदोव भी ध्यान से सुनने और मामले को समझने की कोशिश करने लगा। लेकिन यहां पर भी उसे वही कठिनाई पेश आ रही थी जो ज़िला-कचहरी में पेश आई थी। यहां पर भी असल बात को छोड़ कर इधर-उधर की गौण बातों पर विचार किया जा रहा था। मुक़द्दमा एक अख़बार के बारे में था जिसमें एक लेख छपा था। अख़बार में किसी ज्वाइंट स्टॉक कम्पनी के डायरेक्टर की पोल खोली गयी थी जिसने कोई प्रपंच रचा था। जान पड़ता था कि इस मुक़द्दमे में एक ही बात महत्व की है, यह देखना कि डायरेक्टर अपनी स्थिति का नाजायज़ फ़ायदा उठा रहा है या नहीं, और यदि उठा रहा है तो उसे ऐसा करने से रोकना। लेकिन यहां पर और ही बातों पर विचार किया जा रहा था: क्या अख़बार के

सम्पादक को इस लेख के छापने का क़ानून की दृष्टि से अधिकार था या नहीं, और उसे छाप कर उसने कौन सा जुर्म किया है—मिथ्या निन्दा का या दोषारोप का—और कहां तक मिथ्या निन्दा में दोषारोप का अंश शामिल है, अथवा दोषारोप में मिथ्या निन्दा का। इसके अतिरिक्त तरह तरह के क़ानूनों तथा फ़ैसलों पर विचार किया जा रहा था जो किसी सार्वजनिक विभाग द्वारा पास किये गये थे लेकिन जो साधारण लोगों की समझ के बाहर थे।

नेख़्लूदोव की समझ में एक ही बात आई। बावजूद इस बात के कि एक ही दिन पहले वोल्फ़ बड़े ज़ोर से यह कह रहा था कि सेनेट किसी मुक़द्दमे की जांच गुण-दोष के आधार पर नहीं कर सकती, यहां, प्रत्यक्षत: इस मुक़द्दमे में वह न्यायालय के निर्णय को रद्द करने के हक़ में था। और सेलेनिन, जो स्वभावत: संयम से काम लेता था, यहां अप्रत्याशित रूप से बड़े जोश-ख़रोश से इसके विरुद्ध बोल रहा था। आत्मानुशासी सेलेनिन के इस तरह जोश से बोलने का एक कारण था हालांकि उसे यों बोलते देख कर नेख़्लूदोव हैरान हो रहा था। एक तो उसे मालूम हो गया था कि पैसे के मामले में डायरेक्टर साफ़ नहीं है। दूसरे, उसके कानों में अचानक यह ख़बर पड़ गई थी कि कुछ ही दिन पहले इस धोखेबाज़ के घर में एक बहुत बड़ी डिनर-पार्टी हुई थी और उसमें वोल्फ़ भी शरीक हुआ था। मुक़द्दमे पर अपनी रिपोर्ट देते समय वोल्फ़ एक एक शब्द तौल तौल कर बोला, लेकिन इसके बावजूद साफ़ ज़ाहिर हो रहा था कि वह डायरेक्टर का पक्ष ले रहा है। इससे सेलेनिन उत्तेजित हो उठा और बड़े ग़ुस्से से जिरह करने लगा। स्पष्टतया, सेलेनिन के भाषण से वोल्फ़ नाराज़ हो गया। उसका चेहरा तमतमा उठा, बार बार वह अपनी कुर्सी में हिलने लगा, चुपचाप बैठे बैठे भी वह इस तरह के इशारे कर रहा था मानो हैरान हो रहा हो, और जब अन्य सेनेटरों के साथ वह उठ कर विचार-कक्ष में गया तो बड़े रोब के साथ और नाराज़ दिखते हुए।

"आप किस मुक़द्दमे के सिलसिले में यहां आये हैं?" फ़ानारिन को सम्बोधित करते हुए पेशकार ने फिर पूछा।

"मैंने आपको बतला तो दिया है। मास्लोवा के मुक़द्दमे के सिलसिले में।"

"हां, ठीक है। उसकी सुनाई तो आज ही होगी, लेकिन..."

"लेकिन क्या?" वकील ने पूछा।

"बात यह है कि सेनेटरों का विचार था कि उस मुक़द्दमे पर कोई जिरह नहीं होगी। इसलिए, इस मौजूदा मुक़द्दमे पर अपना निर्णय देने के बाद सेनेटर शायद फिर बाहर नहीं आयेंगे। लेकिन मैं जा कर उन्हें इत्तला किये देता हूं।"

"क्या मतलब?"

"मैं उन्हें इत्तला किये देता हूं। अभी इत्तला किये देता हूं।" और पेशकार ने फिर अपने काग़ज़ पर कुछ लिख लिया।

सेनेटरों का यही इरादा था। वे चाहते थे कि दोषारोप के मुक़द्दमे का फ़ैसला सुनायेंगे और उसके बाद विचार-कक्ष में ही बैठे बैठे, चाय-सिगरेट पीते हुए बाक़ी काम—जिसमें मास्लोवा का मुक़द्दमा भी शामिल था—निबटा देंगे।

२१

बहस के कमरे में गोल मेज़ के इर्दगिर्द सभी सेनेटर बैठ गये। उनके बैठते ही वोल्फ़ बड़ी गर्मजोशी से तर्क पेश करने लगा कि सज़ा रद्द कर दी जानी चाहिए।

प्रधान चिड़चिड़े मिज़ाज का आदमी था। आज तो वह और दिनों से भी ज़्यादा बदमिज़ाज हो रहा था। अदालत में सुनवाई के दौरान ही उसने इस केस पर अपनी राय तय कर ली थी और वोल्फ़ की बातों पर कोई ध्यान न देता हुआ वह अपने विचारों में खोया बैठा था। उसे एक महत्वपूर्ण पद पर नियुक्त किया जाना चाहिए था, लेकिन विल्यानोव को नियुक्त कर दिया गया था। इस घटना की चर्चा करते हुए जो शब्द कल उसने अपने संस्मरणों में लिखे थे, वे अब उसके मन में बार बार घूम रहे थे। बड़ी मुद्दत से इस पद का उसे इन्तज़ार रहा था। प्रधान निकीतिन ऐसे पदाधिकारियों के सम्पर्क में था जो सबसे ऊंचे दो दर्जों में रखे गये थे। उसे सच्चे दिल से यह विश्वास था कि उन पदाधिकारियों के बारे में उसकी राय भावी इतिहासकारों के लिए अमूल्य सामग्री का काम देगी। एक ही दिन पहले उसने एक अध्याय लिखा था जिसमें उन

विशेष पदाधिकारियों की जी खोल कर भर्त्सना की थी और कहा था कि जब रूस के वर्तमान शासक देश को सर्वनाश की ओर ले जा रहे थे, उस समय इन पदाधिकारियों ने स्थिति को बचाने की कोई चेष्टा नहीं की, मतलब कि उसे ऊंची तनख़्वाह पर नियुक्त नहीं होने दिया। अब उसका विचार था कि आने वाली पीढ़ियों के लिए यह अध्याय घटनाओं पर एक नयी रोशनी डालेगा।

"हां, ज़रूर," वोल्फ़ के सवाल के जवाब में, बिना उसका एक भी शब्द सुने, उसने कह दिया।

बे का मुंह लटका हुआ था। वह वोल्फ़ की बात सुन रहा था, लेकिन साथ ही सामने रखे काग़ज़ पर एक हार बना रहा था। बे पक्का उदारवादी था। इस शताब्दी की सातवीं दशाब्दी की उदारवादी परम्पराओं को वह पवित्र मानता था। आम तौर पर वह तटस्थ रहता, लेकिन जब कभी वह तटस्थता की दृढ़ सीमाओं को लांघता तो उदारवाद की ही दिशा में। इस मुक़द्दमे में भी उसने ऐसा ही किया। एक तो धोखेबाज़ डायरेक्टर जिसने अपील कर रखी थी बड़ा दुष्ट आदमी था। इसके अलावा एक पत्रकार पर लिखित दोषारोप के जुर्म में मुक़द्दमा चलाना प्रेस-स्वातन्त्र्य को सीमित करना था। इन्हीं कारणों से बे की इच्छा थी कि अपील को रद्द कर दिया जाय।

वोल्फ़ ने अपना तर्क समाप्त किया। इस पर बे ने तसवीर बनाना बन्द कर दिया और बड़ी उदास और विनम्र आवाज़ में, बड़े स्पष्ट, सरल तथा विश्वासोत्पादक शब्दों में यह साबित करने लगा कि अपील निराधार है (वह उदास इसलिए था कि उसे इन स्वतःसिद्ध वचनों को समझाना पड़ रहा था)। इसके बाद उसने अपना सिर झुका लिया, जिस पर के बाल सफ़ेद हो चुके थे और फिर से हार की तसवीर बनाने लगा।

स्कोवोरोद्निकोव वोल्फ़ के ऐन सामने बैठा था और अपनी मोटी मोटी अंगुलियों से दाढ़ी और मूछों के बाल मुंह में घुसेड़ रहा था। बे के बोल चुकने पर उसने दाढ़ी के बाल चबाना बन्द कर दिया और ऊंची, कर्कश आवाज़ में अपनी राय देने लगा। अपील करने वाला बड़ा दुष्ट आदमी है, उसने कहा, लेकिन इसके बावजूद मैं उसकी सजा मनसूख़ करने को कहता यदि अपील किसी क़ानूनी आधार पर खड़ी होती। लेकिन चूंकि क़ानूनी आधार बिल्कुल कोई नहीं है, इसलिए मैं बे की राय का समर्थन

करता हूं। वोल्फ़ के रास्ते में रोड़ा अटकाते हुए स्कोवोरोद्निकोव मन ही मन ख़ुश था। प्रधान ने स्कोवोरोद्निकोव की राय का समर्थन किया और अपील रद्द कर दी गई।

वोल्फ़ असन्तुष्ट था, विशेषकर इसलिए कि उसे लग रहा था जैसे रंगे हाथों पकड़ा गया हो, कि पक्षपात का कपट करते हुए लोगों ने देख लिया हो। इसलिए यह दिखाने की कोशिश करते हुए कि उसे इस मामले से कोई सरोकार नहीं, उसने मास्लोवा के मुक़द्दमे की दस्तावेज़ निकाली और उसे पढने में मगन हो गया। इस बीच सेनेटरों ने घण्टी बजाई और चाय लाने का आर्डर दिया। उन दिनों पीटर्सबर्ग में द्वन्द्व युद्ध की चर्चा सबकी ज़बान पर थी। साथ ही एक दूसरा विषय भी लोकप्रिय हो चला था। किसी सरकारी विभाग के अध्यक्ष ने धारा ९९५ के अन्तर्गत कोई जुर्म किया था।

"कितनी गन्दी बात है," बे ने घृणा से कहा।

"वाह, इसमें क्या बुराई है? मैं तुम्हें एक किताब दिखा सकता हूं जिसमें एक जर्मन लेखक ने इस सम्बन्ध में अपनी योजना दे रखी है। उसने बिना लाग-लपेट के यह सुझाव पेश किया है कि पुरुषों के बीच इस प्रकार के सम्बन्ध को जुर्म क़रार नहीं दिया जाना चाहिए, पुरुषों को पुरुषों के साथ विवाह करने की इजाज़त होनी चाहिए," बड़े लोभ से सिगरेट का कश लेते हुए स्कोवोरोद्निकोव ने कहा और ज़ोर ज़ोर से हंसने लगा। सिगरेट तुड़-मुड़ चुका था लेकिन उसने उसे अपनी मोटी मोटी अंगुलियों में, हथेली के नज़दीक, दबा रखा था।

"नामुमकिन है!" बे बोला।

"मैं तुम्हें ला कर दिखा दूंगा," स्कोवोरोद्निकोव ने कहा और किताब का नाम, यहां तक कि उसके प्रकाशन का स्थान और तिथि तक बता दी।

"मैंने सुना है कि उसे साइबेरिया में किसी शहर का गवर्नर बना कर भेज दिया गया है।"

"यह तो बड़ी अच्छी बात है! लाट पादरी बड़े ठाठ से उसका स्वागत करेगा। बस लाट पादरी भी कोई ऐसा ही आदमी होना चाहिए," स्कोवोरोद्निकोव ने कहा। "मैं एक पादरी की सिफ़ारिश भी कर सकता हूं।" उसने सिगरेट चाय की तश्तरी में फेंक

दिया और फिर मूंछों और दाढ़ी के जितने भी बाल ठूंसे जा सकते थे, मुंह में ठूंस कर उन्हें चबाने लगा।

पेशकार अन्दर आया और बोला कि नेख़्लूदोव और वकील मास्लोवा के मुक़द्दमे की जांच के समय मौजूद होना चाहते हैं।

"यह मामला भी बड़ा रोमांटिक है," वोल्फ़ बोला, और जो कुछ उसे मास्लोवा और नेख़्लूदोव के सम्बन्ध के बारे में मालूम था कह सुनाया।

थोड़ी देर तक वे इसकी चर्चा करते रहे। फिर चाय-सिगरेट पी चुकने पर वे उठे और अदालत के कमरे में चले गये, पहले दोषारोप के मुक़द्दमे का फ़ैसला सुनाया और फिर मास्लोवा की अपील सुनने लगे।

वोल्फ़ अपनी पतली सी आवाज़ में मास्लोवा की अपील पर रिपोर्ट देने लगा। रिपोर्ट पूरी की पूरी थी पर इसमें भी पक्षपात की झलक मिलती थी और साफ़ ज़ाहिर था कि वोल्फ़ चाहता है कि सज़ा मनसूख़ कर दी जाय।

"क्या तुम्हें कुछ कहना है?" फ़ानारिन को सम्बोधित करते हुए प्रधान ने कहा।

फ़ानारिन उठा और अपनी चौड़ी सफ़ेद छाती फैला कर, जिरह करने लगा। एक एक नुक्ते को ले कर उसने बड़े यथार्थ और आकर्षक ढंग से यह साबित किया कि न्यायालय ने छः स्थानों पर क़ानून का ग़लत मतलब निकाला है। इसके अतिरिक्त, संक्षेप में उसने मुक़द्दमे के गुण-दोष की भी चर्चा की और कहा कि यह सज़ा दे कर न्यायालय ने घोर अन्याय किया है। उसका भाषण संक्षिप्त किन्तु युक्तियुक्त था। जिस लहजे में वह बोला उसमें सेनेटरों के प्रति अनुनय का भाव पाया जाता था, मानो कह रहा हो कि आप कुशाग्र बुद्धि तथा न्याय के पारंगत विद्वान हैं, आप मुझसे अधिक इस मामले को देख-समझ सकते हैं, मैं तो यहां जिरह कर के केवल अपना कर्तव्य पूरा कर रहा हूं।

फ़ानारिन के भाषण के बाद ऐसा जान पड़ता था जैसे शक की कोई गुंजाइश ही न रह गई हो, कि सेनेट ज़रूर न्यायालय के निर्णय को रद्द कर देगी। भाषण समाप्त करने के बाद फ़ानारिन ने विजयोल्लास में मुस्कराते हुए आस-पास देखा। उसे देख कर नेख़्लूदोव को यक़ीन हो गया कि मामला जीत लिया। परन्तु जब उसने गर्दन घुमा कर सेनेटरों की ओर देखा तो उसे लगा जैसे फ़ानारिन अकेला ही अपनी विजय पर मुस्करा रहा हो। सेनेटर और सरकारी वकील के चेहरे पर विजय की मुस्कान

नहीं थी। इसके विपरीत सेनेटर तथा सरकारी वकील थके हुए से लग रहे थे। उनके चेहरे के भाव से लग रहा था मानो सोच रहे हों—"हमने तुम जैसे लोगों के बहुत भाषण सुने हैं—पर यह सब व्यर्थ है।" उसके भाषण की समाप्ति पर ऐसा जान पड़ा जैसे उन्होंने चैन की सांस ली हो, कि अब ज़्यादा देर यहां नहीं रुकना पड़ेगा। वकील का भाषण समाप्त होने के फ़ौरन् ही बाद प्रधान ने सरकारी वकील को बोलने के लिए कहा। सेलेनिन थोड़े से शब्दों में बड़ी स्पष्टता से न्यायालय के फ़ैसले को बरक़रार रखने के पक्ष में बोला। उसने कहा कि फ़ैसला रद्द करने के लिए जितने भी तर्क पेश किये गये हैं, सभी अपर्याप्त हैं। इस जिरह के बाद सभी सेनेटर बहस के कमरे में चले गये। उनके मत अलग अलग थे। वोल्फ़ इस हक़ में था कि अपील मंजूर की जानी चाहिए। बे ने, मामला समझने के बाद, वोल्फ़ के पक्ष की बड़े ज़ोर से हिमायत की, और अपने साथियों के सामने न्यायालय के सारे दृश्य का सजीव वर्णन किया, जिस भांति वह उसे अपनी कल्पना में साफ़ नज़र आ रहा था। निकीतिन ने दूसरा पक्ष लिया, क्योंकि सदा ही उसे दृढ़ता और नियमिकता पसन्द थी। अब सारा मामला स्कोवोरोद्निकोव की वोट पर निर्भर था, और उसने अपना मत अपील को रद्द कर देने के हक़ में दिया। इसका मुख्य कारण यह था कि नेख़्लूदोव का यह निश्चय कि वह नैतिक कारणों से प्रेरित हो कर मास्लोवा से शादी करेगा, उसे अत्यन्त घृणास्पद लगा।

स्कोवारोद्निकोव भौतिकवादी था और डारविन के सिद्धान्त का अनुयायी था। इसलिए नैतिकता के प्रत्येक भावात्मक रूप को—और इससे भी बुरा यह कि धर्म को—घृणास्पद मूर्खता समझता था। इतना ही नहीं इसे वह अपना अपमान समझता था। उसे यह निहायत बुरा लग रहा था कि एक वेश्या के मामले को ले कर इतना वावैला खड़ा किया गया है, और स्वयं नेख़्लूदोव और एक प्रतिष्ठित वकील सेनेट में आ पहुंचे हैं। इसलिए उसने दाढ़ी के बाल मुंह में खोंसे और तरह तरह के मुंह बनाता रहा, और बड़ी चालाकी से यह दिखाते हुए कि इस मामले के बारे में उसे केवल इतना ही मालूम है कि अपील के लिए जो आधार प्रस्तुत किये गये हैं वे अपर्याप्त हैं, उसने प्रधान के मत का समर्थन किया कि न्यायालय के निर्णय को बरक़रार रखा जाय।

इस तरह मास्लोवा को दी गयी सज़ा बरक़रार रही।

२२

"घोर अन्याय है!" वकील के साथ वेटिंग-रूम में जाते हुए नेख़्लूदोव ने कहा। वकील अपने वस्ते में काग़ज़ात ठीक कर रहा था। "एक ऐसे मामले में जो बिल्कुल साफ़ है, वे केवल नियमों को महत्व दिये जा रहे हैं, और दख़ल देने से इन्कार कर रहे हैं। उफ़, कैसा घोर अन्याय है!"

"मुक़द्दमा जो ख़राव हुआ है तो फ़ौजदारी अदालत में," वकील बोला।

"और तो और, सेलेनिन भी इस हक़ में था कि अपील को रद्द कर दिया जाय। उफ़, कैसा घोर अन्याय है!" नेख़्लूदोव ने फिर दोहराया। "अब कहो, क्या करना चाहिए?"

"हम ज़ार से अपील करेंगे। आप ख़ुद आजकल पीटर्सवर्ग में हैं, यह दरख़्वास्त दाख़िल करते जाइये। मैं इसे तैयार कर दूंगा।"

इसी समय वोल्फ़—छोटा सा क़द, वर्दी चढ़ाये हुए जिस पर सितारे चमक रहे थे—वेटिंग-रूम में दाख़िल हो कर नेख़्लूदोव की ओर चला आया।

"हम लाचार थे, प्रिंस, अपील के लिए दिये गये आधार काफ़ी नहीं थे," अपने संकरे कन्धे विचका कर, आंखें वन्द करते हुए उसने कहा, और फिर वहां से चला गया।

वोल्फ़ के वाद सेलेनिन भी वाहर आया। उसे सेनेटरों से मालूम हो गया था कि उसका पुराना दोस्त नेख़्लूदोव यहां पर मौजूद है।

"मुझे तो ख़्वाव-ख़्याल भी न था कि तुम्हारे साथ यहां मुलाक़ात होगी," नेख़्लूदोव की ओर आते हुए उसने कहा। वह मुस्करा रहा था लेकिन उसकी मुस्कान केवल होंठों तक ही थी। आंखों में अव भी उदासी का भाव था। "मुझे तो मालूम ही नहीं था कि तुम पीटर्सवर्ग में हो।"

"मुझे भी मालूम नहीं था कि तुम सेनेट में सरकारी वकील के पद पर हो।"

"मैं सहायक सरकारी वकील हूं," सेलेनिन ने ग़लती ठीक करते हुए कहा, "यहां सेनेट में कैसे आना हुआ? मुझे इतना तो मालूम हो गया था कि तुम पीटर्सवर्ग में हो। लेकिन यहां किस काम पर आये हो?"

"यहां? यहां मैं न्याय की आशा ले कर आया था, ताकि एक बेगुनाह औरत को बचा सकूं जिसे कड़ी सज़ा दे दी गई है।"

"कौन सी औरत?"

"वही जिसके मुक़द्दमे का अभी अभी फ़ैसला हुआ है।"

"ओह, मास्लोवा का मुक़द्मा," सेलेनिन को मुक़द्दमे की याद आ गई। "अपील का तो कोई आधार ही नहीं था।"

"मैं अपील की नहीं, औरत की बात करता हूं, वह निर्दोष है, फिर भी उसे सज़ा दी जा रही है।"

सेलेनिन ने ठण्डी सांस भरी।

"मुमकिन है, लेकिन..."

"मुमकिन नहीं, सचमुच निर्दोष..."

"तुम्हें कैसे मालूम है?"

"क्योंकि मैं जूरी में था। मुझे मालूम है हमसे कैसे भूल हुई।"

सेलेनिन सोच में पड़ गया।

"तुम्हें उस वक़्त एक बयान देना चाहिए था," उसने कहा।

"मैंने बयान दिया था।"

"उसे सरकारी रिपोर्ट में दर्ज करवाना चाहिए था। अपील की दरख़्वास्त के साथ अगर वह जोड़ दिया गया होता तो..."

सेलेनिन को अपने काम से सिर उठाने की फ़ुर्सत नहीं होती थी, इसलिए वह सभा-सोसाइटी में बहुत कम आया-जाया करता था। प्रत्यक्षत: उसे नेख़्लूदोव के प्रेम का कुछ भी मालूम नहीं था। नेख़्लूदोव ने यह देख लिया, और मन ही मन निश्चय किया कि उसे मास्लोवा के साथ अपने निजी संबंध के बारे में बताने की कोई ज़रूरत नहीं।

"हां, फिर भी फ़ैसला बिल्कुल बेहूदा दिया गया था। और यह आज भी ज़ाहिर था।"

"सेनेट को यह कहने का कोई अधिकार नहीं है। अगर सेनेट अपने मतानुसार यह देख कर कि अदालतों के फ़ैसले जायज़ हैं या नाजायज़, उन्हें बदलने लगे, तो जूरी के फ़ैसले का कोई मूल्य नहीं रह जायेगा। यही नहीं, सेनेट का कोई मतलब ही नहीं रहेगा। यह संस्था न्याय का समर्थन करने के बजाय न्याय का उल्लंघन करने लगेगी," जिस मुक़द्दमे की अभी अभी सुनाई हुई थी, उसे याद करते हुए सेलेनिन ने कहा।

"मैं तो केवल इतना जानता हूं कि यह औरत बिल्कुल निर्दोष है। और अब इस अनुचित दण्ड से उसे बचाने की एक मात्र आशा भी जाती रही है। सर्वोच्च न्यायालय ने घोर अन्याय का समर्थन किया है।"

"समर्थन नहीं किया है। सेनेट ने मुक़द्दमे के गुण-दोष की जांच नहीं की, न ही कर सकती है," सेलेनिन ने आंखें मिचकाते हुए कहा। "अपनी मौसी के पास ठहरे हो न?" उसने पूछा। ज़ाहिर था कि वह वार्तालाप का रुख़ बदलना चाहता था। "उन्होंने कल मुझे बताया कि तुम यहां पर हो। और मुझे शाम को घर पर भी आने के लिए कहा, कि कोई विदेशी उपदेशक भाषण देने के लिए आयेंगे, और वहीं पर तुमसे भी मुलाक़ात हो सकेगी," सिर्फ़ होंठों में मुस्कराते हुए सेलेनिन ने कहा।

"हां, मैं था, लेकिन मुझे बड़ी नफ़रत हुई और मैं वहां से उठ गया," नेख़्लूदोव ने खीज कर कहा। उसे इस बात का ग़ुस्सा था कि सेलेनिन ने वार्तालाप का विषय ही बदल दिया है।

"क्यों, नफ़रत क्यों हुई? आख़िर यह भी धार्मिक भावना को व्यक्त करने का एक रूप है। हां, इतना मैं मानता हूं कुछ एकांगी और संकीर्ण ज़रूर है," सेलेनिन ने कहा।

"छिः, यह केवल सनक और मूर्खता है, और कुछ नहीं।"

"अरे नहीं भाई, नहीं। विचित्र बात यह है कि हमें अपने ही चर्च के उपदेशों के बारे में बहुत कम जानकारी है। इसलिए जब हमारी ही मूल धारणाओं को किसी नये रूप में व्यक्त किया जाता है तो हम समझने लगते हैं कि यह कोई नया दैविक सन्देश है," सेलेनिन ने कहा। ऐसा लगता था मानो वह जल्दी से जल्दी अपने मित्र को अपनी नयी धारणाओं के बारे में बता देना चाहता हो।

नेख़्लूदोव ने बड़े ग़ौर और हैरानी से सेलेनिन की ओर देखा। सेलेनिन ने आंखें नीची नहीं कीं। इन आंखों में न केवल उदासीनता का ही बल्कि वैमनस्य का भी भाव झलकता जान पड़ता था।

"तो क्या तुम चर्च के सिद्धान्तों को मानते हो?" नेख़्लूदोव ने पूछा।

"हां, ज़रूर मानता हूं," सेलेनिन ने अपनी कान्तिहीन आंखों से नेख़्लूदोव की आंखों में सीधा देखते हुए जवाब दिया।

नेख़्लूदोव ने ठण्डी सांस ली।

"अजीब बात है," वह बोला।

"हम इस बारे में फिर किसी वक़्त बात करेंगे," सेलेनिन ने कहा। इसी बीच पेशकार उसके पास आ कर बड़े अदब से खड़ा था। "मैं आ रहा हूं," उसने पेशकार से कहा। "तो हमें ज़रूर फिर मिलना चाहिए," उसने ठण्डी उसांस छोड़ते हुए कहा। "पर तुम मिलोगे भी? मैं तो रोज़ शाम को सात बजे भोजन के समय घर पर होता हूं। मेरा पता नोट कर लो। नादेज्दिन्स्काया।" उसने मकान का नम्बर बताया। "उफ़, वक़्त किसी का इन्तज़ार नहीं करता।" और वह घूम कर जाने लगा। अब भी उसकी मुस्कान केवल होंठों तक ही सीमित थी।

"हो सका तो तुम्हें मिलने आऊंगा," नेख़्लूदोव ने कहा। उसे महसूस हो रहा था कि यही आदमी जो एक दिन इतना निकट और प्यारा था आज सहसा अजनबी, दूर-पार का और अगम्य, यहां तक कि किसी हद तक विरोधी सा बन गया है।

२३

पढ़ाई के दिनों में, जब नेख़्लूदोव और सेलेनिन एक दूसरे के मित्र थे, सेलेनिन का आचार-व्यवहार घर में सुपुत्र सा और बाहर सच्चे मित्र का सा था। उसकी अवस्था को देखते हुए वह एक सुशिक्षित युवक था। और साथ ही एक सुन्दर, कमनीय तथा व्यवहार-कुशल युवक था, दिल का सच्चा और बेहद ईमानदार। पढ़ाई में उसने बड़ी प्रगति की, लेकिन बिना बहुत माथापच्ची किये और बिना किसी पर अपना पांडित्य बघारे। अपने निबन्धों पर सोने के तमग़े प्राप्त करता रहा।

युवावस्था में वह जन-सेवा को अपने जीवन का लक्ष्य मानता था, और वह भी केवल शाब्दिक सद्भावना के रूप में नहीं, क्रियात्मक रूप में। उसने देखा कि यदि मानवजाति की सेवा करनी हो तो राज्य की सेवा करनी चाहिए। इसलिए पढ़ाई ख़त्म करने के बाद उसने बड़े क्रमबद्ध तरीक़े से एक एक धन्धे की जांच की और अन्त में फ़ैसला किया कि वह चांसलरी के द्वितीय विभाग में, जहां क़ानून बनाये जाते हैं, सबसे उपयोगी सिद्ध हो सकता है। अतः वह लोक-सेवा के इस विभाग में नौकर हो गया। बड़ी ईमानदारी और सुतथ्यता से अपना काम करने लगा, एक एक बात की ओर ध्यान देता, लेकिन इसके बावजूद उसे आन्तरिक सन्तोष नहीं

मिला, उसकी यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी कि वह मानवजाति के लिए उपयोगी हो सके; न ही उसे विश्वास हो पाया कि वह ठीक रास्ते पर जा रहा है। जिस अफ़सर के अधीन उसे काम करना पड़ा वह इतना छोटे दिल का और दम्भी आदमी था, कि आये दिन सेलेनिन की उसके साथ छोटी-मोटी झड़पें हो जातीं। इससे उसका असन्तोष और भी बढ़ गया और सेलेनिन चांसलरी छोड़ कर सेनेट में काम करने लगा। यहां पर स्थिति कुछ बेहतर थी लेकिन उसका असन्तोष फिर भी दूर नहीं हुआ। उसे महसूस होता रहता कि यह स्थिति भी उसकी आशाओं के अनुरूप नहीं और जैसा होना चाहिए था, वैसा नहीं हुआ।

सेनेट में काम करते हुए, सम्बन्धियों की मदद से उसे जेंटलमैन ऑफ़ बैडचैम्बर का पद मिल गया। नियुक्ति के बाद वह कामदार वर्दी पहने और ऊपर सफ़ेद रंग का एप्रन लगाये, गाड़ी में बैठ कर तरह तरह के लोगों के घर जा कर उनका धन्यवाद करता फिरा, जिन्होंने उसे पिट्ठू के पद पर बिठा दिया था। हज़ार कोशिश करने पर भी उसकी समझ में नहीं आया कि इस पद की उपयोगिता क्या है। और इस कारण सेनेट की नौकरी से भी अधिक असंतुष्टि उसे हो रही थी और वह समझ रहा था कि "यह तो वह नहीं" है; जिसकी जीवन में उसे खोज है। पर वह इस पद को छोड़ भी नहीं सकता था। उसे डर था कि ऐसा करने से वे लोग नाराज़ हो जायेंगे जो यह समझे बैठे थे कि इस पद पर बिठा कर उन्होंने उसे असीम आनन्द पहुंचाया है। साथ ही इस पद से उसकी निम्न कोटि की वृत्तियों की तृप्ति होती थी। जब वह सुनहरी कढ़ाई की वर्दी पहने शीशे के सामने खड़ा होता तो उसका दिल बाग़ बाग़ हो जाता। और कुछ लोगों से अदब और इज़्ज़त पा कर भी वह ख़ुश होता जो इसी पद के कारण उसका मान करते थे।

इसी तरह की बात उसके ब्याह के समय भी हुई। दुनियादारी की दृष्टि से उसके लिए एक बहुत बढ़िया लड़की चुनी गयी। और उसने शादी कर ली, मुख्यतया इस कारण कि यदि इन्कार कर देता तो एक तो उस लड़की को सदमा पहुंचता जो उसके साथ शादी करना चाहती थी, और साथ ही वे लोग भी मायूस होते जिन्होंने इसकी व्यवस्था की थी। इसके अलावा कुलीन घराने की एक सुमुख लड़की से ब्याह करने से उसकी शान बढ़ती थी और उसका दिल ख़ुश होता था। पर शीघ्र ही उसे महसूस

होने लगा कि यहां पर भी "यह तो वह नहीं" है। बल्कि सरकारी नौकरी तथा न्यायालय के पद से भी कम सन्तोष इससे मिलता था।

उनके एक बच्चा हुआ। पत्नी ने निश्चय कर लिया कि उसे और बच्चा नहीं चाहिए और इसके बाद वह ऐश-आराम और दुनियावी तड़क-भड़क की ज़िन्दगी में पड़ गई। इस प्रकार के जीवन में उसे भी शरीक होना पड़ता था, भले ही उसे पसन्द हो या न हो। सौन्दर्य की दृष्टि से उसकी पत्नी में कोई विशेषता नहीं थी, हां, वह पतिव्रता ज़रूर थी। उसे इस प्रकार के जीवन से थकावट के अलावा हाथ कुछ न लगता था। पर वह फिर भी ऐसे जीवन से बड़े यत्न से चिपटी हुई थी और उसमें से निकलना नहीं चाहती थी, यह जानते हुए भी कि इससे उसके पति का जीवन नरक बन रहा था। पति ने उसकी जीवन-चर्या बदलने की बड़ी कोशिश की लेकिन नाकाम रहा, मानो उसके सामने पत्थर की दीवार खड़ी हो जाती हो। पत्नी की धारणाएं गहरी जड़ पकड़ चुकी थीं। उसके रिश्तेदार भी उसकी पीठ ठोंकते थे कि उसे ऐसा ही जीवन व्यतीत करना चाहिए।

अपनी बेटी के साथ उसे कोई लगाव न था, क्योंकि जिस ढंग से उसका लालन-पालन हो रहा था वह उसे पसन्द न था। छोटी सी लड़की जिसकी टांगें उघड़ी उघड़ी रहतीं और सिर पर लम्बे सुनहरी बाल थे। पति-पत्नी के बीच वही ग़लतफ़हमियां उठने लगीं जो अक्सर उठती रहती हैं, दोनों तरफ़ से एक दूसरे का दृष्टिकोण समझने की कोई कोशिश नहीं की जाती, फिर अन्दर ही अन्दर वैमनस्य की आग सुलगने लगी जो बाहर के लोगों को नज़र नहीं आती थी, लेकिन जो शिष्टाचार के आवरण के नीचे और भी तेज़ होती जा रही थी। इन कारणों से घर के अन्दर उसका जीना दूभर हो उठा था। इस तरह पारिवारिक जीवन में सरकारी नौकरी और दरबार की नियुक्ति से भी अधिक असंतुष्ट वह अनुभव करने लगा कि "यह तो वह नहीं है"।

परंतु सबसे अधिक असंतुष्टि की बात धर्म के प्रति उसका दृष्टिकोण था। वह धार्मिक अन्धविश्वासों के वातावरण में पला था। लेकिन होश संभालते ही, अपने समय के अन्य हमजोलियों की तरह, बिना किसी विशेष प्रयास के उसने इन अंधविश्वासों की बेड़ियां काट डालीं और आज़ाद हो गया। उसे यह भी मालूम न था कि किस समय उसने यह मुक्ति प्राप्त

की। जवानी के दिनों में, जब वह नेख़्लूदोव का गहरा मित्र हुआ करता था, वह इतना शुद्ध हृदय और ईमानदार युवक था कि किसी से यह बात नहीं छिपाता था कि राजकीय धर्म में उसे कोई विश्वास नहीं रहा। पर ज्यों ज्यों वक़्त गुज़रने लगा और वह सरकारी नौकरी में तरक्क़ी करने लगा तो यह मानसिक स्वतन्त्रता उसकी तरक्क़ी के रास्ते में रुकावट बनने लगी। यह विशेषकर उस समय हुआ जब समाज में रूढ़िवाद की ओर प्रतिक्रिया हुई। एक तो उस पर घर वालों ने दवाब डाला, विशेषकर उस समय जब उसके पिता की मृत्यु हुई, और मृतक की आत्मा के लिए सम्मिलित उपासना का आयोजन हुआ। इसके अतिरिक्त उसकी मां की बड़ी इच्छा थी कि वह व्रत रखे। साथ ही समाज और सरकारी नौकरी का यह तक़ाज़ा था कि वह हर प्रकार की उपासनाओं, कान्सिक्रेशन, तथा स्तुतिगान इत्यादि में शामिल हो। आये दिन कोई न कोई धार्मिक उपचार निभाना पड़ता। इन उपासनाओं के सम्बन्ध में वह दो में से एक ही रास्ता अपना सकता था। या तो वह सच को छिपा जाय, ऊपर से यह दिखावा करे कि मैं धर्म को मानता हूं, और अन्दर ही अन्दर न माने। ऐसा वह नहीं कर सकता था क्योंकि वह दिल का बड़ा सच्चा आदमी था। या फिर दिल में यह धारणा पक्की करने के बाद कि सभी बाहरी उपचार आडम्बर मात्र हैं, वह अपनी जीवन-चर्या को ऐसी दिशा में ढाले कि उसे इन धार्मिक संस्कारों में उपस्थित न होना पड़े। बात तो सीधी सी नजर आती थी लेकिन उसे निभाने में बहुत बड़ी क़ीमत चुकानी पड़ती। एक तो निकट सम्बन्धियों का निरन्तर विरोध सहन करना पड़ता। दूसरे अपने सारे पद-गौरव को तिलांजलि देनी पड़ती। नौकरी छोड़नी पड़ती, और ऐसा करने से वह मनुष्यजाति की जो उपयोगी सेवा कर रहा था (उसे यही लगता था), और जो वह भविष्य में और भी बड़े पैमाने पर करना चाहता था, वह नहीं कर पायेगा। यह क़ुर्बानी मनुष्य तभी कर सकता है जब उसके मन में यह पक्का विश्वास हो कि उसकी धारणाएं सच्ची हैं। और उसे यह विश्वास था। हमारे ज़माने का कोई भी पढ़ा-लिखा आदमी जिसने इतिहास का कुछ भी पठन-पाठन किया है, जो यह जानता है कि आम तौर पर धर्मों का प्रादुर्भाव कैसे हुआ, और विशेषकर गिरजों वाले ईसाई धर्म का प्रादुर्भाव किस भांति हुआ और विघटन किस भांति हुआ, वह अपने सामान्य बोध की सचाई में विश्वास किये बिना

रह भी नहीं सकता। वह यह स्वीकार करने पर विवश था कि गिरजे के उपदेशों को ठुकरा कर उसने ठीक ही किया है।

परन्तु दैनिक जीवन के दवाव में आ कर इस सच्चे आदमी ने एक छोटे से झूठ को मन में प्रवेश करने की इजाज़त दे दी। उसने मन ही मन कहा कि इन्साफ़ का तक़ाज़ा है कि एक अनुचित चीज़ को भी ठुकराने से पहले उसे देख-परख लिया जाय। बस, इतना सा झूठ था लेकिन वह उसे एक और बड़े झूठ में धकेल ले गया, जिसमें आज वह डूव-उतरा रहा था।

वह रूढ़िवादी धर्म के वातावरण में पल कर बड़ा हुआ था। सभी लोग यह आशा करते थे कि वह इसे मानेगा। इसे माने विना वह अपना काम भी नहीं कर सकता था जिसे वह मानवजाति के लिए इतना उपयोगी समझता था। क्या यह रूढ़ीवादी धर्म सच्चा है? यह सवाल अपने मन से पूछने से पहले ही उसने इसका उत्तर स्थिर कर लिया था। अतः इस प्रश्न का समाधान करने के लिए वह वाल्तेयर, शोपिनहॉर, हर्बर्ट स्पेंसेर अथवा कोन्त की रचनाएं पढ़ने के वजाय हेगेल के दार्शनिक ग्रन्थ तथा विनेत और ख़ोम्याकोव के धार्मिक ग्रन्थ पढ़ने लगा। और जो बात वह ढूंढ़ रहा था वह स्वभावतः उसे इन ग्रन्थों में मिल गई। वह मानसिक शान्ति चाहता था, वह उसे यहां पर मिल गई। जो धार्मिक शिक्षा उसे वचपन में दी गयी थी, उसे उसकी वुद्धि ने स्वीकार नहीं किया था, परन्तु उसके विना उसका सारा जीवन कटुता से भर गया, और इन ग्रन्थों में उस धार्मिक शिक्षा को सच्चा वताया गया था, जिसे मान लेने से सारी कटुता एकदम दूर हो जाती थी। इस तरह वह ऐसे कुतर्कों को मानने लगा जो आम तौर पर पेश किये जाते हैं: कि एक अकेले इन्सान की वुद्धि सत्य को नहीं समझ सकती कि सत्य का दर्शन मनुष्यों के समूह को हो सकता है, और वह भी केवल आकाशवाणी द्वारा, यह दैविक सन्देश चर्च के पास मौजूद है, इत्यादि। वस, उसके वाद उसका मन शान्त हो गया और यह भावना जाती रही कि यह सव झूठ है। और वह मृतक के लिए आयोजित प्रार्थनाओं पर जाने लगा, पादरी के सामने अपने पाप क़वूलने लगा, देवप्रतिमाओं के सामने खड़े हो कर क्रॉस के चिन्ह वनाने लगा, और निश्चिन्त हो कर सरकारी नौकरी करने लगा, जिसे करते हुए उसे महसूस होता था कि वह मानवजाति की सेवा कर रहा है, और

जिससे वह अपने पारिवारिक जीवन की कटुता को भूले रहता था। वह सोचता था कि वह धर्म और भगवान् में विश्वास करता है, किन्तु अपनी अंतरात्मा में वह बिल्कुल स्पष्टतया यह अनुभव कर रहा था कि और सब बातों से भी अधिक उसका यह विश्वास तो "वह नहीं है", और इसी कारण उसकी आंखों में उदासी छायी रहती थी।

आज नेख़्लूदोव को मिलने पर उसे याद आ गया कि वह पहले क्या हुआ करता था। नेख़्लूदोव से उसकी जान-पहचान उस समय से थी जब उसके मन में ये झूठ जड़ नहीं पकड़ पाये थे। आज, नेख़्लूदोव से मिलने पर जब जल्दी जल्दी में उसने अपनी वर्तमान धार्मिक धारणाओं का संकेत किया तो उसे पहले से भी अधिक कटुता के साथ यह अनुभव हुआ कि यह सब तो "वह नहीं है," और वह बेहद उदास हो गया। और जब अपने मित्र को मुद्दत के बाद मिलने की ख़ुशी कुछ ठण्डी पड़ी तो नेख़्लूदोव को भी यह महसूस हुआ।

दोनों ने एक दूसरे से मिलने का वादा किया, लेकिन न एक ने न दूसरे ने मिलने की कोई कोशिश की। जितने दिन नेख़्लूदोव पीटर्सबर्ग में रहा, वे एक दूसरे से नहीं मिले।

२४

सेनेट में से निकल कर वकील और नेख़्लूदोव एक साथ पैदल जाने लगे। वकील ने अपने गाड़ी वाले को पीछे पीछे चले आने को कह दिया। वकील उसे उस आदमी का क़िस्सा सुनाने लगा जिसकी चर्चा सेनेटर लोग कर रहे थे, और जो आदमी एक सरकारी विभाग का चीफ़ था। वकील ने बताया कि बात कैसे पकड़ी गई, और जिस आदमी को क़ानून के मुताबिक़ कड़ी सज़ा मिलनी चाहिए थी, उसे साइबेरिया के एक शहर का गवर्नर बना कर भेज दिया गया है। उसने यह कहानी मज़ा ले ले कर और गन्दी तफ़सीलों के साथ सुनाई। इसके बाद वह एक स्मारक की चर्चा करने लगा जिसके पास से हो कर उसी दिन प्रातः वे सेनेट भवन में गये थे। वह स्मारक कब से बन रहा था और अभी तक मुकम्मल नहीं हो पाया था। स्मारक के लिए बहुत सा धन इकट्ठा किया गया लेकिन

वड़े ओहदों वाले लोग इस धन का वहुत सा हिस्सा ऊपर ही ऊपर से उड़ा गये। फिर सुनाने लगा कि अमुक व्यक्ति की रखैल ने स्टॉक-ऐक्सचेंज पर लाखों रूवल वनाये हैं, और अमुक ने अपनी वीवी का सौदा किया है और अमुक ने वीवी ख़रीद ली है। वकील और भी तरह तरह की ठगी और जुर्मों की कहानियां सुनाता रहा जो उन लोगों ने किये हैं जो वड़े वड़े ओहदों पर वैठे हैं। और उन्हें जेल में भेजना तो दूर रहा वे आज भी विभिन्न सरकारी संस्थाओं में अध्यक्षों की कुर्सियों पर बैठे हैं।

जान पड़ता था जैसे वकील ने इन कहानियों का जो ज़ख़ीरा इकट्ठा कर रखा है वह कभी ख़त्म नहीं होगा। और वह वड़ा रस ले ले कर इन्हें सुना रहा था। उनसे साफ़ ज़ाहिर हो रहा था कि पीटर्सवर्ग के वड़े वड़े अफ़सरों की तुलना में वकील का पैसे वनाने का ढंग वड़ा न्यायसंगत और निर्दोष है। लेकिन अभी वकील वातें कर ही रहा था कि नेख़्लूदोव ने एक गाड़ी रोकी और झट से विदा ले कर उसमें वैठ गया। वकील हैरान रह गया।

नेख़्लूदोव का मन उदास हो उठा। उदासी का सवसे वड़ा कारण तो यह था कि सेनेट ने अपील मंसूख़ कर दी थी और इस तरह निर्दोष मास्लोवा को जो यातनाएं विना किसी प्रयोजन के भुगतनी पड़ रही थीं, उनका समर्थन कर दिया था। इस कारण भी वह उदास था कि इस नामंज़ूरी के वाद उसके लिए मास्लोवा के जीवन के साथ अपना जीवन जोड़ना और भी कठिन हो गया था। आज की कुरीतियों की जो कहानियां वकील ने इतना मज़ा ले ले कर सुनाई थीं, उनसे उसकी उदासी और भी वढ़ गई थी। साथ ही, सेलेनिन की आंखों में छाया निर्मम उपेक्षा का भाव देख कर भी वह उदास हो उठा था और वार वार वह उसे याद आ रहा था। ज़माना था जव यही सेलेनिन मृदु-स्वभाव, निष्कपट और श्रेष्ठ व्यक्ति हुआ करता था।

घर पहुंचा तो दरवान ने उसके हाथ में एक रुक्क़ा दिया और वोला कि कोई औरत आयी थी और ड्योढ़ी में वैठ कर यह रुक्क़ा लिख गई थी। दरवान के लहजे में कुछ कुछ घिन का आभास होता था। रुक्क़ा शूस्तोवा की मां की ओर से था। उसने रुक्क़े में अपनी वेटी के सहायक तथा रक्षक का धन्यवाद किया था और साग्रह अनुरोध किया था कि वह उन्हें इस पते पर मिलने ज़रूर आये: वासील्येव्स्की, पांचवीं क़तार, घर

का नम्बर–। वेरा बोगोदूख़ोव्स्काया की ख़ातिर उन्हें ज़रूर मिलना चाहिए। खत में इस बात का आश्वासन दिया गया था कि हम मिलने पर आपको बार बार धन्यवाद कह कर परेशान नहीं करेंगी। हम कुछ भी नहीं कहेंगी, केवल आपसे मिलना चाहती हैं। क्या यह संभव होगा कि आप कल प्रातः हमारे घर पधारें?

एक रुक्क़ा बोगातिर्योव की ओर से भी था। बोगातिर्योव नेख़्लूदोव का पुराना साथी-अफ़सर था और अब ज़ार का एड-डि-कैंप था। जो दरख़्वास्त नेख़्लूदोव धार्मिक सम्प्रदाय की ओर से ज़ार के नाम लाया था, वह उसने बोगातिर्योव को दे दी थी कि ख़ुद ज़ार के हाथ में दे दे। बोगातिर्योव ने मोटे मोटे अक्षरों में–जैसा कि उसका लिखने का ढंग था–यह लिख कर उसे विश्वास दिलाया था कि वह ज़रूर ज़ार को उसकी दरख़्वास्त दे देगा, पर साथ ही उसका ख़्याल था कि बेहतर होगा अगर नेख़्लूदोव जा कर पहले उस व्यक्ति से मिल ले जिस पर यह काम निर्भर था।

जिस तरह के प्रभाव पिछले कुछ दिनों से उसके मन पर पड़ रहे थे, उन्हें देखते हुए नेख़्लूदोव बिल्कुल निराश हो उठा था, और सोचता था कि कोई भी काम पूरा नहीं हो पायेगा। मास्को में जो योजनाएं वह बनाता रहा था, आज वे उसे जवानी के स्वप्नों सी लग रही थीं, जो जीवन से साक्षात् करने पर अनिवार्यतः छिन्न-भिन्न हो जाते हैं। फिर भी उसने निश्चय किया कि चूंकि मैं पीटर्सबर्ग में मौजूद हूं, मेरा फ़र्ज़ है कि जो जो काम यहां पर करने का इरादा कर के आया था, उसे पूरा करूं। इसलिए कल ही, बोगातिर्योव को मिल कर, उसके परामर्शानुसार वह उस व्यक्ति को मिलने जाऊंगा जिस पर धार्मिक सम्प्रदाय के लोगों का मुक़द्दमा निर्भर है।

उसने अपने बस्ते में से सम्प्रदाइयों की दरख़्वास्त निकाली और पढ़ने लगा। उसी वक़्त दरवाज़े पर दस्तक हुई और एक चोबदार ने आ कर कहा कि काउंटेस येकातेरीना इवानोव्ना बुला रही हैं, और कह रही हैं कि चाय का प्याला हमारे साथ आ कर पीजिये।

नेख़्लूदोव ने कहा कि वह अभी आ रहा है। उसने काग़ज़ों को वापस बस्ते में रखा और सीढ़ियां चढ़ कर मौसी की बैठक की ओर जाने लगा। रास्ते में एक खिड़की में से बाहर नज़र डाली और देखा कि घर के सामने

मेरियेट के लाखी घोड़ों की जोड़ी खड़ी है। देखते ही उसका मन खिल उठा और उसके होंठों पर एक हल्की सी मुस्कान दौड़ गई।

काउंटेस की आराम-कुर्सी की बग़ल में ही मेरियेट बैठी थी, सिर पर टोप लगाये, और हाथ में चाय का प्याला पकड़े थी। आज उसने काले रंग की पोशाक नहीं पहन रखी थी, बल्कि विविध रंगों की कोई हल्की सी पोशाक पहने थी। वह किसी विषय पर काउंटेस के साथ बतिया रही थी, और उसकी चमकती, सुन्दर आंखों में से हंसी फूट रही थी। अन्दर पहुंचते ही नेख़्लूदोव ने देखा कि उसकी मौसी—मोटी-ताज़ी, नेक-दिल, हल्की हल्की मूंछों वाली मौसी—हंसी से लोट-पोट हो रही है। और मेरियेट चुपचाप मुस्कराती हुई उसके चेहरे की ओर देखे जा रही है। मेरियेट के मुस्कराते होंठ एक ओर को खिंचे हुए थे और गर्दन तनिक एक ओर को झुकी थी। मेरियेट के सजीव हंसते चेहरे पर एक अजीब शरारत का सा भाव था। ज़ाहिर था कि मेरियेट ने काउंटेस को कोई मज़ाक़िया बात सुनाई थी जो कुछ कुछ अश्लील भी थी, जिसका अन्दाज़ा नेख़्लूदोव को उस हंसी से ही लग गया था, जो उसने कमरे के अन्दर प्रवेश करते समय सुनी थी।

कुछ शब्द नेख़्लूदोव के कान में भी पड़ गये थे, और उसने समझ लिया था कि बात साइबेरिया के नये गवर्नर के बारे में चल रही है, जो आजकल पीटर्सबर्ग में चर्चा का दूसरा लोकप्रिय विषय बना हुआ था। इसी के बारे में मेरियेट ने कोई ऐसी मज़ाक़िया बात कही थी कि बड़ी देर तक काउंटेस अपनी हंसी को नहीं दबा पायी थी।

"तुम तो मुझे हंसा हंसा कर मार डालोगी," काउंटेस ने खांसते हुए कहा।

नेख़्लूदोव अभिवादन कर के बैठ गया। वह मन ही मन इस उच्छृंखलता के लिए मेरियेट की भर्त्सना करने जा रहा था जब मेरियेट की नज़र उसके गंभीर तथा कुछ कुछ असन्तुष्ट चेहरे पर पड़ी, और सहसा उसने चेहरे का भाव बदल लिया। चेहरे का भाव ही नहीं, अपनी मन:स्थिति भी बदल ली। उसने यह इसलिए किया कि जब से उसने नेख़्लूदोव को देखा था, तब से मन ही मन वह उसे भाने को व्याकुल थी। उसने सहसा गंभीर मुद्रा धारण कर ली, अपने जीवन से असन्तुष्ट, मानो वह किसी चीज़ को ढूंढ़ने तथा पाने के लिए व्याकुल हो। वह बन नहीं

रही थी, उसने सचमुच अपने मन को नेख़्लूदोव की मनःस्थिति के अनुरूप ढाल लिया था, हालांकि उस समय नेख़्लूदोव के मन की क्या स्थिति थी, इसे शब्दों में व्यक्त करना उसके लिए असंभव होता।

मेरियेट ने नेख़्लूदोव से उन कामों के बारे में पूछा, जो वह पीटर्सबर्ग में करने के लिए आया था। उसने सेनेट का क़िस्सा और सेलेनिन से अपनी भेंट के बारे में बताया।

"कितना नेक आदमी है! वह तो सचमुच a chevalier sans peur et sans reproche* है। बड़ा नेक आदमी है," दोनों स्त्रियों ने एक साथ कहा। पीटर्सबर्ग की सोसाइटी में सेलेनिन के लिए इसी विशेषण का प्रयोग किया जाता था।

"उसकी पत्नी कैसी औरत है?" नेख़्लूदोव ने पूछा।

"पत्नी? किसी के बारे में अच्छा या बुरा कहने का मेरा कोई अधिकार नहीं है, लेकिन इतना ज़रूर कहूंगी कि उसकी पत्नी उसे समझ नहीं पाई। क्या यह मुमकिन है कि उसने भी यही राय दी हो कि अपील नामंज़ूर कर दी जाय?" मेरियेट ने सच्ची सहानुभूति से पूछा। "बड़ी भयानक बात है। मुझे सचमुच उस लड़की पर दया आती है," उसने ठण्डी सांस भर कर कहा।

नेख़्लूदोव की भौंहें चढ़ गई और वह बात बदल कर शूस्तोवा की चर्चा करने लगा। शूस्तोवा क़िले में क़ैद काट रही थी लेकिन मेरियेट की मदद से उसे रिहा कर दिया गया था। नेख़्लूदोव ने इस सहायता के लिए मेरियेट का धन्यवाद किया। वह कहने जा ही रहा था कि इस स्त्री को तथा उसके सारे परिवार को कितनी यातना सहनी पड़ी है, केवल इस कारण कि किसी ने भी उनके बारे में अधिकारियों को याद नहीं कराया। लेकिन मेरियेट बीच में ही बात काट कर अपना रोष प्रकट करने लगी—

"इसकी बात ही न करो," वह कहने लगी। "जब मेरे पति ने मुझे कहा कि उस लड़की को रिहा किया जा सकता है, तो झट उसी वक़्त मेरे मन में ख़्याल आया, अगर वह निर्दोष है तो उसे जेल में रखा ही क्यों गया था?" मेरियेट ने मुंह से वही शब्द निकाले जो नेख़्लूदोव कहने जा रहा था। "कितनी घृणित बात है, घृणित!"

---

*निडर और निष्कलंक वीर। (फ़्रेंच)

मेरियेट को नेख़्लूदोव के साथ चुहलें करते देख, काउंटेस के मन ने चुटकी ली। जब दोनों चुप हो गये तो कहने लगी—

"सुनो, कल तुम एलीन के घर क्यों नहीं चलते? कीज़ेवेतेर भी वहीं पर होगा।" फिर मेरियेट की ओर मुड़ कर बोली, "और तुम भी चलना।"

"Il vous a remarqué,"* उसने अपने भांजे से कहा। "जो कुछ तुमने मुझे कहा था मैंने कीज़ेवेतेर को सुनाया। सुन कर वह कहने लगा कि यह बड़ा अच्छा लक्षण है, तुम अवश्य ईसा की शरण में आओगे। तुम्हें ज़रूर चलना चाहिए। इसे कहो, मेरियेट, और ख़ुद भी ज़रूर आना।"

"काउंटेस, पहली बात तो यह कि प्रिंस को किसी क़िस्म की नसीहत करने का मुझे कोई अधिकार नहीं है," मेरियेट बोली, और साथ ही इस नज़र से नेख़्लूदोव की ओर देखा जिससे यह बात एक तरह से तय हो गई कि दोनों की काउंटेस के शब्दों के प्रति तथा सामान्यतया इवैंजेलिकल मत के प्रति एक ही राय है, "दूसरे, आप तो जानती हैं कि इसमें मेरी कोई रुचि नहीं है..."

"हां, हां, मैं जानती हूं, तुम हर बात ग़लत ढंग से करती हो, हमेशा तुम्हारे विचार अनोखे रहे हैं।"

"अनोखे? मेरे तो वही विचार हैं जो साधारण से साधारण किसान स्त्री के होंगे," मेरियेट ने मुस्करा कर कहा। "और तीसरे यह कि कल रात मैं फ़्रांसीसी नाटक देखने जा रही हूं।"

"ओह! क्या तुमने उसे देखा है—क्या नाम है उसका?" काउंटेस येकातेरीना इवानोव्ना ने नेख़्लूदोव से पूछा। मेरियेट ने एक विख्यात फ़्रांसीसी अभिनेत्री का नाम बताया।

"तुम्हें ज़रूर देखना चाहिए। हर हालत में। वह कमाल का अभिनय करती है।"

"मैं किसके शब्द पहले सुनूं ma tante, अभिनेत्री के या उपदेशक के?" नेख़्लूदोव ने मुस्कराते हुए पूछा।

"वाक्छल मत करो।"

---

*उसका ध्यान तुम पर पड़ा है। (फ़्रेंच)

"मैं सोचता हूं पहले उपदेशक का व्याख्यान सुनूं और बाद में अभिनेत्री का अभिनय देखूं, नहीं तो व्याख्यान सुनने के लिए मन में इच्छा ही नहीं रहेगी।"

"नहीं, पहले फ़्रांसीसी नाटक देखो और बाद में प्रायश्चित करो।"

"सुनो, सुनो, मेरे साथ ठिठोली मत करो। उपदेशक अपनी जगह है और नाटक अपनी जगह। आत्मा की रक्षा के लिए ज़रूरी नहीं कि मनुष्य मुंह लटका कर रोता रहे। मन में विश्वास हो तो मनुष्य को ज़रूर ख़ुशी मिलती है।"

"तुम तो ma tante उपदेशकों से भी अच्छा व्याख्यान देती हो।"

"सुनो," विचारों में खोई खोई सी मेरियेट बोली, "कल तुम मेरे ही बॉक्स में आ कर बैठना।"

"मैं तो कल नहीं..."

ऐन उसी वक़्त चोबदार ने आ कर वार्तालाप में विघ्न डाल दिया। कोई आदमी मिलने आया है, उसने कहा। वह एक जन-कल्याण संस्था का सेक्रेटरी था। काउंटेस उस संस्था की प्रधान थी।

"उफ़! बड़ा उबाऊ है। मैं सोचती हूं मैं बाहर ही उससे मिल लूंगी। मेरियेट, नेख़्लूदोव को चाय पिलाना। मैं अभी लौट कर आती हूं।" और डगमगाती हुई, तेज़ तेज़ क़दमों से वह बाहर निकल गई।

मेरियेट ने दस्ताना उतारा। उसका हाथ ख़ूब गठा हुआ किन्तु कुछ कुछ स्थूल था। चौथी अंगुली अंगूठियों से भरी थी।

"पियोगे?" उसने चांदी की केतली उठाते हुए कहा, जिसके नीचे स्पिरिट-लैम्प जल रहा था। केतली उठाते हुए उसने अपनी छोटी अंगुली को अजीब अन्दाज़ से अलग सा रखा।

मेरियेट का चेहरा उदास और गंभीर सा था।

"मुझे इस बात का बड़ा खेद है कि वही लोग जिनकी राय की मैं क़द्र करती हूं मेरी स्थिति को मेरा असली रूप समझते हैं।"

अन्तिम शब्द कहते कहते तो जैसे उसका रोना निकलने लगा था। ध्यान से इन शब्दों का विश्लेषण करो तो कोई मतलब न निकलता था, कम से कम कोई स्पष्ट मतलब नहीं निकलता था। लेकिन नेख़्लूदोव पर मेरियेट की चमकती आंखें ऐसा जादू कर रही थीं कि इस बनी-ठनी युवा सुन्दरी के मुंह से निकले शब्द उसे बेहद सारपूर्ण, गहरे तथा उत्कृष्ट लगे।

नेख़्लूदोव चुपचाप उसकी ओर देखे जा रहा था। उसकी आंखें उसके चेहरे पर से हटाये न हटती थीं।

"क्या तुम सोचते हो मैं तुम्हें या तुम्हारी मन:स्थिति को नहीं समझती हूं? सभी जानते हैं तुमने क्या कुछ किया है। C'est le secret de polichinelle.* और तुम्हारे काम को देख कर मेरा मन बड़ा प्रसन्न होता है, मैं उसका पूरा पूरा समर्थन करती हूं।"

"नहीं, इसमें प्रसन्नता की कोई बात नहीं। मैंने तो अभी तक कुछ ख़ास किया ही नहीं।"

"कोई बात नहीं। मैं तुम्हारी भावनाओं को समझती हूं। और उस लड़की को भी समझती हूं। ठीक है, ठीक है। मैं इस बारे में और बात नहीं करूंगी," नेख़्लूदोव के चेहरे पर नाराज़गी की झलक देख कर उसने कहा। "पर मैं यह भी समझ सकती हूं कि तुमने जेल के नरक कुंड को देखा है और उसमें अभागे लोगों को जलते देखा है।" मेरियेट ने अपनी स्त्री-सुलभ अन्त:प्रेरणा से बूझ लिया कि नेख़्लूदोव के लिए कौन सी चीज़ प्रिय और महत्वपूर्ण है, और उसी की चर्चा करते हुए उसके मन में सिर्फ़ एक इच्छा थी—उसे अपनी ओर आकर्षित करना। "जो लोग वहां यातनाएं भोग रहे हैं तुम उनकी मदद करना चाहते हो। यह स्वाभाविक ही है। वे बेचारे और लोगों के अत्याचार और उपेक्षा के शिकार बनते हैं। तुम उनके लिए अपनी ज़िन्दगी तक क़ुर्बान करना चाहते हो। मैं इस भावना को समझती हूं। इतने महान उद्देश्य के लिए, यदि मेरा बस चले तो मैं भी अपना जीवन दे दूं, पर हर आदमी का अपना अपना भाग्य होता है।"

"क्या तुम अपने भाग्य से सन्तुष्ट नहीं हो?"

"मैं?" मेरियेट ने कहा, मानो इस अप्रत्याशित सवाल पर वह हैरान हो उठी हो। "मुझे सन्तोष करना पड़ता है, और मैं सन्तुष्ट हूं। पर कभी कभी, अन्दर ही अन्दर कोई जीव है जो जाग उठता है..."

"उस जीव को जगाये रखना चाहिए, उसे फिर सोने नहीं देना चाहिए, उसकी आज्ञा का पालन करना चाहिए," नेख़्लूदोव ने जाल में फंसते हुए कहा।

---

*यह तो अब कोई रहस्य नहीं रहा। (फ़्रेंच)

बाद में कई बार इस वार्तालाप को याद कर के नेख़्लूदोव ने लज्जा का अनुभव किया। उसे मेरियेट के शब्द याद आते। वह न केवल झूठ ही बोल रही थी, उससे भी अधिक, वह नेख़्लूदोव की नक़ल उतार रही थी। उसे मेरियेट का चेहरा याद आता। जेलों की भयानक स्थिति की चर्चा करते समय, या यह बताते समय कि देहात में उसने क्या कुछ देखा, नेख़्लूदोव को लगता जैसे मेरियेट के चेहरे से सहानुभूति और उत्सुकता टपक रही है।

जब काउंटेस लौट कर आई तो दोनों आपस में ऐसे घुलमिल कर बातें कर रहे थे मानो वे पुराने मित्र ही नहीं, एक दूसरे के अनन्य मित्र हों, मानो आस-पास के लोग उन्हें समझने में असमर्थ थे और उनके दिल पूर्णतया एक दूसरे को समझ पाते हैं।

शासकों का अन्याय, अभागे लोगों का उत्पीड़न, जनता की ग़रीबी—उनकी ज़बान पर तो इनकी चर्चा थी, लेकिन वार्तालाप के बीचोंबीच उनकी आंखें एक दूसरी से कुछ और ही पूछ रही थीं—"क्या मुझे तुम्हारा प्यार मिल सकता है?" और जवाब मिलता, "हां, ज़रूर।" काम-वासना, तरह तरह के अनोखे और आकर्षक रूप ले ले कर उन्हें एक दूसरे की ओर खींच रही थी।

विदा लेते वक़्त मेरियेट कहने लगी कि मैं हर तरह से तुम्हारी सेवा करने के लिए तैयार हूं। फिर कहने लगी कि कल ज़रूर मुझे थियेटर में आ कर मिलना। भले ही क्षण भर के लिए आओ, मगर आना ज़रूर, मुझे तुमसे एक बहुत ज़रूरी बात कहनी है।

"कौन जाने, फिर कब मुलाक़ात हो," मेरियेट ने ठण्डी सांस ले कर कहा, और अंगूठियों से चमकते अपने हाथ पर दस्ताना चढ़ाने लगी। "वचन दो कि तुम आओगे।"

नेख़्लूदोव ने वचन दे दिया।

उस रात जब नेख़्लूदोव अपने कमरे में अकेला रह गया तो उसने बत्ती बुझाई और सोने की चेष्टा करने लगा। मगर उसे नींद नहीं आयी। मास्लोवा, सेनेट का निर्णय, मास्लोवा के साथ साइबेरिया जाने का निश्चय, ज़मीन-जायदाद का त्याग—ये बातें उसके मन में चक्कर काट रही थीं, लेकिन अचानक, इस सबके उत्तर में मेरियेट का चेहरा, उसकी ठंडी सांस और उसकी नज़र, जब उसने कहा था—"कौन जाने, फिर कब मुलाक़ात

हो" और उसकी मुस्कान—सब कुछ इतनी स्पष्टता से उसकी आंखों के सामने घूम गया, मानो वह उसे प्रत्यक्षत: देख रहा हो और मुस्करा दिया। "क्या मैं साइबेरिया जा कर भूल तो नहीं कर रहा? क्या ज़मीन-जायदाद त्यागना ग़लती तो नहीं होगी?" उसने अपने आपसे पूछा।

पीटर्सबर्ग की उस रजत रात में, जिसका प्रकाश बारीक पर्दों में से छन छन कर आ रहा था, इन सवालों के बड़े अस्पष्ट से जवाब उसे मिले। उसे सारी स्थिति उलझी हुई सी लग रही थी। उसे याद आया कि पहले उसके मन की कैसी स्थिति थी, क्रमानुसार एक एक विचार याद आया जो उसके मन में उठा करते थे पर इन विचारों में अब पहले सी शक्ति न थी, न ही वे न्यायसंगत जान पड़ते थे।

"फ़र्ज़ करो कि यह सब मेरी कल्पना हो, और मैं उसे कार्यरूप नहीं दे पाऊं? या ठीक काम भी करूं और बाद में मुझे पछतावा हो?" नेख़्लूदोव को इन प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं सूझ रहा था। उसका मन दुखी और निराश हो उठा। कभी पहले वह इतना बेचैन नहीं हुआ था। वह इन बातों के बारे में सोच ही रहा था जब उसे बोझिल नींद ने आ घेरा जैसी पहले दिनों में कभी जुए में बहुत बड़ी रक़म हार जाने पर आया करती थी।

२५

दूसरे दिन जब नेख़्लूदोव उठा तो उसे ऐसा लगा जैसे पिछले दिन उसने कोई बड़ी गंदी बात कर दी हो।

वह सोचने लगा। उसे याद नहीं आया कि उसने कोई गंदी बात की हो। उसने कोई बुरा काम नहीं किया था। परन्तु उसके मन में बुरे विचार आये थे। उसने सोचा था कि कात्यूशा से शादी करना, और ज़मीन-जायदाद का त्याग करना—जितने भी निश्चय उसने इस समय किये थे, सभी स्वप्न मात्र हैं, जिन्हें व्यावहारिक रूप नहीं दिया जा सकता। उस प्रकार का जीवन उससे सहन नहीं हो सकेगा, यह बनावटी है, अस्वाभाविक है, इसलिए यही उचित है कि वह उसी तरह रहता जाय जिस तरह आज तक रहता आया है।

उसने कोई बुरा काम तो नहीं किया था, पर जो बात उसने की वह बुरे काम से भी बुरी थी। उसने मन में बुरे विचारों को प्रोत्साहन दिया

था, और उन्हीं से सभी वुरे कर्म जन्म लेते हैं। संभव है कि एक वार किया गया बुरा काम दोवारा न किया जाय, उसका पछतावा भी हो। परन्तु सभी वुरे कर्म वुरे विचारों से ही पैदा होते हैं।

एक बुरा काम और वुरे कामों के लिए रास्ता साफ़ करता है। वुरे विचार मनुष्य को उस रास्ते पर चलने के लिए विवश कर देते हैं।

जो विचार पिछले रोज़ नेख़्लूदोव के मन में उठे थे, उन्हें याद कर के, उसे इस वात की हैरानी हुई कि वह उन पर यक़ीन कैसे कर पाया। जो काम करने का उसने निश्चय किया है, वह कितना ही अनोखा और दुष्कर क्यों न हो, परन्तु फिर भी वही उसके जीवन का अव एकमात्र रास्ता होगा। फिर से पहला सा जीवन विताना भले ही वड़ा आसान और स्वाभाविक हो, पर वह रास्ता मौत का रास्ता है। कई वार गहरी नींद सो चुकने के वाद हम थोड़ी देर और विस्तर में पड़े रहना चाहते हैं। हम जानते हैं कि हम नींद पूरी कर चुके हैं, और अव उठ कर अपने काम में जुट जाना चाहिए, पर फिर भी आराम से लेटने का लोभ संवरण नहीं कर सकते। कुछ ऐसी ही भावना पिछले दिन के प्रलोभन ने नेख़्लूदोव के मन में पैदा की थी।

पीटर्सवर्ग में आज नेख़्लूदोव का आख़िरी दिन था। सुवह के वक़्त वह वासील्येव्स्की द्वीप की ओर शूस्तोवा को मिलने चल पड़ा।

शूस्तोवा पहली मंज़िल पर रहती थी। चौकीदार ने नेख़्लूदोव को घर के पीछे की सीढ़ियां दिखा दीं, और उन्हें चढ़कर वह सीधा रसोईघर में जा पहुंचा। रसोईघर के अन्दर वड़ी गर्मी थी और खाने-पीने की चीज़ों की तेज़ गन्ध आ रही थी। एक वड़ी उम्र की औरत अंगीठी के पास खड़ी वर्तन में कुछ वना रही थी। वर्तन में से उफन उफन कर भाप निकल रही थी। औरत ने आंखों पर चश्मा लगा रखा था, और एप्रन लगाये थी, और आस्तीनें चढ़ा रखी थीं।

"किसे मिलना चाहते हैं?" चश्मे के ऊपर से झांकते हुए उसने रुखाई से पूछा।

नेख़्लूदोव अभी ठीक तरह से अपना नाम भी नहीं वतला पाया था जव औरत के चेहरे पर सहसा भय और उल्लास का भाव छा गया।

"ओह प्रिंस!" एप्रन पर हाथ पोंछते हुए उसने चिल्लाकर कहा। "पर आप पीछे के रास्ते से क्यों आये? आप तो हमारे रक्षक हो। शूस्तोवा

मेरी वेटी है। अधमरी कर के उन्होंने मेरी वेटी को छोड़ा है। आपने हमें हाथ दे कर वचा लिया है," नेख़्लूदोव का हाथ पकड़ कर उसे चूमने की चेष्टा करते हुए उसने कहा। "मैं कल आपसे मिलने गई थी। मेरी वहिन ने मुझे भेजा था। वह भी यहीं पर है। उधर चलिये, उधर से," शूस्तोवा की मां ने कहा और आगे आगे चलती हुई नेख़्लूदोव को अपने साथ ले जाने लगी। एक तंग से दरवाज़े में से निकल कर वे एक अंधेरे वरामदे में पहुंचे। शूस्तोवा की मां कभी अपने वालों को ठीक करती कभी स्कर्ट को जिसका किनारा उसने मोड़ रखा था। "मेरी वहिन का नाम कर्नीलोवा है। आपने ज़रूर उसका नाम सुना होगा," एक वन्द दरवाज़े के वाहर रुक कर उसने नेख़्लूदोव से फुसफुसा कर कहा। "किसी राज-नीतिक मामले में वह फंस गई थी। वड़ी चतुर है!"

शूस्तोवा की मां ने दरवाज़ा खोला। एक छोटे से कमरे में, मेज़ के सामने सोफ़े पर एक गोल-मटोल और ठिंगनी सी लड़की वैठी थी। सिर पर सुनहरी रंग के घुंघराले वाल थे जो उसके पीले, गोल चेहरे के आस-पास फैले हुए थे। उसका चेहरा अपनी मां से वहुत मिलता था। वह सूती कपड़े का धारीदार व्लाउज़ पहने थी। उसके ऐन सामने एक आराम-कुर्सी पर एक युवक दोहरा हो कर आगे की ओर झुका वैठा था। हल्की सी काले रंग की दाढ़ी और मूंछ थी और वह रूसी ढंग की कामदार क़मीज़ पहने था। वे दोनों वातें करने में इतने मशग़ूल थे कि उन्हें नेख़्लूदोव के आने का उस वक़्त पता चला जव वह कमरे में प्रवेश कर चुका था।

"लीदिया, प्रिंस नेख़्लूदोव! इन्होंने ही..." मां ने कहा।

लड़की उछल कर खड़ी हो गई और घवरा कर वालों की लट कान के पीछे दवाने लगी। उसकी वड़ी वड़ी भूरे रंग की आंखें नवागन्तुक के चेहरे पर टिकी थीं और उनमें भय छाया था।

"तो तुम वह ख़तरनाक औरत हो जिसके लिए वेरा ने मुझे सिफ़ारिश करने के लिए कहा था?" नेख़्लूदोव ने मुस्कराते हुए कहा।

"हां, मैं ही हूं," लीदिया शूस्तोवा ने कहा और उसके मुंह पर वच्चों की सी सरल मुस्कान खिल उठी जिससे उसके ख़ूवसूरत दांतों की लड़ी नज़र आने लगी। "मेरी मौसी आपसे मिलने के लिए वड़ी वेताव थीं। मौसी!" उसने एक दरवाज़े में से पुकारा। उसकी आवाज़ वड़ी मृदुल और मधुर थी।

"तुम्हारे जेल जाने पर वेरा को बहुत क्लेश हुआ," नेख़्लूदोव ने कहा।

"यहां बैठिये। नहीं, बेहतर होगा इस कुर्सी पर बैठ जाइये," एक टूटी-फूटी आराम-कुर्सी की ओर इशारा करते हुए लीदिया ने कहा, जिस पर से युवक अभी अभी उठा था। "यह मेरा चचेरा भाई, ज़खारोव है," लीदिया ने कहा, जब उसने देखा कि नेख़्लूदोव युवक की ओर देखे जा रहा है।

युवक ने नेख़्लूदोव का अभिवादन किया। उसके चेहरे पर भी वैसी ही सद्भावनापूर्ण मुस्कान थी जैसी कि लीदिया के चेहरे पर। जब नेख़्लूदोव बैठ गया वह अपने लिए एक कुर्सी उठा लाया और नेख़्लूदोव के पास आ कर बैठ गया। लगभग सोलह बरस का सुनहरी बालों वाला एक स्कूली लड़का भी अन्दर आ गया और चुपचाप खिड़की के दासे पर बैठ गया।

"वेरा बोगोदूख़ोव्स्काया मेरी मौसी की बड़ी गहरी मित्र है। मैं तो उसे बहुत कम जानती हूं," शूस्तोवा ने कहा।

इसके बाद साथ वाले कमरे में से एक स्त्री ने प्रवेश किया। उसका चेहरा खिला हुआ और बड़ा प्यारा सा था। वह सफ़ेद रंग का ब्लाउज़ पहने थी और कमर में पेटी लगाये थी।

"नमस्कार! आपने बड़ी कृपा की," सोफ़े पर लीदिया के साथ बैठते ही उसने कहना शुरू किया। "वेरा कैसी है? आप उससे मिले हैं? अपनी हालत से परेशान तो नहीं?"

"वह शिकायत नहीं करती," नेख़्लूदोव ने कहा, "कहती थी डटी हुई हूं।"

"वेरा यही कहेगी। मैं उसे जानती हूं," मुस्करा कर सिर हिलाते हुए मौसी ने कहा। "बहुत ऊंचे चरित्र की लड़की है। उसे नज़दीक से देखने पर ही उसे आदमी पहचान सकता है। औरों के लिए जान भी वार देगी, अपने लिए कुछ नहीं करेगी।"

"हां, उसने अपने लिए कुछ भी करने को नहीं कहा। उसे केवल आपकी भांजी की चिन्ता थी। कहती थी निर्दोष लड़की को जेल में ठूंस दिया गया है। इसी बात का उसे सबसे अधिक क्लेश होता था।"

"हां, ठीक बात है। जो कुछ हुआ बहुत भयानक हुआ है। वास्तव में इसे मेरे कारण इतनी यातना सहनी पड़ी।"

"नहीं मौसी, यह बात नहीं। अगर तुम न भी होतीं तो भी मैं वह काग़ज़ात पहुंचाने जाती।"

"मैं तुमसे ज़्यादा जानती हूं, बेटी," मौसी कहने लगी। "सारी बात हुई ही इस कारण कि एक आदमी ने मुझे कुछ देर के लिए अपने काग़ज़ रखने के लिए दिये। मेरा उस समय कोई घर-घाट नहीं था। मैं वे काग़ज़ उठा कर इसके पास ले आयी। उसी रात पुलिस ने इसके कमरे की तलाशी ली, काग़ज़ात भी उठा कर ले गई और इसे भी हिरासत में ले लिया। और आज तक इसे बन्द रखा। उससे बार बार यही पूछते थे कि बताओ किस आदमी ने तुम्हें ये काग़ज़ दिये हैं।"

"मगर मैंने नहीं बताया," लीदिया झट से बोल उठी। घबराहट में उसने एक और लट खींच ली जो पहले अच्छी-भली अपनी जगह पर थी।

"मैंने कब कहा है कि तुमने बता दिया?" मौसी ने कहा।

"अगर उन्होंने मीतिन को पकड़ा है तो मेरे द्वारा नहीं," लीदिया ने कहा। शर्म से उसका चेहरा लाल हो गया और वह विचलित हो कर इधर-उधर देखने लगी।

"इसकी चर्चा ही नहीं करो, लीदिया," मां ने कहा।

"क्यों नहीं करूं? मैं बता देना चाहती हूं," लीदिया बोली। अब उसके चेहरे पर से मुस्कान ग़ायब हो गई थी। उसका चेहरा अधिकाधिक लाल होता जा रहा था। अब की, बालों की लट संभालने के बजाय वह उसे अपनी अंगुली के इर्दगिर्द लपेटे जा रही थी।

"याद है न, कल इसकी बात करने पर क्या हुआ था?"

"नहीं नहीं, मुझे कुछ मत कहो, मां। मैंने नहीं बताया। मैं केवल चुप बनी रही। जब उसने मीतिन और मौसी के बारे में पूछताछ की तो मैं कुछ नहीं बोली, बल्कि मैंने कह दिया कि मैं जवाब नहीं दूंगी। उसके बाद यह ... पेत्रोव..."

"पेत्रोव जासूस है, राजनीतिक पुलिस का आदमी है और बेहद नीच है," मौसी ने बीच में कहा ताकि नेख़्लूदोव लीदिया की बात को स्पष्टतया समझ सके।

"फिर उसने मुझ पर डोरे डालने शुरू किये," लीदिया ने घबरा कर जल्दी जल्दी कहना शुरू किया। "वह मुझसे कहने लगा, 'जो कुछ

भी तुम मुझे बताओगी उससे किसी को नुक़सान नहीं पहुंच सकता। इसके विपरीत यदि तुम हमें बता दोगी तो हम बहुत से निर्दोष लोगों को रिहा कर सकेंगे जिन्हें व्यर्थ में हम परेशान कर रहे हैं।' इस पर भी मैंने कह दिया कि मैं नहीं बताऊंगी। फिर वह बोला—'अच्छा कुछ भी मत बताओ, पर मैं अगर किसी का नाम लूं तो तुम उसका निषेध नहीं करना।' और उसने मीतिन का नाम लिया।"

"इस बारे में कुछ मत कहो," मौसी ने कहा।

"बीच में नहीं बोलो, मौसी..." और वह इधर-उधर देखती हुई अपने बालों की लट खींचती रही। "और उसके बाद दूसरे ही दिन, आप ख़्याल कीजिये, उन्होंने मेरी कोठरी की दीवार खटखटा कर बताया कि मीतिन को पकड़ लिया गया है। मैं सोचती हूं मैंने मीतिन के साथ विश्वासघात किया है। इस कारण मैं इतनी व्याकुल रहती, इतनी व्याकुल कि मैं पागल हो चली थी।"

"बाद में पता चला कि तुम्हारे कारण उसे नहीं पकड़ा गया था," मौसी ने कहा।

"हां, पर मुझे तो मालूम नहीं था। मैं तो यही सोचती थी 'लो मैंने उसे धोखा दे दिया है।' मैं अपनी कोठरी में चक्कर काटती रहती और बरबस यही सोचती, 'मैंने उसके साथ दग़ा की है।' मैं तख़्ते पर लेट जाती, ऊपर से कम्बल ओढ़ लेती, फिर भी कोई आवाज़ मेरे कान में फुसफुसाती—'विश्वासघात! तुमने मीतिन के साथ विश्वासघात किया है! मीतिन के साथ विश्वासघात किया है!' मैं जानती थी कि यह मतिभ्रम है, पर फिर भी मेरे कानों में ये शब्द गूंजते रहते थे। मैं सोना चाहती थी लेकिन सो नहीं पाती। मैं इसके बारे में कुछ भी सोचना नहीं चाहती थी, लेकिन फिर भी यही बात मेरे दिमाग़ में चक्कर लगाती रहती। कितनी भयानक बात है!" बातें करते करते लीदिया अधिकाधिक उत्तेजित होती जा रही थी, अंगुली पर कभी बालों की लट चढ़ाती कभी उतार देती, और बार बार इधर-उधर देखती।

"बस लीदिया, अपना मन शान्त करो," उसके कन्धे पर हाथ रखते हुए लीदिया की मां ने कहा।

लेकिन शूस्तोवा के लिए रुकना असंभव हो रहा था।

"इससे भी भयानक बात यह थी..." वह कहने लगी, लेकिन आगे

नहीं कह पायी, और सिसकी भरती हुई उठी और भागती हुई कमरे में से बाहर चली गई। उसकी मां उसके पीछे पीछे बाहर जाने लगी।

"इन पाजियों को फांसी लगा देना चाहिए," खिड़की के दासे पर बैठे स्कूली लड़के ने कहा।

"क्या कहा?" मां ने पूछा।

"मैंने केवल यही कहा है कि ... नहीं, नहीं, कुछ नहीं," लड़के ने जवाब दिया, और मेज़ पर से एक सिगरेट उठा कर पीने लगा।

२६

"छोटी उम्र वालों के लिए क़ैद-तनहाई जैसी भयानक चीज़ और कोई नहीं। यह ठीक बात है," मौसी ने सिर हिलाते हुए कहा। वह भी एक सिगरेट उठा कर सुलगाने लगी।

"जवानों के लिए ही क्यों, मैं तो कहूंगा सभी के लिए भयानक है," नेख़्लूदोव ने जवाब दिया।

"नहीं, सबके लिए नहीं," मौसी बोली। "मैंने सुना है कि सच्चे क्रान्तिकारी तो क़ैद-तनहाई में बड़े सुख-चैन से रहते हैं। जिस आदमी के पीछे पुलिस पड़ी हो, उसे तो हर वक़्त चिन्ता रहती है, अपनी चिन्ता, अपने सगे-सम्बन्धियों की चिन्ता, यह चिन्ता कि वह अपना फ़र्ज़ पूरा नहीं कर रहा है। उधर पैसे की तंगी उसे परेशान किये रहती है। आख़िर जब वह पकड़ा जाता है तो एक तरह से उसका छुटकारा हो जाता है, सारी ज़िम्मेवारी उस पर से हट जाती है, वह चैन से कुछ देर आराम कर सकता है। मैंने तो यहां तक सुना है कि पकड़े जाने पर वे सचमुच ख़ुश होते हैं। लेकिन युवा लोग, जो निर्दोष हों जैसे लीदिया–उनके लिए तो पकड़े जाने का सदमा ही बहुत भयानक होता है। इसलिए नहीं कि जेल में आज़ादी नहीं होती, या ख़ुराक बुरी मिलती है या हवा गन्दी होती है, यह कोई बड़ी बात नहीं। असल बात तो यह है कि पहली बार पकड़े जाने पर उनकी आत्मा को धक्का लगता है। अगर यह नैतिक सदमा न हो तो भले ही इनसे तिगुनी यातनाएं उन्हें सहनी पड़ें, वे हंसते हंसते बरदाश्त कर लेंगे।"

"तो क्या आपको इसका अनुभव हो चुका है?"

"मुझे? मैं दो बार जेल जा चुकी हूं," मौसी ने कहा। उसके होंठों पर एक मधुर, उदास सी मुस्कान आ गयी। "जब पहली बार मैं गिरफ़्तार हुई तो मैंने कोई अपराध नहीं किया था। उस वक़्त मेरी उम्र २२ बरस की रही होगी, मेरे एक बच्चा था और दूसरा होने वाला था। इसमें शक नहीं कि अपनी आज़ादी छिन जाने से, और अपने पति और बच्चे से बिछुड़ जाने का मुझे बेहद शोक हुआ। पर जो शोक मुझे यह जान कर हुआ कि अब मैं इन्सान नहीं रही, बल्कि एक चीज़ बना दी गई हूं, वह असह्य था। मैं अपनी नन्हीं बच्ची को आख़िरी बार चूमना चाहती थी। मुझे कहा गया कि जाओ और जा कर गाड़ी में बैठ जाओ। मैंने पूछा कि मुझे कहां ले जाया जा रहा है? जवाब मिला कि जब वहां पहुंचोगी तो अपने आप पता चल जायेगा। मैंने पूछा कि मेरा अपराध क्या है। कोई जवाब नहीं मिला। फिर मेरी पूछताछ हुई, मेरे कपड़े उतार कर उन्होंने मुझे क़ैदियों के कपड़े पहना दिये जिन पर नम्बर लगे होते हैं। इसके बाद वे मुझे एक मेहराबदार तहख़ाने की ओर ले गये, और एक दरवाज़ा खोल कर मुझे अन्दर धकेल दिया, फिर दरवाज़े पर ताला चढ़ा कर वहां से चले गये। मैं अकेली रह गई। दरवाज़े के बाहर एक सन्तरी, बन्दूक़ उठाये, पहरा दे रहा था। किसी किसी वक़्त वह रुक कर दरार में से अन्दर झांक कर देखता। मैं बेहद दुःखी हो उठी। एक बात मुझे बहुत अजीब लगी। राजनीतिक पुलिस के जिस अफ़सर ने मेरी जांच की थी, उसी ने मुझे एक सिगरेट भी पीने के लिए दिया था। इसका मतलब है कि उसे मालूम था कि लोगों को सिगरेट पीने की चाह होती है। अगर यह मालूम था तो यह भी मालूम होगा कि उन्हें आज़ादी और दिन के उजाले की भी चाह होती है, माताओं को अपने बच्चों की और बच्चों को अपनी माताओं की चाह होती है। तो फिर क्या कारण है उन लोगों ने इतनी बेरहमी के साथ मुझे उन सब चीज़ों से वंचित कर के जो मुझे प्रिय थीं, एक जंगली जानवर की तरह जेल की कोठरी में बन्द कर दिया? लाज़िमी था कि इस प्रकार के अनुभव का बुरा असर मुझ पर पड़ता। जिस किसी को भी भगवान् तथा इनसान में विश्वास हो और वह मानता हो कि मनुष्यों को एक दूसरे से प्रेम होता है, ऐसे अनुभव के बाद उसका विश्वास टूट जायेगा। उस दिन के बाद मेरा मानवीयता पर से ही विश्वास

उठ गया है और मन में कटुता आ गई है," उसने अन्त में मुस्करा कर कहा।

लीदिया की मां उसी दरवाज़े में से लौट कर आई जिसमें से लीदिया भाग कर गयी थी, और आ कर कहने लगी कि लीदिया बेहद परेशान है और लौट कर यहां नहीं आ पायेगी।

"इस तरुण जीवन को क्यों नष्ट किया गया है?" मौसी ने कहा। "मुझे सबसे बढ़ कर इस बात का दुख है कि अनजाने में मैं ही इसका कारण बनी।"

"इसे गांव भेज देंगे। भगवान् की दया से वहां चंगी हो जायेगी," लीदिया की मां ने कहा। "वहां इसका बाप है।"

"अगर आपने मदद न की होती तो यह तो मर-मिट जाती," मौसी ने कहा। "हम पर आपने बहुत बड़ा एहसान किया है। पर जिस काम के लिए मैंने आपको तकलीफ़ दी है, वह कुछ और है। मैं एक चिट्ठी वेरा के नाम भेजना चाहती हूं, क्या आप यह चिट्ठी उस तक पहुंचा सकेंगे?" यह कहते हुए उसने जेब में से एक लिफ़ाफ़ा निकाला। "मैंने लिफ़ाफ़े को बन्द नहीं किया है। आप इसे पढ़ लें, और मन आये तो उसके हाथ में दे दें और जो मन न आये तो इसे फाड़ डालें जैसा भी आप ठीक समझें," उसने कहा, "इसमें कोई भी ऐसी बात नहीं है जिससे किसी को ख़तरा पहुंच सके।"

नेख़्लूदोव ने चिट्ठी ले ली और आश्वासन दिया कि वह उसे वेरा को दे देगा। इसके बाद वह विदा लेकर वहां से चला गया।

रास्ते में उसने चिट्ठी को बिना पढ़े बन्द कर दिया, और निश्चय किया कि उसे ज़रूर पहुंचा देगा।

२७

पीटर्सबर्ग में नेख़्लूदोव के सब काम समाप्त हो चुके थे, केवल एक ही काम करना बाक़ी रह गया था, वह था सम्प्रदाइयों की दरख़्वास्त ज़ार तक पहुंचाना। यह काम वह अपने भूतपूर्व साथी-अफ़सर, एड-डि-कैंप बोगातिर्योव के द्वारा करवाना चाहता था। सुबह होते ही वह बोगातिर्योव

के घर जा पहुंचा। बोगातिर्योव बाहर जाने के लिए तैयार था और उस समय नाश्ता कर रहा था। यह व्यक्ति ऊंचा-लम्बा तो नहीं था लेकिन इसका शरीर ख़ूब गठा हुआ और बेहद मज़बूत था (वह घोड़े की नाल को हाथों से मोड़ सकता था)। स्वभाव का दयालु, ईमानदार, निष्कपट और उदार पुरुष था। इन गुणों के बावजूद राज-दरबार से उसका घनिष्ठ सम्बन्ध था और ज़ार तथा ज़ार के परिवार से बड़ा प्रेम था। इतनी ऊंची सोसाइटी में रहते हुए भी उसने ऐसा दृष्टिकोण अपना रखा था जिससे उसे इस सोसाइटी की अच्छाइयां ही अच्छाइयां नज़र आती थीं। इसकी बुराइयों और भ्रष्टाचार से दूर रहता था। यह अपने में एक विचित्र स्थिति थी। वह कभी भी किसी व्यक्ति अथवा किसी भी कार्रवाई की निन्दा नहीं करता था। या तो चुप रहता, या फिर बड़ी ऊंची, गूंजती आवाज़ में जो भी इसे कहना होता कह डालता। हंसता भी तो इसी अन्दाज़ से, ख़ूब ठहाका मार कर। इसका यह व्यवहार कूटनीतिज्ञ होने के कारण नहीं था, बल्कि उसका स्वभाव ही ऐसा था।

"बहुत अच्छा किया जो चले आये। नाश्ता करोगे? आओ बैठो, बीफ़स्टेक बहुत अच्छे बने हैं। नाश्ता करते वक़्त मैं सबसे पहले ज़रूर कोई ठोस चीज़ खाता हूं। और आख़िर में भी। हा... हा... हा! और नहीं तो थोड़ी शराब पी लो," क्लैरेट शराब की सुराही की ओर इशारा करते हुए उसने ऊंची आवाज़ में कहा। "मैं तुम्हारे बारे में सोचता रहा हूं। मैं दरख़्वास्त दे दूंगा, मैं ख़ुद ज़ार के हाथ में दूंगा, विश्वास रखो। हां, पर मुझे यह ख़्याल आया कि अगर तुम पहले तोपोरोव से मिल लो तो बहुत अच्छा होगा।"

तोपोरोव का नाम सुनते ही नेख़्लूदोव की भवें चढ़ गयीं।

"सारी बात उसी पर निर्भर करती है। ज़ार उससे परामर्श ज़रूर करेंगे। और क्या मालूम वह अपने आप ही तुम्हारा काम कर दे।"

"अगर तुम्हारी यही सलाह है तो मैं उससे जा कर मिल लेता हूं।"

"मैं तो यही ठीक समझता हूं। अच्छा अब बताओ पीटर्सबर्ग तुम्हें कैसा लगा?" बोगातिर्योव ने अपनी अक्खड़, ऊंची आवाज़ में पूछा, "बताओ, बताओ।"

"लगता है मैं तो होश में नहीं हूं," नेख़्लूदोव ने जवाब दिया।

"होश में नहीं हो!" बोगातिर्योव ने दोहरा कर कहा और ठहाका

मार कर हंस पड़ा। "तुम कुछ भी नहीं खाओगे क्या? जैसी तुम्हारी मर्ज़ी," और उसने नैप्किन से अपनी मूंछें पोंछीं। "तुम तोपोरोव से मिलोगे न? अगर वह तुम्हारा काम नहीं करे तो दरख़्वास्त मुझे दे जाना, और मैं कल ही ज़ार के हाथ में दे दूंगा," ख़ूब ऊंची आवाज़ में उसने कहा और उठ खड़ा हुआ। फिर उसने छाती पर क्रॉस का चिन्ह बनाया–उसी लापरवाही से जिस लापरवाही से उसने अपना मुंह पोंछा था–और कमर में तलवार बांधने लगा। "तो ख़ुदा-हाफ़िज़, मुझे जाना है।"

"मुझे भी जाना है," नेख़्लूदोव ने कहा और उसके साथ साथ चलता हुआ घर के बाहर निकल आया, और दरवाज़े पर उससे हाथ मिला कर अलग हो गया। बोगातिर्योव के चौड़े, मज़बूत हाथ से हाथ मिलाकर नेख़्लूदोव को ख़ुशी हुई, मानो किसी ताज़ा और स्वस्थ चीज़ के साथ उसका सम्पर्क हुआ हो।

तोपोरोव से मिलने का कुछ लाभ होगा, नेख़्लूदोव को ऐसी कोई उमीद न थी। पर बोगातिर्योव के परामर्श का अनुकरण करते हुए वह तोपोरोव के घर की ओर चल दिया। सम्प्रदाइयों का भाग्य इसी आदमी पर निर्भर था।

तोपोरोव के पद पर केवल वही आदमी बैठ सकता था जो मन्दबुद्धि और नीच प्रकृति का हो क्योंकि उस पद के उद्देश्य में ही विरोधाभास पाया जाता था। ये दोनों नकारात्मक गुण तोपोरोव में विद्यमान थे। विरोधाभास यह था: चर्च की अपनी घोषणा के अनुसार चर्च की स्थापना स्वयं भगवान् ने की है। अतः इसे न इन्सान की शक्ति और न शैतान की ताक़त अपनी जगह से हिला सकती है। इसी चर्च को क़ायम रखना और उसकी रक्षा करना तोपोरोव का काम था और इस फ़र्ज़ को निभाने के लिए वह कोई भी साधन इस्तेमाल कर सकता था, हिंसा तक का प्रयोग कर सकता था। भगवान् द्वारा स्थापित इस दैवी तथा अविकल संस्था को क़ायम रखना तथा उसकी रक्षा करना एक मानवी संस्था के हाथ में था जिसे पावन सिनॉड कहते हैं। और इस संस्था का संचालन तोपोरोव तथा उसके कर्मचारी करते थे। यही विरोधाभास था और यह तोपोरोव को नज़र नहीं आता था, न ही वह इसे देखना चाहता था। अतः उसे सदा इस बात की चिन्ता रहती कि कोई रोमन कैथोलिक पादरी, कोई गिरजे का अध्यक्ष-पादरी या कोई सम्प्रदायवादी इस चर्च का नाश

न कर दे जिसका नारकीय शक्तियां भी कुछ बिगाड़ नहीं सकती थीं। धर्म का सार इस भावना में निहित है कि सब मनुष्य एक समान हैं और एक दूसरे के भाई-भाई हैं। परन्तु तोपोरोव को यह भावना छू तक न गई थी। अपने ही जैसे और लोगों की तरह उसे पूर्ण विश्वास था कि उसमें और साधारण लोगों में आकाश-पाताल का अन्तर है। जिन चीज़ों की उन्हें ज़रूरत है, उनकी उसे कोई ज़रूरत नहीं। पर सच तो यह है कि उसे किसी चीज़ में भी विश्वास नहीं था और इस स्थिति में वह बड़े चैन और सुख से रह रहा था। पर उसे डर था कि कहीं और लोग भी उस जैसी स्थिति में न पहुंच जायं। इसलिए, उनकी आत्मा की रक्षा करना वह अपना परम धर्म समझता था।

पाक-कला की किसी पुस्तक में लिखा है कि केकड़ों को यदि ज़िन्दा उबाल कर पकाया जाय तो उन्हें बड़ा अच्छा लगता है। ऐसी ही तोपोरोव का भी मत था। उसका भी यही कहना था कि जनता को अन्धविश्वास के गर्त में रहना अच्छा लगता है। भेद केवल यह था कि पाक-कला की पुस्तक में यह लाक्षणिक अर्थ में लिखा था और तोपोरोव इसे वास्तविक सत्य समझता था।

जिस धर्म की रक्षा तोपोरोव कर रहा था, उसके प्रति उसका रवैया वैसा ही था, जैसा एक मुर्ग़ी पालक को मुर्ग़ियों को खिलाये जाने वाले मुर्दा पशुओं के मांस के प्रति होता है: मुर्दा पशुओं के मांस से उसे घिन होती है, लेकिन मुर्ग़ियां उसे शौक़ से खाती हैं, इसलिए उसे वह मांस उन्हें खिलाना चाहिए।

निःसन्देह माता मरियम की इबेरियाई, कज़ान तथा स्मोलेन्स्क की प्रतिमाओं की आराधना करना मूर्तिपूजा है, और कुछ नहीं, लेकिन लोगों को मूर्तिपूजा अच्छी लगती है, उनका इसमें विश्वास है, इसलिए लाज़िमी है कि इस अन्धविश्वास को क़ायम रखा जाय। तोपोरोव का यही तर्क था। वह यह नहीं सोचता था कि लोगों को यदि अन्धविश्वास में रहना पसन्द है तो उसका एक कारण है। संसार में हमेशा से ऐसे ज़ालिम आदमी रहते चले आये हैं, और अब भी हैं—और तोपोरोव उन्हीं में से एक था—जो स्वयं रोशन-दिमाग़ होते हुए भी और लोगों को अज्ञान के गर्त में से नहीं निकालते। बल्कि इसके विपरीत उन्हें इस गर्त में और भी गहरा धकेलते हैं।

जिस समय नेख़्लूदोव ने प्रतीक्षा-कक्ष में क़दम रखा उस समय तोपोरोव अपने दफ़्तर में बैठा मठ की प्रधान महन्तिन से बातें कर रहा था। यह महिला किसी कुलीन घराने की स्त्री थी और स्वभाव की बड़ी सजीव। पश्चिमी रूस में ऑर्थोडॉक्स धर्म का प्रचार कर रही थी। इस क्षेत्र के लोगों को जबरन् ऑर्थोडॉक्स धर्म का अनुयायी बनाया जा रहा था।

प्रतीक्षा-कक्ष में एक कर्मचारी बैठा था। उसने नेख़्लूदोव से पूछा कि वह किस काम से मिलने आया है। जब उसे पता चला कि नेख़्लूदोव के पास ज़ार के नाम एक दरख़्वास्त है तो उसने पूछा कि क्या वह इस दरख़्वास्त को पढ़ने के लिए दे सकता है। नेख़्लूदोव ने दरख़्वास्त उसके हाथ में दे दी, और कर्मचारी उसे अन्दर ले गया। प्रधान महन्तिन सिर पर कनटोप और बदन पर महन्तिनों का लम्बा जामा पहने जो उसके पीछे पीछे फ़र्श पर घिसटता जा रहा था, और गोरे गोरे हाथों में (जिनके नाख़ूनों को ख़ूब बनाया-संवारा गया था) पुखराज के मनकों की माला पकड़े दफ़्तर में से निकली, और चलती हुई सीधी घर से बाहर चली गई। नेख़्लूदोव को उसी समय अन्दर नहीं बुलाया गया। दफ़्तर के अन्दर बैठा तोपोरोव दरख़्वास्त पढ़ रहा था और बार बार सिर हिला रहा था। दरख़्वास्त बड़े स्पष्ट और प्रभावशाली शब्दों में लिखी थी। इससे उसे हैरानी भी हुई, और कुछ कुछ अप्रिय भी लगा।

"अगर यह ज़ार के हाथ में चली गई तो इससे कई प्रकार की ग़लतफ़हमियां पैदा हो सकती हैं, कई आड़े सवाल पूछे जा सकते है," वह पढ़ते पढ़ते सोच रहा था। उसने दरख़्वास्त को मेज़ पर रखा, घण्टी बजाई और नेख़्लूदोव को अन्दर भेजने का हुक्म दिया।

उसे सम्प्रदाइयों के मुक़द्दमे का पता था। उनकी ओर से पहले भी उसे एक दरख़्वास्त मिली थी। मामला इस तरह था। ये सम्प्रदाई ईसाई धर्म के मानने वाले थे लेकिन ऑर्थोडॉक्स मत पर से उनका विश्वास उठ गया था। पहले तो उन्हें वापस लाने का यत्न किया गया, उन्हें बड़े उपदेश दिये गये, लेकिन जब वे न माने तो उन पर मुक़द्दमा चलाया गया। लेकिन वे बरी हो गये। इसके बाद लाट-पादरी और गवर्नर ने परामर्श किया, और इस मिथ्या तर्क के आधार पर कि उनकी शादियां ग़ैर-क़ानूनी हैं, इन सम्प्रदाइयों—पतियों, पत्नियों और बच्चों को—अलग अलग स्थानों पर निर्वासित कर दिया। इस तरह ये आदमी अपने बीवी-

बच्चों से अलग कर दिये गये। अब पत्नियां और पति दरख़्वास्त कर रहे थे कि उन्हें यों एक दूसरे से अलग न किया जाय। तोपोरोव को याद आया कि पहले जब उसे इस मामले का पता चला तो इसकी इच्छा हुई थी कि इसे वहीं पर रोक दिया जाय, लेकिन वह द्विविधा में पड़ गया था। फिर उसने यही ठीक समझा कि इस निर्णय का समर्थन कर देने का और इस तरह एक एक परिवार के लोगों को एक दूसरे से अलग कर के निर्वासित कर देने का कोई दुष्परिणाम नहीं होगा। इसके विपरीत यदि इन्हें निर्वासित नहीं किया गया तो इसका बहुत बुरा प्रभाव उन लोगों पर पड़ेगा जो इन्हीं किसान-सम्प्रदाइयों के आस-पास रहते हैं। वे लोग ऑर्थोडॉक्स मत से विमुख होने लगेंगे। साथ ही इस मामले में लाट-पादरी ने अपना धर्मानुराग दिखाया था। इसलिए तोपोरोव ने हस्तक्षेप नहीं किया और जैसा निर्णय हुआ था उसी के अनुसार इसे चलने दिया।

पर अब स्थिति कुछ और हो गई थी। तोपोरोव ने देखा कि नेख़्लूदोव ने इन सम्प्रदाइयों का पक्ष ले लिया है और इस आदमी का पीटर्सवर्ग में काफ़ी रसूख़ है। सम्भव है ज़ार के कान में यह बात कही जाय कि बहुत बड़ा ज़ुल्म हुआ है, या इस मामले की रिपोर्ट विदेशी अख़बारों में जा छपे। इसलिए तोपोरोव ने फ़ौरन् अपना निश्चय बदल लिया, जिसकी पहले आशा नहीं की जा सकती थी।

"नमस्ते," उसने खड़े हो कर नेख़्लूदोव को इस ढंग से स्वागत किया मानो बहुत ही व्यस्त रहने वाला आदमी हो और उसे सिर उठाने की फ़ुर्सत न हो, और सीधा काम की बात करने लगा।

"मुझे यह मामला मालूम है। ज्यों ही मैंने दरख़्वास्त में लिखे नाम पढ़े तो मुझे सारा क़िस्सा याद आ गया। बड़ी अफ़सोसनाक बात है," दरख़्वास्त नेख़्लूदोव को दिखाते हुए तोपोरोव ने कहा। "मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे यह बात याद करा दी। इस मामले में प्रान्तीय अधिकारियों ने ज़रूरत से ज़्यादा उत्साह से काम लिया है।" नेख़्लूदोव चुपचाप खड़ा तोपोरोव के चेहरे की ओर देख रहा था। चेहरा पीला और गतिहीन था, मानो नक़ाब हो। नेख़्लूदोव के मन में इस आदमी के प्रति कोई सद्भावना नहीं थी। "मैं हुक्म जारी कर दूंगा कि इस निर्णय को रद्द किया जाय और लोगों को फिर से अपने अपने घरों में बसा दिया जाय।"

"इसका मतलव है मुझे दरख़्वास्त देने की कोई ज़रूरत नहीं रहेगी?"

"मैं आपको यक़ीन दिलाता हूं और इस वात का वचन देता हूं," मैं शब्द पर ज़ोर देते हुए तोपोरोव ने कहा। ज़ाहिर है उसे इस वात का विश्वास था कि उसकी ईमानदारी और उसके वचन से बढ़ कर विश्वसनीय कुछ नहीं हो सकता। "सवसे अच्छा यही होगा कि इसे मैं अभी लिख दूं। आप तशरीफ़ रखिये।"

वह एक मेज़ के सामने जा कर वैठ गया और आदेश लिखने लगा। नेख़्लूदोव कुर्सी पर नहीं वैठा, वल्कि खड़े खड़े संकरी, गंजी खोपड़ी की ओर तथा उस स्थूल हाथ की ओर देखने लगा जिसकी नीली नीली शिराएं साफ़ नज़र आ रही थीं और जो तेज़ तेज़ काग़ज़ पर क़लम चला रहा था। नेख़्लूदोव मन ही मन सोच रहा था कि क्या कारण है यह पत्थर दिल आदमी यह काम करने लगा है, और वह भी इतनी सावधानी के साथ।

"लीजिये, यह रहा," लिफ़ाफ़े पर मोहर लगाते हुए तोपोरोव ने कहा, "आप वेशक अपने मुवक्किलों को इसकी सूचना दे दीजिये।" और उसने अपने होंठ फैलाए, मानो मुस्कराने की चेष्टा कर रहा हो।

"इन लोगों को इतने दुःख क्यों झेलने पड़े हैं?" हाथ में लिफ़ाफ़ा लेते हुए नेख़्लूदोव ने पूछा।

तोपोरोव ने सिर ऊपर उठाया और मुस्करा दिया, मानो नेख़्लूदोव का सवाल सुन कर उसे ख़ुशी हो रही हो।

"यह मैं नहीं वता सकता। मैं इतना कह सकता हूं कि धार्मिक मामलों में अत्यधिक उत्साह दिखाना इतना ख़तरनाक या हानिकारक नहीं जितना कि उदासीनता जो आजकल इतनी फैल रही है। आप समझ सकते हैं कि जनता की हित-रक्षा का हमारे लिए वड़ा महत्व है।"

"परन्तु क्या कारण है कि धर्म के नाम पर सदाचार के सर्वोपरि नियमों को भंग किया जाता है—परिवार के सदस्यों को एक दूसरे से अलग किया जाता है?"

तोपोरोव मुस्कराये जा रहा था, एक कृपालुता भरी मुस्कान, ज़ाहिर है वह यही सोच रहा था कि नेख़्लूदोव के ख़्यालात वड़े अजीव हैं। जो कुछ भी नेख़्लूदोव कहता उसी के वारे में तोपोरोव की यही राय होती कि ख़्याल है तो वड़ा अजीव और एक-तरफ़ा, परंतु वातों को ठीक समझने के

लिए एक विस्तृत राजनीतिक दृष्टिकोण की ज़रूरत है जो कि उसी आदमी का हो सकता है जो मेरी तरह बुलन्दी पर खड़ा हो।

"व्यक्तिगत रूप से एक अलग आदमी को बात यों नज़र आ सकती है," वह कहने लगा, "लेकिन राज्य की दृष्टि से देखने पर बात और बन जाती है। अच्छा, तो माफ़ कीजिये, मैं ज्यादा देर आपको रोकना नहीं चाहता," तोपोरोव ने कहा और सिर झुका कर हाथ आगे बढ़ा दिया।

नेख़्लूदोव ने चुपचाप हाथ मिलाया और तेज़ तेज़ क़दम रखता हुआ बाहर निकल आया। उसे अफ़सोस हो रहा था कि उस शख़्स के साथ क्यों हाथ मिलाया।

"जनता के हित!" उसने तोपोरोव के शब्द दोहराये। "सब तेरे हित हैं, अकेले तेरे हित!" बाहर जाते हुए नेख़्लूदोव मन ही मन कह रहा था।

एक एक कर के नेख़्लूदोव की आंखों के सामने वे व्यक्ति आने लगे जिनकी हित-रक्षा उन संस्थाओं द्वारा हुई है जो न्याय पालन करती हैं और धर्म तथा शिक्षा की अलम्बरदार हैं। वह स्त्री जिसे ग़ैरक़ानूनी शराब बेचने की सज़ा दी गई। उस लड़के को चोरी करने की, उस आवारा आदमी को आवारा घूमने की, आग लगाने वाले को आग लगाने की, बैंकर को ग़बन की, और उस बदनसीब लीदिया शूस्तोवा को महज़ इसलिए सज़ा दी गई कि शायद इससे कोई ज़रूरी सूचना मिल सके। फिर उसे सम्प्रदाइयों का ख़्याल आया जिन्हें इसलिए सज़ा दी गई कि उन्होंने ऑर्थोडॉक्स मत छोड़ दिया, गुर्केविच को इसलिए कि वह चाहता था कि देश में सांविधानिक सरकार हो। नेख़्लूदोव को साफ़ नज़र आ रहा था कि इन लोगों को जो तरह तरह की सज़ाएं दी गई—जेल, हिरासत, निर्वासन—तो इसलिए नहीं कि इन्होंने न्याय का उल्लंघन किया था या अवैध व्यवहार किया था, बल्कि केवल इसलिए कि ये उन सरकारी अफ़सरों और धनी लोगों के रास्ते में रुकावट डाल रहे थे, जो उस सम्पत्ति का उपभोग करना चाहते हैं जो उन्होंने जनता के हाथ से छीन रखी है।

वह स्त्री जो लाइसेंस के बिना शराब बेचती है, वह चोर जो शहर में भटकता-फिरता है, लीदिया शूस्तोवा जो घोषणापत्र छिपाये फिरती है, सम्प्रदायवादी जो अन्धविश्वास तोड़ रहे हैं, और गुर्केविच जो संविधान चाहता है, ये लोग सचमुच रुकावट डालने वाले हैं। नेख़्लूदोव को साफ़

नज़र आ रहा था कि सभी अफ़सर—उसके अपने मौसा से ले कर, सेनेटरों, तोपोरोव, तथा उन साफ़-सुथरे, रोबदार कर्मचारियों तक जो मन्त्रालयों में मेज़ों के सामने बैठे होते हैं—इन सब लोगों को इस बात की कोई परवाह नहीं थी कि बेगुनाह लोग दुख झेल रहे हैं, उन्हें केवल इस बात की चिन्ता थी कि सचमुच के ख़तरनाक लोगों को किस तरह रास्ते में से हटाया जाय।

नियम तो यह है कि किसी हालत में भी किसी निर्दोष आदमी को सज़ा न मिले, भले ही इससे दस मुजरिम बच निकलें। मगर यहां तो इसके उलट हो रहा है। एक सचमुच के ख़तरनाक आदमी से पिण्ड छुड़ाने की ख़ातिर दस ऐसे आदमियों को सज़ा दी जाती है जो बिल्कुल निर्दोष हैं। यह तो वैसा ही हुआ जैसे किसी चीज़ का गला-सड़ा भाग काटते समय, आप चंगे-भले हिस्से को भी साथ में काट डालें।

प्रश्न की यह व्याख्या नेख़्लूदोव को बड़ी सीधी-सादी और स्पष्ट जान पड़ी। लेकिन इसकी अत्यधिक सरलता और स्पष्टता के ही कारण वह उसे स्वीकार करने से हिचकिचा रहा था। क्या यह संभव है कि इतनी उलझी हुई स्थिति की इतनी सीधी-सादी और भयानक व्याख्या हो? क्या यह संभव है कि न्याय, क़ानून, धर्म, भगवान् के बारे में जो इतना कुछ कहा जाता है वह केवल मात्र शब्दाडम्बर है, और उसके पीछे घृणित धन-लोलुपता तथा अत्याचार छिपा हुआ है?

२८

नेख़्लूदोव उसी दिन शाम को पीटर्सबर्ग से चला जाता लेकिन उसने मेरियेट को वचन दे रखा था कि वह उसे थियेटर में मिलने ज़रूर आयेगा। अतः यह जानते हुए भी कि उसे यह वचन नहीं निभाना चाहिए वह मन ही मन यह कह कर अपने को धोखा देता रहा कि दिये गये वचन का पालन करना उसका कर्तव्य है।

"क्या मुझमें इन प्रलोभनों का मुक़ाबला करने की क्षमता है?" उसने अपने आपसे पूछा। लेकिन यह सवाल सच्चे दिल से नहीं पूछा गया था। "मैं अन्तिम बार आज अपना इम्तहान लूंगा।"

शाम का लिबास पहने वह थियेटर जा पहुंचा। उस समय नाटक का दूसरा ऐक्ट चल रहा था। वही नाटक था—"Dame aux camélias" जो हमेशा दिखाया जाता था जिसमें एक विदेशी अभिनेत्री फिर एक बार और नये ढंग से यह दिखाने की चेष्टा करती थी कि तपेदिक़ की रोगी स्त्रियां कैसे जान देती हैं।

थियेटर काफ़ी भरा हुआ था। नेख़्लूदोव के पूछने पर फ़ौरन् और बड़े अदब से उसे मेरियेट का बॉक्स दिखा दिया गया।

बॉक्स के बाहर, बरामदे में, एक बावर्दी नौकर खड़ा था। नेख़्लूदोव को देख कर उसने झुक कर अभिवादन किया मानो नेख़्लूदोव को जानता हो, और बॉक्स का दरवाज़ा खोल दिया।

हॉल के दूसरी तरफ़ लोग बॉक्सों में बैठे या खड़े थे। इसी तरह हॉल में भी, और स्टेज के नज़दीक भी। तरह तरह के लोग थे—किसी के सिर के बाल सफ़ेद, किसी के खिचड़ी, कोई गंजा, किसी के बाल घुंघराले—सभी तल्लीन हो कर स्टेज पर आंखें गाड़े थे जिस पर दुबली-पतली अभिनेत्री, रेशमी और जालीदार कपड़ों में सजी-धजी, और बड़ी अस्वाभाविक आवाज़ में बोलती हुई स्टेज पर इधर-उधर ऐंठती हुई आ जा रही थी।

दरवाज़ा खुलने पर किसी ने "श-श-श!" का शब्द किया। उसी वक़्त हवा के दो झोंके एक साथ नेख़्लूदोव के मुंह पर आ लगे—एक गरम और दूसरा ठण्डा। बॉक्स में मेरियेट और उसके जनरल पति के अलावा दो व्यक्ति और बैठे थे—एक स्त्री और एक पुरुष। स्त्री ने लाल रंग का केप पहन रखा था और सिर पर बोझल सा केश-विन्यास बनाये थी। नेख़्लूदोव उसे नहीं जानता था। पुरुष गोरे रंग का था, जिसने मुंह पर घने गल-मुच्छे उगा रखे थे, और गल-मुच्छों के बीच ठोड़ी की छोटी सी जगह मूंडी हुई थी। जनरल ऊंचा-लम्बा रूपवान पुरुष था, चेहरे से कठोरता तथा अगम्यता झलक रही थी, नाक रोमन ढंग का, और वर्दी में छाती के आस-पास का हिस्सा गद्दियां दे कर फुलाया हुआ था।

नेख़्लूदोव के अन्दर पहुंचने पर मेरियेट ने फ़ौरन् मुड़ कर उसकी ओर देखा, और मुस्करा दी। इस मुस्कराहट में स्वागत तथा कृतज्ञता का भाव था, और साथ ही, नेख़्लूदोव को लगा, जैसे उसमें एक और इशारा भी छिपा था। छरहरा, सुडौल वदन, कमनीय भाव-भंगिमा, मेरियेट नीचे गले की पोशाक पहने हुए थी, जिससे उसके सुडौल, गठे हुए, ढलुएं कन्धे

तथा गर्दन के पास एक छोटा सा काला तिल नज़र आ रहे थे। हाथ में उसने पंखा उठा रखा था जिससे उसने नेख़्लूदोव को अपने ऐन पीछे की कुर्सी पर बैठ जाने का इशारा किया।

मेरियेट का पति हर काम चुपचाप करने का आदी था। नेख़्लूदोव की ओर भी उसने चुपचाप देखा और झुक कर अभिवादन किया। पति-पत्नी की आंखें मिलीं। पति की आंखों में वही भाव था जो एक ऐसे पुरुष की आंखों में होता है जो एक सुन्दर स्त्री का मालिक हो।

स्टेज पर अभिनेत्री का एकालाप समाप्त हुआ। हॉल तालियों से गूंज उठा। मेरियेट उठ खड़ी हुई और हाथों से अपनी रेशमी स्कर्ट को पकड़े हुए बॉक्स के पिछले हिस्से में गई और नेख़्लूदोव का अपने पति से परिचय कराया। जनरल की आंखें अब भी मुस्करा रही थीं। उसने कहा कि वह बहुत ख़ुश है और फिर उसके चेहरे पर वही पहले सी दुर्बोध चुप्पी छा गई।

"मैं तो आज ही पीटर्सबर्ग से जाने वाला था, लेकिन मैंने आपको वचन दे रखा था," नेख़्लूदोव ने मेरियेट से कहा।

"अगर मुझे मिलने का शौक़ नहीं है तो कम से कम एक अच्छी अभिनेत्री को तो देख पाओगे," नेख़्लूदोव के शब्दों का मतलब समझ कर उनका जवाब देते हुए मेरियेट बोली। "पिछले सीन में उसने कितना बढ़िया काम किया है?" अपने पति को सम्बोधित करते हुए उसने कहा।

पति ने सिर हिला कर समर्थन किया।

"इस तरह के दृश्यों का मुझ पर कोई असर नहीं होता," नेख़्लूदोव ने कहा। "मैंने असल यातनाओं के इतने हृदयविदारक दृश्य देखे हैं कि..."

"बैठो, बैठो, बताओ मुझे।"

पति भी कान लगा कर सुनने लगा। उसकी आंखें अब भी मुस्करा रही थीं, और उनमें व्यंग का भाव उत्तरोत्तर बढ़ रहा था।

"आज मैं उस औरत से मिलने गया था जिसे रिहा किया गया है। बड़ी मुद्दत तक उसे जेल में रखा गया था। उसका उन्होंने बुरा हाल किया है।"

"यह वही औरत है जिसका मैंने आपसे ज़िक्र किया था," मेरियेट ने अपने पति से कहा।

"हां, हां, मुझे इस बात की बड़ी ख़ुशी है कि उसे रिहा किया जा

सका," पति ने सिर हिलाते हुए, धीमी आवाज़ में कहा। मूंछों के नीचे उसके होंठ मुस्करा रहे थे और नेख़्लूदोव को लगा जैसे उस मुस्कराहट में व्यंग भरा हो। "मैं बाहर जा कर ज़रा सिगरेट पी आऊं।"

नेख़्लूदोव इस इन्तज़ार में था कि कब मेरियेट वह महत्वपूर्ण बात उसे बतायेगी जिसका कल उसने ज़िक्र किया था। पर मेरियेट ने कुछ नहीं कहा, उसकी चर्चा तक नहीं की, बल्कि सारा वक़्त हंस हंस कर अभिनय की ही बातें करती रही। कहने लगी कि इस अभिनय का तो ज़रूर नेख़्लूदोव के दिल पर असर होना चाहिए था।

नेख़्लूदोव को पता चल गया कि मेरियेट को कुछ भी नहीं बताना है। वह तो केवल अपनी पोशाक की सज-धज से उसे प्रभावित करना चाहती थी, जिसे पहन कर वह अपने कन्धे और नन्हा सा तिल दिखा सकती थी। नेख़्लूदोव के मन को यह अच्छा भी लगा और इससे घृणा भी हुई।

इस प्रकार के व्यवहार को पहले तो एक रंगीन पर्दा सा ढके रहता था जो नेख़्लूदोव को सुन्दर लगता था। आज भी वह पर्दा मौजूद था लेकिन नेख़्लूदोव को उसके पीछे की असलियत नज़र आ गई थी। मेरियेट के सौन्दर्य से वह अब भी अभिभूत हुआ जाता था, लेकिन साथ ही उसे इस बात का भी एहसास था कि वह एक झूठी औरत है। उसका पति सैकड़ों-हज़ारों लोगों को ख़ून के आंसू रुला कर एक बड़े ओहदे से दूसरे बड़े ओहदे पर तरक़्क़ी करता जा रहा था, और मेरियेट इसके प्रति बिल्कुल उदासीन थी। जो कुछ भी उसने कल रोज नेख़्लूदोव से कहा था वह झूठा दिखावा था। वह केवल एक ही बात चाहती थी कि नेख़्लूदोव उसके प्रेम-जाल में फंस जाय—और इस इच्छा का कारण न वह ख़ुद जानती थी, न नेख़्लूदोव जानता था। नेख़्लूदोव इस व्यवहार के प्रति आकर्षित भी हुआ पर साथ ही उसका मन घृणा से भी भर उठा। कई बार उसने विदा लेने के लिए अपनी टोपी उठायी, मगर फिर भी बैठा रहा।

मेरियेट का पति लौट कर आया। उसकी घनी मूंछों से तम्बाकू की तेज़ गन्ध आ रही थी। अन्दर आ कर उसने नेख़्लूदोव की ओर इस नज़र से देखा मानो उसे पहली बार देख रहा हो। उसकी आंखों में कृपालुता और घृणा दोनों का भाव था। आख़िर नेख़्लूदोव उठ खड़ा हुआ और बॉक्स का दरवाज़ा बन्द होने से पहले ही बाहर निकल आया, अपना ओवरकोट लिया और थियेटर में से बाहर हो गया।

नेव्स्की सड़क के रास्ते नेख़्लूदोव पैदल अपने घर की ओर जाने लगा। चौड़ी पटरी पर चलते हुए उसकी नज़र एक लम्बे, छरहरे बदन की औरत पर गई जो शोख़-भड़कीले कपड़े पहने चुपचाप उसके आगे आगे चली जा रही थी। औरत के चेहरे से तथा अंग अंग से पता चल रहा था कि उसे अपनी घृणित शक्ति का ज्ञान है। जो कोई भी उसके पास से हो कर जाता या सामने से आता, ज़रूर उसकी ओर देखता। नेख़्लूदोव की रफ़्तार उस स्त्री की रफ़्तार से तेज़ थी, और उसके पास से गुज़रते हुए उसकी भी आंखें अपने आप उठ कर उसके चेहरे पर गयीं। औरत का चेहरा ख़ूबसूरत था, शायद उसने पाउडर-सुर्ख़ी भी लगा रखे थे। औरत नेख़्लूदोव की ओर देख कर मुस्कराई और उसकी आंखें चमक उठीं। उस समय, अकारण ही, नेख़्लूदोव को मेरियेट याद आ गई। यहां पर भी वही कुछ हुआ जैसा कि थियेटर में हुआ था। नेख़्लूदोव आकर्षित भी हुआ और उसका मन घृणा से भी भर उठा।

तेज़ तेज़ चलता हुआ नेख़्लूदोव उससे आगे निकल गया। उसे अपने आप पर क्रोध आने लगा था। इस सड़क पर से हट कर वह मोर्स्काया की ओर घूम गया, और बंध पर जाने लगा। वहां पर वह रुक गया और सड़क की पटरी पर टहलने लगा। इस अप्रत्याशित व्यवहार से ड्यूटी पर खड़ा सन्तरी भी कुछ हैरान सा हो गया।

"उस दूसरी औरत ने भी मेरी ओर इसी तरह मुस्करा कर देखा था, जिस वक़्त मैंने बॉक्स के अन्दर क़दम रखा था," वह सोच रहा था। "दोनों मुस्कराहटों का मतलब एक ही था। फ़रक़ केवल इतना है कि इसने अपनी बात सीधे दो-टूक शब्दों में कह दी–'तुम मुझे चाहते हो? मैं हाज़िर हूं। अगर नहीं चाहते तो अपना रास्ता पकड़ो।' दूसरी स्त्री दिखावा तो इस बात का करती थी कि उसे इसका ख़्याल तक नहीं है, और वह बड़े ऊंचे और सुसंस्कृत स्तर पर रहती है, लेकिन मूल में बात वहां पर भी यही थी। यह कम से कम सच तो बोलती थी, उस दूसरी का तो एक एक शब्द सफ़ेद झूठ था। इसके अतिरिक्त यदि यह औरत ऐसा काम करती है तो विवश हो कर, ज़रूरत ने इसे मजबूर किया है। लेकिन दूसरी औरत अपने मनबहलाव के लिए उस वासना के साथ खिलवाड़ करती है, जो इतनी आकर्षक है कि मनुष्य को वशीभूत कर लेती है, पर साथ ही घृणित, और भयानक भी है। सड़कों पर भटकने वाली यह वेश्या उस गन्दे जल

की तलैया के समान है ज़िस पर वे लोग पानी पीने जाते हैं जिनकी प्यास उनकी घृणा से प्रबल है। वह दूसरी औरत जो थियेटर में बैठी है, विष के समान है जो अदृश्य रूप से जिस चीज़ को भी छूती है उसी को विषैला बना देती है।" नेख़लूदोव को अभिजातों के प्रधान की पत्नी के साथ अपना वह मामला याद आ गया, और उसकी आंखों के सामने लज्जाजनक स्मृति-चित्र घूम गये। "मनुष्य की पाशविक वृत्ति अत्यन्त घृणास्पद चीज़ है," वह सोच रहा था। "पर जब तक यह नग्न रूप में हमारे सामने आती रहती है हम आध्यात्मकता के ऊंचे स्तर से इसकी ओर देखते हुए इससे घृणा करते हैं। और मनुष्य उस पर क़ाबू पाने में समर्थ हो या उसकी वेगवती लहर में वह जाय, अपने में वह वही कुछ रहता है जो पहले था। परन्तु जब यही पाशविक वृत्ति कविता तथा ललित भावना की ओढ़नी ओढ़ कर हमारे सामने आती है, और हमसे यह आशा करती है कि हम उसकी पूजा करें, तब हम पूर्णतया इसमें डूब जाते हैं, और काम-वासना की पूजा करते हैं, और हम अच्छाई और बुराई का अन्तर नहीं देख सकते। वह स्थिति अत्यन्त भयानक होती है।"

यह तथ्य नेख़लूदोव को उतनी ही स्पष्टता से नजर आ रहा था जिस स्पष्टता से उसे अपने सामने राज प्रासाद, सन्तरी, क़िला, नदी, किश्तियां तथा स्टॉक-एक्स्चेंज की इमारत नज़र आ रहे थे।

उत्तरी प्रदेशों में गर्मी के मौसम में रातें अन्धेरी नहीं हुआ करतीं। आज की रात वैसी ही थी। सृष्टि पर रात्रि का शान्तिप्रद और सुखद अन्धकार नहीं था। एक तरह की उदास, मन्द सी रोशनी, न मालूम कहां से आ कर, आकाश में छायी थी। यही स्थिति नेख़लूदोव की आत्मा की थी। इस पर से भी अज्ञान का शान्तिप्रद अन्धकार उठ गया था। सब बात साफ़ थी। स्पष्ट था कि हर वह चीज़ जिसे महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ माना जाता था, नगण्य और घृणित हो उठी थी। यह भी स्पष्ट था कि इस चमक-दमक और ऐशो-आराम के पीछे वही पुराने चिरपरिचित अपराध छिपे हुए हैं, जिनकी कोई सजा न थी, अपितु जिनकी जय-जयकार होती है और जिन्हें लोग अपनी समस्त कल्पना शक्ति से मनोहरतम रूप देते आये हैं।

वह चाहता था कि यह सब भूल जाय, इसकी ओर आंख तक न उठाये लेकिन रह रह कर उसकी नज़र उसी ओर जाती थी। वह उस

प्रकाश के स्रोत को नहीं देख सकता था जिसने इस सच्चाई को उसकी आंखों के सामने प्रकट किया था, ठीक उसी तरह जिस तरह वह उस प्रकाश के स्रोत को नहीं देख पा रहा था जो इस समय पीटर्सबर्ग शहर पर छाया हुआ था। यह प्रकाश उसे मन्द, उदास तथा अस्वाभाविक लगता था फिर भी जिन जिन चीज़ों को यह प्रकाश उद्भासित कर रहा था, उन्हें देखे बिना वह न रह सकता था। इसी कारण वह मन ही मन ख़ुश भी था और चिन्तित भी।

२६

मास्को लौट कर नेख़्लूदोव सीधा जेल के अस्पताल की ओर चल दिया। वह मास्लोवा को यह बुरी ख़बर सुना देना चाहता था कि सेनेट ने न्यायालय के निर्णय का समर्थन किया है और अब उसे साइबेरिया जाने के लिए तैयार रहना चाहिए।

ज़ार के नाम वकील ने एक दरख़्वास्त तो तैयार कर दी थी, और उसे नेख़्लूदोव अपने साथ लेता भी आया था, ताकि उस पर मास्लोवा का दस्तख़त करवा ले, लेकिन उसे इससे कोई आशा न थी। और अजीब बात यह थी कि मन ही मन वह चाहता भी नहीं था कि वह मंज़ूर हो। कल्पना में वह बहुत दिनों से यही सोच रहा था कि वह साइबेरिया में जायेगा और वहां जलावतन और सज़ायाफ़्ता लोगों के साथ रहेगा। इस तरह सोचने की उसे आदत सी पड़ गई थी। अब उसके लिए ऐसी स्थिति की कल्पना करना कठिन हो रहा था कि अगर मास्लोवा बरी हो गई तो दोनों के जीवन का रुख़ क्या होगा। जिन दिनों अमरीका में दास-प्रथा प्रचलित थी, वहां के एक लेखक थोरो ने लिखा था: जिस देश में ग़ुलामी को क़ानून की छत्रछाया प्राप्त हो, वहां के किसी भी ईमानदार नागरिक के लिए एकमात्र शोभनीय स्थान जेल ही है। नेख़्लूदोव को थोरो के ये शब्द याद आ गये। उसका भी यही विचार था, विशेषकर पीटर्सबर्ग का दौरा करने के बाद जहां उसने बहुत कुछ देखा था।

"ठीक है, रूस में भी इस समय एक ईमानदार आदमी के लिए एकमात्र शोभनीय स्थान जेल ही है," वह सोच रहा था। गाड़ी में जेल के पास पहुंचते हुए और उसकी दीवारों के अंदर जाते हुए नेख़्लूदोव इस बात का स्पष्टतः अनुभव भी कर रहा था।

अस्पताल के दरवाज़े पर खड़े दरबान ने नेख़्लूदोव को पहचान लिया, और झट कहने लगा कि मास्लोवा अब यहां पर नहीं है।

"तो कहां पर है?"

"उसे वापस जेल में भेज दिया गया है।"

"उसे यहां से क्यों हटा दिया गया है?"

"हुज़ूर क्या बताऊं, इन लोगों को तो आप जानते हैं," दरबान बोला। उसके होंठों पर घृणा-भरी मुस्कान थी। "छोटे डाक्टर से आंखें लड़ाने लगी थी। इसलिए डाक्टर ने वापस भिजवा दिया।"

नेख़्लूदोव को अब तक इस बात का भास नहीं हुआ था कि मास्लोवा और उसकी मन:स्थिति का उसके लिए कितना महत्व है। ख़बर सुनते ही वह सुन्न सा खड़ा रहा। उसे गहरा आघात पहुंचा, जिस तरह किसी अप्रत्याशित और विकट दुर्भाग्य की ख़बर मिलने पर होता है। सबसे पहले तो उसने लज्जा का अनुभव किया। वह इस भ्रांति में था कि मास्लोवा का चरित्र-परिवर्तन हो रहा है, और वह बेहद ख़ुश था। अब उसकी स्थिति उसकी अपनी नज़रों में ही उपहासजनक लगने लगी थी। मास्लोवा कहा करती थी कि मैं तुमसे कोई क़ुर्बानी नहीं मांगती हूं, मेरी भर्त्सना किया करती थी, रोया करती थी। नेख़्लूदोव को लगा जैसे ये सब एक नीच औरत का तिरिया-चरित्र था। वह इन हथकण्डों से उसे अपने हाथ में नचाना चाहती थी और अपना उल्लू सीधा करना चाहती थी। पिछली बार जब वह उससे मिलने आया था तो मास्लोवा में उसे ढिठाई का भास हुआ था। यंत्रवत् सिर पर टोपी रखते हुए जब वह अस्पताल से बाहर जाने लगा तो यह विचार उसके मन में कौंध सा गया।

"अब मैं क्या करूं? क्या मैं अब भी उसके साथ बंधा हुआ हूं? उसकी इस करतूत के बाद क्या मैं आज़ाद नहीं हो गया हूं?" उसने अपने आपसे पूछा।

मन ही मन वह मास्लोवा को उसके किये की सज़ा देना चाहता था। लेकिन जब ये सवाल उसके मन में उठे तो वह फ़ौरन् समझ गया कि अगर वह अपने को आज़ाद समझे और मास्लोवा से किनारा कर ले तो वह उसे नहीं, अपने को सज़ा दे रहा होगा। यह सोच कर उसका मन त्रस्त हो उठा।

"नहीं, इस घटना से मेरा निश्चय शिथिल पड़ने के बजाय और भी

दृढ़ होना चाहिए। उसकी मनःस्थिति उसे जिस ओर ले जाना चाहती है, ले जाय। अगर वह छोटे डाक्टर से आंखें लड़ाना चाहती है तो लड़ाये, यह उसका अपना काम है, मेरा इसके साथ कोई वास्ता नहीं। मुझे अपनी अन्तरात्मा के आदेश का पालन करना होगा। और मेरी अन्तरात्मा का यह आदेश है कि मैं अपने पाप का प्रायश्चित करने के लिए अपनी आज़ादी क़ुर्बान कर दूं। उसके साथ शादी करने का मेरा निश्चय—भले ही वह शादी औपचारिक रूप में ही क्यों न हो—और जहां वह जाय, उसके साथ जाने का निश्चय अब भी ज्यों के त्यों क़ायम हैं। उनमें कोई तबदीली नहीं हो सकती," बड़ी ढिठाई और कटुता के साथ उसने अपने आपसे कहा और अस्पताल में से निकल कर, जेल के बड़े फाटकों की ओर दृढ़ता से जाने लगा।

फाटक पर एक वार्डर ड्यूटी दे रहा था। नेख़लूदोव ने उसे जा कर इन्स्पेक्टर को यह ख़बर देने को कहा कि वह मास्लोवा से मिलना चाहता है। वार्डर नेख़लूदोव को जानता था और एक जाने-पहचाने आदमी के नाते उसे जेल की महत्वपूर्ण ख़बर सुना दी कि पहला इन्स्पेक्टर बदल गया और उसकी जगह एक नया अफ़सर आया है जो स्वभाव का बड़ा कठोर है।

"बहुत कड़ाई करने लगे हैं, साहिब, क्या बताऊं आपको!" वार्डर कहने लगा, "नये इन्स्पेक्टर दफ़्तर में हैं, मैं अभी उन्हें ख़बर किये देता हूं।

नया इन्स्पेक्टर जेल के अन्दर था, और शीघ्र ही नेख़लूदोव से मिलने बाहर आ गया। उसका क़द लम्बा और नाक-नक़्श लम्बूतरे थे, गालों की हड्डियां उभरी हुई थीं, चाल-ढाल बहुत सुस्त और सूरत मनहूस थी।

"भेंट मुलाक़ाती कमरे में ही की जा सकती है, और उसके लिए दिन मुक़र्रर हैं," बिना नेख़लूदोव की ओर देखे उसने कहा।

"लेकिन ज़ार के नाम मेरे पास एक दरख़्वास्त है जिस पर मुझे दस्तख़त करवाना है।"

"दरख़्वास्त आप मुझे दे सकते हैं।"

"मैं क़ैदी से ख़ुद मिलना चाहता हूं। पहले मुझे कभी किसी ने नहीं रोका।"

"हां, मगर यह पहले की बात है," इन्स्पेक्टर ने कहा और कनखियों से नेख़लूदोव की ओर देखा।

"मुझे गवर्नर की तरफ़ से इजाज़त मिल चुकी है," नेख़्लूदोव ने ज़ोर दे कर कहा, और जेब में से अपना बटुआ निकाला।

"लाइये," इन्स्पेक्टर ने कहा और अपना हाथ बढ़ा कर, जिसकी तर्जनी पर सोने की अंगूठी थी, नेख़्लूदोव से इजाज़तनामा ले लिया। इन्स्पेक्टर के हाथ की अंगुलियां लम्बी लम्बी, गोरी और कठोर थीं। वह धीरे धीरे इजाज़तनामा पढ़ता रहा। "दफ़्तर में तशरीफ़ ले चलिये," उसने कहा।

अब की बार दफ़्तर में कोई नहीं था। इन्स्पेक्टर अपने मेज़ के सामने बैठ गया और उस पर रखे काग़ज़ों को छांटने लगा। प्रत्यक्षतः, भेंट के दौरान उसका इरादा वहीं बैठे रहने का था। नेख़्लूदोव ने राजनीतिक क़ैदी बोगोदूख़ोव्स्काया से मिलने के लिए कहा। इन्स्पेक्टर ने छूटते ही इन्कार कर दिया।

"राजनीतिक क़ैदियों से भेंट करने की इजाज़त नहीं है," उसने कहा और फिर अपने काग़ज़ों की ओर देखने लगा।

बोगोदूख़ोव्स्काया की चिट्ठी नेख़्लूदोव के जेब में थी। उसे लगा जैसे उसने कोई जुर्म किया और अब उसका भण्डाफोड़ हो गया हो और मनसूबे ख़ाक में मिला दिये गये हों।

मास्लोवा अन्दर आई। इन्स्पेक्टर ने सिर उठा कर ऊपर देखा, फिर बिना नेख़्लूदोव या मास्लोवा की ओर देखे बोला—

"तुम लोग बातें कर सकते हो," और फिर अपने काग़ज़ों को छांटने लगा।

अब की बार भी मास्लोवा ने सफ़ेद जाकेट और स्कर्ट पहन रखी थी और सिर पर रूमाल बांध रखा था। वह पास आई। नेख़्लूदोव की आंखों में कठोरता तथा उपेक्षा का भाव देख कर मास्लोवा का चेहरा शर्म से लाल हो गया। हाथों में जाकेट का किनारा मरोड़ते हुए उसने आंखें नीची कर लीं। उसकी घबराहट देख कर नेख़्लूदोव का शक और भी पक्का हो गया कि जो कुछ दरबान ने कहा था वह ज़रूर ठीक होगा।

नेख़्लूदोव का इरादा तो मास्लोवा से पहले ही की तरह मिलने का था, लेकिन फिर भी उसके साथ हाथ मिलाने को उसका मन नहीं माना। उसके प्रति नेख़्लूदोव का मन घृणा से भर उठा था।

"मैं तुम्हें बुरी ख़बर सुनाने आया हूं," उसने समतल, नीरस आवाज़

में कहा। नेख़्लूदोव ने न ही मास्लोवा से हाथ मिलाया और न ही उसकी ओर आंख उठा कर देखा। "सेनेट ने अपील ख़ारिज कर दी है।"

"मैं तो पहले से ही जानती थी यही कुछ होगा," मास्लोवा ने अजीब सी आवाज़ में कहा, मानो उसका सांस फूल रहा हो।

अगर पहले कभी ऐसी चर्चा हुई होती तो नेख़्लूदोव उससे ज़रूर पूछता कि तुम्हें कैसे मालूम था यही कुछ होगा। पर अब वह कुछ नहीं बोला, और केवल उसके चेहरे की ओर देखा। मास्लोवा की आंखें डबडबा आई थीं।

यह देख कर भी नेख़्लूदोव का मन नहीं पसीजा। बल्कि उसकी खीज और भी बढ़ गई।

इन्स्पेक्टर उठ खड़ा हुआ और कमरे में टहलने लगा।

नेख़्लूदोव के मन में मास्लोवा के प्रति तीव्र घृणा उठ रही थी। फिर भी उसने यही ठीक समझा कि सेनेट के निर्णय पर अपना अफ़सोस ज़ाहिर करे।

"तुम्हें निराश नहीं होना चाहिए," वह बोला, "क्या मालूम ज़ार के नाम दी गयी दरख़्वास्त का अच्छा परिणाम निकले। और मुझे आशा है..."

"मैं इसके बारे में नहीं सोच रही हूं," उसने दीनता भरी नज़र से नेख़्लूदोव की ओर देखते हुए कहा। उसकी ऐंची आंखें आंसुओं से भरी थीं।

"तो फिर क्या सोच रही थी?"

"तुम शायद अस्पताल गये होगे और वहां उन लोगों ने मेरे बारे में तुमसे कहा होगा कि..."

"तो क्या हुआ? यह तुम्हारा काम है," नेख़्लूदोव ने उपेक्षापूर्ण आवाज़ में कहा और उसकी त्योरियां चढ़ गई।

नेख़्लूदोव के आत्म-गौरव को धक्का लगा था, लेकिन अब तक वह चुप रहा था। जब मास्लोवा ने अस्पताल का नाम लिया तो वह भावना और अधिक क्रूरता के साथ उसके हृदय में भभक उठी। "आख़िर मेरी भी कोई हैसियत है। अच्छे से अच्छे घर की लड़की मेरे साथ ब्याह करना अपना फ़ख़र समझेगी। लेकिन मैंने इस औरत को अपनी पत्नी बनाने का प्रस्ताव किया। इधर यह है कि इन्तज़ार तक नहीं कर सकी और छोटे डाक्टर से आंखें लड़ाने लगी है।" यह सोच कर नेख़्लूदोव ने बड़ी नफ़रतभरी निगाह से मास्लोवा की ओर देखा।

"इस दरख़्वास्त पर दस्तख़त कर दो," नेख़्लूदोव ने जेब में से एक बड़ा सा लिफ़ाफ़ा निकाला, और दरख़्वास्त मास्लोवा के सामने रख दी। सिर पर बंधे रूमाल के एक कोने से मास्लोवा ने अपनी आंखें पोंछीं और पूछा कि कहां पर क्या लिखना है।

नेख़्लूदोव ने बताया। बायें हाथ से दायें बाज़ू की आस्तीन ठीक करते हुए मास्लोवा लिखने बैठी। नेख़्लूदोव उसके पीछे खड़ा चुपचाप उसकी पीठ की ओर देख रहा था जो अवरुद्ध रुदन के कारण कभी कभी कांप उठती थी। नेख़्लूदोव के मन में नेकी और बदी की भावनाओं के बीच संघर्ष उठ खड़ा हुआ। एक ओर आहत आत्माभिमान की भावना थी; दूसरी ओर इस दुखी स्त्री के प्रति अनुकम्पा की भावना। अन्त में अनुकम्पा की विजय हुई।

उसे याद नहीं था कि पहले क्या हुआ—उसके हृदय में दया की भावना पहले उठी या उसे अपने पाप पहले याद आये—वैसे ही घृणित कुकर्म जिनके लिए आज वह मास्लोवा को दोष दे रहा था? कुछ भी रहा हो, वह अपने को अपराधी महसूस करने लगा और उसके प्रति दयार्द्र हो उठा।

मास्लोवा ने दरख़्वास्त पर दस्तख़त किया, फिर अपनी अंगुली को, जिस पर स्याही लग गई थी, अपनी स्कर्ट के साथ पोंछ कर नेख़्लूदोव की ओर देखा।

"कुछ भी हो जाय, इस दरख़्वास्त का कुछ भी परिणाम निकले, मैं अपना निश्चय नहीं बदलूंगा," नेख़्लूदोव ने कहा।

यह सोच कर कि उसने मास्लोवा को क्षमा कर दिया है, उसका हृदय और भी अधिक अनुकम्पा और दयालुता से भर उठा। उसका मन चाहा कि उसे ढाढ़स बंधाये।

"मैं अपने कहे पर अमल करूंगा। वे लोग तुम्हें जहां कहीं भी ले गये, मैं तुम्हारे साथ जाऊंगा।"

"इसका क्या लाभ?" वह जल्दी से बीच में बोल उठी। लेकिन उसका चेहरा खिल गया।

"तुम मुझे सोच कर बताओ कि तुम्हें रास्ते के लिए क्या दरकार होगा।"

"मेरे ख़्याल में तो कुछ नहीं चाहिए। बहुत शुक्रिया।"

इन्स्पेक्टर उनके सामने आ खड़ा हुआ। पेश्तर इसके कि वह कुछ कहे, नेख्लूदोव ने विदा ली और बाहर निकल आया। उस समय उसका हृदय शान्ति, आह्लाद तथा सकल प्राणीमात्र के प्रति अकथनीय वात्सल्य से भर उठा था। ऐसा उसने पहले कभी महसूस नहीं किया था। इस विश्वास से कि मास्लोवा कुछ भी करे, उसके प्रति उसके प्रेम में रंचमात्र भी फ़रक़ नहीं आयेगा, उसका हृदय उल्लसित हो उठा। उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे वह ऊपर उठ आया हो और ऐसे स्तर पर खड़ा हो जिस स्तर पर वह पहले कभी नहीं पहुंच पाया था। उसका मन चाहे तो बेशक छोटे डाक्टर से आंखें लड़ाये। यह उसका अपना काम है। वह अपनी ख़ातिर मास्लोवा से प्रेम नहीं करता था, बल्कि उसकी, मास्लोवा की ख़ातिर, और भगवान् की ख़ातिर।

यह मामला क्या था, जिसके लिए मास्लोवा को अस्पताल में से बाहर निकाल दिया गया था, और जिसके बारे में नेख़्लूदोव को विश्वास था कि वह सचमुच दोषी है? मामला इस तरह हुआ—अस्पताल की बड़ी नर्स ने मास्लोवा को दवाईख़ाने से जड़ी-बूटियों की चाय लाने को कहा। यह दवाईख़ाना बरामदे के एक सिरे पर था। मास्लोवा गई, लेकिन वहां पर पहुंची तो वहां छोटे डाक्टर के अलावा और कोई भी मौजूद न था। छोटा डाक्टर क़द का ऊंचा-लम्बा आदमी था, और उसका चेहरा मुहासों से भरा था। यह आदमी बहुत दिनों से मास्लोवा को परेशान कर रहा था। वह फिर उसके पास आ धमका। उससे पीछा छुड़ाने के लिए मास्लोवा ने उसे इतने ज़ोर से धक्का दिया कि उसका सिर पीछे तख़्ते पर जा टकराया, और दवाई की दो बोतलें गिर कर टूट गयीं।

ऐन उसी वक़्त अस्पताल का बड़ा डाक्टर उधर से गुज़रा, और कांच टूटने की आवाज़ उसके कान में पड़ी। इधर मास्लोवा, घबराई हुई भाग कर बाहर निकली। उसे देखते ही डाक्टर ने गुस्से से पुकार कर कहा—

"भली औरत, अगर यहां पर भी तुमने बदकारियां शुरू कर दीं तो मैं कान पकड़ कर बाहर निकाल दूंगा... क्या बात हुई है?" अपने चश्मों के ऊपर से छोटे डाक्टर की ओर बड़ी कठोरता से देखते हुए उसने पूछा।

छोटा डाक्टर मुस्कराया और अपनी सफ़ाई देने लगा। डाक्टर ने उसकी बात की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, और सिर ऊंचा उठाये—और अब की बार ऐनकों के बीच में से देखते हुए—वार्ड के अन्दर चला गया।

इसी दिन उसने इन्स्पेक्टर को कह दिया कि मास्लोवा के स्थान पर किसी दूसरी सहायक नर्स को भेज दे जो ज़्यादा ठहरी हुई तबीयत की हो।

बस, यही वह "आंखें लड़ाना" था जो मास्लोवा का छोटे डाक्टर के साथ हुआ। मुद्दत से मास्लोवा के मन में पुरुषों से संभोग-सम्पर्क रखने के प्रति घिन उठने लगी थी। और नेख़्लूदोव से मिलने के बाद तो उसे यह और भी बुरा लगता था। इसलिए जब दुराचार का दोष लगा कर उसे बाहर निकाल दिया गया तो उसे बेहद दुख हुआ। वह सोचती कि हर किसी का ध्यान मेरे पिछले जीवन और वर्तमान स्थिति की ओर ही जाता है, और हर आदमी मेरा अपमान करना अपना हक़ समझता है। अगर मैं इन्कार कर दूं तो उसे अचम्भा होने लगता है। मुहासों का मारा यह छोटा डाक्टर भी यही समझता है। उसका हृदय तीव्र वेदना से भर उठता, उसे अपने आप पर तरस आने लगता और आंखों से झरझर आंसू बहने लगते। जब वह नेख़्लूदोव से मिलने आयी तो यह इरादा कर के कि मैं सारी बात उसे साफ़ साफ़ बता दूंगी ताकि उसे पता चल जाय कि मुझ पर झूठा इलज़ाम लगाया गया है। उसने ज़रूर इसके बारे में पहले से सुन रखा होगा। पर जब वह अपनी सफ़ाई देने लगी तो उसने देखा कि नेख़्लूदोव को उसकी बात पर विश्वास नहीं हो रहा, और अगर वह और दलीलें देती गई तो उसका संशय और भी पक्का होता जायेगा। इस पर उसे रुलाई आ गई, उसका गला रुंध गया और वह चुप हो गई।

मास्लोवा अब भी अपने मन को इस बात का भुलावा दिये जा रही थी कि उसने नेख़्लूदोव को क्षमा नहीं किया और उससे घृणा करती है। दूसरी बार जब नेख़्लूदोव उससे मिलने आया था तो उसने उसे कह भी दिया था। लेकिन सच तो यह था कि वह उसे फिर से प्रेम करने लगी थी। और इसी प्रेमवश वह अपने आप वही काम करने लगती जो नेख़्लूदोव चाहता था। उसने शराब, तंबाकू पीना छोड़ दिया, चुहलबाज़ी छोड़ दी। अस्पताल में भी इसी लिए काम करने लगी क्योंकि वह जानती थी कि नेख़्लूदोव को यह पसन्द है। लेकिन नेख़्लूदोव जब भी उससे शादी करने का ज़िक्र करता तो वह बड़ी दृढ़ता से इन्कार कर देती। इसका कारण यह था कि वह अपने वे गर्वीले शब्द दोहराना चाहती थी जो उसने पहली बार कहे थे। साथ ही वह यह भी जानती थी कि उसके साथ शादी कर के नेख़्लूदोव दुख ही पायेगा। उसने पक्का निश्चय कर लिया था कि नेख़्लूदोव

के आत्मबलिदान को स्वीकार नहीं करेगी। परन्तु यह देख कर कि नेख़्लूदोव उससे घृणा करता है, और अब भी उसे वही कुछ समझता है जो वह पहले थी, और उसमें जो परिवर्तन हुआ है उसे वह देख नहीं पाता मास्लोवा अत्यन्त दुखी हुई। सेनेट ने उसकी सज़ा पक्की कर दी, उसे यह जान कर इतना दुःख नहीं हुआ, जितना इस बात से कि नेख़्लूदोव शायद अब भी यही सोचता है कि अस्पताल की घटना में उसी का क़सूर था।

३०

संभव है मास्लोवा को क़ैदियों की पहली टोली के साथ ही साइबेरिया भेज दिया जाय, यह सोच कर नेख़्लूदोव ने अपनी रवानगी की तैयारी शुरू कर दी। परन्तु जाने से पहले उसे बहुत सा काम निबटाना था और उसने देख लिया कि सारा का सारा काम निबटाना असंभव है, चाहे जितना भी समय वह उसमें लगाये। पहले से अब स्थिति बहुत कुछ बदल गई थी। पहले उसे अपने लिए काम ढूंढ़ कर निकालने पड़ते थे और सभी कामों में एक ही व्यक्ति का हित अभीष्ट रहता था और वह था—द्मीत्री इवानोविच नेख़्लूदोव। जीवन की सभी रुचियां आत्मतुष्टि पर केन्द्रित थीं। परन्तु ऐसा होते हुए भी ये सब काम उसके लिए अत्यन्त बोझल और नीरस हो उठते थे। अब स्थिति यह थी कि उसके सभी कामों का सम्बन्ध, द्मीत्री इवानोविच से न रह कर, और लोगों से हो गया था। अब ये सभी काम रुचिकर और आकर्षक हो उठे थे, और गणना में इनका कोई अन्त न था।

इतना ही नहीं, पहले अपने कामों से नेख़्लूदोव के मन में खीज उठा करती थी और वह क्षुब्ध हो उठता था। अब उसे अपने कामों से ख़ुशी मिलती थी।

इस समय जो काम नेख़्लूदोव कर रहा था उन्हें तीन हिस्सों में बांटा जा सकता था। उसकी आदत थी कि छोटे से छोटा काम भी बड़ी बारीक़ी और नियमानुसार करता था। इसी आदतवश अब भी उसने स्वयं अपने कामों को यों बांट रखा था और तदनुसार, प्रत्येक काम से सम्बन्धित काग़ज़ों को भी तीन अलग अलग बस्तों में रखा था।

इनमें सबसे पहले काम का सम्बन्ध मास्लोवा से था। इसमें मुख्य काम ज़ार के नाम दी गई दरख़्वास्त के लिए सहायता प्राप्त करना था और साथ ही संभावित साइबेरिया-यात्रा के लिए तैयारी करना था।

दूसरा काम ज़मीन-जायदाद के मामलों की व्यवस्था से सम्बन्धित था। नेख़्लूदोव ने अपनी पानोवो वाली ज़मीन किसानों को इस शर्त पर दी थी कि जो रक़म वे लगान के रूप में देंगे उसे उन्हीं के सामूहिक हित के कामों पर ख़र्च किया ज़ायेगा। परन्तु एक क़ानूनी दस्तावेज़ द्वारा इस प्रवन्ध को पक्का करना ज़रूरी था। इसी के अनुसार उसे अपना दान-पत्र भी तैयार करना था। कुज़्मिंस्कोये में अब भी वही व्यवस्था थी जिसे उसने पहले चालू किया था, कि वह लगान वसूल करेगा। लेकिन इस सम्बन्ध में शर्तों का फ़ैसला अभी नहीं हुआ था। यह भी निश्चय करना बाक़ी था कि वसूली के रुपये में से कितनी रक़म वह अपने जीवन-निर्वाह के लिए निकाला करेगा और कितनी किसानों के हित के लिए अलग रख देगा। उसने सारी की सारी आय को छोड़ देने का अभी फ़ैसला नहीं किया था, क्योंकि उसे मालूम नहीं था कि साइबेरिया की यात्रा पर कितना ख़र्च होगा। लेकिन उसने इस आय में आधे की कमी कर देने का ज़रूर निश्चय कर लिया था।

तीसरे उन क़ैदियों की मदद करना था जिनकी ओर से उसे अधिकाधिक संख्या में दरख़्वास्तें आ रही थीं।

पहले पहल जब वह क़ैदियों से मिला और वे उससे मदद के लिए याचना करने लगे तो नेख़्लूदोव फ़ौरन् हर क़ैदी का काम करने के लिए चल पड़ता, ताकि उसके जीवन की कठिनाइयां कुछ कम हो सकें। लेकिन शीघ्र ही इतनी अधिक संख्या में दरख़्वास्तें आने लगीं कि उन सबकी ओर ध्यान देना उसकी सामर्थ्य से बाहर की बात हो गयी। इसी स्थिति के परिणामस्वरूप वह एक नये प्रकार के काम में हाथ लगाने लगा और इसमें उसकी रुचि उत्तरोत्तर बढ़ने लगी, यहां तक कि पहले सभी कामों में भी इतनी नहीं हो पायी थी।

यह नया काम था इन प्रश्नों का समाधान करना कि ज़ाब्ता फ़ौजदारी नाम की यह अनोखी संस्था वास्तव में है क्या जिसके कारण यह जेलख़ाना बना, जिसके बहुत से क़ैदियों के बारे में वह कुछ न कुछ जान गया था। यह जेलख़ाना ही नहीं, अन्य कितने ही ऐसे स्थानों के—पीटर्सबर्ग में स्थित

पीटर-पॉल के क़िले से लेकर सख़ालिन द्वीप तक जहां इस ज़ाब्ता फ़ौजदारी के शिकार, सैकड़ों-हज़ारों क़ैदी अपनी जान तोड़ रहे थे। उसे यह संस्था बड़ी विचित्र लगती थी। यह क्योंकर बनी? इसका उद्गम कहां से हुआ?

क़ैदियों के साथ उसका व्यक्तिगत सम्पर्क था। उसने क़ैदियों की फ़ेहरिस्तें देखी थीं। इस विषय पर वकील से, जेलख़ाने के पादरी तथा इन्स्पेक्टर से कई सवाल पूछे थे। इस तरह जितनी भी जानकारी उसे प्राप्त हुई थी उसके आधार पर वह इस नतीजे पर पहुंचा कि क़ैदियों को—तथाकथित मुजरिमों को—पांच श्रेणियों में बांटा जा सकता है।

पहली श्रेणी में वे मुजरिम शामिल थे जो सर्वथा निर्दोष थे, लेकिन जिन्हें अदालती भूलों के कारण सज़ा दे कर यहां बन्द कर रखा था। इन्हीं में मेन्शोव मां-बेटा, मास्लोवा तथा अन्य क़ैदियों की गणना की जा सकती थी। ऐसे क़ैदियों की संख्या बहुत नहीं थी—पादरी के अनुमानानुसार सात प्रतिशत से अधिक न होगी—लेकिन उनकी स्थिति विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करती थी।

दूसरी श्रेणी में वे क़ैदी आते थे जिन्होंने विशेष परिस्थितियों में जैसे उन्माद, ईर्ष्या या नशे की हालत में जुर्म किये थे। ऐसी परिस्थितियां थीं जिनमें वे न्यायाधीश भी ज़रूर जुर्म कर सकते थे जिन्होंने इन्हें सज़ा दे कर यहां डाल दिया था। अपने निरीक्षण के आधार पर नेख़्लूदोव कह सकता था कि कुल क़ैदियों में से ५० प्रतिशत इसी श्रेणी के अन्तर्गत आ जाता था।

तीसरी श्रेणी में वे क़ैदी शामिल थे जिन्होंने जुर्मों को जुर्म समझ कर नहीं किया, बल्कि यह समझ कर कि वे पूर्णतया स्वाभाविक तथा उचित काम थे। परन्तु क़ानून बनाने वालों की दृष्टि में उन्हें जुर्म समझा जाता था। इन क़ैदियों में ऐसे लोगों की गणना की जा सकती थी जो लाइसेंस के बिना शराब बना कर बेचते, बिना महसूल अदा किये, छिप-लुक कर माल बेचते, बड़ी बड़ी जागीरों तथा सरकारी जंगलों में से घास और लकड़ी काट लाते, पहाड़ों पर रहने वाले डाकू तथा ऐसे नास्तिक लोग जो गिरजों को लूटा करते हैं।

चौथी श्रेणी में वे क़ैदी शामिल थे जिन्हें केवल इसलिए जेल में डाल दिया गया था कि वे नैतिक दृष्टि से जनसाधारण से ऊंचे थे। इनमें धार्मिक सम्प्रदाई, पोलैंड तथा चेर्केसिया के देशभक्त शामिल थे जो अपने अपने

देश के लिए पुनः स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए विद्रोह कर रहे थे। इन्हीं में राजनीतिक क़ैदी, समाजवादी तथा हड़तालें करने वाले लोग शामिल थे। नेख़्लूदोव के निरीक्षण के आधार पर ऐसे व्यक्तियों की सख्या काफ़ी अधिक थी, इनमें कुछ तो ऐसे थे जिन्हें समाज के सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति कहा जा सकता है। इन लोगों को इसलिए सजा दी गई थी कि उन्होंने अधिकारियों का विरोध किया था।

पांचवीं श्रेणी उन लोगों की थी जिनके अपने पाप इतने बड़े नहीं थे जितने वे पाप जो समाज़ ने उन पर किये थे। ये वे लोग थे जिन्हें समाज ने ठुकरा दिया था, जो निरन्तर उत्पीड़न तथा प्रलोभन के चंगुल में उद्भ्रान्त से घूमते थे, जैसे वह लड़का जिसने चटाइयां चुरायी थीं। इस जैसे सैकड़ों लोगों को नेख़्लूदोव ने न केवल जेलख़ाने के अन्दर, वल्कि वाहर भी देखा था। जिन परिस्थितियों में ये लोग रहते थे वही उन्हें क्रमशः ऐसे काम करने पर वाध्य करती थीं जिन्हें जुर्म का नाम दिया जाता है। नेख़्लूदोव का अनुमान था कि इस श्रेणी में वहुत सी संख्या में चोर-चकार, हत्यारे इत्यादि शामिल हैं। इनमें से कुछेक हाल ही में उसके सम्पर्क में आये थे। इसी श्रेणी में वह उन लोगों की भी गणना करता था जिन्हें अपराध-शास्त्र की नयी प्रणाली के अनुसार पतित तथा आचार-भ्रष्ट व्यक्ति कहा जाता है। मुख्यतः इन्हीं लोगों की उपस्थिति का हवाला दे कर ही यह सावित करने की कोशिश की जाती थी कि ज़ाब्ता फ़ौजदारी तथा सज़ा आवश्यक हैं। नेख़्लूदोव का विचार था कि यही वे तथाकथित पतित, आचार-भ्रष्ट तथा विकार-ग्रस्त लोग हैं जो समाज के पापों का शिकार वनते हैं। केवल अन्तर इतना ही था कि उन पर सीधा अत्याचार करने के वजाय समाज ने इनके माता-पिताओं तथा पुरखाओं पर अत्याचार किये थे।

इस पांचवीं श्रेणी के लोगों में जिस आदमी ने विशेष तौर पर नेख़्लूदोव का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया, वह था ओख़ोतिन नाम का एक पुराना चोर। किसी वेश्या का अवैध वालक, यह आदमी सरायों में पल कर वड़ा हुआ था और तीस वर्ष की उम्र तक प्रत्यक्षतः इसे कोई ऐसा आदमी नहीं मिला था जिसके आचार-विचार किसी पुलिस के सिपाही से वेहतर हों। छोटी उम्र में ही वह चोरों के एक दल में जा मिला था। इस आदमी में हास्य-भावना कूट कूट कर भरी थी, और इसी कारण उसका व्यक्तित्व वेहद आकर्षक था। इस आदमी ने भी नेख़्लूदोव से मिल कर वीच-वचाव

की प्रार्थना की और सारा वक़्त वकीलों, जेलख़ाने, तथा लौकिक और अलौकिक, सभी प्रकार के नियमों का और स्वयं अपने आपका मज़ाक़ उड़ाता रहा। इसके अतिरिक्त फ़्योदोरोव नाम के एक दूसरे आदमी ने भी नेख़्लूदोव का ध्यान आकृष्ट किया। यह आदमी बेहद सुंदर था, डाकुओं के एक दल का सरदार था, और अपने दल के अन्य डाकुओं के साथ एक वयोवृद्ध सरकारी अफ़सर की हत्या कर चुका था। यह आदमी एक किसान का बेटा था, जिससे उसका घर बड़े अवैध ढंग से छीन लिया गया था। बाद में वह फ़ौज में भर्ती हो गया, और वहां पर भी अपने अफ़सर की रखैल के साथ प्रेम करने के कारण उसे बहुत कष्ट झेलने पड़े। यह आदमी स्वभाव से ही रसिक था। जीवन का आनन्द भोगने की इसमें उन्मत्त अभिलाषा थी। जीवन में उसे कभी कोई ऐसा आदमी नहीं मिला था जो आत्मनियन्त्रण में विश्वास रखता हो, न ही उसने कभी सुना था कि जीवन में आनन्दभोग के अलावा कोई दूसरा उद्देश्य भी हो सकता है। जिस भांति पौधों की देखभाल न करने से वे गल-सड़ जाते हैं, उसी भांति ये व्यक्ति भी उपेक्षा के कारण पंगु बन गये थे, हालांकि प्रकृति ने इन्हें बड़ी योग्यता दे कर भेजा था। नेख़्लूदोव की भेंट एक आवारा आदमी से भी हुई और उसी जैसी एक औरत से भी। दोनों परले दर्जे के जड़-बुद्धि और देखने में क्रूर थे—यहां तक कि नेख़्लूदोव को उनसे घृणा होने लगी थी। पर इनमें भी उसे ऐसे कोई लक्षण नज़र नहीं आये जिन्हें देख कर वह कह सकता कि वे "स्वभाव से ही अपराधी" हैं, और इस तरह इतालवी चिन्तकों के मत का समर्थन कर पाता। उसे वे केवल व्यक्तिगत रूप से घृणास्पद लगे उसी तरह जिस तरह जेल से बाहर अपने मिलने वालों में उसे वे आदमी घृणास्पद लगते थे, जो दुमदार बढ़िया कोट पहने, कन्धों पर झब्बे लगाये, और गोटा-किनारी से सजे घूमते थे।

क्या कारण है कि विभिन्न प्रकार के इन व्यक्तियों को तो जेल में डाल दिया गया है, और इन जैसे ही अन्य लोग बाहर स्वतन्त्र घूमते रहते हैं, स्वतन्त्र ही नहीं, इनके ऊपर न्यायाधीश बन कर बैठते हैं? नेख़्लूदोव इनकी तह में छिपे कारणों की खोज करना चाहता था। यह चौथा काम था जिसे उसने अपने ऊपर ले रखा था।

उसे आशा थी कि इस प्रश्न का उत्तर उसे पुस्तकों में मिल जायेगा। अतः इस विषय पर जितनी भी किताबें उसे मिल सकीं, वह ख़रीद लाया।

लोम्ब्रोसो, गेरोफ़ालो, फ़ेरीं, लिस्त, मॉड्स्ले, तार्दे, इत्यादि लेखकों के ग्रन्थ वह उठा लाया और बड़े ध्यान से उन्हें पढ़ने लगा। पर जितना ही अधिक वह उन्हें पढ़ता, उतना ही अधिक निराश हो उठता। वह इन वैज्ञानिक पुस्तकों को इसलिए नहीं पढ़ रहा था कि वह ख़ुद विज्ञान में कोई भूमिका अदा करना चाहता था: कुछ लिखना चाहता था, या वाद-विवाद करना चाहता था, या किसी को सिखाना चाहता था। वह तो केवल रोज़मर्रा के जीवन से सम्बन्धित एक साधारण से प्रश्न का उत्तर खोज रहा था। इसी कारण उसे निराशा भी हुई। विज्ञान से ज़ाब्ता फ़ौजदारी से सम्बन्ध रखने वाले हज़ारों अन्य प्रश्नों के उत्तर मिल सकते हैं, जो अपने में बड़े जटिल और बारीक हैं, परन्तु जिस प्रश्न का उत्तर ढूंढ़ने की वह कोशिश कर रहा था वह उसे नहीं मिला।

प्रश्न बड़ा सीधा-सादा था: क्या कारण है, कि कुछ लोग अन्य लोगों को जेल में ठूंसते हैं, उन्हें यन्त्रणाएं पहुंचाते हैं, कोड़े लगाते हैं, उन्हें मौत के घाट उतारते हैं, जब कि वे स्वयं उन जैसे ही होते हैं? उन्हें ऐसा करने का क्या अधिकार है? जवाब में उसे लम्बे लम्बे प्रबन्ध पढ़ने को मिलते कि मनुष्य में संकल्प-स्वातन्त्र्य है या नहीं। मनुष्य की खोपड़ी को अगर मापें तो क्या पता चल सकता है कि अमुक व्यक्ति अपराधी है? अपराध में वंशानुगत गुणों का क्या हाथ होता है? क्या दुराचार की प्रवृत्ति वंशानुगत हो सकती है? नैतिकता किसे कहते हैं? पागलपन क्या होता है? अध:पतन क्या है? स्वभाव की क्या परिभाषा है? किस भांति जलवायु, ख़ुराक, अज्ञानता, नक़ल करने की इच्छा, सम्मोहन अथवा उन्माद से अपराध करने की प्रेरणा मिलती है? समाज और उसके कर्तव्य क्या हैं? इत्यादि।

इन प्रबन्धों को पढ़ते हुए नेख़्लूदोव को एक छोटे से बालक की बात याद आ गई। एक बार एक छोटा सा लड़का स्कूल से घर लौट रहा था जब रास्ते में नेख़्लूदोव की उससे भेंट हो गई। नेख़्लूदोव ने उससे पूछा कि क्या तुमने हिज्जे करना सीख लिया है? "हां, कर सकता हूं," लड़के ने जवाब दिया। "अच्छा बताओ तो, 'टांग' के हिज्जे क्या हैं?" "किसकी टांग के, कुत्ते की टांग के?" शरारत भरी नज़र से नेख़्लूदोव की ओर देखते हुए उसने पूछा। बस, अपने बुनियादी सवाल के जवाब में इन वैज्ञानिक पुस्तकों से इसी तरह के उत्तर, प्रश्नों के रूप में नेख़्लूदोव को मिले।

इनमें बेशक बहुत सी ऐसी बातें थीं जो विवेकपूर्ण, विद्वत्तापूर्ण तथा रोचक थीं। लेकिन मुख्य प्रश्न का उत्तर कि "कुछ लोगों को अन्य लोगों को सज़ा देने का क्यों अधिकार प्राप्त है?" इस प्रश्न का उत्तर उसे नहीं मिला। न केवल इसका उत्तर ही नहीं मिला, बल्कि जितने भी तर्क उसे पढ़ने को मिले वे सभी सज़ा के हक़ में सफ़ाई देने और उसे न्यायसंगत बताने के लिए दिये गये थे। सज़ा की आवश्यकता को तो स्वत:सिद्ध माना गया था।

नेख़्लूदोव ने बहुत कुछ पढ़ा, लेकिन थोड़ा थोड़ा और अंश अंश कर के, और अपनी असफलता का कारण भी वह यही समझा कि ऊपरी ढंग से पढ़ता रहा है। उसे आशा थी कि बाद में उसे अपने प्रश्न का उत्तर मिल जायेगा, यही कारण था कि जो उत्तर उसे दिन प्रतिदिन नज़र आने लगा था, उसकी सत्यता में विश्वास करने से वह हिचकिचा रहा था।

३१

सजायाफ़्ता मुजरिमों की जिस टोली के साथ मास्लोवा को जाना था, उसे ५ जुलाई को रवाना हो जाना था। नेख़्लूदोव ने भी उसी दिन चल पड़ने की तैयारी कर ली।

उससे एक दिन पहले नेख़्लूदोव की बहिन, अपने पति के साथ, शहर में उसे मिलने आ पहुंची।

नेख़्लूदोव की बहिन, नताल्या इवानोव्ना रागोजिन्स्काया, अपने भाई से दस साल बड़ी थी। बचपन में किसी हद तक उसी के प्रभाव के नीचे वह बड़ा हुआ था। बहिन को अपने छोटे भाई से बड़ा प्यार था, और बाद में, जब वह बड़ा हुआ तो वे एक दूसरे के और भी निकट आ गये मानो वे एक-समान हों। यह बहिन की शादी से पहले की बात है। बहिन की उम्र पचीस की थी और भाई पंद्रह साल का था। उन दिनों नेख़्लूदोव का एक मित्र हुआ करता था जिसका नाम था निकोलेंका इर्तेनेव। बहिन का उससे प्रेम हो गया था। लेकिन यह लड़का मर गया। दोनों निकोलेंका को बड़ा चाहते थे। निकोलेंका में, तथा एक दूसरे में उन्हें जो अच्छाई नज़र आती थी उससे वे प्रेम करते थे। इस अच्छाई से प्रेम ही मनुष्यों को एक दूसरे से मिलाता है।

परन्तु उसके बाद दोनों ही चरित्रहीन हो गये थे। नेख़्लूदोव फ़ौज में चला गया और वहां भ्रष्टाचार में डूब गया; बहिन ने विषय भोग की लालसा से प्रेरित हो कर एक ऐसे आदमी से शादी कर ली जिसे नैतिक श्रेष्ठता तथा लोक-सेवा जैसी महत्वाकांक्षाओं में कोई रुचि न थी और न ही वह उनका मूल्य जानता था। किसी ज़माने में यही भावनाएं उसे और उसके भाई को अत्यन्त प्रिय थीं, और वे इन्हें पवित्र मानते थे। लेकिन उसका पति यह समझता था कि ये केवल दिखावे के लिए तथा समाज में आगे बढ़ने की उत्कट आकांक्षा से प्रेरित हैं। उनकी यही एक व्याख्या उसकी समझ में आ सकती थी।

नताल्या के पति के पास न तो धन-दौलत थी, और न ही उसे कोई जानता था। लेकिन अपने काम में वह बड़ा चतुर और सधा हुआ आदमी था। हवा का रुख़ पहचानता था। उदारवाद और रूढ़िवाद, दोनों में से देख लेता था कि किस प्रवृत्ति का पक्ष किस समय और किस अवसर पर लेना चाहिए, और इस तरह बड़ी सफ़ाई से अपना उल्लू सीधा कर लेता था। साथ ही स्त्रियों को वश में करने का उसमें विशेष आकर्षण था। इस तरह वह काफ़ी हद तक कामयाब वकील बन गया था। नेख़्लूदोव से उसका परिचय विदेश में हुआ। तब वह यौवन पार कर चुका था। नताल्या पर उसने ऐसे डोरे डाले कि वह उस पर मुग्ध हो उठी। नताल्या की अपनी उम्र भी उस समय काफ़ी ज़्यादा हो चुकी थी। इस तरह दोनों की शादी हुई, हालांकि इस विवाह का नताल्या की मां ने विरोध किया क्योंकि वह समझती थी कि यह mésalliance* है। नेख़्लूदोव को अपने बहनोई से नफ़रत थी, हालांकि इस भावना को वह अपने आपसे भी छिपाता रहता था और उसे मन में से निकालने का भरसक प्रयत्न करता रहता था।

रागोजिन्स्की बड़ी नीच प्रकृति का आदमी था। कुछ इस कारण और कुछ उसकी दंभपूर्ण संकीर्णता के कारण, नेख़्लूदोव को उससे घृणा हो गई थी। पर घृणा का मुख्य कारण स्वयं उसकी बहिन नताल्या थी। नेख़्लूदोव समझ नहीं पा रहा था कि उसकी बहिन, यह जानते हुए भी कि उसका पति संकीर्ण प्रकृति का आदमी है, क्योंकर उसके पीछे उन्मत्त हो उठी है, और क्योंकर उसका प्रेम इतना स्वार्थी और इतना पाशविक हो उठा है। उसकी

---

* बेमेल विवाह (फ़्रेंच)

ख़ातिर वह अपनी आन्तरिक श्रेष्ठता का गला घोंट रही थी। रागोजिन्स्की की चांद ऊपर से गंजी हो रही थी और वदन पर वाल ही वाल थे। यह सोच कर ही कि उसकी वहिन इस दंभी आदमी की पत्नी है, उसका हृदय क्षुव्ध हो उठता। यहां तक कि जव उनके वाल-बच्चे हुए तो वह उनसे भी घृणा किये विना नहीं रह सका। और हर वार जव उसे मालूम होता कि उसकी वहिन के फिर बच्चा होने वाला है तो उसका हृदय शोकाकुल हो उठता। उसे ऐसा जान पड़ता जैसे फिर एक बार इस ग़ैर आदमी ने उसकी वहिन को छूत की बीमारी दे दी है।

रागोजिन्स्की दम्पती अकेले मास्को आये थे। अपने दोनों बच्चों–एक लड़का और एक लड़की–को वे घर छोड़ आये थे। मास्को में वे सवसे वढ़िया होटल में आ कर ठहरे। पहुंचते ही नताल्या अपनी मां के पुराने घर की ओर चल पड़ी। लेकिन वहां उसे आग्राफ़ेना पेत्रोव्ना से पता चला कि उसका भाई घर छोड़ गया है और किराये पर कमरे ले कर रह रहा है। इस पर, गाड़ी में वैठ वह उस ओर चल दी। एक अन्धेरे, घुटन भरे वरामदे में जिसमें एक लैम्प दिन भर टिमटिमाता रहता था उसे एक मैला-कुचैला नौकर मिला। उससे उसे पता चला कि प्रिंस घर पर नहीं है।

नताल्या ने भाई के कमरे देखने की इच्छा प्रकट की और कहा कि वह उसके लिए एक चिट्ठी लिख कर छोड़ जाना चाहती है। नौकर उसे नेख़्लूदोव के कमरों में लिवा ले गया।

दो छोटे छोटे कमरों में उसका भाई रहता था। नताल्या ने बड़े ध्यान से उनमें रखी एक एक चीज़ को देखा। हर चीज़ साफ़-सुथरी और क़रीने से रखी थी। नताल्या जानती थी कि उसके भाई को स्वच्छता और व्यवस्था से विशेप प्रेम है। लेकिन जिस चीज़ ने सवसे अधिक उसे प्रभावित किया वह एक प्रकार की अनूठी सादगी थी, जिसकी झलक हर चीज़ में मिलती थी। लिखने के मेज़ पर वही पुराना काग़ज़-दाव रखा था जिसे वह अच्छी तरह जानती थी, जिसके ऊपर कांसे का कुत्ता वना हुआ था। लिखने का सामान तथा वस्ते उसी तरह, सुपरिचित व्यवस्था के साथ रखे थे। फ़्रांसीसी भाषा में लिखी, तार्द की एक किताव में उसका जाना-पहचाना हाथी दांत का लम्बा, तिरछी नोक वाला चाकू निशानी के तौर पर रखा था। इसी पुस्तक के साथ दण्ड के विपय पर वहुत सी कितावें रखी थीं, और हैनरी जार्ज की एक अंग्रेज़ी पुस्तक भी थी।

मेज़ के सामने बैठ कर उसने भाई को पत्र लिखा कि आज ही मुझे मिलने के लिए आओ, भूलना नहीं। फिर कमरों को एक नज़र से देख कर, आश्चर्य से सिर हिलाती हुई, वह अपने होटल वापस चली गई।

अपने भाई के सम्बन्ध में नताल्या का ध्यान इस समय दो प्रश्नों पर केन्द्रित था, एक तो कात्यूशा के साथ उसके विवाह के प्रश्न पर। इसकी ख़बर उसे अपने शहर में मिल गई थी—सभी लोग इसकी चर्चा करने लगे थे। दूसरा, किसानों को अपनी ज़मीन दे देने के बारे में। इसकी भी चर्चा लोगों में चल रही थी, और कई लोगों को इसमें राजनीति की गन्ध आती थी, और इसलिए वे इसे बड़ी ख़तरनाक हरकत समझते थे। कात्यूशा के साथ उसके शादी करने पर तो वह एक तरह से ख़ुश थी। इससे नेख़्लूदोव की जिस दृढ़ता का पता चलता था, वह भाई-बहिन दोनों के आचार में पाई जाती थी, विशेषकर उन हंसी-ख़ुशी के दिनों में जब अभी नताल्या का ब्याह नहीं हुआ था। परन्तु जब वह कात्यूशा के बारे में सोचती तो उसका मन सिहर उठता, कि भाई कैसी भयानक औरत से शादी करने जा रहा है। इन दोनों भावनाओं में से पिछली भावना अधिक प्रबल थी, और उसने निश्चय कर लिया कि भाई को इस ब्याह से दूर रखने के लिए वह एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा देगी, हालांकि मन ही मन वह जानती थी कि इसमें सफलता प्राप्त करना आसान नहीं होगा।

जहां तक दूसरे मामले का सवाल था—किसानों को ज़मीन देने का—नताल्या ने इसकी बहुत परवाह नहीं की। परन्तु उसके पति को यह बहुत बुरा लगा था और वह चाहता था कि उसकी पत्नी अपने भाई को यह क़दम उठाने से रोके। रागोजिन्स्की का कहना था कि इस हरकत से नेख़्लूदोव की अस्थिरता, सनकीपन और दंभ का पता चलता है, कि वह यह काम दिखावे के लिए कर रहा है, ताकि लोग उसकी चर्चा करें और कहें कि देखो कितना असाधारण आदमी है।

"इसमें क्या तुक है कि ज़मीन किसानों को इस शर्त पर दी जाय कि वे लगान की अदायगी ख़ुद को करें?" उसने कहा। "अगर वह ज़मीन देना चाहता ही है तो किसान बैंक की मार्फ़त उनको बेच ही क्यों नहीं देता? इसका तो कुछ मतलब भी होता। इससे तो पता चलता है कि वह सचमुच नीम-पागल हो गया है।"

अब रागोजिन्स्की बड़ी संजीदगी के साथ यह सोचने लगा था कि उसे

नेख़्लूदोव का अभिभावक बन जाना चाहिए, और इसलिए अपनी पत्नी से अपेक्षा करता था कि वह अपने भाई से इस विचित्र योजना के बारे में पूरी गंभीरता से बात करे।

३२

शाम को घर लौटने पर जब नेख़्लूदोव को अपनी बहिन की चिट्ठी मिली तो वह उसी वक़्त उसे मिलने चल पड़ा। जब से मां की मृत्यु हुई थी वे एक दूसरे से नहीं मिले थे। नताल्या कमरे में अकेली बैठी थी, उसका पति बग़ल वाले कमरे में आराम कर रहा था। नताल्या ने काले रंग की चुस्त रेशमी पोशाक पहन रखी थी, और गले पर लाल "बो" लगा रखी थी। उसके बाल काले थे और नये से नये फ़ैशन के मुताबिक कुण्डल बना कर काढ़े हुए थे। उम्र में वह अपने पति जितनी थी। इसलिए साफ़ दिख रहा था कि उसे ख़ुश रखने के लिए वह बन-संवर कर रहने की अत्यधिक कोशिश करती है।

भाई को देखते ही वह उछल कर खड़ी हो गई और भाग कर उसे मिलने के लिए आगे बढ़ आई। उसकी रेशमी पोशाक सरसरा उठी। दोनों ने एक दूसरे को चूमा और मुस्करा कर एक दूसरे की ओर देखते रहे। इस रहस्यपूर्ण नज़र में एक ऐसा तत्व, एक ऐसी सचाई छिपी थी जो बयान से बाहर है। इसके बाद होंठों पर शब्द आये, परन्तु इनमें वैसी सचाई न थी।

"तुम तो पहले से भी अधिक स्वस्थ और छोटी नज़र आती हो!" नेख़्लूदोव ने कहा।

ख़ुशी से बहिन ने होंठ सिकोड़े।

"तुम कुछ दुबले हो गये हो।"

"और सुनाओ, तुम्हारे पति कैसे हैं?" नेख़्लूदोव ने पूछा।

"वह आराम कर रहे हैं। रात भर सो नहीं पाये।"

कहने को कितना कुछ था। पर दिल की बात होंठों पर नहीं आ पाती थी। लेकिन आंखों ही आंखों से वे बहुत कुछ एक दूसरे को कह रहे थे।

"मैं तुम्हारे यहां गई थी।"

"हां, मुझे मालूम है। मैंने अपना घर छोड़ दिया क्योंकि मेरे लिए वह बहुत बड़ा था। मैं बिल्कुल अकेला वहां रहता था, और मुझे बड़ी ऊब उठती थी। वहां जो कुछ भी रखा है, अब मेरे किसी काम का नहीं। तुम सब ले लो, मेरा मतलब है, फ़र्नीचर और ऐसी चीज़ें।"

"हां, आग्राफ़ेना पेत्रोव्ना ने मुझसे कहा था। मैं वहां गई थी। शुक्रिया, लेकिन..."

उसी वक़्त होटल का बेरा चांदी के सैट में चाय ले कर आया।

जितनी देर वह मेज़ पर चाय लगाता रहा, दोनों चुप रहे। उसके चले जाने के बाद नताल्या मेज़ पर गई और चुपचाप चाय बनाने लगी। नेख़्लूदोव भी चुप था।

आख़िर नताल्या ने दृढ़ता से बात शुरू की—

"द्मीत्री, मुझे सारी बात का पता चल गया है।" कह कर वह उसके चेहरे की ओर देखने लगी।

"तो क्या हुआ? मुझे इस बात की ख़ुशी है कि तुम्हें पता चल गया है।"

"उसका जैसा जीवन रहा है, क्या उसके बाद भी तुम उसे सुधारने की आशा करते हो?" उसने पूछा।

नेख़्लूदोव छोटी सी कुर्सी पर सीधा बैठा था, और बड़े ध्यान से अपनी बहिन की बात सुन रहा था, ताकि उसे ठीक ठीक समझ सके और उसका ठीक ठीक उत्तर दे सके। मास्लोवा से आख़िरी मुलाक़ात के बाद उसका मन शान्त और आह्लादपूर्ण हो उठा था, और सकल प्राणीमात्र के प्रति सद्भावना से भर उठा था। वह मनःस्थिति अभी तक बनी हुई थी।

"मैं उसका नहीं, अपना सुधार करना चाहता हूं," उसने जवाब दिया।

नताल्या ने उसांस भरी।

"तो यह शादी के बिना भी किया जा सकता है।"

"पर मेरे विचार में शादी सबसे अच्छा तरीक़ा है। इसके अलावा, मैं ऐसे लोगों के बीच रहने लगूंगा जिनकी मैं कुछ सेवा कर सकता हूं।"

"मुझे विश्वास है कि इससे तुम्हें सुख नहीं मिलेगा," नताल्या ने कहा।

"मेरे सुख का यहां कोई सवाल ही पैदा नहीं होता।"

"बेशक, लेकिन यदि उस औरत के सीने में दिल है, तो वह सुखी नहीं हो सकती। वह इसकी इच्छा तक नहीं कर सकती।"

"वह शादी करना नहीं चाहती।"

"मैं समझ सकती हूं। परन्तु जीवन..."

"हां तो, जीवन?"

"जीवन की कुछ और ही मांग होती है।"

"जीवन की एक ही मांग होती है और वह यह कि हम ठीक काम करें," नताल्या के चेहरे की ओर देखते हुए नेख़्लूदोव ने कहा। नताल्या का चेहरा अब भी ख़ूबसूरत था, हां, आंखों और मुंह के आस-पास हल्की हल्की रेखाएं पड़ने लगी थीं।

"मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझी," उसने उसांस भरते हुए कहा।

"हाय, यह मेरी प्यारी बहिन कितनी बदल गई है," नेख़्लूदोव सोच रहा था। उसे वे दिन याद आ गये जब अभी नताल्या की शादी नहीं हुई थी। तब यह कैसी हुआ करती थी। उसका दिल मधुर भावनाओं से भर उठा जिसमें बचपन की कितनी ही स्मृतियां गुंथी थीं।

उसी वक़्त रागोजिन्स्की ने कमरे में प्रवेश किया। छाती फुलाए, सिर पीछे को फेंके हुए वह अपनी आदत के मुताबिक़ हल्के हल्के, और धीमे धीमे क़दम रखता हुआ चला आ रहा था। उसकी आंखें, चश्मा, गंजी चांद, स्याह दाढ़ी, सभी चमक रहे थे।

"कहो भाई मिज़ाज तो अच्छा है?" "मिज़ाज तो अच्छा है?" शब्दों पर विशेष बल देते हुए उसने कहा।

दोनों ने हाथ मिलाये। बिना किसी क़िस्म की आहट किये रागोजिन्स्की आराम-कुर्सी में धंस कर बैठ गया।

"मैं आप लोगों की बातों में ख़लल तो नहीं डाल रहा हूं?"

"नहीं, मैं किसी से भी छिपा कर कुछ कहना या करना नहीं चाहता।"

नेख़्लूदोव की नज़र उसके हाथों पर गई जिन पर बहुत अधिक बाल उग रहे थे। साथ ही कानों में उसकी कृपालुता और दंभपूर्ण आवाज़ पड़ी। उसी क्षण नेख़्लूदोव का दब्बूपन जाता रहा।

"हां, हम यही बातें कर रहे थे कि भाई क्या करना चाहता है," नताल्या बोली, "आप चाय लेंगे न?" चायदानी पर हाथ रखते हुए उसने पूछा।

"हां। कौन सी ख़ास बात यह करना चाहते हैं?"

"मेरा इरादा क़ैदियों की एक टोली के साथ साइवेरिया जाने का है। इस टोली में एक औरत है जिसके साथ मैंने वड़ा अन्याय किया है," नेख़्लूदोव ने कहा।

"मैंने तो कुछ और भी सुना है। तुम उसके साथ जाना ही नहीं चाहते हो बल्कि कुछ और भी करने का इरादा रखते हो।"

"हां, यदि उसकी इच्छा हुई तो उसके साथ शादी भी करूंगा।"

"ख़ूब! लेकिन अगर वुरा न मानो तो क्या मैं इसका कारण जान सकता हूं? मेरी समझ में यह वात वैठ नहीं रही है।"

"कारण यही है कि इस स्त्री... इस स्त्री का अधःपतन जव शुरू हुआ..." नेख़्लूदोव को उपयुक्त शब्द नहीं मिल रहे थे, और उसे अपने आप पर ग़ुस्सा आ रहा था, "कारण यह है कि वास्तव में अपराधी मैं हूं, लेकिन सज़ा उसे दी जा रही है।"

"यदि उसे सज़ा दी जा रही है तो वह भी निर्दोष नहीं हो सकती।"

"वह बिल्कुल निर्दोष है।"

और नेख़्लूदोव ने अनावश्यक उत्तेजना के साथ सारा क़िस्सा कह सुनाया।

"हां, प्रधान जज ने इस मामले में लापरवाही की, और नतीजा यह हुआ कि जूरी ने भी उलटा-सीधा जवाव दे दिया। पर इस क़िस्म के मामले सेनेट तक ले जाये जा सकते हैं।"

"सेनेट ने अपील ख़ारिज कर दी है।"

"अगर सेनेट ने अपील ख़ारिज कर दी है तो ज़ाहिर है अपील कमज़ोर होगी।" प्रत्यक्षतः और लोगों की तरह रागोजिन्स्की का भी यही मत था कि सचाई का जन्म अदालती फ़ैसलों से होता है। "सेनेट का काम मुक़द्दमे के गुण-दोष पर विचार करना नहीं है। अगर सचमुच कोई भूल हुई है तो ज़ार के सामने दरख़्वास्त देनी चाहिए।"

"दरख़्वास्त दी गई है लेकिन सफलता की कोई आशा नहीं। वे लोग मन्त्रालय से पूछेंगे और वे लोग सेनेट से पूछेंगे और सेनेट अपना निर्णय दोहरा देगा, और जैसा हमेशा होता है, निरपराध लोगों को सज़ा मिल जायेगी।"

"पहली वात तो यह कि मन्त्रालय वाले सेनेट की सलाह नहीं लेंगे,"

कृपालुता भरी मुस्कराहट के साथ रागोजिन्स्की ने कहा। "वे अदालत से असल काग़ज़ात मंगवाने का हुक्म देंगे, और अगर देखेंगे कि सचमुच भूल हुई है तो वह उसी के अनुसार अपना फ़ैसला देंगे। दूसरी बात यह कि निर्दोष लोगों को कभी भी सज़ा नहीं दी जाती। या मिलती भी है तो बहुत ही विरले, किसी विशेष स्थिति में। हमेशा अपराधियों को सज़ा दी जाती है," रागोजिन्स्की ने ज़ोर दे कर कहा और उसके होंठों पर आत्मतुष्टि की मुस्कान खेलने लगी।

"और मैं पक्की तरह से जानता हूं कि बात इसके बिल्कुल उलट है," नेख़्लूदोव ने कहा। उसके हृदय में अपने बहनोई के प्रति द्वेष की भावना उठ रही थी। "मुझे यक़ीन है कि जितने लोगों को सज़ा मिलती है, उनमें से अधिकांश निर्दोष होते हैं।"

"किन मानों में निर्दोष होते हैं?"

"इस शब्द के असल मानों में। जिस तरह इस औरत ने किसी को ज़हर नहीं दिया और निर्दोष है, उसी तरह वे भी निर्दोष होते हैं। जिस तरह उस किसान ने, जिसे मैं अभी अभी मिला हूं, किसी की हत्या नहीं की और निर्दोष है, उसी तरह वे भी निर्दोष होते हैं। एक मां और बेटे को आग लगाने के जुर्म में सज़ा मिलने जा रही है। सच यह है कि आग घर के मालिक ने ख़ुद लगाई। जिस तरह इन लोगों का कोई दोष नहीं, वे लोग भी निर्दोष होते हैं।"

"इसमें क्या है, अदालतों में हमेशा ग़लतियां होती रहती हैं और होती रहेंगी। हुआ क्या, आख़िर इन्सान ही इन संस्थाओं में काम करते हैं, ये पूर्णतया निर्दोष कैसे हो सकती हैं।"

"यही नहीं, बहुत से ऐसे लोगों को सज़ा दी जाती है जिन्होंने अनजाने में जुर्म किये होते हैं। दरअसल जिन लोगों के बीच वे रहते हैं, उनमें ऐसे कामों को बुरा नहीं समझा जाता।"

"माफ़ करना यह तुम बिल्कुल ग़लत बात कह रहे हो। चोर को अच्छी तरह मालूम होता है कि चोरी करना बुरा है, कि हमें चोरी नहीं करना चाहिए, यह पाप है," रागोजिन्स्की ने कहा। उसके होंठों पर वही पहले सी शान्त, दंभपूर्ण, कुछ कुछ घृणा भरी मुस्कान आई, जो ख़ास तौर पर नेख़्लूदोव को बुरी लगी। वह खीज उठा।

"नहीं, वह नहीं जानता। उसे कहा जाता है 'चोरी मत करो' लेकिन

वह देखता है कि फ़ैक्टरी का मालिक उसे कम पगार दे कर उसकी मेहनत चुराता है। सरकार, सारा वक़्त तरह तरह के टैक्स लगा कर, अपने अफ़सरों द्वारा उसका धन चुराती रहती है।"

"यह तो अराजकतावाद है," रागोजिन्स्की ने उसी तरह धीमी आवाज़ में अपने साले के शब्दों को व्याख्यावद्ध करते हुए कहा।

"मैं नहीं जानता इसे क्या कहते हैं, मैं तो इतना जानता हूं कि होता क्या है," नेख़्लूदोव कहता गया। "उसे मालूम है कि सरकार उसका धन लूट लेती है। वह जानता है कि हम ज़मींदार लोग उसे मुद्दत से लूट रहे हैं, हमने उसकी ज़मीन चुरा ली है, वह ज़मीन जिसे सबकी साझी मिल्कियत होना चाहिए। अगर बाद में, उसी ज़मीन पर से जो हथिया ली गई है अगर वह कभी लकड़ी की खपच्चियां और टुकड़े बटोर कर ले आता है ताकि उनसे आग जला सके तो उसे जेल में डाल दिया जाता है, और उसे समझाने की कोशिश की जाती है कि वह चोर है। वह बेशक जानता है कि वह चोर नहीं है, कि वास्तव में वे लोग चोर हैं जिन्होंने उसकी ज़मीन उससे लूट ली है। अगर वह अपनी ही ज़मीन पर से कुछ उठा कर ले आता है तो यह उसका अपने परिवार के प्रति कर्तव्य है।"

"मैं तुम्हारी बात नहीं समझ सकता। और यदि समझता भी हूं तो उससे सहमत नहीं हो सकता। ज़मीन का कोई तो मालिक होगा? अगर तुम उसे बांट दो..." रागोजीन्स्की ने धीमे धीमे कहना शुरू किया। उसे विश्वास था कि नेख़्लूदोव समाजवादी है, और समाजवाद के अनुसार ज़मीन का समान रूप से बटवारा किया जाता है। और ऐसा करना निपट मूर्खता होगी। इसे वह बड़ी आसानी से साबित कर सकता है। "आज अगर तुम ज़मीन को बराबर बराबर हिस्सों में बांट भी दो तो कल फिर ज़मीन उन लोगों के हाथ में चली जायेगी जो सबसे अधिक मेहनती तथा कुशल हैं।"

"ज़मीन को बराबर हिस्सों में बांटने की बात कोई नहीं सोच रहा है। ज़मीन किसी की भी मिल्कियत नहीं होनी चाहिए। यह ऐसी चीज़ नहीं है जिसे बेचा या ख़रीदा जाय या लगान पर दिया जाय।"

"सम्पत्ति का अधिकार मनुष्य का जन्मजात अधिकार है। अगर यह न होगा तो खेती करने की प्रेरणा ही न रहेगी। सम्पत्ति अधिकार को आप हटा दें तो हम फिर बर्बरता के स्तर पर जा पहुंचेंगे," बड़े अधिकारपूर्ण

स्वर में रागोजिन्स्की ने कहा। भूमि के निजी स्वामित्व के पक्ष में यही तर्क बार बार दिया जाता है। और समझा जाता है कि यह अकाट्य तर्क है। यह तर्क इस अनुमान पर आधारित है कि चूंकि मनुष्य में सम्पत्ति ग्रहण करने की इच्छा होती है इसलिए यह साबित हुआ कि मनुष्य को सम्पत्ति ग्रहण करने का अधिकार है।

"नहीं नहीं, बल्कि स्थिति इसके उलट होगी। जब ज़मीन किसी की मिल्कियत में नहीं रहेगी तो वह ख़ाली भी नहीं रहेगी, जैसे कि आजकल पड़ी रहती है। ज़मींदार लोग ख़ुद तो काश्त करना जानते नहीं, जो लोग जानते हैं उन्हें भी हाथ नहीं लगाने देते। न करना, न करने देना।"

"कैसी बहकी हुई बातें कर रहे हो, द्मीत्री इवानोविच! क्या आज के ज़माने में भूस्वामित्व को तुम ख़त्म कर सकते हो? मुझे मालूम है कि मुद्दत से यह सनक तुम्हारे सिर पर सवार है। लेकिन मैं साफ़ साफ़ तुम्हें कह देना चाहता हूं..." रागोजिन्स्की का चेहरा पीला पड़ गया और होंठ कांपने लगे। प्रत्यक्षतः इस सवाल ने उसे निजी तौर पर उद्वेलित कर रखा था। "मैं यह ज़रूर कहूंगा कि इसे व्यावहारिक रूप देने से पहले तुम इस सवाल पर अच्छी तरह सोच लो।"

"क्या आप मेरे निजी मामलों के बारे में कह रहे हैं?"

"हां। जिन विशेष परिस्थितियों में हम लोग रहते हैं, उनकी ज़िम्मेवारियां भी हम पर आयद होती हैं। जिस स्थिति में हमारा जन्म हुआ है वह हमारे पुरखाओं की देन है। हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी विरासत संभाल कर रखें और जाते समय अपने बच्चों को सौंप कर जायें।"

"मेरा कर्तव्य..."

"माफ़ करना," रागोजिन्स्की ने नेख़्लूदोव को बीच में बोलने की मनाही करते हुए कहा। "मैं अपनी या अपने बच्चों की ख़ातिर यह बात नहीं कह रहा हूं। मेरे बच्चों की स्थिति सुरक्षित है। मेरी आमदनी अच्छी ख़ासी है जिससे हम आराम से ज़िन्दगी बसर कर सकते हैं। और मुझे उमीद है कि मेरे बच्चे भी इसी तरह रहते रहेंगे। मैं जो तुम्हारे इस काम के बारे में चिन्तित हूं तो किसी निजी लाभ की ख़ातिर नहीं। माफ़ करना, तुम यह क़दम सोच-समझ कर नहीं उठा रहे हो। मेरा सिद्धान्ततः तुमसे मतभेद है। तुम्हें इस बारे में और सोचना-विचारना चाहिए, पढ़ना चाहिए..."

"माफ़ कीजिये, मैं अपने काम में किसी का हस्तक्षेप नहीं चाहता।

मुझे क्या पढ़ना चाहिए और क्या नहीं पढ़ना चाहिए, इसका फ़ैसला मैं ख़ुद कर सकता हूं," नेख़्लूदोव ने कहा। उसका चेहरा पीला पड़ गया। उसे महसूस हुआ जैसे उसके हाथ ठण्डे पड़ने लगे हैं और उसका मन बेक़ाबू होता जा रहा है। वह चुप हो गया और चाय पीने लगा।

३३

"कहो, बच्चे कैसे हैं?" मन कुछ स्थिर हुआ तो नेख़्लूदोव ने बहिन से पूछा।

बहिन ने बताया कि बच्चे अपनी दादी के पास हैं। उसने चैन की सांस ली कि दोनों में बहस ख़त्म हो गई है। वह सुनाने लगी कि उसके बच्चे भी बिल्कुल वही खेल खेलते हैं जो बचपन में नेख़्लूदोव खेला करता था—वह भी एक बग़ल में एक गुड़िया दबा लिया करता था और दूसरी में दूसरी, एक हबशी की और दूसरी जिसे वह फ़्रांसीसी औरत कहा करता था, और दोनों को ले कर कहता था कि मैं सफ़र पर जा रहा हूं।

"क्या सचमुच तुम्हें यह सब याद है?" नेख़्लूदोव ने मुस्करा कर पूछा।

"हां तो। और ख़्याल करो, वे खेलते भी बिल्कुल तुम्हारी तरह हैं।"

अप्रिय वाद-विवाद समाप्त हो चुका था, और नताल्या आश्वस्त अनुभव करने लगी थी। लेकिन वह अपने पति की उपस्थिति में भाई के साथ ऐसी बातों की चर्चा नहीं करना चाहती थी, जिन्हें केवल वही समझ सकता हो। इसलिए किसी ऐसे विषय पर बात शुरू करने की इच्छा से, जिसमें सबकी रुचि हो उसने कामेन्स्की की मां का ज़िक्र छेड़ दिया कि बेचारी कितनी दुखी है। उसका इकलौता बेटा द्वन्द्व युद्ध में मारा गया था। पीटर्सबर्ग का यह लोकप्रिय विषय अब मास्को तक पहुंच गया था।

रागोजिन्स्की कहने लगा कि मुझे यह स्थिति क़तई पसन्द नहीं है कि एक आदमी द्वन्द्व युद्ध में किसी को मार डाले और उसे साधारण मुजरिम न क़रार दिया जाय।

नेख़्लूदोव ने फ़ौरन् इसका प्रतिवाद किया और दोनों में फिर उसी विषय को ले कर बहस छिड़ गई। बहस में किसी बात को भी खोल कर नहीं समझाया गया। प्रतिद्वन्द्वियों के मन में क्या है, वह भी उन्होंने पूरी तरह नहीं बताया केवल अपने अपने विश्वास पर अड़े रहे और एक दूसरे के मत की निन्दा करते रहे।

रागोजिन्स्की को महसूस हुआ जैसे नेख़्लूदोव उसकी निन्दा कर रहा है, जैसे उसके काम-काज से उसे घृणा है। वह उसे दिखा देना चाहता था कि उसके विचार सर्वथा अन्यायपूर्ण हैं। दूसरी तरफ़ नेख़्लूदोव इस बात से खीज उठा था कि उसका बहनोई ज़मीन के मामले में दख़ल दे रहा है (अन्दर ही अन्दर वह जानता था कि उसकी बहिन, बहनोई और उनके बच्चे उसकी ज़मीन-जायदाद के उत्तराधिकारी हैं, और इस नाते उनका एतराज़ करना असंगत नहीं है)। उसे ग़ुस्सा था कि यह संकीर्ण मन का आदमी किस आत्मविश्वास के साथ उन बातों को बार बार न्यायपूर्ण और उचित कहे जा रहा है जब कि नेख़्लूदोव निश्चित तौर पर जानता है कि वे सर्वथा अनुचित और अन्यायपूर्ण हैं। उसके स्थिर आत्मविश्वास को देख कर नेख़्लूदोव मन ही मन कुढ़ रहा था।

"क़ानून क्या कर सकता था?" उसने पूछा।

"क़ानून यह कर सकता था कि द्वन्द्व युद्ध लड़ने वालों में से एक को कड़ी मशक़्क़त की सजा दे कर खानों में भेज देता, जिस तरह साधारण हत्यारे को भेजा जाता है।"

नेख़्लूदोव के हाथ फिर ठण्डे पड़ने लगे।

"उसका क्या लाभ होता?" उसने तुनक पर पूछा।

"यह इन्साफ़ होता।"

"जैसे इन्साफ़ करना क़ानून का मक़सद हो," नेख़्लूदोव बोला।

"अगर यह नहीं तो और कौन सा मक़सद है?"

"क़ानून का मक़सद वर्ग-हितों की रक्षा करना है। मैं समझता हूं कि क़ानून केवल एक साधन मात्र है जिसके द्वारा हम मौजूदा व्यवस्था को बनाये रखना चाहते हैं, ताकि इससे हमारे वर्ग-हितों को लाभ पहुंचता रहे।"

"यह अनोखा विचार है," रागोजिन्स्की ने कहा। उसके होंठों पर आश्वस्त मुस्कान खेल रही थी। "सामान्यतया क़ानून का एक बिलकुल ही दूसरा मक़सद माना जाता है।"

"हां, लेकिन किताबों में, व्यवहार में नहीं। मैंने देख लिया है। क़ानून का केवल एक ही लक्ष्य है और वह यह कि मौजूदा व्यवस्था को बनाये रखे। इसलिए जो लोग इस व्यवस्था को हटाना चाहते हैं, जो योग्यता में जनसाधारण से ऊंचे होते हैं—तथाकथित राजनीतिक अपराधी—

उन्हें तंग करता है और फांसी पर लटकाता है। इसी तरह उन लोगों को भी जो साधारण स्तर से नीचे के हैं तथाकथित अपराधी कोटि के लोग।"

"मैं तुमसे सहमत नहीं हूं। अव्वल तो मैं यह नहीं मान सकता कि राजनीतिक अपराधियों को इसलिए सज़ा दी जाती है कि वे असाधारण योग्यता के लोग होते हैं। उनमें से अधिकांश ऐसे होते हैं जिन्हें हम समाज का कचरा कह सकते हैं, उतने ही विकार-ग्रस्त जितने कि अपराधी कोटि के लोग जिन्हें तुम साधारण से निचले स्तर का कह कर पुकारते हो।"

"पर मैं ऐसे व्यक्तियों को जानता हूं जो नैतिक दृष्टि से उन लोगों से बहुत ऊंचे हैं जो उन पर न्यायाधीश बन कर बैठते हैं। सभी सम्प्रदाई सदाचारी, दृढ़ता..."

परन्तु रागोजिन्स्की उन लोगों में से था जो किसी का बीच में बोलना बर्दाश्त नहीं कर सकते। नेख़्लूदोव की बात को बिना सुने ही वह बोलता गया। नतीजा यह हुआ कि नेख़्लूदोव और भी चिढ़ उठा।

"मैं यह भी नहीं मान सकता कि क़ानून का मक़सद मौजूदा व्यवस्था को बनाये रखना है। क़ानून का लक्ष्य सुधार करना..."

"वाह, क्या ख़ूब सुधार है जो जेलों में हो रहा है!" नेख़्लूदोव बोल उठा।

"...या उन विकार-ग्रस्त तथा वहशी लोगों को हटाना है," रागोजिन्स्की अब भी धृष्टता से बोले जा रहा था, "जिनसे समाज को ख़तरा है।"

"बस, यही काम तो वह नहीं करता। समाज के पास साधन ही नहीं हैं।"

"यह तुम कैसे कह सकते हो? मैं नहीं समझ सकता," रागोजिन्स्की ने बनावटी हंसी हंसते हुए कहा।

"मेरा मतलब है कि केवल दो प्रकार का ही दण्ड ऐसा है जिसे हम उचित दण्ड कह सकते हैं, और इसका प्रयोग पुराने जमाने में किया जाता था। एक, शारीरिक दण्ड और दूसरा प्राण-दण्ड। हम देखते हैं कि ज्यों ज्यों रीति-रिवाज में अधिकाधिक मानवीयता आती गई, इनका प्रयोग कम होता गया," नेख़्लूदोव ने कहा।

"तुम्हारे मुंह से यह नयी बात सुन कर सचमुच मुझे अचम्भा हो रहा है।"

"यदि कोई आदमी बुरा काम करता है, तो उसे शारीरिक कष्ट देना मैं तर्कसंगत मानता हूं, ताकि भविष्य में वह ऐसा काम नहीं करे। इसी तरह यदि किसी आदमी से समाज को नुक़सान पहुंचता है, या समाज को उससे ख़तरा है तो उसका सिर क़लम कर देना मैं तर्कसंगत मानता हूं। इन सज़ाओं का मतलब समझ में आ सकता है। लेकिन यदि आरामतलबी के कारण या किसी बुरे आदमी की देखादेखी कोई आदमी बुरे काम करने लगता है तो उसे जेलख़ाने में बन्द कर देने में क्या तुक है? वहां आप उसे खाना देते हैं, ज़बरदस्ती उसे निठल्ला बिठाये रखते हैं, और बुरे से बुरे लोगों के संग रखते हैं। इसे कौन समझदारी कहेगा? इसमें क्या तुक है कि सरकारी ख़र्च पर, और यह ख़र्च फ़ी आदमी पांच सौ रूबल से अधिक बैठता है, एक आदमी को तूला से इर्कूत्स्क गुबेर्निया तक, या कूर्स्क से..."

"हां, लेकिन फिर भी लोग इन यात्राओं पर ले जाये जाने से डरते हैं भले ही यह सरकारी ख़र्च पर है। और अगर इस प्रकार की यात्राएं और जेलख़ाने न होते तो हम लोग भी आज यहां न बैठे होते।"

"जेलख़ानों से हमारी सुरक्षा सुनिश्चित नहीं हो सकती क्योंकि क़ैदी हमेशा के लिए क़ैद नहीं रहते, उन्हें बाद में छोड़ दिया जाता है। इसके विपरीत इन संस्थाओं में लोग अत्यधिक भ्रष्ट और दुराचारी बनते हैं, इस तरह समाज के लिए ख़तरा बढ़ता है।"

"तुम्हारा क्या मतलब है कि जेल-पद्धत्ति में सुधार होना चाहिए?"

"इसमें सुधार नहीं हो सकता। जेलख़ानों को बेहतर बनाने पर इतना ख़र्च बैठेगा जितना लोगों की तालीम पर भी ख़र्च नहीं होता। ऐसा करने से जनता पर और भी बोझ पड़ेगा।"

"लेकिन अगर जेल-पद्धत्ति में त्रुटियां रह गई हैं तो इससे क़ानून तो ग़लत नहीं हो जाता," अपने साले की बात पर ध्यान दिये बिना रागोजिन्स्की कहता गया।

"इन त्रुटियों का कोई इलाज नहीं है," नेख़्लूदोव ने चिल्ला कर कहा।

"तो क्या हुआ? क्या हम क़ैदियों को मार डालें? या जैसा किसी राजनीतिज्ञ ने सुझाव दिया था, इनकी आंखें निकालनी शुरू कर दें?" विजयी मुस्कान के साथ रागोजिन्स्की बोला।

"हां, है तो निर्दयता लेकिन इसका असर होगा। जो कुछ आज किया

जा रहा है उसमें भी निर्दयता है, लेकिन न केवल यह कि उसक
असर नहीं होता, वल्कि वह इतना मूर्खतापूर्ण है कि हम समझ नहीं
कि सूझ-वूझ रखने वाले लोग ज़ाब्ता फ़ौजदारी जैसे वेहूदा और ज
काम में भाग कैसे ले सकते हैं।"

"मैं ख़ुद इसमें भाग लेता हूं," रागोजिन्स्की ने कहा और
चेहरा पीला पड़ गया।

"आप जानें और आपका काम। मगर यह वात मेरी समझ
है।"

"यही नहीं, वहुत सी वातें हैं जो तुम्हारी समझ के वाह
रागोजिन्स्की ने कहा। उसकी आवाज़ कांप रही थी।

"मैंने अपनी आंखों से देखा, कि एक सरकारी वकील एक
लड़के को सज़ा दिलवाने की भरसक कोशिश कर रहा था। उस ल
देख कर किसी भी आदमी को रहम आ जाता। हां, जिन लोगों
दूषित हो उठा है, उनकी वात और है। मैंने एक दूसरे सरकारी
को एक सम्प्रदाई के विरुद्ध जिरह करते सुना। इंजील के पाठ क
संगीन जुर्म वना कर दिखा दिया। सच तो यह है कि कचहरियों
क़िस्म के मूढ़ और ज़ालिमाना काम होते रहते हैं।"

"अगर मुझे ये काम इस तरह के लगते तो मैं कचहरी में क
करता।"

नेख़्लूदोव ने देखा कि उसके वहनोई की ऐनकें नीचे से, अजी
से चमकने लगी थीं। "क्या ये आंसू तो नहीं?" उसने सोचा। वे
आंसू ही थे—आहत स्वाभिमान के आंसू। रागोजिन्स्की उठ कर
के पास चला गया और जेव में से रूमाल निकाल कर पहले खां
और फिर ऐनकों के शीशे पोंछने लगा, और पोंछ चुकने के वाद
से अपनी आंखें पोंछता रहा। फिर वह सोफ़े के पास लौट आया औ
सुलगा लिया। इसके वाद वह विल्कुल चुप हो गया।

नेख़्लूदोव वड़ा लज्जित और क्षुब्ध महसूस करने लगा कि मैं
अपने वहनोई और वहन को इतना अधिक नाराज़ कर दिया, विशे
मैं कल ही यहां से जा रहा हूं और फिर उन्हें नहीं मिल पाऊंगा

विदा लेते समय उसे वड़ी झेंप हो रही थी। वहां से वह स

"संभव है मैंने जो कुछ कहा वह ठीक हो। उससे भी मेरी वातों का कोई जवाव नहीं वन पड़ा। लेकिन मेरे कहने का ढंग ग़लत था। इसका मतलव है कि मुझमें कोई भी तवदीली नहीं ग्राई जो मैं एक ग्रादमी से इतना द्वेप कर सकता हूं कि उसे नाराज़ कर दूं ग्रौर उसकी भावनाग्रों को ठेस पहुंचाऊं। मैंने वेचारी नताल्या को भी दुखी किया है," वह मन ही मन सोच रहा था।

३४

क़ैदियों की जिस टोली में मास्लोवा शामिल थी उसे स्टेशन से तीन वजे दोपहर की गाड़ी से रवाना हो जाना था। टोली को जेल में से निकलते देखने के लिए, तथा क़ैदियों के साथ ही स्टेशन तक जा पाने के लिए नेख़्लूदोव ने निश्चय किया कि वह वारह वजे तक ज़रूर जेल में पहुंच जायेगा।

पिछली रात ग्रपना सामान बांधते तथा काग़ज़ात समेटते समय उसकी नज़र ग्रपनी डायरी पर पड़ी ग्रौर वह उसमें इधर-उधर लिखे कुछ ग्रंश पढ़ने लगा। पीटर्सवर्ग के लिए रवाना होने से पहले डायरी में ग्राख़िरी शव्द ये थे—"कात्यूशा को मेरी क़ुर्वानी मंज़ूर नहीं। वह स्वयं क़ुर्वानी देना चाहती है। उसकी जीत हुई है, ग्रौर मेरी भी। यह देख कर कि उसमें एक ग्रान्तरिक परिवर्तन हो रहा है, मुझे वेहद ख़ुशी होती है, हालांकि इस पर विश्वास करते डरता हूं। विश्वास करते डर लगता है लेकिन फिर भी उसका पुनर्जन्म हो रहा है।" ग्रागे चल कर एक जगह उसने पढ़ा—"हाल ही में मुझे ग्रत्यन्त कठोर पर साथ ही ग्रत्यन्त सुखद ग्रनुभव हुए हैं। मुझे पता चला कि मास्लोवा का ग्रस्पताल में वहुत वुरा व्यवहार रहा है। यह सुन कर सहसा मुझे वेहद दुख हुग्रा। जव मैं उससे मिला तो मैं उसके साथ वड़ी घृणा तथा द्वेप से पेश ग्राया। फिर सहसा मुझे ख़्याल ग्राया कि जिस ग्रपराध के लिए मैं उससे इतनी घृणा कर रहा हूं, वह मैं स्वयं कितनी वार कर चुका हूं। ग्राज भी मैं यह जुर्म करता हूं, भले ही वह चिन्तन तक सीमित हो। यह सोचते ही मैं ग्रपनी नज़रों में गिर गया, मुझे ग्रपने ग्रापसे घृणा होने लगी। उसके प्रति मेरा हृदय ग्रनुकम्पा से भर उठा। इस तरह फिर मेरे मन में ख़ुशी का संचार हुग्रा। काश कि हम ग्रपने दोप देख पायें, तो हम कितने दयालु हो उठेंगे!" इतना पढ़ चुकने

के वाद नेख्लूदोव ने डायरी में लिखा—"मैं नताल्या से मिलने गया था। आत्मसन्तोष ने मुझे फिर अनुदार और द्वेषपूर्ण व्यवहार करने पर उकसाया। मेरे मन पर इस वात का वहुत वड़ा वोझ है। अव कोई चारा नहीं। कल मैं एक नये जीवन में पदार्पण कर रहा हूं। पुराने जीवन को अन्तिम वार विदा! मन में तरह तरह के अनगिनत प्रभाव घूम रहे हैं। अभी उन्हें एकवद्ध करना मेरे लिए संभव नहीं।"

दूसरे दिन प्रातः जव नेख्लूदोव जागा तो उसका मन भारी था। वहनोई के साथ अपने व्यवहार पर उसे पश्चात्ताप हो रहा था।

"मुझे ज़रूर जा कर उन्हें मना लेना चाहिए," उसने सोचा, "मैं विना मिले कैसे जा सकता हूं।"

परन्तु घड़ी देखी तो पता चला कि कोई वक़्त नहीं है। अगर टोली के चलने से पहले पहुंचना है तो उसे जल्दी जल्दी तैयार हो जाना चाहिए। जल्दी जल्दी उसने तैयारी कर ली, सामान अपने नौकर और फ़ेदोस्या के पति तारास के हाथ स्टेशन पर भेज दिया—फ़ेदोस्या का पति भी साथ चल रहा था—और फिर जो भी घोड़ा गाड़ी पहले नज़र आई, उसी पर चढ़ कर जेल की ओर चल पड़ा।

जिस गाड़ी से वह ख़ुद जा रहा था, उससे दो ही घण्टे पहले क़ैदियों की गाड़ी छूटती थी। इसलिए नेख्लूदोव ने कमरों का किराया चुकाया और वहां से निकल आया।

जुलाई का महीना था। वड़ी तेज़ गर्मी पड़ रही थी। सड़क के पत्थर तप रहे थे, दीवारों और लोहे की छतों से तपश वन्द हवा में मानो वह वह कर गिर रही थी। पिछली रात की उमस में भी ये ठण्डी नहीं हो पाई थीं। किसी किसी वक़्त कभी कोई हवा का हल्का सा झोंका उठता लेकिन वह भी गर्म और गर्द से भरा होता, और उससे रोग़न की वू आ रही होती। सड़कों पर वहुत कम लोग आ-जा रहे थे, और वे भी एक तरफ़ साये में रहने की कोशिश कर रहे थे। केवल सड़क की मरम्मत करने वाले किसान धूप में वैठे तपते वालू में पत्थर कूट रहे थे। उनके तपे हुए चेहरों का रंग कांसे का सा हो रहा था। पांवों में वे छाल के जूते पहने थे। सड़क के वीचोंवीच पुलिस के सिपाही, छोटा कोट पहने और नारंगी रंग की डोरी से रिवाल्वर लटकाये, उदास और निराश, मुंह लटकाये

खड़े थे। कभी एक पांव पर अपना बोझ डालते कभी दूसरे पर। धूप से चमचमाती सड़क पर घोड़ा-ट्रामें, घंटियां बजाती आ-जा रही थीं। घोड़ों के सिरों पर सफ़ेद हुड लगे थे जिनमें कानों के लिए छेद किये हुए थे।

जब नेख़्लूदोव गाड़ी में बैठा जेलख़ाने के सामने पहुंचा तो टोली अभी जेल के आंगन में से बाहर नहीं निकली थी। सुबह चार बजे से क़ैदियों की सुपुर्दगी और वसूली का काम चल रहा था। काम बेहद कड़ा था और अभी तक समाप्त नहीं हो पाया था। टोली में ६२३ पुरुष और ६४ क़ैदी स्त्रियां थीं। एक एक कर के सभी को गिनना, फिर रजिस्ट्री-फ़हरिस्त से मिलाना, बीमार और कमज़ोर क़ैदियों को अलग करना, फिर सबको कॉनवाय के सपुर्द करना था। नया इन्स्पेक्टर, उसके दो सहायक, डाक्टर, छोटा डाक्टर, कॉनवाय का अफ़सर और क्लर्क, सभी जेल के आंगन में, एक दीवार के साये में मेज़ लगा कर बैठे थे। मेज़ पर काग़ज़ और लिखने का सामान रखा था। एक एक कर के वे क़ैदियों को बुलाते, उनकी जांच करते, उनसे सवाल पूछते और काग़ज़ों पर अपने टिप्पण लिखते जाते।

सूरज की किरणें धीरे धीरे मेज़ तक भी जा पहुंची थीं। हवा बन्द थी, कुछ इस कारण और कुछ पास में खड़ी क़ैदियों की भीड़ के श्वासों के कारण गर्मी असह्य हो उठी थी।

"हे भगवान्, यह काम कभी ख़त्म भी होगा या नहीं!" कॉनवाय अफ़सर बोला। यह आदमी क़द का ऊंचा-लम्बा और मोटा था, चेहरा लाल, कंधे ऊंचे और बाज़ू छोटे छोटे थे। बराबर सिगरेट पिये जा रहा था और धुआं अपनी घनी मूंछों में छोड़े जा रहा था। एक लम्बा कश खींच कर बोला—"तुम लोग मुझे मार डालोगे। कहां से पकड़ लाये हो इन्हें? और कितने रह गये हैं?"

क्लर्क ने लिस्ट देखी।

"औरतों को छोड़ कर २३ आदमी अभी और बाक़ी हैं।

"वहां किस लिए खड़े हो? चलो इधर," कॉनवाय अफ़सर ने चिल्ला कर उन क़ैदियों को पुकारा जो अभी तक जांच के लिए नहीं आये थे, और जो एक के पीछे दूसरा भीड़ बना कर खड़े थे। पिछले तीन घण्टे से क़ैदी, लाइनें बांधे, चुनचुनाती धूप में खड़े अपनी अपनी बारी का इन्तज़ार कर रहे थे।

जहां आंगन में, जेल के अन्दर यह काम हो रहा था, वहां जेल के

वाहर, फाटक के सामने, जहां वन्दूक उठाये सन्तरी रोज़ की तरह खड़ा पहरा दे रहा था, वीसेक छकड़े खड़े थे। ये क़ैदियों का सामान ढोने के लिए तथा ऐसे क़ैदियों को ले जाने के लिए खड़े थे जो कमज़ोरी के कारण स्वयं चल कर नहीं जा सकते थे। एक कोने में क़ैदियों के भाई-वन्द इस उमीद में खड़े थे कि जव क़ैदी वाहर निकलेंगे तो मौक़ा देख कर ये उनसे दुग्रा-सलाम कर सकेंगे ग्रौर छोटी-मोटी चीज़ें उन्हें दे सकेंगे। इन्हीं लोगों के वीच नेख़्लूदोव भी जा खड़ा हुग्रा।

घण्टा भर वहां खड़ा रहने के वाद उसके कानों में तरह तरह की ग्रावाज़ें पड़ने लगीं—वेड़ियां खनकने, लोगों के चलने, ग्रफ़सरों की ग्रावाज़ें, खांसने-कांखने तथा एक वहुत वड़ी भीड़ में लोगों के वुदवुदाने की ग्रावाज़ें ग्राने लगीं। लगभग पांच मिनट तक यही चलता रहा। इस वीच कुछेक वार्डर फाटक में से वाहर ग्रौर ग्रन्दर ग्राते-जाते रहे। ग्रन्त में हुक्म सुनाया गया।

वड़े शोर के साथ फाटक खुले। वेड़ियों-ज़ंजीरों की ग्रावाज़ ग्रौर भी ऊंची हो उठी। कॉनवाय के सिपाही, सफ़ेद वर्दी कोट पहने ग्रौर कन्धों पर वन्दूकें रखे वाहर सड़क पर ग्रा गये ग्रौर फाटक के सामने पूरा गोल चक्र वना कर खड़े हो गये। प्रत्यक्षतः इस तरह रस्मी तौर पर ग्रा कर खड़े होने का उन्हें काफ़ी ग्रभ्यास था। इसके वाद एक ग्रौर ग्रादेश दिया गया ग्रौर दो दो कर के क़ैदी वाहर ग्राने लगे। उनके घुटे हुए सिरों पर गोल चपटी टोपियां थीं ग्रौर कन्धों पर वोरियां थीं। क़ैदियों के पांवों में वेड़ियां पड़ी थीं। एक हाथ से वोरी को थामे, दूसरी वांह झुलाते हुए, वे पांव घसीटते चले ग्रा रहे थे। सवसे ग्रागे वे क़ैदी वाहर निकले जिन्हें कड़ी मशक़्क़त की सज़ा दी गई थी। सभी ने भूरे रंग की पतलूनें ग्रौर कुर्ते पहन रखे थे जिनकी पीठ पर नम्वर लिखे थे। सभी क़ैदी तेज़ तेज़ क़दम रखते हुए वेड़ियां खनखनाते ग्रौर वांहें झुलाते वाहर निकले मानो किसी लम्वे सफ़र पर जाने के लिए तैयार हो कर ग्राये हों। इनमें जवान भी थे ग्रौर वूढ़े भी, पतले भी थे ग्रौर मोटे भी, पीले चेहरों वाले, लाल चेहरों वाले ग्रौर संवलाये चेहरों वाले भी थे, दाढ़ी वाले ग्रौर विना दाढ़ी के भी थे, रूसी, तातार ग्रौर यहूदी—सभी तरह के लोग शामिल थे। तेज़ तेज़ चलते हुए वे वाहर निकले लेकिन दस क़दम चलने के वाद वे सहसा रुक गये ग्रौर वड़ी ग्राज्ञाकारिता के साथ चार चार की लाइन वना कर एक दूसरे के पीछे खड़े होने लगे। इसके वाद फ़ौरन् ही ग्रौर ग्रादमी वाहर

निकलने लगे। उनके सिर भी मुंडे हुए थे। इन्होंने भी उसी तरह के कपड़े पहन रखे थे। इनके पांवों में वेड़ियां नहीं थीं, लेकिन इनके हाथ ग्रापस में हथकड़ियों के साथ वंधे हुए थे। ये वे क़ैदी थे जिन्हें निर्वासन की सज़ा दी गई थी। ये क़ैदी भी तेज़ तेज़ चलते हुए ग्राये ग्रौर उसी तरह सहसा रुक गये ग्रौर चार चार की लाइन वना कर खड़े हो गये। इनके वाद वे क़ैदी वाहर निकले जिन्हें उनकी ग्राम-पंचायतों ने निर्वासित कर दिया था। इसके वाद, इसी ढंग से, ग्रौरतें वाहर ग्रायीं। सबसे पहले वे ग्रौरतें जिन्हें कड़ी मशक़्क़त की सज़ा दी गई थी। इन्होंने भूरे रंग के लवादे ग्रौर सिर पर रूमाल वांध रखे थे। इनके पीछे वे ग्रौरतें जिन्हें निर्वासन की सज़ा मिली थी, ग्रौर ग्रन्त में वे जो स्वेच्छा से ग्रपने पतियों के साथ साइवेरिया जा रही थीं। इन ग्रौरतों ने ग्रपने नगर या गांव की पोशाकें पहन रखी थीं। कुछेक ग्रौरतें ग्रपने लवादों के ग्रगले हिस्सों में ग्रपने वच्चों को लपेटे साथ लिये ग्रा रही थीं।

जिस भांति घोड़ों के एक झुण्ड में वछेरे ग्रपनी माग्रों की टांगों के साथ सट कर भागे चले ग्राते हैं, इसी तरह इन ग्रौरतों के साथ इनके वच्चे, लड़के ग्रौर लड़कियां भी थीं।

ग्रादमी चुपचाप खड़े थे। केवल किसी किसी वक़्त खांस देते या छोटी-मोटी वात कह देते। ग्रौरतें ग्रनवरत वोले जा रही थीं। जव वे वाहर निकल रही थीं तो नेख़्लूदोव को लगा जैसे उसने मास्लोवा को देखा हो, लेकिन शीघ्र ही मास्लोवा भीड़ में खो गई, ग्रौर उसे ग्रपने सामने भूरे रंग के कपड़े ही कपड़े नज़र ग्राने लगे—यह नहीं लगता था जैसे वे इन्सान हैं, या कम से कम ग्रौरतों वाली उनमें कोई वात न थी। पीठ पर वोरियां उठाये, उनके वच्चे उनकी टांगों से चिपकते हुए, वे ग्रायीं ग्रौर मर्दों के पीछे ग्रा कर खड़ी हो गयीं।

जेल में से क़ैदी गिन कर भेजे गये थे। लेकिन वाहर पहुंचने पर कॉनवाय वालों ने उन्हें फिर गिना ग्रौर फ़हरिस्त में दर्ज हुए नम्वरों के साथ नम्वर मिलाने लगे। इसमें वहुत देर लगी, ख़ास कर इसलिए कि कुछ क़ैदी ग्रपनी जगह छोड़ कर ग्रागे-पीछे हो जाते थे जिससे कॉनवाय वालों की गणना में गड़वड़ हो जाती थी। कॉनवाय के सिपाही चिल्ला रहे थे ग्रौर क़ैदियों को धकेल रहे थे। क़ैदी वड़वड़ाते लेकिन फिर भी जहां वे कहते, खड़े हो जाते थे। जव सभी गिने जा चुके तो कॉनवाय ग्रफ़सर ने ग्रादेश

दिया। आदेश देने की देर थी कि भीड़ में खलबली मच गई। मर्द, औरतें और बच्चे, जो लोग शरीर के दुर्बल थे, छकड़ों की ओर भाग कर जाने लगे, एक दूसरे से आगे निकलने की कोशिश करते हुए। छकड़ों में वे अपनी अपनी बोरियां फेंक ऊपर चढ़ने लगे। औरतें, अपने रोते-चिल्लाते बच्चों को लिये, हंसोड़ लड़के छकड़ों में अपने लिए जगह बनाने के लिए छीना-झपटी करते हुए, तथा सुध-बुध खोये, उदास क़ैदी छकड़ों में जा बैठे।

कुछेक क़ैदी चलते हुए कॉनवाय अफ़सर के पास आये और सिर पर से टोपियां उतार कर उससे कोई दरख़्वास्त की। नेख़्लूदोव को बाद में पता चला कि वे छकड़ों में बैठने की इजाज़त मांग रहे थे। उस वक़्त उसने इतना ही देखा कि अफ़सर ने बिना क़ैदियों की ओर देखे सिगरेट का कश लिया और फिर सहसा एक क़ैदी की ओर घूंसा दिखाते हुए अपने छोटे से बाज़ू को झटका। क़ैदी ने झट से अपना मुंडा हुआ सिर कन्धों में छिपा लिया, मानो डर रहा हो कि अफ़सर उसे घूंसा मार बैठेगा, और उछल कर पीछे हट गया।

"छकड़ों में तुम्हें ऐसा बिठाऊंगा कि उम्र भर याद रखोगे। चलो हटो यहां से, तुम्हें पैदल जाना होगा," अफ़सर चिल्लाया।

केवल एक आदमी को छकड़े में बैठने की इजाज़त दे दी गई। यह कोई बूढ़ा आदमी था जिसके पांवों में बेड़ियां पड़ी थीं। नेख़्लूदोव ने उसे छकड़ों की ओर जाते हुए देखा। उसने सिर पर से गोल चपटी टोपी उतार रखी थी और बार बार छाती पर क्रॉस का चिन्ह बना रहा था। बेड़ियों के कारण उसके लिए छकड़े पर चढ़ना मुश्किल हो रहा था, वह अपनी जीर्ण, दुर्बल टांगों को ऊपर नहीं उठा पा रहा था। आख़िर एक औरत ने, जो पहले से छकड़े में बैठी थी, उसका हाथ पकड़ कर उसे ऊपर खींच लिया।

जब छकड़ों पर बोरियां लद गईं और जिन लोगों को उनमें बैठना था, बैठ गये, तो अफ़सर ने सिर पर से टोपी उतारी, अपने माथे, गंजे सिर, और मोटी, लाल गर्दन को पोंछा और छाती पर क्रॉस का चिन्ह बनाया।

"मार्च!" उसने हुक्म दिया।

सिपाहियों की बन्दूकें खड़खड़ायीं। क़ैदियों ने सिरों पर से टोपियां उतारीं और क्रॉस का चिन्ह बनाने लगे। जो लोग उन्हें छोड़ने आये थे उन्होंने पुकार कर कुछ कहा। क़ैदियों ने जवाब में कुछ पुकार कर कहा।

औरतों के बीच बड़ी उत्तेजना थी। इस तरह टोली आगे बढ़ने लगी। उसे चारों ओर सफ़ेद कोटों वाले सिपाही घेरे हुए थे। क़ैदियों के पांवों में पड़ी बेड़ियों के कारण धूल उड़ने लगी। सबसे आगे सिपाहियों की लाइन थी। उनके पीछे वे क़ैदी थे जिन्हें कड़ी मशक़्क़त की सज़ा दी गई थी। उनके पांवों में बेड़ियां खनखना रही थीं। उनके पीछे निर्वासित क़ैदी तथा वे क़ैदी थे जिन्हें उनकी ग्राम-पंचायतों ने जलावतन कर दिया था। दो दो कर के इनकी कलाइयों पर हथकड़ियां लगी थीं। इनके पीछे औरतें थीं। उनके पीछे बोरियों से लदे छकड़ों पर दुबले और कमज़ोर क़ैदी बैठे थे। एक छकड़े में, बोरियों के ढेर के ऊपर एक औरत बैठी, ज़ोर ज़ोर से रो रही थी और सिसकियां भर रही थी। उसने अपने को ख़ूब कपड़ों में लपेट रखा था।

३५

क़ैदियों का जुलूस इतना लम्बा था कि जब छकड़ों की बारी आयी, जिनमें सामान लदा था तथा कमज़ोर क़ैदी बैठे थे, तो जुलूस का अगला सिरा आंखों से ओझल हो चुका था। जब आख़िरी छकड़ा भी चल निकला तो नेख़्लूदोव अपनी गाड़ी में आ बैठा जो खड़ी इन्तज़ार कर रही थी और गाड़ीवान को गाड़ी बढ़ा कर सबसे आगे चलने वाले क़ैदियों तक ले चलने को कहा। वह यह देखना चाहता था कि इस टोली में उसके कोई परिचित क़ैदी भी हैं या नहीं, साथ ही मास्लोवा से मिल कर यह पूछना चाहता था कि उसे वे चीज़ें मिल गई थीं या नहीं जो उसने भेजी थीं।

गर्मी बहुत थी। हवा बन्द थी। जुलूस सड़क के ऐन बीचोंबीच चल रहा था। हज़ारों क़दमों से उठती गर्द और धूल सारा वक़्त टोली को ढके हुए थी। क़ैदी तेज़ तेज़ चल रहे थे, इसलिए नेख़्लूदोव की गाड़ी को आगे तक पहुंचने में काफ़ी वक़्त लगा, क्योंकि घोड़ा बहुत आहिस्ता चल रहा था। एक एक कर के, वह इन विचित्र, भयानक दिखने वाले जीवों की पंक्तियां पीछे छोड़ता चला जा रहा था। इनमें से किसी को भी नेख़्लूदोव नहीं जानता था।

जुलूस आगे बढ़ता गया। सभी क़ैदियों ने एक से जूते और कपड़े पहन रखे थे। हज़ारों क़दम एक साथ चल रहे थे। सभी क़ैदी अपना स्वतन्त्र

बाज़ू ख़ूब झुलाते हुए चल रहे थे, मानो वे अपना हौसला क़ायम रखना चाहते हों। अनगिनत क़ैदी, सभी एक जैसे, सभी की स्थिति एक जैसी, अजीब और असाधारण—नेख़्लूदोव को लग रहा था जैसे ये लोग इन्सान नहीं हैं, बल्कि किसी प्रकार के अनोखे, भयानक जीव हैं। उस वक़्त तक उसे ऐसा ही प्रतीत होता रहा जब तक कि क़ैदियों की भीड़ में उसने दो-एक आदमी पहचान नहीं लिये। एक तो उनमें से फ़्योदोरोव था, जिसने हत्या की थी; दूसरा ओख़ोतिन, मसख़रा, जो जलावतनों की लाइन में चल रहा था। एक तीसरा आवारा सड़क-सवार भी था जिसने नेख़्लूदोव से सहायता की प्रार्थना की थी। लगभग सभी क़ैदियों ने घूम कर गाड़ी की ओर तथा गाड़ी में बैठे अमीर आदमी की ओर देखा। फ़्योदोरोव ने नेख़्लूदोव की ओर देख कर अपना सिर पीछे की ओर झटक दिया, जिसका मतलब यह दिखाना था कि मैंने आपको पहचान लिया है। ओख़ोतिन ने आंख मारी। पर दोनों में से किसी ने भी झुक कर अभिवादन नहीं किया, क्योंकि उनका ख़्याल था कि इसकी इजाज़त नहीं होगी।

औरतों के नज़दीक पहुंचते ही नेख़्लूदोव ने झट मास्लोवा को पहचान लिया। वह दूसरी लाइन में चल रही थी। लाइन के सिरे पर एक बड़ी कुरूप सी औरत चल रही थी, जिसकी टांगें छोटी छोटी, और आंखें काली थीं, और जिसने अपना लबादा कमरबन्द में खोंस रखा था। यह छबीली थी। उसके साथ वाली स्त्री गर्भवती थी, और बड़ी मुश्किल से पांव घसीटती चली जा रही थी। तीसरे नम्बर पर मास्लोवा थी। उसने अपनी बोरी को कन्धे पर उठा रखा था और सीधे आगे की ओर देख रही थी। चेहरे से शान्ति तथा दृढ़ता झलक रही थी। लाइन में चौथे नम्बर पर एक ख़ूबसूरत छोटी उम्र की औरत थी जो तेज़ तेज़ क़दम रखती हुई चली जा रही थी। उसने छोटा सा लबादा पहन रखा था, और सिर पर इस ढंग से रूमाल बांध रखा था जिस ढंग से किसान औरतें बांधती हैं। यह फ़ेदोस्या थी।

नेख़्लूदोव गाड़ी में से उतर कर औरतों की ओर बढ़ गया। वह मास्लोवा से पूछना चाहता था कि उसे चीज़ें मिलीं या नहीं, साथ ही यह भी कि उसका हाल-चाल कैसा है। लेकिन कॉनवाय के सॉर्जेंट ने देख लिया जो इसी तरफ़ लाइन के साथ साथ चल रहा था और भागा हुआ नेख़्लूदोव के पास आ गया।

"आप ऐसा नहीं कर सकते। टोली के क़ैदियों से बात करने की इजाज़त नहीं है," पास आते हुए सार्जेंट ने चिल्ला कर कहा।

फिर सहसा उसने नेख़्लूदोव को पहचान लिया (जेल में सभी लोग उसे जानते थे) और सलाम करते हुए पास आ कर बोला—

"इस वक़्त नहीं जनाव, स्टेशन पर बात कर लीजिये। यहां पर बात करने की इजाज़त नहीं है। पीछे मत रहो, चलो आगे, ए! मार्च!" उसने क़ैदियों से कहा और चुस्ती दिखाते हुए भाग कर अपनी जगह पर आ गया, हालांकि गर्मी बहुत थी, और उसने नये, बढ़िया बूट पहन रखे थे।

नेख़्लूदोव पटरी पर चढ़ गया और गाड़ी वाले को पीछे पीछे गाड़ी ले आने को कह पैदल चलने लगा ताकि टोली को देखता रह सके। जिधर से भी टोली गुज़रती लोग मुड़ मुड़ कर उसकी ओर देखते, और उनकी आंखों में दया तथा भय के भाव छा जाते। जो लोग गाड़ियों में बैठे पास से गुज़रते वे गाड़ियों में से सिर निकाल निकाल कर क़ैदियों की ओर देखते। पैदल जाने वाले आदमी रुक जाते और इस भयानक दृश्य को हैरान तथा भयातुर आंखों से देखने लगते। कुछ लोग आगे बढ़ आते और क़ैदियों को भीख देते, लेकिन इसे कॉनवाय के सिपाही वसूल करते थे। कुछ लोग तो मन्त्रमुग्ध की भांति टोली के पीछे पीछे चलने लगते, फिर सहसा रुक जाते, सिर हिलाते, और वहीं खड़े खड़े क़ैदियों की ओर देखते रहते। जिस तरफ़ से भी यह भयानक जुलूस गुज़रता, लोग फाटकों और दरवाज़ों में से बाहर निकल आते, और अन्य लोगों को भी बाहर आने के लिए कहते, या खिड़कियों में से बाहर सिर निकाले, चुपचाप, मूर्तिवत् खड़े इनकी ओर देखते रह जाते। एक चौराहे पर जुलूस के कारण एक बढ़िया गाड़ी को रुक जाना पड़ा। गाड़ी के बॉक्स पर एक स्थूलकाय कोचवान बैठा था जिसका चेहरा दमक रहा था और पीठ पर बटनों की दो पंक्तियां लगी थीं। गाड़ी के अन्दर एक दम्पती बैठे थे। पत्नी, पीतवर्ण, पतली सी औरत थी जिसने सिर पर हल्के से रंग का टोप पहन रखा था और हाथ में भड़कीले रंग का छाता पकड़े हुए थी। पति ने टॉप-हैट और हल्के रंग का चुस्त, हल्का सा ओवरकोट पहन रखा था। उनके सामने वाली सीट पर उनके बच्चे बैठे थे। एक लड़की और एक आठेक साल का लड़का। लड़की ने बहुत ख़ूबसूरत कपड़े पहन रखे थे, उसके सुनहरी बाल कन्धों पर गिर रहे थे और वह एक नयी खिली कली की तरह सुन्दर लग रही

थी। उसके हाथ में भी भड़कीले रंग का छाता था। लड़के की गरदन पतली थी और कन्धों के दोनों तरफ़ की हड्डियां नज़र आ रही थीं। उसने सिर पर जहाज़ियों की टोपी पहन रखी थी, जिसके साथ लम्बे लम्बे फ़ीते लटक रहे थे।

बाप कोचवान को फटकारने लगा कि जब मौक़ा था तो तुम जुलूस के आगे से क्यों नहीं निकल गये। मां ने भौंहें चढ़ायीं, और घृणा से अपनी आंखें कुछ कुछ बन्द कर लीं, और गर्द और धूप से अपने को बचाने के लिए अपना रेशमी छाता मुंह के आगे कर लिया।

मालिक के इन अन्यायपूर्ण शब्दों पर मोटे नितंब वाले कोचवान ने गुस्से से भौंहें चढ़ायीं—मालिक ने ख़ुद ही तो इस रास्ते से गाड़ी ले चलने का हुक्म दिया था। बड़ी मुश्किल से वह घोड़ों को क़ाबू में कर पा रहा था जो आगे बढ़ने के लिए बेचैन थे। उनके मुंह से झाग निकल रही थी। घोड़े काले रंग के थे और उनकी पीठ ख़ूब चमक रही थी।

पुलिस का सिपाही जी-जान से इस बढ़िया गाड़ी के मालिक को ख़ुश करना चाहता था। वह चाहता तो था कि टोली को रोक दे ताकि गाड़ी निकल जाये। लेकिन जिस भयानक संजीदगी से क़ैदियों का जुलूस चला जा रहा था, उसमें बाधा डालने की सिपाही को भी हिम्मत नहीं हुई। इसलिए चाहते हुए भी वह इस अमीर आदमी को ख़ुश नहीं कर सका। उसने हाथ उठा कर सलाम किया ताकि धन-ऐश्वर्य के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त कर सके, और घूर कर क़ैदियों की ओर देखा, मानो गाड़ी में बैठे अमीरज़ादों को इस बात का वचन दे रहा हो कि हर हालत में मैं इन लोगों से आपकी रक्षा करूंगा। सो गाड़ी को उस वक़्त तक खड़े रहना पड़ा जब तक कि सारा का सारा जुलूस निकल नहीं गया और आख़िरी छकड़े, बोरियों और क़ैदियों से लदे, खड़खड़ाते गुज़र नहीं गये। जो औरत छकड़े में बैठी पहले चीख़-चिल्ला रही थी, अब शान्त हो गई थी। लेकिन इस अमीराना गाड़ी को देख कर वह फिर चीख़ने और सिसकियां भरने लगी। उसके बाद कोचवान ने रासों को हल्का सा झटका दिया और काले घोड़े आगे को बढ़ निकले। उनके नाल गोल पत्थरों की बनी सड़क पर खनखने लगे। गाड़ी के पहियों पर रबड़ के टायर चढ़े थे, हल्के हल्के झूलती हुई वह देहात की ओर जाने लगी जहां पति, पत्नी, लड़की और लड़का—जिसके कन्धों की हड्डियां नज़र आ रही थीं—छुट्टी मनाने जा रहे थे।

लड़के और लड़की दोनों ने यह अनोखा दृश्य देखा। लेकिन न तो मां ने और न ही उनके वाप ने इसके वारे में उन्हें कुछ वताया। अतः वच्चों को स्वयं अपनी समझ के अनुसार इसका कुछ न कुछ मतलव निकालना पड़ा।

लड़की ने मां-वाप के चेहरे का भाव देखा और इस समस्या का समाधान यह सोच कर कर लिया कि ये विल्कुल भिन्न प्रकार के लोग हैं जिनका उसके मां-वाप तथा अन्य परिचित लोगों से कोई मेल नहीं। ये वुरे लोग हैं, इसी लिए उनके साथ ऐसा सुलूक किया गया है। यही कारण था कि लड़की इन्हें देख कर डर गई थी, और जब वे नज़र से दूर हुए तो उसने चैन की सांस ली।

परन्तु लड़के की प्रतिक्रिया इससे भिन्न हुई। लम्वी पतली गर्दन वाला यह लड़का भी जुलूस को एकटक देखता रहा था। उसे इस वात का दृढ़ विश्वास था, और स्वयं भगवान् ने उसके हृदय में यह वात डाली थी कि ये लोग भी वैसे ही हैं जैसा कि वह ख़ुद है, जैसे संसार में अन्य लोग हैं। किसी ने इनके साथ कोई ऐसा अन्याय किया है जो नहीं करना चाहिए था। उसे इनकी स्थिति पर रहम आ रहा था। उनके मुंडे हुए सिर और वेड़ियां-हथकड़ियां देख कर वह डर गया। और उन लोगों के वारे में सोच कर भी वह डर गया जिन्होंने उनके सिर मुंडे थे और उनके पांवों में वेड़ियां डाली थीं। इसी कारण इस दृश्य को देखते हुए उसके होंठ अधिकाधिक फड़फड़ाने लगे। परन्तु यह सोच कर कि इसे देख कर रोने लगना वड़ी लज्जा की वात होगी, वह अपनी रुलाई दवाने की भरसक चेष्टा करने लगा।

३६

क़ैदियों के साथ साथ नेख़्लूदोव भी तेज़ रफ़्तार से चलता गया। हवा वन्द थी, और चिलचिलाती धूप में वायुमण्डल धूल से अटा हुआ था। नेख़्लूदोव ने वहुत कपड़े तो नहीं पहन रखे थे लेकिन उसे वेहद गर्मी लग रही थी और इस हवा में सांस लेना असम्भव हो रहा था।

लगभग दो फ़र्लांग चलते रहने के वाद वह गाड़ी में वैठ गया। लेकिन सड़क के वीचोंवीच गाड़ी में वैठ कर जाते हुए उसे और भी गर्मी लगी।

उसे वह वार्तालाप याद हो आया जो गत रात वहनोई के साथ हुआ था, लेकिन इस वक़्त उसके वारे में सोच कर उसका मन विचलित नहीं हुआ जैसा कि सुबह उठते वक़्त हुआ था। टोली के जेलख़ाने से निकलने तथा उसके साथ साथ जाने से जो प्रभाव उसके मन पर अंकित हुए थे वे अधिक प्रवल थे। पर मुख्य बात यह थी कि इस तेज़ गर्मी के कारण वह सव कुछ भूला हुआ था।

पटरी पर एक जगह, कुछेक पेड़ों के साये में, जो एक वाड़ पर से वाहर की ओर झांक रहे थे, दो स्कूली लड़के एक वरफ़ वेचने वाले के पास खड़े थे। बरफ़ वेचने वाला घुटनों के वल झुका हुआ था। एक लड़का पहले ही हाथ में सींग का चम्मच पकड़े उसे चूस रहा था और आइसक्रीम का मजा ले रहा था। दूसरे के लिए खोंचे वाला गिलास में कोई पीले रंग का रस डाल रहा था।

नेख़्लूदोव को वेहद प्यास लग रही थी। उसने अपने गाड़ी वाले से पूछा —

"क्या यहां पीने के लिए कुछ मिल सकेगा?"

"यहां नज़दीक ही एक अच्छी जगह है," गाड़ीवान ने जवाव दिया और मोड़ मुड़ कर एक ढावे के सामने गाड़ी खड़ी कर दी, जिसके दरवाज़े के ऊपर बड़ा सा बोर्ड लगा था।

काउंटर के पीछे एक मोटा सा वारमैन केवल एक क़मीज़ पहने खड़ा था। वेरे मेज़ों के सामने कुर्सियों पर बैठे थे (उस वक़्त दूकान में कोई इक्का-दुक्का ही ग्राहक आये तो आये)। किसी ज़माने में वेरों की वर्दियां सफ़ेद रही होंगी, लेकिन इस वक़्त तक वे काफ़ी मैली हो चुकी थीं। इस असाधारण ग्राहक के अन्दर चले आने पर वे वड़े कुतूहल से उसकी ओर देखने लगे और सेवा करने के लिए उठ खड़े हुए। नेख़्लूदोव ने सोडा-वॉटर की एक बोतल लाने को कहा और खिड़की से थोड़ा हट कर एक छोटे से मेज़ के सामने वैठ गया जिस पर गन्दा सा कपड़ा विछा था।

एक और मेज पर दो आदमी वैठे वड़े दोस्ताना ढंग से कोई हिसाव जोड़ रहे थे। वार वार वे अपना माथा पोंछते। उनके सामने, मेज़ पर, चाय का सामान और एक सफ़ेद रंग की वोतल रखी थी। उनमें से एक काले वालों वाला था, जिसकी चांद गंजी हो रही थी। केवल सिर के पीछे वालों की हल्की सी झालर उग रही थी, जिस तरह की रागोजिन्स्की के

सिर पर थी। उसे देख कर नेख़्लूदोव को फिर बहनोई के साथ हुआ वार्तालाप याद आ गया और उसकी फिर इच्छा हुई कि उसे और अपनी बहिन से जा कर मिले।

"गाड़ी छूटने में इतना कम समय रह गया है कि यह मुमकिन नहीं हो सकेगा," वह सोचने लगा, "इससे बेहतर यही होगा कि मैं चिट्ठी लिख दूं।" उसने काग़ज़ मांगा, साथ ही लिफ़ाफ़ा और टिकट भी, और ठण्डे-ठण्डे सोडा-वॉटर के घूंट भरते हुए वह सोचने लगा कि क्या लिखे। लेकिन बार बार उसका मन भटक जाता और उसे सूझ न पड़ता कि किन शब्दों में पत्र लिखे।

"प्रिय नताल्या, कल तुम्हारे पति के साथ जो वार्तालाप हुआ उससे मन बड़ा उदास हो उठा है। इस मन:स्थिति में मेरे लिए यहां से चले जाना मुश्किल हो रहा है," उसने लिखा। "आगे क्या लिखूं? जो कुछ कल मैंने उससे कहा, उसके लिए माफ़ी मांगूं? पर मैंने वही कुछ कहा जो मैं महसूस करता हूं। वह समझेगा कि मैं अपने शब्द वापस ले रहा हूं। इसके अलावा उसका मेरे निजी मामलों में दख़ल देना... नहीं, नहीं... यह मुझसे न हो सकेगा।" और फिर उसके मन में उस आदमी के प्रति घृणा उठने लगी, जो उससे इतना विभिन्न था। वह चिट्ठी को ख़त्म नहीं कर पाया और काग़ज़ को तह कर के जेब में डाल लिया। फिर बिल अदा कर के बाहर निकल आया और गाड़ी में बैठ क़ैदियों की टोली की ओर जाने लगा।

गर्मी और भी बढ़ गई थी। ऐसा जान पड़ता था जैसे सड़क के पत्थरों और दीवारों में से आग निकल रही हो। पटरी पर चलते हुए महसूस होता था जैसे पांव झुलस रहे हों। गाड़ी पर चढ़ते समय जब उसने अपना हाथ गाड़ी के वार्निश हुए मड-गार्ड पर रखा तो उसे ऐसा जान पड़ा जैसे उसने आग को छू लिया हो।

घोड़ा धीरे धीरे चला जा रहा था मानो थका हुआ हो। सड़क ऊबड़-खाबड़ और धूल से भरी थी। घोड़े के खुर एक ही नीरस लय में सड़क पर पड़ रहे थे। गाड़ीवान बार बार ऊंघ जाता था। नेख़्लूदोव भावशून्य आंखों से सामने की ओर देखे जा रहा था। वह किसी चीज़ के बारे में भी नहीं सोच रहा था।

ढलुवां सड़क के एक बड़े से घर के फाटक के सामने कुछ लोग जमा

थे, पास ही में एक कॉनवाय का सिपाही खड़ा था। नेख़्लूदोव ने गाड़ीवान को रुकने के लिए कहा।

"क्या हुआ है?" उसने चौकीदार से पूछा।

"किसी क़ैदी को कुछ हो गया है।"

नेख़्लूदोव गाड़ी पर से उतर पड़ा, और उन लोगों के पास जाने लगा। सड़क के नुकीले पत्थरों पर एक बड़ी उम्र का क़ैदी पड़ा था—चौड़े कन्धे, लाल दाढ़ी, चिपकी नाक। उसके पांव ऊंचाई पर थे और सिर नीचे की ओर लुढ़का हुआ था। उसका चेहरा बहुत लाल हो रहा था। भूरे रंग का कुर्ता और पतलून पहने वह पीठ के बल लेटा था और चित्ती भरे हाथ ज़मीन के साथ लगे थे। उसकी लाल लाल आंखें आकाश पर लगी थीं। बड़ी बड़ी देर के बाद उसकी चौड़ी, ऊंची छाती फूल उठती और वह कराह उठता। उसके पास एक चिड़चिड़ा सा सिपाही, एक फेरीवाला, एक डाकिया, एक क्लर्क, छाता उठाये एक बुढ़िया औरत, और एक लड़का जिसके हाथ में खाली टोकरी थी, खड़े थे। लड़के के सिर पर छोटे छोटे बाल थे।

"ये लोग दुबले हो जाते हैं। जेलख़ाने में बन्द पड़े रहते हैं, इसलिए कमज़ोर हो जाते हैं। इन्हें जब बाहर भी लाते हैं तो ऐसी जलती धूप में," क्लर्क ने नेख़्लूदोव को सम्बोधित कर के कहा जो अभी अभी वहां पहुंचा था।

"यह शायद बचेगा नहीं, मर जायेगा," छाते वाली बुढ़िया ने दर्द भरी आवाज़ में कहा।

"इसके गले पर के फीते खोल देने चाहिए," डाकिया बोला।

सिपाही अपनी स्थूल, कांपती उंगलियों से, बड़े भद्दे ढंग से लाल, मांसल गर्दन पर फीते खोलने लगा। प्रत्यक्षतः वह उत्तेजित और घबराया हुआ था, फिर भी उसे यही ठीक लगा कि लोगों को वहां से हट जाने के लिए कहे—

"यहां भीड़ क्यों लगा रखी है? इस आदमी की हवा रोक रहे हो, पहले ही गर्मी क्या कम है?"

"इन्हें भेजने से पहले इनकी डाक्टरी जांच की जानी चाहिए थी। और कमज़ोर क़ैदियों को नहीं लाना चाहिए था। अधमरा कर के इसे बाहर निकाला है," क़ानून की जानकारी बघारते हुए क्लर्क ने कहा।

पुलिस के सिपाही ने फीते खोल दिये और फिर सीधा हो कर इधर-उधर देखने लगा।

"जाते क्यों नहीं हो, मैं पूछता हूं? तुम्हारा यहां क्या काम है? यहां कोई तमाशा हो रहा है, क्या?" उसने कहा और इस आशा से नेख़्लूदोव की ओर देखा कि वह उसका समर्थन करेगा। लेकिन नेख़्लूदोव से जब सहानुभूति प्राप्त नहीं हुई तो कॉनवाय के सिपाही की ओर घूम गया।

लेकिन कॉनवाय के सिपाही ने भी उस व्यग्रता की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वह अपने बूट की एड़ी उठा कर देख रहा था जो काफ़ी घिस गई थी।

"जिन लोगों का यह काम है उन्हें कोई परवाह ही नहीं... क्या लोगों को इस तरह जान से मार डालना चाहिए..."

"मान लिया क़ैदी है, पर फिर भी इनसान है," भीड़ में से लोगों की आवाज़ें आ रही थीं।

"इसका सिर ऊंचा उठा दो और इसके मुंह में थोड़ा पानी डालो," नेख़्लूदोव ने कहा।

"पानी मंगवा भेजा है," पुलिस के सिपाही ने कहा, फिर क़ैदी की बग़लों के नीचे से हाथ दे कर, उसने बड़ी मुश्किल से उसके शरीर को खींच कर थोड़ा ऊपर किया।

"यह भीड़ यहां क्यों बना रखी है?" एक दृढ़, अफ़सराना आवाज़ सुनाई दी। और एक पुलिस अफ़सर बेहद साफ़-सुथरा, चमकता कोट पहने और उससे भी ज़्यादा चमकते टॉप-बूट लगाये भीड़ के पास आने लगा।

"चलो, चलो यहां से। यहां खड़े रहने का कोई मतलब नहीं है," उसने भीड़ में खड़े लोगों को चिल्ला कर कहा। लेकिन अभी उसे स्वयं यह मालूम नहीं था कि भीड़ किस कारण वहां जमा थी।

जब नज़दीक पहुंचा और देखा कि एक क़ैदी मर रहा है तो उसने इस तरह सिर हिलाया मानो जो कुछ हो रहा है ठीक है और इसकी उसे पहले से ही आशा थी। फिर पुलिस के सिपाही को संबोधित कर के बोला—

"यह कैसे हुआ है?"

पुलिस के सिपाही ने रिपोर्ट दी कि जब क़ैदियों का काफ़िला जा रहा था, तो एक क़ैदी लुढ़क कर गिर पड़ा। कॉनवाय अफ़सर ने उसे वहीं छोड़ जाने का हुक्म दिया।

"तो ठीक है। इसे थाने में पहुंचाना होगा। एक गाड़ी बुलाओ।"

"एक चौकीदार गाड़ी लाने गया है," सैलूट मारते हुए सिपाही ने जवाब दिया।

क्लर्क ने तपिश के बारे में कुछ कहना शुरू किया।

"तुम्हारा क्या दख़ल है जी इस मामले में? चलो, भागो यहां से," पुलिस अफ़सर ने कहा और इस कठोरता से उसकी ओर देखा कि क्लर्क अपना सा मुंह ले कर रह गया।

"इसे थोड़ा पानी देना चाहिए," नेख़्लूदोव ने कहा।

पुलिस अफ़सर ने उसी कठोरता से नेख़्लूदोव की ओर भी देखा मगर कहा कुछ नहीं। जब चौकीदार पानी का एक भरा हुआ जग उठा लाया तो पुलिस अफ़सर ने सिपाही को हुक्म दिया कि थोड़ा पानी क़ैदी को पिला दो। सिपाही ने क़ैदी का झुका हुआ सिर ऊपर को उठाया और उसके मुंह में पानी डालने की कोशिश की, लेकिन क़ैदी निगल नहीं सकता था, इसलिए पानी मुंह में से निकल कर उसकी दाढ़ी से नीचे बहने लगा जिससे उसकी जॉकेट और गाढ़े की मैली क़मीज़ भीग गई।

"इसके सिर पर डाल दो," अफ़सर ने हुक्म दिया। इस पर सिपाही ने क़ैदी के सिर पर से गोल, चपटी टोपी उतारी और उसके घुंघराले लाल बालों तथा सिर के उस हिस्से पर जहां से बाल उड़े हुए थे, पानी उंडेलने लगा।

क़ैदी की आंखें और अधिक खुल गईं, मानो वह भयभीत हो उठा हो, लेकिन उसकी स्थिति वैसी की वैसी ही बनी रही। उसके गर्द भरे चेहरे पर से मैल की धारा बह निकली, पर उसका मुंह अब भी पहले की तरह सांस खींचने के लिए खुलता और इससे उसका सारा शरीर छटपटाने लगता।

"सुनते हो! इधर आओ, इस आदमी को ले चलो," पुलिस अफ़सर ने नेख़्लूदोव के गाड़ीवान को पुकार कर कहा। "इधर लाओ गाड़ी।"

"मेरी गाड़ी लगी हुई है," बिना सिर उठाये उदास आवाज़ में गाड़ीवान ने जवाब दिया।

"यह गाड़ी मैंने ले रखी है। पर आप बेशक इसे इस्तेमाल कीजिये। मैं तुम्हें पैसे दे दूंगा," मुड़ कर गाड़ीवान को सम्बोधित करते हुए नेख़्लूदोव ने कहा।

"खड़े देख क्या रहे हो?" अफ़सर ने चिल्ला कर कहा, "उठाओ इसे।"

सिपाही, चौकीदार और कॉनवाय के सिपाही ने हाथ दे कर मृतप्राय क़ैदी को उठाया और उसे गाड़ी की सीट पर बिठाने लगे। लेकिन वह बैठ नहीं सकता था। उसका सिर पीछे की ओर लटक गया और शरीर सीट पर से लुढ़क कर नीचे आ पड़ा।

"इसे लिटा दो," अफ़सर ने हुक्म दिया।

"चिन्ता नहीं कीजिये हुजूर। मैं इसी तरह इसे थाने तक पहुंचा दूंगा," पुलिस के सिपाही ने कहा और ख़ुद सीट पर बैठ कर, मरते क़ैदी को अपनी बग़ल में बिठा लिया और अपनी मज़बूत दायीं बांह उसकी कमर में डाल दी।

कॉनवाय के सिपाही ने क़ैदी के पैर उठा कर गाड़ी के अन्दर कर दिये। पैरों में मोज़े नहीं थे, केवल जेलख़ाने के जूते पड़े थे।

पुलिस अफ़सर ने इधर-उधर देखा। उसकी नज़र क़ैदी की गोल टोपी पर पड़ी। वह उसे उठा लाया और क़ैदी के सिर पर रख दी जिस पर से टप-टप पानी बह रहा था।

"चलो, जाओ!" उसने हुक्म दिया।

गाड़ीवान ने घूम कर ग़ुस्से से देखा, सिर हिलाया और गाड़ी मोड़ कर धीरे धीरे वापस थाने की ओर जाने लगा। सीट पर बैठा पुलिस का सिपाही बार बार क़ैदी को ऊपर की ओर खींचता परन्तु बार बार वह फिर नीचे की ओर फिसल जाता था। उसका सिर दायें-बायें झूल रहा था। कॉनवाय का सिपाही जो गाड़ी के साथ साथ चल रहा था, बार बार क़ैदी के पांव उठा कर गाड़ी के अन्दर करता। नेख़्लूदोव भी गाड़ी के पीछे पीछे जाने लगा।

३७

थाने के फाटक पर फ़ायर-ब्रिगेड का एक सिपाही सन्तरी की ड्यूटी दे रहा था। उसके पास से हो कर गाड़ी थाने के अहाते के अन्दर जा पहुंची और एक दरवाज़े के सामने जा कर रुक गई।

अहाते में फ़ायर-ब्रिगेड के कुछ सिपाही, आस्तीनें चढ़ाये, छकड़े जैसी

किसी चीज़ को धो रहे थे, और ऊंची ऊंची आवाज़ में बतिया और हंस रहे थे।

गाड़ी के अन्दर आने पर कुछेक सिपाही उसके आस-पास आ कर खड़े हो गये, और क़ैदी की निर्जीव देह को बग़लों के नीचे से हाथ दे कर गाड़ी में से निकालने लगे। उनके बोझ के नीचे गाड़ी की एक एक चूल चरमरा उठी।

जो सिपाही उसे थाने में ले कर आया था, वह नीचे उतरा, पहले अपने सुन्न हुए बाज़ू को झटकता रहा फिर सिर पर से टोपी उतार कर क्रॉस का चिन्ह बनाया। लाश को दरवाज़े में से ले जा कर सीढ़ियों पर ले जाया गया। नेख़्लूदोव भी पीछे पीछे जाने लगा। वे उसे एक मैले-कुचैले कमरे में ले गये जिसमें चार खाटें बिछी थीं। दो खाटों पर ढीला-ढाला लबादा पहने दो मरीज़ बैठे थे। एक का मुंह टेढ़ा हो रहा था और गर्दन पर पट्टी बन्धी थी, दूसरा तपेदिक़ का रोगी था। दो खाटें ख़ाली पड़ी थीं। उनमें से एक पर क़ैदी को लिटा दिया गया। एक छोटे से क़द का आदमी, जिसकी आंखें चमक रही थीं और जो बार बार भौंहें हिला रहा था, तेज़ तेज़ मगर हल्के हल्के क़दम रखते हुए उनके पास चला आया। उसने पहले क़ैदी की ओर देखा, फिर नेख़्लूदोव की ओर और सहसा ज़ोर से ठहाका मार कर हंसने लगा। यह आदमी पागल था जिसे थाने के अस्पताल में रखा हुआ था।

"वे मुझे डराना चाहते हैं, लेकिन वे मुझे कभी भी नहीं डरा पायेंगे," उसने कहा।

लाश उठाने वाले सिपाहियों के पीछे पीछे वही पुलिस अफ़सर और एक सहायक डाक्टर अन्दर चले आये।

सहायक डाक्टर ने पास आ कर क़ैदी का चित्ती भरा हाथ उठाया। हाथ अब भी नरम था, हालांकि बेहद पीला और ठण्डा पड़ चुका था। क्षण भर तक उसने उसे अपने हाथ में उठाये रखा, फिर छोड़ दिया। निर्जीव मांस की लोथ की तरह वह मृतक के पेट पर जा गिरा।

"ख़त्म हो गया," सहायक डाक्टर ने कहा, फिर भी औपचारिकता निभाने के लिए उसने उसकी पानी से सनी, अनधुली क़मीज़ के फीते खोले, फिर अपने घुंघराले बाल पीछे को झटक कर क़ैदी की छाती पर कान लगा कर उसके दिल की धड़कन सुनने लगा। क़ैदी की चौड़ी छाती पीली,

शिथिल पड़ गई थी। सब आदमी चुपचाप खड़े थे। सहायक डाक्टर फिर उठा, सिर हिलाया और अपनी अंगुलियों से एक एक कर के क़ैदी की पलकों को छुआ। नीली आंखें खुली थीं और एकटक देख रही थीं।

"मैं नहीं डरता, मैं नहीं डरता," पागल बार बार कहे जा रहा था और सहायक डाक्टर की ओर थूक रहा था।

"कहो?" पुलिस अफ़सर ने पूछा।

"कहना क्या है?" सहायक डाक्टर ने जवाब दिया, "इसे मुर्दाख़ाने में ले जाना होगा।"

"ठीक तरह जानते हो न?" अफ़सर ने पूछा।

"अब तक भी नहीं जानूंगा?" लाश की छाती पर क़मीज़ नीचे खींचते हुए सहायक डाक्टर ने कहा। "फिर भी मैं मात्वेई इवानोविच को बुला भेजता हूं। वह भी आ कर देख लें। पेत्रोव, जा कर उन्हें बुला लाओ।" और सहायक डाक्टर लाश के पास से हट गया।

"इसे मुर्दाख़ाने में ले जाओ," पुलिस अफ़सर ने हुक्म दिया, "उसके बाद सीधे दफ़्तर में पहुंचो, वहां तुम्हें दस्तख़त करना होगा," उसने कॉनवाय के सिपाही से कहा, जो घड़ी भर के लिए भी लाश से अलग नहीं हुआ था।

"जी, जनाब," सिपाही ने जवाब दिया।

पुलिस के सिपाही फिर लाश को उठा कर नीचे ले चले। नेख़्लूदोव उनके पीछे पीछे जाना चाहता था लेकिन पागल ने उसे रोक लिया।

"तुम मेरे ख़िलाफ़ साज़िश में नहीं हो, मैं जानता हूं। इसलिए तुम मुझे एक सिगरेट दे दो।"

नेख़्लूदोव ने अपना सिगरेट-केस निकाल कर एक सिगरेट दे दिया। पागल सारा वक़्त बड़ी तेज़ी से अपनी भौंहें हिला रहा था। वह नेख़्लूदोव को अपनी वार्ता सुनाने लगा कि किस तरह विचार-संकेत द्वारा वे उसे यातना पहुंचा रहे हैं।

"सब मेरे ख़िलाफ़ हैं, सभी नये नये तरीक़ों से मुझे सताते हैं, मुझे परेशान करते हैं।"

"माफ़ कीजिये," नेख़्लूदोव ने कहा और बिना कुछ और सुने कमरे में से निकल कर बाहर अहाते में चला गया। वह देखना चाहता था कि लाश को कहां रखा जायेगा।

सिपाही अपना बोझ उठाये अहाता पार कर चुके थे और एक तहख़ाने के दरवाज़े में से अन्दर जा रहे थे। नेख़्लूदोव उनके पास जाना चाहता था लेकिन पुलिस अफ़सर ने उसे रोक दिया—

"क्या काम है?"

"कुछ नहीं।"

"कुछ नहीं? तो जाओ यहां से।"

नेख़्लूदोव चुपचाप अपनी गाड़ी के पास वापस चला आया। गाड़ीवान बैठा ऊंघ रहा था। नेख़्लूदोव ने उसे उठाया और वे फिर स्टेशन की ओर जाने लगे।

अभी वे सौ ग़ज़ तक का फ़ासला भी तय नहीं कर पाये होंगे जब उन्होंने एक छकड़ा आते देखा। उसके साथ साथ भी एक कॉनवाय का सिपाही, बन्दूक़ उठाये चला आ रहा था। छकड़े के ऊपर एक और क़ैदी लेटा था। प्रत्यक्षतः वह अभी तक मर चुका था। छकड़े में वह पीठ के बल लेटा था। हर हिचकोले पर उसका मुंडा हुआ सिर, जिस पर से गोल, चपटी टोपी खिसक कर नाक तक आ गई थी, झटकता और छकड़े से टकराता। गाड़ीवान, मोटे मोटे बूट पहने, रासें हाथ में पकड़े, छकड़े के साथ साथ पैदल चल रहा था। पीछे पीछे पुलिस का एक सिपाही भी चला आ रहा था। नेख़्लूदोव ने अपने गाड़ीवान के कन्धे को छुआ।

"देखिये ये लोग क्या कर रहे हैं," घोड़ा खड़ा करते हुए गाड़ीवान ने कहा।

नेख़्लूदोव नीचे उतर पड़ा, और छकड़े के पीछे जाते हुए फिर एक बार सन्तरी के पास से हो कर थाने के फाटक में से अन्दर चला गया। आग बुझाने वाले सिपाही छकड़ा धो चुके थे, और अब उनकी जगह एक ऊंचा-लम्बा, दुबला-पतला फ़ायर-ब्रिगेड का कप्तान जेबों में हाथ डाले खड़ा था और बड़ी कठोर नज़रों से एक लाल-भूरे रंग के मोटे-ताज़े, ख़ूब पले हुए घोड़े को देखे जा रहा था, जिसे एक फ़ायरमैन अहाते में ऊपर-नीचे चला रहा था। यह आदमी फायर-ब्रिगेड का कप्तान था, इसकी टोपी पर नीले रंग का फीता लगा था। घोड़े का एक अगला पांव लंगड़ा रहा था। पास में ही एक सलोतरी खड़ा था, जिसे कप्तान बड़े ग़ुस्से से कुछ कह रहा था।

पुलिस अफ़सर भी वहीं पर खड़ा था। एक और मुर्दे को अन्दर लाते देख कर वह कॉनवाय के सिपाही के पास गया।

"इसे कहां से उठा लाये हो?" झुंझलाहट से सिर हिलाते हुए उसने पूछा।

"गोर्बातोव्स्काया पर से," सिपाही ने जवाब दिया।

"क़ैदी है?" फ़ायर-ब्रिगेड के कप्तान ने पूछा।

"जी।"

"आज यह दूसरी लाश है," पुलिस अफ़सर ने कहा।

"अजीव इन्तज़ाम है इन लोगों का! मगर आज गर्मी भी तो वहुत पड़ रही है," कप्तान ने कहा, फिर फ़ायर-मैन को सम्बोधित करते हुए जो लंगड़े घोड़े को चला रहा था, चिल्ला कर वोला—

"इसे ले जाओ और कोने वाले कटघरे में बांध दो। और, तुम, सुअर के वच्चे, मैं तुम्हें अच्छी तरह सिखाऊंगा किस तरह चंगे-भले घोड़ों को लंगड़ा करते हैं। शैतान कहीं के, इनकी क़ीमत तुमसे ज़्यादा है।"

सिपाहियों ने छकड़े में से लाश निकाली, उसी तरह जैसे पहली लाश निकाली गई थी और सीढ़ियां चढ़ कर अस्पताल में ले गये। मन्त्रमुग्ध की तरह नेख़्लूदोव भी उनके पीछे पीछे हो लिया।

"क्या काम है?" एक सिपाही ने पूछा।

लेकिन नेख़्लूदोव ने कोई उत्तर नहीं दिया और उसी तरफ़ चलता गया जिधर लाश को ले जाया जा रहा था।

पागल खाट पर वैठा, वड़े चाव से सिगरेट के कश लगा रहा था जो नेख़्लूदोव ने उसे दिया था।

"ओह, तुम फिर आ गये हो!" उसने कहा और हंसने लगा। जव उसकी नज़र लाश पर गई तो उसने मुंह वनाया और कहने लगा, "फिर ले आये! उफ़, मैं तंग आ गया हूं! पर मैं अव वच्चा तो नहीं हूं, क्यों?" और प्रश्नसूचक मुस्कान के साथ वह नेख़्लूदोव की ओर देखने लगा।

नेख़्लूदोव मृतक के चेहरे की ओर देखे जा रहा था जो पहले टोपी के कारण नज़र नहीं आ रहा था। जितना ही पहला क़ैदी कुरूप था उतना ही यह क़ैदी रूपवान था। उसका चेहरा और शरीर दोनों सुन्दर थे। उसका शरीर पूरे जोवन पर था। सिर आधा मुंडा होने के कारण उसकी आकृति कुछ विगड़ गई थी, लेकिन फिर भी, काली निर्जीव आंखों के ऊपर उसका ललाट जो वहुत चौड़ा नहीं था और हल्का सा ख़म खाता था, वड़ा सुन्दर था। इसी तरह काली काली मूंछों के ऊपर उसकी पतली

नाक बड़ी सुन्दर लगती थी। होंठ नीले पड़ने लगे थे, मगर अब भी उन पर हल्की सी मुस्कान खेल रही थी। चेहरे के निचले हिस्से पर छोटी सी दाढ़ी थी। जिस जगह सिर मुंडा हुआ था, वहां उसका एक कान नज़र आ रहा था जिसका आकार सुगठित और सुन्दर था। उसका चेहरा शान्त, गंभीर तथा दयालुता का भाव लिये हुए था।

इस मनुष्य में आत्मोत्सर्ग की सभी संभावनाओं को कुचल दिया गया था। उसके सुगठित हाथों और बेड़ी लगे पांवों को देखते हुए तथा उसके सुडौल शरीर के एक एक अंग की मजबूत मांसपेशियों को देखते हुए साफ़ नज़र आ रहा था कि यह कितना सुन्दर, शक्तिशाली तथा फुर्तीला मानव-जन्तु रहा होगा, और एक जन्तु के रूप में वह उस भूरे घोड़े से कहीं अधिक सम्पूर्ण था जिसके लंगड़े हो जाने पर फ़ायर-ब्रिगेड का कप्तान इतना झुंझला रहा था। फिर भी उन्होंने इसे मार मिटाया था। एक इन्सान मार डाला गया था, इसका तो उन्हें अफ़सोस क्या होगा, उन्हें तो इस बात का भी अफ़सोस नहीं था कि एक काम करने वाला पशु मारा गया था। अगर किसी के दिल में कोई भावना उठी भी थी तो झुंझलाहट की, कि एक और बखेड़ा खड़ा हो गया, और किसी तरह इस लाश को गलने-सड़ने से पहले किनारे लगाना होगा।

थाने के इन्स्पेक्टर के साथ डाक्टर तथा सहायक डाक्टर अस्पताल में आये। डाक्टर गठीले बदन का आदमी था, जिसने बढ़िया पांगी सिल्क का सूट पहन रखा था। उसकी पतलून उसकी मांसल जांघों के साथ चिपकी हुई थी। इन्स्पेक्टर छोटे क़द का स्थूलकाय आदमी था, चेहरा गेंद की तरह गोल और लाल। उसकी एक आदत थी कि वह गालों में हवा भर कर धीरे धीरे उसे छोड़ता था, जिससे उसका चेहरा और भी गोल और लाल हो उठता था। डाक्टर मृतक के साथ खाट पर बैठ गया, उसी ढंग से उसके हाथ उठा कर देखे जिस तरह पहले सहायक डाक्टर ने देखे थे, मृतक के दिल पर कान रखा और फिर अपनी पतलून ठीक करते हुए उठ खड़ा हुआ।

"इससे अधिक मरा हुआ क्या होगा," वह बोला।

इन्स्पेक्टर ने मुंह में हवा भरी और धीरे धीरे उसे बाहर निकालने लगा।

"किस जेलख़ाने का क़ैदी है?" उसने कॉनवाय के सिपाही से पूछा।

सिपाही ने नाम बताया, साथ ही याददहानी के लिए कहा कि क़ैदी के पांवों में अब भी बेड़ियां पड़ी हैं।

"मैं अभी उतरवा देता हूं। भगवान् की कृपा से लोहार तो हैं ही," इन्स्पेक्टर ने कहा। उसने गालों में फिर हवा भर ली थी और धीरे धीरे उसे निकालता हुआ दरवाज़े की ओर जाने लगा।

"यह क्योंकर हुआ है?" नेख्लूदोव ने डाक्टर से पूछा।

डाक्टर ने ऐनकों में से नेख्लूदोव की ओर देखा।

"क्यों हुआ है? तुम जानना चाहते हो कि लू लग जाने से ये क्यों मरते हैं? सुनो। सर्दी का सारा मौसम यह बिना रोशनी के और बिना व्यायाम के पड़े रहते हैं। फिर किसी आज के से दिन सहसा इन्हें बाहर धूप में निकाल लाया जाता है। बहुत बड़ी भीड़ में ये चलते हैं जिससे इन्हें ताज़ा हवा नहीं मिलती। नतीजा होता है कि लू लग जाती है।"

"यह बात है तो क्यों इन्हें इस तरह बाहर निकाला जाता है?"

"यह पूछना हो तो उन लोगों से जा कर पूछो जो इन्हें भेजते हैं। पर क्या मैं पूछ सकता हूं कि तुम कौन हो?"

"मैं, यों ही, इधर से गुज़र रहा था।"

"ओह, तो नमस्ते, मेरे पास वक़्त नहीं है," डाक्टर ने चिढ़ कर कहा। फिर पतलून को नीचे की ओर खींचते हुए वह मरीज़ों की खाटों की ओर जाने लगा।

"कहो कैसी तबीयत है?" उसने पीले चेहरे वाले मरीज़ से पूछा जिसका मुंह टेढ़ा हो रहा था और गर्दन पर पट्टी बन्धी थी।

इस बीच, पागल आदमी ने सिगरेट ख़त्म कर दिया था और अब खाट पर बैठा डाक्टर की दिशा में बराबर थूके जा रहा था।

नेख्लूदोव नीचे उतर कर अहाते में आ गया, जहां आग बुझाने वालों के घोड़े और कुछ मुर्ग़ियां घूम रही थीं। फिर पीतल की टोपी वाले सन्तरी के पास से हो कर फाटक के बाहर हो गया और गाड़ी में जा बैठा। गाड़ीवान फिर सो गया था।

३८

जब नेख्लूदोव स्टेशन पर पहुंचा तो सभी क़ैदी गाड़ी में बैठ चुके थे। गाड़ी के डिब्बों की खिड़कियों में सीखचे लगे थे। कुछ लोग जो क़ैदियों से मिलने आये थे प्लेटफ़ॉर्म पर खड़े थे, मगर उन्हें डिब्बों के नज़दीक जाने की इजाज़त नहीं थी।

कॉनवाय के सिपाही उस दिन बड़े परेशान थे। जेलख़ाने से स्टेशन को जाते हुए रास्ते में तीन और क़ैदी लू लग जाने से गिर कर मर गये थे। ये उन दो क़ैदियों के अलावा थे जिनकी लाशें ख़ुद नेख़्लूदोव ने देखी थीं। एक क़ैदी की लाश नज़दीक वाले थाने में पहुंचा दी गयी थी। दो क़ैदी स्टेशन पर मरे थे।* कॉनवाय के सिपाहियों को इसकी कोई चिन्ता नहीं थी कि पांच आदमी जो उनके दायित्व में थे, ज़िन्दा रह सकते थे, लेकिन वे मर गये। इसकी तो उन्हें कोई परवाह नहीं थी, हां, इस बात की चिन्ता ज़रूर थी कि क़ानूनी कार्यवाही करने में, जिसकी इन मामलों में ज़रूरत रहती है, कोई भूल न हो। लाशों को ठीक जगह पर पहुंचाना, क़ैदियों के काग़ज़ात और सामान हवाले करना, फ़हरिस्त में से उनके नाम काटना—जिस फ़हरिस्त के मुताबिक उन्हें नीज्नी नोवगोरद सौंपना था—ये सब काम परेशानी के थे, विशेषकर ऐसे दिन जब कि इतनी तेज़ गर्मी पड़ रही थी।

इसी काम में कॉनवाय के आदमी व्यस्त थे। और जब तक यह सब ख़त्म नहीं हो जाय वे नेख़्लूदोव तथा उन लोगों को जो क़ैदियों से मिलने की इजाज़त मांग रहे थे डिब्बों के नज़दीक नहीं जाने दे सकते थे। लेकिन नेख़्लूदोव ने एक सॉर्जेंट के हाथ गर्म किये और उसने फ़ौरन् जाने दिया। सॉर्जेंट ने जाने तो दिया मगर साथ ही कह दिया कि जितनी जल्दी हो सके, अपनी बात ख़त्म कर लें ताकि कहीं अफ़सर उन्हें देख न ले। कुल मिला कर अठारह डिब्बे थे। इनमें अफ़सरों के एक डिब्बे को छोड़ कर, बाक़ी सभी डिब्बे क़ैदियों से भरे पड़े थे। डिब्बों के सामने से गुज़रते हुए नेख़्लूदोव कान लगा कर सुनने लगा कि क़ैदी क्या बातें कर रहे हैं। सभी डिब्बों से शोर-गुल और गाली-गलोच के बीच बेड़ियों के खनकने की आवाज़ आ रही थी। लेकिन कहीं भी उसने क़ैदियों को अपने मृत साथियों की चर्चा करते नहीं सुना। बातें चल रही थीं तो बोरियों की, पीने के लिए पानी की, बैठने की जगह की कि कौन किस सीट पर बैठे।

नेख़्लूदोव ने एक डिब्बे में झांक कर देखा। दो कॉनवाय-सिपाही क़ैदियों

---

*सन् १८८० के आस-पास मास्को में एक दिन में पांच क़ैदी लू लग जाने से मर गये थे, जब उन्हें बुतीर्स्काया जेल से नीज्नी नोवगोरोद लाइन के स्टेशन तक ले जाया जा रहा था। **(लेव तोलस्तोय)**

की कलाइयों पर से हथकड़ियां उतार रहे थे। क़ैदी अपने बाज़ू आगे को बढ़ाते, एक सिपाही चाबी से हथकड़ी खोल देता, दूसरा हथकड़ियां संभाल रहा था।

मर्द क़ैदियों के डिब्बे पीछे छूट गये। अब स्त्रियों के डिब्बे शुरू हुए। इनमें से दूसरे डिब्बे में से एक औरत के कराहने की आवाज़ आ रही थी– "उफ़, उफ़, उफ़! हे भगवान्! उफ़, ओह! हे भगवान्!"

इस डिब्बे को लांघ कर नेख़्लूदोव तीसरे डिब्बे की सिपाही द्वारा दिखायी खिड़की के पास जा खड़ा हुआ। खिड़की के पास मुंह ले जाते ही उसे अन्दर से आती, पसीने की गन्ध से बोझल गरम गरम हवा महसूस हुई और औरतों की ऊंची ऊंची चीख़ती-चिल्लाती आवाज़ें साफ़ सुनाई देने लगीं।

सभी सीटों पर औरतें बैठी थीं, उनके चेहरे लाल और पसीने से तर हो रहे थे और सभी ऊंची ऊंची आवाज़ में बातें कर रही थीं। सभी ने क़ैदियों के लबादे और सफ़ेद रंग के जॉकेट पहन रखे थे। खिड़की पर नेख़्लूदोव को खड़े देख कर सभी का ध्यान उसकी ओर खिच गया। जो औरतें सबसे नज़दीक बैठी थीं उन्होंने बोलना बन्द कर दिया और उसके पास आ गयीं। मास्लोवा सामने वाली खिड़की के पास बैठी थी। उसने सफ़ेद जाकेट पहन रखी थी और सिर नंगा था। गोरी-चिट्टी फ़ेदोस्या, जो हर वक़्त मुस्कराती रहती थी, नेख़्लूदोव से थोड़ा नज़दीक बैठी थी। उसे पहचानते ही उसने मास्लोवा को कोहनी मारी और खिड़की की ओर इशारा किया।

मास्लोवा झट उठ खड़ी हुई और अपने काले बालों पर रूमाल बांधती हुई खिड़की के पास आ गई और एक सीखचे को पकड़ कर खड़ी हो गई। उसका चेहरा गर्मी के कारण लाल हो रहा था।

"आज बड़ी गर्मी है," ख़ुशी से मुस्कराते हुए उसने कहा।

"तुम्हें चीज़ें मिल गई?"

"हां, शुक्रिया।"

"किसी और चीज़ की ज़रूरत तो नहीं?" नेख़्लूदोव ने पूछा। डिब्बे में से ऐसी गर्म हवा आ रही थी, मानो आग की भट्ठी में से आ रही हो।

"मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं, शुक्रिया।"

"अगर पानी मिल सके तो," फ़ेदोस्या बोली।

"हां, अगर पानी मिल जाय तो बहुत अच्छा हो," मास्लोवा ने भी कहा।

"क्यों, क्या तुम्हारे डिब्बे में पानी नहीं है?"

"था, मगर चुक गया है।"

"मैं अभी किसी काँनवाय के आदमी से कहता हूं। हम अब नीज्नी नोवगोरोद पहुंच कर ही मिल पायेंगे।"

"क्यों, क्या तुम भी चल रहे हो?" मास्लोवा ने कहा, मानो उसे मालूम ही न हो, और नेख़्लूदोव की ओर देखा। उसका चेहरा ख़ुशी से चमक रहा था।

"मैं दूसरी गाड़ी से आऊंगा।"

मास्लोवा कुछ नहीं बोली, केवल एक ठण्डी सांस भरी।

"जनाब, क्या यह ठीक है कि बारह क़ैदी मारे गये हैं?" एक बुढ़िया क़ैदी ने पूछा जिसका चेहरा बड़ा कठोर और आवाज़ आदमियों की आवाज़ की तरह गहरी थी।

यह कोराब्ल्योवा थी।

"मैंने बारह आदमियों का तो नहीं सुना। हां, दो क़ैदियों को मैंने मरे देखा है," नेख़्लूदोव ने कहा।

"लोग कहते हैं कि बारह आदमियों को मार डाला है। क्या मारने वालों को सज़ा नहीं मिलेगी? ज़रा सोचो तो! शैतान कहीं के!"

"क्या कोई भी औरत बीमार नहीं पड़ी?" नेख़्लूदोव ने पूछा।

"औरतें ज़्यादा मज़बूत होती हैं," एक ठिंगने से क़द-बुत की औरत ने जवाब दिया और कह कर हंसने लगी। "केवल एक औरत ने यहां बच्चा जनने की ठान ली है। वहां पर है," उसने बग़ल वाले डिब्बे की ओर इशारा करते हुए कहा, जहां से कराहने की आवाज़ आ रही थी।

"तुमने पूछा है कि हमें कुछ चाहिए या नहीं," अपनी आह्लादपूर्ण मुस्कान छिपाने की कोशिश करते हुए मास्लोवा ने कहा, "क्या कोई ऐसा इन्तज़ाम नहीं हो सकता कि इस औरत को यहीं रख लिया जाय? वह इस वक़्त बड़ी तक़लीफ़ में है। अगर तुम अफ़सरों से कहोगे तो..."

"हां, मैं बात करूंगा।"

"एक और बात। क्या यह अपने पति – तारास – से नहीं मिल सकती?" आंखों से मुस्कराती फ़ेदोस्या की ओर इशारा करते हुए उसने पूछा। "वह भी तुम्हारे साथ जा रहा है न?"

"जनाव, वातें करने की इजाज़त नहीं है," एक कॉनवाय-सॉर्जेंट ने कहा। यह वह सॉर्जेंट नहीं था जिसने नेख़्लूदोव को निकल जाने दिया था।

नेख़्लूदोव डिब्बे के पास से हट गया और कॉनवाय-अफ़सर को ढूंढ़ने गया ताकि उससे प्रसव वाली औरत तथा तारास के बारे में पूछ सके। लेकिन वह कहीं भी नज़र नहीं आया, न ही कॉनवाय के किसी दूसरे आदमी से उसका पता चल सका। सव इधर-उधर भाग-दौड़ रहे थे, कुछ लोग किसी क़ैदी को कहीं ले जा रहे थे, कुछ अपने लिए रसद लेने भागे जा रहे थे, कुछ सिपाही अपना सामान डिब्बों में टिका रहे थे या एक महिला की सेवा करने में व्यस्त थे जो कॉनवाय-अफ़सर के साथ जा रही थी। वड़ी उपेक्षा से वे नेख़्लूदोव के सवालों का जवाब देते।

जब दूसरी घण्टी हो गई तव कहीं नेख़्लूदोव को कॉनवाय-अफ़सर नज़र आया। छोटे छोटे वाजुओं वाला यह अफ़सर ठूंठ जैसे हाथ से अपनी मूंछों को पोंछ रहा था जो उसके मुंह पर लटक रही थीं, और कन्धे विचकाते हुए किसी वात पर एक कॉर्पोरल पर नाराज़ हो रहा था।

"आपको क्या कहना है?" उसने नेख़्लूदोव से पूछा।

"यहां एक क़ैदी औरत है जिसे प्रसव-पीड़ा हो रही है। मैं सोच रहा था अगर..."

"होने दो प्रसव-पीड़ा। वाद में हम देख लेंगे।" और तेज़ी से अपने छोटे छोटे वाज़ू झुलाता हुआ वह भाग कर अपने डिब्बे की ओर जाने लगा।

उसी समय रेलगाड़ी का गार्ड, हाथ में सीटी पकड़े, सामने से गुज़रा। तीसरी घण्टी वजायी गई। प्लेटफ़ॉर्म पर खड़े लोगों तथा स्त्रियों के डिब्बों की ओर से रोने की आवाज़ें आने लगीं। गाड़ी चल दी। नेख़्लूदोव तारास के साथ खड़ा, एक एक डिब्बे को जाते देख रहा था जिनमें मुंडे हुए सिरों वाले क़ैदी खिड़कियों के सीखचों को पकड़े खड़े थे। आदमियों के डिब्बों के वाद औरतों का पहला डिब्बा सामने से गुज़रा। खिड़कियों पर स्त्रियों के सिर नज़र आ रहे थे, कुछ ने रूमाल वांध रखे थे, कुछ नंगे सिर थीं। फिर दूसरा डिब्बा गुज़रा, जिसमें से कराहने की आवाज़ अव भी आ रही थी। इसके वाद वह डिब्बा जिसमें मास्लोवा थी। और स्त्रियों के साथ वह भी खिड़की पर खड़ी थी, और उसके होंठों पर दयनीय मुस्कान खेल रही थी।

नेख़्लूदोव की गाड़ी छूटने में अभी दो घण्टे वाक़ी थे। उसे पहले ख़्याल आया था कि इस बीच अपनी वहिन से जा कर मिल आऊंगा, लेकिन आज सुवह से जो कुछ वह देख रहा था, उससे वह इतना उद्विग्न और क्लान्त महसूस करने लगा था कि फ़र्स्ट क्लॉस के रिफ़्रेशमेंट-रूम में जा कर एक सोफ़े पर बैठते ही उसे नींद ने आ घेरा। उसे स्वयं भी ख़्याल न था कि वह इतना थक चुका है। वहीं वैठे वैठे उसने करवट वदली और सिर के नीचे अपनी कोहनी रख कर सो गया।

एक वेरे ने उसे जगाया, जिसने ड्रेस-सूट पहन रखा था और हाथ में नेप्किन उठाये हुए था।

"हुज़ूर, क्या आप ही प्रिंस नेख़्लूदोव हैं? एक महिला आपको ढूंढ़ रही हैं।"

नेख़्लूदोव चौंक कर उठ वैठा, और आंखें मलते हुए याद करने लगा कि वह कहां पर है और सुवह क्या कुछ घटा था।

उसे अपनी कल्पना में क़ैदियों का काफ़िला नज़र आया, फिर लाशें, रेल के डिव्वे जिनकी खिड़कियों पर सीखचे लगे थे और अन्दर स्त्रियां वन्द थीं। एक स्त्री प्रसव-पीड़ा से परेशान थी लेकिन उसके पास कोई मदद करने वाला नहीं था, दूसरी सीखचों के वीच से उसे देख रही थी और उसके होंठों पर दयनीय मुस्कान थी। लेकिन जो सचमुच उसके सामने था वह सर्वथा भिन्न था। एक मेज़ पर वोतलें और गुलदान रखे थे, आतिशदान और प्लेट-प्याले सजे थे। उसके आस-पास फुर्तीले वेरे घूम रहे थे। कमरे के एक सिरे पर एक बड़ी आलमारी रखी थी जिसमें वोतलों की कतारें लगी थीं, फलों से भरे सरपोस रखे थे और काउंटर के पीछे वारमैन खड़ा था। वार पर खड़े मुसाफ़िरों की पीठें नज़र आ रही थीं।

नेख़्लूदोव उठ वैठा और अपने विचारों को व्यवस्थित करने लगा। उसने देखा कि कमरे में सभी लोगों की आंखें वड़े कुतूहल से दरवाज़े पर लगी हैं, जहां पर कुछ हो रहा था। एक जुलूस सा अन्दर चला आ रहा था। कुछ आदमी एक कुर्सी उठाये हुए थे जिस पर एक महिला वैठी थी। महिला का सिर किसी वेहद महीन कपड़े में लिपटा हुआ था। सवसे आगे आगे कुर्सी को थामे एक चोवदार चला आ रहा था, जो नेख़्लूदोव को

जाना-पहचाना लगा। सबसे पिछले आदमी को भी वह जानता था, जिसकी टोपी पर सुनहरी डोरी लगी थी। वह दरवान था। कुर्सी के पीछे पीछे एक बड़ी सलीकेदार, घुंघराले बालों वाली नौकरानी एप्रन लगाये चली आ रही थी। हाथ में एक पार्सल, छाते और चमड़े के गोल से बैग में कोई चीज़ रखे लिये आ रही थी। इसके बाद प्रिंस कोर्चागिन ने कमरे में प्रवेश किया, लटकते गाल, मिरगी की मारी गर्दन, वह सिर पर सफ़री टोपी लगाये हुए था। उसके पीछे मिस्सी, उसका चचेरा भाई मीशा और नेख़्लूदोव का एक परिचित ओस्टन चले आ रहे थे। यह ओस्टन कूटनीतिज्ञ था, लम्बी गर्दन, टेंटुआ बाहर को निकला हुआ, बड़ी हंसोड़ तबीयत का आदमी था, उसके चेहरे पर से भी हर वक़्त विनोदप्रियता झलकती थी। वह बड़े ज़ोरदार किन्तु मज़ाक़िया तरीक़े से मिस्सी को कोई बात सुना रहा था और मिस्सी मुस्करा रही थी। पीछे पीछे डाक्टर ग़ुस्से से सिगरेट के कश लगाता चला आ रहा था।

कोर्चागिन परिवार की शहर के निकट ज़मीन-जायदाद थी। उसे छोड़ कर परिवार प्रिंसेस की बहिन की जागीर में रहने जा रहा था, जो नीज्नी नोवगोरोद रेलमार्ग पर स्थित थी।

जुलूस–कुर्सी उठाने वाले, नौकरानी तथा डाक्टर–स्त्रियों के प्रतीक्षा-कक्ष में ग़ायब हो गया। कमरे में बैठे लोग अब भी बड़े कुतूहल और आदर के साथ उस ओर देखे जा रहे थे। बूढ़ा प्रिंस कमरे में ही रुक गया और एक मेज़ के सामने बैठ, बेरे को बुलाया और भोजन तथा शराब लाने को कहा। मिस्सी तथा ओस्टन भी रिफ़ेशमेंट-रूम में ही रुक गये। वे दोनों भी बैठने ही वाले थे जब उन्हें दरवाज़े के पास अपना कोई परिचित नज़र आ गया और वे उसकी ओर चले गये। दरवाज़े पर नताल्या रागोजिन्स्काया खड़ी थी।

नताल्या कमरे के अन्दर चली आई। उसके साथ आग्राफ़ेना पेत्रोव्ना थी। दोनों कमरे में इधर-उधर देखने लगीं। नताल्या को एक साथ ही मिस्सी और अपना भाई नज़र आ गये। भाई की ओर सिर हिला कर उसने अभिवादन किया और पहले मिस्सी से मिलने चली गई। परन्तु उसे चूमने के फ़ौरन् ही बाद भाई की ओर मुड़ गई।

"आख़िर तुम मिल ही गये," वह बोली।

मिस्सी, मीशा और ओस्टन से मिलने के लिए नेख़्लूदोव उठ खड़ा हुआ। मिस्सी से उसे मालूम हुआ कि वे अपनी मौसी के घर रहने के लिए

इसलिए जा रहे हैं कि उनके देहात वाले घर में आग लग गई थी। ओस्टन किसी दूसरे अग्निकाण्ड के बारे में कोई मज़ाक़िया क़िस्सा सुनाने लगा।

नेख़्लूदोव ने कोई ध्यान नहीं दिया और बहिन से बातें करने लगा।

"तुम आ गयीं, मुझे बेहद ख़ुशी हुई है।"

"मुझे तो आये काफ़ी देर हो गई है," उसने कहा, "आग्राफ़ेना पेत्रोव्ना मेरे साथ आयी हैं।" और आग्राफ़ेना पेत्रोव्ना की ओर इशारा किया जो बरसाती-कोट पहने और सिर पर बानेट लगाये कुछ दूर खड़ी थी, ताकि भाई-बहिन की बातों में बाधक न बने। उसने स्नेहपूर्ण तथा मर्यादित ढंग से झुक कर नेख़्लूदोव का अभिवादन किया। "हमने सब जगह तुम्हें तालाश किया।"

"और मैं यहां सोया पड़ा था। मुझे बेहद ख़ुशी है कि तुम आयीं," नेख़्लूदोव ने दोहरा कर कहा। "मैंने तुम्हें एक पत्र लिखना शुरू किया था।"

"क्या, सच?" उसने कहा और डर सी गयी। "किस बारे में?"

मिस्सी तथा उसके साथ के दोनों सज्जन यह देख कर कि भाई-बहिन के बीच किसी निजी मामले पर बातचीत होने जा रही है, वहां से हट गये। नेख़्लूदोव और उसकी बहिन खिड़की के पास एक सोफ़े पर जा बैठे, जिस पर मख़मल लगी थी और एक कम्बल, एक बक्स तथा कुछ और सामान रखा थे।

"कल तुम्हारे घर से लौटने के बाद मेरा मन करता था कि तुम्हारे पास लौट कर जाऊं और माफ़ी मांगूं, लेकिन मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि तुम्हारे पति क्या सोचेंगे," नेख़्लूदोव ने कहा, "कल तुम्हारे पति के साथ मेरा बर्ताव अच्छा नहीं था, और बाद में मुझे इसका बड़ा खेद हुआ।"

"मैं जानती थी, मुझे यक़ीन था कि तुम्हारा मतलब यह नहीं है," उसकी बहिन कहने लगी। "तुम जानते हो..."

उसकी आंखों में आंसू आ गये और उसने अपना हाथ भाई के हाथ पर रख दिया।

वाक्य स्पष्ट नहीं था, परन्तु नेख़्लूदोव पूर्णतया उसका अभिप्राय समझ गया, और उससे उसका दिल भर आया। अभिप्राय यही था कि जहां मैं अपने पति के प्रेमपाश में बंधी हूं, वहां तुम्हारे प्रति भी मेरा प्रेम बड़ा गहरा और महत्वपूर्ण है। इसलिए तुम दोनों के बीच कोई ग़लतफ़हमी पैदा हो जाय तो मेरे दिल को बहुत कष्ट पहुंचता है।

"धन्यवाद, धन्यवाद! उफ़, तुम नहीं जानतीं आज मैंने क्या देखा है!" नेख़्लूदोव ने कहा। सहसा उसे दूसरे मृतक क़ैदी का चेहरा याद हो आया। "आज दो क़ैदी मारे गये।"

"मारे गये? कैसे?"

"हां, मारे गये। इस तपती धूप में वे उन्हें बाहर ले आये, और दो को लू लग गई जिससे वे मर गये।"

"नामुमकिन है! क्या, आज? अभी?"

"हां, अभी। मैंने लाशें देखी हैं।"

"पर मारे कैसे गये? किसने उन्हें मारा?" नताल्या ने पूछा।

"जिन लोगों ने धकेल कर उन्हें बाहर निकाला, वे ही उनके क़ातिल थे," नेख़्लूदोव ने चिढ़ कर कहा। उसे महसूस हो रहा था कि वह भी इस बात को अपने पति की ही नज़रों से देख रही है।

"हे भगवान्!" आग्राफ़ेना पेत्रोव्ना के मुंह से निकला, जो उनके पास चली आयी थी।

"इन बदनसीब लोगों के साथ क्या बीत रही है, हमें इसका कुछ भी मालूम नहीं। लेकिन इसका पता चलना चाहिए," नेख़्लूदोव ने कहा और बूढ़े कोर्चागिन की ओर देखा, जो गले के साथ नेप्किन लगाये, सामने बोतल रखे बैठा था। उसी समय उसकी भी नज़र नेख़्लूदोव पर गई।

"नेख़्लूदोव," उसने पुकारा, "आओ और मेरे साथ बैठ कर थोड़ा खा-पी लो। लम्बे सफ़र से पहले यह अच्छा होता है।"

नेख़्लूदोव ने इन्कार कर के मुंह फेर लिया।

"पर तुम करोगे क्या?" नताल्या कह रही थी।

"जो बन पड़ेगा, करूंगा। मैं कुछ नहीं जानता, लेकिन इतना ज़रूर महसूस करता हूं कि कुछ करना होगा। और जो कुछ भी हो सका मैं करूंगा।"

"हां, मैं समझती हूं। और उनके बारे में?" मुस्करा कर कोर्चागिन की ओर इशारा करते हुए उसने पूछा। "क्या सचमुच तुम्हारा अब इनसे कोई वास्ता नहीं रहा है?"

"बिल्कुल। और मैं समझता हूं दोनों तरफ़ से किसी को भी इसका अफ़सोस नहीं होगा।"

"बड़े अफ़सोस की बात है। मुझे इसका बड़ा खेद है। मुझे मिस्सी

वड़ी प्यारी लगती है। पर, मान लिया कि तुम यहां रिश्ता नहीं करना चाहते, पर तुम अपने को वांधना क्यों चाहते हो?" उसने शर्मा कर पूछा। "तुम जा क्यों रहे हो?"

"मैं जा रहा हूं क्योंकि यह मेरा कर्तव्य है," नेख़्लूदोव ने गंभीर आवाज़ में रुखाई के साथ कहा, मानो इस वार्तालाप को ख़त्म कर देना चाहता हो।

पर उसे फ़ौरन् अपने रूखेपन पर लज्जा होने लगी। "जो कुछ मेरे मन में है, मैं इसे क्यों न वतला दूं। बेशक आग्राफ़ेना पेत्रोव्ना भी सुन ले," बुढ़िया नौकरानी की ओर देखते हुए वह सोचने लगा। उसके वहां मौजूद होने के कारण उसकी इच्छा और भी तीव्र हो गयी कि मैं अपना निश्चय बहिन को वता दूं।

"तुम्हारा मतलव है मैं कात्यूशा के साथ क्यों विवाह कर रहा हूं? वात यह है कि मैंने तो निश्चय कर लिया था परन्तु वह इन्कार कर रही है, वड़ी दृढ़ता से इन्कार कर रही है," उसने कहा और उसकी आवाज़ कांपने लगी। जव कभी भी वह इस विषय की चर्चा करता था तो उसकी आवाज़ कांपने लगती थी। "उसे मेरा क़ुर्वानी करना मंज़ूर नहीं, पर वह स्वयं क़ुर्वानी कर रही है। और उसकी स्थिति में यह वहुत वड़ी वात है। और मैं इस क़ुर्वानी को स्वीकार नहीं कर सकता, यदि यह क्षणिक आवेश है। इसलिए मैं उसके साथ जा रहा हूं। जहां पर वह रहेगी, वहीं पर मैं भी रहूंगा, और जहां तक वन पड़ा, मैं उसके वोझ को हल्का करने की कोशिश करूंगा।"

नताल्या कुछ नहीं वोली। आग्राफ़ेना पेत्रोव्ना ने प्रश्नसूचक नेत्रों से नेख़्लूदोव की ओर देखा और सिर हिला दिया। ऐन इसी वक़्त स्त्रियों के प्रतीक्षा-कक्ष से फिर वही जुलूस निकला। वही रूपवान चोवदार फ़िलिप तथा दरवान प्रिंसेस कोर्चागिना को उठाये ला रहे थे। उसने अपने वाहकों को रुक जाने को कहा और इशारे से नेख़्लूदोव को अपने पास वुलाया, फिर वड़े दयनीय तथा अलसाये ढंग से अपना गोरा, अंगूठियों भरा हाथ नेख़्लूदोव की ओर वढ़ाया, इस आशा और डर से कि नेख़्लूदोव के हाथ में उसका हाथ दव कर रह जायेगा।

"Epouvantable!"* उसने कहा। उसका अभिप्राय गर्मी से था।

---

*तोवा! (फ़्रेंच)

"मुझसे बर्दाश्त नहीं हो सकती। Ce climat me tue."* फिर कुछ देर तक वह जलवायु की चर्चा करती रही कि रूस की जलवायु बड़ी भयानक है। इसके बाद नेख़्लूदोव को न्योता दिया कि हमें मिलने ज़रूर आना, और फिर अपने नौकरों को आगे बढ़ने का इशारा करने लगी। "ज़रूर आना, भूलना नहीं," अपना लम्बूतरा चेहरा नेख़्लूदोव की ओर घुमा कर उसने कहा। और नौकर, पालकी उठाये, आगे बढ़ गये।

प्रिंसेस का जुलूस दायीं ओर को घूम गया जिस तरफ़ फ़र्स्ट क्लास के डिब्बे थे। नेख़्लूदोव, एक कुली से अपना सामान उठवा कर बायीं ओर जाने लगा। तारास भी उसके साथ था। उसने पीठ पर अपना झोला उठा रखा था।

"यह मेरा साथी है," तारास की ओर इशारा करते हुए नेख़्लूदोव ने अपनी बहिन से कहा। तारास की कहानी वह उसे पहले ही सुना चुका था।

"थर्ड क्लास में सफ़र करोगे क्या?" नताल्या ने कहा जब उसने देखा कि नेख़्लूदोव एक तीसरे दर्जे के डिब्बे के सामने रुक गया है और तारास और सामान वाला कुली डिब्बे के अन्दर चले गये हैं।

"हां, मुझे यही पसन्द है। मैं तारास के साथ जा रहा हूं," उसने कहा। "एक बात और। अभी तक मैंने अपनी कुज़्मिंस्कोये वाली ज़मीन किसानों को नहीं दी है। इसलिए अगर मैं मर गया तो मेरे बाद तुम्हारे बच्चे उस ज़मीन के वारिस होंगे।"

"ऐसी बातें नहीं कहो, द्मीत्री!" नताल्या बोली।

"अगर मैं उसे दे भी दूं तो बाक़ी सब कुछ उन्हीं का होगा। क्योंकि उमीद नहीं कि मैं शादी करूं। जो शादी कर भी लूं तो मेरे बच्चे-बाले नहीं होंगे। इसलिए..."

"द्मीत्री, ऐसी बात मुंह से मत निकालो," नताल्या ने कहा। पर नेख़्लूदोव ने देखा कि उसे यह सुन कर ख़ुशी हुई है।

कुछ दूर आगे, फ़र्स्ट क्लास के एक डिब्बे के सामने कुछ लोग अब भी उस पालकी को देखे जा रहे थे जिसमें प्रिंसेस बैठ कर आई थी। बहुत से मुसाफ़िर बैठ चुके थे। देर से आनेवाले मुसाफ़िर भागते हुए प्लेटफ़ॉर्म

---

*यह मौसम तो मेरी जान ही ले कर रहेगा। (फ़्रेंच)

के तख़्तों पर पांव खटखटाते गाड़ी की ओर लपक रहे थे। गार्ड डिब्बों के दरवाज़े बन्द करने लगे, मुसाफ़िरों को अन्दर बैठने के लिए और जिन्हें सफ़र नहीं करना था उन्हें डिब्बों में से बाहर निकलने के लिए कहने लगे।

नेख़्लूदोव डिब्बे के अन्दर दाख़िल हुआ। डिब्बा तप रहा था और उसमें से दुर्गन्ध आ रही थी। फ़ौरन् ही वह डिब्बे को लांघ कर, सिरे पर बने छोटे से प्लेटफ़ॉर्म पर जा खड़ा हुआ।

आग्राफ़ेना पेत्रोव्ना के साथ नताल्या, नये फ़ैशन का बॉनेट और केप लगाये, डिब्बे के नज़दीक खड़ी थी। प्रत्यक्षतः वह इस कोशिश में थी कि कोई बात करे।

जब लोग एक दूसरे से जुदा होते हैं तो अक्सर "écrivez"* कहते हैं। लेकिन दोनों भाई-बहिन इस शब्द का मज़ाक़ उड़ाया करते थे। इसलिए इस समय यह शब्द भी नताल्या मुंह से नहीं निकाल सकती थी। आत्मीयता की जिन कोमल भावनाओं से उनके दिल भर उठे थे, उन्हें पैसे के मामलों की चर्चा ने एक क्षण में छिन्न-भिन्न कर डाला था। वे फिर एक दूसरे से दूर हो गये थे। इसलिए जब गाड़ी चली और उदास, प्यार भरे मुख से मात्र "अलविदा, द्मीत्री, अलविदा!" कहने का समय आया, तो उसे ख़ुशी ही हुई। लेकिन डिब्बे के आगे निकलते ही उसने सोचा कि कैसे वह अपने पति को भाई के साथ हुआ वार्तालाप सुनायेगी और उसका चेहरा गंभीर और उद्विग्न हो उठा।

नेख़्लूदोव के हृदय में अपनी बहिन के प्रति कोमलतम भावनाएं थीं। उसने उससे कोई बात छिपायी भी नहीं थी। परन्तु फिर भी अब उसकी उपस्थिति में वह उदास और खोया खोया सा महसूस करने लगा था। इसलिए जब गाड़ी चली तो उसने भी चैन की सांस ली। उसे महसूस हुआ कि पहले वाली नताल्या, जो कभी उसके इतने निकट थी, अब नहीं रही, और उसके स्थान पर अब एक दासी खड़ी है जिसने अपने को एक अपरिचित अप्रिय, काले बालों से भरे आदमी के हाथों सौंप दिया है। इस तथ्य का प्रमाण उसे उस समय स्पष्ट मिल गया जब उसने किसानों को ज़मीन देने

---

* लिखना। (फ़्रेंच)

तथा अपनी विरासत की चर्चा की, और नताल्या का चेहरा उसे सुन कर खिल उठा था क्योंकि यह बात उसके पति के लिए विशेषतया रुचिकर थी।

इस कारण नेख़्लूदोव का दिल उदास हो उठा।

४०

तीसरे दर्जे के जिस डिब्बे में नेख़्लूदोव सफ़र कर रहा था वह आकार में काफ़ी बड़ा था। दिन भर चिलचिलाती धूप में खड़े रहने के कारण डिब्बा इस क़दर तप रहा था कि नेख़्लूदोव अन्दर नहीं जा सका, और पीछे ही छोटे से प्लेटफ़ॉर्म पर खड़ा रहा। लेकिन यहां पर भी हवा का नाम न था। केवल उस वक़्त जब शहर की इमारतें पीछे छूट गयीं तो हवा का झोंका आया, और तब कहीं नेख़्लूदोव को राहत मिली।

"हां, मारे गये," उसने फिर वही शब्द दोहराये जो उसने अपनी बहिन से कहे थे। उसकी कल्पना में, उन सभी दृश्यों के बीच जो आज उसने देखे थे, दूसरे मृत क़ैदी का चेहरा अपूर्व स्पष्टता से उभर आया। कैसा सुन्दर नौजवान था वह। उसके होंठों पर की मुस्कान, माथे से झलकता गंभीर भाव, मुंडी हुई, नीलावर्ण खोपड़ी, छोटा सा सुगठित कान, उसके चेहरे का एक एक नक़्श स्पष्ट नज़र आने लगा।

"उसकी हत्या तो की गई है लेकिन यह कोई नहीं जानता कि किसने हत्या की है।" वह सोच रहा था। "यही सबसे भयानक बात है। उसकी हत्या हुई है। सभी क़ैदियों की तरह उसे भी मास्लेन्निकोव के हुक्म पर बाहर लाया गया था। निश्चय ही मास्लेन्निकोव अपने को इसका अपराधी नहीं समझता होगा। उसने तो रोज़ की तरह यह आर्डर भी जारी कर दिया होगा। एक काग़ज़ पर, जिसके ऊपर शिरोनामा छपा होगा बेतुके ढंग से रेखाएं खींचते हुए उसने अपना दस्तख़त कर दिया होगा। जेलख़ाने का डॉक्टर तो अपने को उससे भी कम क़सूरवार समझता होगा, जिसने क़ैदियों को जांच कर के भेजा था। उसने तो बड़ी यथार्थता से अपना फ़र्ज़ निभाते हुए कमज़ोर क़ैदियों को अलग कर दिया था। उसे कैसे मालूम हो सकता था कि आज इतनी भयानक गर्मी पड़ेगी, या उन्हें धूप तेज़ हो जाने पर बाहर भेजा जायेगा, वह भी इतना बड़ा हुजूम बना कर? जेलख़ाने का इन्स्पेक्टर? लेकिन जेल के इन्स्पेक्टर ने तो केवल हुक्म की

तामील की है कि अमुक दिन, इतने जलावतनों और इतने क़ैदियों को—जिनमें इतनी स्त्रियां और इतने पुरुष होंगे—रवाना कर दिया जाय। कॉनवाय-अफ़सर का भी कोई दोष नहीं। उसका काम तो केवल निश्चित स्थान से अमुक संख्या में लोगों को लेना और दूसरे स्थान पर उतनी ही संख्या में पहुंचा देना था। वह उन्हें उसी ढंग से ले गया जैसे हमेशा ले जाया जाता है। उसे क्या मालूम था कि उन जैसे हट्टे-कट्टे आदमी गर्मी बर्दाश्त नहीं कर सकेंगे और मर जायेंगे। किसी का भी दोष नहीं। तिस पर भी इन आदमियों की हत्या हुई है, और हत्या करने वाले यही आदमी हैं जिन्हें हत्या का दोष नहीं दिया जा सकता।

"इस सारी बात का मूल कारण यह है," वह सोच रहा था, "कि ये लोग—गवर्नर, इन्स्पेक्टर, पुलिस-अफ़सर, पुलिस के सिपाही—यह समझते हैं कि कई ऐसी परिस्थितियां होती हैं जिनमें मनुष्यों के बीच मानवीय सम्बन्धों की ज़रूरत नहीं रहती। अगर यही लोग—मास्लेन्निकोव, इन्स्पेक्टर तथा कॉनवाय-अफ़सर—वास्तव में गवर्नर, इन्स्पेक्टर, अफ़सर इत्यादि न होते तो इतने बड़े हुजूम को ऐसी चिलचिलाती धूप में भेजने से पहले बीस बार सोचते, रास्ते में बीस बार रुकते, यदि किसी को लड़खड़ाते देखते, किसी की सांस फूलती देखते, तो उसे साये में ले जाते, उसके मुंह में पानी डालते, उसे आराम करने देते, और यदि फिर भी दुर्घटना हो जाती, तो उस पर दुःख प्रकट करते। लेकिन न केवल उन्होंने स्वयं दुःख प्रकट नहीं किया, उन्होंने और लोगों को भी नहीं करने दिया। कारण, इन्सानों के बारे में तथा इन्सानों के प्रति अपने कर्तव्य के बारे में उन्हें कोई चिन्ता नहीं थी। वे तो केवल अपने ओहदों की सोचते थे जिन पर वे चढ़े बैठे थे। इन ओहदों पर उनके जो फ़र्ज़ होते हैं, उन्हें वे मानवीय सम्बन्धों से ऊंचा समझते थे। मूल कारण यही है," नेख़्लूदोव के विचारों का तांता जारी रहा। "यदि एक बार हम इस बात को स्वीकार कर लें—घण्टे भर के लिए ही सही, अपवाद स्वरूप ही सही—कि मानव-प्रेम से अधिक महत्वपूर्ण कोई चीज़ हो सकती है, तो हम निश्चिन्त हो कर कोई भी अपराध करने पर उतारू हो सकते हैं, और हमारे हृदय में अपराधी होने की भावना तक नहीं उठेगी।"

नेख़्लूदोव अपने विचारों में यहां तक डूबा हुआ था कि उसे मौसम के बदल जाने का पता ही न चला। इस बीच एक बादल के टुकड़े ने सूरज

को ढक लिया था। पश्चिम की ओर से हल्के भूरे रंग की घटा तेज़ी से बढ़ती चली आ रही थी, और दूर खेतों तथा जंगलों पर अभी से मूसलाधार बारिश होने लगी थी। इस घटा से हवा में खुनकी आ गई थी। किसी किसी वक़्त बिजली कौंध जाती, और गाड़ी की खड़खड़ से बादलों का गर्जन मिलने लगता। बादल अधिकाधिक नज़दीक आ रहा था। वर्षा की तिरछी बूंदें, जिन्हें हवा उड़ा लायी थी, प्लेटफ़ॉर्म तथा नेख़्लूदोव के कोट पर गिरने और अपने निशान बनाने लगीं। नेख़्लूदोव हट कर प्लेटफ़ॉर्म के दूसरे सिरे पर जा खड़ा हुआ। ताज़ा, नमदार हवा में अनाज तथा भीगी धरती की गन्ध थी, जो मुद्दत से बारिश के लिए तरस रही थी। नेख़्लूदोव वहां खड़ा था और उसकी आंखों के सामने से बाग़, जंगल, रई के पीतवर्ण खेत, जई के हरे हरे खेत, आलुओं की खेती के लहलहाते गहरे हरे रंग के टुकड़े गुज़रते जा रहे थे। ऐसा लगता था जैसे हर चीज़ पर वार्निश कर दी गई हो। हरा रंग और भी गहरा हरा हो गया था, पीला और भी गहरा पीला, काला और भी गहरा काला।

"बरसो! ख़ूब बरसो!" नेख़्लूदोव बोला। प्राणदायिनी वर्षा से प्रफुल्लित बाग़ों और खेतों को देखते हुए नेख़्लूदोव का रोम रोम पुलकित हो उठा।

परन्तु बारिश का छींटा ज़्यादा देर तक नहीं रहा। बादल का कुछ हिस्सा तो बारिश में निचुड़ गया, बाक़ी आकाश में तिरता हुआ आगे निकल गया। शीघ्र ही गीली धरती पर फुहार की अन्तिम बूंदें पड़ने लगीं। सूरज फिर चमकने लगा, हर चीज़ चमक उठी, और पूर्व में—क्षितिज से कुछ ही ऊपर—उज्ज्वल इन्द्रधनुप खिंच गया, जिसमें बैंगनी रंग बड़ा स्पष्ट नज़र आ रहा था। केवल एक सिरे पर इन्द्रधनुप टूट गया था।

"हां, तो मैं क्या सोच रहा था?" नेख़्लूदोव ने मन ही मन कहा जब प्रकृति में ये परिवर्तन होने बन्द हो गये और गाड़ी एक दर्रे में से गुज़रने लगी जिसके दोनों ओर ऊंची ढलानें थीं। "मैं यही सोच रहा था कि ये सब लोग—इन्स्पेक्टर, कॉनवाय के आदमी—सभी सरकारी नौकर—अधिकतर अच्छे दिल के लोग होते हैं। यदि ये ज़ुल्म करते हैं तो इसलिए कि ये सरकारी नौकरी करते हैं।"

उसे याद आया: किस उपेक्षा से मास्लेन्निकोव ने उसकी बात सुनी थी जब उसने उसे बताया कि जेल में क्या कुछ होता है। इन्स्पेक्टर की

कठोरता, कॉनवाय-अफ़सर की क्रूरता जिसने उन लोगों को छकड़ों पर बैठने की इजाज़त नहीं दी जो उसके सामने हाथ जोड़ते रहे थे कि उन्हें बैठने दिया जाय। उसने इस बात की परवाह नहीं की कि एक स्त्री गाड़ी में प्रसव-पीड़ा में छटपटा रही है। "दया की साधारणतम भावना इनके दिल को छू नहीं पाती, उनके हृदय कठोर और अभेद्य बन चुके हैं, इसलिए कि वे सरकारी अफ़सर हैं। सरकारी अफ़सर होने के कारण उनके हृदय में अनुकम्पा की भावना उसी भांति प्रवेश नहीं कर पाती जिस भांति पत्थरों के इस फ़र्श में बारिश का पानी रिस नहीं पाता," दर्रे की दोनों ओर की ढलानों को देखते हुए, जिन पर तरह तरह के रंगों के पत्थर लगाये गये थे, नेख़्लूदोव सोच रहा था। पानी अन्दर रिसने के बजाय ऊपर से ही अनगिनत धाराओं के रूप में बह रहा था। "शायद ढलानों पर तो पत्थरों के फ़र्श बांधने की ज़रूरत हो, पर जिस धरती पर पेड़-पौधे न उग पाते हों, उसे देख कर तो दिल निराश हो उठता है। इसी धरती से अनाज, घास, पौधे-झाड़ियां, या वैसे ही पेड़ उग सकते हैं जैसे कि इस दर्रे की चोटी पर उग रहे हैं। यही स्थिति इन्सानों की भी है," नेख़्लूदोव सोच रहा था। "शायद इन गवर्नरों, इन्स्पेक्टरों, पुलिस के सिपाहियों की ज़रूरत रहती हो। पर यह स्थिति सचमुच बड़ी भयानक है जब मनुष्य एक दूसरे के प्रति प्रेम तथा सद्भावना के मुख्य मानवीय गुण से वंचित हों।"

"बात यह है," वह सोच रहा था, "कि ये लोग उस चीज़ को नियम मानते हैं जो वास्तव में नियम नहीं है, लेकिन उस अमर तथा सनातन नियम को जो भगवान् ने मनुष्य के हृदय पर अंकित कर दिया है, नियम नहीं मानते। यही कारण है कि जब मैं इन लोगों के साथ होता हूं तो मन उदास हो उठता है। मुझे इनसे डर लगता है। और वे सचमुच बड़े भयानक लोग हैं, डाकुओं से भी अधिक भयानक। एक डाकू के दिल में शायद फिर भी तरस हो, लेकिन इनके दिल में कोई तरस नहीं। जिस भांति इन पत्थरों पर किसी पौदे का अंकुर नहीं फूट सकता, इसी भांति इन लोगों के दिल में तरस नहीं उठ सकता। इसी कारण ये लोग इतने भयानक हैं। लोग कहते हैं कि पुगाचोव तथा राज़िन* भयानक थे। परन्तु ये उनसे हज़ार

---

*रूस में हुए दो किसान-विद्रोहों के नेता। राज़िन १७वीं शताब्दी में, और पुगाचोव १८वीं शताब्दी में हुआ।

गुना ज़्यादा भयानक हैं," वह मन ही मन सोचे जा रहा था। "अगर यह मनोवैज्ञानिक प्रश्न पूछा जाय कि कौन सा तरीक़ा अपनाने से हम अपने समय के ईसाई, दयालु स्वभाव परोपकारी लोगों को भयानक से भयानक अपराध करने पर उतारू कर सकते हैं, ताकि वे अपने को अपराधी न समझें, तो इसका एक ही जवाब है, कि मौजूदा व्यवस्था को बनाये रखिये, यह अपने आप होता जायेगा। ज़रूरत केवल इस बात की है कि इन लोगों को गवर्नर, इन्स्पेक्टर, पुलिस-अफ़सर बनाया जाय; यानी उन्हें पहले तो पूरा विश्वास हो कि सरकारी नौकरी नाम के धन्धे में काम करने वाले मनुष्यों को इस बात की खुली इजाज़त है कि वे अन्य मनुष्यों के साथ जड़ पदार्थों का सा व्यवहार करें, कि उनके साथ भाइयों का सा सम्बन्ध न रखें। और दूसरे यह सरकारी नौकरी उन्हें एक दूसरे के साथ इस भांति जोड़े रहे कि उनके अनेक कारनामों के नतीजों की ज़िम्मेवारी उनमें से किसी पर भी व्यक्तिगत रूप से न आये। यदि ये शर्तें न हों तो जो भयानक काम आज मैंने होते देखे हैं वे हमारे इस ज़माने में असंभव होते। इसका मूल कारण यही है कि लोग समझते हैं कि कई ऐसी परिस्थितियां भी होती हैं जिनमें हम इन्सानों के साथ बिना प्रेम के सलूक कर सकते हैं। पर वास्तव में ऐसी कोई परिस्थितियां नहीं हैं। हम जड़ पदार्थों के साथ, बिना प्रेम के व्यवहार कर सकते हैं—पेड़ काट सकते हैं, ईंटें बना सकते हैं, बिना किसी प्रेम भावना के लोहे पर हथौड़ा चला सकते हैं, लेकिन हम मनुष्यों के साथ प्रेम के बिना व्यवहार नहीं कर सकते। उसी भांति जिस भांति बिना सावधानी बरते हम मधुमक्खियों की देख-रेख नहीं कर सकते। यदि कोई आदमी मधुमक्खियों के साथ लापरवाही बरते तो उन्हें भी कष्ट देगा और स्वयं भी कष्ट उठायेगा। यही स्थिति मनुष्यों की है। इसके विपरीत हो भी नहीं सकता, क्योंकि पारस्परिक प्रेम मानवजीवन का बुनियादी नियम है। यह सच है कि एक मनुष्य अपने को काम करने पर तो मजबूर कर सकता है परन्तु प्रेम करने पर मजबूर नहीं कर सकता। पर इससे यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि मनुष्यों के साथ हमारा व्यवहार प्रेमशून्य हो, विशेषकर उस स्थिति में जब हमें उनसे किसी चीज़ की आशा हो। यदि तुम्हारे हृदय में प्रेम नहीं है तो चुपचाप बैठे रहो," नेख़्लूदोव सोच रहा था, "जड़ पदार्थों के साथ काम करो, अपने आपमें मगन रहो, और जो कुछ भी चाहो करो, केवल इन्सानों से कोई वास्ता नहीं रखना।

जब तुम भूख लगने पर ही भोजन करते हो तो तुम्हें लाभ होता है, कोई हानि नहीं पहुंचती, इसी भांति हृदय में प्रेम होने पर ही तुम्हारा वर्ताव मनुष्यों से उपयोगी भी होगा और उससे किसी को हानि भी नहीं पहुंचेगी। परन्तु जव भी तुम विना प्रेम की भावना के किसी मनुष्य के साथ व्यवहार करोगे—जैसा कि कल मैंने अपने वहनोई के साथ किया—तव और लोगों के प्रति तुम्हारे अत्याचार तथा वर्वरता की कोई सीमा नहीं रहेगी। इसका एक उदाहरण आज मैंने अपनी आंखों से देखा है। इतना ही नहीं, तुम्हारी अपनी यातना की भी कोई सीमा नहीं होगी। मेरा अपना जीवन इसका प्रमाण है। हां, हां, यही वात है," नेख़्लूदोव सोच रहा था। "यह सच है, हां, विल्कुल सच है!" उसने दोहरा कर कहा। चिलचिलाती गरमी के वाद अव नेख़्लूदोव ताज़ा हवा का आनन्द ले रहा था। वह यह भी महसूस कर रहा था कि उसने एक ऐसे सवाल को पूर्ण स्पष्टता से समझ लिया है जिसके साथ वह मुद्दत से जूझ रहा था।

४१

गाड़ी के जिस डिब्वे में नेख़्लूदोव सफ़र कर रहा था, वह मुसाफ़िरों से आधा भरा था। नौकर, कामगार, फ़ैक्टरी-मज़दूर, क़साई, यहूदी, दूकानदार, कामगारों की पत्नियां, एक फ़ौजी, दो महिलाएं—एक छोटी उम्र की दूसरी वड़ी उम्र की, जिसकी नंगी वांहों पर कंगन चमक रहे थे, और एक सज्जन जो कठोर मुद्रा धारण किये और तुर्रे वाली काली टोपी लगाये वैठा था, ये लोग सफ़र कर रहे थे। सीटों पर वैठने से पहले जो शोर-गुल होता है वह कव का शान्त हो चुका था, और अव सभी लोग चुपचाप वैठे थे, कुछ लोग सूरजमुखी के वीज खा रहे थे, कुछ सिगरेट पी रहे थे, कुछ वातें कर रहे थे।

तारास गलियारे के दायें हाथ वैठा था और वड़ा ख़ुश नज़र आ रहा था। नेख़्लूदोव के लिए उसने सीट रख छोड़ी थी, और अपने सामने वैठे एक हट्टे-कट्टे आदमी के साथ जो सूती कपड़े का कोट पहने हुए था, चहक चहक कर वातें कर रहा था। नेख़्लूदोव को वाद में मालूम हुआ कि यह शख़्स कोई माली था जो किसी नई जगह पर काम करने जा रहा था।

नेख़्लूदोव गलियारे में चला आया, और पेश्तर इसके कि तारास के पास पहुंच कर उसके साथ बैठ जाय, वह रास्ते में ही रुक गया, जहां एक सफ़ेद दाढ़ी वाला बुज़ुर्गाना शक़्ल का बूढ़ा आदमी बैठा एक युवा स्त्री से बातें कर रहा था। बुज़ुर्ग ने नैनकीन का कोट पहन रखा था, और स्त्री किसानों के लिबास में थी। स्त्री की बग़ल में, सातेक साल की एक छोटी सी, सुनहरी बालों वाली लड़की बैठी थी जिसने नई देहाती पोशाक पहन रखी थी और सिर पर रूमाल बांधे थी। वह सूरजमुखी के बीज खा रही थी। बूढ़े ने जब घूम कर देखा तो उसकी नज़र नेख़्लूदोव पर पड़ी। अपने कोट के लटकते किनारों को संभाल कर वह आगे खिसक गया ताकि नेख़्लूदोव के लिए उस चमकती सीट पर जगह बन जाय, और बड़े मैत्रीपूर्ण लहजे में बोला—

"आइये, यहां जगह है।"

धन्यवाद कह कर नेख़्लूदोव बैठ गया। स्त्री ने फिर से अपनी आपबीती सुनानी शुरू कर दी जिसमें थोड़ी देर के लिए बीच में बाधा पड़ गई थी। उसका पति शहर में था और उससे मिल कर वह अब गांव को लौट रही थी। वह बता रही थी कि शहर में उसके पति ने किस भांति उसका स्वागत किया।

"मैं जाड़े के आख़िर में त्योहार पर भी वहां गई थी, फिर भगवान् की कृपा से अब भी मिलने गई," वह कह रही थी, "और भगवान् ने चाहा तो क्रिसमस के समय फिर जाऊंगी।"

"बिल्कुल ठीक है," एक नज़र नेख़्लूदोव की ओर देख कर वृद्ध कहने लगा, "सबसे अच्छा तरीक़ा यही है कि उसे जा कर ख़ुद मिल आओ, वरना शहर में तो जवान आदमी को बिगड़ते देर नहीं लगती।"

"नहीं जी, मेरा आदमी ऐसा नहीं है। फ़िज़ूल बातों की तरफ़ उसका ध्यान ही नहीं जाता। वह तो बिल्कुल गौ है। जितने पैसे कमाता है, एक एक कोपेक तक घर भेज देता है। यह हमारी लड़की है। क्या बताऊं आपको अपनी बेटी से मिल कर वह कितना ख़ुश हुआ," औरत ने कहा और मुस्कराने लगी।

छोटी लड़की ने जो चुपचाप बैठी अपनी मां की बातें सुन रही थी, सिर उठा कर वृद्ध और नेख़्लूदोव की ओर देखा, मानो अपनी मां की बात का समर्थन करना चाहती हो। उसकी आंखों में स्थिरता तथा चतुराई

झलक रही थी। वह सूरजमुखी के वीज चवा रही थी और छिलके थूकती जा रही थी।

"और भी अच्छी बात है अगर वह इतना सियाना-समझदार आदमी है, तो," बूढ़े ने कहा। "वैसी करतूत तो नहीं करता न?" एक पति-पत्नी की ओर इशारा करते हुए उसने पूछा जो डिब्बे के दूसरी ओर वैठे थे और प्रत्यक्षतः फ़ैक्टरी-मज़दूर थे।

पति, सिर पीछे की ओर झुकाये और हाथ में बोतल पकड़े, अपने मुंह में वोद्का उंडेल रहा था। पत्नी हाथों में वैग उठाये, जिसमें से बोतल निकाली गई थी, बड़े दत्तचित्त नेत्रों से पति की ओर देखे जा रही थी।

"नहीं मेरा घर वाला तो शराव को हाथ नहीं लगाता। वह तो सिगरेट भी नहीं पीता," औरत ने कहा। वह ख़ुश थी कि अपने पति की प्रशंसा करने का उसे एक और मौक़ा मिल गया था। "उस जैसे तो विरले ही आदमी आपको मिलेंगे, ऐसा आदमी है वह," नेख़्लूदोव को भी संवोधित करती हुई वह वोली।

"इससे अच्छा और क्या होगा?" फ़ैक्टरी-मज़दूर की ओर देखते हुए बूढ़े ने कहा।

मज़दूर ने जितनी शराब पीनी थी, पी ली और बोतल पत्नी के हाथ में दे दी। औरत हंसी, सिर हिलाया, और ख़ुद भी बोतल को मुंह से लगा लिया। नेख़्लूदोव और बूढ़े को अपनी ओर देखते हुए पा कर मज़दूर नेख़्लूदोव से कहने लगा—

"क्या बात है, हुज़ूर? हम पी रहे हैं, इसलिए? लोग यह तो नहीं देखते कि हमें कैसा काम करना पड़ता है, मगर हम पीते कैसे हैं, यह सभी देखते हैं। मैं अपने पैसे से पी रहा हूं, साहिव। ख़ुद भी पी रहा हूं, और अपनी बीवी को भी पिला रहा हूं। और मुझे किसी का डर नहीं है।"

"हां, हां," नेख़्लूदोव ने झेंप कर जवाव दिया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहे।

"यह सच है हुज़ूर? मेरी बीवी बड़ी समझदार औरत है। मैं इससे सन्तुष्ट हूं, क्योंकि इसके दिल में मेरे लिए दर्द है। क्यों, मात्रा, मैं जो कुछ कह रहा हूं, ठीक है न?"

"यह लो, मुझे और नहीं चाहिए," बोतल वापस लौटाते हुए उसकी पत्नी ने कहा, "और यह बक बक क्या लगा रखी है?" वह बोली।

"लो देखो! यह बड़ी अच्छी औरत है, बहुत अच्छी, पर फिर झट से चीख़ने-चिचियाने लगती है। वह गाड़ी का पहिया होता है न, उसे ग्रीस नहीं दो तो जैसे चिचियाने लगता है। क्यों, माव्रा, मैं जो कहता हूं, ठीक है न?"

माव्रा हंसने लगी और हाथ को इस तरह झटका, मानो नशे में हो।

"लो, फिर लेक्चर देने लगा।"

"लो देखो! बड़ी अच्छी औरत है यह, बहुत अच्छी है। मगर एक बार बिगड़ जाय तो आसमान सिर पर उठा लेती है। क्यों माव्रा, मैं जो कुछ कह रहा हूं, ठीक है न? माफ़ कीजिये हुज़ूर, मैंने थोड़ी पी रखी है। किया क्या जाय?" फ़ैक्टरी-मज़दूर ने कहा और सोने की तैयारी करते हुए उसने अपनी मुस्कराती बीवी की गोद में सिर रख दिया।

नेख़्लूदोव थोड़ी देर तक उसी वृद्ध के पास बैठा रहा, और वृद्ध ने उसे अपनी सारी कहानी कह डाली। बूढ़ा अलाव-घर बनाता था, पिछले ५३ साल से अलाव-घर बना रहा था। इतने अलाव-घर बना चुका था कि उसे उनकी गिनती तक याद नहीं थी। अब वह आराम करना चाहता था, मगर उसे फ़ुर्सत नहीं थी। अपने लड़कों को काम पर लगवाने के लिए शहर आया था, और अब घर के बाक़ी लोगों से मिलने गांव जा रहा था। बूढ़े की कहानी सुन चुकने के बाद नेख़्लूदोव वहां से उठ कर अपनी जगह पर चला गया जो तारास ने उसके लिए संभाल कर रखी थी।

"आइये, हुज़ूर, आइये, बोरी यहां रख देते हैं," नेख़्लूदोव की ओर देखते हुए बड़े दोस्ताना लहजे में माली ने कहा जो तारास के सामने बैठा था।

"आइये बैठिये, जगह की क्या है। दिल में जगह होनी चाहिए," तारास ने मुस्कराते हुए कहा, और बोरी उठा कर खिड़की की ओर ले गया। बोरी का वज़न कम से कम एक मन रहा होगा, लेकिन वह उसे इस तरह उठा ले गया मानो फूल की सी हलकी हो। "बहुत जगह है। न भी हो तो आदमी कुछ देर खड़ा रह सकता है, सीट के नीचे घुस कर लेट सकता है। वहां बड़े आराम से सफ़र किया जा सकता है। लड़ने-झगड़ने की कोई ज़रूरत नहीं," तारास ने कहा। मैत्री और सद्भावना से उसका चेहरा दमक रहा था।

अपने बारे में तारास कहा करता था कि जब तक मैं दो घूंट शराब

न पी लूं मेरी ज़बान नहीं खुलती। शराव पी लूं तो मुझे ठीक ठीक शब्द मिलते रहते हैं, तव मैं किसी बात का भी व्योरा दे सकता हूं। और वास्तव में यह ठीक भी था। जब तारास नशे में नहीं होता, तो चुपचाप बैठा रहता। पर पी कर—और वह केवल कभी कभी और ख़ास ख़ास मौक़ों पर ही पिया करता था—वह मज़े से चहकने लगता। तव वह ख़ूब बोलता, बड़ी सरलता और सचाई के साथ, और सबसे बड़ी बात बहुत ही प्यार से जो उसकी नीली नीली, कोमलता भरी आंखों और उसके होंठों से कभी न उतरने वाली स्नेह भरी मुस्कान से झलक रहा होता।

आज भी वह मस्ती में था। नेख़्लूदोव के चले आने पर उसकी बातों का तांता थोड़ी देर के लिए टूट गया था। लेकिन वोरी को अपनी जगह पर टिका लेने के बाद तारास फिर बैठ गया, और अपने मजबूत हाथों को घुटनों पर टिकाये, और माली के चेहरे पर आंखें गाड़े, वह फिर अपनी कहानी कहने लगा। वह इस आदमी को, जिसके साथ उसका अभी अभी परिचय हुआ था अपनी पत्नी के बारे में बता रहा था, और एक एक बात का पूरा व्योरा दे कर—उसे साइवेरिया क्यों भेजा जा रहा था और वह क्यों उसके पीछे वहां जा रहा था।

यह क़िस्सा नेख़्लूदोव ने पहले कभी भी विस्तार के साथ नहीं सुना था, इसलिए वह बड़े ध्यान से सुनने लगा। जब वह पहुंचा तो तारास कहानी के उस हिस्से तक पहुंच चुका था जब जहर देने की कोशिश सरअंजाम हो चुकी थी और घर वालों को पता चल गया था कि यह फ़ेदोस्या की करतूत है।

"मैं अपना दुखड़ा रो रहा हूं," मित्रों की सी सद्भावना के साथ नेख़्लूदोव को सम्बोधित करते हुए तारास ने कहा। "ऐसा भला आदमी मिल गया है, बस बातें चल पड़ीं, सो अब इसे सारी कहानी सुना रहा हूं।"

"ठीक है," नेख़्लूदोव ने कहा।

"अच्छा तो, मैं कह रहा था, कि मामला इस तरह पता चल गया। मां ने वह रोटी उठा ली। 'मैं तो पुलिस-अफ़सर के पास जा रही हूं।' पर मेरा बाप बड़ा इन्साफ़-पसन्द आदमी है। 'मत जाओ, बीवी,' उसने कहा, 'लड़की तो अभी बच्चा है, उसे ख़ुद भी मालूम नहीं था कि वह क्या करने जा रही है। हमें दिल में से रहम को निकाल नहीं देना चाहिए। उसे अक़्ल आ जायेगी।' पर हे भगवान्! मां कहां सुनती थी। 'हम इसे

घर में रखेंगे तो यह हम सबको कीड़े-मकोड़ों की तरह मार डालेगी।' तो भाई मेरे, तुम्हें क्या बताऊं, वह सीधे पुलिस-अफ़सर से मिलने चली गई। वह तो फ़ौरन् धमक पड़ा। गवाहों को बुलाने लगा।"

"और तुम?" माली ने पूछा।

"मैं तो, भाई मेरे, उस वक़्त पेट में दर्द के मारे तड़प रहा था और क़ै पर क़ै कर रहा था। मेरी तो आन्तड़ियां बाहर आ रही थीं। अब बाप ने क्या किया, उसने गाड़ी जोड़ी, छकड़े में फ़ेदोस्या को बिठाया और पहले थाने और फिर मैजिस्ट्रेट के पास जा पहुंचा। और मेरी बीवी ने सारी की सारी बात मैजिस्ट्रेट को बता दी—उसे संखिया कहां से मिला, रोटी में कैसे गूंध कर मिलाया। 'यह काम तुमने क्यों किया?' मैजिस्ट्रेट ने उससे पूछा। कहने लगी, 'क्यों न करती? इस आदमी से मुझे नफ़रत है। साइबेरिया में रहना मंजूर, मगर इस आदमी के साथ मैं एक पल के लिए भी न रहूंगी,' वह मेरे बारे में कह रही थी," तारास ने मुस्करा कर कहा। "इस तरह उसने सब बात क़बूल कर ली। इसके बाद बस, जेलख़ाना, और क्या। बाप मेरा अकेला घर लौट आया। ऊपर से फ़सल पकने के दिन आ गये। इधर घर में मेरी मां ही अकेली औरत रह गई। और वह भी दुबली हो रही थी। अब हम सोच में पड़ गये कि करें तो क्या करें। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि उसे ज़मानत पर छुड़ा लें? तो बाप किसी अफ़सर से जा कर मिला। कुछ काम नहीं बना। फिर दूसरे के पास गया। इस तरह, मैं सोचता हूं वह पांच अफ़सरों के पास गया। हम तो तंग आ गये, सोचा छोड़ दें। पर एक दिन क्या हुआ कि हमारी मुलाक़ात एक दफ़्तर के बाबू से हो गई। ऐसा चतुर आदमी कि क्या कहूं। 'मुझे पांच रूबल दो और मैं उसे छुड़वा दूंगा,' कहने लगा। आख़िर तीन पर मान गया। मैंने क्या किया, बीवी के कपड़े उठाये, जो उसने अपने हाथ से बुने थे, और गिरवी रख कर पैसे बाबू के हाथ में दे आया। बस उसके काग़ज़ लिखने की देर थी," तारास इस तरह बोला, मानो गोली चलने की बात सुना रहा हो, "फ़ौरन् काम बन गया। उस वक़्त तक मेरी सेहत ठीक हो गई थी और मैं ख़ुद बीवी को लिवाने गया। तो क्या बताऊं, भाई मेरे, मैं शहर गया, घोड़ी एक जगह बांधी, हाथ में काग़ज़ लिया और सीधा जेलख़ाने के बाहर जा पहुंचा। 'क्या काम है?' 'काम यह है,' मैंने कहा, 'मेरी घर वाली को इधर तुमने जेल में रखा हुआ है।' 'तुम्हारे

पास काग़ज़ है?' मैंने काग़ज़ उसके हाथ में दिया। उसने उसे देखा। 'यहीं ठहरो,' वह बोला। मैं बेंच पर बैठ गया। उस वक़्त दोपहर हो गई थी। एक अफ़सर बाहर आया। 'तुम्हारा नाम विर्युकोव है?' 'जी।' 'ले जाओ इसे।' बस, दरवाज़े खुल गये और वह बाहर आ गई। उसने अपने ही कपड़े पहन रखे थे। 'चलो मेरे साथ।' 'क्या तुम पैदल आये हो?' 'नहीं, घोड़े पर आया हूं।' बस, मैंने सराय में जा कर अस्तबल वाले को पैसे दिये, घोड़ी खोली, छकड़ा जोड़ा, जितनी घास बच रही थी उठा कर छकड़े में रखी, ऊपर टाट बिछाया ताकि बीवी उस पर बैठ सके। वह ऊपर चढ़ आई, और शाल लपेट कर बैठ गई। और हम निकल पड़े। वह भी चुप और मैं भी चुप। जब हम घर के पास पहुंचे तो कहती है, 'मां कैसी है? जीती है?' 'हां, जीती है।' 'और बापू? जीता है?' 'हां, जीता है।' 'मुझे माफ़ कर दो, तारास,' कहने लगी, 'मुझसे बड़ी भूल हुई। मुझे ख़ुद भी मालूम नहीं था मैं क्या कर रही हूं।' मैंने जवाब दिया, 'बीती पर क्या रोना, मैंने तो कब का तुम्हें माफ़ कर दिया है।' बस, मैं और कुछ नहीं बोला। हम घर के अन्दर गये, और वह सीधी मां के पांव पड़ गई। मां कहने लगी, 'भगवान् तुझे बख़्श देंगे।' और बाप ने नमस्ते की और बोला, 'जो होना था हो गया। अब अच्छी तरह रहो। अभी यह सब बातें करने का वक़्त नहीं है। अभी फ़सल काटनी है।' उसने कहा, 'भगवान् की दया से जिस ज़मीन को खाद दी थी, वहां रई की भरपूर फ़सल हुई है, इतनी घनी कि हंसुआ नहीं चल सकता। डण्ठल एक दूसरे में उलझे हुए हैं, और बालियां अपने ही बोझ से दबी जाती हैं। फ़सल काटनी होगी। तुम और तारास कल जाओ और यह काम संभालो।' तो भाई मेरे, क्या बताऊं तुम्हें, उस घड़ी से वह काम में जुटी, और ऐसी जुटी कि सभी दंग रह गये। उस समय हमने तीन देस्यातीना भूमि लगान पर ली थी, और भगवान् की किरपा से जई और रई दोनों की भरपूर फ़सल हमने काटी। मैं काटता हूं तो वह गट्ठे बांधती है, और कभी कभी हम दोनों फ़सल काटते हैं। काम पर मेरा हाथ अच्छा चलता है, मैं काम से डरता नहीं हूं, पर वह मुझसे भी अच्छी है, जिस काम को हाथ लगाये, सोना सोना बना देती है। बड़ी चुस्त औरत है, छोटी उम्र की है, बड़ी ज़िन्दा-दिल है। और काम करने के लिए तो उसके दिल में ऐसी उमंग उठी कि मुझे उसका हाथ रोकना पड़ा। हम घर लौटते हैं तो हमारी

उंगलियां सूजी हुई हैं, बाज़ू दुखते हैं, पर वह है कि बजाय आराम करने के भागी हुई खत्ती में जा पहुंचती है और अगले दिन के लिए गट्ठे बांधने की पट्टियां तैयार करने लगती है। उसमें ऐसी तबदीली आयी कि क्या कहूं।"

"तो क्या तुम्हारे साथ भी प्यार-मुहब्बत से पेश आयी?"

"जरूरी बात है। वह सारा वक़्त मेरे साथ जुड़ कर रहती जैसे हम एक-जान हों। मेरे मन में जो भी ख़्याल उठे, उसे पहले पता चल जाय। यहां तक कि मां भी—उसे बड़ा क्रोध था—कहने लगी, 'हमारी फ़ेदोस्या तो इतनी बदल गई है कि पहचानी नहीं जाती। यह तो कोई दूसरी ही औरत जान पड़ती है।' एक बार हम दो छकड़े लाये—गट्ठों को लाद कर ले जाना था। वह और मैं आगे वाले छकड़े में थे। मैंने पूछा, 'तुमने वह काम क्यों किया, तुम्हें ख़्याल ही कैसे आया, फ़ेदोस्या?' तो कहती है, 'ख़्याल कैसे आया? सुनो, मैं तुम्हारे साथ नहीं रहना चाहती थी। मैं सोचती थी, मैं मर जाऊंगी मगर तुम्हारे साथ नहीं रहूंगी।' मैंने कहा, 'और अब, फ़ेदोस्या?' बोली, 'अब तो तुम मेरे दिल में बसते हो।'" तारास चुप हो गया। ख़ुशी की मुस्कान उसके होंठों पर खेलने लगी। फिर उसने सिर हिलाया, मानो हैरान हो उठा हो, "हम फ़सल काट कर घर लाये ही होंगे, और मैं सन भिगोने गया। जब लौट कर घर आया..." वह चुप हो गया और क्षण भर के लिए रुक गया, "तो आगे सम्मन आया पड़ा था। उसे अदालत के सामने पेश होना होगा। और हम भूल भी चुके थे कि किस बात के लिए उसे पेश होना है।"

"ज़रूर शैतान की शरारत है," माली कहने लगा, "भला कभी कोई इन्सान भी किसी जीव की आत्मा को नष्ट करेगा? हमारे यहां एक आदमी हुआ करता था..." माली कोई कहानी सुनाने जा ही रहा था जब गाड़ी की रफ़्तार सुस्त पड़ गई।

"जान पड़ता है कोई स्टेशन आ गया है," वह बोला, "मैं जा कर ज़रा गला तर करूंगा।"

बातचीत ख़त्म हो गई, और माली के पीछे नेख़्लूदोव भी चलता हुआ स्टेशन के गीले प्लेटफ़ॉर्म पर उतर आया।

उतरने से पहले नेख़्लूदोव ने देखा था कि स्टेशन के मैदान में कुछेक शानदार घोड़ा-गाड़ियां खड़ी हैं, किसी के साथ तीन घोड़े जुते हैं, और किसी के साथ चार। घोड़े ख़ूब पले हुए थे और उनके साज़ों पर घण्टियां लगी थीं जो बार बार खनक उठती थीं। गीले, काले पड़ गये लकड़ी के प्लेटफ़ॉर्म पर उतर कर उसने देखा कि फ़र्स्ट क्लॉस के डिब्बे के सामने कुछ लोग भीड़ बनाये खड़े हैं। उनमें ख़ास तौर पर नेख़्लूदोव की नज़र एक मोटी-ताज़ी महिला पर पड़ी, जिसने बरसाती कोट पहन रखा था और टोप में बड़े कीमती पंख लगा रखे थे। उसके साथ एक ऊंचे क़द का युवक खड़ा था। युवक की टांगें पतली पतली थीं और उसने साइकल चलाने वालों की पोशाक पहन रखी थी। वह अपना भीमकाय, ख़ूब पला हुआ कुत्ता साथ लाया था जिसके गले में कीमती पट्टा पड़ा था। इनके पीछे चोबदार, छाते और बरसातियां इत्यादि उठाये खड़े थे। एक कोचवान भी उनके साथ था। ये सब लोग किसी को लेने आये थे। मोटी-ताज़ी महिला से ले कर कोचवान तक, जो अपना ओवरकोट उठाये खड़ा था, इस दल में खड़े सभी के चेहरों पर धन-ऐश्वर्य और आत्मतुष्टि की छाप थी। उन्हें देखने के लिए फ़ौरन् ही भीड़ जमा हो गई, कुछ लोग अपना कुतूहल शान्त करने के लिए इकट्ठे हो गये, और कुछ चापलूसी करने के लिए। लाल टोपी वाला स्टेशन मास्टर, एक पुलिस का सिपाही, एक दुबली-पतली युवती जो रूसी पोशाक पहने थी, और गले में मनकों का हार डाले थी (यह युवती गर्मियों का सारा मौसम, हर गाड़ी के आने पर स्टेशन पर पहुंचती रही थी), एक तार बाबू, तथा कुछ मुसाफ़िर—स्त्रियां और मर्द—सभी इस भीड़ में शामिल थे।

नेख़्लूदोव ने कुत्ते वाले युवक को पहचान लिया। वह छोटा कोर्चागिन था जो स्कूल में पढ़ता था। मोटी महिला प्रिंसेस की बहिन थी और इसी के घर कोर्चागिन परिवार अब रहने के लिए आया था। गाड़ी के बड़े गार्ड ने, जो सुनहरी डोरी लगाये था और चमकते बूट पहने था, डिब्बे का दरवाज़ा खोला, और बड़े अदब से उसे पकड़े रहा। प्रिंसेस की सवारी बाहर निकली। लम्बूतरे मुंह वाली प्रिंसेस एक कुर्सी पर बैठी थी, जिसे तह किया जा सकता था, और जिसे फ़िलिप और एक सफ़ेद एप्रन वाले

चोबदार ने उठा रखा था। बड़े ध्यान से कुर्सी बाहर लाई गई। बहिनें एक दूसरी से मिलीं, और वार्तालाप में फ़ांसीसी वाक्यों की फुलझड़ियां छूटने लगीं। क्या प्रिंसेस बन्द गाड़ी में बैठ कर घर जाना पसन्द करेंगी या खुली गाड़ी में? आख़िर जुलूस उस दरवाज़े की ओर जाने लगा जिसमें से निकल कर लोग स्टेशन से बाहर जाते थे। सबसे पीछे प्रिंसेस की घुंघराले बालों वाली नौकरानी छाता और चमड़े का बैग उठाये चली जा रही थी।

नेख़्लूदोव दरवाज़े तक पहुंचने से पहले ही रुक गया और जुलूस के निकल जाने का इन्तज़ार करने लगा। वह इन लोगों से दोबारा नहीं मिलना चाहता था, क्योंकि मिलने पर उनसे फिर नये सिरे से विदा लेने का झंझट उठाना पड़ेगा।

आगे आगे प्रिंसेस, उसका बेटा, मिस्सी, डॉक्टर, नौकरानी बाहर निकले। बूढ़ा प्रिंस और उसकी साली पीछे रुक गये और आपस में बातें करने लगे। नेख़्लूदोव इनसे काफ़ी हट कर खड़ा था, इसलिए उनके वार्तालाप में से कुछेक टूटे-फूटे फ़ांसीसी वाक्य ही वह सुन पा रहा था। लेकिन, जैसा कि अक्सर होता है, एक वाक्य उसे बड़ी स्पष्टता से अब भी याद था, जो प्रिंस ने बोला था। न केवल वाक्य ही बल्कि उसका लहजा और प्रिंस की आवाज़ तक उसे याद रही थी।

"Oh! il est du vrai grand monde, du vrai grand monde,"* अपनी साली के साथ स्टेशन से बाहर निकलते हुए ऊंची, आत्मविश्वस्त आवाज़ में प्रिंस किसी के बारे में कह रहा था। पीछे पीछे गाड़ी के गार्ड और कुली बड़े अदब से चले आ रहे थे।

ऐन इसी वक़्त, स्टेशन के पीछे से, कामगारों का एक समूह निकला। छाल के जूते पहने और पीठ पर अपनी बोरियां और बकरी की खाल के कोट उठाये, वे अन्दर चले आये। हौले-हौले मगर दृढ़ता से क़दम रखते हुए वे सबसे नज़दीक वाले डिब्बे की ओर लपके, लेकिन अन्दर घुसने से पहले ही एक गार्ड ने फ़ौरन् उन्हें रोक दिया और आगे जाने को कहा। कामगार रुके नहीं, तेज़ तेज़ चलते हुए और एक दूसरे को धक्के देते, अगले डिब्बे की ओर बढ़ गये, और एक एक कर के उसके अन्दर घुसने लगे। पीठ

---

*ओह! वह तो सचमुच ऊंची सोसाइटी का आदमी है, सचमुच ही ऊंची सोसाइटी। (फ़्रेंच)

पर से लटकती बोरियां दरवाज़े के साथ अटक-अटक जातीं। लेकिन स्टेशन के दरवाज़े पर खड़े किसी दूसरे गार्ड की नज़र उन पर पड़ गई और वहीं से चिल्ला कर उसने उन्हें अन्दर जाने से रोक दिया। कामगार अन्दर जा चुके थे। मगर उसकी आवाज़ सुनते ही बाहर निकल आये, और फिर पहले की तरह तेज़ तेज़ चलते हुए और हौले हौले दृढ़ता से क़दम रखते हुए, अगले डिब्बे की ओर जाने लगे। यह वही डिब्बा था जिसमें नेख़्लूदोव बैठा था। यहां पर भी एक गार्ड उन्हें रोकने लगा, लेकिन नेख़्लूदोव बोल उठा कि अन्दर बहुत जगह है, और कामगारों को अन्दर जाने के लिए कहा। नेख़्लूदोव की बात मान कर वे अन्दर घुस आये। पीछे पीछे नेख़्लूदोव अन्दर आ गया। कामगार सीटों पर बैठने ही वाले थे जब तुर्रे वाली टोपी पहने सज्जन और दोनों स्त्रियां जिन्होंने अपनी टोपी में रिब्बन लगा रखा था, बिगड़ उठीं। कामगारों का उस डिब्बे में उनके साथ बैठना उन्हें अपना अपमान लगा। बड़े गुस्से में वे बोलने लगे और इन्हें बाहर निकालने की कोशिश करने लगे। थके-हारे कामगार, दुबले-पतले चेहरे धूप में तपे, फिर अपना सामान उठा कर बाहर जाने लगे। फिर उनकी बोरियां कभी सीटों के साथ, कभी दीवारों और दरवाज़ों के साथ उलझने लगीं। उनकी संख्या बीस के क़रीब रही होगी, और उनमें बूढ़े और जवान, कई तो बहुत ही छोटी उम्र के तरुण युवक, शामिल थे। प्रत्यक्षतः उन्हें महसूस हो रहा था जैसे वही क़सूरवार हों, और कहीं भी जा कर बैठने के लिए तैयार हों, भले ही वह जगह दुनिया के दूसरे कोने में ही क्यों न हो, नुकीली सलाख़ों पर ही क्यों न हो।

"अब कहां भागे जा रहे हो? गधे कहीं के! बैठ जाओ यहीं पर!" एक गार्ड उन्हें जाते देख कर चिल्लाया।

"Voilà encore des nouvelles!"* दो महिलाओं में से छोटी ने कहा। उसे पूर्ण विश्वास था कि इतनी अच्छी फ़्रांसीसी बोल कर वह ज़रूर नेख़्लूदोव का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर पायेगी। जिस महिला ने कंगन पहन रखे थे, बड़ी देर तक नाक-भौंह चढ़ाती रही, और कुछ इस क़िस्म की बात भी कही कि उसकी क़िस्मत में इन बदबूदार किसानों के साथ ही सफ़र करना लिखा था।

---

*यह क्या बला है! (फ़्रेंच)

जिस भांति कोई ख़तरा टल जाने से मन में ख़ुशी और सन्तोष का संचार हो जाता है, कामगार भी ऐसी ही भावनाओं का अनुभव करते हुए, कन्धों पर से बोझल बोरियां उतार उतार कर सीटों के नीचे टिकाने लगे।

जो माली अपनी जगह छोड़ कर तारास के साथ बातें करने आ बैठा था, अब उठ कर अपनी सीट पर वापस चला गया। इस तरह तारास के सामने दो आदमियों के बैठने की जगह ख़ाली थी, और उसकी बग़ल में एक आदमी की। इन जगहों पर तीन कामगार आ कर बैठ गये। लेकिन जब नेख़्लूदोव वहां बैठने आया तो उसके कुलीनों के से कपड़े देख कर वे बेहद घबरा गये, और वहां से उठने लगे। लेकिन नेख़्लूदोव ने उन्हें रोक दिया, और ख़ुद एक सीट की बाजू पर, जो गलियारे की ओर थी, बैठ गया।

इस पर एक कामगार ने, जिसकी उम्र लगभग ५० वर्ष की थी, एक युवा कामगार की ओर देखा। दोनों की आंखें मिलीं। वयस्क आदमी की नज़र में हैरानी थी। कुलीन आदमी तो फ़ौरन् डांटने लगते हैं और धक्के दे कर उठा देते हैं, मगर यह आदमी उन्हें अपनी सीट दे रहा है, यह देख कर वे चकरा गये थे। यहां तक कि उन्हें डर लगने लगा था कि इसका कोई बुरा नतीजा भी निकल सकता है। परन्तु जब नेख़्लूदोव बड़े सीधे-सादे ढंग से तारास के साथ बातें करने लगा, तो उन्हें शीघ्र ही यक़ीन हो गया कि इसके पीछे कोई साज़िश नहीं छिपी है। वे आश्वस्त महसूस करने लगे और एक लड़के को सीट पर से उठ कर बोरी पर बैठ जाने को कहा और नेख़्लूदोव से अपनी सीट पर बैठने का आग्रह करने लगे। शुरू शुरू में तो वयस्क कामगार, जो नेख़्लूदोव के ऐन सामने बैठा था, सकुचाता रहा, और डर कर छालदार जूतों समेत अपने पैर पीछे हटाता रहा कि कहीं वे इस कुलीन से न छू जायं, लेकिन थोड़ी देर बाद वह खुलने लगा, और आत्मीयता से बातें करने लगा, यहां तक कि वह दोस्तों की तरह नेख़्लूदोव के घुटने पर अपना हाथ तक मार देता ताकि वह ध्यान से उसकी बात को सुने। उसने अपनी सारी राम-कहानी कह डाली। वह पीट के दलदलों में काम करता था, और अब वहीं से आ रहा था। ढाई महीने तक काम करने के बाद अब अपनी पगार जेब में डाले, वह घर जा रहा था। पगार केवल दस रूबल बनती थी, क्योंकि काम शुरू करते समय वह कुछ पैसे पेशगी ले चुका था। अपने काम के बारे में बताते हुए वह कहने

लगा कि सुबह से शाम तक चौदह-चौदह सोलह-सोलह घंटे वे लोग सारा वक़्त पानी में खड़े रहते हैं, केवल बीच में दो घण्टे के लिए खाना खाने की छुट्टी होती है।

"जिन लोगों को इसकी आदत नहीं उन्हें ज़रूर तकलीफ़ होती है," वह कहने लगा, "पर आदत पड़ जाने पर कुछ पता नहीं चलता। हां, ख़ुराक अच्छी मिलनी चाहिए। शुरू शुरू में ख़ुराक बहुत बुरी मिलती थी। बाद में लोगों ने शिकायत की तो खाना अच्छा मिलने लगा, फिर काम करने में कोई तकलीफ़ न होती थी।"

फिर वह सुनाने लगा कि पिछले २८ बरस से वह बाहर काम कर रहा है, और हर महीने अपनी कमाई के सारे पैसे घर भेजता रहा है। पहले बाप को भेजता था, फिर अपने बड़े भाई को और अब अपने भतीजे को जो घर चला रहा था। साल भर में वह ५०–६० रूबल कमा लेता था, लेकिन अपने पर वह इनमें से केवल दो या तीन रूबल ही ख़र्च करता था—तम्बाकू या दियासलाई जैसी मनबहलाव की चीज़ों पर।

"मैं पापी हूं। जब थक जाता हूं तो कभी कभी वोद्का भी पी लेता हूं," उसने अपराधियों की तरह मुस्करा कर कहा।

फिर वह इधर-उधर की बातें सुनाने लगा कि घर पर औरतें कैसे काम करती हैं, और आज सुबह ठेकेदार ने रवाने से पहले उन्हें आधी बाल्टी वोद्का पीने को दी। और किस तरह एक कामगार मर गया था और दूसरा बीमार घर लौट रहा था। जिस बीमार मज़दूर की वह बात कर रहा था, वह उसी डिब्बे के एक कोने में बैठा था। वह छोटा सा युवक था, ज़र्द-पीला चेहरा और लगभग नीले होंठ। बार बार मलेरिया होने से उसकी हालत बुरी हो गई थी। नेख़्लूदोव उठ कर उसके पास चला गया, लेकिन नेख़्लूदोव को देख कर वह इतना व्याकुल हो उठा, और इतनी रुखाई से नेख़्लूदोव की ओर देखा कि नेख़्लूदोव ने उससे सवाल पूछ कर उसे परेशान करना नहीं चाहा। उसने केवल उसके बड़ी उम्र के साथी से कहा कि उसे कुनीन दे, और एक काग़ज़ पर कुनीन का नाम भी लिख दिया। वह उसके लिए पैसे भी देना चाहता था लेकिन बूढ़े कामगार ने नहीं लिये, और बोला कि वह ख़ुद दवाई के पैसे देगा।

"मैं भी बहुत घूमा हूं, बहुत दुनिया देखी है पर ऐसा कुलीन कभी नहीं देखा। बजाय घूंसा रसीद करने के इसने अपनी सीट तक हमें दे

दी," बूढ़े ने तारास से कहा। "जान पड़ता है कि कुलीन भी सब एक जैसे नहीं होते।"

और उनकी ओर देखते हुए नेख़्लूदोव सोच रहा था, "हां, यह बिल्कुल दूसरा, बिल्कुल नया संसार है।" इन पतले किन्तु बलिष्ठ शरीरों, मोटे मोटे, घर के बने कपड़ों, धूप में तपे, थके हुए, प्यार भरे चेहरों को देख रहा था और यह अनुभव कर रहा था कि वह एक नयी ही तरह के लोगों से घिरा है, जिनकी मेहनत-मशक़्क़त की ज़िंदगी सही मानों में इन्सान की ज़िंदगी है, जिसमें उनकी अपनी संजीदा दिलचस्पियां, ख़ुशियां और अपने ही दुख हैं।

"यह है वास्तव में le vrai grand monde," प्रिंस कोर्चागिन के शब्द याद करते हुए नेख़्लूदोव ने मन ही मन कहा। उसकी आंखों के सामने कोर्चागिन जैसे लोगों की निकम्मी, आरामतलब ज़िन्दगी का नक़्शा घूम गया। कितनी तुच्छ और ओछी हैं इनकी दिलचस्पियां।

नेख़्लूदोव को लगा जैसे कोई नया, अनजाना, और ख़ूबसूरत संसार उसकी आंखों के सामने खुल गया हो, और उसका मन ख़ुशी से भर उठा।

दूसरा भाग समाप्त

तीसरा भाग

१

क़ैदियों की जिस टोली के साथ मास्लोवा को भेजा गया था, उसने ३ हज़ार मील तक का सफ़र तय किया। पेर्म शहर तक मास्लोवा ग्राम मुजरिमों के साथ सफ़र कर रही थी जिन्हें ज़ाब्ता फ़ौजदारी में सज़ाएं दी गयी थीं। नेख़्लूदोव को वेरा वोगोदूख़ोव्स्काया ने यह परामर्श दिया था कि वेहतर होगा यदि मास्लोवा राजनीतिक क़ैदियों के साथ सफ़र करे। उसे स्वयं भी राजनीतिक क़ैदियों के साथ ही ले जाया जा रहा था। लेकिन पेर्म तक पहुंच कर कहीं नेख़्लूदोव ऐसा करने में सफल हुग्रा, ग्रौर ग्रागे का सफ़र मास्लोवा राजनीतिक क़ैदियों के साथ जाने लगी।

पेर्म तक का सफ़र मास्लोवा के लिए वड़ा कठिन रहा था, शारीरिक दृष्टि से भी ग्रौर नैतिक दृष्टि से भी। शारीरिक दृष्टि से इसलिए कि डिब्वे में भीड़ वहुत थी, गन्द था, ग्रौर कीड़े-मकोड़े थे जिन्होंने उसे चैन से नहीं वैठने दिया। नैतिक दृष्टि से इसलिए कि उसके साथ ग्रादमियों का व्यवहार भी कीड़े-मकोड़ों की तरह घृणित रहा था। हर स्टेशन पर नये नये लोग उसके पीछे पड़ जाते, उसे घेर लेते ग्रौर परेशान करते। क़ैदी ग्रौरतों ग्रौर क़ैदी मर्दों, वार्डरों तथा कॉनवाय के सिपाहियों के वीच लंपट संवंध तो एक रिवाज ही वन गये थे। इसलिए जो स्त्री ग्रपने को वचाये रखना चाहती हो ग्रौर ग्रपने शरीर का व्यापार न करना चाहती हो, उसे हर वक़्त ग्रत्यधिक सावधान रहना पड़ता था। मास्लोवा की स्थिति वड़ी कठिन थी। एक तो वह देखने में ग्रच्छी थी, दूसरे, लोगों को उसका ग्रतीत मालूम था, इसलिए ग्रादमियों की नज़र विशेषतया उस पर ग्रधिक जाती। सारा वक़्त उसका दिल धक्-धक् करता रहता, ग्रौर ग्रपने को वचाये रखने के लिए उसे विकट संघर्ष करना पड़ता। ग्रौर

अब जब वह घृणा से आदमियों का मुक़ाबला करती तो वे बिगड़ उठते। अब एक और भावना भी मास्लोवा के प्रति उनके मन में जागने लगी, वह थी द्वेष की भावना। परन्तु फ़ेदोस्या और तारास के साथ घनिष्ठता होने से स्थिति कुछ आसान हो गई थी। जब तारास को पता चला कि उसकी पत्नी को परेशान किया जा रहा है तो नीज्नी नोवगोरोद में जान-बूझ कर उसने अपने को पकड़वा दिया ताकि वह अपनी पत्नी का बचाव कर सके। और इस तरह अब वह भी क़ैदियों की तरह टोली के साथ सफ़र कर रहा था।

और जब मास्लोवा को राजनीतिक क़ैदियों के साथ जाने की इजाज़त मिल गई तब तो उसकी स्थिति हर तरह से सुधर गई। राजनीतिक क़ैदियों को सफ़र का ज़्यादा आराम था, उन्हें जगह ज़्यादा मिलती थी, भोजन बेहतर था और लोग भी उनके साथ इतनी रुखाई से पेश नहीं आते थे। इसके अतिरिक्त मर्दों ने उसे परेशान करना छोड़ दिया और अब उसे उसके अतीत की याद दिलाने वाला कोई न था, जिसे वह भूलने को इतनी आकुल थी। परन्तु सबसे बड़ा लाभ जो उसे हुआ वह यह था कि वह कुछेक ऐसे लोगों के सम्पर्क में आयी जिनका प्रभाव उसके आचार-विचार पर बहुत ही अच्छा और निर्णयात्मक रहा।

हर पड़ाव पर मास्लोवा राजनीतिक क़ैदियों के साथ रह सकती थी। लेकिन शरीर की मजबूत और स्वस्थ होने के कारण, जब क़ैदियों को एक पड़ाव से दूसरे पड़ाव तक पैदल ले जाया जाता तो उसे भी साधारण मुजरिमों के साथ पैदल चलना पड़ता था। इस तरह, तोम्स्क तक का सारा रास्ता उसने पैदल तय किया। टोली के साथ दो राजनीतिक क़ैदी भी थे। इनमें से एक तो मारीया पाव्लोव्ना श्चेतीनिना थी। यह वही सुन्दर और हल्के भूरे रंग की आंखों वाली लड़की थी जिसकी ओर नेख़्लूदोव का ध्यान उस रोज़ आकृष्ट हुआ था जब वह वेरा से जेल में मिलने गया था। दूसरा सिमनसन नाम का एक युवक था, अस्त-व्यस्त बाल, सांवला चेहरा और धंसी हुई आंखें। इसे भी नेख़्लूदोव ने वहां उसी दिन देखा था। यह आदमी अब याकूत्स्क प्रदेश को जा रहा था, जहां उसे निर्वासित किया गया था। मारीया पाव्लोव्ना इसलिए पैदल चल रही थी कि उसने छकड़े में अपना स्थान एक आम मुजरिम औरत को दे दिया था, जो गर्भवती थी। और सिमनसन इसलिए कि जो सहूलत

उसे अपने वर्ग के कारण मिल रही थी, उसका वह लाभ नहीं उठाना चाहता था। सुबह तड़के ही आम मुजरिम क़ैदियों के साथ ये तीनों पैदल चल देते। बाद में राजनीतिक क़ैदी, छकड़ों में बैठ कर आते। सफ़र की आख़िरी मंज़िल भी इसी नियम के अनुसार तय हुई, और टोली एक बड़े शहर में जा पहुंची जहां उसका दायित्व किसी नये कॉनवाय अफ़सर को सौंप दिया गया।

सुबह का वक़्त था, और सितम्बर का महीना। कभी बारिश पड़ने लगती, कभी बर्फ़, और किसी किसी वक़्त सहसा तेज़, ठण्डी हवा के झोंके आने लगते। पड़ाव-घर के आंगन में क़ैदियों की टोली (लगभग चार सौ आदमी और पचास औरतें) अभी से खड़ी थी। कुछ क़ैदी कॉनवाय अफ़सर के इर्दगिर्द भीड़ लगाये थे जो क़ैदियों के मुखियों को दो दो दिन का जेब ख़र्च दे रहा था। बाक़ी क़ैदी खोंचे वाली स्त्रियों से खाने की चीज़ें ख़रीद रहे थे, जिन्हें आंगन में आ कर सौदा बेचने की इजाज़त दे दी गई थी। पैसों के खनकने, क़ैदियों की आवाज़ों, सौदा बेचने वाली औरतों की चीख़-पुकार से वातावरण गूंज रहा था।

कात्यूशा और मारीया पाव्लोव्ना भी घर के अन्दर से निकल कर आंगन में आ गईं। दोनों ने ऊंचे बूट और फ़र के छोटे छोटे कोट पहन रखे थे और सिर पर शाल लपेटे हुए थीं। यहीं पर खोंचे वाली औरतें, तेज़ हवा से बचने के लिए आंगन की उत्तरी दीवार की आर में खोंचे लगाये बैठी थीं, और अपना अपना सौदा बेचने की फ़िक्र में एक दूसरी से लड़-झगड़ रही थीं। ताज़ा पाव-रोटी, गोश्त के समोसे, मछली, वर्मिसेली, दलिया, कलेजी, गोमांस, अण्डे, दूध—ये चीज़ें वे बेच रही थीं। एक औरत तो पूरा का पूरा सुअर भून कर ले आयी थी।

टोली के चलने के इन्तज़ार में सिमनसन भी आंगन में खड़ा था। उसने रबड़ की जॉकेट, और रबड़ के गैलोश चढ़ा रखे थे और उन्हें तस्मों के साथ अपने ऊनी मोज़ों से बांधा था (सिमनसन मांस नहीं खाता था, इसलिए जानवरों को मार कर उनके चमड़े से तैयार की गयी चीज़ों को इस्तेमाल नहीं करता था)। सायबान के पास खड़ा वह अपनी नोट-बुक में एक बात दर्ज कर रहा था जो उसे अभी अभी सूझी थी। उसने लिखा—"यदि कोई कीटाणु मनुष्य के नाख़ुन का निरीक्षण करने की क्षमता रखता हो तो वह उसे निष्प्राण पदार्थ कहेगा। इसी तरह इस पृथ्वी

की उसकी कठोर परत को देख कर हम मानव उसे निष्प्राण कह देते हैं। यह गलत है।"

मास्लोवा ने अण्डे, पाव-रोटी, मछली, और रस्क ख़रीदे, और वह उन्हें अपने बैग में डाल ही रही थी, उधर मारीया पाव्लोव्ना खोंचे वाली औरतों को पैसे दे रही थी जब क़ैदियों में हलचल सी मच गई। सभी एकदम चुप हो गये और अपनी अपनी जगह पर लाइनों में खड़े हो गये। अफ़सर बाहर निकल आया और रवानगी से पहले आख़िरी हुक्म दे दिये।

सब बात रोज की तरह चल रही थी। क़ैदियों की गणना कर ली गई, उनके पांवों में पड़ी बेड़ियों को अच्छी तरह से ठोक-बजा कर देख लिया गया। जिन क़ैदियों को दो दो की लाइन में जाना था, उनके हाथ एक दूसरे से हथकड़ियों द्वारा बांध दिये गये। परन्तु सहसा अफ़सर की क्रोध भरी, अफ़सराना आवाज सुनाई दी, और साथ ही किसी को घूंसा पड़ने की, और एक बच्चे के रोने-चिल्लाने की। क्षण भर के लिए सभी चुप हो गये, फिर लोगों के धीरे धीरे बड़बड़ाने की खोखली सी आवाज सुनाई देने लगी। मास्लोवा और मारीया पाव्लोव्ना उस ओर गयीं जहां से आवाज आयी थी।

२

वहां पहुंचने पर मारीया पाव्लोव्ना और कात्यूशा ने यह दृश्य देखा: अफ़सर–सुनहरी रंग की मूंछों वाला, हट्टा-कट्टा आदमी–भौंहें सिकोड़े, अपने दायें हाथ की हथेली मल रहा था, और अश्लील गालियां बक रहा था क्योंकि उसने अभी अभी एक क़ैदी के मुंह पर थप्पड़ रसीद किया था जिससे उसके हाथ को चोट पहुंची थी। उसके सामने एक ऊंचे क़द का दुबला-पतला क़ैदी खड़ा एक हाथ से अपने मुंह पर से ख़ून पोंछ रहा था और दूसरे हाथ से एक चीख़ती-चिल्लाती लड़की को उठाये हुए था। लड़की शाल में लिपटी हुई थी। क़ैदी का सिर आधा मुंडा हुआ था, उसका कोट और पतलून क़द के लिए बहुत छोटे थे।

"मैं दूंगा तुम्हें (इसके बाद अश्लील गालियां)। मैं तुम्हें बताऊंगा आगे से जवाब कैसे दिया जाता है (और गालियां)। इसे औरतों के हवाले कर दो!" अफ़सर ने चिल्ला कर कहा, "फ़ौरन् पहनो!"

तोम्स्क से चलने के बाद से वह क़ैदी सारा रास्ता अपनी नन्हीं बेटी को उठा कर ला रहा था (इस क़ैदी को इसकी गांव की पंचायत ने निर्वासन की सज़ा दी थी)। तोम्स्क में उसकी पत्नी टाइफ़स से मर गई थी। अब अफ़सर ने हुक्म दे दिया था कि क़ैदी को हथकड़ियां डाल दी जायं। क़ैदी ने हुज्जत की और कहा कि हथकड़ियां लगाये हुए वह बच्चे को नहीं उठा सकेगा। अफ़सर का मिज़ाज बिगड़ा हुआ था, वह चिढ़ उठा और क़ैदी को पीट दिया।*

जिस क़ैदी को चोट लगी थी उसके पास एक कॉनवाय का सिपाही और एक काली दाढ़ी वाला क़ैदी खड़े थे। क़ैदी के एक हाथ पर हथकड़ी लगी थी, और वह भौंहों के नीचे से, उदास आंखों से कभी अफ़सर की ओर और कभी ज़ख़्मी क़ैदी की ओर–जिसने लड़की को उठा रखा था–देखे जा रहा था। अफ़सर ने फिर सिपाही को हुक्म दिया कि लड़की को ले ले। क़ैदी और भी अधिक बड़बड़ाने लगे।

"तोम्स्क से ले कर यहां तक, सारा रास्ता तो हथकड़ियां नहीं पहनायी गयी हैं, और अब..." पीछे कहीं से किसी ने फटी आवाज़ में कहा।

"आख़िर यह बच्ची है, पिल्ला तो नहीं।"

"बच्ची का क्या करे?"

"यह क़ानून नहीं है," कोई और बोला।

"किसने कहा है?" मानो अफ़सर को सांप ने डंस लिया हो, उसने चिल्ला कर कहा और क़ैदियों की भीड़ के अन्दर घुस गया। "मैं तुम्हें क़ानून सिखाऊंगा। किसने कहा है? तुमने? तुमने?"

"सभी यही कह रहे हैं, क्योंकि..." एक छोटे क़द के, चौड़े मुंह वाले क़ैदी ने कहा।

उसके मुंह से ये शब्द निकल नहीं पाये थे कि अफ़सर ने दोनों हाथों से उसके मुंह पर प्रहार किया।

"बग़ावत? हैं? मैं तुम्हें सिखाऊंगा बग़ावत किसे कहते हैं। मैं तुम

---

*इस घटना का विवरण द० अ० लिन्येव ने अपनी पुस्तक 'देश-निकाला' में दिया है। (लेव **तोलस्तोय**)

सबको कुत्तों की तरह गोली से मरवा डालूंगा, और अफ़सर मेरे इस काम पर ख़ुश होंगे। ले लो लड़की को!"

भीड़ चुप हो गई। एक सिपाही ने चिल्लाती लड़की को खींच कर उठा लिया, दूसरे सिपाही ने क़ैदी को हथकड़ी लगा दी। क़ैदी ने चुपचाप हाथ आगे कर दिये।

"इसे औरतों के पास ले जाओ!" अपनी तलवार की पेटी ठीक करते हुए अफ़सर ने चिल्ला कर कहा।

नन्हीं लड़की अब भी ज़ोर ज़ोर से चिल्लाये जा रही थी, और शाल के नीचे से अपने बाज़ू छुड़ाने की कोशिश कर रही थी। उसका चेहरा लाल हो रहा था। भीड़ में से मारीया पाव्लोव्ना निकल कर आगे आ गई और अफ़सर के पास जा कर बोली—

"आप इजाज़त दें तो मैं लड़की को उठा लूं।"

"तुम कौन हो?"

"राजनीतिक क़ैदी।"

मारीया पाव्लोव्ना के सुन्दर चेहरे और बड़ी बड़ी आकर्षक आंखों का प्रत्यक्षतः उस पर असर हुआ (पहले भी अफ़सर ने उसे देखा था जब क़ैदी उसे सौंपे जा रहे थे)। वह चुपचाप उसकी ओर देखता रहा, मानो कुछ सोच रहा हो, फिर बोला—

"मुझे कोई एतराज़ नहीं। उठाना चाहती हो तो बेशक उठाओ। बड़ा रहम दिखाने चली हो। लेकिन अगर क़ैदी भाग जायेगा तो कौन इसका ज़िम्मेवार होगा?"

"बच्चे को उठाये हुए कौन भाग सकता है?" मारीया पाव्लोव्ना ने कहा।

"तुम्हारे साथ बहस करने के लिए मेरे पास वक़्त नहीं है। उठा लो अगर उठाना चाहती हो।"

"लड़की इनके हवाले कर दूं?" सिपाही ने पूछा।

"हां, दे दो।"

"आओ, मेरे पास आओ," बच्ची को पुचकारते हुए मारीया पाव्लोव्ना ने कहा।

लेकिन लड़की अपने बाप की ओर बांहें फैलाये चिल्लाये जा रही थी। मारीया पाव्लोव्ना के पास वह नहीं जाना चाहती थी।

"ज़रा ठहरो, मारीया पाव्लोव्ना," बैग में से एक रस्क निकालते हुए मास्लोवा ने कहा, "यह मेरे पास आ जायेगी।"

बच्ची मास्लोवा को जानती थी। उसके चेहरे की ओर देख कर और उसके हाथ में रस्क को देख कर, वह मास्लोवा के पास आ गई।

सब चुप हो गये। फाटक खोल दिये गये। टोली बाहर निकल आई और क़ैदी लाइनों में खड़े हो गये। कॉनवाय ने फिर एक बार क़ैदियों की गिनती की। छकड़ों में बोरियों को लाद दिया गया और उनके ऊपर कमज़ोर क़ैदी बैठ गये। औरतों की टोली में मास्लोवा, लड़की को उठाये, फ़ेदोस्या के साथ जा खड़ी हुई। सिमनसन, जो सारा वक़्त इस दृश्य को देखता रहा था, लम्बे लम्बे डग भरता हुआ, बड़ी दृढ़ता से अफ़सर के पास जा पहुंचा। अफ़सर अपने आदेश दे चुकने के बाद अपनी गाड़ी में बैठने जा रहा था।

"आपने बहुत बुरा काम किया है," सिमनसन बोला।

"जाओ अपनी लाइन में। तुम्हारा इसके साथ कोई मतलब नहीं है।"

"हां, मतलब है, मैं तुम्हें बता देना चाहता हूं कि आपने बहुत बुरा काम किया है," अपनी घनी भौंहों के नीचे से अफ़सर के चेहरे की ओर एकटक देखते हुए सिमनसन ने कहा।

"रेडी! मार्च!" सिमनसन की ओर कोई ध्यान न देते हुए, और गाड़ीवान के कन्धे को पकड़ कर गाड़ी में चढ़ते हुए अफ़सर ने कहा।

टोली चलने लगी, और बड़ी सड़क पर पहुंच कर फैल गई। सड़क पर कीच ही कीच था और उसके दोनों ओर पानी के नाले थे। और वह एक घने जंगल में से हो कर गई थी।

३

राजनीतिक क़ैदियों की स्थिति कठिनाइयों से भरी थी, लेकिन उनके साथ रहना कात्यूशा को अच्छा लगा। पिछले छः साल से शहर में उसका जीवन विकृत, अकर्मण्य तथा भ्रष्ट रहा था और पिछले दो महीनों से वह मुजरिम क़ैदियों के साथ रहती आ रही थी। कात्यूशा का स्वास्थ्य बेहतर होने लगा। हर रोज़ इन्हें पन्द्रह-बीस मील पैदल चलना पड़ता था, और ख़ुराक अच्छी मिलती थी। क़ैदी दो दिन चलते और एक दिन आराम

करते थे। इन नये साथियों की संगति में उसकी रुचि नयी नयी चीज़ों में पैदा होने लगी जिसका उसे पहले स्वप्न में भी ख़्याल नहीं आया था। कितने प्यारे लोग हैं ये (वह कहा करती थी) जिनके साथ मैं आजकल रहती हूं। ऐसे लोग मैंने पहले कभी नहीं देखे, देखना तो दूर रहा, मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि संसार में ऐसे लोग हो सकते हैं।

"और मैं हूं कि सज़ा मिलने पर रोने लगी थी!" वह कहती। "मुझे तो चाहिए कि इसके लिए भगवान् का हज़ार हज़ार शुक्र करूं। जिन बातों का मुझे यहां आ कर पता चला है, वे मुझे कभी भी मालूम न हो पातीं।"

जिन उद्देश्यों से ये लोग उत्प्रेरित थे, उन्हें समझने में कात्यूशा को कोई कठिनाई नहीं हुई, न ही उसे कोई विशेष प्रयास करना पड़ा। और चूंकि वह स्वयं जनता की कोख में से जन्मी थी, इसलिए उसके हृदय में उन उद्देश्यों के प्रति पूरी पूरी सहानुभूति थी। वह जानती थी कि ये लोग जनता के हितैषी हैं और उच्च वर्गों का विरोध करते हैं, स्वयं उच्च वर्गों में पैदा हुए हैं, फिर भी जनता की ख़ातिर अपने सब विशेषाधिकार, अपनी आज़ादी तथा जीवन तक क़ुर्बान किये हुए हैं। इस बात से, कात्यूशा की नज़रों में वे विशेषतया ऊंचे और सम्मानयोग्य हो उठे थे।

यों तो सभी नये साथी उसे अच्छे लगते थे, परन्तु मारीया पाव्लोव्ना के प्रति वह विशेषतया आकृष्ट हुई थी। उसकी संगति में उसे रहना केवल अच्छा ही नहीं लगता था, उसके प्रति कात्यूशा का प्रेम एक विशेष प्रकार का आदरभाव तथा श्रद्धा की भावना लिये हुए था। कात्यूशा को इस बात ने बहुत प्रभावित किया कि यह लड़की, जो इतनी सुन्दर है, तीन भाषाएं जानती है, एक अमीर जनरल की बेटी है, एक साधारण कामगार स्त्री की तरह रहती है। जितने भी पैसे इसका अमीर भाई इसे भेजता है, सभी ग़रीबों को दे देती है। इसके कपड़े सादा ही नहीं, ग़रीबों जैसे हैं। अच्छी लगती है या बुरी, इसकी इसे तनिक परवाह नहीं। इसमें कोई शोख़ी नहीं, कोई त्रिया चरित्र नहीं, यह देख कर वह विशेषकर हैरान और प्रभावित हुई। मारीया पाव्लोव्ना जानती थी कि वह सुन्दर है, और यह जान कर उसके मन को ख़ुशी भी होती थी, परन्तु मास्लोवा ने देखा कि उसके सौन्दर्य का जो प्रभाव पुरुषों पर पड़ता, उससे वह तनिक भी ख़ुश नहीं होती थी। बल्कि उसे डर लगता था, और उन सभी

लोगों के प्रति उसका हृदय अत्यधिक घृणा तथा भय से भर उठता था, जो उसके प्रति प्रेम प्रदर्शित करने लगते थे। उसके पुरुष साथी यह बात जानते थे, इसलिए कभी भी उस पर अपना प्रेम प्रकट नहीं करते थे, और उसके प्रति वैसा ही व्यवहार करते थे जैसा पुरुष पुरुषों के प्रति करते हैं। परन्तु अजनवी आदमी अक्सर उसके पीछे पड़ जाते थे, लेकिन मारीया पाव्लोव्ना के शरीर में इतनी ताक़त थी कि वह भली भांति ऐसे लोगों के साथ निवट लेती थी। और इस शारीरिक वल पर उसे गर्व भी था। "एक बार ऐसा हुआ," वह हंस कर सुनाया करती, "कि मैं एक सड़क पर चली जा रही थी जव एक आदमी मेरा पीछा करने लगा। उससे पल्ला छुड़ाना मुश्किल हो गया, किसी तरह भी वह हटता नहीं था। आख़िर मैंने उसे पकड़ कर ऐसा झंजोड़ा कि वह डर कर भाग गया।"

वचपन से ही उसे जनसाधारण के जीवन से प्रेम और अमीरों के जीवन से घृणा थी। वह कहा करती थी कि इसी कारण उसने क्रान्ति का पथ ग्रहण किया। वचपन में उसे हमेशा इस वात पर डांट पड़ती रहती थी कि वह वैठक में वैठने के वजाय, नौकरों के कमरे में, रसोईघर तथा अस्तबल में अपना समय व्यतीत करती थी।

"वावर्चियों तथा कोचवानों के साथ वातें करने में मुझे मजा आता था, लेकिन कुलीन पुरुषों और स्त्रियों के संग वैठ कर मैं ऊव उठती थी," वह कहती। "फिर जव मैं वड़ी हुई तो मैंने देखा कि हमारा जीवन विल्कुल ग़लत रास्ते पर चल रहा है। मेरी मां मर चुकी थी और पिता के साथ मेरा कोई लगाव नहीं था, इसलिए मैं घर से निकल आयी, और अपनी एक सहेली के साथ एक फ़ैक्ट्री में काम करने लगी। उस समय मेरी उम्र उन्नीस वरस की थी।"

जव फ़ैक्ट्री में काम करना छोड़ा तो मारीया पाव्लोव्ना एक गांव में जा कर रहने लगी। उसके वाद वह वापस शहर में चली गयी और एक ऐसे घर में रहने लगी जिसमें पोशीदा तौर पर वे एक छापाख़ाना चला रहे थे। वहां पर वह गिरफ़्तार हो गयी और उसे कड़ी मशक़्क़त की सज़ा मिली। इसकी चर्चा स्वयं मारीया पाव्लोव्ना ने कभी नहीं की। लेकिन कात्यूशा ने और लोगों के मुंह से सुना कि जव पुलिस उस घर की तलाशी ले चुकी तो अन्धेरे में किसी क्रान्तिकारी ने गोली चला दी। मारीया पाव्लोव्ना ने इसका ज़िम्मा अपने ऊपर ले लिया और इस कारण उसे सज़ा दे दी गयी।

जब कात्यूशा मारीया पाव्लोव्ना को अधिक घनिष्ठता से जानने लगी तो उसने देखा कि जिस किसी स्थिति में भी मारीया पाव्लोव्ना हो, वह कभी भी अपने बारे में नहीं सोचती थी, बल्कि सेवा करने के लिए तत्पर रहती थी, काम छोटा हो या बड़ा हो, वह ज़रूर किसी की मदद करने के लिए चिन्तित रहती थी। उसका एक साथी जो इन दिनों उनके साथ था, कहा करता था कि मारीया पाव्लोव्ना उसी तरह उपकार का काम करती है जिस तरह शिकारी शिकार खेलता है। और यह ठीक भी था। जिस तरह शिकारी हर वक़्त अपने शिकार की ताक में रहता है, मारीया पाव्लोव्ना इसी तरह उन अवसरों की ताक में रहती थी जब वह और लोगों की सेवा कर सके। उसके सारे जीवन का यही मुख्य उद्देश्य था। और इस शिकार की उसे आदत हो गई थी, यह उसके जीवन का एकमात्र व्यापार बन गया था। और वह अपना सेवा-कार्य इतनी स्वाभाविकता से करती कि जो लोग उसके परिचित थे वे यहां तक इसके अभ्यस्त हो गये थे कि उनके हृदय में उसके प्रति कृतज्ञता का भाव तक नहीं उठता था।

जब मास्लोवा राजनीतिक क़ैदियों के बीच आ कर रहने लगी तो मारीया पाव्लोव्ना को बुरा लगा। वह उससे दूर रहना चाहती थी। कात्यूशा ने यह देख लिया, पर साथ ही उसने यह भी देखा कि मारीया पाव्लोव्ना इन भावनाओं को दबाने की कोशिश कर रही है और इसके बाद उसका व्यवहार उसके प्रति विशेष तौर पर विनम्र और सद्भावनापूर्ण हो उठा है। ऐसी असाधारण लड़की की सद्भावना और विनम्रता ने मास्लोवा को ऐसा प्रभावित किया कि वह उसे अपना दिल दे बैठी। अनजाने में ही उसने मारीया पाव्लोव्ना की धारणाओं को अपना लिया, और हर बात में उसकी नक़ल करने लगी। दूसरी ओर मारीया पाव्लोव्ना कात्यूशा के इस गहरे अनुराग से प्रभावित हुए बिना न रह सकी और बदले में उससे प्रेम करने लगी।

और उन्हें आपस में मिलाने वाली एक और चीज़ भी थी—दोनों को कामुक प्रेम से घृणा थी। एक को इसलिए कि उसे इस प्रेम के भयानक अनुभव हो चुके थे; दूसरी को इसका अनुभव नहीं हुआ था और उसके लिए यह कोई समझ से बाहर की, बहुत ही घृणित चीज़ थी, मानव गौरव के लिए अपमान की बात थी।

जिन लोगों के प्रभाव को मास्लोवा ने दिल खोल कर क़बूल किया था उनमें से एक मारीया पाव्लोव्ना का था। इसका कारण यह था कि मास्लोवा मारीया पाव्लोव्ना से प्रेम करती थी। दूसरा प्रभाव सिमनसन का था। और इसका कारण यह था कि सिमनसन मास्लोवा से प्रेम करता था।

संसार में सभी लोग किसी हद तक अपने और किसी हद तक दूसरों के विचारों के आधार पर जीवन-निर्वाह करते हैं। इसी के अनुसार हम एक मनुष्य को दूसरे से अलग भी करते हैं, कि वह कहां तक अपने और कहां तक दूसरों के विचारों की प्रेरणा से रहता और काम करता है। कुछ लोगों के लिए सोचना एक मानसिक खेल के समान होता है। अधिकतर वे लोग अपनी बुद्धि का उस गतिपालक चक्र के समान इस्तेमाल करते हैं, जिसका पट्टा उतार लिया गया हो। ऐसे लोग सदा और लोगों के विचारों की प्रेरणा से काम करते हैं: रीति-रिवाज, प्रथा, क़ानून इत्यादि की प्रेरणा से। कुछ अन्य लोग ऐसे होते हैं जो हर काम केवल अपने विचारों से प्रेरित हो कर करते हैं। ये लोग अपने तर्क की आवाज़ को सुनते हैं और उसका आदेश मानते हैं। केवल कभी-कभार ही ये और लोगों के विचारों को स्वीकार करते हैं और वह भी अच्छी तरह माप-तौल कर। सिमनसन ऐसा ही आदमी था। वह हर तथ्य को अपने मस्तिष्क की कसौटी पर परखता था और इसी के अनुसार निश्चय करता था। और निश्चय कर लेने पर उसी के अनुसार आचरण करता था।

उसका पिता सेना रसद विभाग का एक अफ़सर था। अभी सिमनसन स्कूल में ही पढ़ता था जब वह इस नतीजे पर पहुंचा कि उसके पिता की कमाई सच्ची मेहनत की कमाई नहीं है, बल्कि झूठ और बेईमानी की कमाई है, तो उसने पिता से साफ़ साफ़ कह दिया कि उन्हें यह धन जनता को दे देना चाहिए। पिता ने बेटे के परामर्श पर ध्यान तो क्या देना था, उल्टा उसे डांटा-फटकारा जिस पर सिमनसन ने घर छोड़ दिया, और पिता के पैसों से कोई सरोकार न रखा। इसी तरह उसकी यह धारणा बनी कि तत्कालीन सभी बुराइयों का मूल कारण जनता का अज्ञान है। अतः विश्वविद्यालय में से शिक्षा प्राप्त करने के बाद वह सीधा नरोदवादियों

में जा कर शामिल हो गया, गांव के किसी स्कूल में पढ़ाने लगा। अपनी दृष्टि के अनुसार जिस बात को वह सच समझता, बेधड़क हो कर अपने विद्यार्थियों और किसानों में उसका प्रचार करता, और जिस बात को झूठ और अन्यायपूर्ण समझता उसका डट कर खुल्लमखुल्ला विरोध करता।

उसे पकड़ कर अदालत के सामने पेश किया गया।

मुक़द्दमे के दौरान वह इस नतीजे पर पहुंचा कि उन जजों को उसका मुक़द्दमा करने का कोई अधिकार नहीं और यह बात उसने उनको साफ़ साफ़ कह दी। जजों ने उसकी बात की ओर कोई ध्यान नहीं दिया और मुक़द्दमा करते गये। जब सिमनसन ने यह देखा तो चुप्पी साध ली और निश्चय कर लिया कि अब उनके सवालों का कोई जवाब नहीं दूंगा। जब भी वे कोई सवाल पूछते तो यह बुत बना खड़ा रहता। उसे आर्ख़ांगेल्स्क गुबेर्निया में निर्वासित कर दिया गया। यहां पर उसने एक धार्मिक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया और उसके बाद उसके सभी कर्म इसी सिद्धान्त की प्रेरणा में किये जाने लगे। सिद्धान्त की तह में यह धारणा थी कि ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु में जीव है, जड़ पदार्थ कोई नहीं। जिन चीज़ों को हम जड़ अथवा निर्जीव समझते हैं, वे वास्तव में एक विराट चेतन शरीर के अंग हैं। मनुष्य इस विराट शरीर को पूर्णतया समझने में असमर्थ है, परन्तु इसका अंग होने के नाते उसका कर्तव्य है कि वह उसके जीवन को तथा उसके सभी जीवित अंगों के जीवन को क़ायम रखे। इस तरह वह किसी भी जीव की हत्या को जुर्म समझता था, जंग, प्राण-दण्ड तथा हर प्रकार की हत्या का विरोध करता था, न केवल इन्सानों की हत्या का बल्कि पशु-पक्षियों की हत्या का भी। विवाह के प्रश्न पर भी उसका अपना सिद्धान्त था। उसका विश्वास था कि प्रजनन मनुष्य के जीवन की एक गौण क्रिया है, मुख्य क्रिया पहले से विद्यमान जीवित प्राणियों की सेवा करना है। इस सिद्धान्त की पुष्टि वह इस तथ्य से किया करता था कि ख़ून में फ़ैगोसाइट पाये जाते हैं। उसकी दृष्टि में ब्रह्मचारी लोगों की स्थिति फ़ैगोसाइटों की सी है जिनका काम शरीर के दुर्बल तथा रुग्ण अंगों की सहायता करना है। ज्यों ही वह इस निश्चय पर पहुंचा तो उसने अपने जीवन को भी इसी के अनुसार ढालना शुरू कर दिया, हालांकि जवानी के दिनों में वह विलासिता में डूबा रहा था। अब वह

समझतां था कि वह और मारीया पाव्लोव्ना मनुष्य के रूप में फ़ैगोसाइटों का काम कर रहे हैं।

उसे कात्यूशा से प्रेम था, परन्तु यह प्रेम इस धारणा का उल्लंघन नहीं करता था, क्योंकि यह निष्काम प्रेम था। उसे विश्वास था कि ऐसा प्रेम उसकी फ़ैगोसाइट सरीखी क्रियाओं में वाधक नहीं बनेगा वल्कि प्रेरणा का काम करेगा।

वह न केवल नैतिक वल्कि व्यावहारिक प्रश्नों पर भी अपने ही ढंग से निश्चय किया करता था। सभी व्यावहारिक मामलों के वारे में भी उसका एक अपना सिद्धान्त था। कितने घण्टे काम करना चाहिए, कितना आराम, भोजन कैसा होना चाहिए, पोशाक कैसी, घरों में रोशनी का प्रवन्ध कैसा होना चाहिए, और उन्हें गर्म कैसे रखना चाहिए–इन सव वातों के वारे में उसने अपने नियम बना रखे थे।

यह सव होते हुए भी सिमनसन वड़ा शर्मीला और विनम्र स्वभाव का व्यक्ति था। हां, एक वार निश्चय कर लेने के वाद संसार की कोई भी चीज़ उसे डांवांडोल नहीं कर सकती थी।

उसके प्रेम का मास्लोवा पर निश्चित तौर पर प्रभाव पड़ा। नारी सुलभ अन्त:प्रेरणा से मास्लोवा को शीघ्र ही पता चल गया कि वह उससे प्रेम करता है। यह सोच कर कि वह उस जैसे आदमी के हृदय में अपने प्रति प्रेम जागृत कर पायी है, मास्लोवा अपनी नज़रों में उठने लगी। यदि नेख़्लूदोव ने उसके सामने शादी का प्रस्ताव रखा था तो इसलिए कि वह उदारहृदय व्यक्ति है, और पीछे जो कुछ हुआ वह उसे धो देना चाहता है। लेकिन सिमनसन तो उस मास्लोवा से प्रेम करता था जो आज उसके सामने थी। और उसके प्रेम का और कोई कारण न था, केवल प्रेम ही था। मास्लोवा को ऐसा महसूस होता जैसे सिमनसन उसे विलक्षण नारी समझता है जिसमें विशेष, उच्च कोटि के नैतिक गुण हों। वह स्पष्टतया नहीं जानती थी कि कौन से ऐसे गुण सिमनसन को उसमें नजर आये हैं, लेकिन वह नहीं चाहती थी कि उसे निराशा हो, इसलिए वह अपने अन्दर उन सभी सर्वोत्कृष्ट गुणों को जगाने का भरसक प्रयास करती जिनकी वह कल्पना कर सकती थी।

यह प्रक्रिया तभी से शुरू हो गई थी जब वे अभी जेल ही में थे। तभी एक दिन मास्लोवा ने उसे अपनी ओर घूरते हुए देखा था, घनी

भौंहों के नीचे से उसकी सद्भावनापूर्ण, गहरी नीली आंखें उसे देखे जा रही थीं। उस दिन मुलाक़ातियों से मिलने का दिन था। तब भी उसे नज़र आ गया था कि यह व्यक्ति कोई असाधारण आदमी है, और बड़े असाधारण ढंग से उसकी ओर देखे जा रहा है। उसके उलझे हुए बालों और चढ़ी हुई भौंहों से दृढ़ता का भास होता था, पर साथ ही चेहरे पर बच्चों की सी सरलता और सद्भावना झलक रही थी। इसके बाद मास्लोवा उसे तोम्स्क में मिली थी जहां वह राजनीतिक क़ैदियों के साथ रहने लगी थी। दोनों ने एक दूसरे से कुछ नहीं कहा, लेकिन उनकी नज़र में इस बात की स्वीकृति थी कि वे एक दूसरे को जानते हैं, और उनके लिए एक दूसरे का महत्व है। इसके बाद भी उनके बीच कोई गंभीर वार्तालाप नहीं हुआ, परन्तु मास्लोवा ने यह महसूस किया कि जब कभी उसकी उपस्थिति में सिमनसन कुछ कहता तो उसके शब्द उसी को सम्बोधित होते थे, और वह जो कुछ कहता उसी की ख़ातिर कहता था। अपने भाव वह स्पष्टतम शब्दों में व्यक्त करने की कोशिश किया करता था। परन्तु वास्तव में उनकी घनिष्ठता उस समय बढ़ने लगी थी जब सिमनसन आम मुजरिम क़ैदियों के साथ एक पड़ाव से दूसरे पड़ाव तक पैदल जाने लगा था।

५

पेर्म से चलने से पहले नेख़्लूदोव केवल दो बार कात्यूशा से मिल पाया—एक बार नीज्नी नोवगोरोद में जब क़ैदी एक जाली लगे बेड़े में ले जाये जाने वाले थे और दूसरी बार पेर्म में जेल के दफ़्तर में। दोनों बार मास्लोवा गुपचुप रही और उसके साथ रुखाई से पेश आयी। जब नेख़्लूदोव ने पूछा कि तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत तो नहीं, तुम आराम से तो हो, तो मास्लोवा ने कोई सीधा जवाब नहीं दिया, सकुचाती और टाल-मटोल करती रही। नेख़्लूदोव को उसके व्यवहार में उसी विरोधपूर्ण भर्त्सना का भास मिला जो कुछेक बार पहले उसे मिला था। उसे उदास देख कर नेख़्लूदोव का मन विचलित हो उठा था, हालांकि उसकी उदासी का केवल यही कारण था कि उस समय मर्द-क़ैदी उसे बेहद परेशान कर रहे थे। नेख़्लूदोव को डर था कि इन कठोर और भ्रष्टकारी परिस्थितियों के प्रभाववश, जिनमें मास्लोवा यात्रा कर रही थी, कहीं उसका मन

फिर पहले सा निराश और विक्षिप्त न हो उठे, जब वह उसके साथ रुखाई से बोलने लगती थी, और सब कुछ भूलने के लिए तम्बाकू और शराब पीने लगती थी। पर यात्रा के इस भाग में वह मास्लोवा की कोई भी मदद नहीं कर सकता था, क्योंकि वह उसे कभी भी मिल नहीं पाता था। जब मास्लोवा राजनीतिक क़ैदियों के साथ रहने लगी तो नेख़्लूदोव ने जाना कि उसके संशय सर्वथा निर्मूल और निराधार हैं। जिस आन्तरिक परिवर्तन को वह मास्लोवा में देखने का इतना अधिक इच्छुक हुआ करता था, अब हर भेंट में अधिकाधिक निश्चित रूप में उसे नज़र आने लगा। जब तोम्स्क में वह उसे पहली बार मिला तो उसका व्यवहार फिर पहले सा ही था, जैसा मास्को से रवाना होते समय रहा था। उसने भौंहें नहीं चढ़ायीं, उसे मिलने पर घबरायी भी नहीं, बल्कि बड़ी ख़ुश ख़ुश और सहज भाव से मिली, नेख़्लूदोव की मेहरबानियों के लिए उसका धन्यवाद किया, विशेषकर उसे इन लोगों के बीच लाने के लिए जिनमें वह उस समय रह रही थी।

टोली के साथ दो महीने तक चलते रहने के बाद मास्लोवा के आन्तरिक परिवर्तन की झलक उसके चेहरे पर भी नज़र आने लगी। धूप में उसका चेहरा संवला गया, वह दुबली हो गयी, उम्र में बड़ी लगने लगी, कनपटियों पर और मुंह के आस-पास झुर्रियां नजर आने लगीं। अब वह माथे पर कुण्डल नहीं बनाती थी, उसके बाल रूमाल के नीचे छिपे रहते थे। जिस ढंग से वह अपने बाल बनाती या कपड़े पहनती, उसमें अब नाज़-नख़रे का लेश मात्र भी नहीं था। इस परिवर्तन को देख कर, जिसकी प्रक्रिया अब भी बराबर चल रही थी, नेख़्लूदोव बेहद ख़ुश हुआ।

नेख़्लूदोव के हृदय में मास्लोवा के प्रति ऐसी भावना उठने लगी जिस- का अनुभव उसे पहले कभी नहीं हुआ था। यह भावना उस कवित्वपू- प्रेम-भावना से पृथक् थी जिसका अनुभव उसे सबसे पहले हुआ था। य- उस कामवासना से भी बहुत कुछ पृथक् थी जिसका अनुभव उसे ब- में हुआ। और कर्तव्य-पूर्ति पर सन्तोष और आत्मश्लाघा की उस भाव- से भी, जिसके साथ उसने मुक़द्दमे के बाद उससे विवाह करने का निश- किया था। अब जो भावना उसके हृदय को उद्वेलित कर रही थी केवल अनुकम्पा और दयालुता की भावना थी। यह भावना उस स-

उसके हृदय में उठी थी जब वह पहली बार उससे जेल में मिला था और फिर एक नयी शक्ति के साथ तब उठी थी जब हस्पताल से लौट कर उसने अपनी घृणा पर क़ाबू पा कर उसे छोटे डाक्टर वाले काल्पनिक क़िस्से पर क्षमा कर दिया था (यह तो उसे बाद में ही पता चला था कि क़िस्सा सरासर झूठा था)। फ़रक़ केवल इतना था कि पहले जहां यह क्षणिक हुआ करती अब वह स्थायी रूप से हृदय में रहती थी। अब उसके प्रत्येक विचार और प्रत्येक काम में यही अनुकम्पा और दयालुता की भावना निहित रहती थी, और यह न केवल मास्लोवा के प्रति बल्कि सभी के प्रति रहती थी।

ऐसा जान पड़ता था जैसे इस भावना ने प्रेम का बांध तोड़ डाला हो जो नेख़्लूदोव की आत्मा में अभी तक बन्द पड़ा था। अब जिस किसी से भी नेख़्लूदोव मिलता उसी के प्रति यह प्रेम छलछला उठता।

यात्रा के दौरान नेख़्लूदोव का हृदय इन भावनाओं से इतना उद्वेलित हो उठा था कि वह हर किसी से अत्यधिक सद्भावना और विनम्रता से मिलता, भले ही वह कोई कोचवान हो या कॉनवाय का सिपाही, जेल का इन्स्पेक्टर हो या गवर्नर।

मास्लोवा के राजनीतिक क़ैदियों के बीच रहने के कारण नेख़्लूदोव का भी परिचय बहुत से राजनीतिक क़ैदियों के साथ हो गया। यह परिचय पहले येकातेरीनबुर्ग में हुआ जहां इन्हें काफ़ी आज़ादी मिली हुई थी, और वे सबके सब एक बड़ी कोठरी में रखे गये थे। बाद में रास्ते में उसका परिचय उन पांच पुरुषों और चार स्त्रियों के साथ हुआ जिनके संग मास्लोवा को लगा दिया गया था। इस तरह राजनीतिक निर्वासितों के साथ सम्पर्क में आने से नेख़्लूदोव के विचार उनके बारे में बिल्कुल बदल गये।

जब से रूस में क्रान्तिकारी आन्दोलन शुरू हुआ, और विशेषकर उस पहली मार्च के दिन से जब अलेक्सान्द्र द्वितीय की हत्या की गयी थी, नेख़्लूदोव क्रान्तिकारियों को अवमान और घृणा की दृष्टि से देखता रहा था। उनकी क्रूरता को देख कर, सरकार के विरुद्ध अपने संघर्ष में लुक-छिप कर काम करने के उनके तरीक़ों को देख कर, पर विशेषकर उस बर्बरता को देख कर जिससे वे हत्याएं किया करते थे, उसके हृदय में गहरी नफ़रत उठा करती थी। साथ ही ये लोग अपने तुल्य किसी को नहीं समझते और उनके स्वभाव का यह दोष भी नेख़्लूदोव को अरुचिकर

लगता था। पर जब वह उन्हें समीप से जान पाया, जब पता चला कि सरकार के हाथों उन्हें कितना कुछ सहन करना पड़ा है, तो वह समझ गया कि वे जो कुछ हैं अपनी परिस्थितियों के बनाये हुए हैं, इससे भिन्न वे नहीं हो सकते थे।

यह ठीक है कि तथाकथित जरायम पेशा मुजरिम क़ैदियों को बड़ी भयानक और फ़िज़ूल यातनाएं पहुंचाई जाती थीं। फिर भी उन्हें सज़ा मिलने से पहले और बाद में उनके साथ अदालती कार्रवाई तो की जाती थी, इन्साफ़ का दिखावा तो किया जाता था। लेकिन राजनीतिक क़ैदियों के साथ तो यह दिखावा भी नहीं किया जाता था। यह बात नेख़्लूदोव ने न केवल शूस्तोवा के बारे में ही बल्कि अपने कितने ही नये परिचितों के बारे में देखी थी। जिस तरह मछलियों को जाल में पकड़ लिया जाता है, इसी तरह राजनीतिक क़ैदियों के साथ व्यवहार किया जाता था। पहले जो कुछ भी जाल में फंस जाय उसे खींच कर किनारे ले आते हैं, बाद में बड़ी बड़ी मछलियों को, जिनकी ज़रूरत होती है, चुन चुन कर अलग कर दिया जाता है, और छोटी छोटी मछलियों को वहीं किनारे पर गलने-सड़ने के लिए छोड़ दिया जाता है। सरकार सैंकड़ों ऐसे लोगों को पकड़ कर जेल में फेंक देती जो प्रत्यक्षत: निर्दोष होते और जिनसे कोई ख़तरा नहीं पहुंच सकता था। फिर साल-दर-साल तक वे वहीं पड़े रहते, कुछ तपेदिक़ के शिकार हो जाते, कुछ पागल हो जाते, कुछ आत्महत्या कर लेते। उन्हें आज़ाद कर देने की अधिकारियों को कोई प्रेरणा नहीं होती थी। वे समझते थे कि यदि यहीं पड़े रहे तो कभी किसी अदालती जांच के समय किसी नुक़ते को साफ़ करने में इनसे मदद मिलेगी। सरकार की दृष्टि से भी ये लोग अक्सर निर्दोष होते थे। लेकिन इनका भाग्य पुलिस या ख़ुफ़िया पुलिस के किसी अफ़सर, किसी सरकारी वकील, किसी मैजिस्ट्रेट, गवर्नर या मन्त्री की सनक पर निर्भर रहता। उसका मन आये, या वक़्त हो तो इन्हें छोड़ दे वरना वहीं पड़े रहें। इनमें से किसी अफ़सर का मन कभी ऊब उठा, या शोहरत हासिल करने की ख़्वाहिश उठी तो कुछ लोगों को गिरफ़्तार करने का हुक्म दे दिया। फिर जैसा मन हुआ, या जैसे ऊपर के अधिकारियों का मन हुआ इन्हें जेल में फेंक दिया या छोड़ दिया। ऊपर के अधिकारी भी इसी तरह की प्रेरणा के अनुसार या किसी मन्त्री के साथ अपने सम्बन्ध के प्रभाववश, लोगों

को दुनिया के दूसरे कोने में निर्वासित कर के भेज देते, क़ैद-तनहाई में डाल देते, साइबेरिया में भेज देते, कड़ी मशक़्क़त की, या मौत की सज़ा दे देते, या फिर किसी महिला के कहने पर उन्हें रिहा कर देते।

उनके साथ वैसा ही सलूक किया जाता था जैसा जंग में दुश्मनों के साथ किया जाता है। और यह स्वाभाविक ही था कि जवाब में वे भी उन्हीं हथियारों का प्रयोग करें जिनका प्रयोग उनके ख़िलाफ़ किया जाता था। जंग के दिनों में एक ऐसा लोकमत उठ खड़ा होता है जो फ़ौजी लोगों की नज़रों से उनके भयानक कृत्यों का दोष छिपाये रहता है। छिपाता ही नहीं, उनके कृत्यों को वीरता के कारनामे कह कर पुकारता है। इसी तरह राजनीतिक मुजरिम भी, अपने जैसे लोगों के बीच रहते हुए इसी प्रकार के लोकमत से घिरे रहते हैं। ख़तरे का सामना करते हुए, अपनी आज़ादी और जीवन तक को जोखिम में डाल कर किये गये इनके कुकृत्य उन्हें बुरे तो दूर, गौरवपूर्ण तक प्रतीत होते थे। इसी में नेख़्लूदोव के लिए उस आश्चर्यजनक स्थिति की व्याख्या हो सकती थी कि ऐसे विनम्र स्वभाव लोग भी जो किसी को यातना पहुंचाना तो दूर रहा, किसी जीव को दुःखी देख तक नहीं सकते थे, चुपचाप हत्या करने पर तैयार हो जाते हैं। उनमें से लगभग सभी यह मानते थे कि किसी किसी मौक़े पर हत्या करना उचित और वैध होता है, जैसे आत्मरक्षा के लिए, या जनकल्याण के अपने महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए। यदि क्रान्तिकारी अपने उद्देश्य को और तदनुरूप अपने आपको इतना महत्व देते थे तो इसका कारण यही था कि सरकार उनके कामों को महत्व देती थी, और उनके लिए उन्हें ज़ालिमाना सज़ाएं देती थी। जो यातनाएं इन्हें पहुंचाई जाती थीं, उन्हें सहन करने के लिए यह ज़रूरी था कि ये लोग अपने आपको असाधारण कोटि के मानें।

जब नेख़्लूदोव ने उन्हें ज़्यादा नज़दीक से देखा तो उसे विश्वास हो गया कि ये लोग न तो नीच हैं जैसा कि कुछ लोग इन्हें समझते हैं, और न ही ऐसे वीर हैं जैसे कि कुछ और लोगों की इनके बारे में धारणा है। ये लोग भी साधारण लोगों की ही तरह हैं, जिनमें अच्छे, बुरे और मध्यम कोटि के, सभी तरह के व्यक्ति पाये जाते हैं। कुछ लोगों ने तो क्रान्ति का पथ इसलिए अपनाया कि वे सचमुच, बड़ी ईमानदारी से यह समझते थे कि मौजूदा बुराइयों के विरुद्ध संघर्ष करना उनका कर्तव्य है। परन्तु

कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने स्वार्थवश, तथा आगे बढ़ने की लालसा से प्रेरित हो कर इस पथ को अपनाया। परन्तु इनमें से अधिकांश क्रान्तिकारी विचारों की ओर इसलिए आकृष्ट हुए कि उनमें ख़तरा मोल लेने, जोखिम में पड़ने तथा अपनी ज़िन्दगी को ख़तरे में डालने की ललक थी। जवानी के दिनों में, जब शरीर में बल होता है, तो साधारण लोगों में भी ये भावनाएं आम देखने को मिलती हैं। नेख़्लूदोव ने अपने फ़ौजी अनुभव से यह देख लिया था। लेकिन साधारण लोगों से ये एक बात में ज़रूर ऊंचे थे: इनकी नैतिक धारणा बहुत ऊंची थी। ये लोगा आत्मनियन्त्रण, कड़े जीवन, सत्यवादिता, तथा स्वार्थहीनता को कर्तव्य मान कर पालन करते थे। इतना ही नहीं, जन-कल्याण के उद्देश्य के लिए ये हर क़ुर्बानी देने के लिए, यहां तक कि जान तक पर खेल जाने के लिए हर वक़्त तत्पर रहते थे। इसलिए इनमें से सर्वोत्कृष्ट व्यक्ति जिस नैतिक स्तर पर खड़े होते थे, उस तक पहुंचना और लोगों के लिए बहुत कठिन था। लेकिन इनमें से जो निकृष्ट थे वे साधारण कोटि के लोगों की तुलना में बहुत गिरे हुए थे। इनमें बहुत से झूठे और पाखण्डी थे और साथ ही उनमें आत्मविश्वास और दम्भ भी था। इसलिए अपने नये परिचितों में से कुछेक को नेख़्लूदोव सच्चे दिल से प्रेम करने लगा, उनके प्रति उसका दिल श्रद्धा और मान से भर उठा। लेकिन ऐसे भी थे जिन्हें वह उपेक्षा की दृष्टि से देखता था।

६

जिस टोली में कात्यूशा जा रही थी उसी में क्रिलत्सोव नाम का एक युवक था। नेख़्लूदोव उसे बहुत चाहने लगा। यह युवक तपेदिक़ का बीमार था और इसे कड़ी मशक़्क़त की सज़ा मिली थी। उसके साथ नेख़्लूदोव का परिचय येकातेरीनबुर्ग में हुआ था, और उसके बाद रास्ते में कुछेक बार उसे उसके साथ बातें करने का मौक़ा मिला था। उन दिनों गरमी का मौसम था। एक बार एक पड़ाव पर जब वे रुके तो नेख़्लूदोव ने लगभग सारा दिन क्रिलत्सोव के साथ व्यतीत किया। जब एक बार क्रिलत्सोव बातें करने लगा तो उसने अपनी सारी कहानी कह सुनाई, कि वह क्रान्तिकारी कैसे बना था। क़ैद की सज़ा मिलने तक की उसकी कहानी बहुत लम्बी नहीं थी, उसने वह शीघ्र ही सुना डाली। उसका पिता दक्षिण

का एक धनी ज़मींदार था। अभी वह बच्चा ही था जब उसके पिता का देहान्त हो गया। मां-बाप का वह इकलौता बेटा था। पिता की मृत्यु के बाद मां ने उसे पाल कर बड़ा किया। क्रिलत्सोव पढ़ाई में अच्छा था और पहले स्कूल में और बाद में विश्वविद्यालय में, बड़ी सुगमता से वह जमातें चढ़ता रहा। विश्वविद्यालय की परीक्षा में वह गणित के सभी छात्रों में पहले नम्बर पर आया। विश्वविद्यालय की ओर से उसे वज़ीफ़ा भी दिया गया कि वह विदेश में जा कर अपनी पढ़ाई जारी रखे। लेकिन वह बड़ी देर तक किसी निश्चय पर नहीं पहुंच सका। उन दिनों वह एक लड़की से प्रेम करता था, और उससे विवाह करने और कृषि-प्रवन्ध में भाग लेने के सपने देखा करता था। वह हर काम में हाथ डालना चाहता था, इसी लिए किसी एक काम को अपनाने का निश्चय नहीं कर सका। उन्हीं दिनों उसके कुछ सहपाठियों ने उससे कुछ पैसे मांगे। कहने लगे कि जन-कल्याण के किसी काम के लिए ज़रूरत है। उसे मालूम था कि यह रुपया क्रान्तिकारी काम के लिए मांगा जा रहा है, जिसमें उस समय उसकी कोई रुचि नहीं थी। लेकिन उसने पैसे दे दिये, कुछ साथी होने के नाते, और कुछ दम्भ में ताकि कोई यह न सोचे कि वह इन कामों के लिए पैसे देने से डरता है। बाद में, जिन लोगों ने पैसे लिये थे, वे पकड़े गये। उन्हीं के पास से एक पुर्ज़ा मिला जिससे अधिकारियों को पता चल गया कि पैसे क्रिलत्सोव ने दिये थे। उसे गिरफ़्तार कर लिया गया, पहले उसे थाने में ले गये और बाद में जेलख़ाने में डाल दिया गया।

"जेल में हमारे साथ कोई ख़ास सख़्ती नहीं बरती जाती थी," अपनी कहानी जारी रखते हुए क्रिलत्सोव ने कहा। वह घुटनों पर कोहनियां रखे, अपने सोने वाले ऊंचे तख़्ते पर बैठा था, छाती अन्दर को धंसी हुई थी, और आंखें बीमारी की उत्तेजना के कारण चमक रही थीं। "हम एक दूसरे से बातें कर सकते थे—न केवल दीवारों को खटखटा कर ही बल्कि अन्य तरीक़ों से भी—बरामदों में घूम-फिर सकते थे, खाने-पीने की चीज़ें और तम्बाकू एक दूसरे से बांट सकते थे, यहां तक कि शाम के वक़्त मिल कर गाया भी करते थे। मेरी आवाज़ बड़ी सुरीली हुआ करती थी। मुझे यदि कोई चिन्ता थी तो अपनी मां की, वह मेरे कारण बेहद दुखी थी। यह न होता तो वहां सब कुछ ठीक चल रहा था, यहां तक कि वहां रहने में मुझे मज़ा आ रहा था। यहीं पर मेरा परिचय

सुप्रसिद्ध पेत्रोव से तथा अन्य लोगों से हुआ। वाद में पेत्रोव ने कांच का एक टुकड़ा ले कर आत्महत्या कर ली थी। यह घटना क़िले में घटी थी। परन्तु उस वक़्त तक मैं क्रान्तिकारी नहीं वना था। मेरा परिचय अपने दो पड़ोसियों से भी हुआ जो मेरी ही कोठरी के नज़दीक रहते थे। उन दोनों को एक ही जुर्म में पकड़ा गया था, दोनों के पास से पोलिश घोषणापत्र बरामद हुए थे। और दोनों पर इस अपराध के लिए मुक़द्दमा चलाया गया था कि रेलवे-स्टेशन की ओर जाते हुए उन्होंने कॉनवाय में से भाग निकलने की कोशिश की थी। उनमें से एक पोलैंड का रहने वाला था, जिसका नाम लोज़ीन्स्की था, और दूसरा यहूदी था, उसका नाम रोज़ोव्स्की था। हां। यह रोज़ोव्स्की वच्चा ही था। कहा करता था कि मेरी उम्र सत्तरह बरस की है, लेकिन लगता पन्द्रह बरस का था। दुवला-पतला सा लड़का, छोटा सा क़द, बड़ा फुर्तीला, काली चमकती आंखें थीं उसकी। और अधिकांश यहूदियों की तरह संगीत का बड़ा शौक़ीन था। अभी उसकी आवाज़ भारी होने लगी थी, लेकिन फिर भी वह वहुत अच्छा गाता था। जव उन पर मुक़द्दमा चला तो मैंने दोनों को अदालत में लिये जाते हुए देखा। सुवह का वक़्त था जव उन्हें ले जाया गया। शाम को वे लौट कर आये और आ कर कहने लगे कि उन्हें मौत की सज़ा दी गयी है। किसी को ख़्याल नहीं था कि यह सज़ा मिलेगी। इतना मामूली सा तो उनका जुर्म था। यही न कि कॉनवाय से उन्होंने भागने की कोशिश की थी। किसी को चोट तक उन्होंने नहीं पहुंचायी थी। और फिर रोज़ोव्स्की तो विल्कुल वच्चा था। उसे फांसी लगाना तो कितनी अस्वाभाविक सी बात लगती है। जेल में हम सवने यही समझा कि उन्हें केवल डराने के लिए धमकी सी दी गयी है, और यह सज़ा कभी भी पक्की नहीं की जायेगी। पहले तो हम वहुत उत्तेजित हुए थे, लेकिन वाद में हमने अपने को ढाढ़स दिया और चुप हो गये, और जीवन पहले की सी गति से चलने लगा। हां। एक दिन शाम को चौकीदार मेरी कोठ़री के दरवाज़े के पास आया और वड़ी दवी, भेद भरी आवाज़ में कहने लगा कि वढ़ई आ गये हैं, और फांसी का तख़्ता तैयार कर रहे हैं। पहले तो उसकी वात मेरी समझ में नहीं आयी। कौन सा फांसी का तख़्ता? पर चौकीदार इतना उत्तेजित था कि मैं शीघ्र ही समझ गया कि वह हमारे ही दो लड़कों के लिए होगा। मेरी इच्छा हुई कि दीवार खटखटा

कर अपने साथियों को बता दूं लेकिन मैं रुक गया, इस डर से कि वे दोनों सुन लेंगे। हमारे साथी भी चुप थे। ज़ाहिर था कि ख़बर सब तक पहुंच चुकी है। उस शाम बरामदे में और सभी कोठरियों में मौत का सा सन्नाटा था। न किसी ने दीवार खटखटायी, न कोई गीत गाया। दस बजे चौकीदार ने आ कर बताया कि मास्को से एक जल्लाद आ गया है। यह कह कर वह चला गया। मैं उसे वापस बुलाने लगा। सहसा मुझे रोज़ोव्स्की की आवाज़ आयी, वह बरामदे की दूसरी ओर से मुझे पुकार कर कह रहा था—'क्या बात है? उसे क्यों बुला रहे हो?' जवाब में मैंने उसे कुछ कहा कि मेरे लिए तम्बाकू ला दे, लेकिन जान पड़ता था जैसे वह भांप गया है, और वह पूछने लगा—'आज हम गा क्यों नहीं रहे? दीवारों पर खटखट क्यों नहीं करते?' मुझे याद नहीं मैंने उसे क्या कहा, और पीछे हट गया ताकि उससे बातें न करनी पड़ें। बड़ी भयानक रात थी वह। रात भर मेरे कान एक एक शब्द को सुनते रहे। सुबह होने जा रही थी, जब सहसा आवाज़ें आने लगीं। दरवाज़े खुलने लगे और कोई चला आ रहा था—एक नहीं, बहुत से आदमी आ रहे थे। मैं दरवाज़े के छेद के पास जा पहुंचा और आंख लगा कर बाहर देखने लगा। बरामदे में एक लैम्प जल रहा था। पहले इन्स्पेक्टर आया। गठीले बदन का आदमी था और साधारणतया बड़ा दृढ़ और आत्मविश्वास से भरा लगता था। लेकिन आज उसका चेहरा बेहद पीला पड़ गया था, आंखें नीची किये हुए था, ऐसा लगता था जैसे डरा हुआ हो। उसके पीछे पीछे उसका सहायक आया, उसका चेहरा उतरा हुआ था लेकिन उस पर दृढ़ता थी। और सबके पीछे पीछे फ़ौजी सिपाही थे। मेरे दरवाज़े के पास से हो कर वे साथ वाली कोठरी के सामने खड़े हो गये। फिर मैंने सुना, सहायक इन्स्पेक्टर कह रहा था—'लोज़ीन्स्की, उठो और साफ़ कपड़े पहन कर तैयार हो जाओ!' उसकी आवाज़ अजीब सी हो रही थी। इसके बाद दरवाज़ा चरचरा कर खुलने की आवाज़ आयी। वे उसकी कोठरी के अन्दर चले गये। फिर लोज़ीन्स्की के क़दमों की आवाज़ आयी, वह बरामदे के दूसरी ओर जा रहा था। मैं केवल इन्स्पेक्टर को देख पा रहा था। उसका चेहरा पीला हो रहा था, और वह कभी अपने कोट के बटन खोलता कभी उन्हें बन्द करता, और कन्धे बिचकाता। हां। वह फिर रास्ते में से हट गया, मानो डर गया हो।

वह लोज़ीन्स्की के रास्ते में से हट गया था, जो मेरे दरवाज़े के सामने आ गया था। बड़ा ख़ूबसूरत युवक था, वैसा ही जैसे पोलैंड के लोग होते हैं, चौड़ा, खुला माथा, सिर पर घुंघराले बाल, और सुन्दर नीली आंखें। खिला हुआ चेहरा, इतना ताज़ा और स्वस्थ! वह ऐन मेरे दरवाज़े के छेद के सामने खड़ा था, इसलिए मुझे उसका सारा का सारा चेहरा नज़र आ रहा था। पीला ज़र्द चेहरा, पतला और भयानक। 'क्रिलत्सोव, क्या तुम्हारे पास सिगरेट हैं?' मैं उसे सिगरेट देना चाहता था लेकिन सहायक इन्स्पेक्टर ने झट से अपना सिगरेट-केस निकाल कर उसके सामने बढ़ा दिया। उसने एक सिगरेट लिया, फिर सहायक ने दियासलाई जलाई। लोज़ीन्स्की सिगरेट सुलगा कर कश लेने लगा। मुझे ऐसा लगा जैसे वह कुछ सोचने लगा है। फिर सहसा वह बोलने लगा, मानो उसे कुछ याद आ गया हो—'यह ज़ुल्म है, अन्याय है। मैंने कोई जुर्म नहीं किया। मैंने...' उसके गोरे गोरे तरुण गले में कोई चीज कांपती हुई मुझे नज़र आयी, और मैं उस पर से अपनी आंखें नहीं हटा सका। फिर वह चुप हो गया। हां। उसी वक़्त मैंने सुना कि रोज़ोव्स्की चिल्लाने लगा है। उसकी आवाज़ ऊंची और यहूदियों जैसी थी। लोज़ीन्स्की ने सिगरेट फेंक दिया और दरवाज़े के सामने से हट गया। अब वहां पर, मेरे छेद के सामने रोज़ोव्स्की आया। बच्चों का सा उसका चेहरा लाल हो रहा था और नमी से तर था और स्वच्छ काली आंखें चमक रही थीं। उसने भी धुले हुए कपड़े पहन रखे थे। पतलून बहुत चौड़ी थी जिसे वह बार बार खींच कर ऊपर उठाता। सिर से पांव तक उसका शरीर कांप रहा था। उसका चेहरा कितना दयनीय लग रहा था। अपना मुंह मेरे छेद के पास ले जा कर बोला—'क्रिलत्सोव, यह ठीक है न कि डाक्टर ने मुझे खांसी की दवाई लिख कर दी है? मेरी तबीयत अच्छी नहीं। मुझे कुछ देर और दवाई पीने की ज़रूरत है।' किसी ने कोई जवाब नहीं दिया, और वह प्रश्नसूचक नेत्रों से कभी मेरी ओर, कभी इन्स्पेक्टर की ओर देखने लगा। उसके इस वाक्य का मतलब कभी भी मेरी समझ में नहीं आया। हां। सहसा इन्स्पेक्टर ने कठोर मुद्रा बनायी, और फिर पहले सी चीख़ती आवाज़ में बोला—'यह क्या मज़ाक़ है? चलो।' जान पड़ता था जैसे रोज़ोव्स्की को कुछ भी मालूम नहीं था कि उसके साथ क्या होने वाला है। बरामदे में वह सबसे आगे आगे तेज़ तेज़ क़दम रखते हुए जाने लगा, यहां तक

कि भागने लगा। पर फिर वह पीछे हट गया और मुझे उसके चीख़ने और चिल्लाने की आवाज़ आने लगी। फिर बहुत से लोगों के क़दमों की आवाज़ और भीड़ का सा शोर सुनाई दिया। इस पर उसकी चीख़ोपुकार और रोना। धीरे धीरे आवाज़ दूर होने लगी, और अन्त में दरवाज़ा बन्द होने की आवाज़ आयी और सब चुप हो गया... हां। दोनों को फांसी पर चढ़ा दिया गया। दोनों का रस्सी से गला घोंट दिया गया था। एक चौकीदार ने—यह कोई दूसरा चौकीदार था—यह सारा कांड देखा। उसने मुझे बताया कि लोज़ीन्स्की ने कोई प्रतिरोध नहीं किया, लेकिन रोज़ोव्स्की बड़ी देर तक संघर्ष करता रहा, यहां तक कि उन्हें उसे घसीट कर फांसी के तख़्ते पर चढ़ाना पड़ा और ज़बर्दस्ती उसका सिर फंदे में डालना पड़ा। हां। यह चौकीदार कुछ कुछ बेवक़ूफ़ था। कहने लगा—'जनाब, मुझे तो बताया गया था कि वह बड़ा भयानक नज़ारा होगा, लेकिन वह तो बिल्कुल भयानक नहीं था। जब उन्हें फांसी पर लटका दिया गया तो, सिर्फ़ दो बार उन्होंने कन्धे बिचकाये—इस तरह—बस।' उसने मुझे नक़ल उतार कर दिखाया कि किस भांति उनके कन्धे छटपटाये थे। 'फिर जल्लाद ने रस्सी को थोड़ा सा खींचा ताकि फंदा और कस जाय, और बस, खेल ख़त्म हो गया, इसके बाद वे नहीं हिले-डुले।'"

और क्रिलत्सोव ने चौकीदार के शब्दों को दोहरा कर कहा—"बिल्कुल भयानक नहीं था।" और मुस्कराने की कोशिश की लेकिन फफक फफक कर रोने लगा। इसके बाद बड़ी देर तक वह चुप बैठा रहा, उसके लिए सांस लेना कठिन हो रहा था। बार बार उसे रुलाई आ जाती जिसे वह दबाने की चेष्टा करता।

"उस वक़्त से मैं क्रान्तिकारी बना, हां," जब वह कुछ शान्त हुआ तो उसने कहा। उसके बाद कुछेक शब्दों में ही उसने अपनी कहानी समाप्त कर दी।

वह नरोदवादी पार्टी का सदस्य था, और उपद्रवकारी दल का मुखिया तक था, जिसका काम आतंक फैलाना था ताकि सरकार अपने आप अपनी सत्ता जनता के हवाले कर दे। इसी उद्देश्य से सम्बन्धित काम के सिलसिले में वह पीटर्सबर्ग, कीयेव, ओदेस्सा, तथा विदेश में घूमा करता था, और जहां जाता कामयाब होता था। एक आदमी ने, जिस पर उसे पूरा भरोसा था, उसके साथ दग़ा किया। उसे गिरफ़्तार कर लिया गया, फिर

मुक़द्दमा चला और दो साल तक जेल में रखे जाने के वाद उसे फांसी की सज़ा दी गई। लेकिन वाद में सज़ा कम कर दी गई और फांसी की जगह उसे उम्र भर कड़ी मशक़्क़त की सज़ा दे दी गयी।

जेल में ही उसे तपेदिक़ का रोग हो गया। जिन स्थितियों में वह अव रह रहा था इनमें वह छः महीने से अधिक नहीं जी पायेगा। यह वह जानता था लेकिन उसे अपने किये पर पछतावा नहीं था। वह कहता कि अगर मुझे फिर इन्सान का जीवन मिले तो मैं उसे उन कारणों का नाश करने में लगा दूंगा जिनसे ऐसी ऐसी चीज़ें पैदा होती हैं जिन्हें मैंने अपनी आंखों से देखा है।

इस आदमी की कहानी से तथा उसके साथ घनिष्ठता होने पर, नेख़्लूदोव को वहुत सी वातों का स्पष्टीकरण हुआ जिन्हें वह पहले ठीक तरह नहीं समझ पाया था।

७

जिस रोज़ एक पड़ाव पर वच्चे वाली घटना हुई थी और कॉनवाय अफ़सर ने क़ैदियों से वुरा-भला कहा था, उस रोज़ नेख़्लूदोव ने एक सराय में रात वितायी और प्रातः देर से उठा। उठने के वाद वह वड़ी देर तक चिट्ठियां लिखता रहा, इस ख़्याल से कि जव आगे किसी वड़े शहर में पहुंचेगा तो वहां उन्हें डाक में डाल देगा। इस कारण वह सराय में से काफ़ी देर से रवाना हुआ, और उस रोज़ वह रास्ते में ही क़ैदियों के कारवां को नहीं पकड़ सका, वल्कि अगले पड़ाव पर उस वक़्त पहुंचा जव शाम पड़ चुकी थी और अन्धेरा होने लगा था।

वह एक सराय में ठहरा जिसकी मालकिन वेहद मोटी गोरी गर्दन वाली अधेड़ उम्र की भरी-पूरी औरत थी। नेख़्लूदोव ने अपने कपड़े सुखाये और चाय पीने के लिए एक कमरे में गया। कमरा साफ़-सुथरा और वहुत सी तस्वीरों और देव-प्रतिमाओं से सजा था। चाय पीने के वाद वह जल्दी से निकल कर वाहर आ गया ताकि अफ़सर से मिल कर कात्यूशा से भेंट करने की इजाज़त ले सके।

पिछले छः पड़ावों पर उसे कात्यूशा से भेंट करने की इजाज़त नहीं मिली थी। हालांकि कई वार अफ़सर वदलते रहे थे, फिर भी किसी अफ़सर ने नेख़्लूदोव को पड़ाव के अन्दर घुसने नहीं दिया। इस तरह एक सप्ताह

से भी अधिक समय से वह कात्यूशा से नहीं मिल पाया था। इस कठोरता का कारण यह था कि जेलख़ाने का कोई बड़ा अफ़सर उस रास्ते से गुज़रने वाला था। अब वह अफ़सर, बिना टोली की ओर आंख तक उठाये, उस रास्ते से चला जा चुका था, इसलिए नेख़्लूदोव को आस बंधने लगी थी कि जिस अफ़सर ने आज प्रातः टोली की कमान अपने हाथ में ली है वह उसे क़ैदियों से मिलने देगा, जिस तरह पहले अफ़सर मिलने दिया करते थे।

पड़ाव गांव के दूसरे सिरे पर था। सराय की मालकिन ने अपनी घोड़ा-गाड़ी नेख़्लूदोव को पेश कर दी कि उसमें बैठ कर वह पड़ाव तक चला जाय, लेकिन नेख़्लूदोव को पैदल जाना अधिक पसन्द था। एक हट्टा-कट्टा, चौड़े कन्धों वाला मज़दूर उसे रास्ता दिखाने के लिए साथ हो लिया। मजदूर ने ख़ूब ऊंचे ऊंचे घुटनों तक के बूट पहन रखे थे, जिन्हें उसने हाल ही में तारकोल से रोग़न किया था, जिस कारण उनसे तारकोल की तीखी गन्ध आ रही थी। गहरी धुन्ध छायी थी, जिस कारण आसमान नज़र नहीं आ रहा था। अन्धेरा इतना था कि यदि वह युवा मजदूर तीन क़दम भी आगे निकल जाता तो वह नज़र नहीं आता था, केवल उसी वक़्त नज़र आता था जब किसी खिड़की में से रोशनी उस पर पड़ती। लेकिन उसके बोझल बूटों की आवाज़ बराबर आ रही थी जो गहरे, चिपचिपे कीच में छप-छप करते आगे बढ़ रहे थे।

गिरजे के सामने खुला मैदान था। मैदान लांघ कर नेख़्लूदोव लम्बी सड़क पर आ गया। सड़क के दोनों तरफ़ मकानों की खिड़कियां थीं जिनकी रोशनी अन्धेरे में ख़ूब चमक रही थीं। अपने पथ-दर्शक के पीछे पीछे चलता हुआ नेख़्लूदोव गांव के बाहर जा पहुंचा, जहां पर घुप्प अन्धेरा था। परन्तु यहां पर भी पड़ाव-घर के सामने लैम्प लगे थे जिनकी रोशनी धुन्ध में से छन छन कर आ रही थी। ज्यों ज्यों वे नज़दीक जाने लगे, रोशनी के लाल लाल पुंज आकार में बड़े होने लगे। आख़िर पड़ाव-घर की बाड़ के डण्डे, बाहर पहरे पर इधर-उधर टहलता हुआ सन्तरी, एक खम्भा जिस पर काली-सफ़ेद धारियां पुती थीं, और सन्तरी की चौकी नज़र आने लगे। जब वे नज़दीक पहुंचे तो सन्तरी ने हमेशा की तरह आवाज़ लगाई—"कौन है?" फिर जब देखा कि आगन्तुक बिल्कुल अजनबी हैं तो इतनी कड़ाई से पेश आया कि इन्हें बाड़ के नज़दीक तक खड़ा हो

कर इन्तज़ार करने की इजाज़त नहीं देता था। पर इस कड़ाई का नेख़्लूदोव के गाइड पर कोई असर नहीं हुआ।

"क्या बात है यार, इतनी सख़्ती क्यों करते हो? तुम जा कर अपने अफ़सर को बुला लाओ, हम यहां खड़े इन्तज़ार करते हैं।"

सन्तरी ने कोई जवाब नहीं दिया, परन्तु फाटक में से चिल्ला कर अन्दर कुछ कहा और फिर इस चौड़े कन्धों वाले युवा मज़दूर की ओर घूर घूर कर देखने लगा, जो अब हाथ में लकड़ी की एक खपची लिये लैम्प की रोशनी में नेख़्लूदोव के बूटों पर से कीच साफ़ करने लगा था। बाड़ के पीछे से औरतों और मर्दों की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। लगभग तीन मिनट के बाद किसी चीज़ के खड़खड़ाने की आवाज़ आयी, फाटक खुला, और एक सॉर्जेंट, कन्धे पर अपना भारी कोट डाले अन्धेरे में से निकल कर लैम्प की रोशनी में आया और पूछने लगा कि क्या काम है। सॉर्जेंट इतनी कठोरता से पेश नहीं आया जितनी कठोरता से सन्तरी पेश आया था, लेकिन वह सवाल पर सवाल पूछने लगा। तुम कौन हो, अफ़सर से क्यों मिलना चाहते हो, तुम्हें क्या काम है, इत्यादि। ज़ाहिर था कि उसे यहां से बख़्शीश पाने की उम्मीद होने लगी थी और वह इस मौक़े को हाथ से नहीं जाने देना चाहता था। नेख़्लूदोव ने कहा कि वह एक ख़ास काम से आया है, और सॉर्जेंट को ज़रूर ख़ुश कर देगा, और क्या सॉर्जेंट मेहरबानी कर के अफ़सर के पास उसका एक पुर्ज़ा ले जा सकता है? सॉर्जेंट ने पुर्ज़ा हाथ में लिया, सिर हिलाया और वहां से चला गया।

कुछ देर बाद फाटक में फिर खड़खड़ हुई और स्त्रियां टोकरियां, डिब्बे, जग, बोरे इत्यादि उठाए बाहर निकलीं। सभी ऊंची आवाज़ में, अपनी विशेष साइबेरियाई बोली में बतिया रही थीं। किसी ने भी देहातियों-किसानों की पोशाक नहीं पहन रखी थी, सभी शहरियों के से कपड़े पहने थीं, जाकेट और क्लोक जिनके नीचे फ़र लगी थी। उन्होंने अपने घाघरे काफ़ी ऊपर तक मोड़ रखे थे, और सिरों पर शालें बांध रखी थीं। लैम्प की रोशनी में वे नेख़्लूदोव और उसके गाइड को बड़े ग़ौर से देखती रहीं। चौड़े कन्धों वाले मज़दूर को देख कर एक औरत तो प्रत्यक्षतः बड़ी ख़ुश हुई और बड़े दुलार से उसे ख़ालिस साइबेरियाई ढंग से गालियां देने लगी —

"अरे कलमुंहे, यहां क्या कर रहा है? शैतान उठा ले जाये तुझे!" औरत ने मज़दूर को संबोधित कर के कहा।

"मैं इस मुसाफ़िर को रास्ता दिखाने आया हूं," युवक ने जवाब दिया। "और तुम यहां क्या लायी थीं?"

"दूध-मक्खन। कल सुबह और लाने को कहा है।"

"और रात रहने के लिए नहीं कहा? क्यों?" युवक ने पूछा।

"तुम जाओ जहन्नुम में, झूठे कहीं के!" उसने हंस कर कहा। "पर हमारे साथ गांव तक तो चलो।"

जवाब में गाइड ने कोई ऐसी बात कही जिस पर न केवल सभी औरतें बल्कि सन्तरी भी हंसने लगा। फिर नेख़्लूदोव की ओर घूम कर बोला –

"अब तो अपने आप रास्ता ढूंढ़ लोगे न? गुम तो नहीं हो जाओगे?"

"नहीं, मैं ढूंढ़ लूंगा।"

"गिरजे से आगे जा कर, दोमंज़िला मकान के साथ वाला घर है। और लो, यह मेरी लाठी ले लो।" कहते हुए उसने नेख़्लूदोव के हाथ में वह लाठी दे दी जो वह उठाये हुए था। लाठी उसके क़द से भी लम्बी थी। फिर अपने बड़े बड़े बूटों से कीचड़ में से जाते हुए, स्त्रियों के साथ अन्धेरे में खो गया।

धुन्ध में से अब भी उसकी आवाज़ आ रही थी जो औरतों की आवाज़ों में घुल-मिल गई थी। फाटक खड़खड़ा कर खुला और सार्जेंट निकल कर नेख़्लूदोव के पास आया और उसे अफ़सर के पास ले गया।

८

पड़ाव-घर साइबेरिया की सड़क पर बने सभी पड़ाव-घरों जैसा था: नुकीले लट्ठों की बाड़ से घिरे आंगन में तीन एकमंजिला मकान थे। सबसे बड़े मकान की खिड़कियों पर सीखचे लगे थे, यहां क़ैदी रखे जाते थे। दूसरा मकान कॉनवाय के सिपाहियों के लिए था, और तीसरे में दफ़्तर था। इसी में कॉनवाय का अफ़सर भी रहता था। तीनों मकानों की खिड़कियों में रोशनी थी, ऐसी रोशनी जिसे देख कर लगता है कि इन

घरों के अन्दर आराम और आसाइश बसती होगी। यहां पर यह मिथ्या भ्रम विशेष रूप से अधिक होता था। मकानों के बाहर सायबानों में लैम्प जल रहे थे, इनके अतिरिक्त पांच लैम्प दीवारों के साथ लगे थे जिनसे सारे आंगन में काफ़ी रोशनी हो रही थी। मैदान के बीचोंबीच एक लम्बा तख़्ता रखा था जिस पर से चलते हुए सॉर्जेंट, नेख़्लूदोव को सबसे छोटे मकान की ओर ले गया। मकान के बाहर सायबान की तीन सीढ़ियां चढ़ कर सॉर्जेंट रुक गया और अदब से नेख़्लूदोव को ड्योढ़ी के अन्दर चलने को कहा जिसमें एक छोटा सा लैम्प जल रहा था। ड्योढ़ी से धुएं की गंध आ रही थी। एक सिपाही, गाढ़े की क़मीज़, और काले रंग की पतलून पहने और नकटाई लगाये, फूंकें मार मार कर समोवार सुलगा रहा था। उसने एक पांव में टॉप-बूट चढ़ा रखा था, और दूसरे बूट से भाथी का काम ले रहा था। नेख़्लूदोव पर आंख पड़ते ही सिपाही समोवार को छोड़ कर आगे बढ़ आया, नेख़्लूदोव का चमड़े का ओवरकोट उतरवाया, और उसके बाद साथ वाले कमरे में चला गया।

"वह आ गया है हुज़ूर।"

"अन्दर भेज दो," ग़ुस्से से भरी आवाज़ आयी।

"इस दरवाज़े में से अन्दर चले जाइये," सिपाही ने कहा और फिर समोवार सुलगाने में लग गया।

साथ वाले कमरे में एक लैम्प छत पर से लटक रहा था। नीचे खाने का मेज़ रखा था जिसके सामने, ऑस्ट्रियाई फ़ैशन की जाकेट पहने एक अफ़सर बैठा था। मेज पर भोजन की बची-खुची चीज़ें और दो बोतलें रखी थीं। अफ़सर का चेहरा बहुत लाल हो रहा था और मूंछें सुनहरी रंग की थीं। ऑस्ट्रियाई जॉकेट उसकी चौड़ी छाती और चौड़े कन्धों पर ख़ूब चुस्त बैठी थी। हवा में तम्बाकू तथा किसी सस्ते इत्र की तीखी गंध फैली थी। कमरा ख़ूब गरम हो रहा था। नेख़्लूदोव को देख कर अफ़सर उठ खड़ा हुआ और व्यंग और संशय की दृष्टि से इस नवागन्तुक की ओर देखते हुए बोला—

"कहिये, क्या काम है?" और बिना जवाब का इन्तज़ार किये, खुले दरवाज़े में से चिल्ला कर बोला—"वेर्नोव! समोवार को क्या हो गया, लाते-मरते क्यों नहीं हो?"

"अभी लाया हुज़ूर।"

"'अभी' का बच्चा। वहां तू कर क्या रहा है?" अफ़सर चिल्लाया और उसकी आंखें ग़ुस्से से चमकने लगीं।

"आया हुज़ूर!" सिपाही ने पुकार कर कहा और समोवार अन्दर ले आया।

सिपाही ने समोवार मेज़ पर रखा और बाहर जाने लगा। अफ़सर की छोटी छोटी क्रूर आंखें सिपाही की पीठ पर गढ़ी थीं, मानो उसे बेधने के लिए निशाना ढूंढ़ रही हों। सारा वक़्त नेख़्लूदोव खड़ा रहा। अफ़सर एक चौरस शकल की ब्रांडी से भरी बोतल उठा लाया, फिर अपने सफ़री थैले में से कुछ एल्बर्ट बिस्कुट निकाले और चाय बनाने लगा। सब चीज़ें मेज़ पर रखने के बाद वह नेख़्लूदोव की ओर घूम कर बोला—

"कहिये, मैं आप की क्या ख़िदमत कर सकता हूं?"

"मैं एक क़ैदी से मिलने की इजाज़त चाहता हूं," नेख़्लूदोव ने खड़े-खड़े जवाब दिया।

"क्या कोई राजनीतिक क़ैदी है? उसकी तो क़ानून इजाज़त नहीं देता," अफ़सर ने कहा।

"जिस क़ैदी औरत का मैं ज़िक्र कर रहा हूं वह राजनीतिक क़ैदी नहीं है," नेख़्लूदोव ने कहा।

"हां, पर आप तशरीफ़ तो रखिये," अफ़सर बोला।

नेख़्लूदोव बैठ गया।

"वह राजनीतिक क़ैदी तो नहीं है," उसने फिर कहा, "पर मेरी दरख़्वास्त पर बड़े अफ़सरों ने उसे राजनीतिक क़ैदियों के साथ रहने की इजाज़त दे दी थी।"

"हां हां, मैं जानता हूं," अफ़सर ने बात काटते हुए कहा। "छोटी सी, काले बालों वाली। हां। इसका तो इन्तज़ाम हो सकता है। आप सिगरेट पीजिये।"

अफ़सर ने सिगरेटों का डिब्बा नेख़्लूदोव की ओर बढ़ाया, फिर दो गिलासों में चाय ढाल कर एक गिलास नेख़्लूदोव के सामने रखा।

"शौक़ फ़र्माइये।"

"शुक्रिया, मैं चाहता हूं कि..."

"अभी बहुत वक़्त है, रात लम्बी है। मैं अभी हुक्म दिये देता हूं कि उसे रात को आपके पास भेज दिया जाय।"

"क्या मैं उसी के पास जा कर उसे नहीं मिल सकता? उसे मेरे पास भेजने की क्या ज़रूरत है?" नेख़्लूदोव ने कहा।

"जहां राजनीतिक क़ैदी रहते हैं? यह क़ानून के ख़िलाफ़ है।"

"पहले तो मुझे कई बार इजाज़त दी जाती रही है। अगर मेरा इरादा राजनीतिक क़ैदियों को कुछ देने का हो तो वह तो मैं उसके ज़रिये भेज सकता हूं।"

"नहीं नहीं, उसकी तलाशी ली जायेगी," अफ़सर ने कहा और बड़े अप्रिय ढंग से हंसने लगा।

"तो आप मेरी ही तलाशी क्यों न ले लें।"

"चलो, छोड़ो, इसके विना ही चला लेंगे," अफ़सर ने कहा और बोतल खोलकर नेख़्लूदोव का गिलास भरना चाहा। "लीजिये! नहीं? जैसी आपकी इच्छा। यहां साइवेरिया में रहते हुए अगर कोई पढ़ा-लिखा आदमी मिल जाय तो हम शुक्र गुज़ारते हैं। हमारा काम वड़ा क्लेश से भरा है, आप तो जानते हैं, और जिसे आराम से रहने की आदत हो उसके लिए वड़ी कठिनाई होती है। लोग हमारे वारे में सोचते हैं कि कॉनवाय अफ़सर बड़े अभद्र और अशिक्षित लोग होते हैं। किसी को यह याद नहीं रहता कि हमारा जन्म इससे कहीं वेहतर स्थिति के लिए हुआ है।"

नेख़्लूदोव को यह अफ़सर अपने लाल लाल चेहरे, कपड़ों पर छिड़के इत्र, अंगुली में पहनी अंगूठी और विशेषकर उसकी भौंडी हंसी के कारण वहुत वुरा लगा। परन्तु आज भी उसकी मानसिक स्थिति वैसी ही गंभीर और दत्तचित्त वनी थी जैसी कि इस सारी यात्रा में रही थी, जिस कारण वह किसी मनुष्य के साथ घृणा तथा अवमान के साथ पेश नहीं आ सकता था। इसके विपरीत वह यह महसूस करता था कि सवके साथ "सम्पूर्णता" से वातचीत करने की जरूरत है। मनुष्यों के साथ अपने इस व्यवहार को वह "सम्पूर्णता" कह कर व्यक्त करता था। अफ़सर की वात सुन कर वह मन ही मन इस नतीजे पर पहुंचा कि इस अफ़सर को अपने अधीन रखे गये क़ैदियों को दुःख देना वुरा लगता है।

"मैं सोचता हूं कि इस स्थिति में भी यदि आप दुःखी लोगों की सहायता करें तो आपके मन को सन्तोष मिलेगा," नेख़्लूदोव ने गंभीरता से कहा।

"उन्हें दुःख क्या है? आप इन लोगों को जानते नहीं हैं।"

"ये और लोगों से भिन्न तो नहीं हैं," नेख़्लूदोव ने कहा, "ये भी और लोगों जैसे ही हैं, और इनमें से कुछ तो निर्दोष हैं।"

"वेशक, इनमें तरह तरह के लोग शामिल हैं, और यह स्वाभाविक ही है कि इनके प्रति मन में दया उठती है। हममें से कुछ अफ़सर जरूर उनके साथ कड़ाई से पेश आते हैं, पर मैं, जहां भी मुमकिन हो, उनका बोझ हल्का करने की कोशिश करता हूं। मैं तो ख़ुद कष्ट उठा लेता हूं ताकि उन्हें कष्ट न पहुंचे। और अफ़सर हैं कि ज़रा कुछ हुआ नहीं, फ़ौरन् क़ानून चलाते हैं, ज़्यादा हुआ तो—शूट, पर एक मैं हूं, मुझे तरस आता है इन पर। आप और चाय लीजिये," उसने कहा और नेख़्लूदोव के गिलास में और चाय ढाली। "और यह औरत कौन है जिससे आप मिलना चाहते हैं?" उसने पूछा।

"यह एक बदनसीब औरत है जो भटकती हुई चकले में जा पहुंची थी। वहां इस पर ज़हर देने का झूठा इलज़ाम लगाया गया। लेकिन यह बड़ी अच्छी औरत है," नेख़्लूदोव ने जवाब दिया।

अफ़सर ने सिर हिलाया।

"हां, ऐसी बातें हो जाती हैं। मैं आपको एक औरत का क़िस्सा सुना सकता हूं जो कज़ान में रहा करती थी। उसका नाम एम्मा था। वह पैदा तो हंगरी में हुई थी लेकिन उसकी आंखें बिल्कुल ईरानी थीं," वह कहता गया। उस औरत को याद कर के उसके होंठों पर मुस्कराहट आ गयी जिसे वह रोक नहीं सका। "उसमें इतना बांकापन था कि जैसे कोई काउंटेस हो..."

नेख़्लूदोव ने अफ़सर की बात बीच में ही काट दी और वार्तालाप को पहले विषय पर ले आया।

"मैं सोचता हूं कि जितनी देर ये लोग आपके अधीन हैं, आप इन्हें ज़रूर सुख पहुंचा सकते हैं, और मुझे विश्वास है कि ऐसा करने से आपको बड़ी प्रसन्नता होगी," नेख़्लूदोव ने एक एक शब्द बड़ी स्पष्टता से बोलते हुए कहा, मानो किसी विदेशी से या किसी बच्चे से बात कर रहा हो।

अफ़सर की आंखें चमक रही थीं, उसने बड़ी बेताबी से नेख़्लूदोव की ओर देखा, कि कब वह यह क़िस्सा समाप्त करे और वह उस हंगरी की लड़की की बात सुना सके जिसकी आंखें ईरानियों जैसी थीं। जान पड़ता

था कि उस औरत का मुखड़ा बड़ा सजीव हो कर उसकी आंखों के सामने घूम रहा था और उसका सारा ध्यान उसी पर लगा हुआ था।

"हां, यह सब तो आप ठीक कहते हैं," वह बोला, "और मुझे सचमुच उन पर दया आती है। पर मैं आपको इस एम्मा का क़िस्सा सुनाना चाहता हूं। आप जानते हैं उसने क्या किया..."

"मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं," नेख़्लूदोव ने कहा, "और मैं यह भी साफ़ साफ़ आपको बता दूं कि मैं ख़ुद पहले किसी दूसरी तरह का आदमी रहा हूं लेकिन अब मुझे स्त्रियों के साथ इस तरह का सम्बन्ध रखने से घृणा है।"

अफ़सर ने इस तरह नेख़्लूदोव की ओर देखा मानो डर गया हो।

"आप और चाय पीजिये," उसने कहा।

"नहीं, शुक्रिया।"

"बेर्नोव!" अफ़सर ने आवाज़ लगाई, "साहिब को वाकूलोव के पास ले जाओ। कहो कि इन्हें राजनीतिक क़ैदियों के अलग कमरे में ले जाय। वहां यह जांच के वक़्त तक बैठ सकते हैं।"

६

नेख़्लूदोव अर्दली के साथ हो लिया और बाहर मैदान में आ गया। लैम्पों की लाल लाल रोशनी के कारण मैदान में कुछ कुछ उजाला था।

"कहां जा रहे हो?" कॉनवाय के एक सिपाही ने अर्दली से पूछा।

"पांच नम्बर वाले अलग कमरे में।"

"इस तरफ़ से नहीं जा सकोगे। वहां ताला चढ़ा है। पीछे से घूम कर जाओ।"

"क्यों?"

"बड़े साब गांव चले गये हैं और चाभी साथ लेते गये हैं।"

"तो आइये, इस तरफ़ से जायेंगे।"

अर्दली नेख़्लूदोव को दूसरी तरफ़ से ले गया। कुछेक तख़्तों पर से चलते हुए ये लोग एक दूसरे फाटक के सामने जा पहुंचे। अभी वे आंगन में ही थे कि नेख़्लूदोव को अन्दर के शोर-गुल की आवाज़ें सुनाई देने लगीं। ऐसा लग रहा था जैसे मधुमक्खियों के छत्ते में मधुमक्खियां प्रजनन की

तैयारी कर रही हों। पर जब वे नज़दीक पहुंचे, और दरवाज़ा खुला तो यह शोर और भी ऊंचा हो गया और उसमें चिल्लाने, गालियां बकने और हंसने की साफ़ आवाज़ें आने लगीं। नेख़्लूदोव के कान में बेड़ियां खनकने की आवाज़ आयी और उसी बदबू की लपटें आयीं जिससे वह भली भांति परिचित था।

सदा की तरह यह शोर, बेड़ियों की खनखन, और घुटन भरी बदबू नेख़्लूदोव को व्याकुल करने लगी। उसके मन में पहले तो नैतिक घिन सी उठी और फिर सचमुच उबकाई आने लगी। दोनों भावनाएं मिल कर एक दूसरी को तीव्रतर बनाने लगीं।

अन्दर प्रवेश करते ही जिस चीज़ पर सबसे पहले नेख़्लूदोव की नज़र गयी वह एक बड़ा सा, बदबूदार टब था, जिसके किनारे पर एक औरत बैठी थी, और उसके सामने एक आदमी खड़ा था। आदमी ने अपने मुंडे हुए सिर पर गोल चपटी टोपी टेढ़ी कर के पहन रखी थी। दोनों किसी विषय पर बातें कर रहे थे। नेख़्लूदोव को देख कर आदमी ने आंख मारी और बोला—

"ख़ुद ज़ार भी इस पानी को बहने से नहीं रोक सकता।"

पर औरत ने फ़ौरन् अपने लबादे के किनारों को नीचे खींच लिया और शरमिन्दा सी हो गयी।

अन्दर दाख़िल होने वाले दरवाज़े से शुरू हो कर एक बरामदा सीधा चला गया था जिसमें बहुत से दरवाज़े खुलते थे। पहला कमरा परिवारों के लिए था। उसके आगे अनब्याहे लोगों का, और आख़िर में दो छोटे छोटे कमरे राजनीतिक क़ैदियों के लिए अलग रख दिये गये थे।

इस मकान में एक सौ पचास क़ैदियों के लिए स्थान था लेकिन इस समय चार सौ पचास क़ैदी भरे पड़े थे। मकान इस क़दर ठसाठस भरा था कि सभी क़ैदियों के लिए कमरों में जगह नहीं थी, कई क़ैदी गलियारे में पड़े थे। कुछ फ़र्श पर लेटे या बैठे थे, कुछेक हाथों में चायदानियां उठाये उबलता पानी लेने जा रहे थे या ले कर आ रहे थे। लौटने वाले आदमियों में तारास भी था। वह चलता हुआ नेख़्लूदोव के पास आ पहुंचा और बड़े स्नेह से अभिवादन किया। तारास का सद्भावनापूर्ण चेहरा इस समय काले काले चोट के निशानों से विकृत हो रहा था। निशान तारास के नाक पर और आंख के नीचे थे।

"तुम्हें क्या हुआ है?" नेख़्लूदोव ने पूछा।

"एक झगड़ा हो गया था," तारास ने मुस्करा कर कहा।

"ये लोग हमेशा लड़ते रहते हैं," कॉनवाय का सिपाही बोला।

"सारा झगड़ा एक औरत पर हुआ," एक क़ैदी ने कहा जो तारास के पीछे पीछे चला आया था, "अन्धे फ़ेदका के साथ इसकी लड़ाई हुई है।"

"फ़ेदोस्या कैसी है?"

"ठीक है। मैं उसी की चाय के लिए पानी ले जा रहा हूं," तारास ने जवाब दिया और उस कमरे के अन्दर चला गया जिसमें क़ैदी अपने परिवारों के साथ रहते थे।

नेख़्लूदोव ने दरवाज़े में से अन्दर झांक कर देखा। कमरा मर्दों और औरतों से ठसाठस भरा था। उनमें से कुछेक या तो सोने वाले तख़्तों के ऊपर या उनके नीचे लेटे हुए थे। कमरे में गीले कपड़े सूखने के लिए डाले हुए थे जिस कारण वहां भाप ही भाप फैली थी। औरतों की चटर-पटर रुकने में न आती थी। अगला दरवाज़ा अनव्याहे लोगों के कमरे में खुलता था। यहां पहले कमरे से भी ज़्यादा भीड़ थी, यहां तक कि दरवाज़े के बीच और गलियारे में भी वे रास्ता रोके बैठे थे, और गीले कपड़े पहने, ऊंची आवाज़ में बहस कर रहे थे, जैसे किसी निश्चय पर पहुंचने की कोशिश कर रहे हों या कुछ न कुछ काम कर रहे थे। कॉनवाय के सॉर्जेंट ने बताया कि जिस क़ैदी को रसद ख़रीदने का काम सौंपा गया था वह यहां बैठा रसद के पैसों में से एक जुएबाज़ का उधार चुका रहा है (जुएबाज़ ने कुछेक से पैसे जीत रखे थे या कुछेक को उधार दे रखा था), और उससे ताश के पत्तों से बने छोटे छोटे टिकट ले रहा है। जब उनकी नज़र कॉनवाय के सॉर्जेंट तथा एक कुलीन पर पड़ी तो जो क़ैदी सबसे नज़दीक बैठे थे वे चुप हो गये और द्वेष भरी नज़रों से उनकी ओर देखने लगे। इन्हीं में नेख़्लूदोव को मुजरिम फ़्योदोरोव नज़र आया जो साइबेरिया में कड़ी मशक़्क़त पर जा रहा था। फ़्योदोरोव हर वक़्त अपने साथ एक मैले-कुचैले गोरे नौजवान को साथ रखता था जिसका मुंह सूजा रहता और भौंहें चढ़ी रहती थीं, और एक और मुजरिम को भी, जिसे देख कर नेख़्लूदोव को सदा घिन उठती थी। इस आदमी का नाक कटा हुआ और मुंह पर चेचक के दाग़ थे। क़ैदियों में भी यह आदमी बदनाम था, कहा

जाता था कि एक बार जब यह भागने की कोशिश कर रहा था तो इसने अपने किसी साथी को जंगल में मार डाला था और उसका मांस तक खाता रहा था। एक कन्धे पर से अपना गीला लबादा लटकाये वह गलियारे में बड़ी निडर और व्यंगपूर्ण नज़रों से नेख़्लूदोव की ओर देखता खड़ा रहा और रास्ता रोके रहा। नेख़्लूदोव उसके पास से हो कर निकल गया।

इस तरह के दृश्य वह कई बार देख चुका था। पिछले तीन महीनों के दौरान वह इन चार सौ पचास आम मुजरिम क़ैदियों को बार बार विभिन्न परिस्थितियों में देख चुका था: सड़क पर चिलचिलाती धूप में, जब ये अपनी बेड़ियां घसीटते और गर्द के बवण्डर उड़ाते चले जा रहे थे; रास्ते में जगह जगह जब ये आराम के लिए रुकते थे; पड़ाव-घरों के अन्दर; और गर्मी के मौसम में बाहर, पड़ाव-घरों के आंगनों में, जहां व्यभिचार के ऐसे वीभत्स दृश्य उसने देखे थे जिससे रोंगटे खड़े हो जायं। फिर भी हर बार जब वह इनके बीच आता, और वे बड़े ध्यान से उसकी ओर देखने लगते, जिस तरह वे अब देख रहे थे, तो नेख़्लूदोव मन ही मन लज्जित और व्याकुल हो उठता। उसे लगता जैसे उसने उनके विरुद्ध कोई पाप किया है। एक तरफ़ तो यह लज्जा और जुर्म की भावना होती, दूसरी तरफ़ उसका मन घृणा और भय से भर उठता, जिसे दबाना असंभव हो जाता था। यह जानते हुए भी कि जिन परिस्थितियों में ये लोग रहते हैं, उनमें उनका आचार इससे बेहतर नहीं हो सकता, फिर भी वह अपनी घृणा को दबा नहीं पाता था।

"इनके तो मज़े हैं हरामख़ोरों के," राजनीतिक क़ैदियों के कमरे के पास पहुंच कर नेख़्लूदोव ने सुना, "इनका कुछ बिगड़ता थोड़े ही है, पेट थोड़े ही फूलेगा इनका," किसी ने फटी आवाज़ में, पीछे से कहा और साथ ही भद्दी सी गाली जोड़ दी। नेख़्लूदोव की पीठ के पीछे क़ैदी ठहाका मार कर हंसे और उनकी व्यंग तथा द्वेषपूर्ण हंसी गूंज उठी।

१०

जब नेख़्लूदोव और सॉर्जेंट अनब्याहे क़ैदियों के कमरे को पार कर चुके थे तो सॉर्जेंट यह कह कर वापस लौट गया कि जांच से पहले वह उसके पास आ जायेगा। सॉर्जेंट के चले जाने की देर थी कि एक क़ैदी

नंगे पांवों, अपनी बेड़ियां ऊपर को उठाये हुए, तेज़ तेज़ क़दम रखता हुआ नेख़्लूदोव के पास आया। उससे पसीने की तेज़, तीखी गन्ध आ रही थी। आगे बढ़ कर बड़ी रहस्यपूर्ण आवाज़ में फुसफुसा कर बोला—

"मामला अपने हाथ में लीजिये, हुज़ूर। इन्होंने लौंडे को बेवक़ूफ़ बना दिया है। उसे शराब पिला दी, और आज जांच के वक़्त उसने अपना नाम भी कार्मानोव बता दिया। इसे रोकिये, हुज़ूर। हमारी हिम्मत नहीं पड़ती, ये लोग हमें जान से मार डालेंगे।" और फिर घबरा कर इधर-उधर देखते हुए वहां से चला गया।

बात यों हुई थी। कार्मानोव नाम के एक मुजरिम को खानों में कड़ी मशक़्क़त की सज़ा मिली थी। क़ैदियों में एक युवक भी था जिसकी शक़्ल बहुत कुछ कार्मानोव से मिलती थी, और जिसे निर्वासन की सज़ा मिली थी। कार्मानोव ने उस युवक को फ़ुसला कर इस बात पर रज़ामंद कर लिया कि वह उससे अपना नाम बदल ले और उसकी जगह खानों पर काम करने चला जाय, जब कि कार्मानोव ख़ुद निर्वासन में चला जायेगा।

नेख़्लूदोव यह मामला जानता था। इसी क़ैदी ने उसे इसके बारे में हफ़्ता भर पहले बता दिया था। उसने सिर हिला दिया ताकि क़ैदी को पता चल जाय कि उसने सुन लिया है और जो कुछ बन पड़ा वह कर देगा, और बिना मुड़ कर देखे आगे की ओर चलता गया।

जिस क़ैदी ने नेख़्लूदोव से यह बात कही थी उसे वह अच्छी तरह से जानता था। और उसके इस काम पर वह हैरान हुआ था। जब क़ैदी येकातेरीनबुर्ग में थे तो इस आदमी ने नेख़्लूदोव से अनुरोध किया था कि वह उसे अपनी पत्नी को मंगवाने की इजाज़त ले दे। यह आदमी बिल्कुल साधारण सा किसान लगता था, उम्र लगभग तीस साल रही होगी, और क़द दर्मियाना था। इसे इस जुर्म के लिए कड़ी मशक़्क़त की सज़ा मिली थी कि इसने क़त्ल करने तथा डाका डालने की कोशिश की थी। नाम माकार देव्किन था। इसका जुर्म बड़ा अजीब सा था। जब वह नेख़्लूदोव को इसका ब्योरा दे रहा था तो कहता कि यह जुर्म उसने नहीं, शैतान ने किया है। कहने लगा कि एक बार एक मुसाफ़िर उसके पिता के घर आया और एक स्लेज-गाड़ी किराये पर ली। उसे वहां से छब्बीस मील दूर किसी गांव को जाना था। माकार के बाप ने उसे यात्री को गाड़ी में ले जाने को कहा। माकार ने घोड़े पर साज़ लगाया, कपड़े पहने और

यात्री के साथ बैठ कर चाय पीने लगा। अजनबी ने चाय पीते समय बताया कि वह शादी करने जा रहा है और इस वक़्त उसके पास पूरे पांच सौ रुबल की रक़म है जो उसने मास्को में कमाई है। जब माकार ने यह सुना तो उठ कर बाहर आंगन में आ गया और एक कुल्हाड़ी उठा कर स्लेज-गाड़ी में भूसे के नीचे रख दी।

"मुझे ख़ुद उस वक़्त मालूम नहीं था कि मैं यह कुल्हाड़ी क्यों ले रहा हूं," उसने कहा। "शैतान मेरे कान में कह रहा था, 'कुल्हाड़ी उठा लो,' और मैंने कुल्हाड़ी उठा ली। हम गाड़ी में बैठ कर जाने लगे। पहले तो ठीक चलते रहे। मुझे कुल्हाड़ी भूल ही गयी। इसी तरह हम गांव के नज़दीक जा पहुंचे, गांव वहां से केवल चारेक मील दूर रह गया होगा। चौराहे से बड़ी सड़क तक पहुंचने के लिए पहाड़ी पर चढ़ कर जाना पड़ता था। मैं गाड़ी पर से उतर आया, और स्लेज के पीछे पीछे चलने लगा। शैतान मेरे कान में फुसफुसाने लगा, 'तुम सोच क्या रहे हो? पहाड़ी की चोटी पर पहुंचोगे तो बड़ी सड़क पर तुम्हें लोग मिलने लगेंगे। आगे गांव आ जायेगा। यह अपना रुपया अपने साथ ले जायेगा, अगर कुछ करने का इरादा है तो यही वक़्त है।' मैं स्लेज की ओर झुका, जैसे भूसा ठीक करने लगा होऊं, और कुल्हाड़ी मेरे हाथ में अपने आप आ गयी। यात्री मेरी ओर घूमा। 'क्या कर रहे हो?' मैंने कुल्हाड़ी उठाई और एक ही वार में उसका काम तमाम करना चाहता था, लेकिन वह तेज़ निकला, झट से उछल कर नीचे आ गया और मेरे दोनों हाथ पकड़ लिये। 'शैतान के बच्चे, क्या कर रहे हो?' उसने कहा और मुझे नीचे बरफ़ पर गिरा दिया। मैंने हाथ-पांव तक नहीं हिलाये, फ़ौरन् ही हार मान ली। उसने मेरे बाज़ू अपने कमरबन्द के साथ बांध दिये, मुझे उठा कर गाड़ी में डाल दिया और सीधा मुझे थाने में ले गया। गांव वालों ने मेरी सिफ़ारिश की, कहा कि मेरा चालचलन अच्छा है, मैं भला आदमी हूं और मुझे किसी ने कोई बुरा काम करते नहीं देखा। मेरे मालिकों ने भी, जिनके पास मैं काम करता था, मेरी तारीफ़ की, पर वकील करने के लिए हमारे पास पैसे नहीं थे इसलिए मुझे चार साल कड़ी मशक़्क़त की सज़ा मिल गई।"

अब यही आदमी, अपने गांव के एक साथी को बचाने के लिए, अपनी जान जोखिम में डाल कर, क़ैदियों का भेद नेख़्लूदोव को दे रहा था। वह जानता था कि अगर क़ैदियों को इस बात का पता चल गया तो वे ज़रूर इसका गला घोंट देंगे।

११

राजनीतिक क़ैदियों को दो कमरों में रखा जाता था जिनके दरवाज़े गलियारे के एक हिस्से में खुलते थे, जहां पार्टीशन डाल कर उन्हें बाक़ी कमरों से अलग कर दिया गया था। जब नेख़्लूदोव गलियारे के इस हिस्से में पहुंचा तो उसे सिमनसन नज़र आया। रबड़ की जाकेट पहने और देवदार की लकड़ी का एक कुन्दा हाथ में लिये वह अलावघर के सामने झुका हुआ था। अलावघर का ढकना आग की तपिश के कारण बार बार कांप उठता था।

जब नेख़्लूदोव अन्दर आया तो उसने बैठे बैठे ही, अपनी घनी भौंहों के नीचे से आंखें उठा कर उसकी ओर देखा, और हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ा दिया।

"अच्छा हुआ आप आ गये। मुझे आपसे कुछ कहना है," नेख़्लूदोव की आंखों में आंखें डाल कर बड़े महत्वपूर्ण ढंग से सिमनसन ने कहा।

"क्या बात है?" नेख़्लूदोव ने पूछा।

"बाद में बताऊंगा। इस वक़्त मुझे काम है।"

और सिमनसन फिर अलावघर की ओर घूम गया। वह अपने ही किसी फ़ारमूले के मुताबिक़ अलावघर गरम कर रहा था ताकि कम से कम तपिश ज़ाया हो।

नेख़्लूदोव पहले दरवाज़े में से अन्दर जाने लगा था जब मास्लोवा झाड़ू लगाती हुई दूसरे दरवाज़े में से बाहर निकली। हाथ में झाड़ू पकड़े वह कूड़े और गर्द के एक ढेर पर झुकी हुई थी और उसे धकेलती हुई स्टोव के पास ले जा रही थी। उसने सफ़ेद रंग की जाकेट पहन रखी थी और अपना घाघरा ऊपर को खोंस रखा था। सिर पर रूमाल था, जिसे उसने माथे पर भौंहों तक बांध रखा था ताकि उसके बाल गर्द से बचे रहें। नेख़्लूदोव को देख कर वह बड़ी ख़ुश हुई और उसका चेहरा लाल हो गया। उसने झाड़ू फेंक दिया और घाघरे पर हाथ पोंछते हुए उसके ऐन सामने खड़ी हो गयी।

"झाड़-पोंछ कर रही हो?" हाथ मिलाते हुए नेख़्लूदोव ने कहा।

"हां, यह तो मेरा पुराना काम है," मास्लोवा मुस्कराई; "पर उफ़! कितनी गंदगी है यहां। बार बार साफ़ करो फिर भी जगह वैसी

की वैसी हो जाती है।" फिर सिमनसन की ओर घूम कर बोली, "कम्बल सूख गया है?"

"हां, लगभग सूख गया है," सिमनसन ने मास्लोवा की ओर विलक्षण ढंग से देखते हुए जवाब दिया। उसकी यह नज़र नेख़्लूदोव से छिपी नहीं रही।

"अच्छी बात है, मैं अभी आ कर ले जाऊंगी और फिर ओवरकोट सुखाने के लिए ले आऊंगी।" फिर पहले दरवाज़े की ओर इशारा करती हुई नेख़्लूदोव से बोली, "हमारे सभी आदमी इसी कमरे में हैं।" और ख़ुद दूसरे दरवाज़े के अन्दर चली गयी।

दरवाज़ा खोल कर नेख़्लूदोव अन्दर दाख़िल हुआ। कमरा छोटा सा था। दीवार के साथ नीचे की ओर एक तख़्ते पर टीन का छोटा सा लैम्प टिमटिमा रहा था। यही तख़्ता यहां सोने के लिए लगाया गया था। कमरे में सीलन थी, सर्दी थी, धूल की गन्ध आ रही थी) धूल अभी तक बैठ नहीं पायी थी), और तम्बाकू का धुआं छाया हुआ था। टीन के लैम्प की रोशनी में उसके आस-पास बैठे लोगों के चेहरे चमक रहे थे, लेकिन सोने वाले तख़्तों पर अन्धेरा था। दीवारों पर साये कांप रहे थे।

अधिकांश राजनीतिक क़ैदी इस छोटे से कमरे में जमा थे। दो आदमी, जिन पर खाने पीने की चीज़ें लाने का ज़िम्मा था, रसद और चाय के लिए उबलता पानी लेने गये हुए थे। यहीं पर वेरा बैठी थी, जिसके साथ नेख़्लूदोव की पुरानी जान-पहचान थी। वेरा पहले से दुबली और पीली लग रही थी, आंखें बड़ी बड़ी और सहमी हुई सी, छोटे छोटे बाल, और माथे पर एक नस उभरी हुई। उसने सलेटी रंग की जाकेट पहन रखी थी, और अपने सामने अख़बार का काग़ज़ बिछाये, काग़ज़ की नलियों में तम्बाकू भर भर कर सिगरेट बना रही थी, और ऐसा करते हुए उसके हाथ झटक से जाते थे।

यहीं पर एमीलिया रांत्सेवा भी थी जिसे नेख़्लूदोव राजनीतिक क़ैदियों में सबसे प्रिय समझता था। उसका काम "घर" का इन्तज़ाम करना था, और जो कठिनतम परिस्थितियों में भी घर का सा स्निग्ध तथा आकर्षक वातावरण बना देती थी। आस्तीनें चढ़ाये वह लैम्प के पास बैठी, प्याले और गिलास पोंछ पोंछ कर तख़्ते पर रख रही थी जिस पर एक तौलिया बिछा हुआ था। उसके सुन्दर, धूप में संवलाये हाथ बड़ी दक्षता

से काम कर रहे थे। शक्ल-सूरत से रांत्सेवा एक साधारण सी युवती थी और उसके चेहरे पर मृदुता तथा योग्यता का भाव रहता। जब वह मुस्कराती तो उसका चेहरा सहसा खिल उठता, और बड़ा सजीव और आकर्षक हो उठता। इस समय भी नेख़्लूदोव का स्वागत करते हुए उसके चेहरे पर ऐसी ही मुस्कान खेल रही थी।

"वाह, हमने तो सोचा आप रूस लौट गये होंगे," वह बोली।

इसी कमरे के एक अंधियारे कोने में मारीया पाव्लोव्ना बैठी एक छोटी सी, सुनहरी बालों वाली लड़की को कुछ कर रही थी। लड़की बराबर अपनी तुतलाती ज़बान में प्यारी प्यारी बातें किये जा रही थी।

"बहुत अच्छा हुआ जो आप आ गये," मारीया पाव्लोव्ना बोली, "कात्यूशा से आप मिले हैं?" फिर नन्हीं लड़की की ओर इशारा करते हुए बोली, "यह देखिये, हमारे यहां एक नयी मेहमान आयी है।"

यहीं पर, दूर एक कोने में अनातोली क्रिलत्सोव पांव समेटे बैठा ठिठुर रहा था। पांवों पर उसने फ़ेल्ट के बूट पहन रखे थे, और अपने दोनों हाथ ओवरकोट की आस्तीनों के अन्दर दबाये हुए था। वह नेख़्लूदोव की ओर बराबर देखे जा रहा था और उसकी आंखें बुख़ार के कारण लाल हो रही थीं। नेख़्लूदोव सीधा उसके पास जाना चाहता था लेकिन दरवाज़े के पास ही दायीं ओर एक आदमी को बैठे देख कर रुक गया। यह प्रसिद्ध क्रान्तिकारी नोवोद्वोरोव था। लाल घुंघराले बाल, आंखों पर चश्मा, रबड़ की जाकेट पहने हुए, वह बैठा ग्राबेत्स से बातें कर रहा था। सुन्दरी ग्राबेत्स मुस्करा रही थी। नेख़्लूदोव जल्दी जल्दी उसे मिलने चला गया, कारण, सभी राजनीतिक क़ैदियों में वही एक आदमी था जो नेख़्लूदोव को बुरा लगता था। नोवोद्वोरोव ने त्योरियां चढ़ा कर नेख़्लूदोव की ओर देखा और चश्मे के पीछे उसकी नीली आंखें चमकने लगीं, फिर हाथ मिलाने के लिए अपना पतला सा हाथ आगे बढ़ाया।

"कहिये, आपका सफ़र तो मज़े में कट रहा है?" उसने कहा। उसकी आवाज़ में प्रत्यक्षतः व्यंग की झलक थी।

"जी, बहुत सी बातें मुझे यहां बड़ी दिलचस्प लगती हैं," नेख़्लूदोव ने जवाब में कहा मानो उसका ध्यान नोवोद्वोरोव के व्यंग की ओर गया ही न हो, बल्कि उसे उसने शिष्टतापूर्ण प्रश्न समझा हो। इसके बाद नेख़्लूदोव क्रिलत्सोव की ओर जाने लगा।

प्रकट में तो जान पड़ता था जैसे नेख़्लूदोव को इसकी कोई परवाह न हो, लेकिन वास्तव में इन शब्दों को सुन कर नेख़्लूदोव का मन बहुत विचलित हुआ था। ज़ाहिर था कि नोवोद्वोरोव कोई अप्रिय बात कहना या करना चाहता है। नेख़्लूदोव का मन जो इन दिनों हरेक के प्रति सद्भावनाओं से ओत-प्रोत था, खिन्न उदास हो उठा।

"कहो कैसे हो?" क्रिलत्सोव का ठण्डा, ठिठुरता हाथ दबाते हुए नेख़्लूदोव ने कहा।

"अच्छा हूं, केवल मेरा बदन गरम नहीं हो पाता। मेरे कपड़े नीचे तक भीग गये थे," क्रिलत्सोव ने जवाब दिया और झट से अपने दोनों हाथ फिर लबादे की आस्तीनों के अन्दर रख लिये। "यहां पर भी कड़ाके की सर्दी पड़ रही है। वह देखो, खिड़की के शीशे टूटे हुए हैं।" और सीखचों के पीछे उसने टूटे शीशों की ओर इशारा किया। "तुम अपनी सुनाओ, इतने दिन से हमें मिलने क्यों नहीं आये?"

"मुझे इजाज़त कहां मिलती थी। अफ़सर लोग टस से मस न होते थे। आज अफ़सर ने कुछ उदारता दिखायी।"

"उदारता! ख़ूब!" क्रिलत्सोव ने टिप्पणी कसी, "मारीया से पूछो आज अफ़सर ने क्या किया।"

कोने में बैठी हुई मारीया पाव्लोव्ना सुनाने लगी कि आज सुबह जब पड़ाव-घर से चलने लगे थे तो इस छोटी लड़की के साथ क्या गुज़री थी।

"मैं समझती हूं कि यह बेहद ज़रूरी हो गया है कि हम सब मिल कर इसका विरोध करें," वेरा ने दृढ़ता से कहा। परन्तु उसकी आंखें अब भी सन्दिग्ध और डरी हुई थीं और कभी एक के चेहरे की ओर और कभी दूसरे के चेहरे की ओर देख रही थीं। "व्लादीमिर सिमनसन ने विरोध ज़रूर किया है परन्तु वही काफ़ी नहीं है।"

"तुम कैसा विरोध चाहती हो?" क्रिलत्सोव चिढ़ कर, त्योरियां चढ़ाते हुए बड़बड़ाया। वेरा जब बात करती तो कृत्रिम ढंग से, उसमें सरलता का अभाव था, और वह हर वक़्त घबरायी सी रहती थी। ये बातें प्रत्यक्षतः बहुत दिनों से क्रिलत्सोव को अखरती रही थीं। "तुम कात्यूशा से मिलने आये हो?" क्रिलत्सोव ने घूम कर नेख़्लूदोव से पूछा। "वह तो सारा वक़्त काम करती रहती है। वह मर्दों का कमरा साफ़ कर

चुकी है, और अब स्त्रियों वाला कमरा साफ़ कर रही है। लेकिन यहां से पिस्सुओं को कोई कैसे साफ़ कर सकता है? वे तो इन्सान को ज़िन्दा चूस जायेंगे। मारीया वहां बैठी क्या कर रही है?" कोने में बैठी मारीया पाव्लोव्ना की ओर सिर हिला कर क्रिलत्सोव ने पूछा।

"बाल काढ़ रही है अपनी गोद ली हुई बेटी के," रांत्सेवा ने जवाब दिया।

"कहीं जुएं तो नहीं फैलायेगी हम सब पर?" क्रिलत्सोव ने पूछा।

"नहीं, नहीं, मैं बड़े ध्यान से अपना काम कर रही हूं। बच्ची भी अब बड़ी साफ़-सुथरी हो गयी है। अब तुम इसे ले जाओ," मारीया ने रांत्सेवा से कहा, "मैं जा कर ज़रा कात्यूशा की मदद करूंगी और क्रिलत्सोव के लिए कम्बल भी लेती आऊंगी।"

रांत्सेवा ने नन्हीं लड़की को गोद में बिठा लिया और मां की तरह प्यार से लड़की की दोनों गुदगुदी, नंगी बांहें अपनी छाती से लगा लीं, और चीनी का एक टुकड़ा उसे खाने को दिया।

जब मारीया पाव्लोव्ना कमरे में से चली गयी तो दो आदमी कमरे में दाखिल हुए। वे हाथों में खाने-पीने का सामान और उबलते पानी से भरी चायदानियां उठाये हुए थे।

१२

इन दो नवागन्तुकों में से एक तो पतला सा मंझले क़द का युवक था जो घुटनों तक के ऊंचे बूट और भेड़ की खाल का कोट पहने हुए था। कोट पर कपड़ा चढ़ा हुआ था। बड़ी चुस्ती से, हल्के हल्के क़दम रखते हुए वह अन्दर दाखिल हुआ। उसके हाथों में दो चायदानियां थीं जिनमें से ख़ूब भाप निकल रही थी, और बग़ल में, एक कपड़े में लिपटी डबलरोटी उठाये हुए था।

"यह लो, आख़िर प्रिंस भी आ गये," तख़्ते पर प्यालों के साथ चायदानियां रखते हुए और डबलरोटी रांत्सेवा के हाथ में देते हुए उसने कहा। "हम बहुत बढ़िया चीज़ें ख़रीद कर लाये हैं," उसने कहा और अपना खाल का कोट उतार कर बैठे लोगों के सिरों के ऊपर से एक कोने में फेंका। "मार्केल ने दूध और अण्डे ख़रीदे हैं। वाह, आज तो

ख़ूब जशन होगा। और रांत्सेवा की सफ़ाई से तो कमरे चमचमा रहे हैं," उसने मुस्करा कर रांत्सेवा की ओर देखा। "और अब यह चाय बनायेगी।"

इस आदमी के रोम रोम से, उसकी एक एक हरकत से, उसकी आवाज़, और नज़र से ओज और आनन्द फूट फूट पड़ता था। दूसरा आदमी इसके बिल्कुल उलट था, उसका चेहरा निराश और उदास लग रहा था। वह आदमी क़द का मंझला, और हड्डियों का ढांचा भर था, गालों की हड्डियां ख़ूब उभरी हुई थीं, चेहरा पीला और होंठ पतले थे, लेकिन एक दूसरी से दूर जड़ी उसकी हरी आंखें बड़ी सुन्दर थीं। वह एक पुराना रूईदार कोट पहने हुए था, पांव पर लम्बे बूट थे जिन पर गैलोश चढ़ा रखे थे। उसके हाथों में दूध के दो बर्तन और बर्च की छाल के बने दो गोल डिब्बे थे, जो उसने रांत्सेवा के सामने रख दिये। नेख़्लूदोव का अभिवादन उसने केवल गर्दन झुका कर किया और उसकी ओर घूर घूर कर देखता रहा। फिर, अनिच्छा से उसने अपना नमीभरा हाथ आगे बढ़ाया और नेख़्लूदोव से हाथ मिला कर रसद का सामान बाहर निकालने लगा।

ये दोनों राजनीतिक क़ैदी जनता में से आये थे। पहला आदमी किसान था, और उसका नाम नाबातोव था; दूसरा फ़ैक्ट्री का मज़दूर था और उसका नाम मार्केल कोन्द्रात्येव था। मार्केल उस समय क्रान्तिकारियों में शामिल हुआ जब उसकी उम्र काफ़ी बड़ी हो चुकी थी – ३५ वर्ष। लेकिन नाबातोव १८ वर्ष की अवस्था में ही उनमें जा मिला था। गांव की पाठशाला की पढ़ाई पूरी करने के बाद, प्रतिभासम्पन्न विद्यार्थी होने के नाते, उसे हाई स्कूल में दाख़िला मिल गया। जितनी देर वह वहां पढ़ता रहा, साथ में अन्य लड़कों को पढ़ा कर वह अपनी रोज़ी क़माता रहा। स्कूल छोड़ने पर उसे सोने का तमग़ा मिला। वह विश्वविद्यालय में दाख़िल नहीं हुआ। अभी स्कूल की अन्तिम श्रेणी में पढ़ ही रहा था कि उसने निश्चय कर लिया कि वह जनता में जा कर अपने उपेक्षित भाइयों को ज्ञानदान देगा। और यही उसने किया भी। एक बड़े से गांव में जा कर वह सरकारी दफ़्तर में क्लर्क हो गया। शीघ्र ही उसे गिरफ़्तार कर लिया गया। वह किसानों को किताबें पढ़ कर सुनाता था, साथ ही किसानों की उपज को बढ़ाने तथा उसे बेचने के लिए उसने एक सहकारी संगठन की व्यवस्था की थी। अधिकारियों ने आठ महीने तक उसे जेलख़ाने में रखा। रिहाई

के बाद भी उस पर पुलिस की निगरानी रही। जब उसे छोड़ दिया गया तो नाबातोव एक दूसरे गांव में जा कर रहने लगा, एक स्कूल में अध्यापक का काम ले लिया और फिर से वही काम करने लगा जो वह पहले गांव में करता रहा था। उसे फिर गिरफ़्तार कर लिया गया और अब की बार चौदह महीने तक जेल में रहा। जेल में उसकी राजनीतिक धारणाएं और भी दृढ़ हो गयीं।

इसके बाद उसे पेर्म गुबेर्निया में निर्वासित कर के भेज दिया गया। यहां से वह भाग गया। पकड़े जाने पर उसे सात महीने क़ैद की सज़ा हुई और क़ैद से निकलने पर इसे निर्वासित कर के आर्ख़ांगेल्स्क गुबेर्निया भेज दिया गया। और वहां से याकूतिया में निर्वासित किया गया, क्योंकि उसने नये ज़ार के प्रति प्रजा-भक्ति की शपथ लेने से इन्कार कर दिया था। इस तरह उसकी जवानी का आधा हिस्सा जेलों और जलावतनी में कट गया था। परन्तु इन सब अनुभवों के बावजूद उसके स्वभाव में कटुता या उत्साह में शिथिलता नहीं आ पायी। बल्कि इनसे उसे और भी प्रोत्साहन मिला। वह बड़ा सजीव आदमी था, उसकी पाचन-शक्ति अद्भुत थी, हर वक़्त ख़ुश, सक्रिय और ताज़ादम रहता था। उसे कभी भी किसी बात पर पश्चात्ताप नहीं होता था, न ही वह कभी भविष्य की चिन्ता करता था। अपनी सारी शक्ति, योग्यता तथा व्यावहारिक ज्ञान इस हेतु लगा देता था कि वह वर्तमान में सक्रिय हो सके। जब जेल के बाहर होता तो वह अपने ध्येय की पूर्ति में सचेष्ट रहता, मेहनतकश लोगों को, विशेषकर किसानों को शिक्षा देने तथा संगठित करने का काम करता। जब जेल में होता तो उसी स्फूर्ति और व्यावहारिक कुशलता से बाहर की दुनिया से सम्पर्क स्थापित करने तथा अपने और अपने दल के जीवन को यथासम्भव सुखी बनाने में लगा रहता। उसका सबसे बड़ा गुण यह था कि वह एक सामाजिक व्यक्ति था। ऐसा जान पड़ता जैसे वह अपने लिए कुछ भी नहीं चाहता हो, वह थोड़े में ही सन्तुष्ट था, परन्तु अपने साथियों के दल के लिए अत्यधिक चीज़ों की मांग करता था और उसके लिए दिन-रात भूखे और उनींदे रह कर काम कर सकता था, भले ही यह काम शारीरिक हो या मानसिक। किसान होने के कारण उसमें कड़ी मेहनत करने की क्षमता थी, चीज़ों को बड़े ध्यान से देखता था और अपना काम बड़ी कुशलता से करता था। संयत प्रकृति, तथा स्वभाव का विनम्र

व्यक्ति था। न केवल लोगों की इच्छाओं की ओर ही बल्कि उनकी राय की ओर भी अत्यधिक ध्यान देता था। उसकी निरक्षर, अन्धविश्वासों मे ग्रसित विधवा बूढ़ी मां अब भी जीवित थी। नावातोव अब भी उसकी सहायता किया करता था। जब जेल से वाहर होता तो अक्सर उसके पास जा कर रहता था। जितनी देर घर पर रहता, अपनी मां के प्रत्येक काम में वड़ी रुचि के साथ हाथ वंटाता था। वहां वह अपने पुराने साथियों से मिलता, जिनके साथ वह वड़ा हुआ था। उनके साथ वैठ कर सस्ते तम्वाकू के कस लगाता, उनकी मुठभेड़ों में भाग लेता, और उन्हें सविस्तार समझाता कि किस भांति उन सवको धोखे में रखा जा रहा है, और किस भांति वे इस झूठ के जाल को तोड़ कर बाहर निकलें। क्रान्ति के बारे में उसके विचारों तथा शब्दों के पीछे यही धारणा रहती थी कि जनता को—जिसमें से वह ख़ुद जन्मा था—उसी स्थिति में रहने दिया जायेगा जिसमें वह अब है, केवल लोगों को पर्याप्त ज़मीन मिलेगी, और उनके ऊपर जमींदार व सरकारी अफ़सर नहीं होंगे। उसके मतानुसार क्रान्ति के वाद लोगों के जीवन के आधारभूत स्वरूपों को नहीं वदलना चाहिए, सारे ढांचे को नहीं तोड़ डालना चाहिए, केवल इस सुदृढ़, विशाल और सुन्दर इमारत की अन्दर वाली दीवारों को वदल देना चाहिए। इस पुरानी इमारत से नावातोव को मोह था। इस दृष्टि से उसका मत नोवोद्वोरोव तथा उसके अनुयायी मार्केल कोन्द्रात्येव के मत से पृथक् था।

धर्म के सवाल पर भी उसके विचार विल्कुल किसानों जैसे ही थे। आध्यात्मिक प्रश्नों—जैसे सभी स्रोतों का मूल स्रोत क्या है, या परलोक इत्यादि के वारे में उसने कभी सोचा तक न था। भगवान् को वह कल्पना के समान समझता था, (आरागो की तरह) और इसकी उसे अभी तक आवश्यकता महसूस नहीं हुई थी। विश्व का उद्‌गम कैसे हुआ, मूसा ठीक कहता है या डार्विन, इसकी उसे कोई चिन्ता नहीं थी। उसके साथी डार्विनवाद को वड़ा महत्व देते थे, लेकिन नावातोव की नज़रों में वह भी मान का वैसा ही खिलौना मात्र था जैसी कि यह धारणा कि विश्व की रचना छः दिन के अन्दर हो गयी थी।

इस प्रश्न में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं थी कि संसार का उद्‌गम कैसे हुआ। कारण, उसके सामने हर समय यही सवाल रहता था कि इस संसार में अच्छे से अच्छे ढंग से कैसे जियें। भविष्य के वारे में उसने

कभी नहीं सोचा था। कारण, उसकी आत्मा की गहराइयों में यह शान्त और अटल आस्था जड़ जमाये हुए थी कि जिस भांति पशु-पक्षियों तथा पेड़-पौधों के संसार में कोई चीज़ मरती नहीं, केवल अपना रूप बदलती रहती है—खाद अनाज में, अनाज मुर्ग़ी में, मेंढक का लार्वा मेंढ़क में, तितली का लार्वा तितली में, ओक वृक्ष का बीज ओक वृक्ष में इत्यादि—इसी तरह मनुष्य भी नहीं मरता, केवल उसका रूप बदलता रहता है। यह धारणा जो धरती पर पसीना बहाने वाले सभी किसानों में पायी जाती है, नाबातोव ने अपने पुरखाओं से ग्रहण की थी। इसी विश्वास के कारण उसे मृत्यु का कोई भय न था, और वह उन यन्त्रणाओं को बड़ी निडरता से सहन करता था जो उसे मृत्यु की ओर ले जा रही थीं, परन्तु वह यह नहीं जानता था कि ऐसी चीज़ों की किन शब्दों में व्याख्या करे। काम से उसे प्रेम था और वह हमेशा किसी न किसी व्यावहारिक काम में लगा रहता था। वह अपने साथियों को भी सदा काम करने की प्रेरणा दिया करता था।

दूसरा राजनीतिक क़ैदी—मार्केल कोन्द्रात्येव—इससे बहुत ही भिन्न प्रकार का आदमी था। वह भी जनता में से निकल कर आया था। पन्द्रह बरस की उम्र में वह काम करने लगा था। उसी समय उसके मन में एक धूमिल सी भावना उठी थी कि उसके साथ अन्याय किया जा रहा है। इस भावना को दबाने के लिए उसने तम्बाकू और शराब पीना शुरू कर दिया। अन्याय का भास सबसे पहली बार उसे उस क्रिसमस के दिन हुआ जब फ़ैक्ट्री के मालिक की पत्नी ने क्रिसमस के पेड़ को सजाने का आयोजन किया और उस पर फ़ैक्ट्री के बच्चों को निमन्त्रित किया था। वहां पर उसे एक सस्ती सी सीटी, एक सेब, एक वरक़-चढ़ा अख़रोट और एक इंजीर दी गयी, जबकि फ़ैक्ट्री मालिक के बच्चों को ऐसे सुन्दर उपहार दिये गये जो लगता था जैसे परी-लोक से आये हों। बाद में उसे मालूम हुआ कि उन पर पचास रूबल से अधिक रक़म ख़र्च हुई थी। जब वह बीस बरस का हुआ तो उनकी फ़ैक्ट्री में एक प्रसिद्ध क्रान्तिकारी महिला आयी और फ़ैक्ट्री में ही मज़दूरों की तरह काम करने लगी। कोन्द्रात्येव की योग्यता को देख कर उसने उसे किताबें और पैंफ़लेट देना शुरू कर दिया, उससे राजनीतिक मसलों पर बातें करने लगी, उसे उसकी स्थिति की व्याख्या और उसे बदलने के उपाय बताने लगी। जब उसके दिमाग़

में यह बात साफ़ हुई कि उत्पीड़न से उसके और अन्य लोगों को छुटकारा पाने की संभावना हो सकती है तो वर्तमान व्यवस्था का अन्याय उसे और भी क्रूर और भयानक नज़र आने लगा। और उसके हृदय में न केवल मुक्ति के लिए तड़प उठने लगी, वल्कि उन लोगों को सज़ा देने के लिए भी, जिन्होंने इस क्रूर अन्याय की व्यवस्था की थी और इसे क़ायम रखे हुए थे। उसे वताया गया कि यह संभावना ज्ञान से पैदा होती है। अतः कोन्द्रात्येव पूरे तन-मन से ज्ञान संचय करने में जुट गया। यह वात उसके दिमाग़ में साफ़ नहीं थी कि किस भांति ज्ञान द्वारा समाजवादी आदर्श को क्रियान्वित किया जा सकता है। पर उसे यह विश्वास था कि जिस ज्ञान से उसे अपने जीवन की वर्तमान परिस्थितियों में छिपे अन्याय का पता चला है, उसी ज्ञान से स्वयं इस अन्याय का भी नाश होगा। इसके अतिरिक्त वह समझता था कि ज्ञानार्जन कर के वह औरों से ऊपर उठ जायेगा। इसलिए उसने तम्बाकू और शराव का सेवन छोड़ दिया, और अपना सारा ख़ाली वक़्त (जो स्टॉक-रूम में तबादला हो जाने के वाद उसे अधिक मिलने लगा था) अध्ययन में व्यतीत करने लगा।

क्रान्तिकारी महिला उसे पढ़ाने लगी। हर प्रकार के विषय के प्रति कोन्द्रात्येव की ज्ञान-पिपासा तथा उसकी योग्यता देख कर वह हैरान रह गयी। दो साल के अन्दर ही अन्दर उसने बीजगणित, रेखागणित तथा इतिहास (जिसमें उसकी विशेष तौर पर रुचि थी) में दक्षता प्राप्त कर ली। साथ ही कविता, गल्प, आलोचनात्मक, और विशेषकर समाजवादी साहित्य की जानकारी प्राप्त कर ली।

क्रान्तिकारी महिला पकड़ी गयी। उसके साथ कोन्द्रात्येव भी पकड़ा गया, क्योंकि अवैध किताबें उसके पास पायी गयी थीं। दोनों क़ैद कर दिये गये और वाद में उन्हें वोलोग्दा गुवेर्निया में निर्वासित कर के भेज दिया गया। यहां पर कोन्द्रात्येव का परिचय नोवोद्वोरोव से हुआ। उसने यहां और भी अधिक क्रान्तिकारी साहित्य पढ़ा, और जो कुछ पढ़ा उसे याद रखा, और उसकी समाजवादी धारणाएं और भी पक्की हो गयीं। जलावतनी से लौटने के वाद उसने एक वहुत वड़ी हड़ताल का नेतृत्व किया, जिसमें फ़ैक्ट्री को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया और उसके संचालक को मार डाला गया। उसे फिर गिरफ़्तार कर के जलावतन कर दिया गया।

जिस भांति मौजूदा आर्थिक व्यवस्था के बारे में उसके विचार नकारात्मक थे, उसी भांति धर्म के सम्बन्ध में भी उसके विचार नकारात्मक थे। जब उसे धर्म की, जिसकी उसे जन्मघुट्टी मिली थी, निरर्थकता का पता चला, तो उसने बड़े प्रयत्न से उसे अपने दिल और दिमाग़ में से निकाला—पहले डरते हुए और बाद में गहरे आनन्द का अनुभव करते हुए। अब वह पादरियों और धार्मिक सिद्धान्तों का बड़े क्रोध और विषैले ढंग से मज़ाक़ उड़ाया करता था, मानो उस कपट का बदला लेना चाहता हो जो धर्म द्वारा उस पर और उसके पुरखाओं पर किया गया था।

उसका रहन-सहन तपस्वियों का सा था, थोड़े में सन्तुष्ट। जो लोग बचपन से ही काम करने के आदी होते हैं, और जिनके पट्ठे ख़ूब मज़बूत हो गये होते हैं, उनकी तरह कोन्द्रात्येव भी बहुत देर तक और बड़ी सुगमता से काम कर सकता था। हर प्रकार का शारीरिक श्रम बड़ी स्फूर्ति से कर सकता था। परन्तु जो चीज़ उसे सबसे ज़्यादा पसन्द थी वह अवकाश था और यह उसे जेलख़ानों और पड़ाव-घरों में मिल जाता था। इसमें वह अपना पठन-पाठन जारी रख सकता था। आजकल वह मार्क्स के संकलन का पहला ग्रन्थ पढ़ रहा था, जिसे वह अपने थैले में छिपाये रहता था, मानो कोई बहुत बड़ा ख़ज़ाना हो। नोवोद्वोरोव को छोड़ कर अपने सभी साथियों के साथ उसका रवैया रुखाई और उदासीनता का था। नोवोद्वोरोव पर उसे बड़ी निष्ठा था, सभी विषयों पर उसके तर्कों को वह अकाट्य सत्य मानता था।

स्त्रियों से उसे अत्यधिक घृणा थी। उसका मत था कि स्त्रियां हर प्रकार के उपयोगी काम में बाधक बनती हैं। परन्तु मास्लोवा पर उसे रहम आता था और उसके साथ वह बड़ी नर्मी से पेश आता था। कारण, उसके विचार में मास्लोवा एक जीवन्त उदाहरण थी जिससे इस बात का पता चलता था कि किस भांति उच्च वर्ग के लोग निम्न वर्ग के लोगों का शोषण करते हैं। इसी कारण वह नेख़्लूदोव से भी घृणा करता था। नेख़्लूदोव से वह बहुत कम बोलता था, हाथ मिलाते वक़्त कभी भी उसका हाथ नहीं दबाता था, केवल अभिवादन करते-समय अपना हाथ आगे बढ़ा देता ताकि नेख़्लूदोव उसे दबा दे।

१३

आग जलने लगी जिससे अलावघर गरम हो गया। चाय तैयार हो गयी और दूध मिला कर प्यालों और गिलासों में डाल दी गयी। तख़्ते पर बिछे तौलिये के ऊपर रस्क, ताज़ा गेहूं की डवलरोटी, मक्खन, उवले हुए अण्डे, वछड़े का सिर और टांगें रख दी गयीं। सव लोग तख़्ते के उस हिस्से के पास आ गये जिससे खाने वाली मेज़ का काम लिया जाता था, और खाने-वतियाने लगे। रांत्सेवा एक वक्से पर बैठ कर चाय डाल डाल कर देने लगी। क्रिलत्सोव को छोड़ कर सभी लोग उसके इर्दगिर्द जमा हो गये थे। क्रिलत्सोव ने गीला ओवरकोट उतार दिया था और अव अपना सूखा कम्वल लपेटे अपनी जगह पर लेटा नेख़्लूदोव से वातें कर रहा था।

ये लोग सर्दी और वारिश में दिन भर चलते रहे थे। जव यहां पहुंचे तो गन्दगी और कूड़ा-करकट से यह स्थान भरा पड़ा था। वड़ी मेहनत और कठिनाई से उन्होंने इसे साफ़ किया और जगह को रहने योग्य वनाया। और इसके वाद अव पेट भरने और गरम गरम चाय पीने के वाद वे वड़े ख़ुश थे और हंसने-चहकने लगे थे।

दीवार के पीछे से मुजरिम क़ैदियों के क़दमों की आवाज़ें, उनके चीख़ने-चिल्लाने और गालियां वकने की आवाज़ें आ रही थीं, मानो इन राजनीतिक क़ैदियों को याद दिला रही हों कि वे कहां पर हैं, लेकिन वे इस वक़्त मज़े में थे, इन आवाज़ों को सुन कर इनका आराम कम होने के वजाय कुछ वढ़ता ही जान पड़ता था। समुद्र में किसी द्वीप पर पड़े लोगों की तरह, ये लोग भी कुछ देर के लिए अपने को उस अपमान और क्लेश से वचे हुए महसूस कर रहे थे जो उन्हें चारों ओर से घेरे हुए था। इससे वे और भी अधिक ख़ुश और उत्तेजित थे। उनकी वर्तमान स्थिति तथा आगे जो उनके साथ होगा, इन विपयों को छोड़ कर वे अन्य सभी विपयों पर वातें कर रहे थे। नौजवान पुरुपों और स्त्रियों के वीच, विशेपकर जव विवश हो कर उन्हें एक साथ रहना पड़ता हो जैसे कि ये लोग रह रहे थे, तरह तरह के, अनोखे रूप से मिश्रित आकर्पण पैदा हो जाते हैं। यहां पर भी ऐसा ही हुआ था। लगभग सभी किसी न किसी से प्रेम करते थे। नोवोद्वोरोव को सुन्दर युवती ग्रावेत्स से प्रेम था जिसके चेहरे पर हर वक़्त मुस्कान खेला करती थी। ग्रावेत्स एक युवा, लापरवाह

लड़की थी, जिसे क्रान्ति सम्बन्धी प्रश्नों से कभी कोई सरोकार न रहा था, परन्तु पढ़ाई के दिनों में तत्कालीन वातावरण के प्रभाव में आ कर कहीं कोई भूल कर बैठी, जिससे पकड़ी गई और निर्वासित कर के भेज दी गयी। जिन दिनों उस पर मुक़द्दमा चल रहा था, उन दिनों और बाद में जेल तथा निर्वासन के दिनों में उसे सबसे अधिक रुचि इस बात में थी कि वह पुरुषों को अपनी ओर आकर्षित कर पाये। पहले भी, जिन दिनों आज़ाद घूमा करती थी, तब भी उसके जीवन की मुख्य रुचि यही हुआ करती थी। अब सफ़र के दौरान उसे इस बात से ढाढ़स मिलता था कि नोवोद्वोरोव उसे पसन्द करने लगा है, अतः वह भी उससे प्रेम करने लगी। वेरा के हृदय में प्रेम करने की ललक हर समय रहती, परन्तु वह पुरुषों को आकर्षित नहीं कर पाती थी। फिर भी उसके हृदय में आशा बनी रहती कि वह और उसका प्रेमी गहरे अनुराग से एक दूसरे से प्रेम करेंगे। अतः वह कभी नाबातोव से और कभी नोवोद्वोरोव से प्यार करने लगती। प्रेम से मिलती-जुलती ही भावना क्रिलत्सोव के हृदय में मारीया पाव्लोव्ना के प्रति भी थी। वह उससे पुरुषों की तरह प्रेम करता था, मगर जानता था कि ऐसा प्रेम मारीया पाव्लोव्ना को पसन्द नहीं था। इसलिए वह अपनी भावनाओं को उससे छिपाये रहता था, और जब वह बड़ी कोमलता और सहानुभूति से उसकी देखभाल करती तो वह इन्हें मैत्री और कृतज्ञता का रूप दे कर व्यक्त किया करता था। नाबातोव और रांत्सेवा के प्रेम में बड़ी जटिलता और उलझाव था। जिस प्रकार मारीया पाव्लोव्ना कुमारी थी, उसी प्रकार रांत्सेवा अपने पति के प्रति पूर्णतया एकनिष्ठ थी।

अभी उसकी आयु केवल १६ वर्ष की थी और वह स्कूल में पढ़ती थी जब वह रांत्सेव से प्रेम करने लगी। रांत्सेव उस समय पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय का छात्र था। विश्वविद्यालय की परीक्षा पास करने से पहले ही दोनों की शादी हो गयी। उस समय इस लड़की की उम्र १९ वर्ष की थी। जब उसका पति विश्वविद्यालय की चौथी कक्षा में पढ़ता था तो वह विद्यार्थियों के किसी आन्दोलन की लपेट में आ गया। उसे पीटर्सबर्ग से निर्वासित कर दिया गया, जिस पर वह क्रान्तिकारी बन गया। रांत्सेवा उस समय डॉक्टरी की पढ़ाई कर रही थी। उसने अपनी पढ़ाई छोड़ दी और पति के साथ चली गई और स्वयं भी क्रान्तिकारी बन गयी। वह अपने पति को सबसे योग्य और सर्वोत्कृष्ट व्यक्ति मानती थी। यदि ऐसा

न मानती तो उससे प्रेम ही न करती। और जो प्रेम नहीं करती तो उससे शादी भी नहीं करती। पर जब उस सर्वोत्कृष्ट और सबसे योग्य व्यक्ति से प्रेम किया, और शादी की तो यह स्वाभाविक ही था कि जीवन तथा जीवन के ध्येय के बारे में भी उसके वही विचार हों जो उस सर्वोत्कृष्ट और सबसे योग्य व्यक्ति के थे। पहले इस पुरुष की दृष्टि में ज्ञानोपार्जन जीवन का ध्येय था। अतः रांत्सेवा ने भी यही ध्येय अपना लिया था। जब पति क्रान्तिकारी बना तो यह भी क्रान्तिकारी बन गयी। वह बड़ी स्पष्टता से यह सिद्ध कर दिखाता था कि मौजूदा व्यवस्था हमेशा नहीं चल सकती, कि प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह इस व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष करे, और ऐसी राजनीतिक तथा आर्थिक हालतें पैदा करने का प्रयत्न करे जिनमें व्यक्ति स्वच्छन्दता से विकास कर सके, इत्यादि। रांत्सेवा समझती थी कि उसकी भी सचमुच यही धारणाएं तथा भावनाएं हैं, परन्तु वास्तव में वह केवल अपने पति के विचारों को परम सत्य मानती थी। उसकी एक मात्र इच्छा थी कि उसके और उसके पति के एक ही विचार हों, उसकी आत्मा और उसके पति की आत्मा मिल कर एक हो जायं। इसी एक स्थिति में ही उसे पूर्ण नैतिक सन्तोष प्राप्त हो सकता था।

अपने पति और बेटे से अलग रहना उसके लिए घोर यन्त्रणा के समान था (बच्चे को उसकी मां ने अपने पास रख लिया था), पर उसने यह भी दृढ़ता और शान्ति से सहन किया क्योंकि वह जो कुछ कर रही थी वह अपने पति की ख़ातिर था, और एक ऐसे ध्येय की ख़ातिर जिसे वह निःसन्देह श्रेयस्कर मानती थी क्योंकि उसका पति उसके लिए काम कर रहा था। उसका पति हर वक़्त उसके हृदय में विचरता था, इसलिए उससे दूर रहते हुए भी वह किसी अन्य व्यक्ति से प्रेम नहीं कर सकती थी, ठीक उसी तरह जिस तरह वह उसके संग रहते हुए किसी अन्य व्यक्ति से प्रेम नहीं कर सकती थी। परन्तु नावातोव के अनुरक्त तथा पवित्र प्रेम से उसका हृदय प्रभावित हुए बिना न रह सका। यह नेक, दृढ़ विचारों वाला पुरुष उसके पति का मित्र था और उससे अपनी बहिन की तरह व्यवहार करता था। परन्तु इस व्यवहार में कोई और तत्व भी आने लगा था जिससे दोनों डर से गये थे, फिर भी इससे उनका यातनापूर्ण जीवन अधिक रोचक हो उठा था।

इस तरह इस सारी मण्डली में केवल मारीया पाव्लोव्ना और कोन्द्रात्येव ही दो ऐसे व्यक्ति थे जो प्रेम से अछूते रहे थे।

क्रिलत्सोव के पास बैठा नेख़्लूदोव बातें कर रहा था। उसे आशा थी कि हमेशा की तरह आज भी चाय के बाद कात्यूशा से मिल कर बातें कर सकेगा। और विषयों पर चर्चा करने के अलावा नेख़्लूदोव ने क्रिलत्सोव को माकार के जुर्म की कहानी सुनाई और उससे माकार ने जो प्रार्थना की थी वह भी कह सुनाई। क्रिलत्सोव बड़े ध्यान से सब सुनता रहा, उसकी कान्तिपूर्ण आंखें सारा वक़्त नेख़्लूदोव के चेहरे पर लगी रहीं।

"हां," क्रिलत्सोव ने सहसा कहा, "मेरे मन में अक्सर यह विचार उठता है कि इस यात्रा में हम सारा वक़्त उनके साथ चलते हैं–और ये कौन लोग हैं? ये वही लोग हैं जिनकी ख़ातिर हम जा रहे हैं, फिर भी हम उन्हें नहीं जानते। जानते ही नहीं, हम उन्हें जानना चाहते भी नहीं। और इससे भी बुरी बात यह है कि ये हमसे नफ़रत करते हैं, और हमें अपना दुश्मन समझते हैं। कितनी भयानक स्थिति है!"

"इसमें भयानक क्या है?" जब नोवोद्वोरोव के कानों में बात पड़ी तो वह बोल उठा। "जनता हमेशा शक्ति की पूजा करती है, केवल शक्ति की। आज सरकार के पास ताक़त है तो वह सरकार की पूजा करती है और हमसे नफ़रत करती है। कल हमारे पास ताक़त होगी तो वह हमारी पूजा करने लगेगी," उसने अपनी तड़कती आवाज़ में कहा।

उसी वक़्त दीवार के पीछे से गालियों की बौछाड़ और बेड़ियां खनकने की आवाज़ आयी। कोई चीज़ दीवार से टकरा रही थी, साथ ही रोने और चीख़ने की आवाज़ आ रही थी। किसी को पीटा जा रहा था और कोई चिल्ला चिल्ला कर पुकार रहा था, "मार डाला! मदद करो! कोई मदद करो!"

"ज़रा सुनो! ये इन्सान हैं या दरिन्दे! भला इनमें और हममें क्या मेल हो सकता है?" नोवोद्वोरोव ने स्थिर आवाज़ में कहा।

"तुम उन्हें दरिन्दे कहते हो, और यहां अभी नेख़्लूदोव मेरे सामने किसी ऐसी ही घटना का ज़िक्र कर रहा था," क्रिलत्सोव ने चिढ़ कर कहा और माकार का क़िस्सा सुनाने लगा कि किस तरह वह अपने गांव के एक आदमी की जान बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाल रहा है। "यह दरिन्दों का काम नहीं, यह सच्ची वीरता का काम है।"

"छिछली भावुकता!" नोवोद्वोरोव ने तिरस्कारपूर्ण स्वर में जोड़ा। "हमारे लिए यह समझना बड़ा कठिन है कि इन लोगों की क्या भावनाएं हैं, या इनकी हरकतों के पीछे कौन सी प्रेरणा काम करती है। तुम्हें इसमें उदारता नज़र आती है, पर क्या मालूम यह काम उस दूसरे मुजरिम के प्रति ईर्ष्यावश किया जा रहा हो।"

"क्या कारण है कि तुम किसी में भी कोई अच्छाई देखना नहीं चाहते?" सहसा मारीया पाव्लोव्ना गरम हो कर बोल उठी।

"जो चीज़ मौजूद ही न हो उसे देखा कैसे जा सकता है?"

"मौजूद तो है ही जब एक आदमी ऐसी भयानक मौत का ख़तरा मोल ले रहा है।"

"मेरे विचार में," नोवोद्वोरोव बोला, "यदि हम कुछ करना चाहते हैं तो उसके लिए सबसे पहली शर्त यह है" (कोन्द्रात्येव जो लैम्प की रोशनी में बैठा किताब पढ़ रहा था, किताब नीचे रख कर बड़े ध्यान से अपने गुरू का एक एक शब्द सुनने लगा) "कि हम कपोल-कल्पना को छोड़ कर वास्तविकता को देखें। यथाशक्ति हमें जनता के लिए सब कुछ करना चाहिए, और बदले में उससे किसी चीज़ की भी आशा नहीं करनी चाहिए। जब तक जनता उस जड़ता की स्थिति में रहे जैसी कि वह इस समय है, तो हम उसके लिए काम करेंगे, वह हमारे कामों में हमारे साथ भाग नहीं ले सकती।" वह इस तरह बोल रहा था जैसे भाषण दे रहा हो। "इसलिए जनता से यह उमीद करना कि वह हमारी सहायता करेगी, जब कि उसके विकास की प्रक्रिया शुरू नहीं हो पायी—जिस प्रक्रिया के लिए हम उसे तैयार कर रहे हैं—तो यह अपने को धोखा देना होगा।"

"किस विकास की प्रक्रिया?" क्रिलत्सोव ने पूछा। उसका चेहरा ग़ुस्से से लाल हो रहा था। "हम कहते तो यह हैं कि हम निरंकुश तानाशाही का विरोध करते हैं, मगर यह तानाशाही नहीं तो क्या है? इससे भयानक तानाशाही क्या होगी?"

"इसमें कोई तानाशाही नहीं है," नोवोद्वोरोव ने धीरे से कहा। "मैंने केवल यह कहा है कि मैं उस रास्ते को जानता हूं जिस पर जनता को चलना चाहिए, और उसे यह रास्ता मैं दिखा सकता हूं।"

"पर तुम्हें इस बात का यक़ीन कैसे हो गया कि जो रास्ता तुम दिखाओगे वही सही रास्ता है? क्या यह वैसी ही तानाशाही नहीं जैसी

कि फ़्रांसीसी क्रान्ति के समय हुई थी जब इन्क्विज़ीशन और फ़ांसियों का बोलबाला होने लगा था। वे भी तो जानते थे कि केवल उन्हीं का रास्ता सही रास्ता है, और विज्ञान द्वारा सुझाया हुआ है।"

"उनसे भूल हुई तो इसका यह अर्थ नहीं कि मैं भी भूल कर रहा हूं। इसके अलावा सिद्धान्तवादियों के प्रलाप और उन तथ्यों के बीच बड़ा फ़रक़ है जो ठोस आर्थिक विज्ञान पर आधारित हैं।"

नोवोद्वोरोव की आवाज़ कमरे में गूंज रही थी। सभी चुप थे, केवल वही बोले जा रहा था।

"ये लोग सारा वक़्त झगड़ते रहते हैं," क्षण भर के लिए जब शान्ति हुई तो मारीया पाव्लोव्ना ने कहा।

"तुम्हारी अपनी राय इस बारे में क्या है, तुम ख़ुद क्या सोचती हो?" नेख़्लूदोव ने मारीया पाव्लोव्ना से पूछा।

"मेरे विचार में क्रिलत्सोव ठीक कहता है कि हमें जनता पर अपने विचार नहीं ठोंसने चाहिए।"

"और तुम्हारा क्या विचार है, कात्यूशा?" नेख़्लूदोव ने मुस्करा कर पूछा और उसके उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा। उसे डर था कि कहीं कात्यूशा कोई बेढब सी बात न कह दे।

"मैं सोचती हूं कि साधारण लोगों के साथ ज़ुल्म होता है," कात्यूशा बोली और उसका चेहरा लाल हो गया, "मेरा ख़्याल है उनके साथ बहुत भयानक ज़ुल्म होता है।"

"ठीक है, मास्लोवा, तुम बिल्कुल ठीक कहती हो," नावातोव ने चिल्ला कर कहा। "जनता के साथ भयानक ज़ुल्म होता है, यह ज़ुल्म बन्द होना चाहिए, और इसे बन्द करना ही हमारा एकमात्र कर्तव्य है।"

"क्रान्ति के उद्देश्य की यह अनोखी परिभाषा है," नोवोद्वोरोव ने चिढ़ कर कहा और चुपचाप सिगरेट पीने लगा।

"इसके साथ बातें करने को मेरा जी नहीं चाहता," क्रिलत्सोव ने फुसफुसा कर कहा और चुप हो गया।

"बातें करने का कोई लाभ भी नहीं," नेख़्लूदोव बोला।

१५

सभी क्रान्तिकारी नोवोद्वोरोव की बड़ी इज़्ज़त करते थे। वह बड़ा विद्वान आदमी था और सभी उसे बड़ा बुद्धिमान समझते थे। फिर भी नेख़्लूदोव उसकी गणना उन क्रांतिकारियों में करता था जिनका नैतिक स्तर औसत स्तर से नीचा होते हुए उसके स्तर से बहुत ही नीचा था। इस आदमी में प्रखर बौद्धिक शक्ति थी, परन्तु आत्मश्लाघा इससे भी कहीं बढ़-चढ़ कर थी। वह उसकी बौद्धिक शक्ति से कहीं ज़्यादा बढ़ चुकी थी।

अपने आत्मिक जीवन में यह सिमनसन के बिल्कुल उलट था। सिमनसन मूलतः पुरुषसुलभ चरित्र वाले उन लोगों में से था जो हर काम अपनी बुद्धि के अनुसार करते हैं, और उनकी बुद्धि ही उन कामों का निश्चय भी करती है। इसके विपरीत नोवोद्वोरोव उन लोगों में से था,—ये मूलतः नारी चरित्र के होते हैं,—जो हर काम भावनाओं की प्रेरणा में करते हैं, और अपनी बुद्धि को किसी हद तक उन्हें क्रियान्वित करने में और किसी हद तक उन्हें सच्चा ठहराने के लिए तर्क करने में लगाते हैं।

नोवोद्वोरोव अपने क्रान्तिकारी काम की बड़ी वाक्पटुता तथा प्रभावशाली ढंग से व्याख्या किया करता था। परन्तु नेख़्लूदोव के विचार में यह सारा क्रान्तिकारी काम स्वयं ऊंचा उठने और सबसे ऊपर का स्थान ग्रहण करने की लालसा पर आधारित था। शुरू शुरू में लोगों के विचार आत्मसात् करने और उन्हें यथार्थ शब्दों में व्यक्त करने की अपनी क्षमता के कारण उसे हाई स्कूल तथा विश्वविद्यालय के छात्रों तथा अध्यापकों में सर्वोच्च स्थान मिला, क्योंकि वहां पर ऐसी क्षमता की बेहद क़द्र होती है। नोवोद्वोरोव सन्तुष्ट था। परन्तु जब उसने पढ़ाई ख़त्म कर ली और डिप्लोमा ले लिया, और यह सर्वोच्च स्थिति छूट गई, तो उसने फ़ौरन् अपने विचार बदल लिये ताकि किसी दूसरे क्षेत्र में यही सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर सके (क्रिलत्सोव का यही कहना था, जिसे नोवोद्वोरोव अच्छा नहीं लगता था)। पहले नोवोद्वोरोव नरम-उदारवादी हुआ करता था, अब बदल कर नरोदवादियों का कट्टर अनुयायी बन गया। नोवोद्वोरोव का स्वभाव उन नैतिक तथा ललित भावनाओं से सर्वथा शून्य था जिनसे मनुष्य के मन में सन्देह तथा संकोच पैदा होते हैं। इसलिए शीघ्र ही

क्रान्ति जगत में उसने ऐसा स्थान प्राप्त कर लिया जिससे उसे सन्तोष हुआ। यह स्थान पार्टी लीडर का था। एक बार अपना मार्ग चुन लेने के बाद उसनें कभी सन्देह अथवा संकोच नहीं किया, इसलिए उसे पूर्ण विश्वास था कि उसने कभी कोई भूल नहीं की। उसे हर चीज़ बिल्कुल सरल, स्पष्ट तथा निश्चित नज़र आती थी। और उसके विचार इतने संकीर्ण तथा एकांगी थे कि यह स्वाभाविक भी था। बस, केवल तर्कसंगत होने की ज़रूरत थी, जैसे कि वह स्वयं कहा करता था। उसमें आत्मविश्वास की मात्रा इतनी अधिक थी कि या तो लोग उससे दूर हट जाते थे या फिर उसकी सत्ता स्वीकार कर लेते थे। उसका कार्यक्षेत्र तरुण युवकों तथा युवतियों के बीच था। वे लोग इसके असीम आत्मविश्वास को विद्वत्ता और गहराई समझ बैठते थे। अधिकांश उसकी धाक मान लेते जिस कारण क्रान्तिकारी मंडलियों में उसे बहुत सफलता मिली थी। उसका काम एक ऐसे विद्रोह के लिए ज़मीन तैयार करना था जिसमें सत्ता उसके हाथ आ जायेगी, और वह एक विधान-सभा की व्यवस्था करेगा। विधान-सभा में उस द्वारा तैयार किया गया कार्यक्रम प्रस्तुत होगा। उसे यक़ीन था कि उसका यह कार्यक्रम सभी समस्याओं का समाधान कर देगा, और अनिवार्यतः यह क्रियान्वित होगा।

उसकी दृढ़ता तथा साहस के लिए उसके साथी उसका मान करते थे, परन्तु उससे प्रेम नहीं करते थे। उसे किसी से भी प्रेम नहीं था, और प्रत्येक प्रतिभावान् व्यक्ति को वह अपना प्रतिद्वन्द्वी समझता था। और यदि उसका बस चलता तो सभी के साथ ऐसा ही व्यवहार करता जैसे बन्दरों में बूढ़ा नर बन्दर छोटे बन्दरों से करता है। यदि उसका बस चलता तो अन्य लोगों की खोपड़ी में से वह उनका दिमाग़ नोच निकालता, उनकी क्षमता निकाल देता ताकि वे इसके दिमाग़ी करिश्मों में बाधा न डाल पायें। उसका व्यवहार केवल उन लोगों के प्रति अच्छा होता था जो उसके आगे सिर नवाते थे। आजकल, इस यात्रा में उसका व्यवहार कोन्द्रात्येव से जिस पर उसके प्रचार का बड़ा प्रभाव था, तथा वेरा बोगोदूख़ोव्स्काया और नन्ही सुन्दरी ग्रावेत्स से अच्छा था जो दोनों उससे प्रेम करती थीं। सिद्धान्ततः तो वह स्त्री-आन्दोलन के हक़ में था, लेकिन मन की गहराइयों में वह सभी स्त्रियों को मूर्ख और नगण्य समझता था, केवल उन स्त्रियों को छोड़ कर जिनसे वह भावुकतावश प्रेम करने लगता था, जिस तरह

आजकल वह ग्राबेत्स से करता था। ऐसी स्त्रियां उसे विलक्षण लगती थीं और वह मानता था कि अकेले उसी में उनके सूक्ष्म गुणों को पहचानने की क्षमता है।

स्त्रियों और पुरुषों के बीच कैसा सम्बन्ध होना चाहिए? यह प्रश्न भी अन्य प्रश्नों की तरह उसे बहुत सरल और स्पष्ट जान पड़ता था और उसने इसका पूरा पूरा हल ढूंढ़ लिया था, और वह था स्वतन्त्र संभोग।

उसके दो पत्नियां थीं, एक जो केवल नाममात्र से पत्नी थी, और दूसरी वास्तव में पत्नी थी, परन्तु उससे वह अलग हो चुका था, क्योंकि उसे विश्वास हो गया था कि उनके बीच सच्चा प्रेम नहीं है। इसलिए अब वह ग्राबेत्स के साथ स्वतन्त्र संभोग का सम्बन्ध स्थापित करने की सोच रहा था।

नोवोद्वोरोव को नेख़्लूदोव से घृणा थी। वह कहा करता कि नेख़्लूदोव मास्लोवा से "चोचले ले रहा है", पर घृणा का मुख्य कारण यह था कि नेख़्लूदोव बड़े स्वतन्त्र मन से मौजूदा व्यवस्था के दोषों तथा उन्हें दूर करने के साधनों पर विचार किया करता था। नेख़्लूदोव का विचार करने का ढंग नोवोद्वोरोव के ढंग से पृथक् था और बिल्कुल अपना था, एक प्रिंस का अर्थात् एक मूर्ख का ढंग था। नेख़्लूदोव नोवोद्वोरोव के इस रवैये को जानता था। इस यात्रा में उसके मन की स्थिति सामान्यतः बड़ी सद्भावनापूर्ण थी। इसके बावजूद वह इस आदमी के साथ "जैसे को तैसे" का व्यवहार करता था और उस घृणा को दबा नहीं पाता था जो उसके मन में नोवोद्वोरोव के प्रति उठती थी। इसी कारण मन ही मन वह दुखी था।

१६

साथ वाले कमरे में से सरकारी कर्मचारियों की आवाज़ें आने लगीं। सभी क़ैदी चुप हो गये। एक सॉर्जेंट कमरे में दाख़िल हुआ, और उसके पीछे पीछे दो कॉनवाय के सिपाही अन्दर आये। जांच का वक़्त हो गया था। सॉर्जेंट ने एक एक कर के सभी क़ैदियों को गिना। जब नेख़्लूदोव की बारी आयी तो बड़े दोस्ताना ढंग से बोला—

"जांच के बाद आप यहां नहीं ठहर सकते, प्रिंस। आपको अब चले जाना चाहिए।"

नेख़्लूदोव जानता था कि इसका क्या मतलव है। वह सॉर्जेंट के पास गया और तीन रूवल का एक नोट उसके हाथ में रख दिया।

"ओह, आप जैसों का कोई क्या इलाज करे। अगर मन चाहता है तो वेशक थोड़ी देर और रुक जाइये।"

सॉर्जेंट कमरे में से वाहर जाने ही वाला था जव एक और सॉर्जेंट ने कमरे में प्रवेश किया। उसके पीछे पीछे एक क़ैदी चला आ रहा था। क़ैदी पतले छरहरे वदन का आदमी था, मुंह पर छोटी सी दाढ़ी और एक आंख के नीचे चोट का निशान था।

"मैं लड़की को लेने के लिए आया हूं," क़ैदी ने कहा।

"ओह, पिता जी आ गये!" एक वच्चे की खिलखिलाती आवाज़ सुनाई दी। फिर रांत्सेवा के पीछे से एक सुनहरी वालों वाला सिर नमूदार हुआ। रांत्सेवा लड़की के लिए कात्यूशा तथा मारीया पाव्लोव्ना की मदद से अपने ही एक पेटीकोट में से एक कुर्ता वना रही थी।

"हां, वेटी, मैं ही आया हूं," क़ैदी ने प्यार से कहा। उसका नाम वुज़ोव्किन था।

"यहां यह वड़े आराम से रहती है," वुज़ोव्किन के छिले-पिटे चेहरे की ओर दयापूर्ण आंखों से देखते हुए मारीया पाव्लोव्ना ने कहा, "इसे हमारे पास ही रहने दीजिये।"

"रानी दीदी मेरे लिए नये कपड़े वना रही हैं," रांत्सेवा के हाथ में कपड़े को दिखाती हुई लड़की वोली, "कितने अच्छे कपड़े वना रही हैं, कितने सुन्दर!" लड़की वोलती गई।

"तुम हमारे पास सोना चाहती हो?" रांत्सेवा ने लड़की को सहलाते हुए पूछा।

"हां, सोना चाहती हूं। और पिता जी भी।"

रांत्सेवा के चेहरे पर मुस्कराहट खिल उठी।

"नहीं, पिता जी नहीं सो सकते। तो हम इसे यहीं पर रखेंगे।" पिता की ओर घूम कर रांत्सेवा ने कहा।

"अच्छी वात है, इसे यहीं छोड़ जाओ," पहले सॉर्जेंट ने कहा और दूसरे सॉर्जेंट को साथ ले कर वाहर चला गया।

ज्यों ही सॉर्जेंट वाहर निकले तो नावातोव वुज़ोव्किन के पास गया, और उसका कन्धा थपथपा कर वोला—

"कहो दोस्त, क्या यह ठीक है कि कार्मानोव अपनी जगह बदलना चाहता है?"

बुज़ोव्किन का विनम्र, दयालुतापूर्ण चेहरा सहसा उदास हो उठा, और एक धुन्धला सा पर्दा उसकी आंखों के आगे छा गया।

"हमने कुछ नहीं सुना," उसने धीरे से कहा, फिर उसी धुन्धलके में देखते हुए उसने बच्ची की ओर घूम कर कहा, "अक्स्यूत्का, तो जान पड़ता है तुम अपनी रानियों के साथ ही रहना चाहती हो।" और जल्दी जल्दी बाहर चला गया।

"तबादले की बात ठीक है, और उसे यह अच्छी तरह पता है," नाबातोव ने कहा। "तुम क्या करोगे?"

"अगले शहर पहुंच कर मैं अधिकारियों को बता दूंगा। मैं दोनों क़ैदियों को पहचानता हूं," नेख़्लूदोव ने कहा।

सभी चुप हो गये। उन्हें डर लगने लगा कि वाद-विवाद फिर शुरू हो जायेगा।

सिमनसन सिर के नीचे दोनों बाज़ू रखे चुपचाप लेटा हुआ था। अब वह उठ खड़ा हुआ और बैठे हुए लोगों के इर्दगिर्द बड़े ध्यान से चक्कर काट कर, नेख़्लूदोव के पास गया।

"क्या इस वक़्त मैं तुमसे बात कर सकता हूं?"

"ज़रूर," और नेख़्लूदोव उठ कर उसके पीछे पीछे जाने लगा।

कात्यूशा ने आंख उठा कर ऊपर देखा। उसके चेहरे पर हैरानी का भाव था। जब उसकी आंखें नेख़्लूदोव की आंखों से मिलीं तो वह शर्मा गयी और सिर हिला दिया।

"मैं इस बारे में तुमसे बात करना चाहता हूं," जब दोनों गलियारे में आ गये तो सिमनसन ने कहना शुरू किया। गलियारे में क़ैदियों की आवाज़ें और चिल्लाहट और भी ऊंची सुनाई दे रही थीं। नेख़्लूदोव ने मुंह बनाया लेकिन सिमनसन इस शोर से बिल्कुल विचलित नहीं हुआ जान पड़ता था। "मैं मास्लोवा और तुम्हारे सम्बन्धों को जानता हूं," अपनी स्नेहसिक्त आंखों से बड़े ध्यान से सीधे नेख़्लूदोव की आंखों में देखते हुए उसने आगे कहा। "इसलिए मेरा कर्तव्य है कि..." वह अपनी बात जारी रखना चाहता था, किंतु उसे रुकना पड़ा क्योंकि दरवाज़े के पास ही दो आदमी सहसा झगड़ने और चिल्लाने लगे थे।

"मैंने कह् जो दिया है, गधे कहीं के, वे मेरे नहीं थे!" एक ग्रादमी ने चिल्ला कर कहा।

"ख़ुदा तुम्हें ग़ारत करे, शैतान कहीं के!" फटी ग्रावाज़ में दूसरा चिल्ला रहा था।

इसी वक़्त मारीया पाव्लोव्ना वाहर गलियारे में ग्रा गयी।

"यहां कोई कैसे वातें कर सकता है?" उसने कहा। "तुम इस कमरे में चले जाग्रो। ग्रकेली वेरा ही उस कमरे में है।" कहती हुई वह दूसरे दरवाज़े में से जा कर एक छोटे से कमरे में दाख़िल हुई। प्रत्यक्षतः यह कमरा क़ैद-तनहाई के लिए वनाया गया था लेकिन इस समय राजनीतिक महिला क़ैदियों को दे दिया गया था। वेरा वोगोदूख़ोव्स्काया, मुंह-सिर लपेटे, विस्तर पर लेटी थी।

"उसका सिर दुख रहा था इसलिए सो गयी है। वह तुम्हारी वात नहीं सुन सकती, ग्रौर मैं यहां से जा रही हूं," मारीया पाव्लोव्ना ने कहा।

"नहीं नहीं, वल्कि तुम यहीं पर रहो," सिमनसन वोला। "मेरा कुछ भी किसी से छिपा हुग्रा नहीं है—कम से कम तुमसे तो विल्कुल ही नहीं।"

"ग्रच्छी वात है," मारीया पाव्लोव्ना ने कहा ग्रौर वच्चों की तरह ग्रपना सारा शरीर दायें-वायें झुलाती हुई वापस सोने वाले तख़्ते के पास जा पहुंची ग्रौर उनकी वातें सुनने के लिए वैठ गयी। उसकी सुन्दर भूरी ग्रांखें दूर किसी जगह पर लगी हुई थीं।

"तो सुनो, मुझे तुमसे यह काम है," सिमनसन ने दोहरा कर कहा। "कात्यूशा मास्लोवा के साथ तुम्हारे सम्वन्ध का मुझे मालूम है। इसलिए मेरा यह फ़र्ज़ हो जाता है कि मैं उस स्त्री के साथ ग्रपने सम्वन्ध के वारे में तुम्हें साफ़ साफ़ वतला दूं।"

नेख़्लूदोव मन ही मन उस सादगी ग्रौर साफ़गोई का ग्रादर किये विना न रह सका जिससे सिमनसन वातें करने लगा था।

"क्या मतलव?" उसने पूछा।

"मेरा मतलव यह है कि मैं कात्यूशा मास्लोवा से शादी करना चाहता हूं।"

"क्या कहा!" मारीया पाव्लोव्ना ने हैरान हो कर कहा ग्रौर सिमनसन की ग्रोर देखने लगी।

"मैंने निश्चय किया है कि उसके सामने शादी का प्रस्ताव रखूंगा," सिमनसन कहता गया।

"तो इसमें मैं क्या कर सकता हूं? यह उसका अपना मामला है," नेख़्लूदोव ने कहा।

"पर वह तुम्हारे बिना किसी निश्चय पर नहीं पहुंच पायेगी।"

"क्यों?"

"क्योंकि जब तक उसके साथ तुम्हारे सम्बन्ध का कोई फ़ैसला नहीं हो जाता, वह कोई फ़ैसला नहीं कर सकती।"

"जहां तक मेरा ताल्लुक़ है, इसका फ़ैसला हो चुका है। मैं केवल अपना फ़र्ज़ अदा करना चाहता हूं, और उसके दुर्भाग्य का बोझ हल्का करना चाहता हूं। पर मैं किसी सूरत में भी उस पर कोई दबाव नहीं डालूंगा।"

"हां, लेकिन वह तुम्हारी क़ुर्बानी क़बूल करना नहीं चाहती।"

"यह कोई क़ुर्बानी नहीं है।"

"और मैं जानता हूं कि यह मास्लोवा का आख़िरी फ़ैसला है।"

"तो फिर मेरे साथ इसकी चर्चा करने की कोई ज़रूरत नहीं," नेख़्लूदोव ने कहा।

"वह चाहती है कि तुम इस बात को स्वीकार करो कि तुम्हारा भी वही विचार है जो उसका है।"

"मैं यह कैसे स्वीकार कर लूं कि जिस काम को मैं अपना कर्तव्य समझता हूं, उसे नहीं करूं? मैं केवल इतना कह सकता हूं कि मैं आज़ाद नहीं हूं, पर वह आज़ाद है।"

सिमनसन चुप रहा। फिर, थोड़ी देर तक सोचने के बाद बोला–

"अच्छी बात है, तो मैं उससे बात करूंगा। तुम यह मत समझो कि मैं उस पर फ़िदा हूं," वह कहता गया, "मैं उससे इस नाते प्रेम करता हूं कि वह एक श्रेष्ठ और विलक्षण नारी है जिसने बहुत दुख सहन किये हैं। मैं उससे कुछ भी नहीं चाहता। मेरे हृदय में यही तीव्र लालसा है कि मैं उसकी सहायता करूं ताकि..."

सिमनसन की आवाज़ लड़खड़ा गयी, जिसे देख कर नेख़्लूदोव को बड़ी हैरानी हुई।

"...उसकी स्थिति को कुछ आसान कर पाऊं," सिमनसन कहता

गया। "यदि मास्लोवा को तुम्हारी सहायता मंज़ूर नहीं तो वह मेरी सहायता स्वीकार कर ले। अगर वह मान जाय तो मैं दरख़्वास्त दे दूंगा कि मुझे भी उसी जगह रखा जाय जहां उसे रखा जायेगा। चार साल कोई बहुत लम्बा अर्सा नहीं है। मैं उसके समीप रहूंगा और शायद उसके दुर्भाग्य का बोझ हल्का कर पाऊं..."

वह फिर बोलते बोलते चुप हो गया। वह इतना उत्तेजित हो उठा था कि उसके लिए बोलना कठिन हो गया था।

"मैं क्या कहूं?" नेख़्लूदोव ने कहा। "मुझे इस बात की ख़ुशी है कि उसे तुम जैसा रक्षक मिला है..."

"मैं यही जानना चाहता था," सिमनसन बीच में बोल उठा, "तुम उससे प्रेम करते हो, उसका सुख चाहते हो, इसी लिए मैं जानना चाहता था कि यदि मैं उससे शादी करूं तो तुम इसे मास्लोवा के लिए हितकर समझोगे या नहीं?"

"हां, ज़रूर," नेख़्लूदोव ने निश्चयात्मक स्वर में कहा।

"सब बात मास्लोवा पर निर्भर है। मैं तो केवल यही चाहता हूं कि उसकी दुःखी आत्मा को शान्ति मिले," बच्चों की सी मृदुता के साथ सिमनसन ने कहा, जिसकी इतने गंभीर दिखने वाले व्यक्ति से आशा नहीं हो सकती थी।

सिमनसन उठ कर नेख़्लूदोव के पास गया और शर्म से मुस्कराते हुए उसका मुंह चूम लिया।

"मैं मास्लोवा से यह कह दूंगा," उसने कहा और वहां से चला गया।

१७

"वाह, यह ख़ूब रही!" मारीया पाव्लोव्ना ने कहा। "इसे तो प्रेम हो गया है! सचमुच प्रेम हो गया है! किसे उमीद थीं कि व्लादीमिर सिमनसन प्रेम करने लगेगा, और वह भी पागलों की तरह, बिल्कुल लड़कों की तरह! कितनी अजीब बात है! और सच पूछो तो मुझे तो इसका अफ़सोस हुआ है," उसने उसांस भरी।

"पर वह—कात्यूशा? तुम्हारा क्या ख़्याल है, वह इस बारे में क्या सोचती होगी?" नेख़्लूदोव ने पूछा।

"कात्यूशा?" मारीया पाव्लोव्ना रुक गयी। ज़ाहिर था कि वह सोच कर, यथासंभव ठीक ठीक उत्तर देना चाहती थी। "वह? बात यह है कि उसका अतीत चाहे जैसा भी रहा हो, परंतु जहां तक उसके स्वभाव का सवाल है, उससे अधिक नैतिक स्त्री शायद ही कोई हो। बड़ी कोमल भावनाओं वाली स्त्री है। वह तुमसे प्रेम करती है, और बहुत अच्छी तरह से प्रेम करती है। वह नहीं चाहती कि तुम्हारा जीवन उसके साथ उलझ जाय। उसे इसी बात की ख़ुशी है कि वह तुम्हें ऐसा करने से रोके रहेगी। तुम्हारे साथ शादी कर के वह अपनी नज़रों में गिर जायेगी। और यह यन्त्रणा उसके लिए उन सब यन्त्रणाओं से भयानक होगी जिन्हें वह पहले सहन कर चुकी है। इसलिए वह इस पर कभी भी रज़ामंद नहीं होगी। पर इसके बावजूद तुम्हारे यहां मौजूद रहने से वह विचलित होती है।"

"तो फिर मैं क्या करूं? क्या यहां से ग़ायब हो जाऊं?"

मारीया पाव्लोव्ना के होंठों पर बच्चों की सी मधुर मुस्कान आयी। वह बोली—

"हां, किसी हद तक।"

"किसी हद तक कोई कैसे ग़ायब हो सकता है?"

"मैं यों ही कह गई। पर जहां तक मास्लोवा का ताल्लुक़ है, मैं कहूंगी कि वह भी शायद समझती है कि सिमनसन का इस तरह उन्मादियों की तरह उसे प्यार करना बेवकूफ़ी है। इससे वह ख़ुश भी होती है और डरती भी है। सिमनसन ने उससे अभी बात नहीं की। तुम जानते हो मैं इन बातों में कोई फ़ैसला देने की योग्यता नहीं रखती। फिर भी मैं समझती हूं कि सिमनसन की भावनाएं उसके प्रति एक साधारण पुरुष की सी भावनाएं हैं, हालांकि वे प्रकट में ऐसी नज़र नहीं आतीं। वह कहता तो है कि इस प्रेम से उसके शरीर में ओज का संचार होता है, और यह पवित्र प्रेम है, पर मैं जानती हूं कि विलक्षण होते हुए भी, इसकी तह में वही गन्दगी है... वही जो नोवोद्वोरोव और ग्राबेत्स के प्रेम में है।"

मारीया पाव्लोव्ना जिस बात को ले कर चली थी, वह उसे भूल गयी, और इस चहेते मज़मून पर बोलने लगी।

"तो बताओ मैं क्या करूं?" नेख़्लूदोव ने पूछा।

"मैं सोचती हूं तुम्हें मास्लोवा से खुल कर सारी बात कर लेनी चाहिए। सब बात साफ़ होनी चाहिए, हमेशा यही अच्छा होता है। तुम

उससे बात कर लो। मैं उसे बुलाती हूं। बुलाऊं?" मारीया पाव्लोव्ना ने कहा।

"हां, धन्यवाद।"

मारीया पाव्लोव्ना बाहर चली गयी।

जब नेख़्लूदोव इस छोटे से कमरे में अकेला रह गया तो विचित्र सा महसूस करने लगा। वेरा सो रही थी। उसके धीमे धीमे सांस लेने की आवाज़ नेख़्लूदोव के कानों में पड़ रही थी। किसी किसी वक़्त वह कराह सी उठती। दो दरवाज़ों के पीछे से, जो उसे मुजरिम क़ैदियों से अलग किये हुए थे, बराबर शोर-गुल की आवाज़ें आ रही थीं।

सिमनसन की बात ने उसे उस कर्तव्य से मुक्त कर दिया था जो नेख़्लूदोव ने अपने ऊपर ले रखा था। जब कभी उसमें दुर्बलता आती तो यह कर्तव्य उसे बड़ा अजीब और कठिन लगा करता था। लेकिन इस समय उसके मन में जो भावना उठी वह न केवल अप्रिय ही थी बल्कि दुःखद भी थी। उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे सिमनसन के प्रस्ताव ने उसकी विलक्षण क़ुर्बानी को मिट्टी में मिला दिया है, जिससे उस क़ुर्बानी का मूल्य उसकी नज़रों में तथा अन्य लोगों की नज़रों में कम हो गया है। यदि सिमनसन जैसा भला आदमी, जिसका मास्लोवा के प्रति कोई दायित्व नहीं, अपनी क़िस्मत उसकी क़िस्मत के साथ जोड़ना चाहता है, तो फिर उसकी क़ुर्बानी तो सचमुच कोई बड़ी क़ुर्बानी नहीं थी। संभव है इस भावना में साधारण ईर्ष्या का भी हल्का सा पुट रहा हो। वह मास्लोवा के प्रेम का इतना आदी हो गया था कि वह स्वीकार नहीं कर सकता था कि वह किसी दूसरे से भी प्रेम कर सकती है। इतना ही नहीं। नेख़्लूदोव ने जो यह योजना बना रखी थी कि जहां पर मास्लोवा रहेगी, उसी के नज़दीक वह भी रहेगा, वह योजना भी अब किसी काम की न रही थी। अगर सिमनसन के साथ उसने शादी कर ली तो उसकी वहां कोई ज़रूरत नहीं रहेगी, और उसे अपने लिए कोई और रास्ता अख़्तियार करना पड़ेगा।

अभी वह अपनी भावनाओं की माप-तौल भी पूरी तरह नहीं कर पाया था कि दरवाज़ा खुला और कात्यूशा अन्दर आ गयी। दरवाज़ा खुलने की देर थी कि क़ैदियों का शोर-गुल सुनाई देने लगा (आज कोई ख़ास बात उनके बीच हो गयी थी)।

बड़ी चुस्ती से क़दम रखती हुई कात्यूशा सीधी नेख़्लूदोव के पास जा खड़ी हुई।

"मारीया पाव्लोव्ना ने मुझे भेजा है," उसने कहा।

"हां, मुझे तुमसे दो बातें करनी हैं। बैठो। अभी अभी व्लादीमिर सिमनसन मेरे साथ बातें कर रहा था।"

कात्यूशा बैठ गयी थी, और अपने दोनों हाथ जोड़ कर गोद में रख लिये थे। वह काफ़ी शान्त नज़र आती थी, लेकिन नेख़्लूदोव के मुंह से ज्यों ही सिमनसन का नाम निकला, तो कात्यूशा का चेहरा लाल हो गया।

"क्या कहता था?" उसने पूछा।

"कहता था कि वह तुमसे शादी करना चाहता है।"

सहसा उसका चेहरा मुर्झा गया, उस पर वेदना झलकने लगी। पर वह कुछ भी बोली नहीं, केवल आंखें नीची कर लीं।

"वह मुझसे मेरी रजामन्दी मांगता है या यह कि मैं कुछ मश्विरा दूं। मैंने उसे कह दिया है कि सारी बात तुम पर निर्भर करती है। इसका निश्चय तुम्हें करना है।"

"उफ़, इस सब का क्या मतलब है? क्यों?" कात्यूशा बुदबुदायी, और नेख़्लूदोव की आंखों में आंखें डाल कर देखा। उस समय उसकी आंखों में वह ऐंचापन था जो हमेशा नेख़्लूदोव को अजीब ढंग से विचलित कर दिया करता था। कुछ क्षणों तक वे चुपचाप बैठे एक दूसरे को देखते रहे। इस नज़र ने बहुत कुछ एक दूसरे से कहा।

"तुम्हें फ़ैसला करना होगा," नेख़्लूदोव ने दोहरा कर कहा।

"मैं क्या फ़ैसला करूं? सब बातों का कब से फ़ैसला हो चुका है।"

"नहीं, तुम्हें इस बात का फ़ैसला करना होगा कि तुम्हें सिमनसन का प्रस्ताव मंजूर है या नहीं," नेख़्लूदोव ने कहा।

"मैं तो सज़ायाफ़्ता मुजरिम हूं। मैं किसी की क्या बीबी बनूंगी? क्या मैं व्लादीमिर सिमनसन की ज़िन्दगी को भी बर्बाद करूं?" उसने भौंहें चढ़ाते हुए कहा।

"और अगर सज़ा मंसूख हो जाय, तो?"

"ओह, छोड़िये भी ये बातें, मुझे और कुछ नहीं कहना है," कात्यूशा ने कहा और उठ कर कमरे से जाने लगी।

कात्यूशा के पीछे पीछे नेख़्लूदोव भी मर्दों के कमरे में वापस लौट आया। वहां पर सभी लोग बड़े उत्तेजित हो रहे थे। नावातोव अभी अभी एक ख़बर लाया था, जिसे सुन कर सभी चकरा गये थे। नावातोव सब जगह घूमता, लोगों से दोस्तियां गांठता था, और कोई बात उससे छिपी न रहती थी। ख़बर यह थी कि उसने एक दीवार पर एक सन्देश लिखा देखा था। यह सन्देश क्रान्तिकारी पेत्लिन की ओर से था जिसे कड़ी मशक़्क़त की सज़ा मिली थी। सब लोग समझे बैठे थे कि वह कब का कारा पहुंच चुका होगा, लेकिन अब पता चला कि वह कुछ ही दिन पहले इस तरफ़ से गुज़रा है। सज़ायाफ़्ता मुजरिमों में वही अकेला राजनीतिक क़ैदी था।

"सत्तरह अगस्त के दिन," नोट में लिखा था, "मुझे आम मुजरिम के साथ अकेले भेजा गया। नेवेरोव भी मेरे साथ था लेकिन कज़ान में पहुंच कर उसने पागलख़ाने में आत्महत्या कर ली। मेरा स्वास्थ्य ठीक है और उत्साह भी ज्यों का त्यों क़ायम है। मुझे पूर्ण आशा है कि भविष्य उज्ज्वल होगा।" सभी लोग पेत्लिन की स्थिति और नेवेरोव की आत्महत्या की बातें कर रहे थे। वे सोच रहे थे कि इस आत्महत्या के पीछे क्या कारण रहे होंगे। केवल क्रिलत्सोव चुपचाप बैठा कुछ सोच रहा था। उसकी आंखें चमक रही थीं और एकटक सामने की ओर देखे जा रही थीं।

"मेरे पति ने मुझसे एक दिन कहा था कि जब नेवेरोव अभी पीटर-पॉल क़िले में बन्द था तो उसे प्रेत दिखाई देने लगे थे," रांत्सेवा ने कहा।

"हां, वह तो कवि था, ख़्वाब देखने वाला आदमी था। ऐसे लोग क़ैद-तनहाई बर्दाश्त नहीं कर सकते," नोवोद्वोरोव ने कहा। "मुझे याद है जब मैं क़ैद-तनहाई में था तो मैंने कभी भी अपनी कल्पना की बाग-डोर ढीली नहीं पड़ने दी। मैं एक एक दिन का कार्यक्रम बड़े बाक़ाइदा तौर पर निश्चित कर लिया करता था, इसलिए क़ैद-तनहाई बड़े आराम से बितायी।"

"बिताता भी क्यों न? मैं तो ख़ुश था जब उन्होंने मुझे क़ैद-तनहाई में रखा," नावातोव ने चहक कर कहा ताकि बोझल वातावरण किसी तरह

हल्का हो। "पहले तो आदमी को हर बात से डर लगता रहता है, कहीं खुद पकड़ा न जाय, और उसके अन्य साथी भी लपेट में न आ जायं, और सारा काम खटाई में न पड़ जाय। पर जब वह पकड़ा जाता है तो उसकी सारी ज़िम्मेवारी ख़त्म हो जाती है, और वह आराम कर सकता है—मज़े से बैठे और सिगरेट के कश लगाये।"

"क्या तुम उसे अच्छी तरह जानते थे?" मारीया पाव्लोव्ना ने क्रिलत्सोव की ओर चिन्तित नज़रों से देख कर पूछा। क्रिलत्सोव का चेहरा उतरा हुआ था और बहुत बदल गया नज़र आता था।

"क्या तुम समझते हो नेवेरोव ख़्वाब देखने वाला आदमी था?" सहसा क्रिलत्सोव बोल उठा। उसका सांस फूला हुआ था मानो बड़ी देर तक बोलता या गाता रहा हो। "नेवेरोव एक सच्चा इन्सान था, एक ऐसा इन्सान 'जिस सरीखे बहुत कम इन्सान धरती पर जन्म लेते हैं'—जैसे कि हमारा चौकीदार कहा करता था। उसका मन शीशे की तरह साफ़ था, इतना निष्कपट कि तुम उसके अन्दर झांक कर देख सकते थे। वह कभी झूठ नहीं बोल सकता था। बहाना तक नहीं बना सकता था। न सिर्फ़ यह कि उसकी चमड़ी पतली थी, बल्कि यह कहना चाहिए कि उसके स्नायु तक साफ़ नज़र आते थे, मानो उसकी चमड़ी उतार ली गयी हो। उसकी प्रकृति बड़ी जटिल, बड़ी सम्पन्न थी। ऐसी नहीं जैसी कि... पर बहुत बातें करने का क्या लाभ?" वह रुक गया, फिर ग़ुस्से से त्योरियां चढ़ा कर बोला, "हम तो बहसें करते रहते हैं कि क्या हमें पहले जनता को शिक्षित करना चाहिए और बाद में समाज का स्वरूप बदलना चाहिए, या पहले समाज का स्वरूप बदलें। फिर हम ये बहसें करते हैं कि हमारा संघर्ष किस प्रकार का होना चाहिए, शान्तिपूर्ण प्रचार द्वारा या आतंकवाद द्वारा। हम बहसें करते रहते हैं। लेकिन वे लोग बहसें नहीं करते। वे अपना काम जानते हैं। उन्हें इस बात की कोई परवाह नहीं कि यहां बीसियों, सैंकड़ों आदमी तिल तिल कर मर जायं। और आदमी भी कैसे! नहीं, वे तो चाहते ही यह हैं कि अच्छे से अच्छे आदमी मर जायं। हर्ज़ेन ने ठीक ही कहा था कि जब दिसम्बरवादी लोगों के बीच में से उठ गये तो हमारे समाज का सामान्य स्तर गिर गया था। उसने सचमुच ठीक कहा। उसके बाद स्वयं हर्ज़ेन और उसके साथी उठा लिये गये। और अब नेवेरोव और उस सरीखे लोग..."

"सब का ख़ात्मा नहीं करेंगे," नावातोव ने अपने प्रफुल्लित स्वर में कहा, "नस्ल क़ायम रखने के लिए कुछ न कुछ तो बच रहेंगे।"

"नहीं बचेंगे, अगर हम हाकिमों से सहानुभूति दिखाने लगेंगे तो कभी नहीं बचेंगे," बिना किसी को बोलने का मौक़ा दिये क्रिलत्सोव कहता गया, उसकी आवाज़ और भी ऊंची हो गयी। "एक सिगरेट देना मुझे।"

"ओह, अनातोली, मत सिगरेट पियो, यह तुम्हारे लिए अच्छा नहीं," मारीया पाव्लोव्ना ने कहा, "मत पियो सिगरेट।"

"मुझे कुछ मत कहो," उसने गुस्से से कहा और एक सिगरेट सुलगाया, पर फ़ौरन् ही खांसने लगा। बार बार उसे उबकाई आने लगी, मानो क़ै करने लगा हो। जब गले में से बलग़म निकल गयी तो वह फिर बोलने लगा, "हम ग़लत रास्ते पर चलते रहे हैं। हमारा काम बहसें करना नहीं है। हमारा काम यह है कि हम सब संगठित हों... ताकि उनका नाश कर सकें।"

"पर वे भी तो इन्सान हैं," नेख़्लूदोव ने कहा।

"नहीं, वे इन्सान नहीं हैं। जैसे काम वे कर रहे हैं, वैसे काम इन्सान नहीं करते ... नहीं ... सुनते हैं कि कोई बम और बैलून ईजाद हुए हैं। हमें बैलून पर चढ़ कर इन लोगों पर ऊपर से बम छिड़कने चाहिए, मानो ये खटमल हों, ताकि सब के सब मर जायं... हां। क्योंकि..." उसने जारी रखने की कोशिश की लेकिन उसका चेहरा लाल हो गया; और फिर खांसी का दौरा पड़ गया, जो पहले से भी तेज़ था, और मुंह में से ख़ून की धार बह निकली।

नावातोव भागा हुआ बर्फ़ लाने गया। मारीया पाव्लोव्ना वलेरियन ले आयी और उसे देने लगी, लेकिन उसने अपना पतला पीला हाथ उठा कर मारीया पाव्लोव्ना को परे हटा दिया और आंखें बन्द किये बैठा रहा। उसकी सांसों की गति तेज़ और बोझल हो रही थी। बर्फ़ और ठण्डे पानी से उसकी हालत कुछ सुधरी, उसे कम्बलों में लपेट कर सोने के लिए लिटा दिया गया। नेख़्लूदोव ने विदा ली और सॉर्जेंट के साथ जो थोड़ी देर से खड़ा उसका इन्तज़ार कर रहा था, बाहर निकल आया।

मुजरिम अब शान्त हो गये थे और उनमें से अधिकांश सो रहे थे। क़ैदी तख़्तों पर, तख़्तों के नीचे और तख़्तों के बीच की जगहों पर पड़े सो रहे थे। इसके बावजूद वे सब कमरों में नहीं समा पाये थे। कितने ही

आत्मविश्वास के साथ, इसे बड़ा ज़रूरी और महत्वपूर्ण और लाभदायक समझ कर कर रहे थे। न ही नेख़्लूदोव अपने को पागल समझ सकता था, क्योंकि जो कुछ वह सोच रहा था वह इतना स्पष्ट था। अतः सारा वक़्त उसका मन उलझा सा रहता।

पिछले तीन महीनों में जो कुछ उसने देखा था, उसकी छाप यों उसके मन पर पड़ी थी: सरकार जनता में से उन लोगों को चुन चुन कर पकड़ती थी जो स्वभावतया सबसे अधिक घबराने वाले, तेज़ मिज़ाज, जल्दी उत्तेजित होने वाले, सबसे अधिक प्रतिभावान् और सबसे अधिक मज़बूत लोग थे, पर साथ ही जो सबसे कम सावधान तथा चालाक थे। इन्हें वह मुक़द्दमों तथा शासकीय आज्ञप्तियों द्वारा पकड़ती थी। ये लोग उन लोगों से जो आज़ाद घूमते थे, तनिक भी अधिक दोषी और ख़तरनाक नहीं थे। पर इन्हें या तो जेल की कालकोठरी में बन्द कर दिया जाता था या साइबेरिया भेज दिया जाता था। वहां इन्हें रोटी-कपड़ा मिल जाता लेकिन महीनों, बल्कि सालों तक, ये वहां निठल्ले पड़े रहते—प्रकृति से दूर, अपने परिवारों से दूर तथा हर प्रकार के उपयोगी काम से दूर—अर्थात् उन सब स्थितियों से दूर जो एक स्वाभाविक तथा नैतिक जीवन के लिए आवश्यक होती हैं। यह थी पहली बात जो नेख़्लूदोव के मन में उठती थी। दूसरी यह कि इन संस्थाओं में इन लोगों को हर तरह से अपमानित किया जाता था जिसकी कोई ज़रूरत नहीं थी, हथकड़ियां और बेड़ियां पहनायी जातीं, सिर मूंड दिये जाते, लज्जाजनक वर्दियां पहनने को दी जातीं, मतलब कि उन्हें उन मुख्य बातों से वंचित कर दिया जाता जिनसे दुर्बल व्यक्तियों को भले आदमियों की तरह रहने की प्रेरणा मिलती है। और ये बातें हैं: यह भावना कि लोग क्या कहते हैं', लज्जा की भावना तथा मानव-गौरव की भावना। तीसरी यह कि क़ैदख़ानों में इन्हें हर वक़्त जान से हाथ धोने का डर रहता—छूत की बीमारी लगने के कारण या शारीरिक दण्ड और थकान के कारण (यह कहने की ज़रूरत नहीं कि कई लोग लू लगने से, या डूब कर या आग में भस्म हो कर जान दे देते थे)। इसलिए सारा वक़्त ये लोग ऐसी स्थिति में रहते जिसमें भले से भले और नेक से नेक लोग भी, आत्मरक्षा के लिए अत्यन्त बर्बर और भयानक काम करने पर उतारू हो जाते हैं और उन लोगों को क्षमा भी कर देते हैं जो ऐसे काम करते हैं। चौथी यह कि इन लोगों को ऐसे लोगों

के साथ रहने पर मजबूर किया जाता था जो बहुत ही पतित होते थे। इनका पतन भी विशेषतया इन्हीं संस्थाओं द्वारा हो चुका होता था। इन भ्रष्टाचारी लोगों, हत्यारों और बदमाशों के साथ रहने से उन पर भी वही असर होता जो गूंधे हुए आटे पर ख़मीर का होता है। पांचवीं यह कि सरकार को जब अपना उल्लू सीधा करना होता तो वह न केवल हर प्रकार की हिंसा, अत्याचार, और बर्बरता को दरगुज़र ही करती है बल्कि इसकी खुली इजाज़त भी देती है। इस तथ्य पर इन सब लोगों का अनिवार्यतः विश्वास हुआ, क्योंकि इन पर अमानुषिक ज़ुल्म किया जाता था, बच्चों, स्त्रियों और बूढ़ों पर ज़ुल्म होता, डण्डों और चाबुकों से इन्हें पीटा जाता, कोई क़ैदी भाग जाता तो उसे पकड़ कर वापस लाने के लिए—ज़िन्दा या मरा हुआ—इनाम रखे जाते, पति-पत्नी को एक दूसरे से अलग कर दिया जाता और उन्हें दूसरों की स्त्रियों और पतियों के साथ व्यभिचार करने पर मजबूर किया जाता, लोगों को गोली से उड़ा दिया जाता और फांसी पर लटका दिया जाता। इसलिए यदि वे लोग हिंसात्मक कार्रवाइयां करें जिनकी आज़ादी छीन ली गयी हो और जिन्हें अभाव और हीनता की स्थिति में रखा जाता हो तो यह और भी क्षम्य जान पड़ता है।

ऐसा जान पड़ता था जैसे इन सब संस्थाओं को बनाया ही इसलिए गया हो कि वे भ्रष्टता और दुराचार फैलायें। और इस केन्द्रीभूत भ्रष्टता और दुराचार को सारी आबादी में फैलाने के लिए इससे अधिक व्यापक साधन और कोई न होगा।

"ऐसा लगता है मानो इस सवाल का हल ढूंढ़ने का बीड़ा उठाया गया हो कि कौन सा उपाय है—सबसे अच्छा और सबसे सक्षम—जिसके द्वारा अधिक से अधिक संख्या में लोगों को भ्रष्ट बनाया जा सके!" जेलख़ानों और पड़ाव-घरों में जो कुछ घटता है इसके बारे में सोचते हुए नेख़्लूदोव ने मन ही मन कहा। हर साल लाखों लोगों को पतन के निचले से निचले स्तर तक पहुंचा दिया जाता था, और जब वे बिल्कुल भ्रष्ट हो जाते तो उन्हें छोड़ दिया जाता ताकि जो रोग उन्हें जेलख़ाने में चिपटा था उसे और लोगों में फैला सकें।

समाज ने जो लक्ष्य अपने सामने रखा जान पड़ता था उसे वह किस सफलता से क्रियान्वित कर रहा है, यह नेख़्लूदोव ने त्यूमेन, येकातेरीनबुर्ग

तथा तोम्स्क के जेलख़ानों में देख लिया था। सीधे-सादे लोगों ने साधारण रूसी सामाजिक, ग्रामीण तथा ईसाई नैतिकता को त्याग कर एक नयी नैतिकता को अपना लिया है जो इन जेलों में पनपती है और जो मुख्यत: इस विचार पर आधारित है कि इन्सानों के साथ किसी प्रकार की भी हिंसा और अत्याचार करना उचित है यदि उससे अपने को लाभ पहुंच सकता हो। जेलख़ानों में रह चुकने के बाद इन लोगों का रोम रोम यह समझने लगता है कि जैसा व्यवहार उनके साथ हुआ है उसे देखते हुए, यथार्थ जीवन में वे सारे के सारे नैतिक नियम जिनका उपदेश गिर्जों में तथा सन्तों-महात्माओं द्वारा दिया जाता है—कि लोगों के साथ आदर तथा सहानुभूति से पेश आओ—ताक पर रख दिये जाते हैं। इसलिए उन्हें भी इन नियमों का पालन करने की कोई जरूरत नहीं। जितने भी क़ैदियों को नेख़्लूदोव जानता था—फ़्योदोरोव, माकार, यहां तक कि तारास पर भी—उन सब पर जेल के जीवन का असर हुआ था। तारास केवल दो महीने तक ही क़ैदियों के बीच रह पाया था लेकिन फिर भी उसके तर्कों में नैतिकता के अभाव से नेख़्लूदोव दंग था। सफ़र के दौरान उसे मालूम हुआ था कि कई क़ैदी जो भाग कर टैगा जंगलों में चले जाते थे वे अपने साथ अपने अन्य साथियों को भी बरगला कर ले जाते थे, और वहां पर उन्हें मार कर उनका मांस खा कर जीते थे। उसने ऐसे ही एक जीते-जागते आदमी को देखा था जिस पर यह दोष लगाया गया था, और उसने इसे स्वीकार किया था। और सबसे भयानक बात यह थी कि मनुष्य-भक्षण का यह एकमात्र उदाहरण नहीं था, अक्सर इस तरह की बात होती रहती थी।

केवल बुराइयों के विशेष संपोषण द्वारा ही, जैसा कि इन संस्थाओं में किया जा रहा था, एक रूसी को नैतिक पतन की चरम सीमा तक ढकेल कर इन जैसा आवारा बनाया जा सकता था। ये लोग यही मानते थे कि हर काम की खुली छुट्टी है, किसी बात की कोई मनाही नहीं, और इसमें वे नीत्शे के नवीनतम उपदेश का मानो पहले ही जान कर अनुकरण कर रहे थे और इसका प्रचार पहले क़ैदियों में और बाद में जनसाधारण में कर रहे थे।

इस सबकी सफ़ाई में केवल यह कहा जाता था कि इसका उद्देश्य अपराधों को रोकना है, लोगों के दिल में डर पैदा करना है, मुजरिमों

को सीधे रास्ते पर लाना और सज़ा के रूप में उन्हें उनके कुकर्मों का नियमित प्रतिफल देना है, जैसा कि पुस्तकों में कहा गया है। पर वास्तव में जो परिणाम निकलते थे उनका इनसे कोई भी मेल नहीं था। वल्कि वे इसके उलट निकलते थे। भ्रष्टता रुकने के वजाय और फैलती थी। अपराधियों के दिल में डर वैठाना तो दूर रहा उनका साहस और वढ़ता था। कितने ही आवारा ख़ुद-वख़ुद जेलख़ानों में लौट आते थे। सीधे रास्ते पर आने के वजाय लोगों को हर प्रकार की भ्रष्टता वड़ी वाक़ाइदगी से सिखायी जाती थी। और जहां तक सज़ा देने की भावना का सवाल है, यह सरकार की दंड-प्रणाली से कमज़ोर पड़ने के वजाय उन लोगों के दिलों में जड़ पकड़ती थी जिनमें यह पहले कभी नहीं थी।

"तो फिर यह सव क्यों किया जाता है?" नेख़्लूदोव ने अपने आपसे पूछा। पर उसे कोई उत्तर नहीं मिला।

सवसे आश्चर्यजनक वात यह थी कि ये कार्रवाइयां आकस्मिक तौर पर या किसी भूलवश नहीं की जा रही थीं। न ही ये इक्के-दुक्के मामले थे, वल्कि सदियों से यह व्यापार चला आ रहा था। भेद केवल इतना था कि पहले लोगों के नाक और कान काट दिये जाते थे, वाद में वक़्त आया जव लोगों के शरीर तपे हुए लोहे से दागे जाते थे, और लोहे की सलाख़ों के साथ उन्हें वांध दिया जाता था, जहां आज उन्हें हथकड़ियां लगायी जाती हैं और उन्हें छकड़ों में एक जगह से दूसरी जगह भेजने के वजाय भाप से चलने वाली गाड़ियों में भेजा जाता है।

सरकारी अफ़सरों का यह तर्क है कि जिन वातों को देख कर क्रोध उठता है उनका कारण यह था कि जेलख़ानों के प्रवन्ध में वड़ी त्रुटियां पायी जाती थीं, और ये सव दूर हो सकती हैं यदि आधुनिक ढंग के जेलख़ाने वनाये जायं। पर इस तर्क से नेख़्लूदोव को सन्तोष नहीं होता था। उसके मन में जो घृणा उठती थी उसका कारण जेलख़ानों का अच्छा या वुरा प्रवन्ध नहीं था। उसने ऐसे आदर्श जेलख़ानों के वारे में पढ़ रखा था जिनमें विजली की घण्टियां लगी रहती हैं, और जहां लोगों को विजली द्वारा फांसी दी जाती है, जिसका तार्द ने सुझाव दिया है, परन्तु इस प्रकार की सुचारु हिंसा से नेख़्लूदोव के मन में उससे भी अधिक घृणा उठती थी।

परन्तु सवसे अधिक घृणा उसके मन में यह देख कर उठती थी कि कचहरियों और मन्त्रालयों में ऐसे लोग रहते हैं जिन्हें इन कामों के लिए

बड़ी बड़ी तनख़्वाहें मिलती हैं जो तनख़्वाहें जनता के जेब में से आती हैं। इन लोगों के पास किताबें होती हैं जो इन्हीं जैसे अन्य अफ़सरों ने इन्हीं के से उद्देश्यों से प्रेरित हो कर लिख रखी होती हैं। इस तरह की पुस्तकों में क़ानून लिखे होते हैं। और जब इस तरह लिखी गयी पुस्तकों के अनुसार किसी क़ानून का उल्लंघन होता है तो ये लोग इन पुस्तकों में झांकते हैं, एक या दूसरे किसी क़ानून से उसे जोड़ने की चेष्टा करते हैं, और फिर इन्हीं क़ानूनों का अनुकरण करते हुए, अपराधियों को ऐसे स्थानों पर भेज देते हैं, जहां वे फिर इन्हें कभी नहीं देख पाते, परन्तु जहां पर वे ऐसे इन्स्पेकटरों, वार्डरों और कॉनवाय-सिपाहियों के रहम पर जीते हैं जो क्रूर और ज़ुल्म करने के आदी होते हैं। वहां लाखों-करोड़ों आदमियों का न केवल शारीरिक बल्कि आत्मिक दृष्टि से भी मलियामेट कर दिया जाता है।

अब नेख़्लूदोव जेलख़ानों को अधिक नज़दीक से जानता था। उसे मालूम हो गया कि क़ैदियों में जितनी भी बुराइयां फैलती हैं—शराबख़ोरी, जुएबाज़ी, बर्बरता, भयानक जुर्म करने की प्रवृत्ति, यहां तक कि मनुष्य-भक्षण भी—ये सब आकस्मिक नहीं होतीं, न ही नैतिक अधःपतन, मानसिक विकारों अथवा जन्मजात अपराध प्रवृत्ति के परिणाम हैं, जैसा कि उन मूढ़ वैज्ञानिकों का कहना है जो सरकार के पिट्ठू बनते हैं। यह सभी बुराइयां इस भ्रम का अनिवार्य परिणाम हैं कि मनुष्यों को एक दूसरे को दण्ड देने का अधिकार है। नेख़्लूदोव ने देखा कि मनुष्य-भक्षण टैगा जंगलों से शुरू नहीं होता बल्कि मन्त्रालयों, समितियों तथा राज्य-विभागों से शुरू होता है। टैगा में तो वह केवल संपन्न होता है। उसने देखा कि उसके बहनोई को, मिसाल के तौर पर, या बहनोई को ही क्यों, पेशकार से ले कर मन्त्री तक सभी वकीलों और अधिकारियों को न्याय की तनिक भी चिन्ता नहीं होती, न ही जनकल्याण की जिसकी वे बातें करते हैं, बल्कि केवल अपने रूबलों की चिन्ता होती है जो उन्हें ये कार्रवाइयां करने के लिए मिलते हैं जिनके कारण यह सब पतन और क्लेश पैदा होते हैं। यह तथ्य बिल्कुल स्पष्ट है।

"तो फिर क्या इस सबकी तह में कोई ग़लतफ़हमी रही है? क्या ऐसी व्यवस्था नहीं की जा सकती कि सभी अधिकारियों की तनख़्वाहें भी सुनिश्चित रहें, बल्कि इनके अलावा इन्हें बट्टा भी मिले, और ये वे सब

काम न करें जो आजकल करते हैं?" नेख़्लूदोव ने सोचा। बाहर मुर्गे दूसरी बार बांग दे चुके थे। जब भी नेख़्लूदोव करवट बदलता या हरकत करता तो उसके चारों ओर पिस्सू यों दौड़ते, जैसे फौवारे में से पानी की धाराएं निकल रही हों। पर इनके बावजूद, इन्हीं विचारों में खोया हुआ नेख़्लूदोव गहरी नींद सो गया।

२०

जब नेख़्लूदोव जागा तो छकड़ों वाले कब के जा चुके थे। सराय की स्थूलकाय मालकिन चाय पी चुकी थी। हाथ में रूमाल लिये अपनी मोटी गर्दन से पसीना पोंछते हुए वह अन्दर आयी और नेख़्लूदोव से कहा कि एक सिपाही पड़ाव-घर से उसके नाम कोई चिट्ठी लाया है। चिट्ठी मारीया पाव्लोव्ना की ओर से थी। लिखा था कि क्रिलत्सोव को खांसी का बहुत बुरा दौरा पड़ा है, हमें उमीद न थी कि उसकी हालत इतनी चिन्ताजनक हो जायेगी। "पहले तो हमारी यही इच्छा थी कि इसे यहीं पर रहने दें, और अधिकारियों से इजाज़त मांग लें कि कोई आदमी इसके साथ रह सके, लेकिन इसकी इजाज़त नहीं मिली। अब हम इसे साथ ही ले जायेंगे। लेकिन इसकी स्थिति अत्यन्त शोचनीय है। कृपया ऐसा प्रबन्ध करो कि इसे शहर में छोड़ा जा सके, और हममें से एक आदमी इसके साथ रह सके। यदि इजाज़त हासिल करने के लिए इस बात की ज़रूरत हो कि मैं इसके साथ शादी कर लूं तो बेशक, मैं यह करने के लिए तैयार हूं।"

नेख़्लूदोव ने युवा मज़दूर को फ़ौरन् घोड़ा-चौकी पर घोड़ों का प्रबन्ध करने के लिए भेज दिया और जल्दी जल्दी अपना सामान बांधने लगा। अभी वह चाय का दूसरा गिलास भी नहीं पी पाया था कि सायबान में तीन घोड़ों वाली गाड़ी घंटियां खनकाती आ पहुंची। जमे हुए कीच पर उसके पहिये इस तरह खड़खड़ करते चले आ रहे थे जैसे पत्थरों पर चल रहे हों। नेख़्लूदोव ने पैसे निकाले और मोटी गर्दन वाली मालकिन का हिसाब चुकाया, फिर भागा हुआ बाहर आया और गाड़ी पर पैर रखते ही गाड़ीवान को हुक्म दिया कि गाड़ी भगा कर क़ैदियों की टोली के पास ले चले। पंचायती चरागाह के फाटकों के कुछ ही आगे वे गये होंगे कि उन्हें क़ैदियों के छकड़े मिल गये जिनमें बोरे और बीमार क़ैदी भरे पड़े थे। छकड़ों के पहिये जमे कीच पर खड़खड़ाते चले जा रहे थे, जो अब

उनके बोझ के नीचे धीरे धीरे हमवार होता जा रहा था। अफ़सर वहां पर नहीं था, वह आगे चला गया था। सड़क के किनारे किनारे कुछ सिपाही हंसते-वतियाते चले जा रहे थे, जो प्रत्यक्षतः शराव पिये हुए थे। छकड़े संख्या में वहुत थे। अगले छकड़ों में, एक एक छकड़े पर छः छः वीमार क़ैदी वैठे थे, जो मुश्किल से उनमें समा पाये थे। पिछले तीन छकड़ों पर, हरेक में तीन तीन राजनीतिक क़ैदी थे। एक में नोवोद्वोरोव, ग्रावेत्स और कोन्द्रात्येव थे; दूसरे में रांत्सेवा, नावातोव और वह स्त्री जिसे मारीया पाव्लोव्ना ने अपनी जगह दे दी थी, वैठे थे। तीसरे छकड़े में क्रिलत्सोव भूसे के ढेर पर सिर के नीचे सिरहाना रखे लेटा हुआ था और छकड़े के सिरे पर मारीया पाव्लोव्ना उसके पास वैठी थी। नेख़्लूदोव ने गाड़ीवान को गाड़ी रोकने के लिए कहा और उतर कर क्रिलत्सोव के पास गया। एक शरावी सिपाही ने उसे रोकने के लिए हाथ हिलाया लेकिन नेख़्लूदोव ने कोई परवाह न की और छकड़े के साथ साथ, एक हाथ से उसे पकड़े हुए क्रिलत्सोव के निकट चलने लगा। क्रिलत्सोव ने भेड़ की खाल का कोट और सिर पर फ़र की टोपी पहन रखी थी। मुंह पर रूमाल वंधा हुआ था। पहले से कहीं अधिक पीला और दुवला लग रहा था। उसकी सुन्दर आंखें वड़ी वड़ी लग रही थीं और उनमें विचित्र चमक थी। छकड़े में हिचकोलों के कारण उसका शरीर कभी एक तरफ़ को, कभी दूसरी तरफ़ को झूल जाता। लेकिन उसकी आंखें एकटक नेख़्लूदोव को देखे जा रही थीं। जव नेख़्लूदोव ने उससे स्वास्थ्य के वारे में पूछा तो उसने केवल आंखें वन्द कर लीं और ग़ुस्से से सिर हिला दिया। जान पड़ता था कि छकड़े के हिचकोले वर्दाश्त करने के लिए उसे शरीर की सारी शक्ति लगा देने की ज़रूरत है। मारीया पाव्लोव्ना दूसरी तरफ़ वैठी थी। उसने नेख़्लूदोव की ओर वड़े सारपूर्ण ढंग से देखा ताकि उसे क्रिलत्सोव की चिन्ताजनक स्थिति का पता चल जाय, फिर हंस हंस कर वातें करने लगी।

"जान पड़ता है अफ़सर को शर्म आ गयी," उसने चिल्ला कर कहा ताकि पहियों की खड़खड़ के वीच उसकी आवाज़ सुनाई दे सके। "वुज़ोव्किन की हथकड़ियां उतार दी गयी हैं, अव वह अपनी वेटी को ख़ुद गोद में उठा कर ले जा रहा है। कात्यूशा और सिमनसन उसके साथ हैं, और वेरा भी। वेरा ने मेरी जगह ले ली है।"

क्रिलत्सोव कुछ बोला लेकिन शोर के कारण उसकी आवाज़ सुनाई नहीं दी। उसे खांसी उठने लगी और उसने भौंहें चढ़ा कर उसे दबाने की चेष्टा करते हुए सिर हिलाया। नेख़्लूदोव आगे की ओर झुक कर उसकी बात सुनने की चेष्टा करने लगा। क्रिलत्सोव किसी तरह रूमाल में से मुंह निकाल कर फुसफुसाया—

"पहले से तबीयत बहुत अच्छी है। बस, सर्दी नहीं लगनी चाहिए।"

नेख़्लूदोव ने समर्थन में सिर हिलाया। फिर एक बार मारीया पाव्लोव्ना और नेख़्लूदोव की नज़रें मिलीं।

"तीन नक्षत्रों का क्या बना?" बड़ी कठिनाई से मुस्कराने की चेष्टा करते हुए क्रिलत्सोव ने फुसफुसा कर कहा। "क्या उनका मसला हल करना बहुत मुश्किल है?"

बात नेख़्लूदोव की समझ में नहीं आयी, लेकिन मारीया पाव्लोव्ना ने समझाया कि क्रिलत्सोव का मतलब गणित के उस सुपरिचित प्रश्न से है जिसमें सूर्य, चन्द्रमा तथा पृथ्वी के आपसी सम्बन्ध का ज़िक्र है और यह उससे तुम्हारी, सिमनसन और कात्यूशा की स्थिति की तुलना कर रहा है। इस पर क्रिलत्सोव ने सिर हिला कर हामी भरी कि मारीया पाव्लोव्ना ने उसके मज़ाक़ को ठीक समझा है।

"इस प्रश्न का हल मेरे हाथ में नहीं है," नेख़्लूदोव ने कहा।

"क्या तुम्हें मेरी चिट्ठी मिल गयी है? क्या यह काम करोगे?" मारीया पाव्लोव्ना ने पूछा।

"ज़रूर," नेख़्लूदोव ने जवाब दिया। फिर जब उसने देखा कि क्रिलत्सोव नाराज़ नज़र आ रहा है तो घूम कर सीधा अपनी गाड़ी में जा बैठा, और हिचकोलों से बचने के लिए दोनों तरफ़ से उसे पकड़ लिया। कच्ची सड़क की लीकों पर गाड़ी झूलती हिचकोले खाती क़ैदियों की टोली से आगे बढ़ने लगी, जो अपने भूरे लबादों, भेड़ की खाल के कोटों, बेड़ियों और हथकड़ियों को पहने सड़क पर छः फर्लांग आगे तक फैली हुई थी। सड़क की दूसरी तरफ़ नेख़्लूदोव को कात्यूशा का नीले रंग का शाल, वेरा का काला कोट और सिमनसन की बुनी हुई टोपी और सफ़ेद लम्बे मोज़े नज़र आये जिन पर उसने फीते बांध रखे थे जैसे सैंडलों पर लगाये जाते हैं। सिमनसन दोनों औरतों के साथ साथ चल रहा था और किसी मसले पर बड़े जोश से बहस कर रहा था।

नेख़्लूदोव को देख कर तीनों ने उसका झुक कर अभिवादन किया, और सिमनसन ने वड़ी गंभीरता से सिर पर से टोपी उतारी। नेख़्लूदोव रुका नहीं क्योंकि उसे उन्हें कुछ भी कहना नहीं था, और शीघ्र ही आगे निकल गया। थोड़ी देर के बाद सड़क के ज़्यादा हमवार हिस्से पर पहुंच कर गाड़ीवान ने गाड़ी और भी तेज़ कर दी, पर बार बार उसे लीकों पर से हट जाना पड़ता था क्योंकि सड़क पर दोनों तरफ़ से छकड़ों की कतारें आ-जा रही थीं।

सड़क देवदार के एक घने जंगल में से हो कर गयी थी जिसमें कहीं कहीं वर्च और लार्च के वृक्ष भी खड़े थे और जिनके पीले पत्ते अभी तक गिरे नहीं थे और झिलमिला रहे थे। सड़क के बीचोंबीच गाड़ियों के पहियों की गहरी लीकें खिंची थीं। आधे रास्ते पर जंगल ख़त्म हो गया। अब सड़क के दोनों तरफ़ दूर दूर तक खेत फैले हुए थे। दूर किसी मठ के गुम्बद और क्रॉस नज़र आये। बादल छितर गये थे और मौसम अच्छा हो गया था। जंगल के ऊपर सूरज चमकने लगा था जिसकी रोशनी में पेड़ों के पत्ते, गड्ढों में जमा हुआ पानी और मठ के सुनहरी क्रॉस और गुम्बद चमकने लगे थे। थोड़ा दायीं ओर दूर क्षितिज के ऊपर जहां आकाश का रंग भूरा-सुरमई हो रहा था बरफ़ से लदे पहाड़ों की सफ़ेदी झिलमिलाने लगी। गाड़ी ने एक बड़े से गांव में प्रवेश किया। सड़क पर रूसी तथा अन्य जातियों के बहुत से लोग विचित्र से लबादे और टोपियां पहने घूम रहे थे। दूकानों, शराब-घरों और छकड़ों के आस-पास मर्दों और औरतों की भीड़ लगी थी, जिनमें से कई एक ने शराब पी रखी थी। इस सबसे पता लगता था कि नज़दीक ही कोई शहर है।

गाड़ीवान ने रास झटकी, अपने दायें हाथ वाले घोड़े पर चाबुक चलायी, और रासों को ढीला छोड़ कर सीट के दायें सिरे पर बैठ गया, और लोगों पर रोब कसने के लिए गाड़ी को तेज़ तेज़ चलाता हुआ, नदी की ओर ले जाने लगा। नदी को बेड़े पर पार किया जाता था। नदी में बेड़ा उन्हीं की दिशा में बहता आ रहा था, और नदी के मध्य तक पहुंच चुका था। किनारे पर लगभग बीस छकड़े नदी पार करने के इन्तज़ार में खड़े थे। नेख़्लूदोव को बहुत देर इन्तज़ार नहीं करना पड़ा। नदी का बहाव तेज़ था साथ ही बेड़े को धार के ऊपर काफ़ी दूर तक ले जाया जा चुका था, जिस कारण शीघ्र ही वह घाट के साथ आ लगा।

नाविक बड़े ऊंचे ऊंचे क़द के, चौड़े कन्धों वाले, मांसल और चुपचाप काम करने वाले व्यक्ति थे। सभी ने भेड़ की खाल के कोट पहन रखे थे। किनारे पर पहुंच कर उन्होंने अपने अभ्यस्त हाथों से रस्से फेंक कर बेड़े को किनारे से बांधा, फिर जिन छकड़ों को उस पार से ढो कर लाये थे उन्हें किनारे पर उतारा और किनारे पर खड़े छकड़ों को बेड़े में लादने लगे। छकड़ों और घोड़ों से सारा बेड़ा भर गया। पानी को देख कर घोड़े बेचैन होने लगे। बेड़े के पार्श्व पर चौड़ी, वेगवती नदी के थपेड़े लग रहे थे जिससे रस्से और भी तन गये थे। बेड़ा भर गया, नेख़्लूदोव की गाड़ी में से घोड़े खोल दिये गये थे और उसे बेड़े के एक तरफ़ बहुत से छकड़ों के बीच खड़ा कर दिया गया था। नाविकों ने और छकड़ों का अन्दर आना बन्द कर दिया, और रस्से खोल कर बेड़ा खेने लगे। बहुत से लोग जिन्हें बेड़े पर जगह नहीं मिली थी, चिल्लाने और मिन्नतें करने लगे लेकिन नाविकों ने उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। बेड़े पर मौन छा गया। नाविकों के क़दमों और घोड़ों के खुर पटकने की आवाज़ों के अतिरिक्त कोई आवाज़ सुनाई नहीं पड़ती थी।

२१

बेड़े के किनारे पर खड़ा नेख़्लूदोव विशाल नदी का दृश्य देख रहा था। उसके मन में दो चित्र बार बार उभर रहे थे। कभी उसे आक्रोश से भरपूर, संसार से विदा होते क्रिलत्सोव का गाड़ी के हिचकोले से इधर-उधर झटकता सिर दिखाई देता और कभी कात्यूशा, जो दृढ़ता से डग भरती हुई सिमनसन के साथ साथ चली जा रही थी। क्रिलत्सोव इस तरह अचानक मरना नहीं चाहता था, इसलिए इस चित्र से नेख़्लूदोव का मन खिन्न और उदास हुआ। कात्यूशा के रोम रोम से ओज फूट रहा था, उसे सिमनसन जैसे व्यक्ति का प्रेम प्राप्त हुआ था, साथ ही वह भलाई के सच्चे मार्ग पर दृढ़तापूर्वक चली जा रही थी। इस चित्र से नेख़्लूदोव को ख़ुश होना चाहिए था, किन्तु इससे भी उसका मन उदास हुआ और इस उदासी को वह दूर नहीं कर सका।

नगर की ओर से कांसे के किसी बड़े घंटे की आवाज़ गूंजती हुई आयी। नेख़्लूदोव के गाड़ीवान ने तथा बेड़े में खड़े अन्य लोगों ने सिर

पर से टोपियां उतारीं और छाती पर क्रॉस का चिन्ह बनाया। रेलिंग के बिल्कुल पास खड़े एक छोटे से बिखरे बालों वाले बूढ़े ने, जिसकी ओर नेख़्लूदोव का ध्यान पहले नहीं गया था, क्रॉस का चिन्ह नहीं बनाया बल्कि सिर ऊंचा कर के नेख़्लूदोव की ओर देखने लगा। बूढ़ा बदन पर टाकियां लगा कोट, सूती पतलून और पैरों में फटे-पुराने, टाकियां लगे बूट पहने था। पीठ पर एक छोटा सा सफ़री थैला लटकाये और सिर पर एक फटी-पुरानी फ़र की ऊंची सी टोपी पहने हुए था।

"तुम प्रार्थना क्यों नहीं कर रहे हो, बड़े मियां?" नेख़्लूदोव के गाड़ीवान ने सिर पर टोपी रख कर ठीक करते हुए उससे पूछा। "क्या तुम्हारा बपतिस्मा नहीं हुआ?"

"प्रार्थना किस की करूं?" एक एक शब्द पर बल देते हुए, रूखी आवाज़ में उस फटेहाल बूढ़े ने पूछा।

"भगवान् की, और किस की?" गाड़ीवान ने तुनक कर कहा।

"दिखाओ तो, तुम्हारा यह भगवान् है कहां पर?"

वृद्ध के चेहरे पर कुछ ऐसी गंभीरता तथा दृढ़ता का भाव था कि गाड़ीवान कुछ झेंप गया। वह समझ गया कि आज किसी सख़्त मिज़ाज आदमी से वास्ता पड़ा है। लेकिन भीड़ खड़ी देख रही थी, और वह नहीं चाहता कि उसके सामने दब्बू बने और शर्मिन्दा हो। इसलिए अपनी झेंप छिपाने की कोशिश करते हुए झट से बोला—

"कहां है? स्वर्ग में है और कहां होगा?"

"तो तुम वहां हो आये हो क्या?"

"मैं वहां हो आया हूं या नहीं, सभी जानते हैं कि भगवान् की प्रार्थना करनी चाहिए।"

"आज तक कभी किसी आदमी ने भगवान् को नहीं देखा। केवल भगवान् का एकमात्र बेटा, जो उसी के हृदय में बसता है, प्रगट हुआ था," उसी तरह त्योरियां चढ़ाये वृद्ध ने तेज़ बोलते हुए कहा।

"ज़ाहिर है तुम ईसाई नहीं हो, तुम तो यों ही बे सिर पैर चीज़ को भगवान् मानते हो, उसी की पूजा करते हो," गाड़ीवान ने चाबुक का दस्ता पेटी में खोंसते हुए और एक घोड़े पर का साज़ सीधा करते हुए कहा।

भीड़ में से कोई हंसने लगा।

"तुम्हारा धर्म क्या है बड़े मियां?" अधेड़ उम्र के एक आदमी ने पूछा जो बेड़े के उसी तरफ़ अपने छकड़े के पास खड़ा था।

"मेरा कोई भी धर्म नहीं, क्योंकि मेरा किसी में भी विश्वास नहीं है–मेरा विश्वास केवल अपने आप पर है," उसी दृढ़ता और तेज़ी के साथ वृद्ध ने जवाब दिया।

"अपने पर विश्वास कैसे हो सकता है?" वाद-विवाद में भाग लेते हुए नेख़्लूदोव ने पूछा, "तुम भूल भी तो कर सकते हो।"

"नामुमकिन है," सिर हिला कर वृद्ध ने दृढ़ता से जवाब दिया।

"तो फिर लोगों के अलग अलग धर्म क्यों हैं?" नेख़्लूदोव ने पूछा।

"केवल इसलिए कि लोग औरों में विश्वास करते हैं, अपने आप पर विश्वास नहीं करते। इसी लिए संसार में अलग अलग धर्म हैं। मैंने भी पहले लोगों में विश्वास किया था, यहां तक कि मैं दलदल में फंस गया। मुझे कोई बाहर निकलने का रास्ता ही नहीं मिलता था। कट्टरपन्थी और नवीनपन्थी, जूडासवादी और ख़्लिस्ती, पोपोव्सी और वेज़पोपोव्सी, अवस्त्रियाक और मोलोकान, और स्कोप्त्सी – सभी धर्म अपने ही गुण गाते हैं। यही कारण है कि सभी अन्धे पिल्लों की तरह रेंगते रहते हैं। धर्म तो वहुत हैं परन्तु आत्मा तो एक ही है–मुझमें, तुममें, उसमें। इसलिए अगर हर आदमी अपने में विश्वास करने लगेगा, तो सबमें एकता आ जायेगी। सभी लोग अपने प्रति सच्चे रहें तो सभी मिल कर एक हो जायेंगे।"

वृद्ध बड़ी ऊंची आवाज़ में बोल रहा था, और बार बार अपने इर्दगिर्द देखता था। प्रत्यक्षत: उसकी इच्छा थी कि अधिक से अधिक लोग उसकी बात सुनें।

"क्या तुम्हारा यह मत बहुत दिनों से है?" नेख़्लूदोव ने पूछा।

"मेरा? हां, बहुत दिनों से। पिछले २३ बरस से वे मेरे पीछे पड़े हुए हैं।"

"पीछे पड़े हुए हैं? वह कैसे?"

"जिस तरह उन्होंने यीसु मसीह पर ज़ुल्म किये उसी तरह मुझ पर भी ज़ुल्म कर रहे हैं। मुझे पकड़ लेते हैं और अदालतों के सामने, पादरियों, क़ानूनदानों, और पाखण्डियों के सामने पेश करते रहते हैं। एक बार उन्होंने मुझे पागलख़ाने में बन्द कर दिया। पर वे मेरा क्या बिगाड़ सकते हैं? मैं तो

39*

आजाद जीव हूं। वे मुझसे पूछते हैं—'तुम्हारा नाम क्या है?' वे समझते हैं कि मैं अपना नाम बतलाऊंगा। पर मेरा कोई नाम ही नहीं है। मैंने सब कुछ त्याग दिया है। मेरा न कोई नाम है, न स्थान, न देश, मेरा कुछ भी नहीं। मैं बस, केवल स्वयं हूं। 'तुम्हारा नाम क्या है?' 'इन्सान।' 'तुम्हारी उम्र कितनी है?' मैं जवाब देता हूं, 'मैं अपनी उम्र के साल नहीं गिनता, गिन सकता भी नहीं, क्योंकि मैं सदा से था और सदा रहूंगा।' 'तुम्हारे मां-बाप कौन हैं?' 'मेरे कोई मां-बाप नहीं, भगवान् और धरती माता के अतिरिक्त मेरा कोई नहीं। भगवान् मेरा पिता है, धरती—माता है।' 'और ज़ार? क्या तुम ज़ार को मानते हो?' वे पूछते हैं। मैं जवाब देता हूं, 'क्यों नहीं। वह अपना ज़ार है, मैं अपना ज़ार हूं।' 'तुम्हारे साथ मग़ज़-पच्ची करने का क्या लाभ?' वे कहते हैं। और मैं कहता हूं, 'मैं कब तुमसे कहता हूं कि मेरे साथ मग़ज़-पच्ची करो।' इस तरह वे लोग मुझे परेशान करते हैं।"

"अब कहां जा रहे हो?" नेख़्लूदोव ने पूछा।

"जहां भगवान् ले जाय। जहां मुझे काम मिल जाय वहां काम करता हूं। जो काम नहीं मिले तो भीख मांगता हूं।"

वृद्ध ने देखा कि बेड़ा किनारे पर पहुंचने वाला है, इसलिए उसने अपनी बात ख़त्म की और बड़े गर्व के साथ आस-पास खड़े लोगों की ओर देखा, मानो मैदान मार लिया हो।

बेड़ा दूसरे किनारे पर जा लगा। नेख़्लूदोव ने अपना बटुआ निकाला और कुछ पैसे बूढ़े को दिये। लेकिन उसने लेने से इन्कार कर दिया। बोला—

"मैं इस तरह की चीज़ नहीं लेता, केवल रोटी लेता हूं।"

"अच्छा तो, अलविदा, माफ़ करना।"

"माफ़ करने की इसमें क्या बात है। आपने मेरा कोई अपमान नहीं किया, और मेरा अपमान किया भी नहीं जा सकता।" और बूढ़े ने अपनी पीठ पर सफ़री थैला फिर रख लिया जो पहले उसने उतार दिया था।

इस बीच गाड़ी किनारे पर उतार दी गयी थी और उसमें घोड़े जोत दिये गये थे।

"मैं तो हैरान हो रहा था, हुज़ूर, कि आप उस आदमी के साथ

बातें करने लगे थे," जब नेख़्लूदोव तगड़े नाविकों को पैसे दे कर गाड़ी में बैठा तो गाड़ीवान ने कहा, "वह तो किसी काम का आदमी नहीं, बिल्कुल आवारा है।"

२२

नदी की ढलान पर चढ़ कर जब वे ऊपर पहुंचे तो गाड़ीवान बोला—

"किस होटल में ले चलूं, हुज़ूर?"

"सबसे अच्छा कौन सा होटल है?"

"'साइबीरियन' से अच्छा कोई होटल नहीं है, लेकिन 'द्यूकोव' भी बुरा नहीं है।"

"तुम्हारा जहां मन चाहे ले चलो।"

गाड़ीवान फिर सीट के एक तरफ़ हो कर तिरछा बैठ गया, और पहले से भी अधिक तेज़ गाड़ी चलाने लगा। यह शहर भी अन्य शहरों जैसा ही था। वैसे ही घर, हर घर की छत हरे रंग की और ऊपर बरसाती, वैसा ही गिरजा, बड़ी सड़क पर वैसी ही छोटी-बड़ी दूकानें, यहां तक कि वैसे ही पुलिस के सिपाही भी थे। परन्तु लगभग सभी घर लकड़ी के बने थे और सड़कें कच्ची थीं। एक सड़क पर पहुंच कर, जिस पर काफ़ी रौनक थी, गाड़ीवान एक होटल के सामने रुका। लेकिन कोई भी कमरा ख़ाली नहीं था, इसलिए वह दूसरे होटल की ओर गाड़ी ले चला। यहां पर, दो महीने के बाद, नेख़्लूदोव को वैसी जगह रहने को मिली जिसका वह आदी था, जो काफ़ी साफ़ और आरामदेह थी। कमरा साधारण ही उसे मिला लेकिन दो महीने तक छकड़ों पर हिचकोले खाने के बाद तथा गांवों की सरायों और पड़ाव-घरों में रहने के बाद उसने चैन की सांस ली। पड़ाव-घरों से उसे जुएं पड़ गयी थीं जिनसे वह कभी भी पूर्णतया छुटकारा नहीं पा सका था, इसलिए उसने पहला काम यह किया कि अपने बदन और कपड़ों को साफ़ किया। सामान खोलने के बाद वह पहले रूसी हमाम में गया, उसके बाद अपने शहरी कपड़े पहने—कलफ़ लगी क़मीज़, पतलून जिस पर कुछ कुछ सिलवटें पड़ गयी थीं, फ़्रॉक-कोट, उस पर ओवर-कोट और इलाक़े के गवर्नर को मिलने के लिए चल पड़ा। होटल वाले ने एक गाड़ी मंगवा दी जिसका घोड़ा तो ख़ूब पला हुआ किरग़ीज़ घोड़ा था लेकिन गाड़ी के चूल चलते

हुए चर्र-मर्र करते थे। शीघ्र ही गाड़ी एक विशाल और भव्य इमारत के बड़े से सायबान में जा कर खड़ी हो गयी। सायबान के सामने सन्तरी और एक पुलिस का सिपाही पहरा दे रहे थे। भवन के सामने और पीछे एक बाग़ था, ऐस्पन और बर्च वृक्षों के बीच, जिनकी पल्लवहीन टहनियां फैल रही थीं, देवदार और फ़र के घने पेड़ गहरे हरे रंग की ओढ़नी ओढ़े खड़े थे।

जनरल बीमार था और मुलाक़ातियों से नहीं मिल रहा था। फिर भी नेख़्लूदोव ने चोबदार से अपना कार्ड अन्दर ले जाने को कहा, और चोबदार अन्दर से सन्तोषप्रद जवाब ले कर आया।

"अन्दर तशरीफ़ ले चलिये।"

हॉल, चोबदार, अर्दली, सीढ़ियां, नाचने वाला कमरा जिसका फ़र्श ख़ूब चमक रहा था—सभी वैसे ही थे जैसे कि पीटर्सबर्ग में। लेकिन यहां उनका रोब ज़्यादा था, और वे गन्दे भी उनसे ज़्यादा थे।

नेख़्लूदोव को पढ़ने वाले कमरे में ले जाया गया।

जनरल एक फूला हुआ लेकिन ज़िन्दादिल आदमी था, उभरी हुई नाक, माथे पर जगह जगह सूजन, आंखों के नीचे का मांस फूला हुआ और गंजा सिर, वह तातारी सिल्क का ड्रेसिंग-गाउन पहने हुए था, और चांदी के होल्डर में चाय का गिलास थामे चाय की चुस्कियां ले रहा था और सिगरेट के कश लगा रहा था।

"मिज़ाज शरीफ़, मेहरबान, आइये। माफ़ करना मैं ड्रेसिंग-गाउन चढ़ाये हुए हूं। पर न मिलने से तो यों मिलना ही अच्छा है," अपनी स्थूल गर्दन पर ड्रेसिंग-गाउन चढ़ाते हुए, और गर्दन के पिछले भाग को गाउन की सिलवटों से ढकते हुए, उसने कहा, "मेरी तबीयत कुछ अच्छी नहीं, इसलिए घर से बाहर नहीं निकलता। कहो, हमारे इतने दूर-दराज़ इलाक़े में कैसे आना हुआ?"

"मैं क़ैदियों की एक टोली के साथ साथ जा रहा हूं। इसमें एक व्यक्ति है जिसके साथ मेरा निकट का सम्बन्ध है," नेख़्लूदोव ने कहा, "और मैं हुज़ूर की ख़िदमत में कुछ तो उस व्यक्ति की ख़ातिर और कुछ एक दूसरे मतलब के लिए हाज़िर हुआ हूं।"

जनरल ने एक और कश लगाया और चाय की चुस्की ली, सिगरेट को मैलाकाइट की बनी राख़दानी में रखा और दत्तचित्त हो कर नेख़्लूदोव

की बात सुनने लगा। उसकी चमकती आंखें जो फूले हुए घेरों में छोटी छोटी दरारों सी लगती थीं नेख़्लूदोव के चेहरे पर टिकी थीं। केवल एक बार उसने नेख़्लूदोव को टोका और वह भी सिगरेट पेश करने के लिए।

जनरल एक सुसंस्कृत व्यक्ति था और फ़ौज के उन अफ़सरों में से था जिनका यह विश्वास है कि अपने पेशे के साथ उदार तथा मानवीय विचारों का मेल बैठाया जा सकता है। लेकिन स्वभाव का सद्भावनाशील तथा समझदार होने के कारण उसे शीघ्र ही पता चल गया कि यह सन्धि-मिलाप असम्भव है। अतः अन्दर ही अन्दर वह अशान्त रहने लगा, और इस आन्तरिक अशान्ति को भुलाने के लिए उसने शराब की शरण ली। यह शराबख़ोरी की आदत फ़ौज के लोगों में बहुत पायी जाती है। धीरे धीरे वह इसमें अधिकाधिक डूबता गया, यहां तक कि ३५ वर्ष तक फ़ौज की नौकरी करने के बाद डॉक्टरों की परिभाषा में वह बिल्कुल "अलकोहली" हो गया। अल्कोहल उसके अंग अंग में रच गया था, यहां तक कि अगर वह किसी प्रकार का भी तरल पदार्थ पी ले तो उसे चढ़ जाती थी। शराब के बिना वह रह न सकता था, वह उसके लिए अनिवार्य बन गयी थी। शाम को हर रोज़ वह नशे में चूर होता। लेकिन इसकी भी उसे ऐसी आदत पड़ गयी थी कि न ही वह लड़खड़ाता था और न ही मुंह से कोई ऊल-जलूल बात कहता। और यदि कोई ऊल-जलूल बात कह भी जाता तो उसे बड़ी विद्वत्तापूर्ण बात समझा जाता क्योंकि वह बड़े ऊंचे और महत्वपूर्ण पद पर था। केवल सुबह के वक़्त—उस वक़्त जब नेख़्लूदोव उससे मिलने आया था—उसका दिमाग़ ठीक काम करता और जो कुछ उससे कहा जाता उसे ठीक समझता था। एक मुहावरा दोहराने की उसे बड़ी आदत थी और वास्तव में उसी मुहावरे की वह ख़ुद जीती-जागती मिसाल भी था। वह कहा करता—"वह नशे में है, पर साथ ही अक़्लमन्द भी है, इसलिए उसके संग बैठ कर दो मज़े मिलते हैं।" ऊंचे अधिकारियों को मालूम था कि वह पियक्कड़ है, लेकिन वह अन्य लोगों से ज़्यादा पढ़ा-लिखा था—हालांकि उसकी शिक्षा उस समय ख़त्म हो गयी थी जब उसे पीने की लत्त लगी। साहसी और चतुर आदमी था, चाल-ढाल का रोबीला, नशे में भी चतुराई की बात करता, इसलिए उसे इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी वाले पद पर नियुक्त किया गया था और इस पद पर वह अब भी क़ायम था।

नेख़्लूदोव ने उसे बताया कि जिस क़ैदी में उसकी दिलचस्पी है वह एक स्त्री है, और यह कि उसके साथ अन्याय हुआ है, और उसकी ओर से एक अपील ज़ार के पास भेजी गयी है।

"अच्छा, तो फिर?" जनरल बोला।

"पीटर्सबर्ग में मुझसे कहा गया था कि एक महीने के अन्दर अन्दर इस दरख़्वास्त का फ़ैसला मेरे पास यहां भेज दिया जायेगा..."

जनरल ज़ोर ज़ोर से खांसने लगा और अपना हाथ मेज़ की ओर बढ़ाया और वहां पर रखी घंटी को अपनी गठीली उंगलियों से बजाया। उसकी आंखें अब भी नेख़्लूदोव के चेहरे पर लगी थीं और वह बराबर सिगरेट के कश लगाये जा रहा था।

"मेरी यह दरख़्वास्त है कि इस औरत को उस वक़्त तक यहीं पर रहने की इजाज़त दी जाय जब तक कि इसकी अपील का जवाब नहीं आ जाता।"

एक अर्दली ने जो वर्दी पहने था कमरे में प्रवेश किया।

"दर्याफ़्त करो कि आन्ना वासील्येव्ना जाग गयी हैं या नहीं," जनरल ने अर्दली से कहा। "और थोड़ी चाय और ले आओ।" फिर, नेख़्लूदोव की ओर घूम कर बोला, "हां, तो और क्या बात है?"

"मेरी दूसरी दरख़्वास्त एक राजनीतिक क़ैदी के बारे में है। वह भी इसी टोली में जा रहा है।"

"यह बात है!" जनरल ने कहा और बड़े महत्वपूर्ण ढंग से सिर हिलाया।

"वह बहुत सख़्त बीमार है—मर रहा है—शायद उसे यों भी यहां अस्पताल में छोड़ जायेंगे। इन्हीं राजनीतिक क़ैदियों में से एक स्त्री उसकी टहल-सेवा करने के लिए उसके साथ रहना चाहती है।"

"क्या वह उसकी रिश्तेदार है?"

"नहीं, लेकिन वह उसके साथ शादी कर लेगी, अगर शादी कर लेने से उसे यहां रुकने की इजाज़त मिल सकती हो।"

जनरल की चमकती आंखें अब भी नेख़्लूदोव के चेहरे पर लगी थीं। वह चुपचाप सिगरेट के कश लगाता हुआ उसकी ओर देखे जा रहा था ताकि मुलाक़ाती विचलित हो जाय।

जब नेख़्लूदोव अपनी बात कह चुका तो जनरल ने मेज़ पर से एक

किताव उठायी, अंगुली को लव से तर किया, और जल्दी जल्दी पन्ने उलटते हुए वह पन्ना निकाल कर पढ़ने लगा जिस पर शादियों के वारे में सरकारी क़ानून दर्ज था।

"उस औरत को क्या सज़ा दी गयी है?" किताव पर से सिर उठाते हुए उसने पूछा।

"कड़ी मशक़्क़त की।"

"जिसे कड़ी मशक़्क़त की सज़ा दी गयी हो उसकी स्थिति शादी द्वारा वेहतर नहीं वनायी जा सकती।"

"यह तो ठीक है, लेकिन..."

"माफ़ कीजिये। यदि कोई आज़ाद आदमी भी उसके साथ व्याह करेगा, उस हालत में भी उसे अपनी सज़ा भुगतनी पड़ेगी। ऐसी स्थिति में देखना यह होता है कि किसको ज़्यादा कड़ी सज़ा मिली है—आदमी को या औरत को।"

"दोनों को एक जैसी कड़ी मशक़्क़त की सज़ा मिली है।"

"वस फिर दोनों वरावर हो गये!" जनरल ने हंस कर कहा। "जो मर्द को मिला है, वही औरत को भी मिला है। पर चूंकि मर्द वीमार है, उसे यहीं पर छोड़ा जा सकता है। उसकी देखभाल के लिए जो कुछ भी ज़रूरी हुआ, किया जायेगा। लेकिन जहां तक उस स्त्री का सवाल है, यदि वह उससे शादी कर भी ले तो भी उसके साथ पीछे नहीं रह सकती।"

"मालकिन कॉफ़ी पी रही हैं," अर्दली ने आ कर कहा।

जनरल ने सिर हिलाया और अपनी वात जारी रखते हुए कहा—

"अच्छा, मैं सोचूंगा। उनके नाम क्या हैं? यहां काग़ज़ पर लिख दो।"

नेख़्लूदोव ने उनके नाम लिख दिये।

इसके वाद नेख़्लूदोव ने मरणासन्न क़ैदी से मिलने की इजाज़त मांगी।

"नहीं, इसकी इजाज़त भी मैं नहीं दे सकता," जनरल ने जवाव दिया, "मुझे तुम पर शक तो विल्कुल नहीं है, लेकिन तुम उसमें और अन्य क़ैदियों में दिलचस्पी रखते हो, और तुम्हारे पास पैसा है। और यहां, जिसके जेव में पैसा हो वह सव कुछ कर सकता है। मुझसे कहा जाता है, "रिश्वतख़ोरी को वन्द कराओ।' मगर मैं रिश्वतख़ोरी को कैसे वन्द करा सकता हूं जव सभी रिश्वत लेते हैं? जितना छोटा अफ़सर होगा उतना

ही जल्दी रिश्वत के लिए हाथ फैलायेगा। और तीन हज़ार मील के लम्बे-चौड़े इलाक़े में इसका पता भी कैसे लगाया जा सकता है? बाहर तो हर अफ़सर ज़ार बना हुआ है, जिस तरह मैं यहां पर हूं," उसने हंस कर कहा। "और शायद तुम राजनीतिक क़ैदियों से मिल भी चुके हो। बस, पैसे दिये होंगे और इजाज़त मिल गयी होगी, क्यों?" वह मुस्करा रहा था। "क्यों, ठीक है न?"

"हां, ठीक है।"

"मैं समझ सकता हूं कि इसके बिना तुम्हारे लिए कोई चारा न था। तुम्हारे दिल में राजनीतिक क़ैदी के लिए दर्द उठता है और तुम उससे मिलना चाहते हो। दूसरी तरफ़ इन्स्पेक्टर या कॉनवाय का सिपाही इसलिए रिश्वत ले लेता है क्योंकि उसे केवल ४० कोपेक रोज़ाना के हिसाब से तनख़्वाह मिलती है, और उसके बाल-बच्चे हैं। वह अपनी जगह लाचार है। अगर मैं तुम्हारी जगह पर होऊं, या उसकी जगह पर, तो मैं भी यही कुछ करूंगा। पर अपनी जगह पर यहां मैं क़ानून से एक इंच भी इधर से उधर नहीं हो सकता। मैं इसकी अपने को इजाज़त ही नहीं देता, क्योंकि मैं इन्सान हूं और मुझ पर भी भावुकता का असर हो सकता है। मैं तो ख़ुद प्रशासन में हूं और मेरे हाथ में एक ज़िम्मेवारी का काम सौंपा गया है, जिसकी अपनी ख़ास शर्तें हैं, और मुझे इन शर्तों को हर हालत में पूरा करना है ... अच्छा, अब यह काम तो ख़त्म हुआ। अब कुछ राजधानी की ख़बर सुनाओ।" और जनरल बहुत कुछ पूछने और सुनाने लगा। वह ख़बरें भी सुनना चाहता था, और साथ ही अपने प्रभुत्व और दयालुता का रोब भी गांठना चाहता था।

२३

"तुम ठहरे कहां हो?" जब नेख़्लूदोव विदा होने लगा तो जनरल ने पूछा। "द्यूकोव होटल में? जगह तो बेकार ही है। आज शाम को पांच बजे मेरे साथ खाना खाओ। तुम अंग्रेज़ी जानते हो?"

"जी, जानता हूं।"

"यह बहुत अच्छा हुआ। अभी अभी यहां एक अंग्रेज़ यात्री पहुंचा है। वह निर्वासन के विषय पर अध्ययन कर रहा है और साइबेरिया के

जेलख़ानों की जांच करने आया है। आज वह हमारे यहां खाना खाने आ रहा है। ज़रूर आना। हम पांच बजे मेज़ पर बैठ जाते हैं, और मेरी पत्नी वक़्त की बड़ी पाबन्द है। मैं उस वक़्त तुम्हें उस औरत और बीमार क़ैदी के बारे में भी अपना जवाब बता दूंगा। शायद बीमार के पास किसी को छोड़ना संभव हो जाय।"

जनरल से विदा ले कर नेख़्लूदोव गाड़ी में बैठ डाकख़ाने की ओर जाने लगा। वह एक नयी उत्तेजना भरी स्फूर्ति का अनुभव कर रहा था।

डाकख़ाना नीची छत के एक मेहराबदार कमरे में था। काउंटर के पीछे कुछेक कर्मचारी बैठे काम कर रहे थे और काउंटर के सामने लोगों की भीड़ लगी थी। एक कर्मचारी सिर एक ओर को झुकाये चिट्ठियों पर मोहरें लगा रहा था। बड़ी फुर्ती से उसके हाथ चल रहे थे। नेख़्लूदोव को ज़्यादा देर इन्तज़ार नहीं करना पड़ा। उसने अपना नाम बताया तो फ़ौरन् ही उसकी डाक उसके हाथ में दे दी गयी। डाक में बहुत कुछ था: कई चिट्ठियां, रुपया, किताबें, "ओतेचेस्त्वेन्निये ज़ापीस्की" पत्रिका का नया अंक। नेख़्लूदोव इन्हें उठा कर लकड़ी के एक बेंच पर जा बैठा जिस पर कोई फ़ौजी हाथों में किताब पकड़े, पहले से बैठा इन्तजार कर रहा था। नेख़्लूदोव उसके पास ही बैठ गया और अपनी चिट्ठियां छांटने लगा। चिट्ठियों में एक रजिस्ट्री चिट्ठी थी, जिसका लिफ़ाफ़ा बहुत बढ़िया था और ऊपर साफ़ चमकती लाल रंग की मोहर लगी थी। नेख़्लूदोव ने मोहर को तोड़ा। अन्दर सेलेनिन की एक चिट्ठी थी जिसके साथ कुछेक सरकारी कागज़ उसने भेजे थे। देखते ही नेख़्लूदोव का चेहरा लाल हो गया, और दिल धड़कने लगा। कात्यूशा की अपील का जवाब आया था। यह जवाब कैसा होगा? कहीं अपील को रद्द तो नहीं कर दिया गया। नेख़्लूदोव ने जल्दी जल्दी ख़त पढ़ डाला, जो बड़ी बारीक लिखावट में लिखा था। शब्दों की बनावट दृढ़ थी किन्तु वे बहुत ही एक दूसरे के साथ जुड़े हुए थे। ख़त को पढ़ना मुश्किल हो रहा था। उसे पढ़ते ही नेख़्लूदोव ने चैन की सांस ली। जवाब उत्साहवर्द्धक था।

"प्रिय मित्र," सेलेनिन ने लिखा था, "आख़िरी बार जब तुम मुझसे मिले तो तुम्हारी बातों का मुझ पर गहरा असर हुआ। मास्लोवा के बारे में जो कुछ तुमने बताया वह ठीक था। मैंने मुक़द्दमे की फ़ाइल को ध्यान से पढ़ा है, और देखता हूं कि उस पर घोर अन्याय हुआ है। जिस अपील

कमेटी को तुमने उसकी दरख़्वास्त पेश की थी, वही इसका निर्णय कर सकती थी। मुक़द्दमे की जांच में मैंने भी सहायता की। इस चिट्ठी के साथ उस हुक्मनामे की नक़ल भेज रहा हूं जिसके अनुसार उसकी सज़ा बहुत कम कर दी गयी है। तुम्हारी मौसी काउंटेस येकातेरीना इवानोव्ना से मुझे तुम्हारा पता मिला और इसी पर मैं तुम्हें यह नक़ल भेज रहा हूं। असल दस्तावेज़ उस जगह पर भेज दिया गया है जहां पर मुक़द्दमे से पहले उसे रखा गया था। वहां से संभवतः फ़ौरन् ही साइबेरिया के मुख्य सरकारी दफ़्तर में भेज दिया जायेगा। इस शुभसमाचार को फ़ौरन् तुम तक पहुंचाने के लिए यह ख़त लिख रहा हूं। सप्रेम – तुम्हारा, सेलेनिन।"

सरकारी हुक्मनामा इस तरह था – "महाराजाधिराज के अपील कार्यालय से जहां महाराजाधिराज के नाम दी हुई दरख़्वास्तें ली जाती हैं।" आगे तारीख़ तथा अन्य क़ानूनी बातें लिखी थीं। "महाराजाधिराज के अपील कार्यालय के मुख्य अधिकारी की ओर से मेश्चान्का येकातेरीना मास्लोवा को सूचित किया जाता है, कि महाराजाधिराज ने उसकी दरख़्वास्त पर विचार कर के उसे मंज़ूर करने की कृपा की है, और हुक्म फ़र्माया है कि कड़ी मशक़्क़त की सज़ा के स्थान पर साइबेरिया के किसी निकटवर्ती स्थान पर केवल निर्वासित कर दिया जाय।"

बड़ी अच्छी ख़बर थी और महत्वपूर्ण। जिस चीज़ की नेख़्लूदोव अपने लिए तथा कात्यूशा के लिए आशा करता था वही पूरी हो गयी थी। यह ठीक है कि मास्लोवा की इस नयी स्थिति के कारण उनके आपसी संबंधों में नयी उलझनें पैदा हो गयी थीं। जितनी देर तक उस पर कड़ी मशक़्क़त की सज़ा लागू है, उतनी देर तक उसके साथ शादी भी सच्ची शादी नहीं होगी। और सिवाय इसके कि वह इस द्वारा उसकी यातना को हल्का बना सके, उसका कोई अर्थ भी नहीं होगा। पर अब दोनों के एक साथ रहने में कोई रुकावट नहीं थी। और इसके लिए नेख़्लूदोव तैयार नहीं था। यही नहीं, सिमनसन के साथ मास्लोवा के सम्बन्ध का क्या होगा? जो शब्द कल मास्लोवा ने कहे थे, उनका क्या अर्थ था? और यदि वह सिमनसन के साथ शादी करने पर रजामंद हो गयी तो यह अच्छा होगा या बुरा? नेख़्लूदोव के लिए इन सवालों की गुत्थी सुलझाना आसान नहीं था, इसलिए उसने इनके बारे में सोचना छोड़ दिया। "अपने आप कोई रास्ता निकल आयेगा," उसने सोचा, "इस समय इस उधेड़बुन में नहीं

पड़ना चाहिए। इस वक़्त तो मुझे जितनी जल्दी हो सके यह ख़ुशख़बरी मास्लोवा को सुनानी चाहिए और उसे क़ैद से छुड़ाना चाहिए।" उसका ख़्याल था कि हुक्मनामे की नक़ल से ही यह संभव हो जायेगा। इसलिए डाकख़ाने में से निकलते ही उसने गाड़ीवान को जेलख़ाने की तरफ़ चलने को कहा।

जेलख़ाने के भीतर जाने की उसने गवर्नर से उस रोज़ इजाज़त नहीं ली थी। लेकिन अपने अनुभव से वह जानता था कि जिस बात की इजाज़त बड़े अफ़सर नहीं देते वह छोटे अफ़सरों से आसानी से पूरी हो जाती है। अब उसका यही इरादा था कि कोशिश कर के जेल के अन्दर चला जाय और कात्यूशा को यह शुभसमाचार सुनाये और हो सके तो उसे फ़ौरन् छुड़वा दे। साथ ही वह किलत्सोव की सेहत के बारे में दर्याफ़्त करना चाहता था और जो कुछ गवर्नर ने कहा था वह उसे तथा मारीया पाव्लोव्ना को बता देना चाहता था।

जेल इन्स्पेक्टर ऊंचा-लम्बा, रोबीला आदमी था। मूंछें और गलमुच्छे, दोनों का रुख़ उसके होंठों के कोनों की ओर था। नेख़्लूदोव के साथ वह बड़ी रुखाई से पेश आया और साफ़ साफ़ कह दिया कि चीफ़ के विशेष ऑर्डर के बिना वह बाहर के किसी भी आदमी को क़ैदियों से मिलने की इजाज़त नहीं दे सकता। जब नेख़्लूदोव ने कहा कि उसे तो राजधानी तक में क़ैदियों से मिलने की इजाज़त मिलती रही है तो बोला—

"जी ठीक होगा, लेकिन मैं तो इजाज़त नहीं दे सकता।" उसके लहजे से जान पड़ता था मानो कह रहा हो, "शहरों के अमीरज़ादे समझते हैं कि हम पर रोब गांठ कर हमें हतबुद्धि कर सकेंगे। पर हम पूर्वी साइबेरिया में रहते हुए भी क़ानून से अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं, बल्कि हम उन्हें क़ानून सिखा सकते हैं।"

न ही जेल इन्स्पेक्टर पर हुक्मनामे की उस नक़ल का ही कोई असर हुआ जो सीधी महाराजाधिराज के अपने दफ़्तर से आयी थी। उसने दृढ़ता से कह दिया कि वह नेख़्लूदोव को जेलख़ाने की चारदीवारी में नहीं घुसने देगा। वह नेख़्लूदोव के भोलेपन पर बड़ी घृणा से मुस्करा दिया, जो यह समझे बैठा था कि मास्लोवा को जेल से छुड़ाने के लिए यह नक़ल ही काफ़ी है। उसने साफ़ साफ़ कह दिया कि अपने से बड़े अधिकारी की ओर से सीधा हुक्म मिलने पर ही वह किसी क़ैदी को रिहा कर सकता

है। हां, इस बात का उसने आश्वासन दिया कि वह मास्लोवा से कह देगा कि उसके लिए सज़ा कम करने का हुक्म आ गया है, और ज्यों ही उसके चीफ़ से उसे आदेश मिला वह मास्लोवा को फ़ौरन् रिहा कर देगा, उसे बिल्कुल नहीं रोकेगा।

क्रिल्त्सोव की भी कोई ख़बर वह देने के लिए तैयार न था। वह यह भी बताने के लिए तैयार नहीं था कि इस नाम का कोई क़ैदी जेलख़ाने में है भी या नहीं। इस तरह नेख़्लूदोव के कुछ भी हाथ नहीं लगा और वह गाड़ी में बैठ कर वापस अपने होटल की ओर रवाना हो गया।

इन्स्पेक्टर की कठोरता का एक कारण था। जेलख़ाने में टाइफ़स की बीमारी फैल गयी थी क्योंकि जेलख़ाने में जितने क़ैदियों के लिए जगह थी उसमें दुगुने भरे पड़े थे। गाड़ीवान ने नेख़्लूदोव को बताया कि "हर रोज कितने ही लोग जेलख़ाने में मर जाते हैं। कोई भयानक रोग उन्हें लग गया है। एक एक दिन में बीस बीस लाशों को दफ़नाया जाता है।"

२४

जेलख़ाने में तो नेख़्लूदोव नाकामयाब रहा, मगर इसके बावजूद वह उसी स्फूर्ति और उत्साह के साथ गवर्नर के दफ़्तर की ओर यह पता लगाने के लिए चल पड़ा कि मास्लोवा के लिए असल हुक्मनामा पहुंचा है या नहीं। वह नहीं पहुंचा था। वहां से नेख़्लूदोव सीधा अपने होटल को गया और उसी वक़्त सेलेनिन तथा अपने वकील को इस बारे में ख़त लिख दिये। ख़त लिख चुका तो घड़ी देखी। गवर्नर के घर जाने का समय हो गया था।

रास्ते में फिर उसे यही ख़याल आने लगा कि जब कात्यूशा को पता चलेगा कि उसकी सज़ा कम कर दी गयी है तो उसकी क्या प्रतिक्रिया होगी। अब उसे कहां रहना पड़ेगा? यदि नेख़्लूदोव उसके साथ रहे तो उनके बीच कैसा सम्बन्ध होना चाहिए? और सिमनसन? वह उसके बारे में क्या सोचती है? उसे याद आया कि मास्लोवा बदल गयी है, और इस परिवर्तन के बारे में सोचते हुए उसे मास्लोवा के अतीत की याद आने लगी।

"फ़िलहाल मुझे इन बातों के बारे में नहीं सोचना चाहिए," उसने सोचा और मास्लोवा को मन में से निकालने की चेष्टा करने लगा। "जब वक़्त आया तो देख लेंगे," उसने मन ही मन कहा और यह सोचने लगा कि उसे गवर्नर से क्या कहना चाहिए।

जनरल के घर भोजन का प्रबन्ध उसी शानोशौकत से हुआ था जिसका नेख़्लूदोव अभ्यस्त रहा था। अमीरों और बड़े बड़े अफ़सरों के घरों में ऐसा ही आयोजन किया जाता है। नेख़्लूदोव को बहुत आनन्द आया, विशेषकर जब कि आराम-आसाइश तो दूर, वह मुद्दत से साधारण आराम से भी वंचित रहा था।

घर की मालकिन पीटर्सबर्ग की रहने वाली पुराने ढंग की grande dame* थी, ज़ार निकोलाई प्रथम के दरबार की कुलीन-सेविका थी, फ़्रांसीसी भाषा बड़े स्वाभाविक ढंग से और रूसी भाषा बड़े अस्वाभाविक ढंग से बोलती थी। वह सारा वक़्त सीधी तन कर रहती और जब हाथों को हिलाती तो कोहनियों को कमर के साथ जोड़े रखती। पति के प्रति उसका आदर-भाव संयत और उदासी का पुट लिये था। मेहमानों के प्रति वह अत्यन्त सद्भावनापूर्ण थी हालांकि प्रत्येक के प्रति, उसकी स्थिति के अनुसार, उसके व्यवहार में हल्का सा फ़रक़ होता। नेख़्लूदोव से वह इस तरह मिली जैसे घर का आदमी हो। इतने सुचारु ढंग से, बिना पता चले, उसने नेख़्लूदोव की तारीफ़ की कि नेख़्लूदोव को फिर एक बार अपने गुणों का आभास होने लगा और उसका हृदय सन्तोष से भर उठा। उस स्त्री ने नेख़्लूदोव को महसूस कराया जैसे उसे मालूम हो कि वह क्यों साइबेरिया में आया है, जैसे वह जानती हो कि जो क़दम उसने उठाया है वह अनूठा होते हुए भी सच्चे दिल से उठाया गया है, जैसे वह उसे कोई विलक्षण पुरुष समझती हो। इस चतुर चापलूसी तथा गवर्नर के घर की कमनीयता और ठाठ-बाट ने नेख़्लूदोव को अभिभूत कर दिया। इस घर के सुन्दर वातावरण, स्वादिष्ट व्यंजन, तथा सुशिक्षित लोगों के साथ आराम से बैठ कर वार्तालाप करने के आनन्द में वह बिल्कुल खो गया। उसे ऐसा जान पड़ने लगा जैसे वह वातावरण जिसमें वह पिछले महीने रहता रहा है एक स्वप्न था जिसमें से अब वह जाग कर वास्तविकता से साक्षात् कर रहा है।

---

*ऊंचे समाज की महिला (फ़्रेंच)

घर के लोगों के अतिरिक्त—जिनमें जनरल की बेटी, दामाद तथा एड-डि-कैम्प शामिल थे—वहां पर एक अंग्रेज़ सज्जन, एक व्यापारी जिसका सोने की खानों से सम्बन्ध था, तथा साइबेरिया के एक दूरस्थ नगर के गवर्नर मौजूद थे। नेख़्लूदोव को सभी लोग बड़े रुचिकर लगे।

अंग्रेज सज्जन की बातें बड़ी रोचक थीं। सेहत अच्छी, और गालों का रंग लाल, यह सज्जन फ़्रांसीसी भाषा तो बहुत बुरी बोलता था लेकिन अपनी भाषा वह ख़ूब जानता था, और एक प्रभावशाली वक्ता था। दुनिया का उसने बहुत कुछ देखा था और अमरीका, भारत, जापान, तथा साइबेरिया के बारे में बड़ी रोचक बातें सुनाता था।

नेख़्लूदोव को वह युवा व्यापारी भी बहुत अच्छा और रुचिकर लगा, जिसका सोने की खानों से सम्बन्ध था। वह एक किसान का बेटा था। लन्दन का सिला सायंकालीन सूट पहन कर आया था, और क़मीज़ में हीरों के स्टड लगा रखे थे। उसके पास पुस्तकों का बहुत अच्छा संग्रह था, जनकल्याण के कामों में खुले दिल से पैसे दिया करता था। उसके विचार यूरोपीय, उदारवादी थे। नेख़्लूदोव को इसमें एक प्रकार की नवीनता और श्रेष्ठता नज़र आयी। वह उन स्वस्थ और भोले-भाले किसानों में से था जो यूरोप की सभ्यता और संस्कृति की कलम लग जाने से निखर उठते हैं।

साइबेरिया के दूरस्थ नगर का गवर्नर वही आदमी था—सरकारी विभाग का भूतपूर्व डायरेक्टर—जिसकी पीटर्सबर्ग में उन दिनों बड़ी चर्चा थी जब नेख़्लूदोव वहां पर था। स्थूलकाय आदमी था, बारीक घुंघराले बाल, हल्की नीली आंखें, गोरे हाथ जिन पर बहुत सी अंगूठियां थीं, बड़ी नफ़ासत से तराशे हुए नाख़ून, और चेहरे पर मृदु मुस्कान। उसके जिस्म का निचला हिस्सा ख़ासा भारी-भरकम था। जनरल को अपना यह साथी बहुत पसन्द था, क्योंकि जहां चारों ओर सभी अधिकारी घूस लेते थे, वहां पर यही एक आदमी था जिसके हाथ बिल्कुल साफ़ थे। घर की मालकिन भी इसकी बड़ी क़द्र करती थी। मालकिन को संगीत का शौक़ था, और वह बहुत अच्छा पियानो बजाती थी। वे दोनों मिल कर चार हाथों से पियानो बजाते थे। इस समय नेख़्लूदोव का मन इतना ख़ुश था कि उसे यह आदमी भी बुरा नहीं लगा।

नेख़्लूदोव को एड-डि-कैम्प भी अच्छा लगा। खिला हुआ चेहरा, फुर्तीला बदन, ठोड़ी का रंग कुछ कुछ नीला और भूरा, यह आदमी स्वभाव का इतना अच्छा था कि आगे बढ़ बढ़ कर सबकी सेवा कर रहा था।

परन्तु सबसे अधिक उसे जनरल की बेटी और उसका पति पसन्द आये। यह जोड़ी बड़ी प्यारी थी। लड़की शकल की सीधी-सादी और मन की सरल थी, और अपने दो बच्चों में दुनिया को भूले हुए थी। शादी से पहले इस युवक से उसे गहरा प्रेम रहा था, और व्याह करने के लिए उसे अपने मां-बाप के साथ बड़ी जद्दोजहद करनी पड़ी थी। उसका पति उदार विचारों का युवक था, मास्को विश्वविद्यालय का स्नातक था और पठन-पाठन में रुचि रखता था। अब सरकारी नौकरी कर रहा था और सांख्यिकीय विभाग में काम करता था। उसका काम मुख्यतया ग़ैररूसी जातियों से सम्बन्धित था, उनमें उसकी गहरी रुचि थी और वह उन्हें नेस्तोनाबूद हो जाने से बचाना चाहता था।

सभी लोग नेख़्लूदोव के साथ बड़ी सद्भावना से पेश आये, उसकी एक एक बात को बड़े ध्यान से सुनते। इतना ही नहीं वे उसे एक नये और दिलचस्प व्यक्ति के नाते भी मिल कर ख़ुश हुए थे। जनरल भोजन पर अपनी वर्दी पहन कर आया जिस पर सफ़ेद क्रॉस चमक रहा था। वह नेख़्लूदोव से दोस्तों की तरह मिला और फिर सब मेहमानों को न्योता दिया कि आइये दो दो घूंट वोद्का के पी लें, और उन्हें साथ वाले छोटे से मेज़ की ओर ले गया जिस पर शराब वग़ैरा रखी थी। जनरल ने नेख़्लूदोव से पूछा कि मेरे यहां से जा कर दिन भर क्या करते रहे हो। नेख़्लूदोव ने बताया कि वह डाकख़ाने गया था जहां उसे यह ख़बर मिली कि जिस व्यक्ति के बारे में उसने जिक्र किया था, उसकी सजा बहुत कम कर दी गयी है। नेख़्लूदोव ने दोबारा जेलख़ाने में जा कर क़ैदियों से मिलने की इजाज़त मांगी।

जनरल की भौंहें चढ़ गयीं पर वह बोला कुछ नहीं। ज़ाहिर है उसे इस वक़्त काम-काज का पचड़ा ले बैठना अच्छा नहीं लगा।

"वोद्का पियेंगे आप?" जनरल ने फ़्रांसीसी भाषा में अंग्रेज़ से पूछा जो अभी अभी मेज़ के पास आया था। अंग्रेज ने वोद्का पी, फिर बताने लगा कि वह उस रोज़ गिरजा और फ़ैक्ट्री देखने गया था, लेकिन वह

वह जेलखाना देखना चाहता था जहां निर्वासित किये जाने वाले क़ैदियों को रखा जाता है।

"तब तो बात बन गयी," जनरल ने नेख़्लूदोव से कहा, "आप दोनों एक साथ जा सकेंगे। इन्हें एक पास बना दो," उसने एड-डि-कैम्प से घूम कर कहा।

"आप कब जाना चाहते हैं?" नेख़्लूदोव ने पूछा।

"अक्सर मुझे शाम को जेलख़ानों में जाना ज़्यादा अच्छा लगता है," अंग्रेज ने कहा, "सभी क़ैदी अन्दर होते हैं, और पहले से किसी क़िस्म की तैयारी नहीं की होती। क़ैदियों को आप उनके असली रूप में देखते हैं।"

"ख़ूब, हमारे मित्र उन्हें अपने पूरे जोबन पर देखना चाहते हैं। देखें, ज़रूर देखें। मैं कई बार लिख चुका हूं, लेकिन वे लोग कोई ध्यान नहीं देते। अब उन्हें विदेशी पत्रिकाओं से इसका पता चलेगा," जनरल ने कहा और चलता हुआ खाने की मेज़ के पास जा पहुंचा जहां मालकिन मेहमानों को अपने अपने स्थान पर बिठा रही थी।

नेख़्लूदोव के एक तरफ़ मालकिन और दूसरी तरफ़ अंग्रेज सज्जन थे। उसके सामने जनरल की बेटी और सरकारी विभाग का भूतपूर्व डायरेक्टर बैठे थे। मेज़ पर वार्तालाप उखड़ा-उखड़ा सा रहा, अब अंग्रेज़ सज्जन ने हिन्दुस्तान के बारे में कुछ कहा तो फिर जनरल ने टांकिन अभियान की चर्चा की और कहा कि वह उसके बिल्कुल हक़ में नहीं है, फिर साइबेरिया में व्यापक घूस और भ्रष्टाचार की बात चली। इन सब विषयों में नेख़्लूदोव की रुचि नहीं थी।

लेकिन भोजन के उपरान्त, कॉफ़ी पीते समय, घर की मालकिन, नेख़्लूदोव और अंग्रेज सज्जन के बीच बड़ी दिलचस्प बातचीत होने लगी। विषय था ग्लैड्स्टन। नेख़्लूदोव को लगा जैसे उसके मुंह में से बड़ी विद्वत्तापूर्ण बातें निकल रही हैं जिनसे उसके साथी काफ़ी प्रभावित हो रहे हैं। भोजन बहुत अच्छा था। और भोजन के बाद आराम-कुर्सी पर इन कुलीन, मिलनसार लोगों के बीच बैठ कर कॉफ़ी की चुस्कियां लेते हुए, नेख़्लूदोव को और भी अच्छा लग रहा था। इसके बाद अंग्रेज सज्जन ने मालकिन से पियानो बजाने की दरख़्वास्त की। मालकिन और भूतपूर्व डायरेक्टर बड़े अभ्यस्त ढंग से पियानो पर बीथोवन की पांचवीं सिम्फ़नी

बजाने लगे। उसे सुनते हुए नेख़्लूदोव पूर्ण आत्मसन्तोष का अनुभव करने लगा। मुद्दत से वह इस सन्तोष से अनभिज्ञ रहा था, मानो उसने अभी अभी जाना हो कि वह कितना अच्छा आदमी है।

ग्रैंड पियानो बहुत बढ़िया था और सिम्फ़नी बड़ी कुशलता से बजायी गयी थी। कम से कम नेख़्लूदोव को ऐसे ही लग रहा था। उसे यह सिम्फ़नी पसन्द थी और उससे वह परिचित भी था। जब "अन्दान्त" बजाया जाने लगा तो नेख़्लूदोव का हृदय अपने बहुसंख्यक गुणों का भास पा कर इतना उद्वेलित हो उठा कि उसके नाक में ख़ारिश होने लगी।

नेख़्लूदोव ने मालकिन का धन्यवाद किया, और कहा कि आज उसने उस आनन्द का अनुभव किया है जिससे वह बहुत दिनों से वंचित रहा था। जब वह विदा लेने लगा तो मालकिन की बेटी उसके पास आयी– उसके चेहरे पर दृढ़ता का भाव था–और शर्मा कर कहने लगी–

"आपने मेरे बच्चों के बारे में पूछा था। उन्हें देखना पसन्द करेंगे?"

"यह समझती है कि हर कोई इसके बच्चे देखने के लिए मचल रहा है," अपनी बेटी के इस प्यारे भोलेपन को देख कर मालकिन ने मुस्करा कर कहा। "प्रिंस को इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है।"

"नहीं नहीं, इसके बिल्कुल उलट, मुझे इसमें बेहद दिलचस्पी है," नेख़्लूदोव ने कहा। इस छलकती आनन्द विभोर ममता ने उसके दिल को अभिभूत कर दिया था। "ज़रूर मुझे उनके पास ले चलिये।"

"प्रिंस को अपने बच्चे दिखाने ले जा रही है!" जनरल ने हंसते हुए ख़ूब ऊंची आवाज़ में कहा। वह एक मेज़ पर बैठा, अपने दामाद, सोने की खानों के मालिक, और एड-डि-कैम्प के साथ ताश खेल रहा था। "जाइये, जाइये, अपना फ़र्ज़ निभा आइये।"

लड़की तेज़ तेज़ चलती हुई भीतर के कमरों की ओर जाने लगी। वह बड़ी उत्तेजित थी कि अभी उसके बच्चों पर निर्णय दिया जायेगा। पीछे पीछे नेख़्लूदोव जा रहा था। वे तीसरे कमरे में पहुंचे। कमरा विशाल और ऊंचा था, दीवारों पर सफ़ेद काग़ज़ लगा था, एक तरफ़ एक लैम्प जल रहा था जिस पर शेड लगा था। दो पालने थे, जिनके बीच एक आया कन्धों पर सफ़ेद रंग का केप डाले बैठी थी। आया के चेहरे पर मृदुता का भाव था और उसकी शकल-सूरत ख़ास साइबेरिया के लोगों की सी थी, गालों की हड्डियां उभरी हुई थीं। वह उठ खड़ी हुई और

झुक कर अभिवादन किया। मां एक पालने के पास जा कर उसके ऊपर झुकी। पालने में दो बरस की एक लड़की आराम से सो रही थी। उसका मुंह खुला था और लम्बे लम्बे घुंघराले बाल सिरहाने पर छितरे हुए थे।

"इसका नाम कात्या है," बच्ची का सफ़ेद और नीले रंग का बुना हुआ कम्बल ठीक करते हुए मां ने कहा, जिसके नीचे से बच्ची का एक गोरा-गोरा पैर बाहर निकला हुआ था। "सुन्दर है न? अभी केवल दो बरस की है।"

"बड़ी सुन्दर है!"

"और यह वास्युक है। इसके नाना ने इसका यह नाम रखा है। यह बिल्कुल और तरह का है। इसकी शकल साइबेरिया के लोगों जैसी है। क्यों, है नहीं?"

"बड़ा प्यारा बच्चा है।" नेख़्लूदोव ने कहा। गोल-मटोल बालक, पेट के बल मजे से सो रहा था।

"हां?" मां बोली। उसके चेहरे पर गर्वपूर्ण मुस्कान खेलने लगी।

नेख़्लूदोव को याद आया: हथकड़ियां-बेड़ियां, मुंडे हुए सिर, लड़ाई-झगड़ा, भ्रष्टाचार के दृश्य, मरणासन्न क्रिलत्सोव, कात्यूशा और उसका सारा अतीत। उसका मन ईर्ष्या से भर उठा। उसका मन इस सुख के लिए ललक उठा जो उसे स्वच्छ और सुसंस्कृत लग रहा था।

उसने बार बार बच्चों को सराहा जिससे किसी हद तक जरूर मां को सन्तोष हुआ होगा, क्योंकि वह सराहना का एक एक शब्द बड़ी आतुरता से सुन रही थी। इसके बाद दोनों बैठक में लौट आये। यहां, जैसा कि प्रबन्ध किया गया था, अंग्रेज़ जेलख़ाने में चलने के लिए नेख़्लूदोव का इन्तज़ार कर रहा था। घर के लोगों—बूढ़ों और छोटों—सभी से विदा ले कर अंग्रेज़ और नेख़्लूदोव दोनों घर के बाहर ओसारे में आ गये।

मौसम बदल गया था। बरफ़ पड़ रही थी, जिसके बड़े बड़े फाहों से सड़क, मकानों की छतें, बाग़ के पेड़, ओसारे की सीढ़ियां, तथा गाड़ी की छत और घोड़े की पीठ तक सभी ढक गये थे। अंग्रेज़ के पास अपनी गाड़ी थी। उसके गाड़ीवान को जेलख़ाने की ओर ले चलने को कह कर नेख़्लूदोव अपनी गाड़ी में अकेला बैठ गया और अंग्रेज़ की गाड़ी के पीछे पीछे चल दिया। उसका दिल बोझल हो रहा था, मानो कोई अप्रिय सा कर्तव्य निभाने जा रहा हो। नरम नरम वर्फ़ पर गाड़ी कठिनाई से चल रही थी।

२५

यद्यपि जेलख़ाने का ओसारा, छत, दीवारें—सभी कुछ वरफ़ की साफ़, सफ़ेद चादर से ढका हुआ था, फिर भी फाटक पर खड़े संतरी और ऊपर से लटकते लैम्प समेत यह मनहूस इमारत और उसकी रोशन खिड़कियों की क़तार सुवह से भी अधिक मनहूसी फैला रही थीं।

जेलख़ाने का रोवीला इन्स्पेक्टर फाटक पर आया। लैम्प की मद्धिम रोशनी में उसने उस प्रवेशपत्र को पढ़ा जो अंग्रेज़ और नेख़्लूदोव को दिया गया था। हैरान हो कर उसने अपने सुगठित कन्धे विचका दिये परन्तु आदेश का पालन करते हुए उन्हें अन्दर चलने को कहा। आंगन लांघ कर उसने दायें हाथ एक दरवाज़े में प्रवेश किया, फिर सीढ़ियां चढ़ कर उन्हें अपने दफ़्तर में ले गया। उसने उन्हें वैठने को कहा फिर पूछा कि उनकी क्या ख़िदमत कर सकता है। नेख़्लूदोव ने कहा कि वह फ़ौरन् मास्लोवा से मिलना चाहता है। इस पर इन्स्पेक्टर ने एक वार्डर को हुक्म दिया कि मास्लोवा को लिवा लाये और स्वयं अंग्रेज़ के सवालों का जवाव देने को तैयार हो गया। अंग्रेज़ तुरंत ही उससे सवाल पूछने लगा। नेख़्लूदोव दोनों के वीच दोभाषिये का काम कर रहा था।

"यह जेलख़ाना कितने क़ैदियों को रखने के लिए वनाया गया है?" अंग्रेज़ ने पूछा। "इस समय यहां पर कितने क़ैदी मौजूद हैं? आदमी कितने? औरतें कितनी हैं? वच्चे कितने हैं? कितने क़ैदियों को कड़ी मशक़्क़त की सज़ा मिली है? जलावतनी की सज़ा वाले कितने हैं? वीमार कितने हैं?"

नेख़्लूदोव यन्त्रवत् अंग्रेज़ के प्रश्नों और इन्स्पेक्टर के उत्तरों का अनुवाद करता जा रहा था। उनके अर्थों की ओर उसका ध्यान नहीं था। मास्लोवा के साथ होने वाली भेंट के वारे में सोच कर सहसा उसका मन विचलित हो उठा था। इसकी उसे तनिक भी आशा नहीं थी। अंग्रेज़ के किसी वाक्य का वह अनुवाद कर रहा था जव क़दमों की आवाज़ आयी, फिर दरवाज़ा खुला, और जैसा कि पहले भी कई वार हो चुका था, पहले एक वार्डर ने और उसके पीछे पीछे कात्यूशा ने प्रवेश किया। कात्यूशा ने सिर पर रूमाल बांध रखा था और क़ैदियों की जाकेट पहने हुए थी। उसे देखते ही नेख़्लूदोव का मन उदास हो उठा।

"मैं जीना चाहता हूं। मैं चाहता हूं मेरे परिवार हो, बच्चे हों, मैं इन्सानों की तरह जीना चाहता हूं।" सहसा यह विचार नेख़्लूदोव के मन में कौंध गया, जब आंखें नीची किये, तेज़ तेज़ डग भरती हुई कात्यूशा कमरे में दाख़िल हुई।

वह उठ खड़ा हुआ और उसे मिलने के लिए कुछ क़दम आगे बढ़ आया। उसे कात्यूशा का चेहरा कठोर और अप्रिय लगा, वैसा ही जैसा उस दिन लगा था जब कात्यूशा ने उसे बुरा-भला कहा था। वह झेंप गयी और उसका रंग पीला पड़ गया, घबराहट में उसकी अंगुलियां जाकेट के एक कोने को बार बार मरोड़ रही थीं। उसने एक बार नेख़्लूदोव की ओर देखा, फिर आंखें नीची कर लीं।

"तुम्हें मालूम है कि तुम्हारी सज़ा कम कर दी गयी है?"

"हां, मुझे वार्डर ने बताया था।"

"ज्यों ही हुक्मनामे की असली कापी पहुंचेगी तुम बाहर आ सकती हो और जहां भी रहना चाहो उसका फ़ैसला कर सकती हो। हम इस पर विचार कर लेंगे..."

सहसा कात्यूशा बीच में बोल उठी–

"मुझे क्या विचारना है? जहां व्लादीमिर सिमनसन जायेंगे, उनके पीछे पीछे मैं जाऊंगी।"

वह उत्तेजित थी, फिर भी उसने आंख उठा कर नेख़्लूदोव की ओर देखा और जल्दी जल्दी किन्तु बड़ी स्पष्टता से ये शब्द बोल गयी, मानो पहले से ही यह सोच कर आयी हो कि क्या कहेगी।

"क्या सच?"

"सुनो द्मीत्री इवानोविच, वह चाहता है कि मैं उसके साथ रहूं..." वह डर कर रुक गयी और फिर अपनी भूल सुधारती हुई बोली–"उसकी इच्छा है कि मैं उसके नज़दीक रहूं। मेरे लिए इससे अच्छी बात क्या हो सकती है? मुझे तो इसे ही अपना सुख मानना चाहिए। इसके अलावा मेरे लिए और है ही क्या?.."

"दो में से एक ही बात है या तो यह सिमनसन से प्रेम करने लगी है और मेरी क़ुर्बानी बिल्कुल चाहती ही नहीं थी, वह क़ुर्बानी जिसकी मैं कल्पना करता रहा हूं कि इसके लिए कर रहा हूं। या फिर यह है कि यह अब भी मुझसे प्रेम करती है, और मेरी ही ख़ातिर मुझे छोड़े जा रही

है। और अब सिमनसन के साथ शादी कर के अपना सर्वस्व एक ही दांव पर लगा देना चाहती है," नेख्लूदोव ने सोचा। उसे अपने आप पर शर्म आने लगी। उसे अपना चेहरा लाल पड़ता जान पड़ा।

"अगर तुम उससे प्रेम करती हो..." उसने कहा।

"प्रेम करना, ना करना, ये बातें मैंने भुला दी हैं। और फिर व्लादीमिर सिमनसन बहुत विलक्षण आदमी हैं।"

"हां, वह तो है ही," नेख्लूदोव कहने लगा, "बहुत अच्छा आदमी है, और मैं सोचता हूं..."

पर कात्यूशा ने फिर उसकी बात काट दी, मानो डर रही हो कि या तो नेख्लूदोव बहुत कुछ कह जायेगा या उसे स्वयं सारी बात कहने का मौक़ा नहीं मिलेगा।

"नहीं द्मीत्री इवानोविच, मुझे माफ़ कर दो जो मैं तुम्हारी इच्छा का पालन नहीं कर रही हूं," उसने कहा और अपनी ऐंची आंखों से, जिनकी थाह पाना असम्भव था, नेख्लूदोव की ओर देखा। "ज़ाहिर है ऐसा ही होना चाहिए। तुम्हें भी जीना चाहिए।"

कात्यूशा ने वही बात कही थी जो कुछ ही क्षण पहले स्वयं उसके मन में उठी थी। परन्तु अब यह विचार उसके मन में नहीं उठ रहा था। अब तो बिल्कुल भिन्न विचार उसके मन में उठ रहे थे। वह न केवल लज्जित ही अनुभव कर रहा था बल्कि उसे इस बात का खेद था कि कात्यूशा के चले जाने से वह जीवन में कितना कुछ खो बैठेगा।

"मुझे इसकी आशा नहीं थी," उसने कहा।

"तुम क्यों यहां रहो और यातना भोगो। तुम पहले ही काफ़ी यातना भोग चुके हो," कात्यूशा ने कहा और एक अनूठी सी मुस्कान उसके होंटों पर कांप गयी।

"मैंने कोई यातना नहीं भोगी है। इसमें मेरा हित था और मैं अब भी चाहता हूं कि जैसा बन पड़े मैं तुम्हारी सेवा करता जाऊं।"

"हम..." "हम" शब्द कहते ही कात्यूशा ने नेख्लूदोव की ओर देखा, "हमें कुछ नहीं चाहिए। तुम पहले ही कितना कुछ मेरे लिए कर चुके हो। अगर तुम न होते..." वह कुछ कहना चाहती थी परन्तु उसकी आवाज लड़खड़ा गयी।

"मेरा तो शुक्रिया अदा तुम्हें नहीं करना चाहिए," नेख्लूदोव ने कहा।

"लेखा करने का क्या लाभ? भगवान् हमारा लेखा-जोखा करेंगे," उसने कहा और उसकी काली काली आंखों में आंसू चमकने लगे।

"तुम कितनी अच्छी स्त्री हो!" उसने कहा।

"मैं? मैं कहां अच्छी हूं?" उसने झरते आंसुओं के बीच कहा। एक दयनीय सी मुस्कान उसके होंठों पर आयी और उसका चेहरा खिल उठा।

"Are you ready?"* अंग्रेज़ ने पूछा।

"Directly,"** नेख्लूदोव ने जवाब दिया और कात्यूशा से क्रिलत्सोव के बारे में पूछा।

उसकी उत्तेजना विलीन हो गई और स्थिर आवाज़ में जो कुछ भी उसे मालूम था उसने बता दिया। क्रिलत्सोव बहुत ही कमज़ोर पड़ गया है और उसे अस्पताल में भेज दिया गया है। मारीया पाव्लोव्ना को बड़ी चिन्ता हो रही है और उसने दरख़्वास्त की है कि उसे एक नर्स के नाते अस्पताल में रहने दिया जाय, लेकिन उसे इजाज़त नहीं दी गयी।

"तो मैं चलूं?" कात्यूशा ने यह देख कर कि अंग्रेज़ खड़ा इन्तज़ार कर रहा है, नेख्लूदोव से पूछा।

"मैं तुमसे अभी विदा नहीं हो जाऊंगा। मैं तुमसे फिर मिलूंगा," नेख्लूदोव ने कहा।

"मुझे माफ़ कर देना," कात्यूशा ने कहा, उसकी आवाज़ इतनी धीमी थी कि नेख्लूदोव बड़ी मुश्किल से सुन पाया। उनकी आंखें मिलीं। उसकी ऐंची आंखों में अनोखा भाव था, और ये शब्द कहते हुए उसके होंठों पर दयनीय सी मुस्कान आ गयी थी। नेख्लूदोव समझ गया कि उसके निर्णय के पीछे जिन दो कारणों का मैं सोच रहा था, उनमें से दूसरा ही सच है। यह मुझसे प्रेम करती है और समझती है कि अगर मेरे साथ चली आयी तो उससे मेरा जीवन ख़राब होगा। सिमनसन के साथ जाने से, यह समझती है कि मुझे आज़ाद कर देगी। यह काम करते हुए वह ख़ुश भी है, परन्तु फिर भी मुझसे विदा होते समय वह व्याकुल हो रही है।

---

*आप तैयार हैं? (अंग्रेज़ी)

**अभी, (अंग्रेज़ी)

कात्यूशा ने उसका हाथ दबाया, फिर झट से घूम कर कमरे से बाहर हो गयी।

नेख़्लूदोव चलने के लिए तैयार था, मगर यह देख कर कि अंग्रेज़ बैठा अपनी टिप्पणियां लिख रहा है, उसने उसे बुलाना नहीं चाहा, और दीवार के साथ रखे एक लकड़ी के बेंच पर बैठ गया। सहसा उसे महसूस होने लगा जैसे वह थक कर चूर हो गया है। उसकी थकान का कारण यह नहीं था कि वह रात भर सोया नहीं था, न ही सफ़र के कारण, न ही इस उत्तेजना के कारण। वह जीने से थक गया था। बेंच की पीठ के साथ उसने टेक लगायी, आंखें बन्द कर लीं, और क्षण भर में ही गहरी नींद सो गया।

"अगर आप चाहें तो अब चल कर जेलख़ाने की कोठरियां देख सकते हैं," इन्स्पेक्टर ने कहा।

नेख़्लूदोव ने आंखें खोलीं। वह अपने को उस जगह बैठा देख कर हैरान रह गया। अंग्रेज़ अपनी टिप्पणियां लिख चुका था और कोठरियों को देखने के लिए जाना चाहता था। नेख़्लूदोव उसके पीछे पीछे चल पड़ा। वह थका हुआ था और इस काम में उसकी कोई रुचि नहीं थी।

२६

इन्स्पेक्टर तथा वार्डरों के साथ नेख़्लूदोव और अंग्रेज जेलख़ाने में दाख़िल हुए। ड्योढ़ी लांघ कर वे बरामदे में पहुंचे। बरामदे में से बदबू की लपटें उठ रही थीं और दो क़ैदी फ़र्श पर पेशाब कर रहे थे, नेख़्लूदोव और उसके साथी देख कर हैरान रह गये। बरामदे में से गुज़र कर वे पहले वार्ड में गये जिसमें उन क़ैदियों को रखा गया था जिन्हें कड़ी मशक़्क़त की सज़ा दी गयी थी। वार्ड के बीचोंबीच सोने के लिए तख़्ते लगे थे। उन पर अभी से क़ैदी लेटे हुए थे। लगभग ७० क़ैदी रहे होंगे। सिर के साथ सिर जोड़ कर तथा साथ साथ वे लेटे हुए थे। इनके प्रवेश करने पर सभी उछल कर तख़्तों के सामने खड़े हो गये। बेड़ियां खनकीं और आधे मुंडे सिर चमक उठे। केवल दो क़ैदी नहीं उठे। एक युवक था जिसे तेज़ बुख़ार हो रहा था, दूसरा कोई बूढ़ा क़ैदी था जो लेटे लेटे कराहे जा रहा था।

अंग्रेज के पूछने पर कि क्या युवक बहुत दिन से बीमार है, इन्स्पेक्टर ने जवाब दिया कि नहीं, उसी रोज़ सुबह से उसे बुख़ार आने लगा है। हां, बूढ़े को बहुत दिनों से पेट में दर्द की शिकायत है, लेकिन अस्पताल में बिल्कुल जगह न होने के कारण यहीं पड़ा है। अंग्रेज़ ने सिर हिला कर अपनी असम्मति प्रकट की और कहा कि वह इन लोगों से दो शब्द कहना चाहता है। नेख़्लूदोव से उसने अनुवाद करने को कहा। मालूम हुआ कि अंग्रेज केवल साइबेरिया के जेलों और जलावतनों को रखे जाने के स्थानों का अध्ययन करने के लिए ही नहीं निकला है। वह साथ साथ एक और काम भी कर रहा है। वह जहां जाता है लोगों को यह उपदेश देता है कि ईसा पर ईमान लाओ, अपने पापों का प्रायश्चित करो ताकि तुम्हें मुक्ति प्राप्त हो सके।

"इन्हें कहिये," वह बोला, "ईसा के हृदय में इनके लिए दया तथा प्रेम था। इन्हीं के लिए उन्होंने अपनी जान दी थी। यदि इस सत्य में ये विश्वास करेंगे तो भगवान् इनकी रक्षा करेंगे।" जितनी देर वह बोलता रहा, क़ैदी अपने बाज़ू सीधे लटकाये, खड़े सुनते रहे। "इन्हें बताइये कि इस पुस्तक में सब कुछ लिखा है," वह कहता गया, "क्या इनमें से कोई पढ़ना जानता है?"

बीस से अधिक क़ैदी पढ़ना जानते थे।

अंग्रेज़ ने बैग में से सजिल्द इंजील की कुछ प्रतियां निकालीं। बहुत से हाथ आगे बढ़ आये। दृढ़-कठोर हाथ, जिनके नाख़ुन काले और कठोर पड़ गये थे, क़मीज़ों की खुरदरी आस्तीनों के नीचे से निकले, और क़ैदी एक दूसरे को धक्के देते हुए आगे बढ़ आये। इस वार्ड में अंग्रेज़ ने इंजील की दो प्रतियां भेंट कर दीं।

दूसरे वार्ड में भी यही कुछ हुआ। यहां पर भी बदबू की लपटें उठ रही थीं, उसी तरह खिड़कियों के बीच देव-प्रतिमा लटक रही थी, दरवाजे के बायीं ओर वैसा ही टब रखा था। सभी क़ैदी साथ साथ जुड़ कर लेटे हुए थे। उसी तरह वे उछल कर सीधे खड़े हो गये और बाज़ू सीधे कर लिये। तीन क़ैदी नहीं खड़े हुए। उनमें से दो उठ कर बैठ गये लेकिन तीसरा ज्यों का त्यों लेटा रहा, बल्कि नवागन्तुकों की ओर आंख उठा कर देखा भी नहीं। ये तीनों भी बीमार थे। यहां पर भी अंग्रेज़ ने वैसी ही तक़रीर की और इंजील की दो प्रतियां दे दीं।

तीसरे कमरे में से चीख़ने-चिल्लाने की आवाज़ें आ रही थीं। इन्स्पेक्टर ने दरवाज़ा खटखटाया और चिल्ला कर कहा—"शोर बन्द करो!" जब दरवाज़ा खुला तो क़ैदी यहां भी उसी तरह तख़्तों के सामने तन कर खड़े थे। कुछेक बीमार होने के कारण नहीं उठे, और दो एक-दूसरे के साथ गुत्थमगुत्था हो रहे थे। दोनों के चेहरे क्रोध से विकृत हो रहे थे, दोनों ने एक-दूसरे को पकड़ रखा था, एक ने बालों से, दूसरे ने दाढ़ी से। जब इन्स्पेक्टर लपक कर उनके पास गया तभी उन्होंने एक दूसरे को छोड़ा। एक के नाक में से घूंसा पड़ने के कारण टप टप ख़ून बह रहा था। साथ ही कफ़ और लार भी निकल रही थी। इन्हें वह अपने लबादे की आस्तीन के साथ पोंछ रहा था। दूसरा अपनी दाढ़ी में से उखड़े बाल निकाल रहा था।

"मुखिया!" इन्स्पेक्टर ने कड़क कर कहा।

एक हृष्ट-पुष्ट, सुन्दर जवान आगे बढ़ आया।

"मैं इन्हें नहीं छुड़ा सका, हुज़ूर," उसने कहा। आमोदवश उसकी आंखें चमक रही थीं।

"मैं इन्हें सीधा कर दूंगा!" इन्स्पेक्टर ने तेवर चढ़ाते हुए कहा।

"What did they fight for?" अंग्रेज़ ने पूछा।

नेख़्लूदोव ने मुखिया से सवाल किया।

"एक ने दूसरे के चिथड़े चुरा लिये थे," मुखिया ने जवाब दिया। वह अब भी मुस्करा रहा था। "पहले इसने घूंसा मारा, और जवाब में दूसरे ने लगाया।"

नेख़्लूदोव ने अंग्रेज़ को बता दिया।

"मैं इन लोगों से कुछ कहना चाहता हूं," अंग्रेज़ ने इन्स्पेक्टर से कहा।

नेख़्लूदोव ने अनुवाद किया।

"कहिये," इन्स्पेक्टर ने कहा। इस पर अंग्रेज़ ने अपनी इंजील निकाली जिस पर चमड़े की जिल्द चढ़ी थी।

"कृपया अनुवाद कीजिये," उसने नेख़्लूदोव से कहा। "तुम्हारे बीच झगड़ा हुआ तो तुम मार-पिटाई पर उतर आये। परन्तु ईसा ने—जिन्होंने

---

*ये क्यों लड़ रहे थे? (अंग्रेज़ी)

हमारी ख़ातिर अपने प्राण निछावर किये थे—हमें झगड़े निबटाने का एक दूसरा तरीक़ा बताया है। इनसे पूछिये कि ईसा के उपदेशों के अनुसार हमें उन लोगों के साथ कैसा बरताव करना चाहिए जो हमारे साथ बुरी तरह पेश आते हैं।"

नेख़्लूदोव ने अंग्रेज़ के वाक्यों तथा उसके प्रश्न का अनुवाद कर दिया।

"साहब से शिकायत करो, वह निबटारा करा देगा। क्या यही उपदेश है?" एक क़ैदी ने कनखियों से इन्स्पेक्टर के रोबीले डील-डौल की ओर देखते हुए कहा।

"मुंह पर एक घूंसा जड़ दो, दोबारा कोई बुरी तरह पेश नहीं आयेगा," दूसरा बोला।

कमरे में हंसी की एक हल्की सी लहर दौड़ गयी। लोगों को यह जवाब पसन्द आया था।

जो कुछ इन आदमियों ने कहा, नेख़्लूदोव ने अनुवाद कर सुनाया।

"इनसे कहिये कि ईसा के आदेशानुसार इनका व्यवहार बिल्कुल इसके उलट होना चाहिए। अगर कोई तुम्हारे एक गाल पर तमाचा मारे तो तुम्हें चाहिए कि तुम अपना दूसरा गाल उसके सामने कर दो," अंग्रेज ने अपना गाल सामने कर के दिखाते हुए कहा।

नेख़्लूदोव ने अनुवाद किया।

"यह ख़ुद आज़मा कर देखे," क़ैदियों में से किसी की आवाज़ आयी।

"अगर वह दूसरे गाल पर भी तमाचा जड़ दे तो फिर सामने क्या करोगे?" एक बीमार क़ैदी ने पूछा।

"फिर वह सिर से पांव तक तुम्हारा भुरता बना देगा।"

"बना के देखे तो!" किसी ने ठहाका मार कर कहा। कमरे में सभी ज़ोर ज़ोर से हंसने लगे। जिस आदमी के नाक में से ख़ून बह रहा था वह भी, ख़ून और कफ़ की परवाह न कर के हंसने लगा। इस हंसी में बीमार क़ैदी भी शामिल हो गये।

परन्तु अंग्रेज़ ज़रा भी विचलित नहीं हुआ। उसने नेख़्लूदोव से यह कहने को कहा कि जिन लोगों के हृदय में सच्चा विश्वास है उनके लिए जो कुछ असंभव जान पड़ता है वही संभव और आसान हो जाता है।

"इनसे पूछिये कि क्या ये शराब पीते हैं?"

"ज़रूर!" किसी ने कहा और इसके बाद फिर ठहाकों और नाक सुड़कने की आवाज़ें आने लगीं।

उस कमरे में चार क़ैदी बीमार थे। अंग्रेज़ ने पूछा कि क्या कारण है, सभी बीमार क़ैदियों को एक ही वार्ड में क्यों नहीं रखा जाता। जवाब में इन्स्पेक्टर ने कहा कि वे ख़ुद अलग रहना नहीं चाहते, उन्हें छूत की बीमारी नहीं है, सहायक डॉक्टर उनकी पूरी पूरी देखभाल करता है और उनकी हर ज़रूरत पूरी करता है।

"उसकी सूरत देखे दो हफ़्ते गुज़र चुके हैं," किसी ने बड़बड़ा कर कहा।

इन्स्पेक्टर ने कोई जवाब नहीं दिया और अगले वार्ड की ओर उन्हें ले चला। यहां पर भी उसी तरह दरवाज़ा खोला गया, सभी उठ कर चुपचाप खड़े हो गये। यहां पर भी अंग्रेज़ ने इंजील की प्रतियां बांटीं। पांचवें और छठे और बाकी सभी वार्डों में भी यही कुछ हुआ।

कड़ी मशक़्क़त वाले क़ैदियों के वार्ड देख चुकने के बाद, वे जलावतनों के वार्ड देखने गये। वहां से वे उन क़ैदियों के वार्ड में गये जिन्हें उनकी पंचायतों ने निर्वासित किया था, फिर उन लोगों के वार्ड में जो अपनी ख़ुशी से क़ैदियों के साथ साथ जा रहे थे। हर वार्ड में उन्हें वही कुछ नज़र आया: ठिठुरते, भूखे, निठल्ले क़ैदी, रोग-ग्रस्त, अपमानित और बेड़ियों में जकड़े हुए। उन्हें यों दिखाया जा रहा था मानो वन्य पशु हों।

इंजील की जितनी प्रतियां अंग्रेज़ को देनी थीं, दे चुकने के बाद, उसने और देना बन्द कर दिया और भाषण भी देना बंद कर दिया। उस जगह के दृश्य इतने निराशाजनक थे, और वातावरण में तो विशेषतया इतनी घुटन थी कि उसका भी उत्साह शिथिल पड़ गया। वह भी अब एक कोठरी से दूसरी कोठरी में जाते हुए, इन्स्पेक्टर की रिपोर्ट के जवाब में केवल "all right,"* कहे जा रहा था। नेख़्लूदोव उनके पीछे पीछे चला जा रहा था। उसे लगा जैसे वह स्वप्न देख रहा है। वह न और देखने से इन्कार कर पा रहा था, न ही उसमें इतनी शक्ति थी कि वहां से बाहर निकल जाय। उसका भी शरीर शिथिल और मन निराश हो रहा था।

---

*ठीक है, (अंग्रेज़ी)

जलावतनों के एक वार्ड में, अचानक नेख़्लूदोव को वह विचित्र बूढ़ा नज़र आया जिसने उसी दिन प्रातः उसके साथ बेड़े में नदी पार की थी। फटे-हाल और मुंह पर झुर्रियां पड़ी हुई, वह तख़्तों के बीच फ़र्श पर बैठा था। नंगे पांव, बदन पर एक मैली, सुहागे के रंग की क़मीज़ और उसी रंग की पतलून पहने था। क़मीज़ एक कन्धे पर से फटी थी। नवागन्तुकों की ओर उसने बड़े कठोर तथा प्रश्नसूचक नेत्रों से देखा। मैली-कुचैली और जगह जगह से फटी क़मीज़ में से उसका कृश शरीर झांक रहा था परन्तु उसका चेहरा पहले से भी अधिक सजीव और गंभीर नज़र आ रहा था। अन्य वार्डों की तरह यहां पर भी अफ़सरों के अन्दर आने पर सभी क़ैदी उछल कर सीधे खड़े हो गये। लेकिन बूढ़ा बैठा रहा। उसकी आंखें चमक रही थीं और भौंहें क्रोध से सिकुड़ी हुई थीं।

"खड़े हो जाओ!" इन्स्पेक्टर ने उसे पुकार कर कहा।

बूढ़ा नहीं उठा, केवल घृणा से मुस्कराने लगा।

"तेरे चाकर तेरे सामने खड़े हैं, मैं तेरा चाकर नहीं हूं। वह निशान तेरे..." इन्स्पेक्टर के माथे की ओर इशारा करते हुए बूढ़े ने कहा।

"क्या-आ-आ?" इन्स्पेक्टर ने धमकाते हुए कहा और उसकी ओर क़दम बढ़ाया।

"मैं इस आदमी को जानता हूं," नेख़्लूदोव बोला, "इसने क्या क़सूर किया है?"

"इसके पास पासपोर्ट नहीं है, पुलिस वालों ने इसे पकड़ कर यहां भेज दिया है। हम कई बार उन्हें कह चुके हैं कि ऐसे लोगों को हमारे पास मत भेजा करो लेकिन वे फिर भी भेज देते हैं," इन्स्पेक्टर ने गुस्से से, बूढ़े की ओर कनखियों से देखते हुए कहा।

"मालूम पड़ता है तू भी ईसा के दुश्मनों के साथ मिल गया है?" बूढ़े ने नेख़्लूदोव से कहा।

"नहीं, मैं तो जेलखाना देखने आया हूं।"

"क्या यह देखने आया है कि ईसा का दुश्मन इन्सानों पर किस तरह जुल्म करता है? हज़ारों इन्सानों को इसने पिंजड़े में बन्द कर रखा है। भगवान् ने कहा है कि इन्सान अपने पसीने की कमाई से अपना पेट

भरे। पर ईसा के दुश्मन ने उन्हें बन्द कर रखा है ताकि वे निठल्ले बैठे रहें। उनके सामने इस तरह रोटी फेंकता है जिस तरह जानवरों के सामने फेंकी जाती है, ताकि ये भी जानवर बन जायें।"

"यह आदमी क्या कह रहा है?" अंग्रेज़ ने पूछा।

नेख़्लूदोव ने बताया कि बूढ़ा इन्स्पेक्टर को दोष दे रहा है कि उसने इन्सानों को जेलख़ाने में बन्द कर रखा है।

"उससे पूछिये यह क्या कहता है कि अगर कोई आदमी क़ानून तोड़े तो उसके साथ कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए?" अंग्रेज़ ने कहा।

नेख़्लूदोव ने प्रश्न का अनुवाद किया।

बूढ़ा विचित्र ढंग से हंसने लगा। उसके दांतों की बनावट बड़ी अच्छी थी।

"क़ानून?" बूढ़े ने घृणा से कहा। "पहले ईसा के दुश्मन ने सब को लूटा, सारी पृथ्वी पर क़ब्ज़ा कर लिया, इन्सानों के सब अधिकार छीन लिये—सभी अपने पास रख लिये, अपने सभी विरोधियों को मौत के घाट उतार दिया, फिर क़ानून बनाने बैठ गया कि चोरी करना और हत्या करना जुर्म है। उसे चाहिए था कि ये क़ानून पहले बनाता।"

नेख़्लूदोव ने अनुवाद किया। अंग्रेज़ मुस्कराने लगा।

"अच्छा तो इससे पूछिये कि अब क्या करना चाहिए—डाकुओं और हत्यारों के साथ कैसा सलूक करना चाहिए?"

नेख़्लूदोव ने फिर उसके प्रश्न का अनुवाद किया।

"इससे कहो कि ईसा विरोधी की जो मोहर उस पर लगी है उसे मिटा दे," बूढ़े ने बड़ी दृढ़ता से भौंहें चढ़ा कर कहा। "तब उसे न डाकू नज़र आयेंगे और न ही हत्यारे। इसे यह कह दो।"

"He is crazy,"* नेख़्लूदोव के अनुवाद करने पर अंग्रेज़ ने कहा और कन्धे बिचकाते हुए कमरे में से बाहर चला गया।

"तू अपना काम देख, औरों को मत तंग कर। हर कोई अपनी गठरी ख़ुद उठाये। भगवान् जानते हैं किसे सज़ा देनी है और किसे क्षमा करना है। हम इन्सान कुछ नहीं जानते," बूढ़े ने कहा। "तू अपना अफ़सर ख़ुद बन, फिर अफ़सरों की ज़रूरत नहीं रहेगी। जा, जा," गुस्से से भौंहें

---

*यह पागल है, (अंग्रेज़ी)

सिकोड़े हुए, और चमकती आंखों से नेख़्लूदोव की ओर देखते हुए जो अभी तक वार्ड में ही खड़ा था, बूढ़ा कहता गया। "क्या तुझे और कुछ देखना बाक़ी है? देख नहीं रहा है किस तरह ईसा के दुश्मन के चाकर इन्सानों के ख़ून पर जुएं पाल रहे हैं? जा, चला जा।"

नेख़्लूदोव वार्ड में से निकल गया और अंग्रेज़ के साथ जा मिला जो इन्स्पेक्टर के साथ एक खुले दरवाज़े के पास खड़ा था। अंग्रेज़ इन्स्पेक्टर से पूछ रहा था कि यह कौन सा कमरा है।

"मुर्दाख़ाना है।"

"ओह!" अंग्रेज़ ने कहा और कहा कि वह कमरा देखना चाहता है।

साधारण सा कमरा था, बहुत बड़ा भी नहीं था। दीवार से एक छोटा सा लैम्प लटक रहा था, उसकी मद्धिम सी रोशनी में एक कोने में रखे कुछ बोरे और लकड़ी के कुन्दे नज़र आ रहे थे। दायीं ओर सोने वाले तख़्तों पर चार मुर्दे पड़े थे। पहली लाश किसी ऊंचे-लम्बे आदमी की थी, मुंह पर छोटी सी दाढ़ी और आधा सिर मुंडा हुआ था। गाढ़े की मोटी क़मीज़ और पतलून पहने था। लाश अकड़ चुकी थी। नीले नीले हाथ जिन्हें प्रत्यक्षतः छाती पर जोड़ा गया था, अब एक दूसरे से अलग हो गये थे। टांगें भी बिखर गयी थीं और नंगे पांव बाहर निकले हुए थे। उससे आगे एक बुढ़िया की लाश रखी थी, पैर नंगे और सिर भी नंगा था। सफ़ेद जाकेट और पेटीकोट पहने थी। बालों की पतली सी चोटी कपड़े के नीचे से झांक रही थी। मुंह पिचका हुआ, और पीला था और नाक तीखी। उससे परे एक और आदमी की लाश रखी थी जिसने बैंगनी से रंग के कपड़े पहन रखे थे। इस रंग को देख कर नेख़्लूदोव को किसी चीज़ की याद आयी।

उसने और भी नज़दीक जा कर लाश को देखा।

छोटी सी नोकदार दाढ़ी ऊपर को उठी थी। मज़बूत, सुगढ़ नाक, ऊंचा, सफ़ेद माथा, पतले घुंघराले बाल—नेख़्लूदोव ये परिचित नाक-नक़्श देख कर ही पहचान गया, लेकिन उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। कल इसी चेहरे पर कितना क्रोध, कितनी उत्तेजना और यन्त्रणा नज़र आ रही थी, परन्तु इस समय शान्त, निश्चल और बेहद सुन्दर लग रहा था।

वह क्रिलत्सोव ही था, या यों कहें उसके पार्थिव जीवन के अवशेष पड़े थे।

"उसने क्यों इतने दुख झेले? क्यों जिया? क्या उसका भेद अब इसने पा लिया है?" नेख़्लूदोव सोचने लगा लेकिन उसका कोई भी उत्तर उसे नहीं मिला। मौत के अलावा और कुछ नज़र नहीं आ रहा था। नेख़्लूदोव का जी घबराने लगा, जैसे वेहोश होने लगा हो।

इन्स्पेक्टर से उसने कहा कि मुझे वाहर आंगन में ले चलो। और बिना अंग्रेज से विदा लिये वह गाड़ी में वैठ कर होटल के लिए रवाना हो गया। वह निराले में वैठ कर उन सब वातों के बारे में सोचना चाहता था जो आज शाम को उसने देखी थीं। यह उसके लिए अत्यावश्यक हो गया था।

२८

नेख़्लूदोव सोया नहीं, वड़ी देर तक कमरे में चक्कर लगाता रहा। कात्यूशा के साथ अब उसे कोई काम न रहा था। कात्यूशा को अब उसकी ज़रूरत नहीं थी और यह सोच कर वह उदास और लज्जित अनुभव कर रहा था। लेकिन उसका मन इस कारण विचलित नहीं था। उसका दूसरा काम अभी ख़त्म नहीं हुआ था। न केवल ख़त्म ही नहीं हुआ था, वल्कि उसे पहले से कहीं अधिक वेचैन किये हुए था, और नेख़्लूदोव से यह मांग कर रहा था कि वह सक्रिय रूप से कोई काम करे।

पिछले कुछ दिनों से वह जिस घोर दुष्टता को देख रहा था और जिसको उसने जाना था—और विशेषकर आज जिससे उसका उस भयानक जेल में साक्षात्कार हुआ था, जिसके हाथों उस अतिप्रिय क्रिलत्सोव की हत्या हुई थी, उसी दुष्टता का चारों ओर राज था, उसी की विजय हुई थी। नेख़्लूदोव को कोई संभावना नज़र नहीं आ रही थी कि कभी उस पर विजय पायी जा सकती है, या कैसे पायी जा सकती है।

उसकी आंखों के सामने उन सैकड़ों, हज़ारों अपमानित इन्सानों का चित्र घूम गया जो दुर्गन्ध भरे जेलख़ानों में वन्द हैं। और जो लोग उन्हें वन्द करते हैं—जनरल, सरकारी वकील तथा इन्स्पेक्टर—उन्हें इन इन्सानों की तनिक भी परवाह नहीं है। उसकी आंखों के सामने उस विचित्र बूढ़े आदमी का चेहरा घूम गया जो आज़ाद था और अधिकारियों का

पश्चात्ताप कर रहा था, इसलिए उसे पागल ठहराया जाता था। उसकी आंखों के सामने, उन लाशों के बीच, क्रिलत्सोव का सुन्दर चेहरा, जो मानो मोम का बना हो, घूम गया, जो मरने से पहले क्रुद्ध हो रहा था। एक बार फिर वही सवाल नेख्लूदोव के मन में उठने लगा: क्या मैं पागल हूं या ये लोग पागल हैं जो ये दुष्कर्म करते हुए भी समझे बैठे हैं कि उनके दिमाग ठीक काम कर रहे हैं। यह प्रश्न पहले से भी अधिक आग्रह के साथ उसके मन में उठा और उससे इसका उत्तर मांगने लगा।

वह कमरे में इतनी देर तक चलता रहा था और इतना अधिक सोचता रहा था कि वह थक गया और लैम्प के निकट सोफ़े पर बैठ गया। यों ही उसने इंजील को मेज़ पर से उठाया और उसके पन्ने उलटने लगा। यह इंजील अंग्रेज़ ने उसे भेंट की थी, और बाहर से लौट कर उसने अपने जेब ख़ाली करते समय इसे भी निकाल कर मेज़ पर रख दिया था।

"लोग कहते हैं कि हर प्रश्न का उत्तर इस पुस्तक में मिल जाता है," वह सोचने लगा, और जो पन्ना सामने आया उसी को पढ़ने लगा। पन्ना मत्ती अध्याय १८ पर खुला था।

१. उसी घड़ी चेले यीशु के पास आ कर पूछने लगे, कि स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है?

२. इस पर उसने एक बालक को पास बुला कर उनके बीच में खड़ा किया।

३. और कहा, मैं तुमसे सच कहता हूं यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे।

४. जो कोई अपने आप को इस बालक के समान छोटा करेगा वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा।

"हां हां, यह ठीक बात है," नेख्लूदोव ने सोचा। उसे याद आया कि उसके जीवन का सबसे सुखमय तथा शान्तिमय काल वही था जब उसके हृदय में विनम्रता थी।

५. और जो कोई मेरे नाम से एक ऐसे बालक को ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है।

६ पर जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास रखते हैं एक को ठोकर खिलाए, उसके लिए भला होता, कि बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता, और वह गहरे समुद्र में डुबाया जाता।

"यह किस लिए – 'जो कोई ग्रहण करता'? कहां ग्रहण करता? और 'मेरे नाम से' का क्या मतलब है?" नेख़्लूदोव ने मन ही मन सवाल किया। उसे महसूस हो रहा था जैसे ये शब्द उसके पल्ले नहीं पड़ रहे हैं। "और उसके गले में बड़ी चक्की का पाट क्यों लटकाया जाय? और गहरे समुद्र में क्यों? नहीं, यह ठीक नहीं, यह बात सटीक नहीं है, स्पष्ट नहीं है।" उसे याद आया कि जीवन में कितनी ही बार उसने इंजील को पढ़ना शुरू किया था लेकिन इन वाक्यों की अस्पष्टता के कारण वह उसे बन्द कर देता रहा था। उसने सातवां, आठवां, नौवां और दसवां पद पढ़े। इनमें प्रलोभनों का ज़िक्र था, तथा यह कि वे अवश्य संसार में आयेंगे तथा नर्क की आग में दंड का ज़िक्र था, जिसमें लोगों को झोंका जायेगा और बाल-फ़रिश्तों की चर्चा थी जो स्वर्ग में परम पिता का मुखारविन्द देखते हैं। "कितने खेद की बात है कि यह इतना अस्पष्ट है," वह सोचने लगा, "फिर भी दिल कहता है कि इसमें कोई अच्छी बात है।"

११. क्योंकि मानव-पुत्र उस चीज़ की रक्षा करने आया है जो खो गयी थी,–उसने आगे पढ़ा।

१२. तुम क्या समझते हो? यदि किसी मनुष्य की सौ भेड़ें हों, और उनमें से एक भटक जाय, तो क्या निनानवे को छोड़ कर, और पहाड़ों पर जा कर, उस भटकी हुई को न ढूंढ़ेगा?

१३. और यदि ऐसा हो कि उसे पाय, तो मैं तुमसे सच कहता हूं, कि वह उन निनानवे भेड़ों के लिए जो भटकी नहीं थीं इतना आनन्द नहीं करेगा, जितना कि इस भेड़ के लिए करेगा।

१४. ऐसा ही तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है यह इच्छा नहीं, कि इन छोटों में से एक भी नाश हो।

"हां, पिता की इच्छा नहीं थी कि इनमें से एक का भी नाश हो, और यहां सैकड़ों और हजारों की संख्या में इन्सान नष्ट हो रहे हैं। और इनके बचाये जाने की कोई संभावना नहीं है," उसने सोचा और आगे पढ़ने लगा:

२१. फिर पतरस ने पास आ कर, उससे कहा, हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूं, क्या सात बार तक?

२२. यीशु ने उससे कहा, मैं तुझसे यह नहीं कहता, कि सात बार, वरन सात बार के सत्तर गुने तक।

२३. इसलिए स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है, जिसने अपने दासों से लेखा लेना चाहा।

२४. जब वह लेखा लेने लगा, तो एक जन उसके सामने लाया गया जो दस हज़ार तोड़े धारता था।

२५. जबकि चुकाने को उसके पास कुछ न था तो उसके स्वामी ने कहा, कि यह और इसकी पत्नी और लड़केवाले और जो कुछ इसका है सब बेचा जाय, और वह क़र्ज़ चुका दिया जाय।

२६. इस पर उस दास ने गिर कर उसे प्रणाम किया, और कहा, हे स्वामी, धीरज धर, मैं सब कुछ भर दूंगा।

२७. तब उस दास के स्वामी ने तरस खा कर उसे छोड़ दिया और उसका धार क्षमा किया।

२८. परन्तु जब वह दास बाहर निकला, तो उसके संगी दासों में से एक उसको मिला, जो उसके सौ दीनार धारता था; उसने उसे पकड़ कर उसका गला घोंटा, और कहा, जो कुछ तू धारता है भर दे।

२९. इस पर उसका संगी दास गिर कर, उससे विनती करने लगा, कि धीरज धर मैं सब भर दूंगा।

३०. उसने न माना, परंतु जा कर उसे बन्दीगृह में डाल दिया, कि जब तक क़र्ज़ को भर न दे, तब तक वहीं रहे।

३१. उसके संगी दास यह जो हुआ था देख कर बहुत उदास हुए, और जा कर अपने स्वामी को पूरा हाल बता दिया। वे राजा के पास गये और उसे सारी बात बतायी।

३२. तब उसके स्वामी ने उसको बुला कर उससे कहा, हे दुष्ट दास, जो मुझसे विनती की, तो मैंने तो तेरा वह पूरा क़र्ज़ क्षमा किया।

३३. सो जैसे मैंने तुझ पर दया की, वैसे ही क्या तुझे भी अपने संगी दास पर दया करना नहीं चाहिए था?

"तो क्या यही असल बात है?" सहसा नेख्लूदोव चिल्ला उठा। उसके रोम रोम में से यह आवाज उठी—"हां यही है, यही है।"

नेख्लूदोव के साथ भी वही कुछ हुआ जो अक्सर उन लोगों के साथ होता है जो आध्यात्मिक जीवन जी रहे होते हैं। जो विचार पहले अनोखा

सा, विरोधाभास से भरा, यहां तक कि मज़ाक़ सा लगा करता था, उसे जब जीवन के अनुभवों से अधिकाधिक समर्थन प्राप्त होता गया, तो सहसा वही विचार अतिसरल, तथा अटल सचाई नज़र आने लगा। निश्चय ही, जिस भयानक दुष्टता से इन्सान यन्त्रणाएं भोग रहे हैं उससे छुटकारा पाने का केवल एक ही साधन है कि वे भगवान् के सामने हमेशा इस बात को क़बूल करें कि वे क़सूरवार हैं, और इसलिए दूसरों को दण्ड देने या सुधारने के योग्य नहीं हैं। यह बात नेख़्लूदोव के सामने स्पष्ट हो गयी। उसने समझ लिया कि वह भयानक दुष्टता जिसे वह क़ैदख़ानों और बन्दीगृहों में देखता रहा है, तथा इस दुष्टता को बढ़ावा देने वालों का आत्मविश्वास इसी बात से पैदा हुआ था कि लोग वह काम करना चाहते हैं जो उनके लिए नामुमकिन है, अर्थात् स्वयं बुरे होते हुए दूसरों की बुराई को दूर करना चाहते हैं। दुश्चरित्र लोग अन्य दुश्चरित्र लोगों को सीधे रास्ते पर लाने की कोशिश करते हैं, और समझते हैं कि यह काम वे यान्त्रिक उपायों द्वारा सम्पन्न कर सकेंगे। परिणाम यह होता है कि ज़रूरतमन्द और स्वार्थी लोग इस मिथ्या दण्ड तथा सुधार को अपना पेशा बना लेते हैं और स्वयं भ्रष्टता की चरम सीमा तक जा पहुंचते हैं, तथा जिन लोगों पर अत्याचार करते हैं उन्हें भी सारा वक़्त दूषित करते रहते हैं। नेख़्लूदोव की आंखें खुल गयीं। उसे साफ़ नज़र आने लगा कि जिन विभीषिकाओं को वह देखता रहा था, उनका स्रोत क्या है, और उनका अन्त करने के लिए क्या करना होगा। यह उत्तर वही था जो ईसा ने पतरस को दिया था और जो नेख़्लूदोव को स्वयं नहीं मिल पाया था। सदा क्षमा करते रहो, सब को क्षमा करते रहो, एक बार नहीं, अनन्त बार, क्योंकि कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं जो स्वयं दोषी न हो, इसलिए कोई भी इस योग्य नहीं कि वह किसी को दण्ड दे या किसी का सुधार करे।

"लेकिन यह बात इतनी सरल तो नहीं हो सकती," नेख़्लूदोव ने सोचा। परन्तु फिर भी उसने देखा कि यही उस प्रश्न का, न केवल सैद्धान्तिक बल्कि व्यावहारिक हल भी है, हालांकि पहले यही बात उसे बड़ी अजीब सी लगती थी। साधारणतया यह आपत्ति की जाती है कि: बुरे काम करने वालों का क्या किया जाय? उन्हें सज़ा दिये बिना छोड़ा तो नहीं जा सकता। लेकिन अब यह आपत्ति नेख़्लूदोव को उलझन में नहीं

जाती थी। यदि दण्ड देने से जुर्म कम होते हों या जुर्म करने वाले का व्यवहार सुधरता हो तब तो इस आपत्ति का कोई मूल्य हो सकता है, लेकिन बात इसके बिल्कुल उलट है, और यह भी स्पष्ट है कि दूसरों का व्यक्तित्व सुधारने की सामर्थ्य किन्हीं को भी नहीं है तो विवेक यही कहता है कि वह काम करना छोड़ दें जो हानिकारक, अनैतिक तथा निर्दयी है। शताब्दियों से उन लोगों को फांसी पर चढ़ाया जाता रहा है जिन्हें अपराधी समझा जाता था। तो क्या वे ख़त्म हो गये हैं? ख़त्म तो क्या होंगे, उनकी संख्या पहले से भी बढ़ गयी है। और उनको बढ़ाने वाले एक तो मुजरिम हैं जिन्हें सजायें दे कर भ्रष्ट किया जाता है और दूसरे वे वैध मुजरिम हैं–अदालतों के जज, सरकारी वकील, जांचकर्ता, जेलर इत्यादि–जो लोगों पर इन्साफ़ करने बैठते हैं और उन्हें सजाएं देते हैं। यह बात भी नेख्लूदोव की समझ में आ गयी कि सामान्यतया यदि समाज और उसकी व्यवस्था बनी हुई है तो इसलिए नहीं कि ये वैध मुजरिम विद्यमान हैं, जो लोगों पर इन्साफ़ करते और उन्हें दण्ड देते हैं वरन् इसलिए कि उनके भ्रष्टकारक प्रभाव के बावजूद इन्सानों के दिल में अब भी दया भावना है और वे एक दूसरे से प्रेम करते हैं।

इस आशा से कि शायद उसके विचारों का समर्थन उसे इंजील में मिले, नेख्लूदोव शुरू से उसे पढ़ने लगा। पढ़ते हुए वह पहाड़ पर दिये गये उपदेश वाले स्थल तक पहुंचा। सदा ही इस उपदेश का उसके मन पर गहरा असर हुआ करता था, हालांकि वह उसे सुन्दर किन्तु अव्यावहारिक लगता था, और वह समझता था कि इसमें मनुष्य से उन बातों की मांग की गयी है जो अत्यधिक दूर की और अप्राप्य हैं। परन्तु आज पहली बार इस उपदेश में उसे सरल, स्पष्ट , व्यावहारिक नियमों का बोध हुआ, जिन पर आचरण करने से (और इन पर आचरण किया जा सकता था) सामाजिक जीवन में बिल्कुल नयी स्थिति पैदा होगी, और हिंसा, जिससे नेख्लूदोव का हृदय क्रोध से भर उठता था, अपने आप ख़त्म हो जायेगी। इतना ही नहीं, यह पृथ्वी स्वर्ग तुल्य हो जायेगी और मनुष्य महानतम प्रसाद का भोगी होगा।

ऐसे पांच नियम थे:

पहला नियम (मत्ती, अध्याय ५, २१–२६) यह कि मनुष्य किसी की हत्या न करे, अपने भाई से गुस्सा तक न करे, किसी को भी "राका"

अर्थात् अयोग्य न समझे। यदि किसी से उसका झगड़ा हो जाय तो अपनी भेंट भगवान् के चरणों में रखने से पहले, अर्थात् आराधना करने से पहले, उससे सुलह कर ले।

दूसरा नियम (मत्ती, अध्याय ५, २७–३२) कि मनुष्य परस्त्री के साथ व्यभिचार नहीं करे, स्त्री के सौन्दर्य का रसभोग तक करने की चेष्टा न करे। और जब किसी स्त्री के साथ उसका मिलाप हो जाय तो आजीवन उसके प्रति सच्चा रहे।

तीसरा नियम (मत्ती, अध्याय ५, ३३–३७) कि मनुष्य कभी भी शपथ द्वारा अपने को बांधे नहीं।

चौथा नियम (मत्ती, अध्याय ५, ३८–४२) कि मनुष्य किसी से भी बदला न ले, बल्कि यदि कोई एक गाल पर तमाचा मारे तो अपना दूसरा गाल उसके सामने कर दे। यदि उसे कोई हानि पहुंचाये तो उसे क्षमा कर दे और उसे नम्रता से सहन करे। लोगों की सेवा करने के लिए सदैव तत्पर रहे।

पांचवां नियम (मत्ती, अध्याय ५, ४३–४८) कि मनुष्य अपने शत्रुओं से कभी भी घृणा नहीं करे, न ही उनके साथ लड़े बल्कि उनसे प्रेम करे, उनकी सहायता करे, उनकी सेवा करे।

लैम्प पर आंखें गाड़े नेख़्लूदोव बैठा था। ऐसा लगता था जैसे उसके दिल की गति बन्द हो गयी हो। हमारा जीवन कितना असंगत और उलझा हुआ है। उसे साफ़ नज़र आने लगा कि यदि लोगों को इन नियमों का पालन करना सिखाया जाय तो जीवन में कैसा महान परिवर्तन आ जायेगा। उसकी आत्मा आनन्दविभोर हो उठी। इतने गहरे आनन्द का उसने पहले कभी भी अनुभव नहीं किया था। उसे जान पड़ा जैसे बरसों की थकान और यन्त्रणा के बाद उसे सहसा आराम और आज़ादी मिली हो।

रात भर वह जागता रहा। उसके मन की भी वही स्थिति थी जो अक्सर इंजील पढ़ने वालों के मन की हुआ करती है। आज पहली बार वह उन शब्दों का पूरा अर्थ समझ रहा था जिन्हें पहले वह कई बार पढ़ तो जाया करता था किन्तु उनकी ओर कभी ध्यान नहीं देता था। इस समय ये आवश्यक, महत्वपूर्ण तथा आनन्दपूर्ण शब्द उसके लिए आकाशवाणी के समान हो रहे थे और वह इन्हें इस भांति हृदयंगम कर रहा था जिस

भाँति स्पंज पानी को अपने में समा लेता है। जो कुछ भी वह आज पढ़ रहा था, वह उसे परिचित लग रहा था। वे बातें जिन्हें वह जानता तो पहले से था किन्तु जिनकी सत्यता को उसने महसूस नहीं किया था और उन पर पूर्णतया विश्वास भी नहीं किया था, आज उभर कर उसकी चेतना में आ गयी थीं। आज उन्हें समर्थन प्राप्त हो रहा था। आज वह उन्हें समझ रहा था और उसे यह विश्वास भी था कि यदि मनुष्य इन नियमों का पालन करें तो उन्हें महानतम सुख की प्राप्ति होगी। आज वह यह समझ रहा था और इस पर उसकी आस्था पक्की हो गयी थी। इतना ही नहीं, वह यह भी समझता और विश्वास करता था कि प्रत्येक मनुष्य के लिए यही एकमात्र उपाय है कि वह इन नियमों पर आचरण करे, कि इसी में जीवन की एकमात्र सार्थकता निहित है; इन नियमों से तनिक भी इधर-उधर होना भूल होगी जिसकी मनुष्य को फ़ौरन् सज़ा भोगनी पड़ेगी। सारे उपदेश का यही सार है और यह बात अंगूरों वाले बग़ीचे की कथा में अत्यधिक स्पष्टता तथा सजीवता से प्रमाणित होती है।

किसान यह समझे बैठे थे कि अंगूरों की जिस खेती में उनका मालिक उन्हें काम करने के लिए भेजता था वह उनकी अपनी थी, कि वहां पर जो कुछ भी था उनके लिए था, और उनका काम यही था कि वहां मौज-मेला करें, मालिक को भूले रहें और उन लोगों को मौत के घाट उतारते रहें जो उन्हें यह याद तक दिलायें कि उनका मालिक भी कहीं मौजूद है।

"क्या हम भी वही बात नहीं करते?" नेख़्लूदोव ने सोचा। "जब हम यह सोचने लगते हैं कि हम ही अपने जीवन के मालिक हैं, और समझते हैं कि जीवन ऐश-आराम करने के लिए है? प्रत्यक्षतः यह फ़िज़ूल बात है। हम यहां किसी की इच्छा से और किसी उद्देश्य से भेजे गये हैं। परन्तु हमने यही निश्चय कर लिया है कि हम केवल अपने सुख के लिए जीते हैं। परिणाम यह होता है कि हम भी उन किसानों की तरह दुखी होते हैं जो अपने मालिक के आदेश का पालन नहीं करते। मालिक क्या चाहता है, यह इन नियमों में बता दिया गया है। ज्यों ही मनुष्य इन नियमों को क्रियान्वित कर लेंगे, तो धरा पर स्वर्ग उतर आयेगा, और मनुष्य श्रेष्ठतम सुख को प्राप्त करेंगे।

"सबसे पहले भगवान् के राज्य तथा उसके सत्य की खोज करो।

और बाक़ी सारी चीज़ें तुम्हें स्वयं मिलती रहेंगी।" परन्तु हम इन बाक़ी चीज़ों को खोजते हैं, और, ज़ाहिर है, इन्हें प्राप्त करने में असमर्थ रहते हैं।

"यह है मेरे जीवन का ध्येय। मैं एक काम अभी समाप्त कर ही पाया हूं कि दूसरा शुरू हो गया है।"

उस रात नेख़्लूदोव के लिए एक बिल्कुल ही नया जीवन आरम्भ हुआ। इसलिए नहीं कि उसके लिए जीवन की परिस्थितियां बदल गयी थीं, बल्कि इसलिए कि उस रात के बाद जो कुछ भी वह करता उसका उसके लिए नया और सर्वथा भिन्न अर्थ होता। समय ही बतायेगा कि उसके जीवन के इस नये अध्याय का अन्त किस भांति होगा।

१८९९

समाप्त

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन के बारे में आपके विचार जानकर अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है:

प्रगति प्रकाशन,
२१, ज़ूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।